卐 मुदा करात्तमोदकंसदा विमुक्तिसाधकं, कलाधरावतंसकंविलासिलोकरंजकं। अनायकैकनायकं विनाशिते भादैत्यकं, नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकं।। 卐

राजा - गुरुदेव

मंत्री - भौमदेव

वर्ष लग्न इष्ट ५६.६



।। श्री गणेशाय नमः ।।



प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये ॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
सवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥

जगल्लग्न इष्ट ८.२२



।। विवाह पंच शलाका चक्रम्।।



पुष्पाञ्जलि पञ्चाङ्गम्

संवत् सञ्ज्ञा - रौद्र ॥ पंचांग प्रवर्तक - आचार्य राजेश मिश्र, whatsApp ९६८५९०१०३०

।। अन्येषु सप्त शलाका चक्रम्।।



युधिष्ठिर संवत् ५१६५ | विक्रम संवत् २०८३ | शालिवाहन शक १९४८

सृष्टि संवत् १९५५८८५१२८, श्री कृष्ण जन्म संवत् ५२३२, कलियुग संवत् ५१२८
आद्य शंकराचार्य जन्म संवत् २५३३, वीर निर्वाण सं. २५५२-५३, बंगला १४३२- ३३
अग्रेजी दिनांक २० मार्च २०२६ से ६ अप्रैल २०२७ तक

दिन का चौघड़िया

वाराः	रवि	चंद्र	मंग.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
६–७.३०	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
७.३०–९	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
९–१०.३०	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
१०.३०–१२	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
१२–१.३०	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
१.३०–३	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
३–४.३०	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
४.३०–६	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

विंशोत्तरी मतानुसारेण आय-व्यय चक्रम्

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्ची.	धनु	मक.	कुंभ	मीन
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
खर्च	२	११	८	५	२	८	११	२	८	११	११	८

अष्टोत्तरी मतानुसारेण आय-व्यय चक्रम्

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्ची.	धनु	मक.	कुंभ	मीन
लाभ	११	५	८	२	५	८	५	११	१४	२	२	१४
खर्च	५	१४	११	११	५	११	१४	५	११	८	८	११

॥ रात का चौघड़िया ॥

वाराः	रवि	चंद्र	मंग.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
६–७.३०	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
७.३०–९	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
९–१०.३०	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
१०.३०–१२	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
१२–१.३०	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
१.३०–३	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
३–४.३०	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
४.३०–६	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

卐

लाभ-खर्च जानने की प्रथम रीति - अपनी राशी के ऊपर लिखे लाभ खर्च दोंनों अंकों के योग में से १ घटाकर ८ का भाग देने पर शेष १ में लाभ, २ में सुख, ३ में क्लेश, ४ में कष्ट, ५ में लोकोपवाद, ६ में सम्मान, ७ में विजय एवं ० में हानि समझना चाहिये।

लाभ-खर्च जानने की द्वितीय रीति- राशि के सामने लिखे लाभ अंक को विंशोत्तरी एवं अष्टोत्तरी दोनों से लेकर योग करें। इसी प्रकार खर्च का भी योग करें। इन योग फलों में जो अधिक हो तदानुसार वर्ष में आय या व्यय समझना चाहिये।

अधिकतम मूल्य 145/रु.

भोपाल नगरस्थ अक्षांस २३।१६, रेखांश ७७।२५, पलभा ५।१२।। दृश्य ग्रह गणितेन निर्मित धर्म शास्त्रोक्त पंचांगम्

।। श्री गणेशाय नमः ।।



आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन



पं. श्री जगदीश प्रसाद मिश्र
करैरा जिला शिवपुरी (म. प्र.)



महर्षिपाणिनिसंस्कृत-एवं-वैदिकविश्वविद्यालयः
(संस्कृतशिक्षणप्रशिक्षणज्ञानविज्ञानसंवर्द्धनकेन्द्रम्)
देवासमार्गः, उज्जयिनी (मध्यप्रदेशः) 456010

राष्ट्रियशोधसङ्गोष्ठी
भारतीय कालगणना
2079 वैक्रमाब्दः चैत्रशुक्ल एकादशी, मङ्गलवासरः, दिनाङ्कः 12 अप्रैल 2022

प्रमाणपत्रम्

प्रमाणीक्रियते यत्श्रीमता/श्रीमत्या राजेश कुमार मिश्र (पुष्पांजलि पञ्चाङ्गम्) महाभागेन/महाभागया महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालस्य संस्कृतशिक्षणप्रशिक्षणज्ञानविज्ञानसम्वर्द्धनकेन्द्रम् इत्यस्य तत्त्वावधाने भारतीयकाल गणना इति विषयाधारिता एकदिवसीया राष्ट्रियशोधसङ्गोष्ठी आयोजिता।

अस्यां शोध सगोष्ठयां 'सूर्य सिद्धान्त, आर्य सिद्धान्त एवं आधुनिक खगोल विज्ञान (महायुग) कालगणना में भेद एवं समाधान' इति विषयमधिकृत्य विशिष्ट व्याख्यानं/शोधपत्रवाचनमकरोत इति प्रमाणयति।

आचार्यः विजयकुमारः सी.जी.
कुलपतिः

डॉ. मनमोहन उपाध्यायः
निदेशकः

पंचांगकर्ता – आचार्य राजेश मिश्र
मोब.9406902687, ९६८५९०१०३०
प्रकाशक – श्री मती मंजू मिश्र
प्रकाशन – पुष्पांजलि वेदांग पीठ
गजानन धाम, मणि विहार के सामने,
चिंतामन गणेश रोड, उज्जैन

विषयानुक्रम

(१) पंचांग प्रवेश खंड - (पृष्ठ १ - ९)
सम्वत्सर फल, राशिफल, मकर संक्रांति फल, देशांतर सारिणी इत्यादि।

(२) जातक खंड - (पृष्ठ १० - १८)
अनेक अक्षांशों पर लग्न सारिणी, जन्मगत नक्षत्र फल, विंशोत्तरी दशा, होरादि वर्ग, वर्ष प्रवेश, जातक आजीविका निर्णय।

(३) विविध विषय खंड - (पृष्ठ १९ - २३)
ग्रह-नक्षत्र गुणधर्म, नष्टगत वस्तु, पल्ली पत्तन, पर्व निर्णय सूत्र।

(४) अर्चन खंड - (पृष्ठ २४ - २५)
नवग्रह मन्त्र, रत्न एवं दान, महामृत्युंजय, नक्षत्रों के वेदोक्त मन्त्र।

(५) मुहूर्त सूत्र खंड - (पृष्ठ २६ - ३३)
अग्निहोत्र, कालहोरा, वास्तु, यात्रा, विविध मुहूर्त सूत्र।

(६) विवाह सूत्र खंड - (पृष्ठ ३४ - ४०)
गुण मिलान अंक, अवकहाडा, कुंडली मिलान, विवाह लग्न सूत्र, विवाहांग मुहूर्त, विवाह मुहूर्त में लत्तादि १० दोष, त्रिबलशुद्धि।

(७) शोधित मुहूर्त खंड - (पृष्ठ ४१ - ८८)
शोधित विवाह मुहूर्त, अन्य प्रथक - प्रथक शोधित मुहूर्त, मिश्र ५१ मुहूर्त।

(८) पाक्षिक पंचांग खंड - (पृष्ठ ८९ - १२०)
चैत्रादि पक्ष , दैनिक नक्षत्र चरण समाप्ति काल , स्मरण लेख।

हरिद्वार कुंभ पर्व
पद्मिनी नायकं मेषे,कुंभ राशि गते गुरौ।गंगा द्वारे भवेद् योग:,कुंभ नामा तदोत्तना।।

प्रयागराज कुंभ पर्व
मेष राशि गते जीवे, मकरे चंद्र भास्करौ। अमावस्या तदा योग:, कुंभास्च तीर्थ नायके।। मकरे च दिना नाथे, वृष राशि स्थिते गुरौ।प्रयागे कुंभ योगो, वै माघ मासे विधुक्षये।।

नासिक कुंभ पर्व
कर्के गुरुस्तथा भानुश्चंद्रश्चंद्र क्षये तथा।गोदावर्या तदा कुंभो जायते अवनि मण्डले।।

उज्जैन कुंभ पर्व
मेष राशि गते सूर्ये, सिंह राश्या बृहस्पति। अवंतिकायां भवे कुंभ:,सदा मुक्ति प्रदायक:।। कुंभ स्थली महाक्षेत्रं, योगिनां स्नान दुर्लभम्।माधवे धवले पक्षे, सिंहे जीवे अजे रवौ।।तुला राशौ निशानाये, पूर्णायां पूर्णिमा तिथौ।व्यतिपाते तु संजाते, चंद्रवासर संयुते।उज्जयिन्यां महायोगे, स्नाने मोक्षं वालुयात्।।

ग्रह राशि परिवर्तन

श्री सूर्य देव
14-04-26 मेषे रवि दिन 9:25 समये।
15-05-26 वृषे रवि प्रातः 6:15 समये।
15-06-26 मिथुने रवि दिन 12:50 समये।
16-07-26 कर्के रवि रात्रि 11:41 समये।
17-08-26 सिंहे रवि दिन 8:06 समये।
17-09-26 कन्यायां रवि दिन 8:02 समये।
17-10-26 तुलायां रवि रात्रि 8:00 समये।
16-11-26 वृश्चिके रवि रात्रि 7:50 समये।
16-12-26 धनुषे रवि दिन 10:31 समये।
14-01-27 मकरे रवि रात्रि 9:16 समये।
13-02-27 कुंभे रवि दिन 10:16 समये।
15-03-27 मीने रवि प्रातः 7:08 समये।
14-04-27 मेषे रवि प्रातः 6:06 समये।

श्री शनि देव
सम्पूर्ण वर्ष मीन राशि में संचरण
१८ अप्रै - उदय पूर्वे
१७ मई- रेवत्यां सायं ५:०१
२६ जुला.-वक्री दिन १२:३३
०९ अक्टू- उ.भाद्रपदे दिन ११:४१
१० दिस- मार्गी रात्रि ७:५१
०७ फर. २७ रेवत्यां रात्रि ५:५७
२३ मार्च अस्त पश्चिमे

श्री राहूदेव वर्षारंभ में कुम्भ
०५ दिसम्बर से मकर

श्री केतुदेव - वर्षारंभ में सिंह
०५ दिसम्बर से कर्क

श्री गुरुदेव
वर्ष प्रारंभ में - मिथुन राशि में
१-जून-कर्के रात्रि १:४९ समये।
१८-जून- पुष्ये रात्रि ९:०१ समये।
१५-जुला-अस्त पश्चिमे: सायं १९:४७
१०-अग-गुरु उदय पूर्वे: प्रातः ५:१९
१८-अग-आश्लेषायां रात्रि ३:१९समये।
३१-अक्टू-सिंहे,मघायां दिन १२:३३
१२-दिस- गुरु वक्री -१८७:०२।
२४-जन- कर्के रात्रि १२:२४समये।

श्री भौम देव
०२ अप्रै- मीने भौमः दिन ३:३४ समये।
२१ अप्रै- उदय पूर्वे प्रातः ४:५३ समये।
११ मई- अश्विन्यां मेषे च दिन १२:४३।
२० जून- वृषे भौमः रात्रि १२:०७ समये
०२ अग.-मिथुने भौमः रात्रि १०:५४
१८ सित- कर्के भौमः दिन ४:४०
१२ नव- मघायां सिंहे च रात्रि ८:२५।
१० जन २७ - मंगल वक्री रात्रि ७:२०
०९ मार्च-आश्लेषायां कर्के प्रातः-१२:३२
०१ अप्रै - मंगल मार्गी ६:५४

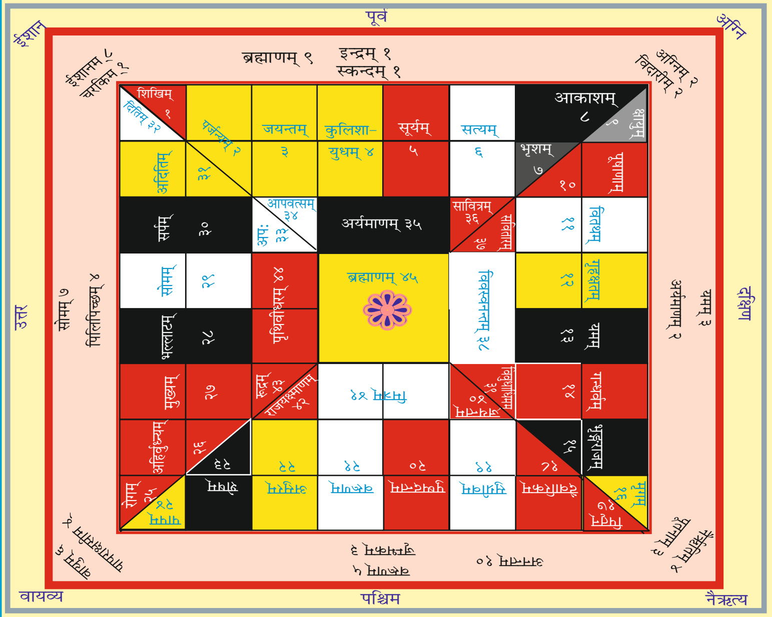
श्री शुक्र उदयास्त
दिनांक १५ जुलाई २०२६ को १९:४७ बजे अस्त होकर दिनांक १० अगस्त २०२६ को प्रातः ५:१९ पर उदय होंगे।

भारत एक विशाल देश है, अतः सुदूर अक्षांशों के स्थानों में ग्रहों के उदयास्त काल में तीन–चार दिन तक का अंतर होता है। अतः विद्वानों को चाहिये कि अपने निकटतम् स्थान के पंचांग से निर्णय करें।

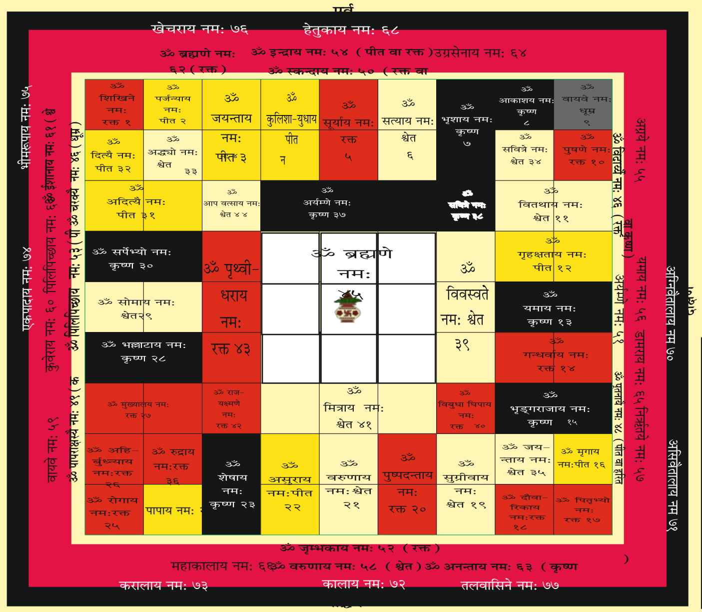
Email Address - Panchang.Pushpanjali@gmail.com विवाद समाधान हेतु न्यायक्षेत्र भोपाल (म. प्र.) मान्य

यूट्यूब चैनल-Acharya Rajesh Mishra में प्ले लिस्ट में वास्तु कल्प के वीडिओ का अवलोकन कर कुशल वास्तु विद् वन सकते हैं।

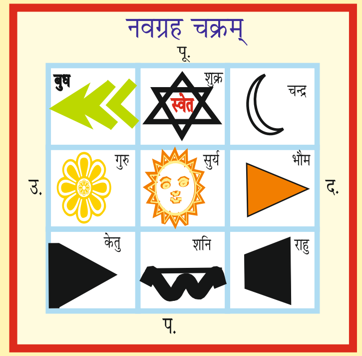
चतु:षष्टिपदं वास्तुमण्डलचक्रम्



गृह वास्तु चक्रम्



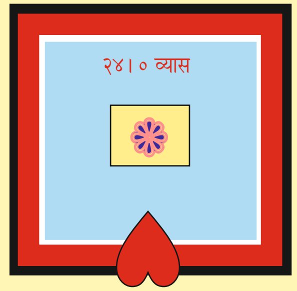
नवग्रह चक्रम्



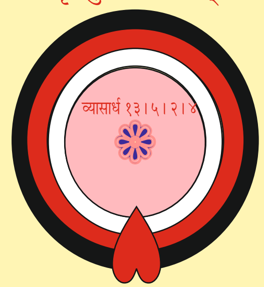
क्षेत्रपाल चक्रम्



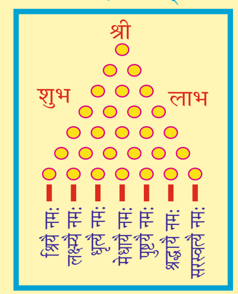
चतुररस्त्रकुण्डस्वरूपम्



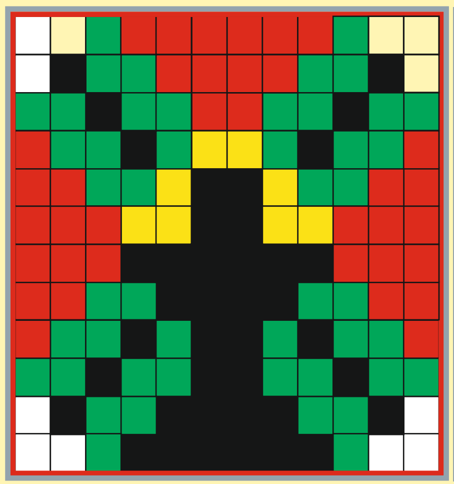
वृत्तकुण्डस्वरूपम्



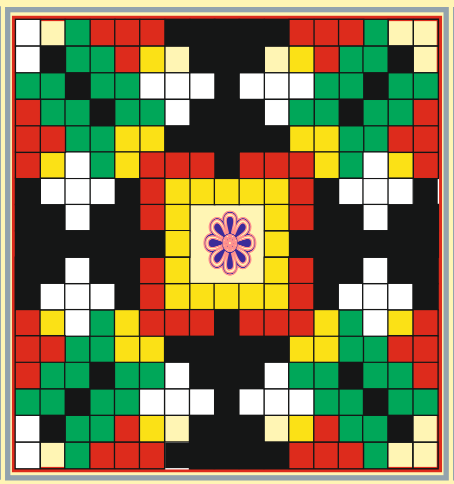
वसोर्द्धारा चक्रम्



एकलिङ्गतोभद्र चक्रम्



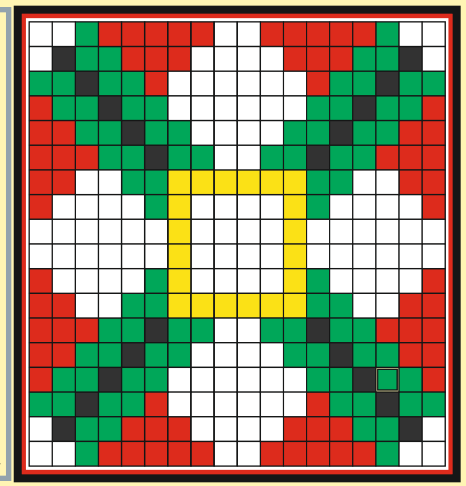
चतुर्लिङ्गतोभद्र चक्रम्



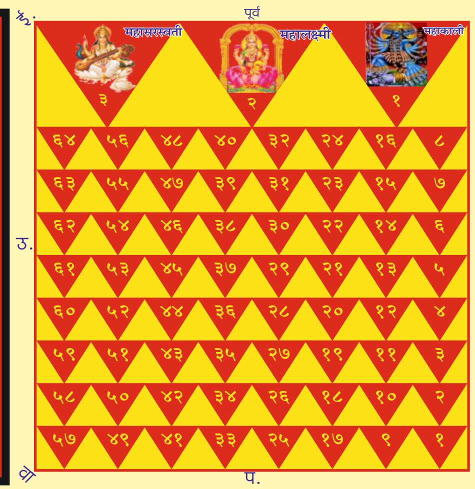
षोडशमातृका चक्रम्

ॐ आत्मन:कुल-देवतायै नम: १७	ॐ लोकमातृभ्यो नम: १३	ॐ देवसेनायै नम: ९	ॐ मेधायै नम: ५
ॐ तुष्ट्यैनम: १६	ॐ मातृभ्यो नम: १२	ॐ जयायै नम: ८	ॐ शच्यै नम: ४
ॐ पुष्ट्यैनम: १५	ॐ स्वाहायै नम: ११	ॐ विजयायै नम: ७	ॐ पद्मायै नम: ३
ॐ धृत्यै नम: १४	ॐ स्वधायै नम: १०	ॐ सावित्र्यै नम: ६	ॐ गौर्यै नम: २ ॐ गणेशाय नम: १

सर्वतोभद्र चक्रम्



चौसठयोगिनी चक्रम्



पुरुषसूक्तम्

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ँ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ १॥
पुरुष ऐवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ २॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ४॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋ चः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ँ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ ७ ॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मज्जाता अजावयः ॥ ८ ॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋ षयश्च ये ॥ ९ ॥
यत्पुरूषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥ १० ॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां ँ शूद्रो अजायत ॥ ११ ॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ॥ १३ ॥
यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ १४ ॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ १६॥

श्री सूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तांतर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ ४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनीमीं शरणम् प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ ५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फ लानि तपसानुदन्तु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ ६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोसु राष्ट्रेस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ ७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे ग्रहात् ॥ ८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ १०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे ग्रहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥ १४॥
ताम आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥ १५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ १६॥

निवेदन - आजकल हर घर में अग्रेजी आधारित कैलेंडर टंगे होने के कारण यह देखने में आ रहा है कि नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति के माहों के नाम पता नहीं हैं, इसलिए बे संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। अतः चैत्र मास से प्रारंभ होने बाले कैलेन्डर अपने घर में अवश्य रखें।



अथ शुभ सम्वत्सरावली

श्री गणेशाय नम:। अथ संवत्सरावली महात्म्य। जो मनुष्य चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को संवत्सर का फल सुनता है वह धनाढ्य, निरोगी, राजकुल में विजयी, बुद्धिमान और सुखी होता है। इस दिन घर को स्वच्छ कर ध्वजा बंधन कर पंचां ग स्थित श्री गणेश जी का पूजन कर रात्रि में मंगल गीत आयोजन करना चाहिये।

।। अथ संवत्सरावली ।। श्री गणेशाय नम:। स जयति सिन्धुर वदनो देवो यत्पादपंकज स्मरणम्। वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम्।। अस्मिन् संवत्सरे अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वर्तमान कल्पारंभत: ससन्ध्यत: षण्मनवो व्यतीता:। वर्तमानस्य सप्तम वैवस्वतमनो: सप्तविंशति महायुगानि गतानि। अष्टाविंशति महायुगस्य कृतादि युगत्रयं व्यतीतम्। सृष्टितो गताब्दा: १९५५८८५१२७ वर्तमान कलियुगस्य ५१२७ वर्षाणि गता:। विक्रमादित्य राज्यकालातत्संवत्सरा: गता: २०८३ शकारंम्भतश्च १९४८ व्यतिताब्दा:।

रौद्र नाम संवत्सर फलम् -रौद्रेब्दे नृप संभूत क्षोभ क्लेश समन्विते। सततं त्वखिलालोका मध्य सस्यार्घ वृष्टय:।। रौद्र वर्ष में राजाओं में क्षोभ हो तथा क्लेश संयुक्त हो और अन्न जल मध्यम हों।।

राजा गुरु फलम्- गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुधाश्च धेनव:। यजन्ति विप्रा बहवो अग्निहोत्रिणो महोत्सब: सर्बजनेसु वर्तते॥ राजा गुरु होने से जलवर्षा उत्तम होगी तथा दुग्ध उत्पादन पर्याप्त होगा। बुद्धिजीवी लोग सत्कार्यरत रहेंगे। संसार में मांगलिक उत्सव होंगे।

मंत्री भौमफलम्- अवनिजो ननु मंत्रिकतां गतो भवति दस्युगदादिज वेदना। जनपदेशु जयं सुखसंचयं नबहुगोषुपयो द्विजकर्म च।। मंगल मंत्री होने पर बीमारियों से लोग दु:खी होते है, लेकिन गायों से दूध अधिक मिलने से लोग सुखी रहते हैं।

सस्येश गुरु फलम्- कणपतौ सुरराज पुरोहिते सकल सौख्यकर: श्रुति पूर्वक:। जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहूनि वसूनि वै। सस्येश गुरु होने से वेद विहित मार्ग के प्रचार से सब सुखी होगे। पृथ्वी पर जल एवं गोरस की कमी नहीं रहेगी।

दुर्गेश चंद्र फलम्- गढपति: शशिलांछनको यदा नृप सुराज्य बिलासित पौरजा:। बहु धनेक्षु जगो रस भोगिनो नखरा वर वर्णित विग्रहा:।। चंद्रमा दुर्गेश होने से शासक वर्ग लोगों के हित में काम करेंगे। गन्ना तथा गोरस भोगियों किसानों को धन लाभ होगा। उच्च वर्ग के शासकों का पद विग्रह होगा।

धनेश गुरु फलम्- सुमनसांचगुरु द्रविणाधिपो वणिज वृत्ति परा: सुखभाजना। फलित पुष्पित भूमिरु हा: सदा विविध द्रव्ययुता भुवि मानवा:।। बृहस्पति धनेश होने से लोग निष्पापी होंगे। व्यापारी सुखी होंगे। वृक्षों में फल फूल लगेंगे। मनुष्यों को द्रव्य लाभ होगा।

रसेश शनि फलम्- रविसुते रसपे रससंक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधरा। अजगवां गजवाजिखरोष्ट्रहा जनपदेषुनरा न रसैर्युता।। शनि के रसेश होने से रसों का नाश होगा। बादलों से पानी के वदले रोग वर्षेगा। पशुओं का नाश होगा।

धान्येश बुध फलम्- बुध धान्याधिपे मेघा जलं मुंचति वैभृषम्। सिन्ध वेलाट देशे च माधवोल्पं च वर्षति।। बुध धान्येश होने से सिन्ध तथा लाट देशों में वर्षा कम हो, लेकिन अन्य प्रदेशों में पर्याप्त वर्षा होगी।

नीरसेश गुरु फलम्- हरिद्रा पीत वस्तूनि पीत वस्त्रादि कंचयत। नीरसेशो यदा जीव: सर्बेषां प्रीतिरु त्तमा। बृहस्पति नीरसेश होने से हल्दी, पीले वस्त्र, पीले रंग की वस्तुऐं अधिक उपजने से सस्ती होगीं। मानवों में परस्पर प्रेम वढ़ेगा।

फलेश चंद्र फलम्- यदि विधु:फलपोद्रुमराशया: फलयुता वलिभि: कुसुमैर्युता:। द्विजमुखावर भोग समन्विता नृपतयो नयनाटन तत्परा:।। चंद्रमा फलेश होने से वृक्षों तथा वेलों में फूल बहुत लगें। ब्राम्हणों को अच्छा भोजन मिले तथा शासक न्यायी एवं भ्रमणशील हो।

मेघेश चंद्र फलम्- शशिनी तोयदपे यदि गोमहिष्य जखरादिषु दुग्ध रसं तदा। फलवती धन धान्यवती धरा विविध भोगवती ननु भामिनी।। चंद्रमा मेघेश होने से गौ, भैस, छेरी, आदि के दूध अधिक होगा। पृथ्वी पर अधिक अन्न उपजे तथा फलों की पैदावार भी अधिक होगी।

काल मेघ फलम्- रोगतो विकलता व पुष्पतां स्यान्मिथ: कलहताक्ष्माभृताम्। कालनामजलदोदयो यदा नैववर्षति जलं बृषा तदा।। काल संज्ञक मेघ होने से वर्षा कम होगी। वीमारियां फैलेंगीं। शासकों में कलह होगा।

कंबल नाम नाग फलम् - यदैवकंबलाभिधो भुजंगम: प्रजायते। तदास्ति मध्यमं जलं समस्त धान्यमुत्तमम्।। कंबल नाग वर्ष में मध्यम वर्षा होती है तव भी अन्न उत्तम होता है।

रोहिणी वास फलम्- यदा पयोनिधि स्थले गतो विरंचिभं तदा। अतीव वर्षणं भवेत् समस्त धान्य वद्र्धनम्।। रोहिणी निवास 'समुद्र' में रोहिणी होने से अत्यंत वर्षा योग है।

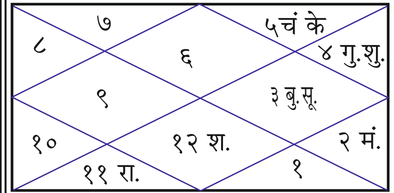
आद्रा प्रवेश तिथि फल- यदि स्यादष्टमी तिथ्यामाद्र्रा नक्षत्रगो रवि:। सस्यानां वाससां मूल्यं स्वल्प बृष्टि न संशय:।। अष्टमी को हो तो अन्न वस्त्रादि का मूल्य बढ जाय और वर्षा कम हो। आद्रा प्रवेश चंद्रवार फलम्- शशिधर वारेस्मरहर धिष्ण्ये। दिनकर वेशेसतिहि सुभिक्षम्।। सोमवार को आद्रा प्रवेश होने से अनाज पैदावार अच्छी होगी। आद्रा प्रवेश नक्षत्र फलम्- यदि रौद्रग आदित्ये चन्द्रोयम दैवते। तदा सस्याभि वृद्धि: स्यात्पुत्रपौत्र युतोजन:।। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो अन्न की वृद्धि हो और लोग बेटे पोतों से युक्त हों।।आद्रा प्रवेश योगफलम्- वरीयान् वर्तमानश्च द्रवेराद्रा प्रवेशने। अल्प बृष्ट्यखिलं धान्यं कंद मूलादि दुर्लभम्।। वरीयान् में हो तो कम वर्षा होने से कंद मूल फल धान्यादि दुर्लभ हों।

वर्ष लग्न फलम्- कुंभे सुखानि पूर्वस्यामुदग्दुर्भिक्ष संभव:। हाहाकार: पश्चिमायां भवेद्धान्य महर्घता।। दक्षिणे विग्रहश्चैव मध्यदेशे महासुखम्। कुंभ में पूर्व में सुख, उत्तर में दुर्भिक्ष और पश्चिम में धान्य की महँगाई से हाहाकार हो। दक्षिण में विग्रह और मध्य देश में सुख हो।

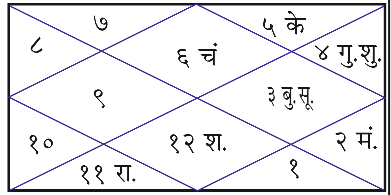
अथ विंशोपक: - वर्षा १७, धान्य ११, तृण ५,शीत १३, तेज १७, वायु १३,वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११,क्षुधा ५, तृषा ३, निद्रा ९,आलस्य ९, उद्यम ७, शांति ९,क्रोध ७, दंभ १३, लोभ ३,मैथुन १५, रस ९, फल १३,उत्साह ११, उग्रा ११, पाप ५,पुण्य ५, व्याधि १५, आचार ३,अनाचार ५, मृत्यु ३, जन्म ७,देश ९, देश स्वास्थ्य १५, चोर भय १३,चोर नाश १५, अग्नि ५, अग्नि शांत ११,वृक्षादि उद्भिज ९, मनुष्यादि जरायुज ३, सर्पादिअं डज ३,मखमलादि स्वेदज ९

वर्षा विचार

वर्षा प्रवेश



आद्रा प्रवेश



इस वर्ष रोहिणी वास समुद्र में है, आद्रा प्रवेश के समय चंद्रमा लग्न में होने से उत्तम वर्षा का योग है. परन्तु चंद्रमा पर शनि की दृष्टि होने से विषम वर्षा का योग भी विद्यमान है.

नक्षत्र	दिनांक से	वर्षा के वाहन
आर्द्रा	21/22 जून से	गदर्भ वाहनं अल्प वृष्टि। पु. स्त्री.योग सुवृष्टि। अग्निनाड़ी।
पुनर्वसु	5 /6 जुलाई से	अश्व वाहनं पर्वते वृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। सौम्यनाड़ी।
पुष्य	19/20 जुला.से	मूषक वाहनं अल्प वृष्टि। स्त्री. स्त्री.योग अनावृष्टि। नीरानाड़ी।
आश्ले	2/ 3 अगस्त से	गज वाहनं सुवृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। जलनाड़ी।
मघा	16/17 अग. से	चातक वाहनं सुवृष्टि। स्त्री. स्त्री.योग अनावृष्टि। अमृतनाड़ी।
पू.फा.	30/31 अग. से	गदर्भ वाहनं अल्प वृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। चण्ड़नाड़ी।
उ.फा.	12/13 सित. से	मण्डूक वाहनं सुवृष्टि। स्त्री. स्त्री.योग अनावृष्टि। वायुनाड़ी।
हस्त	26/27 सित. से	मूषक वाहनं अल्प वृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। अग्निनाड़ी।

वर्षा ज्ञानार्थे सप्त नाड़ी चक्रम्

नाड़ी	चण्डा	वायु	अग्नि	सौम्य	नीरा	जल	अमृत
नाड़ी स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	गुरु	शुक्र	बुध	चन्द्र
नक्षत्र	कृति.मघा. अनु.धनि.	रोहि.पूफा. ज्ये.शत.	मृग.उफा. मूल.पूभा.	आर्द्रा.हस्त पूषा.उभा.	पुनर्व.चित्र. उषा.रेव.	पुष्य. स्वा. अभि.अश्वि.	आश्ले.विशा. श्रव.भरणी
नाड़ी फल	आंधी तूफान	तेज हवा	बिजली या उमस	गर्मी एवं वर्षा	बादल	सामान्य वर्षा	अति वर्षा

नाड़ी चक्र से वर्षा देखने की विधि - वर्षा का विचार मुख्य रूप से सूर्य के आद्रा नक्षत्र से उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र तक करना चाहिये। जिस समय एक नाड़ी में दो से अधिक ग्रह हों या नाड़ी स्वामी बैठा हो तो उपरोक्त चण्डादि नाड़ी के नाचे लिखे अनुसार आंधी, हवा या वर्षा का योग होता है।

वर्षा जानने के अन्य योग –

– यदि सूर्य मंगल की युति हो अल्प वर्षा होती है।

– यदि गोचर में मंगल सूर्य से आगे चल रहे हों तो सूखे की स्थिति होती है।

– मंगल के राशि परिवर्तन के समय, गुरु उदय के समय, शुक्र अस्त के समय, शनि के उदय, अस्त, वक्री-मार्गी तथा राशि परिवर्तन के समय वर्षा योग होता है।

।। अथ मकर संक्रांति फलम् ।।

पौष शुक्ल 6 गुरुवासरे रात्रि 9:16 समये मकरसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल परा दिवसे। वार नाम मंदा संज्ञक संक्रांति बुद्धिजीवी वर्ग, लेखको, अध्यापकों, ब्राम्हणों, वैज्ञानिकों आदि को शुभद है। तस्य काले उ. भा नक्षत्र नाम मन्दा संज्ञक संक्रांति बुद्धिजीवीयो को सुखद। ४५ अनाज मूल्य में गिरावट संकेतक। गर करण फल- हस्ती वाहनं, गदर्भ उपवाहनं, रक्त वस्त्रं, धनुष आयुधं, लोह पात्रं, पय भक्षणं, गोरोचन लेपनं, पशु वर्ण, विल्व पुष्पं, मुकुट भूषणं, श्वेत कंचुकी, प्रौढा अवस्था, उपविष्टा स्थिति। अन्नादि में स्थिर भाव सूचक। माघ मास फल- सर्बे भवति सुखिनः। संसार में सभी लोग सुखी होंगे।

शुक्ल पक्ष-फल :- सदैव पीडयेत्येषां संक्रांतिः शुक्ल पक्षजा।। सूर्य संक्रान्ति शुक्ल पक्ष में हाने से चोर, पाखण्डी तथा दुष्टों के लिए पीडा कारक होती है।

वाहन फलम् - उन्मत्ताद्विपगामि पंकजवनाधीशः कलिंगायुधि। क्रूराारातिशरप्रपात पतिता वैवस्वतं त्वालयं।। लोलच्चामर घंटिकातिबिलसत् पिंडामतंगामृतिं। वैंध्याहैमभृता नृपाअति निजस्थानच्युतिं प्राप्नुयुः। यदि सूर्य का वाहन हाथी हो तो अनेक घण्टियों से शोभित मदमस्त हाथियों की मृत्यु हो। विन्ध्य और हिमालय के राजा लोग अपने स्थान से भ्रष्ट हो।

उपवाहन फल- वायव्ये चोत्तरे चैव महाव्याधि प्रपीडिता। गृहे परतर वैर ख रथे च दिवाकरे। सूर्य अपने उप वाहन गदहे पर हो तो उत्तर और वायव्य में स्थित लोग महान व्याधि से दुःखी हो, तथा घर में एक-दूसरे से शत्रुता का भाव उत्पन्न हो।

वस्त्र-फलः-यदि कोक नदाभमंबरं हरिणाऽधार्यत रक्तरंजितं। वसनं च महामहर्घतां खलु लाक्षादि रियात्कुसुंभकं। यदि सूर्य लाल वस्त्र धारण किये हढए हो तो लाल वस्तु के मूल्य अत्यधिक महंगे हों, लाक्षा आदि की न्यूनता होवे।

विलेपन-फलः- गोरोचनं चेद्रविणा ललाटे, संधार्यते स्वल्पतरं तदा तत्। स्यात्रागरीणां किल सुंदरीणां, तल्लेपनत्वात्प्रिय विप्रयोगः। यदि सूर्य अपने ललाट पर गोरोचन तिलक धारण किये हढए हो तो थोड़े ही समय में नगर की सुंदर स्त्रियों द्वारा गोरोचन के लेप से अपने प्रिय का विप्रयोग होवे तथा गोरोचन महंगा होवे।

पुष्प-फलः- दिनकर इह बिल्वपत्रधारी जनयति देबलकस्य मृत्युभावं। जगतिचतत्खलु तत्फलंतनुस्याद्भयमपि तत्क्रयकारिणां नृपालात्। यदि सूर्य बिल्व (बेल) के पत्ते को धारण किये हो तो पूजा करने वाले को मृत्यु भाव पै हो, संसार में उसके फल का विस्तार हो और खरीद करने वालों में राजा की आज्ञा का भय रहेंगे।

भोजन-फलः-भुज्यतेतुरविणायदा पयोबल्लवाश्च बहढध निपीडनं। प्राप्नुवंति महिषीमृतिस्तदा जायते हि पयसो महर्घता। यदि सूर्य पय अर्थात् दूध का सेवन किये हढए हो तो भैंस आदि रखने वाले को पीडा हो तथा भैंस आदि की मृत्यु हो जिससे दूध का अभाव हो तथा महंगा भी हो।

शस्त्र-फलः-विभर्ति भास्करो यदा शरासनं तदा भवेत्। धनुर्धरस्य पीडनं कृपाणपाणि शोभनं। यदि सूर्य शर (बाण)को धारण किए हढए हो तो हाथों में कृपाण धारण किये हढए व्यक्ति सुशोभित होते हैं और धनुष को धारण करने वाले के लिए पीड़ादायक होवे।

जाति-फलः- दिनमणिस्तुपशूद्भव जातिमान् पशु निपीडनमाशु विजायते। सुखमतीव च हिंसक जीवीं श्वपचतो वसुलाभयुतो नृपः। यदि सूर्य पशु जाति को धारण किये हढए हो तो जल्दी ही पशुओं को पीडा हो और हिंसक जीवों पर आश्रित लोग बहढत सुख प्राप्त करें तथा राजा, चाण्डालों एवं दुष्टों धन लाभ प्राप्त हो।

अवस्था-फलः- तरुणो नरकांतिशरीरयुतो दिनकृद्विदधातिरतानुरताः। हृदयेश समागम चित्तयुतायुवतीर्विरहेंगे नलदग्धतनूः। यदि सूर्य प्रौढावस्था को धारण किये हढए हो तो प्रौढा का चित्त अनुरत हो, मनोनुकूल की प्राप्ति हो और युवती का शरीर विरहेंगे की ज्वाला में उद्दीप्त होने लगे।

अलंकार-फल- यदि च मेदकं गोनुपूर्वकं कलयति प्रभादीपितां वरः। भवति पीडनं तत्क्रयैषिणं किलतदाऽकरः स्वल्पसंचयः। यदि सूर्य गुजा (घुघुची) की धारण किये हढए हो तो राजा को पीड़ा होवे और गोमेद क्रय करने वालों को कष्ट हो, राजा का तथा गोभेद क्रय करने वालों को भंडार का संचय कम हो।

दिशा गमन एवं दृष्टि फल - पूर्वादिशं यदि याति निशः शूरमसांगकलिंगसुबंगाः। यांति मृतिं मगधा अपि नित्यं पश्चिम दिग्यवनाः सुखभाजाः।। यदि सूर्य पूर्व दिशा में गमन करे तो कलिंग तथा बंग आपस में लडें और मृत्यु को प्रापत हो, मगधवासी की भी यही स्थिति होवे। तथा पश्चिमवासी यवन सुख प्राप्त करें। पश्यतिचेतद्धतभुग्दिशमर्कः पूर्वदिशिप्रभवेद्रिपुपीडा। दक्षिण ङ्गिपतिनित्यंघ्रंति ृपायुधिपश्चिम जाताः।। यदि सूर्य अग्निकोण वाली दिशा की तरफ देखे तो पूर्व दिशा के शत्रुओं से पीड़ा हो तथा दक्षिण दिशा के राजा भी पश्चिम वाले राजाओं को नित्य मारें।

卐 वर्षेस्मिन् ग्रहण विवरणम् 卐

ग्रहण विचार - इस वर्ष विश्व में दो सूर्य ग्रहण तथा एक चन्द्र ग्रहण पड़ेगा, परन्तु भारत में कोई भी ग्रहण दृश्य नहीं होगा, इसलिए भारत में कोई भी सूतक मान्य नहीं होगा.

विदेशों में दृश्य ग्रहण संवत २०८३

(i) खग्रास सूर्य ग्रहण - दिनांक १२ अगस्त २०२६- यह ग्रहण आइसलैंड, अफ्रीका के पश्चिमोत्तर भाग, उत्तरी रूस, कनाडा क्षेत्र में दिखाई देगा.

(ii) पूर्ण चन्द्र ग्रहण- २८ अगस्त २०२६ - यह ग्रहण अफ्रीका, अमेरिका, ग्रीन लैंड क्षेत्रों में दिखाई देगा.

(iii) खग्रास सूर्य ग्रहण दिनांक ६ फरवरी २०२७ - यह ग्रहण दक्षिण अमेरिका, ब्राजील, चिली, दक्षिणी अमेरिका के मोरक्को, जिम्बाबे इत्यादि क्षेत्रों में दिखाई देगा.

पंडित जी के स्मरण लेख

मेष राशिफल - इस वर्ष मेष राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १ जून २०२६ तक रोग भय योग बन रहा है। तत्पश्चात् व्यय, हानि योग बन रहा है। शनि के गोचर से सम्पूर्ण वर्ष साढ़े साती शनि के प्रभाव से मानसिक क्लेश तथा किसी अनर्थ का योग है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक राहु के गोचर से धनलाभ खुशी योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से कलह योग है। । केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक केतु के गोचर से धनहानि, शोक तत्पश्चात् केतु के गोचर से भय कष्ट। के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप-दानादि करें।

वृष राशिफल - इस वर्ष वृष राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १ जून २०२६ तक धनलाभ योग बन रहा है। तत्पश्चात् रोग भय योग बन रहा है। शनि के गोचर से सम्पूर्ण वर्ष सुख वित्तलाभ योग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक राहु के गोचर से कलह योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से पापरति योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक केतु के गोचर से भय कष्ट तत्पश्चात् केतु के गोचर से सुख लाभ। के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप-दानादि करें।

मिथुन राशिफल - इस वर्ष मिथुन राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १ जून २०२६ तक अरिष्टभय योग बन रहा है। तत्पश्चात् धनलाभ योग बन रहा है। शनि के गोचर से सम्पूर्ण वर्ष वैमनस्य योग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक राहु के गोचर से पापरति योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से रोगभय योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक केतु के गोचर से सुख लाभ तत्पश्चात् केतु के गोचर से बैर हानि के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप-दानादि करें।

कर्क राशिफल - इस वर्ष कर्क राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १ जून २०२६ तक देहपीड़ा, भय योग बन रहा है। तत्पश्चात् अरिष्टभय योग बन रहा है। । शनि के गोचर से सम्पूर्ण वर्ष हानि पापकर्म योग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक राहु के गोचर से रोगभय योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से विपत्ति योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक केतु के गोचर से बैर हानि तत्पश्चात् केतु के गोचर से रोगभय के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप-दानादि करें।

सिंह राशिफल - इस वर्ष सिंह राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १ जून २०२६ तक सर्वसुख योग बन रहा है। तत्पश्चात् देहपीड़ा, भय योग बन रहा है। शनि के गोचर से सम्पूर्ण वर्ष ढैया शनि के प्रभाव से रोग तथा शत्रु वृद्धि योग है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक राहु के गोचर से विपत्ति योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से लक्ष्मी प्राप्ति योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक केतु के गोचर से रोगभय तत्पश्चात् केतु के गोचर से बैर कष्ट के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप-दानादि करें।

कन्या राशिफल - इस वर्ष कन्या राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १ जून २०२६ तक अति दीनता योग बन रहा है। तत्पश्चात् सर्वसुख योग बन रहा है। शनि के गोचर से सम्पूर्ण वर्ष भय पीड़ायोग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक राहु के गोचर से लक्ष्मी प्राप्ति योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से हानि शोक योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक केतु के गोचर से बैर कष्ट तत्पश्चात् केतु के गोचर से सुयश धनलाभ के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप-दानादि करें।

तुला-तुला राशिफल - इस वर्ष तुला राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १ जून २०२६ तक सुख सम्मान योग बन रहा है। तत्पश्चात् अति दीनता योग बन रहा है। शनि के गोचर से सम्पूर्ण वर्ष वित्तलाभ योग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक राहु के गोचर से हानि शोक योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से बैर शोक योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक केतु के गोचर से सुयश धनलाभ तत्पश्चात् केतु के गोचर से भय शोक के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप-दानादि करें।

वृश्चिक राशिफल - इस वर्ष वृश्चिक राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १ जून २०२६ तक रोग कष्टयोग बन रहा है। तत्पश्चात् सुख सम्मान योग बन रहा है। । शनि के गोचर से सम्पूर्ण वर्ष धन पुत्र कष्ट योग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक राहु के गोचर से बैर शोक योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से धनागम निरोग योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक केतु के गोचर से भय शोक तत्पश्चात् केतु के गोचर से पापरति के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप-दानादि करें।

धनु राशिफल - इस वर्ष धनु राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १ जून २०२६ तक सुख सम्मान योग बन रहा है। तत्पश्चात् रोग कष्टयोग बन रहा है। शनि के गोचर से सम्पूर्ण वर्ष ढैया शनि के प्रभाव से पीड़ा तथा शत्रुओं की वृद्धि योग है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक राहु के गोचर से धनागम निरोग योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से व्यय चिंता योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक केतु के गोचर से पापरति तत्पश्चात् केतु के गोचर से पीड़ा, हानि के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप-दानादि करें।

मकर राशिफल - इस वर्ष मकर राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १ जून २०२६ तक शोक कष्ट योग बन रहा है। तत्पश्चात् सुख सम्मान योग बन रहा है। । शनि के गोचर से सम्पूर्ण वर्ष सुख धनलाभ योग बन रहा है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक राहु के गोचर से व्यय चिंता योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से कष्ट हानि योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक केतु के गोचर से पीड़ा, हानि तत्पश्चात् केतु के गोचर से दुर्गति, कष्ट के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप-दानादि करें।

कुंभ राशिफल - इस वर्ष कुंभ राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १ जून २०२६ तक सुख, लाभ योग बन रहा है। तत्पश्चात् शोक कष्ट योग बन रहा है। शनि के गोचर से सम्पूर्ण वर्ष साढ़े साती शनि के प्रभाव से शोक एवं धनहानि का राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक राहु के गोचर से कष्ट हानि योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से कष्ट हानि योग है। । । केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक केतु के गोचर से दुर्गति, कष्ट तत्पश्चात् केतु के गोचर से विजय सुख। के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप-दानादि करें।

मीन राशिफल - इस वर्ष मीन राशि वाले जातको को गुरु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक १ जून २०२६ तक व्यय, हानि योग बन रहा है। तत्पश्चात् सुख, लाभ योग बन रहा है। शनि के गोचर से सम्पूर्ण वर्ष साढ़े साती शनि के प्रभाव से भय युक्त मानसिकता योग है। राहु के गोचर अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक राहु के गोचर से कष्ट हानि योग है। तत्पश्चात् राहु के गोचर से धनलाभ खुशी योग है। केतु के गोचर के अनुसार वर्ष प्रारंभ से दिनांक ५ दिसम्बर २०२६ तक केतु के गोचर से विजय सुख तत्पश्चात् केतु के गोचर से धनहानि, शोक के योग बनते हैं। अत: नेष्ठ ग्रहों की शांति हेतु जप-दानादि करें।

साढ़े साती शनि- शनि जिस राशि में भ्रमण करते हैं वह राशि एवं उससे आगे व पीछे की दोनों राशियो पर भी अपना प्रभाव रखते हैं। शनि एक राशि पर औसतन ढाई वर्षों तक भ्रमण शील रहते हैं अत: तीनों राशियों पर कुल भ्रमण काल साढ़े सात वर्ष होने से यह अवधि साढ़े साती कहलाती है।

ढैया शनि- यदि किसी की जन्म राशि से शनि का गोचर चौथी-आठवीं राशि में हो रहा हो तो उस जातक पर ढैया शनि का प्रभाव होता है। इसका समय औसतन ढाई वर्ष होता है।

शुभ-अशुभ प्रभाव- यदि शनि अशुभ स्थिति में हों तो पारिवारिक कलह, व्यवसायिक उलझनें, हानि, निकटतम् रिस्तेदारों से विरोध, खर्च वृद्धि, विना गलती के दोषारोपण, विघ्न-बाधाऐं, रोग, दुर्घटना, संकट, सुख में कमी इत्यादि फ ल प्रकट होते हैं। शुभ स्थिति में सर्व सुख, आर्थिक लाभ, यश एवं सम्मान प्राप्त होता है।

शनि पाद - जिस दिन शनि राशि परिवर्तन करते हैं उस दिन जन्म राशि से चन्द्रमा १, ६, ११ वें हो तो स्वर्ण पाद, २, ५, ९ वें चन्द्र में रजत पाद, ३, ७, १० में ताम्र पाद एवं ४, ८, १२ में लोह पाद से शनि का गोचर होता है। स्वर्ण पाद में सर्व सुख, चांदी पाद में लाभ कारक, ताम्र पाद में लाभ-हानि मिश्रित व लोह पाद में शनि का विनाशक प्रभाव होता है। जिनकी कुंडली में शनि बलवान हो, शुभ भावों अर्थात लग्न, पंचम या नवम भाव का स्वामी हो, ३, ६, ११ वें भाव में स्थित हो,शुभ ग्रहों से दृष्ट हो,कारक ग्रहो से युक्त हो, नवांश में वली या शुभ दृष्ट हो तो विशेष कुप्रभाव नहीं होता और यदि जन्म का शनि अशुभ हो तो स्वर्ण पाद में भी विशेष लाभ नहीं होता है।

मतान्तर से शनि पाद -शनि जिस नक्षत्र पर हो उस संख्या में जन्म नक्षत्र की संख्या को जोडकर ४ का भाग देने पर यदि १ शेष हो तो सोने का, २ शेष हो तो लोहे का, ३ शेष हो तो तांबे का और ४ शेष हो तो चांदी का पाद होता है। स्वर्ण पाद में सुख हानि, लोह पाद में धन नाश, तांबा सामान्य एवं चांदी का पाया उत्तम लाभकारी होता है।

शनि वाहन- शनि के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनने पर जो संख्या हो उसमें ९ का भाग देने पर यदि १ शेष हो तो गंधर्व, २ शेष वचे तो अश्व, ३ में गज, ४ में मेष, ५ में सियार, ६ में सिंह, ७ में काग, ८ में मृग एवं ० या ९ शेष में मयूर वाहन होता है। इनमें अश्व, गज एवं मयूर वाहन शुभ होते हैं।

शनि शान्ति के उपाय- १. हनुमान जी महाराज की आराधना। २. शनि के बीज या वैदिक मंत्र का विधि पूर्वक जाप एवं दशांश हवन। ३. शनिवार के दिन व्रत रखना व तेल, उडद इत्यादि शनि से सम्बंधित काली वस्तुओं का दान। ४. पीपल की नियमित परिक्रमा कर तेल का दीपक जलाना। ५. व्यसनों से दूर रहना। ६. बुजुर्गों का आदर करने से शनि महाराज शांत होते हैं।

शनि के गोचर का द्वादश राशियों पर पाया

सम्पूर्ण वर्ष- संवत् २०८३

शनि का गोचर मीन राशि में रहेगा

स्वर्ण पाद से सर्व सुख - मीन, तुला, वृषभ।

रजत पाद से धनलाभ सुख - कुंभ, वृश्चिक, कर्क।

ताम्र पाद से मिश्रित फल - मिथुन, कन्या, मकर।

लोह पाद से कष्ट फल - धनु, सिंह, मेष।

पुष्पांजलि पंचांगम्

मास दशा सारणी

सौर मान से एक वर्ष ३६५ दिन ६ घंटे का होता है। अत: इतने समय बाद सूर्य पुन: उसी राशि पर लौट आते हैं। यदि दिन दशा में ३६० दिन लेते हें तो शेष ५ दिन में किस ग्रह की दशा मानी जाय, इसलिये सूर्य संक्रान्ति से सूर्य की दशा २० दिन,चन्द्र ५१ दिन, भौम २८ दिन, बुध ५७ दिन, शनि ३७ दिन, गुरु ५९ दिन, राहू ४३ दिन, शुक्र दशा ७० दिन रहती है। सामान्यत: शुभ ग्रहों एवं जन्म राशि से शुभ भावेशों की दशा सुखद एवं अशुभ ग्रहों की दशा दुखद होती है।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
शुक्रदशा-लाभ, दि. १४ अप्रैल से रविदशा-प्रवास	शुक्र -शुभाशुभ दि. १४ मई से रवि-मानहानि	राहूदशा-शुभाशुभ, दि. ६ अप्रैल से शुक्रदशा-मिश्रित	गुरुदशा-धर्मरति दि. २५ मार्च से राहूदशा-शुभ	गुरु दशा-मिश्रित, दि. २६ अप्रैल से राहू ,यात्रा कष्ट	शनिदशा-शत्रुभय दि.२८ मार्च से गुरु सुख,लाभ	बुधदशा-धर्मरति, दि. २२ मार्च से शनिदशा-मिश्रित	बुधदशा-मिश्रित, दि. २१ अप्रैल से शनिदशा-पीड़ा	भौमदशा-व्यय, दि.२५ मार्च से बुधदशा- सुख	चन्द्रदशा-सुख, दि.२७ मार्च से मंगल- लाभ	चन्द्रदशा-मिश्रित, दि. २५ अप्रैल से मंगल-मिश्रित	सूर्यदशा- विजय, दि. १४ मार्च से चन्द्रदशा- शुभ
दि. ४ मई से चन्द्र- सुखद	दि. ३ जून से चन्द्र- मिश्रित	दि. १५ जून से सूर्य- शुभाशुभ	दि. ७ मई से शुक्र-लाभ, सुख	दि. ८ जून से शुक्र-मिश्रित	दि. २६ मई से राहूदशा-मिश्रित	दि. २८ अप्रैल से गुरु -लाभ,	दि. २८ मई से गुरुदशा-लाभ	दि. २१ मई से शनिदशा- मिश्रित	दि. २४ अप्रै से बुध- मिश्रित	दि. २३ मई से बुधदशा- मिश्रित	दि. २५ मई से मंगल-मिश्रित
दि. २४ जून से मंगल-मिश्रित	२४ जुलाई से मंगल-मिश्रित	दि. ५ जुलाई से चन्द्रा-बहु लाभ	दि. १६ जुलाई से सूर्यदशा-अपमान	दि. १७ अगस्त से सूर्यदशा-निरोग	दि. ८ जुलाई से शुक्र-प्रवलभाग्य	दि. २६ जून से राहूदशा-व्यय	२६ जुलाई से राहूदशा- मिश्रित	दि. २७ जून से गुरु -सुख, लाभ	दि. २० जून से शनि-देह सुख	१९ जुलाई से शनि-देहसुख	दि. २२ जून से बुधदशा-शुभ
दि. २२ जुला से बुधमिश्रितफल	दि. २१ अग. से बुधदशा-लाभ	दि. २५ अग. से मंगला- कष्ट	दि. ५ अगस्त से चन्द्रद- सुख	दि. ६ सित. से चन्द्र- व्यय	दि. १६ सित. से सूर्यदशा- व्यय	दि. ८ अगस्त से शुक्र -सुख,लाभ	७ सितम्बर से शुक्र मिश्रित	दि. २५ अगस्त से राहूदशा- मिश्रित	दि. २७ जुलाई से गुरुदशा-मिश्रित	२५ अगस्त से गुरुदशा- लाभ	१८ अगस्त से शनिदशा-व्यय
दि. १७ सित से शनि-शुभाशुभ	१७ अक्टू से शनि-शुभाशुभ	२२ सितम्बर से बुध -सुख हर्ष	२५ सितम्बर से मंगल- मिश्रित	२७ अक्टू से मंगल -धर्मरति	६ अक्टूबर से चन्द्रदशा-लाभ	१७ अक्टूबर से सूर्यदशा-धर्मरति	१६ नवम्बर से सूर्य- क्षेत्र लाभ	७ अक्टूबर से शुक्रदशा- मिश्रित	२४ सितम्बर से राहूदशा-मिश्रित	२३ अक्टूबर से राहूदशा- अशुभ	२४ सितम्बर से गुरु- सुख, लाभ
दि. २४ अक्टू से गुरु-मिश्रित	१३ नवम्बर से गुरु -मिश्रित	१८ नवम्बर से शनिदशा-कष्ट	२३ अक्टूबर से बुधदशा-व्यय	२४ नवम्वर से बुध-धनसुख	२६ नवम्बर से मंगलदशा-चिंता	दि. ६ नवम्बर से चन्द्रदशा-उत्सव	६ दिसम्बर से चन्द्र-भाग्यलाभ	१६ दिसम्बर से सूर्य-भाग्यहानि	दि.६ नवम्बर से शुक्र-सुख,लाभ	५ दिसम्बर से शुक्र-सुख लाभ	२२ नवम्बर से राहूदशा- मिश्रित
दि. २२ दिस से राहूदशा-कष्ट	२१ जन. से से राहू-मिश्रित	२५ दिसम्बर से गुरुदशा- सुख	१९ दिसम्बर से शनि- देह पीड़ा	२० जन. २०११ से शनि-शत्रुभय	२४ दिसम्बर से बुध-सुख,प्रतिष्ठा	२७ दिसम्बर से मंगल -पदोन्नति	२६ जनवरी से मंगलदशा-लाभ	दि. ५ जनवरी से चन्द्र-मिश्रितफल	१५ जनवरी से सूर्यदशा- अशुभ	१३ फरवरी से सूर्यदशा-मिश्रित	दि. ४ जनवरी से शुक्रदशा- मिश्रित
३ जन से से शुक्र- लाभ	दि. ५ मार्च से शुक्र -सर्वसुख	२२ फरवरी से राहूदशा-मिश्रित	१५ जनवरी से गुरु-धर्मरति	२६ फरवरी से गुरुदशा-मिश्रित	१९ फरवरी से शनि शत्रुभय	२४ जन वरी से बुधदशा-व्यय	२३ फरवरी से बुधदशा- लाभ	२५ फरवरी से मंगलदशा-व्यय	.४ फरवरी से चन्द्रदशा-सुख	५ मार्च से चन्द्र - मिश्रित	१५ मार्च से सूर्यदशा-शत्रुभय

गोचर फल सूत्र

१. यदि वेध स्थान में वर्जित ग्रह के अलावा कोई अन्य ग्रह हो तो ग्रह का शुभाशुभ गोचरफल स्थगित रहता है, परन्तु विपरीत वेध में फल प्राप्त होता है। वेध का विचार जन्म राशि से करना चाहिये, परन्तु मतान्तर से कश्यपादि ने जन्मपत्री में ग्रह की अधिष्ठित राशि से विचार करने का कहा है, वो भी केवल हिमालय से बिन्ध्याचल तक के क्षेत्रों में। २. यदि कोई ग्रह जातक की जन्म कुण्डली में शुभ हो तभी गोचर में शुभ फल प्राप्त होता है, अन्यथा नहीं। सूर्य एवं मंगल राशि या महादशा के पूर्व भाग में, गुरु शुक्र मध्य भाग में, बुध राशि के सम्पूर्ण भाग में, शनि चन्द्र व राहू केतु राशि भोग के अंत समय में फल प्रदान करते हैं।

	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्टम्.	सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दसम्	ए—ादश	द्वादश
सूर्य	स्थानहानि, यात्रा	भय हानि	सुख,धनलाभ	रोग,अपमान	दीनता,धनहानि	शत्रुनाश,सुख	यात्रा,धनहानि	रोग ग्रसित	कुबुद्धि,पाप	कार्यसिद्धि	धनलाभ,धर्म	धनहानि,पीड़ा
चन्द्र	पुष्टि अन्नलाभ	धनलाभ, सुख	दृव्यप्राप्ति, सुख	हानि, रोग	सुख	वित्त लाभ	सुख, लाभ	रोगचिंता,कष्ट	सम्मान	सुख, लाभ	विविधलाभ	हानि, कष्ट
मंगल	पीड़ा,भय	धनहानि,नेत्र कष्ट	धनलाभ,पराक्रम	शत्रुभय	रोगभय,लाभ	कृशता	भय, कष्ट	रोग,कुबुद्धि	सुख	शोक,चिन्ता	लाभ, सुख	हानि, शोक
बुध	दोषारोपण	धनलाभ	शत्रुभय	सुख प्राप्ति, धन	रोग, शोक	धन	हानि,कलह	धनधान्यलाभ	रोग, हानि	सर्व सुख	सुख आयवृद्धि	हानि, वाधा
गुरु	अरिष्ट भय	धनलाभ	रोग भय	व्यय, हानि	सुख, लाभ	शोक कष्ट	सुख,सम्मान	रोग, कष्ट	सुख,सम्मान	अति दीनता	सर्वसुख	देहपीड़ा,भय
शुक्र	सुख,शत्रुनाश	अर्थलाभ	अर्थलाभ	सुख, धनागम	रोग	पीड़ा,शत्रुवृद्धि	विपत्ति	सुख	लाभ	दु:ख	धनागम	लाभ
शनि	भय	शोक,धनहानि	सुख,धनलाभ	पीड़ा, शत्रुवृद्धि	धनपुत्र,कष्ट	वित्तलाभ, सुख	भय पीड़ा	रोग,शत्रुवृद्धि	हानि,पापकर्म	वैमनस्य	सुख, वित्तलाभ	क्लेश,अनर्थ
राहू	कष्ट, हानि	व्यय, चिन्ता	धनागम,निरोग	वैर, शोक	हानि,शोक	लक्ष्मी प्राप्ति	विपत्ति	रोगभय	पापरति	कलह	धनलाभ,खुशी	कष्ट, हानि
केतु	रोगभय	वैर, हानि	सुख,लाभ	भय,कष्ट	धनहानि,शोक	विजय,सुख	दुर्गति, कष्ट	पीड़ा, हानि	पापरति	भय, शोक	सुयश,धनलाभ	वैर,कष्ट

।। सर्वतोभद्र चक्र ।।

पूर्व दिशा

ईशानकोण — दक्षिण दृष्टि वक्री — सम्मुख दृष्टि — वाम दृष्टि — अग्नि कोण

अआ	कृति	रोहि	मृग	आद्रा	पुन	पुष्य	श्ले	अआ
भरणी	उ	अ	व ब	कघङछ	ह	ड	ऊ	मघा
अश्विनी	ल		वृष	मिथुन	कर्क		म	पूफा
रेवती	च	मेष	ओ	नंदा र.मं.वार	औ	सिंह	ट	उफा
उभा	दथझ	मीन	रिक्ता शुक्रवार	पूर्णा शनिवार	भद्रा बु.चं.वार	कन्या	पषणठ	हस्त
पूभा	स श	कुंभ	अ:	जया गुरुवार	अं	तुला	र	चित्रा
शत	ग	ऐ	मकर	धनु	वृश्चिक	ए	त	स्वाती
धनि	ऋ	ख ष	ज	भधफढ	य	न	ॠ	विशाखा
इई	श्रवण	अश्लेषा	उ.षा.	पू.षा.	मूल	ज्येष्ठा	अनुराधा	इई

उत्तर — वाम दृष्टि — सम्मुख दृष्टि — दक्षिण दृष्टि

दक्षिण — दक्षिण दृष्टि — सम्मुख दृष्टि — वाम दृष्टि

वायव्य कोण — पश्चिम — वाम दृष्टि — सम्मुख दृष्टि — वक्री दक्षिण दृष्टि — नैऋत्य

इत्येष सर्वतोभद्र विस्तार: कीर्तियो मया। पूर्वशास्त्रानुसारेण यथोक्तं ब्रम्हयामले।। त्रिकालेषु त्रिलोकेषु यस्माद्बुद्धि: प्रकाशते। तत्त्रैलोक्यप्रदीपाख्यं चक्रमत्र प्रकाश्यते।। दीपो यथा गृहस्यान्तरूद्योतयति सर्वत:। तथेदं सर्वतोभद्र चक्रं ज्ञान प्रकाशकम्।। सर्वतोभद्रचक्र को भगवान शंकर ने पार्वती जी के समक्ष प्रगट किया था। इसका वर्णन ब्रम्हयामल शास्त्र में मिलता है। इसके दीपक रूपी गोचर ज्ञान से ज्योतिषी के बुद्धि स्वरूप गृह में तीनों लोकों के भूत, भविष्य एवं वर्तमान का ज्ञान इस तरह से हो जाता है, जैसे दीपक से अंधेरे घर में उजाला फैल जाता है। गोचर में ग्रह फल देखने में यह चक्र अतिशय उपयोगी है।

दृष्टि - वक्रगे दक्षिणा दृष्टिर्वामा दृष्टिश्च शीघ्रगे। मध्याचारे तथा मध्या ज्ञेया भौमादि पंचके।। जो ग्रह वक्री हों उनकी दृष्टि दाहिनी ओर के राशि, नक्षत्र, तिथि, अक्षर एवं स्वर इन पांचों को वेधते हैं। जो ग्रह अतिचारी हों वे नक्षत्रादि पांचों को वाम दृष्टि से वेधते हैं।

जो ग्रह सामान्य गति से चल रहे हों वे सम्मुख दृष्टि से केवल नक्षत्र का वेधन करते हैं। इस चक्र में तीर चिन्ह द्वारा (->) दृष्टि स्पष्ट की गई है। उदाहरण के लिए यदि कोई ग्रह रोहिणी नक्षत्र में शीघ्र गति से चल रहा हो (अर्थात् अतिचारी हो) तो वाईं ओर के अक्षर 'व ब' एवं 'र' को, स्वर 'औ' को, राशि मिथुन एवं कन्या को तथा स्वाती नक्षत्र को वेधेगा। राहूकेतू सदा वक्रौ शीघ्रगौ चन्द्रभास्करौ। गतेरेकस्वभावत्वादेषां दृष्टित्रयं सदा। राहूकेतु की गति हमेशा वक्र होने एवं सूर्य-चंद्र की गति हमेशा शीघ्र होने से इन चारों ग्रहों की दृष्टि तीनों ओर होती है।

वक्र, अतिचार एवं सामान्य गति - इस पंचांग में प्रतिदिन के ग्रह स्पष्ट दिये गये हैं। आज के ग्रह स्पष्ट से आने वाले दिन का ग्रह स्पष्ट कम हो तो उस ग्रह को वक्री जानें। इस पंचांग में प्रतिदिन की गति दी है। नीचे मंगलादि पंच ग्रहों की गति लिखी है,मार्गी रहने पर यदि सम्वन्धित ग्रह की गति नीचे लिखी गति से अधिक हो उसे अतिचारी जानें, अन्यथाा सामान्य गति होगी। मंगल - गति ४६ कला। बुध - ११३ कला। गुरु - १४ कला। शुक्र - ७६ कला। शनि - ७ कला ४५ विकला।

नक्षत्रवस कुछ अक्षरों पर वेध - यदि आद्रा नक्षत्र पर वेध हो तो घ, ङ , छ को, हस्त पर वेध हो तो ष, ण, ठ को, यदि पूर्वाषाढ पर वेध हो तो ध, फ, ढ को और उत्तराभाद्रपद पर वेध हो तो थ, झ, को भी वेध हो जाता है।

जातक की राशि नक्षत्रादि निर्धारण - यस्मिन्नृक्षे भवेज्जन्म यो वर्णस्तत्र य: स्वर:। या तिथिस्तत्र योराशिर्विज्ञेयं जन्मकालत:।। जन्म के समय जो राशि हो वह राशि, जो नक्षत्र हो वह नक्षत्र, जन्म नक्षत्र जिस पाद में हो उसका अक्षर, उस अक्षर का जो स्वर हो वर स्वर, जिस तिथि में जन्म हो वह तिथि ये पांचों जन्मकाल से ही जानना चाहिये।

नवग्रहो की सौम्य क्रूरादि संज्ञा- गुरु , शुक्र सदा सौम्य अर्थात शुभ ग्रह हैं। सूर्य, शनि, मंगल, राहू और केतु ये पांच क्रूर ग्रह हैं। चन्द्रमा कृष्णपक्ष की दशमी से शुक्लपक्ष की पंचमी तक क्षीण होने से पाप ग्रह होता है, अन्य तिथियों में शुभ है। यदि बुध के साथ नवांश में क्रूर ग्रह हो तो बुध भी क्रूर हो जा ता है, अन्यथा शुभ होता है।

अथ संक्षिप्त वेध फल - गोचर में यदि किसी जातक के नाम अक्षर, नक्षत्र, जन्म तिथि, स्वर या राशि को सौम्य ग्रह से वेध प्राप्त हो शुभ होता है। यदि जातक के इन पांच अवयवों को क्रूर ग्रह वेधे तो जातक के लिये वह समय कई तरह से अशुभ होता है। यदि कुछ शुभ एवं कुछ अशुभ ग्रहों से वेध हो तो शुभाशुभ मिश्रित फल होता है। यदि सौम्य ग्रह उदित रहकर, क्रूर ग्रह से युक्त न हो, स्वराशि, मित्रराशि या उच्चादि स्थिति से वली होकर वेध करें तो अत्यंत शुभ समय होता है। यदि क्रूर ग्रह नीच , शत्रु राशि में या अस्त होकर निर्वल स्थित होकर वेध करें तो अत्यंत अशुभ होता है। चन्द्रे मिश्रफलं पुंषां रतिलाभश्च भार्गवे। बुधवेधे भवेत्प्रज्ञा जीव: सर्वफलप्रद:।। अर्कवेधे मनस्तापो द्रव्यहानिश्च भू सुते। रोगपीड़ाकार: सौरी राहूकेतु च विघ्नदौ।। शुभ चन्द्रमा के वेध से जय एवं रोग नाश, क्षीण चंद्र से बंधन, रोग एवं मनस्ताप, शुक्र वेध से राज्यकृपा, विवाह, पुत्र सुख, बुध के वेध से उत्तम बुद्धि एवं सम्मान, गुरु के वेध से सव प्रकार से सुख मिलता है। सूर्य के वेध से मानषिक कष्ट, मंगल के वेध से आर्थिक हानि, शनि के वेध से रोग तथा पीड़ा, राहू-केतू के वेध से सव कामों में विघ्न आते हैं। तिथिर्वेधेऽर्थनाशश्च राशिनां दु:खजं भयम्। अक्षरे शोकसन्ताप ऋक्षेतु व्याधिसंक्रम:।। स्वर वेधे भवेन्मृत्यु: पंचविद्धो न जीवति।। यदि अशुभ ग्रह से तिथि विधे तो अर्थ हानि, राशि विधे तो दु:ख, अक्षर विधे तो शोक, नक्षत्र विधे तो रोग, स्वर विधे तो मृत्यु भय, यदि पांचों विधे तो अत्यन्त नेष्ट होता है। वस्तुओं की तेजी मंदी -जिन वस्तुओं के नाम के प्रथम अक्षर को शुभ ग्रह वेध करें उसका उत्पादन वढने से कीमत कम हो जाती है। जिन वस्तुओं पर क्रूर ग्रह का वेध हो उनका उत्पादन कम होता है, इसलिये वे महंगीं हो जाती हैं।

नगरस्य अक्षांश - देशान्तर विवोधक सारिणी (मध्यप्रदेश)

संकेत -स्टेंण्डर्ड अंतर मि. से. भारतीय स्टेंण्डर्ड रेखांश ८२.३० से अंतर मिनट सेकण्ड में।

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
ग्वालियर	२६.१२	७८.९	+३	+०.७	-१७.२४
लश्कर	२६.१२	७८.८	+३	+०.७	-१७.२८
मुरार	२६.१५	७८.१४	+३	+०.१४	-१७.४
डवरा	२५.५६	७८.२०	+४	+०.९	-१६.४०
आंतरी	२६.३	७८.१३	+३	+०.८	-१७.८
भितरवार	२५.४८	७८.६	+३	+०.७	-१७.३६
घाटीगांव	२६.३०	७७.५६	+२	+०.५	-१८.१६
पचोर	२५.५८	७८.२०	+४	+०.९	-१६.४०
मोहना	२५.५५	७७.४६	+१	+०.३	-१८.५६
विलौआ	२६.३	७८.१३	+३	+०.८	-१७.८
भिंड	२६.३३	७८.४७	+५	+०.१४	-१४.५२
फूप	२६.३७	७८.५२	+६	+०.१४	-१४,३६
अटेर	२६.४५	७८.३९	+५	+०.१२	-१५.२४
गोरमी	२६.३६	७८.३०	+४	+०.११	-१६.००
गोहद	२६.२५	७८.२६	+४	+०.१०	-१६.१६
मेहगांव	२६.३०	७८.३६	+५	+०.१२	-१५.३६
मऊ	२६.१६	७८.४०	+५	+०.१३	-१५.२०
रौन	२६.२१	७८.५८	+६	+०.१६	-१४.८
मिहौना	२६.१८	७७.५९	+२	+०.६	-१४.११
लहार	२६.१२	७८.५६	+६	+०.१५	-१४.१६
अमायन	२६.३१	७८.३५	+५	+०.१२	-१५.४०
दवोह	२६.१	७८.५३	+६	+०.१५	-१४.२८
मुरैना	२६.३०	७८.४	+३	+०.६	-१७.४४
अम्वाह	२६.४३	७८.१३	+३	+०.८	-१७.८
पोरसा	२६.४०	७८.२२	+४	+०.९	-१६.३२
जौरा	२६.२१	७७.४८	+२	+०.४	-१८.४८
कैलारस	२६.१९	७७.३७	+१	+०.२	-१९.३२
सवलगढ	२६.१५	७७.२४	०	०.०	-२०.२४
श्योपुर	२५.४१	७६.४२	-३	-०.७	-२३.१२
विजयपुर	२६.३	७७.२२	-०	-०.१	-२३.३२
पालपुर	२५.४८	७७.१०	-१	-०.३	-२१.२०
जरेरू	२६.३	७७.४१	+१	+०.३	-१९.१६
रामपुरक	२६.९	७७.२८	०	०.०	-२०.२८
बडौदा	२५.४०	७६.४०	-३	-०.८	-२३.२०
दतिया	२५.४१	७८.२८	+४	+०.११	-१६.८
वडौनी	२५.४२	७८.२३	+४	+०.१०	-१६.२८
जिगना	२५.३९	७८.२	+४	+०.९	-१६.३६
उन्नाव	२५.३६	७८.३६	+५	+०.१२	-१५.३६
भाण्डेर	२५.४४	७८.४४	+५	+०.१३	-१५.४
इन्दरगढ	२५.५५	७८.३४	+५	+०.११	-१५.४४
थरेट	२५.१	७८.३९	+५	+०.१२	-१५.२४
श्योंढा	२६.९	७८.४७	+५	+०.१४	-१४.५२
बसई	२५.९	७८.२१	+४	+०.९	-१६.३६

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
शिवपुरी	२५.४०	७७.४४	+१	+०.३	-१९.४
अमोला	२५.२५	७७.५८	+२	+०.५	-१८.८
करैरा	२६.२७	७८.९	+७	+०.१४	-१७.२४
दिनारा	२४.२९	७८.१९	+४	+०.९	-१६.४४
पिछोर	२५.९	७८.१०	+३	+०.८	-१७.२०
खनियाधाना	२५.२	७८.८	+३	+०.७	-१७.२८
रन्नौद	२५.६	७७.५४	+२	+०.५	-१८.२४
बदरवास	२४.५७	७७.३४	+१	+०.१	-१९.४४
कोलारस	२५.१४	७७.३६	+१	+०.२	-१९.३६
पोहरी	२५.३२	७७.२२	-०	-०.१	-२०.३२
नरवर	२५.४०	७७.५५	+२	+०.५	-१८.२०
भोंती	२५.२१	७८.४	+३	+०.६	-१७.४४
गुना	२४.३९	७७.१८	-०	-०.१	-२०.४८
फतेहगढ	२४.४७	७७.०	-२	-०.४	-२२.००
भदौरा	२४.४७	७७.२४	०	०.०	-२०.२४
वजरंगढ	२४.३६	७७.१७	-१	-०.१	-२०.५२
राधौगढ	२४.२६	७७.१२	-१	-०.२	-२१.१२
रूठियाई	२४.३२	७७.६	-१	-०.३	-२१.३६
मकसूदन	२४.०	७७.१०	-१	-०.३	-२१.२०
बीनागंज	२४.१२	७७.१	-२	-०.४	-२१.५६
चाचौडा	२४.१०	७६.५९	-२	-०.४	-२२.०४
कुम्भराज	२४.२५	७७.०	-२	-०.४	-२२.००
आरौन	२४.२३	७७.१९	०	-०.१	-२०.४४
अशोकनगर	२४.३४	७७.४३	+१	+०.३	-१९.०८
मुद्रा	२४.४३	७७.३५	+१	+०.२	-१९.४०
ईशागढ	२४.५०	७७.५३	+२	+०.५	-१८.२८
चन्देरी	२४.४३	७८.८	+३	+०.७	-१७.२८
सहराई	२४.३३	७८.६	+३	+०.७	-१७.३६
मुन्गाली	२५.४८	७८.६	+३	+०.७	-१७.३६
मुगावली	२४.२५	७८.६	+३	+०.७	-१७.३६
टीकमगढ	२४.४४	७८.५०	+६	+०.१४	-१४.४०
दिगौडा	२५.५७	७८.५०	+६	+०.१४	-१४.४०
पृथ्वीपुर	२५.१३	७८.४४	+५	+०.१३	-१५.४
ओरछा	२५.२१	७८.३८	+५	+०.१२	-१५.२८
निवाडी	२५.२१	७८.४८	+६	+०.१४	-१४.४८
जतारा	२५.००	७९.३	+७	+०.१६	-१३.४८
पलेरा	२५.२	७९.१४	+७	+०.१८	-१३.४
खरगापुर	२४.५०	७९.९	+७	+०.१७	-१३.२४
वल्देवगढ	२४.४५	७९.३	+७	+०.१६	-१३.४८
दमोह	२३.५०	७९.३०	+८	+०.२१	-१२.००
पथरिया	२३.५३	७९.२०	+८	+०.१९	-१२.४०
बटियागढ	२४.०७	७९.२१	+८	+०.१९	-१२.३६
हट्टा	२४.०९	७९.४०	+९	+०.२३	-११.२०
तेंदूखेडा	२३.२२	७९.३२	+८	+०.२१	-११.५२

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
छतरपुर	२४.५४	७९.३५	+९	+०.२२	-११.४०
नौगांव	२५.०४	७९.२७	+८	+०.२०	-१२.१२
मलेहरा	२४.३४	७९.१८	+८	+०.१९	-१२.४८
महाराजपुर	२४.३०	७९.२२	+८	+०.१९	-१२.३२
लौडी	२५.०९	८०.००	+१०	+०.२६	-१०.००
गौरीहार	२५.१४	८०.०८	+११	+०.२७	-९.२८
चन्दला	२५.०५	८०.१२	+११	+०.२८	-९.१२
राजनगर	२४.५३	७९.५४	+१०	+०.२५	-१०.२४
खजुराहो	२४.५०	७९.५८	+१०	+०.२६	-१०.८
विजावर	२४.३६	७९.३०	+८	+०.२१	-१२.००
किशनगढ	२४.२५	७९.२२	+८	+०.१९	-१२.३२
वडा मलेहरा	२५.०२	७९.४१	+९	+०.२३	-११.१६
बक्सवाहा	२४.१५	७९.१७	+७	+०.१९	-१२.५२
रीवा	२४.३२	८१.१८	+१६	+०.३९	-४.४८
रायपुरकर्चु	२४.३४	८१.२७	+१६	+०.४०	-४.१२
गुढ	२४.४९	८१.३९	+१७	+०.४२	-३.२४
मउगंज	२४.४०	८१.५३	+१८	+०.४५	-२.२८
त्योंथर	२५.००	८१.३८	+१७	+०.४२	-३.२८
सिरमौर	२४.५०	८१.२३	+१६	+०.४०	-४.२८
डभौरा	२५.०८	८१.१८	+१६	+०.३९	-४.४८
रघुनाथगंज	२४.४१	८१.३९	+१७	+०.४२	-३.२४
बैकुंठपुर	२४.४३	८१.२५	+१६	+०.४०	-४.२०
सेमरिया	२४.४७	८१.०८	+१५	+०.३७	-५.२८
नईगढी	२४.४८	८१.४६	+१७	+०.४३	-२.५६
कोटवा	२५.०२	८१.५९	+१८	+०.४६	-२.४
पन्ना	२४.४८	८०.१४	+११	+०.२८	-९.४
अजयगढ	२४.५४	८०.१५	+११	+०.२८	-९.००
पहाडीखे	२४.५२	८०.३१	+१२	+०.३१	-७.५६
शाहनगर	२३.४८	८०.२२	+१२	+०.२९	-८.३२
पवई	२४.१६	८०.९	+११	+०.२७	-९.२४
अमानगंज	२४.२५	८०.२	+१०	+०.२६	-९.५२
सतना	२४.३३	८०.५०	+१४	+०.३४	-६.४०
कोटी	२४.४५	८०.४६	+१३	+०.३४	-६.५६
मझगवां	२४.५५	८०.४८	+१४	+०.३४	-६.४८
नागौद	२४.३४	८०.३४	+१३	+०.३१	-७.४४
मैहर	२४.१४	८०.५०	+१४	+०.३४	-६.४०
अमरपाटन	२४.१९	८०.५९	+१४	+०.३६	-६.४
रामपुर	२४.३१	८१.२	+१४	+०.३६	-५.५२
चित्रकूट	२५.१३	८०.४८	+१४	+०.३४	-६.४८
सींधी	२४.२४	८१.५४	+१८	+०.४५	-२.२४
सिंहावल	२४.३५	८२.१४	+१९	+०.४८	-१.०४
चुरहट	२४.२४	८०.५५	+१४	+०.३५	-६.२०
रामपुर	२४.१२	८१.०७	+१५	+०.३७	-५.३२

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
देवसर	२४.१७	८२.०८	+१९	+०.४७	-१.२८
चितरंगी	२४.२३	८२.२४	+२०	+०.५०	-०.२४
सिंगरौली	२४.०८	८२.१८	+२०	+०.४९	-०.४८
बैंढन	२४.०४	८२.२९	+२०	+०.५१	-०.४
कुसुमी	२३.५४	८२.०१	+१८	+०.४६	-१.५६
मझौली	२४.०६	८१.३९	+१७	+०.४२	-३.२४
सागर	२३.५०	७८.४३	+५	+०.१३	-१५.०८
राहतगढ	२३.४७	७८.२८	+४	+०.११	-१६.०८
खुरई	२४.०४	७८.१८	+४	+०.९	-१६.४८
जैसिंहनगर	२३.३८	७८.३३	+५	+०.११	-१५.४८
वीना	२४.०९	७८.१०	+३	+०.८	-१७.२०
माल्थोन	२४.१८	७८.३२	+४	+०.११	-१५.५२
बंडा	२४.०१	७८.५९	+६	+०.१६	-१४.०४
शाहगढ	२४.१८	७९.०८	+७	+०.१७	-१३.२८
गढाकोटा	२३.४७	७९.१०	+७	+०.१८	-१३.२०
रहली	२३.२८	७९.०८	+७	+०.१७	-१३.२८
गौरझामर	२३.२५	७८.५९	+६	+०.१६	-१४.०४
देवरी	२३.२३	७९.०५	+७	+०.१७	१३.४०
विदिशा	२३.३०	७७.५०	+२	+०.४	-१८.४०
ग्यारसपुर	२३.४४	७८.१०	+३	+०.८	-१७.२०
अहमदपुर	२३.२२	७७.५२	+२	+०.४	-१८.३२
गुलावगंज	२३.४०	७७.५२	+२	+०.४	-१८.३२
वासौदा	२३.५१	७७.५६	+२	+०.५	-१८.१६
नटेरन	२३.४६	७७.५०	+२	+०.४	-१८.४०
शमशवाद	२३.४८	७७.३०	०	+०.१	-२०.००
सतपाडा	२३.४४	७७.३९	+१	+०.२	-१९.२४
लटेरी	२४.५	७७.२७	०	०	-२०.१२
सिरोंज	२४.५	७७.३९	+१	+०.२	-१९.२४
कुरवाई	२४.८	७८.१	+२	+०.६	-१७.५६
वामौरा	२४.३	७७.५८	+२	+०.५	-१८.८
पठारी	२३.५६	७८.१२	+३	+०.८	-१७.१२
होशंगावाद	२२.४४	७७.४५	+१	+०.३	-१९.००
बाबई	२२.४४	७७.५९	+२	+०.६	-१८.०४
सुहागपुर	२२.४३	७८.१४	+३	+०.८	-१७.०४
पिपरिया	२२.४५	७८.२१	+४	+०.९	-१६.३६
बनखेडी	२२.४३	७८.१६	+३	+०.८	-१६.५६
पचमढी	२२.२९	७८.२६	+४	+०.१०	-१६.१६
इटारसी	२२.३९	७७.४८	+२	+०.४	-१८.४८
सिवनीमाल	२२.२९	७७.३१	०	+०.१	-१९.५६
हरदा	२२.२२	७७.०८	-१	-०.३	-२१.२८
खिरकिया	२२.१२	७६.५८	-२	-०.५	-२२.०८
टिमरनी	२२.२२	७७.१३	-१	-०.२	-२१.०८

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
राजगढ	२४.१	७६.४२	-३	-०.७	-२३.१२
व्यावरा	२३.५९	७६.५६	-२	-०.५	-२२.१६
नरसिंहगढ	२३.४२	७७.८	-१	-०.३	-२१.२८
कुरावर	२३.२९	७७.८	-१	-०.३	-२१.२८
पचोर	२३.४०	७६.४२	-३	-०.७	-२३.१२
तलेन	२३.३२	७६.४८	-२	-०.६	-२२.४८
सारंगपुर	२३.३५	७६.३२	-४	-०.९	-२३.५२
जीरापुर	२४.००	७५.४६	-७	-०.१७	-२६.५६
खिलचीपुर	२४.२	७६.३४	-३	-०.९	-२३..४४
माचलपुर	२४.८	७६.१८	-४	-०.११	-२४.४८
रायसेन	२३.२१	७७.४९	+२	+०.४	-१८.४४
गैरतगंज	२३.२२	७८.१०	+३	+०.८	-१७.२०
वेगमगंज	२३.३६	७८.२०	+४	+०.९	-१६.४१
सिलवानी	२३.२०	७८.२४	+४	+०.१०	-१६.२४
उदयपुरा	२३.४	७८.३०	+४	+०.११	-१६.००
वरेली	२३.००	७८.१८	+४	+०.९	-१६.४८
ओवेदुल्लागंज	२३.०२	७७.४२	+१	+०.३	-१९.१२
भोपाल	२३.१६	७७.२५	०	०	-२०.२०
वैरसिया	२३.४०	७७.२५	०	०	-२०.२०
सीहोर	२३.१२	७७.८	-१	-०.३	-२१.२८
आष्टा	२३.००	७६.४७	-३	-०.६	-२२.५२
खाचरौद	२३.२५	७५.२०	-८	-०.२१	-२८.४०
इछावर	२३.०१	७७.०१	-२	-०.४	-२१.५६
नसरुल्लागंज	२२.३६	७७.२२	०	-०.१	-२०.३२
शाहगंज	२२.५०	७७.५४	+२	+०.५	-१८.२४
बुधनी	२२.४६	७७.४७	+१	+०.४	-१८.५२
शाजापुर	२३.२७	७६.२१	-४	-०.११	-२४.३६
शुजालपुर	२३.२४	७६.४३	-३	-०.७	-२३.८
मक्सी	२३.२०	७६.३६	-३	-०.८	-२३.३६
कालापीपल	२३.२३	७६.२५	-४	-०.१०	-२४.२०
आगर	२३.४४	७६.०१	-६	-०.१४	-२५.५६
नलखेडा	२३.४६	७६.०६	-५	-०.१३	-२५.३६
सुसनेर	२३.४८	७६.०८	-५	-०.१३	-२५.२८
उज्जैन	२३.११	७५.४६	-७	-०.१७	-२६.५६
वडनगर	२३.१	७५.२८	-८	-०.२०	-२८.८
खाचरौद	२३.२५	७५.२०	-८	-०.२१	-२८.४०
नागदा	२३.३०	७५.२९	-८	-०.१९	-२८.४
महीदपुर	२३.३०	७५.४२	-७	-०.१७	-२७.१२
इन्दौर	२२.४२	७५.५४	-६	-०.१५	-२६.२४
देपालपुर	२२.५०	७५.३३	-७	-०.१९	-२७.४८
सांवेर	२२.५७	७५.५२	-६	-०.१६	-२६.३२
महू	२२.३२	७५.३९	-७	-०.१८	-२७.२४

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
देवास	२२.५९	७६.०३	-५	-०.१४	-२५.४८
टोंक खुर्द	२३.११	७६.१२	-५	-०.१२	-२५.१२
सोनकच्छ	२३.००	७६.२४	-४	-०.१०	-२४.२४
बागली	२२.३९	७६.२१	-४	-०.११	-२४.३६
कन्नौज	२२.४२	७६.४५	-३	-०.७	-२३.००
खातेगांव	२२.३६	७६.५५	-२	-०.५	-२२.२०
धार	२२.३२	७५.२४	-८	-०.२०	-२८.२४
माण्डू	२२.२२	७५.२४	-८	-०.२०	-२८.२४
धर्मपुरी	२२.१५	७५.२०	-८	-०.२१	-२८.४०
मनावर	२२.१४	७५.०८	-९	-०.२३	-२९.२८
कुक्षी	२२.१०	७४.४८	-१०	-०.२६	-३०.४८
वदनावर	२३.०१	७५.१६	-९	-०.२२	-२८.५६
झाबुआ	२२.४४	७४.३७	-११	-०.२८	-३१.३२
थादला	२३.००	७४.३८	-११	-०.२८	-३१.२८
पंटलावाद	२३.००	७४.५०	-१०	-०.२६	-३०.४०
जोवट	२२.२७	७४.३४	-११	-०.२९	-३१.४४
अलीराजपु	२२.१८	७४.२२	-१२	-०.३१	-३२.३२
बडवानी	२२.०२	७४.५६	-१०	-०.२५	-३०.१६
पान सेमल	२१.४२	७४.४३	-११	-०.२७	-३१.०८
मंदसौर	२४.४	७५.४	-९	-०.२४	-२९.४४
सीतामऊ	२४.१	७५.२६	-८	-०.२०	-२८.१६
गरोठ	२४.२२	७५.४८	-६	-०.१६	-२६.४८
भानपुरा	२४.३२	७५.५०	-६	-०.१६	-२६.४०
मल्हारगढ	२४.१८	७५.२	-१०	-०.२४	-२९.५२
नीमच	२४.२७	७४.५६	-१०	-०.२५	-३०.१६
मनासा	२४.३५	७४.१६	-१३	-०.३२	-३२.५६
बुज	२४.४०	७५.३३	-७	-०.१९	-२७.४८
जावद	२४.३५	७४.५७	-१०	-०.२५	-३०.१२
रतलाम	२३.१८	७५.६	-९	-०.२३	-२९.३६
वाजना	२३.२१	७४.३९	-११	-०.२८	-३१.२४
सेलना	२३.२८	७४.५८	-१०	-०.२५	-३०.०८
पिपलौदा	२३.३६	७५.८	-९	-०.२३	-२९.२८
जावरा	२३.४०	७५.१०	-९	-०.२३	-२९.२०
आलोट	२३.५६	७५.४०	-७	-०.१८	-२७.२०
नरसिंहपुर	२२.५७	७९.१२	+७	+०.१८	-१३.१२
गोटेगांव	२३.०२	७९.२४	+८	+०.२०	-१२.२४
करेली	२२.५५	७९.०४	+७	+०.१६	-१३.४४
तेंदूखेडा	२३.८	७८.५५	+६	+०.१५	-१४.२०
गाडरवारा	२२.५२	७८.५०	+६	+०.१४	-१४.४०
खंडवा	२१.४९	७६.२३	-४	-०.१०	-२४.२८
हरसूद	२२.०२	७६.४२	-३	-०.७	-२३.१२
ओमकारेश्वर	२२.१०	७६.११	-५	-०.१२	-२५.१६

भारत के विभिन्न प्रांतों के नगरों की अक्षांश देशान्तर विवोधक सारिणी

संकेत -स्टेंण्डर्ड अंतर मि. से. भारतीय स्टेंण्डर्ड रेखांश ८२.३० से अंतर मिनट सेकण्ड में।

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
पंधाना	२१.४३	७६.१५	-५	-०.१२	-२५.००
बुरहानपुर	२१.१८	७६.०८	-५	-०.१३	-२५.२८
नेपानगर	२१.२८	७६.२३	-४	-०.१०	-२४.२८
खरगौन	२१.४९	७५.३९	-७	-०.१८	-२७.२४
वडवाहा	२२.१३	७६.०१	-६	-०.१४	-२५.५६
सनावद	२२.११	७६.४	-५	-०.१४	-२५.४४
महेश्वर	२२.११	७५.४०	-७	-०.१८	-२७.२०
भीकनगांव	२१.५२	७५.५७	-६	-०.१५	-२६.१२
वैतूल	२१.५५	७७.५४	+२	+०.५	-१८.२४
शाहपुर	२२.१२	७७.५८	+२	+०.५	-१८.०८
आमला	२१.५६	७८.०७	+३	+०.७	-१७.३२
मुलताई	२१.४६	७८.२१	+४	+०.९	-१६.३६
भेंसदेही	२१.२४	७७.४२	+१	+०.३	-१९.१२
छिंदवाडा	२२.०४	७८.५८	+६	+०.१६	-१४.०८
परासिया	२२.११	७८.५०	+६	+०.१४	-१४.४०
जामई	२२.२२	७८.४०	+५	+०.१३	-१५.२०
जुन्नारदेव	२२.०९	७८.३५	+५	+०.१२	-१५.४०
अमरवाडा	२२.२०	७९.१२	+७	+०.१८	-१३.१२
चौरई	२२.२	७९.१८	+८	+०.१९	-१२.४८
सोंसर	२१.२५	७८.५५	+६	+०.१५	-१४.२०
पांढुर्ना	२१.११	७८.३४	+५	+०.११	-१५.४४
कटनी	२३.४७	८०.२९	+१२	+०.३१	-८.०४
विजेराधोग	२३.५९	८०.४१	+१३	+०.३३	-७.१६
धीमरपुरा	२३.२७	८०.२४	+१२	+०.३०	-८.२४
बहुरीबन्द	२३.३५	८०.१४	+११	+०.२८	-९.०४
जवलपुर	२३.१०	७९.५७	+१०	+०.२५	-१०.१२
कटंगी	२१.४६	७९.५०	+१०	+०.२४	-१०.४०
सीहोरा	२३.३०	८०.०९	+११	+०.२७	-९.२४
कुण्डम	२३.१३	८०.२१	+१२	+०.२९	-८.३६
पाटन	२३.१६	७९.४१	+९	+०.२३	-११.१६
मंडला	२३.३५	८०.२८	+१२	+०.३१	-८.८
नैनपुर	२२.२६	८०.१०	+११	+०.२८	-९.२०
निवास	२३.०१	८०.२८	+१२	+०.३१	-८.८
डिंडोरी	२२.५७	८१.०९	+१५	+०.३७	-५.२४
शाहपुर	२३.००	८१.०३	+१५	+०.३६	-५.४८
वालाघाट	२१.४८	८०.१६	+११	+०.२८	-८.५६
वारासिवनी	२१.४५	८०.०८	+११	+०.२७	-९.२८
कटंगी	२१.४६	७९.५०	+१०	+०.२४	-१०.४०
बैहर	२२.०४	८०.३६	+१३	+०.३२	-७.३६
लांझी	२१.३०	८०.३६	+१३	+०.३२	-७.३६
किरनापुर	२१.३५	८०.२६	+१३	+०.३२	-७.३६
सिवनी	२२.०६	७९.३६	+९	+०.२२	-११.३६
लखनादौन	२२.३४	७९.३८	+९	+०.२२	-११.२८
केवलारी	२२.१५	८०.११	+११	+०.२८	-९.१६
बडघाट	२२.०५	७९.४९	+१०	+०.२४	-१०.४४

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
शहडोल	२३.१९	८१.२६	+१६	+०.४०	-४.१६
जैसिंहनगर	२३.३८	७८.३३	+५	+०.११	-१५.४८
उमरिया	२३.३०	८०.५२	+१४	+०.३४	-६.३२
मानपुर	२३.४७	८०.२९	+१२	+०.३१	-८.४
अनूपपुर	२३.०५	८१.४५	+१७	+०.४३	-३.००
कोटमा	२३.१०	८२.००	+१८	+०.४६	-२.००
अमरकंटक	२२.४०	८१.४८	+१८	+०.४४	-२.४८

छत्तीसगढ़ के प्रमुख नगर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
अम्विकापुर	२३.०७	८३.११	+२३	+०.५८	+२.४४
भिलाई	२१.११	८१.२०	+१६	+०.३९	-४.४०
विलासपुर	२२.०५	८२.१३	+१९	+०.४८	-१.०८
दुर्ग	२१.११	८१.२१	+१६	+०.३९	-४.३६
जगदलपुर	१९.०५	८२.०४	+१९	+०.४६	-१.४४
रायगढ	२१.५४	८३.२६	+२४	+१.०	+३.४४
रायपुर	२१.१५	८१.३७	+१७	+०.४२	-३.३२

राजस्थान

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
अलवर	२७.३२	७६.३५	-३	-०.८	-२३.४०
वांसवाडा	२३.३२	७४.२८	-१२	-०.३०	-३२.८
वरन	२५.८	७६.३६	-३	-०.८	-२३.३६
वाढमेर	२५.४३	७१.२५	-२४	-१.०	-४४.२०
वीकानेर	२८.१	७३.२२	-१६	-०.४१	-३६.३२
बूंदी	२५.२८	७५.४२	-७	-०.१७	-२७.१२
भरतपुर	२७.१३	७७.२९	०	-०.१	-२०.४
भीलवाडा	२५.२३	७४.३९	-११	-०.२८	-३१.२४
चित्तौडगढ	२४.५३	७४.३८	-११	-०.२८	-३१.२८
चुरू	२८.१८	७५.००	-१०	-०.२४	-३०.००
दौसा	२६.५१	७६.२१	-४	-०.११	-२४.३६
डूंगरपुर	२३.५५	७३.४८	-१४	-०.३६	-३४.४८
गंगानगर	२९.५४	७३.५६	-१४	-०.३५	-३४.१६
हनुमानगढ	२९.३३	७४.२१	-१२	-०.३१	-३२.३६
जयपुर	२६.५३	७५.५०	-६	-०.१६	-२६.४०
जैसलमेर	२६.५२	७०.५५	-२६	-१.५	-४६.२०
जालौर	२५.२१	७२.४३	-१९	-०.४७	-३९.८
झालावाड	२४.३६	७६.०९	-५	-०.१३	-२५.२४
झुनझुन	२८.०५	७५.३०	-८	-०.१९	-२८.००
जोधपुर	२६.१८	७३.०८	-१७	-०.४३	-३७.२८
करौली	२६.३०	७७.०३	-१	-०.४	-२१.४८
कोटा	२५.११	७५.५८	-६	-०.१५	-२६.८
पाली	२५.४६	७३.२६	-१६	-०.४०	-३६.१६
सवाईमाधौ	२६.००	७६.२८	-४	-०.१०	-२४.८
सीकर	२७.३३	७५.१२	-९	-०.२२	-२९.१२
टोंक	२६.१०	७५.५०	-६	०.१६	-२६.४०
उदयपुर	२४.३०	७५.५०	-६	-०.१६	-२६.४०

उत्तर प्रदेश के प्रमुख नगर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
झांसी	२५.२७	७८.३४	+५	+०.११	-१५.४४
कोंच	२५.४७	७९.६	+७	+०.१७	-१३.३६
जालौन	२६.९	७९.०२	+६	+०.१६	-१३.५२
ललितपुर	२४.४२	७८.२४	+४	+०.१०	-१६.२४
बरूआसाग	२५.२३	७८.४२	+५	+०.१३	-१५.१२
वबीना	२५.४८	७८.६	+३	+०.७	-१७.३६
मऊरानीपुर	२५.१५	७९.११	+७	+०.१८	-१३.१६
आगरा	२७.११	७८.०२	+२	+०.६	-१७.५२
अलीगढ	२७.५४	७८.०४	+३	+०.६	-१७.४४
इलाहावाद	२५.२८	८१.५२	+१८	+०.४४	-२.३२
अयोध्या	२६.४८	८२.१४	+१९	+०.४८	-१.०४
आजमगढ	२६.०३	८३.१३	+२३	+०.५८	+२.५२
वाघपत	२८.५६	७७.१४	-१	-०.२	-२१.०४
वहराईच	२७.३५	८१.३६	+१७	+०.४२	-३.३६
वलिया	२५.४४	८४.११	+२७	+१.८	+६.४४
वलरामपुर	२३.०७	८६.१३	+३५	+१.२८	+१४.५२
वंडा	२५.२०	८०.२२	+१२	+०.२९	-८.३२
बारावंकी	२६.५६	८१.१३	+१५	+०.३८	-५.८
वरेली	२८.२१	७९.२३	+८	+०.२०	-१२.२८
वस्ती	२६.४८	८२.४४	+२१	+०.५३	-०.५६
विजनौर	२९.२३	७८.११	+३	+०.८	-१७.१६
वुढौन	२८.०२	७९.०७	+७	+०.१७	-१३.३२
बुलंदशहर	२८.२४	७७.५४	+२	+०.५	-१८.२४
चांदौली	२८.२७	७८.४९	+६	+०.१४	-१४.४४
चित्रकूट	२५.१३	८०.४८	+१४	+०.३४	-६.४८
देवरिया	२७.०५	८१.१०	+१५	+०.३८	-५.२०
एटा	२७.३३	७८.३९	+५	+०.१२	-१५.२४
इटावा	२६.४७	७९.०२	+६	+०.१६	-१३.५२
फैजावाद	२६.४६	८२.०८	+१९	+०.४७	-१.२८
फरूखावाद	२७.२३	७९.३५	+९	+०.२२	-११.४०
फतेहपुर	२५.५५	८०.४७	+१३	+०.३४	-६.५२
फिरोजावाद	२७.०९	७८.२४	+४	+०.१०	-१६.२४
गाजियावाद	२८.४०	७७.२८	०.०	०.०	-२०.८
गाजीपुर	२५.३६	८३.३६	+२५	+१.२	+४.२४
गौंडा	२७.०९	८१.५७	+१८	+०.४५	-२.१२
गोरखपुर	२६.४५	८३.२२	+२४	+०.५९	+३.२८
हमीरपुर	२५.५७	८०.०८	+११	+०.२७	-९.२८
हरदोई	२७.२०	८०.१०	+११	+०.२८	-९.२०
हाथरस	२७.३६	७८.०६	+३	+०.७	-१७.३६
जालौन	२६.०९	७९.२०	+८	+०.१९	-१२.४०
जौनपुर	२५.४६	८२.४२	+२१	+०.५३	+०.४८
कन्नौज	२७.०२	७९.५५	+१०	+०.२५	-१०.२०
कानपुर	२६.२९	८०.२१	+१२	+०.२९	-८.३६

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
कौशम्वी	२५.२०	८१.२४	+१६	+०.४०	-४.२४
लखमीपुर	२७.५७	८०.४७	+१३	+०.३४	-६.५२
लखनऊ	२६.५१	८०.५६	+१४	+०.३५	-६.१६
महाराजगंज	२७.०९	८३.३४	+२५	+१.१	+४.१६
महोवा	२५.१८	७९.५३	+१०	+०.२५	-१०.२८
मैनपुरी	२७.१४	७९.०३	+७	+०.१६	-१३.४८
मथुरा	२७.२८	७७.४२	+१	+०.३	-१९.१२
मउ	२५.५७	८३.३३	+२५	+१.१	+४.१२
मेरठ	२९.०१	७७.४५	+१	+०.३	-१९.००
मिरजापुर	२५.०९	८२.३३	+२१	+०.५१	+०.१२
मुरादावाद	२८.५१	७८.४७	+५	+०.१४	-१४.५२
मुजफ्फरनगर	२९.२८	७७.४४	+१	+०.३	-१९.४
पीलीभीत	२८.३८	७९.५१	+१०	+०.२४	-१०.३६
प्रतापगढ	२५.५२	८२.०२	+१८	+०.४६	-१.५२
रायवरेली	२६.१४	८१.१३	+१५	+०.३८	-५.८
रामपुर	२८.४६	७९.०२	+६	+०.१६	-१३.५२
सहारनपुर	२९.५८	७७.३२	०.०	-०.१	-१९४२
सीतापुर	२५.११	८०.५२	+१४	+०.३४	-६.३२
सुल्तानपुर	२६.१६	८२.०७	+१९	+०.४७	-१.३२
उन्नाव	२६.३२	८०.३०	+१२	+०.३१	-८.०
वनारस	२५.१९	८३.०१	+२२	+०.५६	+२.४

देहली, पंजाब, हरियाणा, हिमांचल

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
देहली	२८.३९	७७.१३	-१	-०.२	-२१.०८
न्यूदेहली	२८.३७	७७.१३	-१	-०.२	-२१.०८
अम्वाला	३०.२३	७६.४०	-३	-०.८	-२३.२०
अमृतसर	३१.३८	७४.५३	-१०	-०.२५	-३०.२८
भटिंडा	३०.१२	७४.५६	-१०	-०.२५	-३०.१६
विलासपुर	३१.२०	७६.४५	-३	-०.७	-२३.००
चंडीगढ	३०.४४	७६.५३	-२	-०.५	-२२.२८
फरीदावाद	२८.२५	७७.२२	०.०	-०.१	-२०.३२
फरीदकोट	३०.४०	७४.५७	-१०	-०.२५	-३०.१२
गुरदासपुर	३२.०३	७५.२७	-८	-०.२०	-२८.१२
गुडगांव	२८.३७	७७.०४	-१	-०.४	-२१.४४
होशियारपुर	३१.३२	७५.५७	-६	-०.१५	-२६.१२
जालंधर	३१.२०	७५.३४	-७	-०.१७	-२७.४४
लुधियाना	३०.५५	७५.५२	-६	-०.१६	-२६.३२
नंगल	३१.२३	७६.२३	-४	-०.१०	-२४.२८
पानीपत	२९.२३	७७.०१	-२	-०.४	-२१.५६
पठानकोट	३२.१७	७५.४०	-७	-०.१८	-२७.२०
पटियाला	३०.१९	७६.२४	-४	-०.१०	-२४.२४
रामपुर	३१.२६	७७.३८	+१	+०.२	-१९.२८
रोहतक	२८.५४	७६.३४	-३	-०.९	-२३.४४
शिमला	३१.०६	७७.१०	-१	-०.३	-२१.२०
थानेश्वर	२९.५९	७६.४९	-२	-०.६	-२२.४४

उत्तरांचल

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
अल्मोडा	२९.३६	७९.४०	+९	+०.२३	-११.२०
वद्रीनाथ	३०.४४	७९.३२	+८	+०.२१	-११.५२
देहरादून	३०.१९	७८.०३	+३	+०.६	-१७.४८
गंगोत्री	३०.५६	७९.०२	+६	+०.१६	-१३.५२
हरिद्वार	२९.५६	७८.०८	+३	+०.७	-१७.२८
जमनोत्तरी	३१.०१	७८.२७	+४	+०.१०	-१६.१२
केदारनाथ	३०.४४	७९.०४	+७	+०.१६	-१३.४४
मसूरी	३०.२७	७८.०६	+३	+०.७	-१७.३६
नैनीताल	२९.२२	७९.२७	+८	+०.२०	-१२.१२
रानीखेत	२९.३८	७९.२८	+८	+०.२१	-१२.०८
रूडकी	२९.५२	७७.५३	+२	+०.५	-१८.२८
रूद्रप्रयाग	३०.१६	७८.५९	+६	+०.१६	-१४.०४

जम्मू एवं कश्मीर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
अमरनाथ	३४.१२	७५.३०	-८	-०.१९	-२८.००
अनंतनाग	३३.४४	७५.०९	-९	-०.२३	-२९.२४
वरमूला	३४.२४	७४.२४	-१२	-०.३०	-३२.२४
गिलगिट	३५.५५	७४.२०	-१२	-०.३१	-३२.४०
गुलमर्ग	३०.०३	७४.२३	-१२	-०.३०	-३२.२८
जम्बू	३२.४३	७४.५२	-१०	-०.२६	-३०.३२
कारगिल	३४.३१	७६.१३	-५	-०.१२	-२५.०८
लेह	३४.१०	७७.३५	+१	+०.२	-१९.४०
श्रीनगर	३४.०६	७४.४८	-१०	-०.२६	-३०.४८
ऊधमपुर	३२.५६	७५.०८	-९	-०.२३	-२९.२८

गुजरात एवं गोवा

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
अहमदावाद	२३.०२	७२.३६	-१९	-०.४८	-३९.३६
भावनगर	२१.४६	७२.११	-२१	-०.५२	-४१.१६
भुज	२३.१६	६९.४८	-३०	-१.१६	-५०.४८
भडोंच	२१.४१	७३.०१	-१८	-०.३७	-३७.५६
दमन	२०.२५	७२.५३	-१८	-०.४५	-३८.२८
दीव	२०.४२	७१.०१	-२६	-१.४	-४५.५६
द्वारका	२२.१४	६८.५८	-३४	-१.२५	-५४.०८
गांधीनगर	२३.१५	७२.४५	-१९	-०.४७	-३९.००
जामनगर	२२.२७	७०.०७	-२९	-१.१३	-४९.३२
जूनागढ	२१.३३	७०.२७	-२८	-१.१०	-४८.१२
कंडला	२१.२१	७१.१७	-२५	-१.१	-४४.५२
खम्वात	२२.०३	७२.०६	-२१	-०.५३	-४१.३६
मोरबी	२२.४९	७०.४९	-२६	-१.६	-४६.४४
नादेड	२२.०७	७२.०९	-२१	-०.५३	-४१.२४
ओखा	२२.२४	६९.०६	-३३	-१.२३	-५३.३६
पोरबंदर	२१.३८	६९.३७	-३१	-१.१८	-५१.३२
राजकोट	२२.१८	७०.४८	-२६	-१.६	-४६.४८
सुरेन्द्रनगर	२२.४३	७१.३३	-२३	-०.५९	-४३.४८
वडौदरा	२२.१८	७३.१३	-१७	-०.४२	-३७.०८

महाराष्ट्र

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
अहमदनगर	१९.१५	७४.४८	-१०	-०.२६	-३०.४८
आजन्त	२०.३३	७५.४८	-६	-०.१६	-२६.४८
अकोला	२०.४२	७७.०२	-२	-०.४	-२१.५२
अलीवाग	१८.३९	७२.५४	-१८	-०.४५	-३८.२४
अमरावती	२०.५६	७७.४५	+१	+०.३	-१९.००
औरंगावाद	१९.५२	७५.१८	-८	-०.२१	-२८.४८
भुसावल	२१.०२	७५.४७	-७	-०.१६	-२६.५२
ऐलोरा	२०.०२	७५.१३	-९	-०.२२	-२९.०८
जलगांव	२१.०३	७५.४०	-७	-०.१८	-२७.२०
गौंदिया	२१.२३	८०.१४	+११	+०.२८	-९.४
धूलिया	२०.५३	७४.५०	-१०	-०.२६	-३०.४०
कल्याण	१९.१४	७३.१०	-१७	-०.४३	-३७.२०
कोल्हापुर	१६.४२	७४.१४	-१३	-०.३२	-३३.०४
मुम्बई	१८.५८	७२.५१	-१८	-०.४६	-३८.३६
नागपुर	२१.०९	७९.०५	+७	+०.१७	-१३.४०
नादेड	१९.०९	७७.२७	०.०	०.०	-२०.१२
नासिक	२०.०२	७८.५०	+६	+०.१४	-१४.४०
उस्मानावाद	१८.१२	७६.०३	-५	-०.१४	-२५.४८
पुणे(पूना)	१८.३१	७३.५३	-१४	-०.३५	-३४.२८
रत्नागिरि	१७.०८	७३.१९	-१६	-०.४१	-३६.४४
सतारा	१७.४२	७४.००	-१४	-०.३४	-३४.००
शोलापुर	१७.३९	७५.५५	-६	-०.१५	-२६.२०
वर्धा	२०.४४	७८.३७	+५	+०.१२	-१५.३२

भारत के अन्य प्रमुख शहर

स्थान	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर मि.	देशान्तर घटि.	स्टैंण्डर्ड अंतरमि.से.
पटना-विहार	२५.३६	८५.०८	+३१	+१.१७	+१०.३२
कोलकाता	२२.३५	८८.२३	+४४	+१.५०	+२३.३२
गोहाटी-आसाम	२६.१०	९१.४५	+५७	+२.२३	+३७.००
शिलांग-मे.	२५.३५	९१.५३	+५८	+२.२५	+३७.३२
रांची-झार.	२३.२२	८५.२१	+३२	+१.१९	+११.२४
इम्फाल-मणी	२४.४८	९३.५७	+६६	+२.४५	+४५.४८
भुवनेश्वर	२०.१५	८५.५०	+३४	+१.२४	+१३.२०
वेंगलौर	१२.५८	७७.३६	+१	+०.२	-१९.३६
चेन्नई	१३.१४	८०.१५	+११	+०.२८	-९.००
रामेश्वरम्	९.१८	७९.१८	+८	+०.१९	-१२.४८
तिरूवनंतपुरम्	८.३१	७७.००	-२	-०.४	-२२.००
हैदरावाद	१७.२६	७८.२७	+४	+०.१०	-१६.१२
विशाखापटनम्	१७.४३	८३.१९	+२४	+०.५९	+३.१६
पोडिचेरी	११.५६	७९.५०	+१०	+०.२४	-१०.४०
जगन्नाथपुरी	१९.४८	८५.५०	+३४	+१.२४	+१३.२०
राउरकेला	२२.२५	८४.५२	+३०	+१.१४	+९.२८
पोर्टब्लेयर	११.४०	९२.४६	+६१	+२.२४	+४१.०४
पणजी गोवा	१५.२९	७३.४९	-१४	-०.३६	-३४.४४

चर सारिणी (८ अक्षांस से ३६ अक्षांस तक) (चर फ ल मिनट में प्रदर्शित है जो कि उत्तर क्रान्ति में धन व दक्षिण क्रान्ति में ऋ ण होता है)

सूर्य क्रान्ति

	अक्षांस																												
अंश	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
०१	०२	०२	०२	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१
०२	०३	०३	०३	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०१	०१	०१	०१	०१	०१	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२
०३	०४	०४	०४	०४	०३	०३	०३	०३०	०३	०२	०२	०२	०२	०१	०१	०१	०१	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०३	०३
०४	०६	०५	०५	०५	०४	०४	०४	०४	०३	०३	०२	०२	०२	०२	०१	०१	०१	००	००	००	००	०१	०१	०१	०२	०२	०३	०३	०४	०४
०५	०७	०७	०६	०६	०५	०५	०५	०५	०४	०३	०३	०३	०३	०२	०२	०१	०१	०१	००	००	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०४	०४	०४	०५
०६	०८	०८	०८	०७	०६	०६	०६	०५	०५	०४	०४	०३	०३	०३	०२	०२	०१	०१	००	००	०१	०१	०२	०२	०३	०३	०५	०५	०५	०६
०७	१०	०९	०९	०८	०८	०७	०७	०६	०५	०५	०४	०४	०४	०३	०२	०२	०१	०१	००	००	०१	०१	०२	०३	०३	०४	०६	०६	०६	०७
०८	११	१०	१०	१०	०९	०८	०८	०७	०६	०५	०५	०४	०४	०४	०३	०२	०२	०१	००	००	०१	०२	०३	०३	०४	०५	०६	०६	०७	०८
०९	१३	१२	१२	११	१०	०९	०९	०८	०७	०६	०५	०५	०५	०४	०३	०३	०२	०१	००	००	०१	०२	०३	०४	०४	०६	०६	०७	०८	०९
१०	१४	१४	१३	१२	११	११	११	०९	०८	०७	०६	०५	०५	०५	०४	०३	०२	०१	००	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०
११	१६	१५	१४	१३	१२	१२	१२	१०	०८	०८	०७	०६	०६	०५	०४	०३	०२	०१	००	०१	०१	०२	०४	०४	०६	०६	०८	०९	१०	११
१२	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१३	११	०९	०८	०७	०६	०६	०५	०४	०३	०२	०१	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०९	१०	११	१२
१३	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१४	१२	१०	०९	०८	०७	०७	०६	०५	०४	०३	०१	००	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०८	१०	११	१२	१३
१४	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१५	१३	११	०९	०८	०७	०७	०६	०५	०४	०३	०२	००	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०९	१०	१२	१३	१४
१५	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१६	१४	१२	१०	०९	०८	०८	०७	०५	०४	०३	०२	००	०१	०२	०४	०५	०७	०८	१०	११	१३	१४	१५
१६	२३	२२	२१	२०	१९	१७	१७	१५	१२	११	१०	०८	०८	०७	०६	०४	०३	०२	००	०१	०२	०४	०५	०७	०९	१०	१२	१४	१५	१६
१७	२४	२३	२२	२१	२०	१८	१८	१६	१३	१२	१०	०९	०९	०८	०६	०५	०३	०२	००	०१	०३	०४	०६	०८	०९	११	१३	१५	१६	१७
१८	२६	२४	२३	२२	२१	१९	१९	१७	१४	१२	११	१०	१०	०८	०६	०५	०३	०२	००	०१	०३	०५	०६	०८	१०	१२	१४	१६	१७	१८
१९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	२०	१८	१५	१३	१२	१०	१०	०८	०७	०५	०४	०२	००	०१	०३	०५	०७	०९	११	१३	१५	१७	१८	१९
२०	२९	२८	२६	२५	२३	२१	२१	१८	१५	१४	१२	११	११	०९	०७	०५	०४	०२	००	०२	०३	०५	०७	०९	११	१३	१६	१८	२०	२०
२१	३१	२९	२८	२६	२४	२३	२३	१९	१६	१४	१३	११	११	०९	०७	०६	०४	०२	००	०२	०४	०६	०८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२१
२२	३३	३१	२९	२८	२६	२४	२४	२०	१७	१५	१३	१२	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	०२	०४	०६	०८	११	१३	१५	१७	२०	२३	२२
२३	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२५	२१	१८	१६	१४	१२	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	०२	०४	०७	०९	११	१३	१६	१८	२१	२४	२३
२४	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२६	२३	१९	१७	१५	१३	१३	११	०९	०७	०४	०२	००	०२	०५	०७	०९	१२	१४	१९	१९	२२	२५	२४
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	

1. देशाद्वतर – पृद्ववी —े उ●ार–दक्षिछ्चा दिशा में खीची गई —ाल्पनि—ँ रेखा पर आने वाले समस्त स्थानों —ा ए—ँ ही रखांश होता है। उदाहरछ्चा —े लिये ●वालियर —ा रेखांश ७८°१०श्है जो ि—ँ उ●ार में —ाश्मीर में दक्षिछ्चा में मद्रास में भी है। इस रेखांश वाले स्थानों से पश्चिम दिशा में चलने पर ए—ँ अंश रेखांश —म हो जाता है। इसी प्र—ार पूर्व में चलने पर ए—ँ अंश बढ़ जाता है। ए—ँ अंश रेखांश —म होने पर सुर्योदय या ल●न समय में चार मिनट —म हो जाते है। इसी प्र—ार रेखांश बढ़ने पर चार मिनट समय बढ़ जाता है। यह समयांतर देशांतर संस्—ार —हलाता है।

2. चराद्वतर – भूम●य रेखा —े समानाद्वतर पूर्व पश्चिम दिशा में —ाल्पनि—ँ रेखाएं अक्षांश —हलाती है। इस रेखा पर पश्चिम से पूर्व त—ँ —े समस्त स्थानों —ा ए—ँ ही अक्षांश होता है। ए—ँ अक्षांश रेखा से उ●ार या दक्षिछ्चा —ी ओर दूसरी अक्षांश रेखा —ी ओर चलने में सूर्योदय या ल●न —े समय में जो समयाद्वतर आता है। वह चराद्वतर —हलाता है। चराद्वतर —ा मान अक्षांश एवं सूर्य —्रांति पर निर्भर रहता है। इस पंचाग में प्रतिदिन —ी सूर्य —्रांती दी गई है। जिस दिन —ा चराद्वतर ●ाात —रना हो। उस दिन पंचाग में —्रांति देख—र उपरोक्त सारछ्चाी —ी प्रथम खड़ी पं●क्ष में —्रांति —े सामने एवं अपने स्थाने —े अक्षांश —े नीचे —ोष्ठ—ँ में जो अं—ँ मिले वह चर मिनट में होगा। यदि सूर्य —्रांति उ●ार हो तो चराद्वतर ज़्ल (+) ●ानाक्क—ँ होता है। दक्षिछ्चा —्रांति में (–) ऋछ्चाक्क—ँ होता है। इसी प्र—ार पंचांग स्थान अक्षांस —ा चर नि—ालने पर दोंनों अक्षासों —े वीच चराद्वतर होता है। जिनमें पलाक्क—ँ चराद्वतर —ी आवश्य—ता हो वे चराद्वतर ज़्ल —ो ढाई गुछ्चा —र ले। उदाहरछ्चा —े लिये १ जनवरी —ो —्राद्वित २३.२ दक्षिछ्चा है। पंचांग स्थान —ा अक्षांस २६ है एवं १९ अक्षांस पर चराद्वतर नि—ालना है। उपरोक्त चर सारिछ्चाी में २३ —्राद्वित —े सामने १९ अक्षांस पर चर १२ मिनट मिला। इसी प्र—ार पंचांग स्थान —े अक्षांस २६ पर उस दिन २३ —्राद्वित —े सामने चर ०० मिला। इन दोनों में १२ मिनट —ा अंतर चराद्वतर हुआ। चूं—ि—ँ १ जनवरी —ो —्राद्वित दक्षिछ्चा है, इसलिए चराद्वतर ऋछ्च (–१२) होगा।

3. इष्टाद्वतर – देशाद्वतर एवं चराद्वतर —ा योग इष्टाद्वतर होता है। माना ि—ँ ि—सी स्थान —ा देशांतर –४ मिनट है तथा ि—सी दिन चराद्वतर +२ मिनट है तो इष्टाद्वतर (– ४ + २) = (– २) मिनट होगा तब स्थानीय सूर्योदय बनाने —े लिए पंचाग में दिये गये सूर्यादय में से २ मिनट ●ाटाना चाहिए।

दैनिक सूर्य क्रान्ति (अंश कला में) धन (+) चिन्ह में उत्तर तथा ऋ ण (-) चिन्ह में दक्षिण क्रान्ति है।

दिनांक	जनवरी		फरवरी		मार्च		अप्रैल		मई		जून		जुलाई		अगस्त		सितम्बर		अक्टूबर		नवम्बर		दिसम्बर		दिनांक
१	-२३	२	-१७	१५	-७	४७	+४	२५	+१४	५९	+२२	०	+२३	८	+१८	६	+८	२४	-३	४	-१४	२०	-२१	४५	१
२	-२२	५८	-१६	५८	-७	२४	+४	४८	+१५	१७	+२२	८	+२३	४	+१७	५१	+८	२	-३	२७	-१४	३९	-२१	५४	२
३	-२२	५२	-१६	४०	-७	२	+५	११	+१५	३५	+२२	१६	+२२	५९	+१७	३५	+७	४०	-३	५०	-१४	५८	-२२	३	३
४	-२२	४६	-१६	२३	-६	३९	+५	३४	+१५	५२	+२२	२३	+२२	५४	+१७	१९	+७	१८	-४	१४	-१५	१७	-२२	१२	४
५	-२२	४०	-१६	५	-६	१६	+५	५७	+१६	९	+२२	३०	+२२	४९	+१७	३	+६	५६	-४	३७	-१५	३५	-२२	२०	५
६	-२२	३३	-१५	४६	-५	५२	+६	२०	+१६	२७	+२२	३७	+२२	४३	+१६	४७	+६	३३	-४	६०	-१५	५३	-२२	२७	६
७	-२२	२६	-१५	२८	-५	२९	+६	४३	+१६	४३	+२२	४३	+२२	३७	+१६	३१	+६	११	-५	२३	-१६	११	-२२	३४	७
८	-२२	१८	-१५	९	-५	६	+७	५	+१६	६०	+२२	४९	+२२	३१	+१६	१४	+५	४९	-५	४६	-१६	२९	-२२	४१	८
९	-२२	१०	-१४	५०	-४	४२	+७	२७	+१७	१६	+२२	५४	+२२	२४	+१५	५७	+५	२६	-६	९	-१६	४६	-२२	४७	९
१०	-२२	२	-१४	३१	-४	१९	+७	५०	+१७	३२	+२२	५९	+२२	१६	+१५	३९	+५	३	-६	३१	-१७	३	-२२	५३	१०
११	-२१	५३	-१४	१२	-३	५५	+८	१२	+१७	४८	+२३	४	+२२	९	+१५	२२	+४	४१	-६	५४	-१७	२०	-२२	५८	११
१२	-२१	४४	-१३	५२	-३	३२	+८	३४	+१८	३	+२३	८	+२२	१	+१५	४	+४	१८	-७	१७	-१७	३७	-२३	३	१२
१३	-२१	३४	-१३	३२	-३	८	+८	५६	+१८	१८	+२३	११	+२१	५२	+१४	४६	+३	५५	-७	३९	-१७	५३	-२३	८	१३
१४	-२१	२४	-१३	१२	-२	४५	+९	१८	+१८	३३	+२३	१५	+२१	४४	+१४	२७	+३	३२	-८	२	-१८	९	-२३	११	१४
१५	-२१	१३	-१२	५१	-२	२१	+९	३९	+१८	४७	+२३	१८	+२१	३४	+१४	९	+३	९	-८	२४	-१८	२४	-२३	१५	१५
१६	-२१	२	-१२	३१	-१	५७	+१०	०	+१९	१	+२३	२०	+२१	२५	+१३	५०	+२	४६	-८	४६	-१८	४०	-२३	१८	१६
१७	-२०	५०	-१२	१०	-१	३४	+१०	२२	+१९	१५	+२३	२२	+२१	१५	+१३	३१	+२	२३	-९	८	-१८	५४	-२३	२१	१७
१८	-२०	३९	-११	४९	-१	१०	+१०	४३	+१९	२९	+२३	२४	+२१	५	+१३	१२	+१	५९	-९	३०	-१९	९	-२३	२३	१८
१९	-२०	२६	-११	२८	-०	४६	+११	४	+१९	४२	+२३	२५	+२०	५४	+१२	५३	+१	३६	-९	५२	-१९	२३	-२३	२४	१९
२०	-२०	१४	-११	६	-०	२३	+११	२४	+१९	५४	+२३	२६	+२०	४३	+१२	३३	+१	१३	-१०	१४	-१९	३७	-२३	२५	२०
२१	-२०	१	-१०	४५	+०	०	+११	४५	+२०	७	+२३	२६	+२०	३२	+१२	१३	+०	५०	-१०	३५	-१९	५१	-२३	२६	२१
२२	-१९	४७	-१०	२३	+०	२५	+१२	५	+२०	१९	+२३	२६	+२०	२०	+११	५३	+०	२६	-१०	५६	-२०	४	-२३	२६	२२
२३	-१९	३४	-१०	१	+०	४८	+१२	२५	+२०	३१	+२३	२६	+२०	८	+११	३३	+०	३	-११	१८	-२०	१७	-२३	२६	२३
२४	-१९	२०	-९	३९	+१	१२	+१२	४५	+२०	४२	+२३	२५	+१९	५६	+११	१३	-०	२०	-११	३९	-२०	२९	-२३	२५	२४
२५	-१९	५	-९	१७	+१	३६	+१३	५	+२०	५३	+२३	२४	+१९	४३	+१०	५२	-०	४४	-११	५९	-२०	४१	-२३	२४	२५
२६	-१८	५०	-८	५५	+१	५९	+१३	२५	+२१	४	+२३	२२	+१९	३०	+१०	३१	-१	७	-१२	२०	-२०	५३	-२३	२२	२६
२७	-१८	३५	-८	३२	+२	२३	+१३	४४	+२१	१४	+२३	२०	+१९	१७	+१०	१०	-१	३१	-१२	४१	-२१	४	-२३	२०	२७
२८	-१८	२०	-८	१०	+२	४६	+१४	३	+२१	२४	+२३	१८	+१९	३	+९	४९	-१	५४	-१३	१	-२१	१५	-२३	१८	२८
२९	-१८	४			+३	१०	+१४	२२	+२१	३४	+२३	१५	+१८	४९	+९	२८	-२	१७	-१३	२१	-२१	२६	-२३	१५	२९
३०	-१७	४८			+३	३३	+१४	४०	+२१	४३	+२३	११	+१८	३५	+९	७	-२	४१	-१३	४१	-२१	३६	-२३	११	३०
३१	-१७	३१			+३	५६			+२१	५२			+१८	२१	+८	४५			-१४	०			-२३	७	३१

विभिन्न नगरों में लग्न प्रवेश समय संस्कार सारणी (मिनट में)

इस पंचांग के पक्ष पृष्ठ पर प्रतिदिन भोपाल में लग्नों का प्रारंभ समय दिया गया है। अन्य शहरों में लग्न प्रारंभ समय जानने के लिये निम्न सारणी में लिखे मिनट चिन्ह के अनुसार संस्कार करें। अन्य शहरों के लिए इस सारणी में दिये गये निकटतम शहर या अक्षांश सारणी में दिये गये देशान्तर मिनट का उपयोग करें।

शहर	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मक	कुंभ	मीन
इन्दौर	७	७	७	७	७	६	६	५	५	५	६	६
देवास	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५
धार	९	९	१०	९	९	८	७	७	७	७	७	८
झाबुआ	१२	१२	१२	१२	१२	११	११	१०	१०	१०	११	११
उज्जैन	७	७	७	७	७	७	७	६	६	६	७	७
मंदसौर	९	८	८	८	८	९	१०	११	११	११	१०	१०
ग्वालियर	-५	-८	-९	-९	-६	-४	-१	२	३	३	०	-२
दतिया	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-२	०	१	०	-१	-४
भिंड	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-३	०	२	१	-२	-५
मुरैना	-५	-८	-१०	-९	-६	-३	०	३	४	४	१	-२
शिवपुरी	-३	-५	-६	-६	-४	-२	१	३	४	३	२	-१
गुना	-१	-२	-२	-२	-१	-०	२	३	३	३	२	१
राजगढ	२	२	१	१	२	३	३	४	४	४	४	३
सागर	-६	-६	-६	-६	-६	-५	-५	-४	-४	-४	-५	-५
दमोह	-९	-९	-१०	-९	-९	-८	-८	-७	-७	-७	-८	-८
छतरपुर	-१०	-११	-१२	-१२	-११	-९	-७	-६	-५	-६	-७	-८
टीकमगढ	-७	-८	-९	-८	-७	-६	-५	-३	-३	-३	-४	-५
रीवा	-१७	-१८	-१८	-१८	-१७	-१६	-१५	-१३	-१३	-१३	-१४	-१५
पन्ना	-१२	-१४	-१४	-१४	-१३	-१२	-१०	-९	-८	-८	-९	-११
कटनी	-१३	-१३	-१३	-१३	-१३	-१२	-१२	-११	-११	-११	-१२	-१२
जबलपुर	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०
सिवनी	-८	-७	-६	-७	-७	-९	-१०	-११	-११	-११	-१०	-९
बालाघाट	-१०	-९	-८	-९	-१०	-११	-१३	-१४	-१४	-१४	-१३	-१२
छिंदवाडा	-५	-४	-४	-४	-५	-६	-७	-८	-९	-८	-८	-६
नरसिंहपुर	-७	-७	-६	-७	-७	-७	-७	-८	-८	-८	-७	-७
बैतूल	-१	०	१	१	०	-२	-३	-४	-५	-४	-३	-२
हरदा	२	३	३	३	२	१	०	०	-१	-१	०	-१
खंडवा	५	६	७	७	६	४	३	२	१	१	२	४
खरगौन	८	९	१०	१०	९	७	६	५	४	४	५	७
विदिशा	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-२
गंजवासौदा	-३	-३	-३	-३	-३	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-२

शहर	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मक	कुंभ	मीन
रायपुर	-१५	-१४	-१३	-१३	-१५	-१६	-१८	-२०	-२१	-२१	-१९	-१७
विलासपुर	-१८	-१७	-१७	-१७	-१८	-१९	-२०	-२१	-२२	-२१	-२१	-१९
जगदलपुर	-१५	-१२	-१०	-११	-१४	-१८	-२२	-२५	-२७	-२६	-२३	-१९
झांसी	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३	-१	०	-१	-२	-४
इलाहाबाद	-२०	-२१	-२२	-२२	-२०	-१८	-१६	-१४	-१३	-१४	-१५	-१७
बनारस	-२४	-२६	-२७	-२६	-२५	-२३	-२१	-१९	-१८	-१८	-२०	-२२
अयोध्या	-२२	-२५	-२७	-२६	-२३	-२०	-१६	-१३	-१२	-१२	-१५	-१९
गोरखपुर	-२७	-३०	-३१	-३१	-२८	-२५	-२१	-१८	-१६	-१७	-२०	-२३
मुंबई	२२	२५	२७	२६	२३	१९	१५	११	१०	१०	१३	१७
पुणे (पूना)	१८	२२	२४	२३	१९	१५	११	७	६	७	९	१३
नागपुर	-५	-३	-२	-३	-४	-६	-८	-१०	-११	-११	-९	-७
नासिक	-३	-११	१	०	-२	-५	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६
जयपुर	३	०	-१	-१	२	६	९	१२	१४	१३	११	७
भरतपुर	-३	-७	-९	-८	-५	-१	३	६	८	७	४	१
जोधपुर	१५	१२	११	११	१४	१७	२०	२२	२४	२३	२१	१८
दिल्ली	-४	-८	-११	-१०	-६	०	५	१०	१३	११	७	२
हरिद्वार	-८	-१४	-१८	-१६	-११	४	३	९	१२	१०	५	-१

दिनांक अनुसार दैनिक वेलान्तर सारणी (मिनट में)

दिनांक	जन.	फर.	मार्च	अप्रै.	मई	जून	जुला.	अग.	सित.	अक्टू	नव.	दिस.
१	-३	-१३	-१२	-४	+३	+२	-४	-६	-०	+१०	+१६	+११
२	-४	-१४	-१२	-४	+३	+२	-४	-६	+०	+१०	+१६	+११
३	-४	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+०	+११	+१६	+१०
४	-५	-१४	-१२	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+११	+१६	+१०
५	-५	-१४	-११	-३	+३	+२	-४	-६	+१	+११	+१६	+९
६	-६	-१४	-११	-२	+३	+१	-५	-६	+१	+१२	+१६	+९
७	-६	-१४	-११	-२	+३	+१	-५	-६	+२	+१२	+१६	+९
८	-७	-१४	-११	-२	+४	+१	-५	-६	+२	+१२	+१६	+८
९	-७	-१४	-१०	-२	+४	+१	-५	-६	+२	+१२	+१६	+८
१०	-७	-१४	-१०	-१	+४	+१	-५	-५	+३	+१३	+१६	+७
११	-८	-१४	-१०	-१	+४	+०	-५	-५	+३	+१३	+१६	+७
१२	-८	-१४	-१०	-१	+४	+०	-६	-५	+३	+१३	+१६	+६
१३	-८	-१४	-९	-१	+४	+०	-६	-५	+४	+१३	+१६	+६
१४	-९	-१४	-९	-०	+४	-०	-६	-५	+४	+१४	+१५	+५
१५	-९	-१४	-९	-०	+४	-०	-६	-५	+५	+१४	+१५	+५
१६	-१०	-१४	-९	+०	+४	-१	-६	-४	+५	+१४	+१५	+४
१७	-१०	-१४	-८	+०	+४	-१	-६	-४	+५	+१४	+१५	+४
१८	-१०	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-४	+६	+१४	+१५	+४
१९	-११	-१४	-८	+१	+४	-१	-६	-४	+६	+१५	+१४	+३
२०	-११	-१४	-७	+१	+४	-१	-६	-३	+६	+१५	+१४	+३
२१	-११	-१३	-७	+१	+३	-२	-६	-३	+७	+१५	+१४	+२
२२	-११	-१३	-७	+२	+३	-२	-६	-३	+७	+१५	+१४	+२
२३	-१२	-१३	-७	+२	+३	-२	-६	-३	+७	+१५	+१३	+१
२४	-१२	-१३	-६	+२	+३	-२	-६	-२	+८	+१५	+१३	+१
२५	-१२	-१३	-६	+२	+३	-३	-६	-२	+८	+१६	+१३	+०
२६	-१२	-१३	-६	+२	+३	-३	-६	-२	+८	+१६	+१३	-०
२७	-१३	-१३	-५	+२	+३	-३	-६	-२	+९	+१६	+१२	-१
२८	-१३	-१२	-५	+३	+३	-३	-६	-१	+९	+१६	+१२	-१
२९	-१३	-१२	-५	+३	+३	-३	-६	-१	+९	+१६	+१२	-२
३०	-१३		-४	+३	+३	-४	-६	-१	+१०	+१६	+११	-२
३१	-१३		-४		+२		-६	-०		+१६		-३

किसी दिनांक के स्थानीय मध्यम समय को स्थानीय स्पष्ट समय बनाने के लिये सारणी के अनुसार उस दिन का संस्कार चिन्ह के अनुसार करें। उदाहरण के लिए यह पंचांग ७७.२५ रेखांश पर बना है। १ जनवरी को पंचांग में स्टैंडर्ड सूर्योदय ५.५१ वजे लिखा है। देशान्तर सारिणी में देखने पर ७७.२५ रेखांश का स्टैंडर्ड अंतर -२०.२० मिला। स्टैंडर्ड सूर्योदय में से स्टैंडर्ड अंतर घटाने पर ५.३०.४० स्थानीय मध्यम सूर्योदय हुआ। उपरोक्त सारिणी में १ जनवरी को वेलान्तर - ३ मिनट मिला इसे स्थानीय मध्यम सूर्योदय में से घटाने पर ५.२७.४० स्थानीय स्पष्ट सूर्योदय होगा। यदि स्थानीय स्पष्ट समय को स्टैंडर्ड समय में वदलना हो तो स्टैंडर्ड अंतर एवं वेलान्तर दोनों के विपरीत चिन्ह (अर्थात् ऋण चिन्ह के स्थान पर धन करें और धन के स्थान पर ऋण) से संस्कार करें।

समय पद्धतियां - भारतीय पंचांगों में समय प्रदर्शन कीं तीन पद्धतियां प्रचलित हैं। किसी एक समय को तीन तरीकों से प्रदर्शित किया जा सकता है, ये हैं - १. स्थानीय स्पष्ट काल (Tru Time), २. स्थानीय मध्यम काल (Local Mean Time), ३. भारतीय मानक समय (Indian Standard Time), प्राचीन भारत के समस्त पंचांगों में स्थानीय स्पष्ट काल का ही उपयोग होता रहा है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि, प्रदत्त समय किसी एक अक्षांश के समस्त स्थानों पर अपरिवर्तित रहता है। उदाहरण के लिये यदि भोपाल के किसी पंचांग में स्थानीय सूर्योदय ६: ५५ लिखा है तो भोपाल से ठीक पूर्व या पश्चिम दिशा के भूमण्डल के समस्त नगरों में भी स्थानीय सूर्योदय ६: ५५ माना जायगा। इससे इन नगरों में भोपाल के अक्षांश के आधार पर बना पंचांग उपयोगी रहता है। परन्तु व्यवहार में हम जानते हैं कि समस्त स्थानों पर सूर्योय काल अलग-अलग होता है। पूर्व के स्थानों की अपेक्षा पश्चिम की ओर वाले स्थानों में सूर्योदय काल वढ़ता जाता है। किसी दिन कलकत्ता में प्रात: ५ वजे सूर्योदय होता जाता है, जवकि अहमदावाद में ६ वजे होता है। स्थानीय समय को स्टेंडर्ड बनाने के लिये दो संस्कार (वेलान्तर एवं स्टेंडर्ड) करना पड़ते हैं। यदि स्थानीय काल में वेलान्तर संस्कार कर दिया जाय तो वह स्थानीय मध्यम काल बन जाता है। स्थानीय मध्यम काल में स्टेंडर्ड अंतर संस्कार करने पर वह स्टेंडर्ड धड़ी का समय बन जाता है। दैनिक व्यवहार में स्टेंडर्ड समय का ही उपयोग होता है। यजमान द्वारा जो जन्म समय वताया जाता है वह स्टेंडर्ड समय होता है। यदि किसी पंचांग में तिथि नक्षत्रादि का स्टेंडर्ड समय दिया है तो उसमें भारत के किसी भी स्थान के लिये कोई भी संस्कार करने की आवश्यकता नहीं होती है।

२१ से २७ अक्ष पट्टियों पर मध्यम सूर्योदय एवं सूर्यास्त (सूर्य बिंब केन्द्रीय-शास्त्रीय, वेलान्तर संस्कार युक्त) (सूर्यास्त में १२ जोडकर उसमें से सूर्योदय घटाने पर शेष को ढ़ाई गुना करने पर दिनमान घटी प्राप्त होता है)

किसी दिनांक को अपने ग्राम स्थान का स्टैण्डर्ड सूर्योदय या स्टैण्डर्ड सूर्यास्त जानने के लिए अपने ग्राम की अक्ष पट्टी एवं स्टैण्डर्ड अन्तर का ज्ञान अक्षांस सारणी से कर, नीचे लिखी अपने स्थान की अक्ष पट्टी में उस दिनांक के स्थानीय सू.उ. या सू.अ. में स्टैण्डर्ड अन्तर का विपरीत संस्कार करें। बीच के दिनांकों के लिए अनुपात करें।

अक्षपट्टी	२१		२२		२३		२४		२५		२६		२७	
	अक्षांस २१ ।३०		अक्षांस २२ ।३०		अक्षांस २३ ।३०		अक्षांस २४ ।३०		अक्षांस २५ ।३०		अक्षांस २६ ।३०		अक्षांस २७ ।३०	
दिनांक	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त
०१.जन.	६.४२	५.२५	६.४४	५.२३	६.४६	५.२१	६.४८	५.१९	६.५०	५.१७	६.५२	५.१५	६.५४	५.१२
०५.जन.	६.४३	५.२७	६.४५	५.२५	६.४७	५.२३	६.४९	५.२१	६.५१	५.१९	६.५३	५.१७	६.५५	५.१५
०९.जन.	६.४४	५.३०	६.४६	५.२८	६.४८	५.२६	६.५०	५.२४	६.५२	५.२२	६.५४	५.२०	६.५६	५.१८
१३.जन.	६.४४	५.३३	६.४६	५.३१	६.४८	५.२९	६.५०	५.२७	६.५२	५.२५	६.५४	५.२३	६.५६	५.२१
१७.जन.	६.४४	५.३६	६.४६	५.३४	६.४८	५.३२	६.५०	५.३०	६.५२	५.२८	६.५३	५.२६	६.५५	५.२४
२१.जन.	६.४४	५.३८	६.४६	५.३७	६.४७	५.३५	६.४९	५.३३	६.५१	५.३१	६.५३	५.२९	६.५५	५.२८
२५.जन.	६.४३	५.४१	६.४५	५.३९	६.४७	५.३८	६.४८	५.३६	६.५०	५.३४	६.५२	५.३३	६.५३	५.३१
२९.जन.	६.४२	५.४४	६.४४	५.४२	६.४५	५.४१	६.४७	५.३९	६.४८	५.३७	६.५०	५.३६	६.५२	५.३४
०२.फर.	६.४१	५.४६	६.४२	५.४५	६.४४	५.४३	६.४५	५.४२	६.४७	५.४०	६.४८	५.३९	६.५०	५.३७
०६.फर.	६.३९	५.४९	६.४१	५.४७	६.४२	५.४६	६.४३	५.४५	६.४५	५.४३	६.४६	५.४२	६.४७	५.४०
१०.फर.	६.३७	५.५१	६.३८	५.५०	६.४०	५.४८	६.४१	५.४७	६.४२	५.४६	६.४३	५.४५	६.४५	५.४३
१४.फर.	६.३५	५.५३	६.३६	५.५२	६.३७	५.५१	६.३८	५.५०	६.३९	५.४९	६.४१	५.४७	६.४२	५.४६
१८.फर.	६.३२	५.५५	६.३३	५.५४	६.३४	५.५३	६.३५	५.५२	६.३६	५.५१	६.३७	५.५०	६.३८	५.४९
२२.फर.	६.३०	५.५७	६.३०	५.५६	६.३१	५.५५	६.३२	५.५४	६.३३	५.५४	६.३४	५.५३	६.३५	५.५२
२६.फर.	६.२७	५.५९	६.२७	५.५८	६.२८	५.५७	६.२९	५.५७	६.३०	५.५६	६.३०	५.५५	६.३१	५.५४
०२.मार्च	६.२३	६.१	६.२४	५.६०	६.२५	५.५९	६.२५	५.५९	६.२६	५.५८	६.२७	५.५७	६.२७	५.५७
०६.मार्च	६.२०	६.२	६.२१	६.२	६.२१	६.१	६.२२	६.१	६.२२	६.०	६.२३	५.६०	६.२३	५.५९
१०.मार्च	६.१७	६.४	६.१७	६.३	६.१७	६.३	६.१८	६.३	६.१८	६.२	६.१८	६.२	६.१९	६.२
१४.मार्च	६.१३	६.५	६.१३	६.५	६.१४	६.५	६.१४	६.४	६.१४	६.४	६.१४	६.४	६.१४	६.४
१८.मार्च	६.१०	६.६	६.१०	६.६	६.१०	६.६	६.१०	६.६	६.१०	६.६	६.१०	६.६	६.१०	६.६
२२.मार्च	६.६	६.८	६.६	६.८	६.६	६.८	६.६	६.८	६.६	६.८	६.६	६.८	६.६	६.८
२६.मार्च	६.२	६.९	६.२	६.९	६.२	६.९	६.२	६.१०	६.१	६.१०	६.१	६.१०	६.१	६.१०
३०.मार्च	५.५९	६.१०	५.५८	६.११	५.५८	६.११	५.५८	६.११	५.५७	६.१२	५.५७	६.१२	५.५७	६.१२
०३.अप्रै.	५.५५	६.१२	५.५४	६.१२	५.५४	६.१२	५.५४	६.१३	५.५३	६.१३	५.५३	६.१४	५.५२	६.१४
०७.अप्रै.	५.५१	६.१३	५.५१	६.१३	५.५०	६.१४	५.५०	६.१५	५.४९	६.१५	५.४८	६.१६	५.४८	६.१६
११.अप्रै.	५.४८	६.१४	५.४७	६.१५	५.४६	६.१६	५.४६	६.१६	५.४५	६.१७	५.४४	६.१८	५.४४	६.१८
१५.अप्रै.	५.४५	६.१६	५.४४	६.१६	५.४३	६.१७	५.४२	६.१८	५.४१	६.१९	५.४०	६.२०	५.४०	६.२१
१९.अप्रै.	५.४१	६.१७	५.४०	६.१८	५.३९	६.१९	५.३८	६.२०	५.३८	६.२१	५.३७	६.२२	५.३६	६.२३
२३.अप्रै.	५.३८	६.१८	५.३७	६.१९	५.३६	६.२०	५.३५	६.२२	५.३४	६.२३	५.३३	६.२४	५.३२	६.२५
२७.अप्रै.	५.३५	६.२०	५.३४	६.२१	५.३३	६.२२	५.३२	६.२३	५.३१	६.२५	५.२९	६.२६	५.२८	६.२७

अक्षपट्टी	२१		२२		२३		२४		२५		२६		२७	
	अक्षांस २१ ।३०		अक्षांस २२ ।३०		अक्षांस २३ ।३०		अक्षांस २४ ।३०		अक्षांस २५ ।३०		अक्षांस २६ ।३०		अक्षांस २७ ।३०	
दिनांक	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त
०१.मई.	५.३३	६.२१	५.३१	६.२३	५.३०	६.२४	५.२९	६.२५	५.२८	६.२७	५.२६	६.२८	५.२५	६.२९
०५.मई.	५.३०	६.२३	५.२९	६.२४	५.२८	६.२६	५.२६	६.२७	५.२५	६.२९	५.२३	६.३०	५.२२	६.३२
०९.मई.	५.२८	६.२५	५.२७	६.२६	५.२५	६.२८	५.२४	६.२९	५.२२	६.३१	५.२१	६.३२	५.१९	६.३४
१३.मई.	५.२६	६.२६	५.२५	६.२८	५.२३	६.३०	५.२१	६.३१	५.२०	६.३३	५.१८	६.३४	५.१६	६.३६
१७.मई.	५.२५	६.२८	५.२३	६.३०	५.२१	६.३१	५.२०	६.३३	५.१८	६.३५	५.१६	६.३७	५.१४	६.३८
२१.मई.	५.२३	६.३०	५.२२	६.३२	५.२०	६.३३	५.१८	६.३५	५.१६	६.३७	५.१४	६.३९	५.१२	६.४१
२५.मई.	५.२२	६.३२	५.२०	६.३३	५.१९	६.३५	५.१७	६.३७	५.१५	६.३९	५.१३	६.४१	५.११	६.४३
२९.मई.	५.२१	६.३३	५.२०	६.३५	५.१८	६.३७	५.१६	६.३९	५.१४	६.४१	५.१२	६.४३	५.१०	६.४५
०२.जून.	५.२१	६.३५	५.१९	६.३७	५.१७	६.३९	५.१५	६.४१	५.१३	६.४३	५.११	६.४५	५.९	६.४७
०६.जून.	५.२१	६.३६	५.१९	६.३८	५.१७	६.४०	५.१५	६.४२	५.१३	६.४५	५.११	६.४७	५.८	६.४९
१०.जून.	५.२१	६.३८	५.१९	६.४०	५.१७	६.४२	५.१५	६.४४	५.१३	६.४६	५.१०	६.४८	५.८	६.५०
१४.जून.	५.२१	६.३९	५.१९	६.४१	५.१७	६.४३	५.१५	६.४५	५.१३	६.४७	५.११	६.५०	५.८	६.५२
१८.जून.	५.२२	६.४०	५.२०	६.४२	५.१८	६.४४	५.१६	६.४७	५.१३	६.४९	५.११	६.५१	५.९	६.५३
२२.जून.	५.२३	६.४१	५.२१	६.४३	५.१८	६.४५	५.१६	६.४७	५.१४	६.५०	५.१२	६.५२	५.१०	६.५४
२६.जून.	५.२४	६.४२	५.२२	६.४४	५.१९	६.४६	५.१७	६.४८	५.१५	६.५०	५.१३	६.५२	५.११	६.५५
३०.जून.	५.२५	६.४२	५.२३	६.४४	५.२१	६.४६	५.१९	६.४९	५.१६	६.५१	५.१४	६.५३	५.१२	६.५५
०४.जुला	५.२६	६.४३	५.२४	६.४५	५.२२	६.४७	५.२०	६.४९	५.१८	६.५१	५.१६	६.५३	५.१४	६.५५
०८.जुला	५.२७	६.४३	५.२६	६.४४	५.२४	६.४६	५.२२	६.४८	५.१९	६.५१	५.१७	६.५३	५.१५	६.५५
१२.जुला.	५.२९	६.४२	५.२७	६.४४	५.२५	६.४६	५.२३	६.४८	५.२१	६.५०	५.१९	६.५२	५.१७	६.५४
१६.जुला.	५.३१	६.४१	५.२९	६.४३	५.२७	६.४५	५.२५	६.४७	५.२३	६.४९	५.२१	६.५१	५.१९	६.५३
२०.जुला	५.३२	६.४०	५.३०	६.४२	५.२९	६.४४	५.२७	६.४६	५.२५	६.४८	५.२३	६.५०	५.२१	६.५२
२४.जुला	५.३४	६.३९	५.३२	६.४१	५.३०	६.४३	५.२९	६.४४	५.२७	६.४६	५.२५	६.४८	५.२३	६.५०
२८.जुला	५.३५	६.३८	५.३४	६.३९	५.३२	६.४१	५.३०	६.४३	५.२९	६.४४	५.२७	६.४६	५.२५	६.४८
०१.अग.	५.३७	६.३६	५.३५	६.३७	५.३४	६.३९	५.३२	६.४०	५.३१	६.४२	५.२९	६.४४	५.२७	६.४५
०५.अग.	५.३८	६.३४	५.३७	६.३५	५.३५	६.३७	५.३४	६.३८	५.३२	६.४०	५.३१	६.४१	५.२९	६.४३
०९.अग.	५.४०	६.३१	५.३८	६.३३	५.३७	६.३४	५.३६	६.३५	५.३४	६.३७	५.३३	६.३८	५.३१	६.४०
१३.अग.	५.४१	६.२९	५.४०	६.३०	५.३९	६.३१	५.३७	६.३२	५.३६	६.३४	५.३५	६.३५	५.३४	६.३६
१७.अग.	५.४३	६.२६	५.४१	६.२७	५.४०	६.२८	५.३९	६.२९	५.३८	६.३०	५.३७	६.३२	५.३६	६.३३
२१.अग.	५.४४	६.२३	५.४३	६.२४	५.४२	६.२५	५.४१	६.२६	५.४०	६.२७	५.३९	६.२८	५.३८	६.२९
२५.अग.	५.४५	६.१९	५.४४	६.२०	५.४३	६.२१	५.४२	६.२२	५.४१	६.२३	५.४०	६.२४	५.३९	६.२५
२९.अग.	५.४६	६.१६	५.४५	६.१७	५.४५	६.१८	५.४४	६.१८	५.४३	६.१९	५.४२	६.२०	५.४१	६.२१

अक्षपट्टी	२१		२२		२३		२४		२५		२६		२७	
	अक्षांस २१ ।३०		अक्षांस २२ ।३०		अक्षांस २३ ।३०		अक्षांस २४ ।३०		अक्षांस २५ ।३०		अक्षांस २६ ।३०		अक्षांस २७ ।३०	
दिनांक	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त	सू.उ.	अस्त
०२.सित.	५.४७	६.१२	५.४७	६.१३	५.४६	६.१४	५.४५	६.१४	५.४५	६.१५	५.४४	६.१६	५.४३	६.१७
०६.सित.	५.४८	६.९	५.४८	६.९	५.४७	६.१०	५.४७	६.१०	५.४६	६.११	५.४६	६.१२	५.४५	६.१२
१०.सित.	५.४९	६.५	५.४९	६.५	५.४९	६.६	५.४८	६.६	५.४८	६.७	५.४७	६.७	५.४७	६.८
१४.सित.	५.५०	६.१	५.५०	६.२	५.५०	६.२	५.५०	६.२	५.४९	६.२	५.४९	६.३	५.४९	६.३
१८.सित.	५.५१	५.५७	५.५१	५.५८	५.५१	५.५८	५.५१	५.५८	५.५१	५.५८	५.५१	५.५८	५.५०	५.५८
२२.सित.	५.५२	५.५४	५.५२	५.५४	५.५२	५.५४	५.५२	५.५४	५.५२	५.५४	५.५२	५.५४	५.५२	५.५४
२६.सित.	५.५४	५.५०	५.५४	५.५०	५.५४	५.५०	५.५४	५.४९	५.५४	५.४९	५.५४	५.४९	५.५४	५.४९
३०.सित.	५.५५	५.४६	५.५५	५.४६	५.५५	५.४५	५.५५	५.४५	५.५६	५.४५	५.५६	५.४५	५.५६	५.४५
०४.अक्टू.	५.५६	५.४२	५.५६	५.४२	५.५७	५.४२	५.५७	५.४१	५.५७	५.४१	५.५८	५.४०	५.५८	५.४०
०८.अक्टू.	५.५७	५.३९	५.५८	५.३८	५.५८	५.३८	५.५९	५.३७	५.५९	५.३७	५.६०	५.३६	६.०	५.३६
१२.अक्टू.	५.५९	५.३५	५.५९	५.३५	५.६०	५.३४	६.०	५.३३	६.१	५.३३	६.२	५.३२	६.२	५.३१
१६.अक्टू.	५.६०	५.३२	६.१	५.३१	६.१	५.३०	६.२	५.३०	६.३	५.२९	६.४	५.२८	६.५	५.२७
२०.अक्टू.	६.२	५.२९	६.२	५.२८	६.३	५.२७	६.४	५.२६	६.५	५.२५	६.६	५.२४	६.७	५.२३
२४.अक्टू.	६.३	५.२६	६.४	५.२५	६.५	५.२४	६.६	५.२३	६.७	५.२२	६.८	५.२१	६.९	५.२०
२८.अक्टू.	६.५	५.२३	६.६	५.२२	६.७	५.२१	६.८	५.२०	६.१०	५.१९	६.११	५.१७	६.१२	५.१६
०१.नव.	६.७	५.२१	६.८	५.१९	६.१०	५.१८	६.११	५.१७	६.१२	५.१६	६.१३	५.१४	६.१५	५.१३
०५.नव.	६.९	५.१९	६.११	५.१७	६.१२	५.१६	६.१३	५.१५	६.१५	५.१३	६.१६	५.१२	६.१७	५.१०
०९.नव.	६.११	५.१७	६.१३	५.१५	६.१४	५.१४	६.१६	५.१२	६.१७	५.११	६.१९	५.९	६.२०	५.८
१३.नव.	६.१४	५.१५	६.१५	५.१४	६.१७	५.१२	६.१८	५.११	६.२०	५.९	६.२२	५.७	६.२३	५.६
१७.नव.	६.१६	५.१४	६.१८	५.१२	६.२०	५.११	६.२१	५.९	६.२३	५.७	६.२५	५.६	६.२६	५.४
२१.नव.	६.१९	५.१३	६.२०	५.१२	६.२२	५.१०	६.२४	५.८	६.२६	५.६	६.२८	५.४	६.२९	५.३
२५.नव.	६.२१	५.१३	६.२३	५.११	६.२५	५.९	६.२७	५.७	६.२९	५.५	६.३१	५.४	६.३३	५.२
२९.नव.	६.२४	५.१३	६.२६	५.११	६.२८	५.९	६.३०	५.७	६.३२	५.५	६.३४	५.३	६.३६	५.१
०३.दिस.	६.२७	५.१३	६.२९	५.११	६.३०	५.९	६.३२	५.७	६.३४	५.५	६.३७	५.३	६.३९	५.१
०७.दिस.	६.२९	५.१४	६.३१	५.१२	६.३३	५.१०	६.३५	५.८	६.३७	५.६	६.३९	५.४	६.४१	५.१
११.दिस.	६.३२	५.१५	६.३४	५.१३	६.३६	५.११	६.३८	५.९	६.४०	५.६	६.४२	५.४	६.४४	५.२
१५.दिस.	६.३४	५.१६	६.३६	५.१४	६.३८	५.१२	६.४०	५.१०	६.४२	५.८	६.४५	५.६	६.४७	५.३
१९.दिस.	६.३६	५.१८	६.३८	५.१६	६.४०	५.१४	६.४२	५.११	६.४५	५.९	६.४७	५.७	६.४९	५.५
२३.दिस.	६.३८	५.२०	६.४०	५.१८	६.४२	५.१५	६.४५	५.१३	६.४७	५.११	६.४९	५.९	६.५१	५.७
३०.दिस.	६.४१	५.२४	६.४३	५.२१	६.४५	५.१९	६.४७	५.१७	६.४९	५.१५	६.५२	५.१३	६.५४	५.११
०३.जन.	६.४२	५.२६	६.४४	५.२४	६.४६	५.२२	६.४८	५.२०	६.५१	५.१८	६.५३	५.१६	६.५५	५.१४

लग्न एवं दशम भाव साधन विधि

स्थानीय सूर्योदय - इस पंचांग में विभिन्न अक्षांशों पर स्थानीय मध्यम सूर्योदय सारणी में दिया गया है। जन्म स्थान के निकटतम अक्षांश पर जन्म के दिन स्थानीय मध्यम सूर्योदय एक जगह लिख लें। देशान्तर सारणी से जन्म स्थान का स्टेंडर्ड अंतर देखकर उसका स्थानीय मध्यम सूर्योदय में चिन्ह के विपरीत संस्कार करने पर उस दिन स्टेंडर्ड सूर्योदय प्राप्त होगा।

इष्टकाल साधन विधि - सूर्योदय से जन्म समय तक की अवधि इष्टकाल होता है। अत: जन्म समय में से सूर्योदय घटाने पर जो घंटा मिनट बचें उनका ढ़ाई गुना करने पर घटी पल में इष्टकाल निकल आता है। (विशेष - यदि जन्म समय दोपहर १२ वजे तक का हो तो यथावत ले, यदि दोपहर १२ के वाद रात्रि १२ वजे के बीच का हो तो जन्म समय में १२ जोडकर रेलवे पद्धति जैसा लिख लें, यदि जन्म समय रात्रि १२ के वाद का हो तो उसमें २४ जोडकर फिर उसमें से सूर्योदय घटाना चाहिए)।

लग्न साधन विधि - सर्व प्रथम उपरोक्त विधि से इष्टकाल निकाल लें। इष्टकालीन सूर्य के राशि अंश के अनुसार अपने नगर ग्राम की अक्ष पट्टी की लग्न सारणी से फ लांक(सूर्यफ ल) ग्रहण करें। अपने इष्टकाल में इस फ लांक को जोड़ें। यह योगफल लग्न तनु कहलाता है। इस तनु फ ल को पुन: अपनी लग्न सारणी में देखें। तनु फ ल के ऊ पर लग्न के अंश व पाश्र्व में लग्न राशि ज्ञात होगी अर्थात लग्न के राशि अंश ज्ञात होंगे। सूक्ष्म कला ज्ञात करने हेतु अनुपात करें।

दशम भाव साधन - दिनमान का आधा दिनार्ध कहलाता है। इष्टकाल में से दिनार्ध घटाने पर नतकाल होता है। (यदि इष्टकाल दिनार्ध से कम हो तो, इष्टकाल में पहले ६० जोड़ें फि र उसमें से दिनार्ध घटाएं तब शेष फल ही नतकाल होगा)। यदि नतकाल ३० से कम हो तो वही पश्चिम स्पष्ट नतकाल होगा। यदि नतकाल ३० से अधिक हो तो उसे ६० में से घटाने पर पूर्व स्पष्ट नतकाल प्राप्त होगा। अव पूर्ववत् लग्न साधन की तरह नतकाल को इष्टकाल मानकर दशम भाव सारणी से दशम लग्न साधन करना चाहिये।

सरल विधि :- लग्न गणना के समय जो लग्न तनु प्राप्त होता है, उसमें से ४५ घटी जोडने पर दशम तनु प्राप्त होता है। दशम तनु को निम्न दशम सारणी में देखने पर उसके ऊ पर अंश व पाश्र्व में राशि दशम भाव की राशि प्राप्त होती है।

उदाहरण - उदाहरण के लिए दिनांक १ जनवरी को २३ अक्ष पट्टी वाले स्थान जैसे भोपाल में स्थानीय मध्यम सूर्योदय सारणी में ६.४६ लिखा है। देशान्तर सारणी में देखने पर भोपाल का स्टेंडर्ड अंतर (ऋ ण) २०मिनट.२० सेकंड मिला। इसका चिन्ह के विपरीत संस्कार अर्थात धन करने पर भोपाल में उस दिन स्टेंडर्ड सूर्योदय (६.४६ +०.२०.२०) ७ वजकर ६ मिनट २० सेकण्ड हुआ। उदाहरण के लिए दिनांक १ जनवरी को रात्रि ११.५५ पर जन्म समय है। रेलवे जैसा बनाने पर जन्म समय २३.५५ होगा। २३.५५ में से दिनांक १ जनवरी का सूर्योदय ७.६.२० घटाने पर शेष १६.४८.४० घंटा मिनट में इष्टकाल होगा। इसका ढ़ाई गुना करने पर ४२ घटी १ पल इष्टकाल होगा। १ जनवरी को पंचांग में स्पष्ट सूर्य धनु राशि के अंश १६ लिखे हैं। २३ अक्ष पट्टी वाली लग्न सारणी में धनु राशि के सामने एवं १६ अंश के नीचे सूर्य फल ४८.३९ लिखा मिला, इसमें इष्टकाल जोडने पर ९०.४० तनुफल ६० से ज्यादा होने से उसमें से ६० घटाने पर ३०.४० हुए। ३०.४० को पुन: लग्न सारणी में देखने पर कन्या राशि के सामने ९ अंश के नीचे न्यूनतम निकटतम सूर्य फल मिला, इसलिए लग्न कन्या राशि के ९ अंश हुई।

दशम भाव के लिए ३०.४० में ४५ जोडने पर ७५.४० हुए, यह ६० से अधिक होने से इसमें से ६० घटाने पर १५.४० हुए। दशम भाव सारणी में मिथुन राशि के सामने १० अंश के नीचे न्यूनतम् निकटतम् मान १५.३३ होने से दशम भाव के राशि अंश २.१० हुए।

दशम भाव सारणी (भूमंडल के समस्त स्थानों के लिए)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष ०	३ ३२	३ ४१	३ ५१	४ ०	४ १०	४ १९	४ २९	४ ३८	४ ४८	४ ५७	५ ७	५ १७	५ २६	५ ३६	५ ४६
वृष १	८ २५	८ ३५	८ ४५	८ ५६	९ ६	९ १६	९ २७	९ ३७	९ ४८	९ ५८	१० ९	१० १९	१० ३०	१० ४०	१० ५१
मिथु २	१३ ४४	१३ ५४	१४ ५	१४ १६	१४ २७	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २२	१५ ३३	१५ ४४	१५ ५५	१६ ६	१६ १७
कर्क ३	१९ ९	१९ २०	१९ ३१	१९ ४१	१९ ५२	२० २	२० १३	२० २३	२० ३३	२० ४४	२० ५४	२१ ५	२१ १५	२१ २५	२१ ३५
सिंह ४	२४ १५	२४ २४	२४ ३४	२४ ४४	२४ ५३	२५ ३	२५ १२	२५ २२	२५ ३२	२५ ४१	२५ ५०	२५ ६०	२६ ९	२६ १९	२६ २८
कन्या ५	२८ ५६	२९ ५	२९ १४	२९ २४	२९ ३३	२९ ४२	२९ ५१	३० ०	३० ९	३० १८	३० २८	३० ३७	३० ४६	३० ५५	३१ ४
तुला ६	३३ ३२	३३ ४१	३३ ५१	३४ ०	३४ १०	३४ १९	३४ २९	३४ ३८	३४ ४८	३४ ५७	३५ ७	३५ १७	३५ २६	३५ ३६	३५ ४६
वृश्चि७	३८ २५	३८ ३५	३८ ४५	३८ ५६	३९ ६	३९ १६	३९ २७	३९ ३७	३९ ४८	३९ ५८	४० ९	४० १९	४० ३०	४० ४०	४० ५१
धनु ८	४३ ४४	४३ ५४	४४ ५	४४ १६	४४ २७	४४ ३८	४४ ४९	४५ ०	४५ ११	४५ २२	४५ ३३	४५ ४४	४५ ५५	४६ ६	४६ १७
मक.९	४९ ९	४९ २०	४९ ३१	४९ ४१	४९ ५२	५० २	५० १३	५० २३	५० ३३	५० ४४	५० ५४	५१ ५	५१ १५	५१ २५	५१ ३५
कुंभ१०	५४ १५	५४ २४	५४ ३४	५४ ४४	५४ ५३	५५ ३	५५ १२	५५ २२	५५ ३२	५५ ४१	५५ ५०	५५ ६०	५६ ९	५६ १९	५६ २८
मीन ११	५८ ५६	५९ ५	५९ १४	५९ २४	५९ ३३	५९ ४२	५९ ५१	० ०	० ९	० १८	० २८	० ३७	० ४६	० ५५	१ ४
अंश->	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
मेष ०	५ ५५	६ ५	६ १५	६ २५	६ ३५	६ ४४	६ ५४	७ ४	७ १४	७ २४	७ ३४	७ ४४	७ ५४	८ ५	८ १५	मेष
वृष १	११ २	११ १२	११ २३	११ ३४	११ ४४	११ ५५	१२ ६	१२ १७	१२ २७	१२ ३८	१२ ४९	१३ ०	१३ ११	१३ २२	१३ ३३	वृष
मिथु २	१६ २८	१६ ३८	१६ ४९	१७ ०	१७ ११	१७ २२	१७ ३३	१७ ४४	१७ ५४	१८ ५	१८ १६	१८ २७	१८ ३७	१८ ४८	१८ ५९	मिथुन
कर्क ३	२१ ४५	२१ ५६	२२ ६	२२ १६	२२ २६	२२ ३६	२२ ४६	२२ ५६	२३ ६	२३ १६	२३ २६	२३ ३६	२३ ४५	२३ ५५	२४ ५	कर्क
सिंह ४	२६ ३८	२६ ४७	२६ ५६	२७ ५	२७ १५	२७ २४	२७ ३३	२७ ४३	२७ ५२	२८ १	२८ १०	२८ १९	२८ २९	२८ ३८	२८ ४७	सिंह
कन्या ५	३१ १३	३१ २२	३१ ३२	३१ ४१	३१ ५०	३१ ५९	३२ ८	३२ १८	३२ २७	३२ ३६	३२ ४५	३२ ५५	३३ ४	३३ १३	३३ २३	कन्या
तुला ६	३५ ५५	३६ ५	३६ १५	३६ २५	३६ ३५	३६ ४४	३६ ५४	३७ ४	३७ १४	३७ २४	३७ ३४	३७ ४४	३७ ५४	३८ ५	३८ १५	तुला
वृश्चि७	४१ २	४१ १२	४१ २३	४१ ३४	४१ ४४	४१ ५५	४२ ६	४२ १७	४२ २७	४२ ३८	४२ ४९	४३ ०	४३ ११	४३ २२	४३ ३३	वृश्चि
धनु ८	४६ २८	४६ ३८	४६ ४९	४७ ०	४७ ११	४७ २२	४७ ३३	४७ ४४	४७ ५४	४८ ५	४८ १६	४८ २७	४८ ३७	४८ ४८	४८ ५९	धनु
मक.९	५१ ४५	५१ ५६	५२ ६	५२ १६	५२ २६	५२ ३६	५२ ४६	५२ ५६	५३ ६	५३ १६	५३ २६	५३ ३६	५३ ४५	५३ ५५	५४ ५	मकर
कुंभ१०	५६ ३८	५६ ४७	५६ ५६	५७ ५	५७ १५	५७ २४	५७ ३३	५७ ४३	५७ ५२	५८ १	५८ १०	५८ १९	५८ २९	५८ ३८	५८ ४७	कुम्भ
मीन ११	१ १३	१ २२	१ ३२	१ ४१	१ ५०	१ ५९	२ ८	२ १८	२ २७	२ ३६	२ ४५	२ ५५	३ ४	३ १३	३ २३	मीन
अंश->	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश

लग्न सारणी २०। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २० पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष ०	३ ५	३ १३	३ २१	३ २९	३ ३७	३ ४५	३ ५४	४ २	४ १०	४ १८	४ २६	४ ३५	४ ४३	४ ५१	४ ६०
वृष १	७ २०	७ २९	७ ३९	७ ४८	७ ५७	८ ७	८ १६	८ २६	८ ३५	८ ४५	८ ५५	९ ४	९ १४	९ २४	९ ३४
मिथु २	१२ १९	१२ ३०	१२ ४१	१२ ५२	१३ २	१३ १३	१३ २४	१३ ३५	१३ ४६	१३ ५७	१४ ८	१४ १९	१४ ३०	१४ ४२	१४ ५३
कर्क ३	१७ ५४	१८ ५	१८ १७	१८ २८	१८ ३९	१८ ५१	१९ २	१९ १३	१९ २५	१९ ३६	१९ ४७	१९ ५९	२० १०	२० २१	२० ३३
सिंह ४	२३ ३१	२३ ४२	२३ ५४	२४ ५	२४ १५	२४ २६	२४ ३७	२४ ४८	२४ ५९	२५ १०	२५ २१	२५ ३२	२५ ४३	२५ ५४	२६ ४
कन्या ५	२८ ५६	२९ ७	२९ १७	२९ २८	२९ ३९	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २१	३० ३२	३० ४३	३० ५३	३१ ४	३१ १५	३१ २५
तुला ६	३४ १७	३४ २८	३४ ३९	३४ ५०	३५ १	३५ १२	३५ २३	३५ ३४	३५ ४५	३५ ५६	३६ ७	३६ १८	३६ २९	३६ ४०	३६ ५१
वृश्चि७	३९ ५०	४० १	४० १३	४० २४	४० ३५	४० ४७	४० ५८	४१ ९	४१ २१	४१ ३२	४१ ४३	४१ ५५	४२ ६	४२ १८	४२ २९
धनु ८	४५ ३०	४५ ४१	४५ ५२	४६ ३	४६ १४	४६ २५	४६ ३६	४६ ४७	४६ ५८	४७ ९	४७ १९	४७ ३०	४७ ४१	४७ ५२	४८ २
मक.९	५० ४६	५० ५६	५१ ५	५१ १५	५१ २५	५१ ३४	५१ ४४	५१ ५३	५२ ३	५२ १२	५२ २१	५२ ३१	५२ ४०	५२ ४९	५२ ५८
कुंभ१०	५५ १७	५५ २५	५५ ३४	५५ ४२	५५ ५०	५५ ५८	५६ ६	५६ १५	५६ २३	५६ ३१	५६ ३९	५६ ४७	५६ ५५	५७ ३	५७ १०
मीन ११	५९ १४	५९ २२	५९ ३०	५९ ३७	५९ ४५	५९ ५२	० ०	० ८	० १५	० २३	० ३०	० ३८	० ४६	० ५३	१ १

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	५ ९	५ १७	५ २५	५ ३४	५ ४२	५ ५१	५ ६०	६ ८	६ १७	६ २६	६ ३५	६ ४४	६ ५३	७ २	७ ११
वृष १	९ ४४	९ ५४	१० ४	१० १४	१० २४	१० ३४	१० ४५	१० ५५	११ ५	११ १६	११ २६	११ ३७	११ ४७	११ ५८	१२ ९
मिथु २	१५ ४	१५ १५	१५ २६	१५ ३८	१५ ४९	१६ ०	१६ १२	१६ २३	१६ ३४	१६ ४६	१६ ५७	१७ ८	१७ २०	१७ ३१	१७ ४२
कर्क ३	२० ४४	२० ५५	२१ ७	२१ १८	२१ २९	२१ ४०	२१ ५१	२२ ३	२२ १४	२२ २५	२२ ३६	२२ ४७	२२ ५८	२३ ९	२३ २०
सिंह ४	२६ १५	२६ २६	२६ ३७	२६ ४८	२६ ५८	२७ ९	२७ २०	२७ ३१	२७ ४१	२७ ५२	२८ ३	२८ १३	२८ २४	२८ ३५	२८ ४५
कन्या ५	३१ ३६	३१ ४७	३१ ५७	३२ ८	३२ १९	३२ ३०	३२ ४०	३२ ५१	३३ २	३३ १२	३३ २३	३३ ३४	३३ ४५	३३ ५६	३४ ६
तुला ६	३७ २	३७ १३	३७ २४	३७ ३५	३७ ४६	३७ ५७	३८ ९	३८ २०	३८ ३१	३८ ४२	३८ ५४	३९ ५	३९ १६	३९ २७	३९ ३९
वृश्चि७	४२ ४०	४२ ५२	४३ ३	४३ १४	४३ २६	४३ ३७	४३ ४८	४३ ६०	४४ ११	४४ २२	४४ ३४	४४ ४५	४४ ५६	४५ ७	४५ १८
धनु ८	४८ १३	४८ २३	४८ ३४	४८ ४४	४८ ५५	४९ ५	४९ १५	४९ २६	४९ ३६	४९ ४६	४९ ५६	५० ६	५० १६	५० २६	५० ३६
मक.९	५३ ७	५३ १६	५३ २५	५३ ३४	५३ ४३	५३ ५२	५४ ०	५४ ९	५४ १८	५४ २६	५४ ३५	५४ ४३	५४ ५२	५५ ०	५५ ९
कुंभ१०	५७ १८	५७ २६	५७ ३४	५७ ४२	५७ ५०	५७ ५७	५८ ५	५८ १३	५८ २१	५८ २८	५८ ३६	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५९	५९ ७
मीन ११	१ ९	१ १६	१ २४	१ ३२	१ ३९	१ ४७	१ ५५	२ ३	२ १०	२ १८	२ २६	२ ३४	२ ४२	२ ५०	२ ५७

लग्न सारणी २१। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २१ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
	४	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१४	२२	३०	३९	४८	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७
वृष १	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२
	१६	२५	३५	४४	५३	२	१२	२१	३१	४०	५०	६०	१०	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	४०	५०	०	११	२१	३२	४२	५३	३
मिथु २	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
	१४	२५	३६	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८
कर्क ३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१८
सिंह ४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१३	२३	३४	४५
कन्या ५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	५६	६	१७	२८	३९	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४७	५७	८
तुला ६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४३	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३
वृश्चि७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	६०	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२४
धनु ८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	७	१८	२८	३९	४९	६०	१०	२०	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१
मक.९	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
	५१	०	१०	२०	२९	३९	४८	५८	७	१६	२६	३५	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२१	३०	३८	४७	५५	३	१२
कुंभ१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	२०	२८	३६	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	६	१४	२२	२९	३७	४५	५२	६०	७
मीन ११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
	१५	२२	३०	३७	४५	५३	०	८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	०	८	१६	२३	३१	३८	४६	५४	१	९	१७	२५	३२	४०	४८	५६

लग्न सारणी २३। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २३ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
	६०	७	१५	२३	३१	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५१	५९	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८	६	१५	२४	३२	४१	५०	५९
वृष १	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११
	८	१७	२६	३५	४४	५४	३	१२	२२	३१	४१	५०	६०	१०	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	४०	५०	०	११	२१	३२	४२	५३
मिथु २	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
	४	१४	२५	३६	४७	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	६०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८
कर्क ३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	०	१२
सिंह ४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	२३	३४	४५	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	६०	११	२२	३३	४४
कन्या ५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	५५	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२
तुला ६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४८	६०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१
वृश्चि७	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
	२	१४	२५	३७	४८	६०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३४
धनु ८	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
	४५	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५७	७	१८	२८	३९	४९	६०	१०	२०	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५०
मक.९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	०	१०	१९	२९	३८	४८	५७	६	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	२	११	१९	२८	३६	४५	५३	१	९	१८
कुंभ१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	२९	३७	४५	५३	१	८	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१६	२४	३१	३९	४६	५४	१	८
मीन ११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	१६	२३	३१	३८	४५	५३	०	७	१५	२२	२९	३७	४४	५२	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१	५९	६	१४	२१	२९	३७	४४	५२

लग्न सारणी २२। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २२ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
	२	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१९	२७	३६	४४	५३	२	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३
वृष १	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११
	१२	२१	३०	४०	४९	५८	७	१७	२६	३६	४५	५५	५	१५	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३५	४५	५५	६	१६	२७	३७	४८	५८
मिथु २	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४३	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३
कर्क ३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५
सिंह ४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३३	४४
कन्या ५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३३	४३	५४	५	१६	२७	३८	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५९	१०
तुला ६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
	२१	३२	४३	५४	५	१६	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४७
वृश्चि७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
	५८	१०	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	६	१८	२९
धनु ८	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५१	२	१३	२३	३४	४४	५५	५	१५	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६
मक.९	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
	५५	५	१५	२४	३४	४३	५३	२	११	२१	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४१	५०	५९	७	१६	२४	३३	४१	५०	५८	६	१५
कुंभ१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	६	१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	०	८
मीन ११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
	१५	२३	३०	३८	४५	५३	०	८	१५	२२	३०	३७	४५	५२	६०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	०	८	१५	२३	३१	३८	४६	५४

लग्न सारणी २४। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २४ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	५८	५	१३	२१	२८	३६	४४	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५६	४	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	११	२०	२८	३७	४६	५५
वृष १	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
	४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	८	१७	२६	३६	४५	५५	५	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१६	२६	३७	४७
मिथु २	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३
कर्क ३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	३५	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	९
सिंह ४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	२०	३१	४३	५४	५	१६	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
कन्या ५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१४
तुला ६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८	६०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५
वृश्चि७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	६०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९
धनु ८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५१	२	१३	२३	३४	४४	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५५
मक.९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	५	१५	२४	३४	४३	५२	२	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४०	४९	५८	६	१५	२३	३२	४०	४८	५६	४	१३	२१
कुंभ१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	२९	३७	४५	५३	१	८	१६	२४	३२	४०	४७	५५	३	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५५	३	१०	१८	२५	३२	४०	४७	५४	२	९
मीन ११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	१६	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१५	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२०	२८	३५	४३	५०	५७	५	१२	२०	२७	३५	४२	५०

लग्न सारणी २५। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २५ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२ ५५	३ ३	३ ११	३ १८	३ २६	३ ३४	३ ४१	३ ४९	३ ५७	४ ५	४ १२	४ २०	४ २८	४ ३६	४ ४४	४ ५२	५ १	५ ९	५ १७	५ २५	५ ३३	५ ४२	५ ५०	५ ५९	६ ७	६ १६	६ २४	६ ३३	६ ४२	६ ५१
वृष १	६ ५९	७ ८	७ १७	७ २६	७ ३५	७ ४४	७ ५४	८ ३	८ १२	८ २२	८ ३१	८ ४१	८ ५०	८ ६०	९ ९	९ १९	९ २९	९ ३९	९ ४९	९ ५९	१० ९	१० १९	१० २९	१० ३९	१० ५०	११ ०	११ १०	११ २१	११ ३१	११ ४२
मिथु २	११ ५३	१२ ३	१२ १४	१२ २५	१२ ३६	१२ ४६	१२ ५७	१३ ८	१३ १९	१३ ३०	१३ ४२	१३ ५३	१४ ४	१४ १५	१४ २६	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ १२	१५ २३	१५ ३४	१५ ४६	१५ ५७	१६ ९	१६ २०	१६ ३२	१६ ४३	१६ ५५	१७ ७	१७ १८
कर्क ३	१७ ३०	१७ ४१	१७ ५३	१८ ५	१८ १६	१८ २८	१८ ४०	१८ ५१	१९ ३	१९ १४	१९ २६	१९ ३८	१९ ४९	२० १	२० १३	२० २४	२० ३६	२० ४७	२० ५९	२१ १०	२१ २२	२१ ३४	२१ ४५	२१ ५७	२२ ८	२२ २०	२२ ३१	२२ ४३	२२ ५४	२३ ५
सिंह ४	२३ १७	२३ २८	२३ ४०	२३ ५१	२४ २	२४ १४	२४ २५	२४ ३६	२४ ४८	२४ ५९	२५ १०	२५ २२	२५ ३३	२५ ४४	२५ ५५	२६ ६	२६ १८	२६ २९	२६ ४०	२६ ५१	२७ २	२७ १४	२७ २५	२७ ३६	२७ ४७	२७ ५८	२८ ९	२८ २०	२८ ३१	२८ ४२
कन्या ५	२८ ५४	२९ ५	२९ १६	२९ २७	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३३	३० ४४	३० ५५	३१ ६	३१ १८	३१ २९	३१ ४०	३१ ५१	३२ २	३२ १३	३२ २४	३२ ३५	३२ ४७	३२ ५८	३३ ९	३३ २०	३३ ३१	३३ ४२	३३ ५४	३४ ५	३४ १६
तुला ६	३४ २७	३४ ३८	३४ ५०	३५ १	३५ १२	३५ २४	३५ ३५	३५ ४६	३५ ५८	३६ ९	३६ २०	३६ ३२	३६ ४३	३६ ५५	३७ ६	३७ १८	३७ २९	३७ ४०	३७ ५२	३८ ३	३८ १५	३८ २७	३८ ३८	३८ ५०	३९ १	३९ १३	३९ २४	३९ ३६	३९ ४८	३९ ५९
वृश्चि७	४० ११	४० २२	४० ३४	४० ४६	४० ५७	४१ ९	४१ २१	४१ ३२	४१ ४४	४१ ५५	४२ ७	४२ १९	४२ ३०	४२ ४२	४२ ५३	४३ ५	४३ १७	४३ २८	४३ ४०	४३ ५१	४४ ३	४४ १४	४४ २६	४४ ३७	४४ ४८	४४ ६०	४५ ११	४५ २२	४५ ३४	४५ ४५
धनु ८	४५ ५६	४६ ७	४६ १८	४६ ३०	४६ ४१	४६ ५२	४७ ३	४७ १४	४७ २४	४७ ३५	४७ ४६	४७ ५७	४८ ७	४८ १८	४८ २९	४८ ३९	४८ ५०	४९ ०	४९ १०	४९ २१	४९ ३१	४९ ४१	४९ ५१	५० १	५० ११	५० २१	५० ३१	५० ४१	५० ५१	५१ ०
मक.९	५१ १०	५१ १९	५१ २९	५१ ३८	५१ ४८	५१ ५७	५२ ६	५२ १६	५२ २५	५२ ३४	५२ ४३	५२ ५२	५३ १	५३ ९	५३ १८	५३ २७	५३ ३६	५३ ४४	५३ ५३	५४ १	५४ १०	५४ १८	५४ २७	५४ ३५	५४ ४३	५४ ५१	५४ ६०	५५ ८	५५ १६	५५ २४
कुंभ१०	५५ ३२	५५ ४०	५५ ४८	५५ ५५	५६ ३	५६ ११	५६ १९	५६ २६	५६ ३४	५६ ४२	५६ ४९	५६ ५७	५७ ५	५७ १२	५७ २०	५७ २७	५७ ३५	५७ ४२	५७ ४९	५७ ५७	५८ ४	५८ ११	५८ १९	५८ २६	५८ ३३	५८ ४१	५८ ४८	५८ ५५	५९ २	५९ १०
मीन ११	५९ १७	५९ २४	५९ ३१	५९ ३८	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २२	० २९	० ३६	० ४३	० ५०	० ५८	१ ५	१ १२	१ १९	१ २७	१ ३४	१ ४१	१ ४९	१ ५६	२ ३	२ ११	२ १८	२ २६	२ ३३	२ ४०	२ ४८

लग्न सारणी २७। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २७ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२ ५१	२ ५९	३ ६	३ १३	३ २१	३ २८	३ ३६	३ ४४	३ ५१	३ ५९	४ ७	४ १४	४ २२	४ ३०	४ ३८	४ ४६	४ ५४	५ २	५ १०	५ १८	५ २६	५ ३४	५ ४२	५ ५१	५ ५९	६ ८	६ १६	६ २५	६ ३३	६ ४२
वृष १	६ ५१	६ ५९	७ ८	७ १७	७ २६	७ ३५	७ ४४	७ ५३	८ २	८ १२	८ २१	८ ३०	८ ४०	८ ४९	८ ५९	९ ९	९ १८	९ २८	९ ३८	९ ४८	९ ५८	१० ८	१० १८	१० २८	१० ३९	१० ४९	१० ५९	११ १०	११ २०	११ ३१
मिथु २	११ ४१	११ ५२	१२ ३	१२ १३	१२ २४	१२ ३५	१२ ४६	१२ ५७	१३ ८	१३ १९	१३ ३०	१३ ४१	१३ ५३	१४ ४	१४ १५	१४ २६	१४ ३८	१४ ४९	१५ १	१५ १२	१५ २३	१५ ३५	१५ ४७	१५ ५८	१६ १०	१६ २१	१६ ३३	१६ ४५	१६ ५६	१७ ८
कर्क ३	१७ २०	१७ ३१	१७ ४३	१७ ५५	१८ ६	१८ १८	१८ ३०	१८ ४२	१८ ५३	१९ ५	१९ १७	१९ २९	१९ ४०	१९ ५२	२० ४	२० १६	२० २७	२० ३९	२० ५१	२१ ३	२१ १४	२१ २६	२१ ३८	२१ ४९	२२ १	२२ १३	२२ २४	२२ ३६	२२ ४७	२२ ५९
सिंह ४	२३ ११	२३ २२	२३ ३४	२३ ४५	२३ ५७	२४ ८	२४ २०	२४ ३१	२४ ४३	२४ ५४	२५ ६	२५ १७	२५ २९	२५ ४०	२५ ५१	२६ ३	२६ १४	२६ २६	२६ ३७	२६ ४८	२६ ६०	२७ ११	२७ २२	२७ ३४	२७ ४५	२७ ५६	२८ ७	२८ १९	२८ ३०	२८ ४१
कन्या ५	२८ ५२	२९ ४	२९ १५	२९ २६	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २३	३० ३४	३० ४५	३० ५६	३१ ८	३१ १९	३१ ३०	३१ ४१	३१ ५३	३२ ४	३२ १५	३२ २७	३२ ३८	३२ ४९	३३ ०	३३ १२	३३ २३	३३ ३५	३३ ४६	३३ ५७	३४ ९	३४ २०
तुला ६	३४ ३१	३४ ४३	३४ ५४	३५ ६	३५ १७	३५ २९	३५ ४०	३५ ५२	३६ ३	३६ १५	३६ २६	३६ ३८	३६ ४९	३७ १	३७ १३	३७ २४	३७ ३६	३७ ४७	३७ ५९	३८ ११	३८ २२	३८ ३४	३८ ४६	३८ ५७	३९ ९	३९ २१	३९ ३३	३९ ४४	३९ ५६	४० ८
वृश्चि७	४० २०	४० ३१	४० ४३	४० ५५	४१ ७	४१ १८	४१ ३०	४१ ४२	४१ ५४	४२ ५	४२ १७	४२ २९	४२ ४०	४२ ५२	४३ ४	४३ १५	४३ २७	४३ ३९	४३ ५०	४४ २	४४ १४	४४ २५	४४ ३७	४४ ४८	४४ ६०	४५ ११	४५ २२	४५ ३४	४५ ४५	४५ ५६
धनु ८	४६ ८	४६ १९	४६ ३०	४६ ४१	४६ ५२	४७ ३	४७ १४	४७ २५	४७ ३६	४७ ४७	४७ ५७	४८ ८	४८ १९	४८ २९	४८ ४०	४८ ५०	४९ १	४९ ११	४९ २१	४९ ३२	४९ ४२	४९ ५२	५० २	५० १२	५० २२	५० ३२	५० ४२	५० ५१	५१ १	५१ ११
मक.९	५१ २०	५१ ३०	५१ ३९	५१ ४८	५१ ५८	५२ ७	५२ १६	५२ २५	५२ ३४	५२ ४३	५२ ५२	५३ १	५३ ९	५३ १८	५३ २७	५३ ३५	५३ ४४	५३ ५२	५४ १	५४ ९	५४ १८	५४ २६	५४ ३४	५४ ४२	५४ ५०	५४ ५८	५५ ६	५५ १४	५५ २२	५५ ३०
कुंभ१०	५५ ३८	५५ ४६	५५ ५३	५६ १	५६ ९	५६ १६	५६ २४	५६ ३२	५६ ३९	५६ ४७	५६ ५४	५७ १	५७ ९	५७ १६	५७ २३	५७ ३१	५७ ३८	५७ ४५	५७ ५३	५७ ६०	५८ ७	५८ १४	५८ २१	५८ २८	५८ ३५	५८ ४३	५८ ५०	५८ ५७	५९ ४	५९ ११
मीन ११	५९ १८	५९ २५	५९ ३२	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २८	० ३५	० ४२	० ४९	० ५६	१ ३	१ १०	१ १७	१ २५	१ ३२	१ ३९	१ ४६	१ ५३	२ ०	२ ८	२ १५	२ २२	२ २९	२ ३७	२ ४४

लग्न सारणी २६। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २६ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२ ५४	३ १	३ ९	३ १७	३ २४	३ ३२	३ ३९	३ ४७	३ ५५	४ ३	४ १०	४ १८	४ २६	४ ३४	४ ४२	४ ५०	४ ५८	५ ६	५ १४	५ २३	५ ३१	५ ३९	५ ४७	५ ५६	६ ४	६ १३	६ २१	६ ३०	६ ३९	६ ४७
वृष १	६ ५६	७ ५	७ १४	७ २३	७ ३२	७ ४१	७ ५०	७ ६०	८ ९	८ १८	८ २८	८ ३७	८ ४७	८ ५६	९ ६	९ १५	९ २५	९ ३५	९ ४५	९ ५५	१० ५	१० १५	१० २५	१० ३५	१० ४६	१० ५६	११ ६	११ १७	११ २७	११ ३८
मिथु २	११ ४९	११ ५९	१२ १०	१२ २१	१२ ३२	१२ ४२	१२ ५३	१३ ४	१३ १५	१३ २६	१३ ३८	१३ ४९	१३ ६०	१४ ११	१४ २२	१४ ३४	१४ ४५	१४ ५६	१५ ८	१५ १९	१५ ३१	१५ ४२	१५ ५४	१६ ५	१६ १७	१६ २८	१६ ४०	१६ ५१	१७ ३	१७ १५
कर्क ३	१७ २६	१७ ३८	१७ ५०	१८ १	१८ १३	१८ २५	१८ ३६	१८ ४८	१८ ६०	१९ ११	१९ २३	१९ ३५	१९ ४६	१९ ५८	२० १०	२० २१	२० ३३	२० ४४	२० ५६	२१ ८	२१ १९	२१ ३१	२१ ४२	२१ ५४	२२ ६	२२ १७	२२ २९	२२ ४०	२२ ५२	२३ ३
सिंह ४	२३ १५	२३ २६	२३ ३८	२३ ४९	२४ ०	२४ १२	२४ २३	२४ ३५	२४ ४६	२४ ५७	२५ ९	२५ २०	२५ ३१	२५ ४३	२५ ५४	२६ ५	२६ १७	२६ २८	२६ ३९	२६ ५०	२७ १	२७ १३	२७ २४	२७ ३५	२७ ४६	२७ ५७	२८ ९	२८ २०	२८ ३१	२८ ४२
कन्या ५	२८ ५३	२९ ४	२९ १६	२९ २७	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३४	३० ४५	३० ५६	३१ ७	३१ १८	३१ २९	३१ ४०	३१ ५२	३२ ३	३२ १४	३२ २५	३२ ३६	३२ ४८	३२ ५९	३३ १०	३३ २१	३३ ३२	३३ ४४	३३ ५५	३४ ६	३४ १८
तुला ६	३४ २९	३४ ४०	३४ ५२	३५ ३	३५ १४	३५ २६	३५ ३७	३५ ४८	३५ ६०	३६ ११	३६ २३	३६ ३४	३६ ४६	३६ ५७	३७ ९	३७ २०	३७ ३२	३७ ४३	३७ ५५	३८ ६	३८ १८	३८ २९	३८ ४१	३८ ५३	३९ ४	३९ १६	३९ २७	३९ ३९	३९ ५१	४० २
वृश्चि७	४० १४	४० २६	४० ३७	४० ४९	४१ १	४१ १२	४१ २४	४१ ३६	४१ ४७	४१ ५९	४२ ११	४२ २२	४२ ३४	४२ ४६	४२ ५७	४३ ९	४३ २१	४३ ३२	४३ ४४	४३ ५५	४४ ७	४४ १८	४४ ३०	४४ ४१	४४ ५३	४५ ४	४५ १५	४५ २७	४५ ३८	४५ ४९
धनु ८	४६ ०	४६ १२	४६ २३	४६ ३४	४६ ४५	४६ ५६	४७ ७	४७ १८	४७ २९	४७ ३९	४७ ५०	४८ १	४८ १२	४८ २२	४८ ३३	४८ ४३	४८ ५४	४९ ४	४९ १४	४९ २५	४९ ३५	४९ ४५	४९ ५५	५० ५	५० १५	५० २५	५० ३५	५० ४५	५० ५४	५१ ४
मक.९	५१ १४	५१ २३	५१ ३३	५१ ४२	५१ ५१	५२ १	५२ १०	५२ १९	५२ २८	५२ ३७	५२ ४६	५२ ५५	५३ ४	५३ १३	५३ २१	५३ ३०	५३ ३९	५३ ४७	५३ ५६	५४ ४	५४ १३	५४ २१	५४ २९	५४ ३८	५४ ४६	५४ ५४	५५ २	५५ १०	५५ १८	५५ २६
कुंभ१०	५५ ३४	५५ ४२	५५ ५०	५५ ५८	५६ ५	५६ १३	५६ २१	५६ २८	५६ ३६	५६ ४४	५६ ५१	५६ ५९	५७ ६	५७ १४	५७ २१	५७ २८	५७ ३६	५७ ४३	५७ ५१	५७ ५८	५८ ५	५८ १२	५८ २०	५८ २७	५८ ३४	५८ ४१	५८ ४९	५८ ५६	५९ ३	५९ १०
मीन ११	५९ १७	५९ २४	५९ ३२	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २९	० ३६	० ४३	० ५०	० ५७	१ ४	१ १२	१ १९	१ २६	१ ३३	१ ४०	१ ४८	१ ५५	२ २	२ १०	२ १७	२ २४	२ ३२	२ ३९	२ ४७

लग्न सारणी २८। ३० अक्षांश (अक्ष पट्टी २८ पर स्थित समस्त ग्रामों नगरों के लिए उपयोगी)

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२ ४९	२ ५६	३ ४	३ ११	३ १८	३ २६	३ ३३	३ ४१	३ ४८	३ ५६	४ ४	४ ११	४ १९	४ २७	४ ३४	४ ४२	४ ५०	४ ५८	५ ६	५ १४	५ २२	५ ३०	५ ३८	५ ४७	५ ५५	६ ३	६ १२	६ २०	६ २९	६ ३७
वृष १	६ ४६	६ ५५	७ ३	७ १२	७ २१	७ ३०	७ ३९	७ ४८	७ ५७	८ ७	८ १६	८ २५	८ ३५	८ ४४	८ ५४	९ ३	९ १३	९ २३	९ ३३	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १३	१० २३	१० ३३	१० ४३	१० ५३	११ ४	११ १४	११ २५
मिथु २	११ ३५	११ ४६	११ ५७	१२ ८	१२ १८	१२ २९	१२ ४०	१२ ५१	१३ २	१३ १३	१३ २४	१३ ३५	१३ ४७	१३ ५८	१४ ९	१४ २१	१४ ३२	१४ ४३	१४ ५५	१५ ६	१५ १८	१५ २९	१५ ४१	१५ ५३	१६ ४	१६ १६	१६ २७	१६ ३९	१६ ५१	१७ ३
कर्क ३	१७ १४	१७ २६	१७ ३८	१७ ५०	१८ १	१८ १३	१८ २५	१८ ३७	१८ ४९	१९ ०	१९ १२	१९ २४	१९ ३६	१९ ४८	१९ ६०	२० ११	२० २३	२० ३५	२० ४७	२० ५९	२१ १०	२१ २२	२१ ३४	२१ ४६	२१ ५७	२२ ९	२२ २१	२२ ३२	२२ ४४	२२ ५६
सिंह ४	२३ ७	२३ १९	२३ ३१	२३ ४२	२३ ५४	२४ ६	२४ १७	२४ २९	२४ ४०	२४ ५२	२५ ३	२५ १५	२५ २६	२५ ३८	२५ ४९	२६ १	२६ १२	२६ २४	२६ ३५	२६ ४७	२६ ५८	२७ १०	२७ २१	२७ ३२	२७ ४४	२७ ५५	२८ ६	२८ १८	२८ २९	२८ ४१
कन्या ५	२८ ५२	२९ ३	२९ १५	२९ २६	२९ ३७	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २३	३० ३४	३० ४५	३० ५७	३१ ८	३१ १९	३१ ३१	३१ ४२	३१ ५४	३२ ५	३२ १६	३२ २८	३२ ३९	३२ ५१	३३ २	३३ १३	३३ २५	३३ ३६	३३ ४८	३३ ५९	३४ ११	३४ २२
तुला ६	३४ ३४	३४ ४५	३४ ५७	३५ ८	३५ २०	३५ ३१	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १८	३६ २९	३६ ४१	३६ ५३	३७ ४	३७ १६	३७ २८	३७ ३९	३७ ५१	३८ ३	३८ १४	३८ २६	३८ ३८	३८ ५०	३९ २	३९ १३	३९ २५	३९ ३७	३९ ४९	४० १	४० १२
वृश्चि७	४० २४	४० ३६	४० ४८	४० ६०	४१ ११	४१ २३	४१ ३५	४१ ४७	४१ ५९	४२ १०	४२ २२	४२ ३४	४२ ४६	४२ ५७	४३ ९	४३ २१	४३ ३३	४३ ४४	४३ ५६	४४ ८	४४ १९	४४ ३१	४४ ४२	४४ ५४	४५ ५	४५ १७	४५ २८	४५ ३९	४५ ५१	४६ २
धनु ८	४६ १३	४६ २५	४६ ३६	४६ ४७	४६ ५८	४७ ९	४७ २०	४७ ३१	४७ ४२	४७ ५३	४८ ३	४८ १४	४८ २५	४८ ३५	४८ ४६	४८ ५६	४९ ७	४९ १७	४९ २७	४९ ३७	४९ ४८	४९ ५८	५० ८	५० १८	५० २७	५० ३७	५० ४७	५० ५७	५१ ६	५१ १६
मक.९	५१ २५	५१ ३५	५१ ४४	५१ ५३	५२ ३	५२ १२	५२ २१	५२ ३०	५२ ३९	५२ ४८	५२ ५७	५३ ५	५३ १४	५३ २३	५३ ३१	५३ ४०	५३ ४८	५३ ५७	५४ ५	५४ १३	५४ २२	५४ ३०	५४ ३८	५४ ४६	५४ ५४	५५ २	५५ १०	५५ १८	५५ २६	५५ ३३
कुंभ१०	५५ ४१	५५ ४९	५५ ५६	५६ ४	५६ १२	५६ १९	५६ २७	५६ ३४	५६ ४२	५६ ४९	५६ ५६	५७ ४	५७ ११	५७ १८	५७ २५	५७ ३३	५७ ४०	५७ ४७	५७ ५४	५८ १	५८ ८	५८ १५	५८ २२	५८ ३०	५८ ३७	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५८	५९ ४	५९ ११
मीन ११	५९ १८	५९ २५	५९ ३२	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २८	० ३५	० ४२	० ४९	० ५६	१ ३	१ ९	१ १६	१ २३	१ ३१	१ ३८	१ ४५	१ ५२	१ ५९	२ ६	२ १३	२ २०	२ २७	२ ३५	२ ४२

जन्मकालीन नक्षत्र से शुभाशुभ विचार

मूलवास - चैत्र, श्रावण, कार्तिक एवं पौष मास में धरती पर, आषाढ, भाद्रपद, आश्विन, एवं माघ में स्वर्ग तथा वैसाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष तथा फाल्गुन मासों में मूलवास पाताल में होता है। आकाश या पाताल में वास होने पर मूल साधारण अशुभ होता है।

अभुक्त मूल विचार - ज्येष्ठान्ते चर्तुनाड़िं मूलाद्य च चतुर्थकं। जन्मस्येतिनेष्ठ काल:, अभुक्त मूलं प्रकीर्तित: ॥ भावार्थ–ज्येष्ठा के अंत एवं मूल के प्रारंभ की चार–चार घड़ियां अभुक्त मूल समय होता है। अभुक्त मूल में जन्म लेने बाला बालक अत्यंत अनिष्टकारी बताया गया है। अत: विधिवत् मूल शान्ति, महामृत्युंजय जाप एवं दानादि करके सूतकान्त में ही पिता को अभुक्त मूल में जन्मे बालक का मुख देखना चाहिए।

ज्वालामुखी योग - पड़वा मूल, पांचें भरणी, आठें कृतिका, नवें रोहिणी, दस अश्लेषा सुनरे सहिया। ये नक्षत्र ज्वालामुखी कहिया।। जन्मे तो जीवे नहीं, बसे तो ऊजर होय। कामिनी पहिरे चूरियां, पुरुष विहूनी होय ॥

जन्म नक्षत्र से पाद विचार -आर्द्रा से स्वाती तक १० नक्षत्र रजतपाद फल सौभाग्य। विशाखा से मूल तक ४ नक्षत्र- लोहपाद- धनहानि। पूर्वाषाढ से उत्तराभाद्रपद तक ७ नक्षत्र - ताम्रपाद- सामान्य शुभ। रेवती से मृगशिरा तक ६ नक्षत्रों में जन्म से स्वर्णपाद फल सर्व सुख होता है।

जन्म के समय मूल नक्षत्र का फल

नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण	शांति दिन
अश्विनी	पितृकष्ट	सुख	राजपद	राज सम्मान	१२ वें
मघा	पितृकष्ट	मातृकष्ट	शुभ	संपदा	१४ वें
रेवती	राज सम्मान	राजपद	धनसुख	कष्ट	१८ वें
ज्येष्ठा	ज्येष्ठ भ्रातकष्ट	लघु भ्रातकष्ट	मातृ कष्ट	स्वयं कष्ट	२७ वें
अश्लेषा	शुभ	धननाश	मातृ कष्ट	पितृकष्ट	२७ वें
मूल	पितृकष्ट	मातृ कष्ट	धननाश	शुभ	२७ वे

जन्म लग्न से कारक - मारक ग्रह

जन्म लग्न	योग कारक	शुभ कारक	अशुभ कारक	मारक ग्रह
मेष	××	गुरु, सूर्य	श. बु. शु.	शुक्र
वृष	शनि	शनि, सूर्य	गु. शु. चं.	गुरु बुध
मिथुन	××	शुक्र	गु. मं. सू.	गुरु
कर्क	मंगल	मंग. शनि	शुक्र, चन्द्र	शनि
सिंह	××	गु.,सू.,मं.	बु. शु. श.	शनि, बुध
कन्या	बुध,शुक्र	शुक्र	गु. चं. मं.	शनि,मंग.
तुला	चंद्र,बुध	शनि, बुध	गु. सू. मं.	मंगल
वृश्चिक	सूर्य,चंद	चंद्र,गुरु	मं. बु. शु.	गु.,बु.,श.
धनु	सूर्य,बुध	शुक्र	××	शनि
मकर	शुक्र	बुध,शुक्र	गु.चं.मं.	शनि
कुम्भ	मंग,शुक्र	शुक्र	गु.चं.मं.	गुरु
मीन	मंग,गुरु	चन्द्र,मंग.	श. शु.सू.बु.	शनि,बुध

ग्रह स्पष्टीकरण विधि - इस पंचांग में प्रत्येक ग्रह की दैनिक गति कलाओं में दी गई है। इष्ट घटि में ६० का गुणा कर इष्ट पलों में जोडने पर जो इष्ट पल प्राप्त होते हैं, उसमें ग्रह की दैनिक गति का गुणा कर ३६०० भाग देने पर जो भागफ ल प्राप्त होता है, वह चालन कला होता है। कलात्मक चालन को अंशादि बनाकर इस पंचांग में दिये प्रात:कालीन ग्रह में जोडने पर इष्टकालीन ग्रह स्पष्ट हो जाता है। यदि ग्रह वक्री हो तो चालन घटाना चाहिये।

द्वादस भाव स्पष्टीकरण विधि - वर्तमान में भाव स्पष्टीकरण की दो विधियां प्रचलित हैं। पहली विधि जैमनीय मतानुसार समान भाव विभाजन अर्थात लग्न में क्रमश: १५-१५ अंश जोडते चले जाने पर भाव संधि एवं भाव स्पष्ट प्राप्त होते चले जाते हैं। दूसरी विधि जो कि वर्तमान में सर्वाधिक प्रचलित है, में सभी भाव समान नहीं होते। इस पद्धति से भाव स्पष्टीकरण विधि इस प्रकार है।

(१) लग्न में से दशम भाव को घटाऐं। (२) शेष को अंश बनाकर ६ से भाग दें। लब्धि को बारी-बारी से दशम भाव में क्रमश: जोड़ते जायें तो दशम भाव संधि, एकादस भाव द्वादश संधि आदि स्पष्ट होते जायेंगे। तब चलते-चलते लग्न भाव स्पष्ट आ जाएगा। (३) पूर्व षष्ठांश को १ राशि या ३० अंश में से घटालें। शेष को क्रमश: लग्न से शुरु कर जोडते जायें तो लग्न से लेकर चतुर्थ भाव संधि सहित स्पष्ट हो जायेंगे। (४) शेष भावों को स्पष्ट करने के लिए इन प्राप्त स्पष्ट राशि में ६ जोड़ते जाएँ तो शेष भाव स्पष्ट हो जाते हैं। उदाहरण के लिए दशम-एकादश संधि में ६ राशि जोडने पर चतुर्थ-पंचम भाव संधि , एकादस भाव में ६ राशि जोडने पर पंचम भाव व लग्न में ६ राशि जोड़ने पर सप्तम भाव स्पष्ट होता है।

आयुश्चक्र

दीर्घायु	मध्यमायू	हीनायु
लग्नेश: चर: अष्टमेश: चर:	लग्नेश: चर: अष्टमेश: स्थिर:	लग्नेश: चर: अष्टमेश:द्विस्वभाव:
लग्नेश: स्थिर: अष्टमेश: द्विस्वभाव:	लग्नेश: स्थिर: अष्टमेश: चर:	लग्नेश: स्थिर: अष्टमेश: स्थिर:
लग्नेश: द्विस्वभाव: अष्टमेश: स्थिर:	लग्नेश: द्विस्वभाव: अष्टमेश:द्विस्वभाव:	लग्नेश: द्विस्वभाव: अष्टमेश: चर:

उपरोक्त आयुश्चक्र में लग्नेश एवं अष्टमेश से आयु विचार लिखा गया है। यह प्रथम योग है। इसी प्रकार लग्न तथा होरा से द्वितीय योग देखना चाहिये। यदि चंद्रमा लग्न-सप्तम में हो तो लग्न-चंद्र से अन्यथा शनि तथा चंद्र से आयु विचार करना चाहिये। यह तृतीय योग है। तीनों योगों से भिन्न-भिन्न आयु आने पर निम्न चक्र से स्पष्ट आयु एवं आयु खंड का ज्ञान करना चाहिये।

स्पष्टायु चक्रम्

दीर्घायु:	मध्यमायु:	हीनायु:	आयुखंड:
त्रियोगे १२०	त्रियोगे ८०	त्रियोगे ४०	४०
द्वियोगे १०८	द्वियोगे ७२	द्वियोगे ३६	३६
एकम्योगे९६	एकम्योगे६४	एकम्योगे३२	३२

उपरोक्त योगों से प्राप्त आयु अन्तिम नहीं होती है। शनि की स्थिति से आयु कक्षा में ह्रास-वृद्धि हुआ करती है। शनि के बलवान होने पर या शनि का गुरु से स्थान सम्बन्ध होने पर आयु कक्षा में वृद्धि होती है, अर्थात हीनायु को मध्यमायु और मध्यमायु को दीर्घायु प्रदान करता है। इस प्रकार कुशल दैवज्ञ को कई अन्य योग विचार कर आयुर्निर्णय करना चाहिये।

होरा लग्न स्पष्ट विधि-

होरा लग्न का आरम्भ सूर्योदय से १-१ घंटे पर्यन्त सूर्य राशि से होता है। होरा लग्न स्पष्ट करने के लिए अपने इष्टकाल में २ का गुणा कर ५ का भाग देने पर जो फ ल मिले उसमें सूर्य स्पष्ट जोडने पर होरा लग्न प्राप्त होता है।

द्वादश भावों से विचारणीय विषय

भाव	संज्ञा	कारक ग्रह	विषय
प्रथम	केन्द्र	सूर्य	वर्ण, शरीर, आकृति, बुद्धि, लक्षण, गुण, स्वभाव, मान, यश, विवेक, सुख, प्रवास, मस्तिष्क, आयु, निद्रा, दादा
द्वितीय	पणफर	गुरु	धन, कुटुम्ब, दक्षिण नेत्र, विद्या, वाणी, भोजन, सौन्दर्य, यात्रा, विपुल सम्पदा, आकस्मिक धन, लाटरी इत्यादि
तृतीय	आपोक्लिम उपचय	मंगल	भाई, वहन, पराक्रम, हाथ, कान, नौकर, मित्रता, दत्तक पुत्र, यश-अपयश, दमा रोग, औषधि ज्ञान इत्यादि।
चतुर्थ	केन्द्र	बुध, चन्द्र	सुख-दु:ख, माता, कृषि कार्य, वाहन, भूमि-भवन लाभ, हृदय, रहन-सहन स्तर, ऐश्वर्य इत्यादि।
पंचम	पणफर त्रिकोण	गुरु	सन्तान, बुद्धि, विद्या, प्रतिभा, दैवज्ञ गुण, भाषण, साहित्य, यंत्र-मंत्र शक्ति, प्रेम विवाह, गर्भ धारण, लाटरी इत्यादि।
षष्ठ	त्रिक	शनि, मंगल	शत्रु, रोग, व्यसन, घाव, चाचा, मामा पक्ष, हानि, चोरी भय, जेल यातना, कमर, धोखा इत्यादि।
सप्तम	केन्द्र	शुक्र	पत्नि का रूप-रंग-गुण-स्वभाव, स्त्री सुख, विवाह, व्यभिचार, गुप्त रोग, भतीजा पक्ष इत्यादि।
अष्टम	त्रिक	शनि	आयु, वालारिष्ट, आत्मघात, मृत्यु कारण, रिश्वत, भूमिगत द्रव्य, आकस्मिक लाभ, जलयात्रा, विदेश यात्रा ,गुप्त रोग।
नवम	आपोक्लिम त्रिकोण	सूर्य, गुरु	भाग्य, उन्नति, धर्म, पाप-पुण्य, दानशीलता, दैविक शक्ति, पौत्र, वायुयात्रा, विदेश यात्रा, उच्च शिक्षा इत्यादि।
दशम	केन्द्र	मंगल योगद, गु.बु.सू.कारक	कर्मक्षेत्र, वृत्ति, पद, जीविका, नौकरी, व्यवसाय, मान हानि, जीवन स्तर, राजमान, पिता का सुख इत्यादि।
एकादश	पणफर	गुरु	आय का स्तर, लाभ, आभूषण, वड़ा भाई इत्यादि।
द्वादश	आपोक्लिम त्रिक	शनि	व्यय, वाम नेत्र, विदेश यात्रा, कारावास, दण्ड, ऋण, हानि, अपयश, स्थान परिवर्तन, कलह, दुराचरण इत्यादि।

ग्रह	ग्रह अधीन विषय	विकल स्थान
सूर्य	पिता, आत्मा, ऐश्वर्य, आरोग्य, शक्ति, लक्ष्मी, अस्थि।	
चन्द्र	माता, मन, बुद्धि, धन, रक्त।	सूर्य के साथ
मंगल	पराक्रम, रोग, भाई, भूमि, शासक, मज्जा एवं मांस।	द्वितीय भाव में
बुध	विद्या, वाणी, बंधु, मामा, मित्र, त्वचा।	चतुर्थ भाव में
गुरु	बुद्धि, शरीर, पुष्टि, पुत्र, ज्ञान, चर्बी।	पंचम भाव में
शुक्र	स्त्री, वाहन, आभूषण, वीर्य।	षष्ट भाव में
शनि	आयु, सुख-दु:ख, नस।	सप्तम भाव में

विफल स्थानों में ग्रह शुभ फल देने में असमर्थ रहते हैं। ग्रहों की नेष्ट स्थिति में उस ग्रह से संबंधित विषयों की कमी तथा सुबल स्थिति में संबंधित विषयों का सुख रहता है। यदि जन्म के समय जो ग्रह अस्त हो उससे संबंधित विषयों की कमी आजीवन रहती है। इसी तरह ग्रह का बल ज्ञात कर फलादेश करने वाले विद्वान सर्वत्र यश, सम्मान एवं लक्ष्मी पाते हैं।

भयात, भभोग एवं महादशा गणना विधि

भयात् – 'भ' अर्थात् नक्षत्र एवं 'यात्' अर्थात् व्यतीत काल। अत: जन्म के समय तक वर्तमान नक्षत्र का जितना समय व्यतीत हो चुका होता है वह काल भयात् होता है।

भभोग – 'भ' अर्थात् नक्षत्र एवं 'भोग' अर्थात् सम्पूर्ण काल। अत: जन्म के समय वर्तमान नक्षत्र का सम्पूर्ण भोग काल भभोग होता है। इनके निकालने की विधि इस प्रकार है।

(१) गत नक्षत्र के धटी पलों को ६० में से घटाकर शेष को दो जगह रख लें।

(२) एक स्थान पर इष्टकाल जोड़ने पर भयात् होगा।

(३) दूसरे स्थान पर वर्तमान नक्षत्र के धटी पलों को जोड़ने पर भभोग होगा।

उदाहरण के लिये इष्टकाल १०.२३ है। उस दिन पंचांग में भरणी नक्षत्र २८.४५ पल लिखा है। पिछला (गत) नक्षत्र अश्विनी २५.५५ पल लिखा है। तव गत नक्षत्र के २५.५५ को ६० में से घटाने पर ३४.०५ शेष में एक स्थान पर इष्टकाल १०.२३ जोड़ा तो ४४.२८ भयात् हुआ। दूसरे स्थान पर शेष ३४.०५ शेष में वर्तमान नक्षत्र के २८.४५ जोड़े तो ६२.५० भभोग हुआ।

महादशा गणना विधि – विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी या योगिनी दशा सारणी में जन्म नक्षत्र के अनुसार दशा वर्ष देखकर, भयात् का गुणा कर गुणनफल में भभोग का भाग देने पर जो भाग फल हो वह दशा भुक्तवर्ष होते हैं। शंषफल में १२ गुणा करके पुन: भभोग का भाग देने पर दशा के भुक्तमास प्राप्त होते हैं। शेषफल में ३० का गुणा करके भभोग का भाग देने पर दशा के भुक्तदिन प्राप्त होते हैं। महादशा काल में से भुक्त वर्ष, मास, दिन घटाने पर भोग्य वर्ष, मास, दिन प्राप्त होते हैं। भोग्य वर्ष-मास-दिन को जन्म के संवत्-मास-तिथि में जोडते जाने पर महादशा अवधि प्राप्त होती हैं। यदि दशाक्रम ईसवी सन् में लिखना हो तो एक वर्ष ३६० दिन का एवं एक मास ३० दिन का मानकर लेना चाहिये।

महादशा फल

जातक की जन्म लग्न के अनुसार कारक चक्र में योगकारक एवं शुभ ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा सदैव शुभ होती है। इस समय कारक ग्रह जिन- जिन वस्तुओं का कारक होता है, उनकी उपलब्धि होती है। जो ग्रह जन्म लग्न या नवांश में उच्च, वर्गोत्तम नवांश, मूलत्रिकोण, अधिमित्र की राशि में, मित्र क्षेत्र में, शुभ ग्रहों से दृष्ट या षड्वर्गों में शुभ वर्गों मे गया हो तो वह अपनी दशा-अन्तर्दशा में शुभ फल देगा। निसर्ग शुभ ग्रह प्राय: शुभ फलद होते हैं। उपरोक्त तथ्यों के विपरीत होने पर महादशा का फल अशुभ होगा। यदि पापी ग्रह जन्म के समय वक्री भी हो तो उसकी दशा अत्यंत कष्टकारी होती है। पाराशर मत से मारक ग्रहों की दशा कष्टप्रद होती है। मारक की महादशा में मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मारक की अन्तर्दशा मृत्यु कारक नहीं होती है। शुभाशुभ का अन्तिम निर्णय दशानाथ के बल के अनुरूप करना चाहिये, उदाहरण के लिए यदि किसी राजयोगकारक ग्रह की महादशा चल रही है और उस ग्रह का विंशोपक बल ५ या उससे कम है तो उस समय कोई भी शुभ फल प्रगट नहीं होगा। इसी प्रकार बलहीन अशुभ ग्रह की महादशा में अशुभ फल अवरुद्ध रहेगा।

अन्तर्दशा फल – १. महादशेश जिस स्थान में बैठा हो उससे ३,४,५,९,१०,११ वें घर में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा शुभ होती है। इसी प्रकार परस्पर मित्र ग्रहों की दशान्तर्दशा सुखद होती है। महादशानाथ जिस स्थान में बैठा हो उससे द्वितीय भाव में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा मिश्रित फल देती है। दशानाथ से १,६,७,८,१२ भाव में स्थित ग्रह या निसर्ग पाप ग्रह या जनम लग्न से ६,८,१२ भावेशों की अन्तर्दशा अशुभ होती है।

विंशोत्तरी दशा वोधक चक्रम्

कृति,उफा,उषा				रोहि,हस्त,श्रव				मृग,चित्रा,धनि			
सूर्य ६ वर्ष				चंद्र १० वर्ष				मंगल ७ वर्ष			
अन्तर्दशा वर्ष मास दिन				अंतर्दशा				अंतर्दशा			
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	गु.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	गु.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

आर्द्रा,स्वां,शत				पुन,विशा,पूभा				पुष्य,अनु,उभा			
राहु १८ वर्ष				गुरु १६ वर्ष				शनि १९ वर्ष			
अंतर्दशा				अंतर्दशा				अंतर्दशा			
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
गु.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	गु.	२	६	१२

श्लेषा,ज्ये रेवती				अश्वि,मघा,मूल				भर, पूषा, पूफा			
बुध १७ वर्ष				केतु ७ वर्ष				शुक्र २० वर्ष			
अंतर्दशा				अंतर्दशा				अंतर्दशा			
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	गु.	२	८	०
रा.	२	६	१८	गु.	०	११	६	श.	३	२	०
गु.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनी दशा वोधक चक्रम्

आर्द्रा,चित्रा,श्रव.				पुन,स्वां,धनि				पुष्य,विशा,शत				अनु,आश्ले.,पूभा			
मंगला १ वर्ष				पिंगला २ वर्ष				धान्या ३ वर्ष				भ्रामरी ४ वर्ष			
अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन	अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन	अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन	अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन
मंगला	०	०	१०	पिंग.	०	१	१०	धान्या	०	३	०	भ्राम.	०	५	१०
पिंग.	०	०	२०	धान्या	०	२	०	भ्राम.	०	४	०	भद्रि.	०	६	२०
धान्या	०	१	०	भ्राम.	०	२	२०	भद्रि.	०	५	०	उल्का	०	८	०
भ्राम.	०	१	१०	भद्रि.	०	३	१०	उल्का	०	६	०	सिद्धा	०	९	१०
भद्रि.	०	१	२०	उल्का	०	४	०	सिद्धा	०	७	०	संक.	०	१०	२०
उल्का	०	२	०	सिद्धा	०	४	२०	संक.	०	८	०	मंगला	०	१	१०
सिद्धा	०	२	१०	संक.	०	५	१०	मंगला	०	१	०	पिंग.	०	२	२०
संक.	०	२	२०	मंगला	०	०	२०	पिंग.	०	२	०	धान्या	०	४	

मघा,ज्ये,उभा				पूफा,मूल,रेव				रोहि, उफा,पूषा				मृग.,हस्त,उषा			
भद्रिका ५ वर्ष				उल्का ६ वर्ष				सिद्धा ७ वर्ष				संकटा ८ वर्ष			
अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन	अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन	अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन	अन्तर्दशा	वर्ष	मास	दिन
भद्रि.	०	८	१०	उल्का	१	०	०	सिद्धा	१	४	१०	संक.	१	९	१०
उल्का	०	१०	०	सिद्धा	१	२	०	संक.	१	६	२०	मंगला	०	२	२०
सिद्धा	०	११	२०	संक.	१	४	०	मंगला	०	२	१०	पिंग.	०	५	१०
संक.	१	१	१०	मंगला	०	२	०	पिंग.	०	४	२०	धान्या	०	८	०
मंगला	०	१	२०	पिंग.	०	४	०	धान्या	०	७	०	भ्राम.	०	१०	२०
पिंग.	०	३	१०	धान्या	०	६	०	भ्राम.	०	९	१०	भद्रि.	१	१	१०
धान्या	०	५	०	भ्राम.	०	८	०	भद्रि.	०	११	२०	उल्का	१	४	०
भ्राम.		६	२०	भद्रि.	०	०	१०	उल्का	१	२	०	सिद्धा	१	६	२०

अष्टोत्तरी दशा वोधक चक्रम्

(यदि जन्म लग्न में कोई ग्रह विद्यमान हो तो आद्रादि)

आर्द्रा,पुन,पुष्य,श्ले	मघा, पूफा, उफा	ह.चि,स्वा,विशा	अनु, ज्ये, मूल	पूषा उषा अभि.	धनि., शत, पूभा	उभा.रेव. अश्वि.भर	कृतिका, रोहि, मृग.
सूर्य ६ वर्ष	चंद्र १५ वर्ष	मंगल ८ वर्ष	बुध १७ वर्ष	शनि १० वर्ष	गुरु१९ वर्ष	राहु १२ वर्ष	शुक्र २१ वर्ष

(यदि जन्म लग्न ग्रह रहित हो तो कृतिकादि)

कृति, रोहि, मृग	आर्द्रा,पुन,पुष्य,श्ले	मघा, पूफा, उफा	ह.चि,स्वा,विशा	अनु, ज्ये, मूल	पूषा.उषा.अभि श्र	धनि, शत, पूभा	उभा.रेव.अश्वि.भर
सूर्य ६ वर्ष	चंद्र १५ वर्ष	मंगल ८ वर्ष	बुध १७ वर्ष	शनि १० वर्ष	गुरु१९ वर्ष	राहु १२ वर्ष	शुक्र २१ वर्ष

चन्द्र स्पष्ट से विंशोन्तरी महादशा ज्ञात करने हेतु सारणी

भाग-क

चन्द्र राशि अंश	कला	मेष,सिंह, धनु भोग्य दशा वर्ष मास दिन	वृष,कन्या,मकर भोग्य दशा वर्ष मास दिन	मिथुन,तुला,कुंभ भोग्य दशा वर्ष मास दिन	कर्क,वृश्चिक,मीन भोग्य दशा वर्ष मास दिन
०	०	केत ७,०,०	सूर्य ४, ६, ०	मंगल ३, ६, ०	गुरु ४, ०, ०
१	०	,, ६, ५, २१	,, ४, ०, १८	,, २, ११, २१	,, २, ९, १८
२	०	,, ५,११,१२	,, ३, ७, ६	,, २, ५, १२	,, १, ७, ६
३	०	,, ५, ५, ३	,, ३, १, २४	,, १, ११, ३	,, ०, ४, २४
३	२०	,, ५, ३, ०	,, ३, ०, ०	,, १, ९, ०	शनि १९, ०, ०
४	०	,, ४,१०,२४	,, २, ८, १२	,, १, ४, २४	,, १८, ०, १८
५	०	,, ४, ४,१५	,, २, ३, ०	,, ०, १०, १५	,, १६, ७, १५
६	०	,, ३, १०, ६	,, १, ९, १८	,, ०, ४, ६	,, १५, २, १२
६	४०	,, ३, ६, ०	,, १, ६, ०	राहु १८, ०, ०	,, १४, ३, ०
७	०	,, ३, ३, २७	,, १, ४, ६	,, १७, ६, १८	,, १३, ९, ९
८	०	,, २, ९, १८	,, २, ९, १८	,, १६, २, १२	,, १२, ४, ६
९	०	,, २, ३, ९	,, ०, ५, १२	,, १४, १०, ६	,, १०, ११, ३
१०	०	,, १, ९, ०	चंद्र १०, ०, ०	,, १३, ६, ०	,, ९, ६, ०
११	०	,, १, २, २१	,, ९, ३, १८	,, १२, १, २४	,, ८, ०, २७
१२	०	,, ०, ८, १२	,, ८, ६, ०	,, १०, ९, १८	,, ६, ७, २४
१३	०	,, ०, २, ३	,, ७, ९, २४	,, ९, ५, १२	,, ५, २, २१
१३	२०	शुक्र – २०,०,०	,, ७, ६, ०	,, ९, ०, ०	,, ४, ९, ०
१४	०	,, १९, ०, ०	,, ७, ०, ०	,, ८, १, ६	,, ३, ९, ४८
१५	०	,, १७, ६, ०	,, ६, ३, ०	,, ६, ९, ०	,, २, ४, १५
१६	०	,, १६, ०, ०	,, ५, ६, ०	,, ५, ४, २४	,, ०, ११, १५
१६	४०	,, १५, ०, ०	,, ५, ०, ०	,, ४, ६, ०	,, १७, ०, ०
१७	०	,, १४, ६, ०	,, ४, ९, ०	,, ४, ०, १८	,, १६, ६, २७
१८	०	,, १३, ०, ०	,, ४, ०, ०	,, २, ८, १२	,, १५, ३, १८
१९	०	,, ११, ६, ०	,, ३, ३, ०	,, १, ४, ६	,, १४, ०, ९
२०	०	,, १०, ०, ०	,, २, ६, ०	गुरु १६, ०, ०	,, १२, ९, ०
२१	०	,, ८, ६, ०	,, १, ९, ०	,, १४, ९, १८	,, ११, ५, २१
२२	०	,, ७, ०, ०	,, १, ०, ०	,, १३, ७, ६	,, १०, २, १२
२३	०	,, ५, ६, ०	,, ०, ३, ०	,, १२, ४, २४	,, ८, ११, ३
२३	२०	,, ५, ०, ०	मंगल ७, ०, ०	,, १२, ०, ०	,, ८, ६, ०
२४	०	,, ४, ०, ०	,, ६, ७, २४	,, ११, २, १२	,, ७, ७, २४
२५	०	,, २, ६, ०	,, ६, १, १५	,, १०, ०, ०	,, ६, ४, १५
२६	०	,, १, ०, ०	,, ५, ७, ६	,, ८, ९, १८	,, ५, १, ६
२६	४०	सूर्य ६, ०, ०	,, ५, ३, ०	,, ८, ०, ०	,, ४, ३, ०
२७	०	,, ५, १०, ६	,, ५, १०, ६	,, ७, ७, ६	,, ३, ९, २७
२८	०	,, ५, ४, २४	,, ५, ४, २४	,, ६, ४, २४	,, २, ६, १८
२९	०	,, ४, ११,१२	,, ४, ११, १२	,, ५, २, १२	,, १, ३, ९
३०	०	,, ४, ६, ०	,, ४, ६, ०	,, ४, ०, ०	,, ०, ०, ०

भाग- ख

चंद्र कला	केतु मा.दि.	शुक्र मा.दि.	सूर्य मा.दि.	चंद्र मा.दि.	मंगल मा.दि.	राहु मा.दि.	गुरु मा.दि.	शनि मा.दि.	बुध मा.दि.
१	०,३	०,९	**०, ३**	०, ५	०, ३	०, ८	०, ७	०, ९	०, ८
२	०,६	०,१८	**०, ५**	०, ९	०, ६	०,१६	०,१४	०,१७	०,१५
३	०,९	०,२७	**०, ८**	०,१४	०,९	०,२४	०,२२	०,२६	०,२३
४	०,१३	१,६	**०,११**	०,१८	०,१३	१, २	०,२९	१, ४	१, १
५	०,१६	१,१५	**०,१४**	०,२३	०,१६	१,११	१, ६	१,१३	१, ८
६	०,१९	१,२४	**०,१६**	०,२७	०,१९	१,१९	१,१३	१,२१	१,१६
७	०,२२	२,३	**०,१९**	१, २	०,२२	१,२७	१,२०	२, ०	१,२४
८	०,२५	२,१२	**०,२२**	१, ६	०,२५	२, ५	१,२८	२, ८	२, १
९	०,२८	२,२१	**०,२४**	१,११	०,२८	२,१३	२, ५	२,१७	२, ९
१०	१,१ ।।	३,०	**०,२७**	१,१५	१, १	२,२१	२,१२	२,२६	२,१७

इष्ट काल का चन्द्र स्पष्ट ज्ञातकर उसकी राशि के अंश एवं कलाओं के अनुसार विंशोत्तरी दशा का भोग्य समय (सारिणी–'क' से) निकालें। इस सारणी में १–१ अंश के अन्तर पर दशा का भोग्य समय दिया है। फिर कलाओं के अनुपात में उनका (कला सारणी – ख से) उस ग्रह के कोष्ठक में दिया समय निकालकर पहले निकाले गए समय में घटा या जोड़ कर अभीष्ट भोग्य दशा समय प्राप्त करें।

ग्रहों के संबन्धित आजीविकाएं

सूर्य – खगोल शास्त्र, नाटक या फिल्म निर्देशन, संस्था प्रमुख, चिकित्सा, वाद–विवाद, ऊन, तृण, जल, अनाज, पत्थर, ज्वेलर्स, सलाहकार, पायलट, बैंक, शेयर बाजार, मौषम विभाग, वन विभाग, दूतावास।

चंद्र – चांदी, जलजन्य बस्तुऐं जैसे शीतल पेय, मिनरल वाटर इत्यादि, बस्त्र संबन्धी नौकरी या व्यवशाय, मनोरंजन, कृषि, मिट्टी, दुग्ध डेयरी, प्लास्टिक वस्तुऐं, खाने की वस्तुऐं, कैटरिंग, जहाज, वाटर सप्लाई इत्यादि।

मंगल – सेना, पुलिस, सुरक्षा, जासूस, खिलाडी, पर्वतारोहण, साहसिक कार्य, अग्निसमन, अग्नि से संबंधित कार्य जैसे घातुकर्म, सिगरेट इत्यादि, आटो पार्टस, रसायन, मेडीकल, रक्त संचय, चाय, विद्युत् कार्य इत्यादि।

बुध – काव्य, वक्ता, वेदान्त, शिल्पकला, सेल्स, कमीसन, सम्पादन, प्रेस, समाचार पत्र, डाक कार्य, कम्प्यूटर, ब्याज अर्जन, टैक्स, गणितज्ञ, ज्योतिष, लेखक, वकील, इम्पोर्ट, आयुर्वेद, मुर्गी पालन, आर्ट कार्य, हरे रंग की वस्तुओं का व्यवशाय इत्यादि।

गुरु– अध्यापन, धार्मिक ग्रंथ, जज, मंत्री, ज्योतिषी, सामाजिक कार्य, मठाधीस, वकील, भवन निर्माण, वाहन व्यवशाय, फाईनेन्स, मेनेजर, प्रकाशक, शेयर बाजार इत्यादि।

शुक्र – कला से सम्बंधित व्यवशाय, ज्वेलर्स, सौन्दर्य प्रसाधन, मनोरंजन, विदेशी मदिरा, संगीत, अभिनय इत्यादि।

शनि – न्यायालयीन कार्य, लेवर यूनियन, लोह, तेल कवाड़े इत्यादि का व्योपार, मेकेनिकल इंजीनियरिंग। शनि अल्प बली होने पर लघु सेवाकार्य।

राहु–केतु – सट्टा, देशी शराब, गैर कानूनी कार्य, कीट नाशक, जहर, यदि राहु बलवान हो तो राजनीति, विदेश व्योपार, रेलवे, विद्युत कार्य।

अष्टक वर्ग चक्रम्

रवि अष्टक वर्ग रेखा ४८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	ल
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

चंद्र अष्टक वर्ग रेखा ४९

चं	मं	बु	गु	शु	श	ल	सू
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	१०	७
७	६	५	८	७	११	११	८
१०	९	७	१०	९			१०
११	१०	८	११	१०			११
	११	१०	१२	११			
		११					

बुध अष्टक वर्ग रेखा ५४

बु	गु	शु	श	ल	सू	चं	मं
१	६	१	१	१	५	४	१
३	८	२	२	२	६	५	२
५	११	३	४	४	९	६	४
६	१२	४	७	६	११	८	७
९		५	८	९	१२	१०	८
१०		८	९	११		११	९
११		९	१०	१२			१०
१२		११	११				११

गुरु अष्टक वर्ग रेखा ५६

गु	शु	श	ल	सू	चं	मं	बु
१	२	३	१	१	२	१	१
२	५	५	२	२	५	२	२
३	६	६	४	३	७	४	४
४	९	१२	५	४	९	७	५
७	१०		६	७	११	८	६
८	११		७	८		१०	९
१०			९	९		११	१०
११			१०	१०			११
			११	११			

शुक्र अष्टक वर्ग रेखा ५२

शु	श	ल	सू	चं	मं	बु	गु
१	३	१	८	१	३	३	५
२	४	२	११	२	५	५	८
३	५	३	१२	३	६	६	९
४	८	४		४	९	९	१०
५	९	५		५	११	११	११
८	१०	८		८	१२		
९	११	९		९			
१०		१०		११			
११				१२			

लग्न अष्टक वर्ग रेखा ४९

ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
३	३	३	१	१	१	१	१
६	४	६	३	२	२	२	३
१०	६	१०	६	४	४	३	४
११	१०	११	१०	६	५	४	६
	११		११	८	६	५	१०
	१२			१०	७	८	११
				११	९	९	
					१०	११	
					११		

मंगल अष्टक वर्ग रेखा ३९

मं	बु	गु	शु	श	ल	सू	चं
१	३	६	६	१	१	३	३
२	५	१०	८	४	३	५	६
४	६	११	११	७	६	६	११
७	१२	१२	१२	८	१०	१०	
८				९	११	११	
१०				१०			
११				११			

शनि अष्ट—वर्ग रेखा ३९

श	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु
३	१	१	३	३	६	५	६
५	३	२	६	५	८	६	११
६	४	४	११	६	९	११	१२
११	६	७		१०	१०	१२	
	१०	८		११	११		
	११	१०		१२	१२		
		११					

अष्टक वर्गअष्टक वर्ग फलित सूत्र

गोचर फल – उपरोक्त स्थानों में प्रत्येक ग्रह, उस स्थान में स्थित राशि को एक रेखा (।) प्रदान करताहै। जिस भावमें जितनी रेखाऐं हों उसी अनुपात में फल होता है। ८ रेखा में पूर्ण, ४ रेखा में आघा और २ रेखा में चौथाई फल होता है। कम रेखा युक्त राशि में गोचर होने पर उस ग्रह से संबंधित फल कम मिलते हैं। जैसे यदि गुरु कम रेखा युक्त राशि में गोचर करें तो विवाह, संतान सुख या प्रतिष्ठा में कमी होगी।

सर्वाष्टक वर्ग – प्रत्येक राशि को आठों ग्रहों द्वारा प्रदत्त रेखाओं के योग को सर्वाष्टक वर्ग कहते हैं। अशुभ (त्रिक ६,८,१२) भावों में कम रेखाऐं शुभ होती हैं। अन्य भावों में २८ से कम रेखाऐं अपुष्ट और अधिक रेखाऐं भाव को पुष्ट करती हैं। दैनिक राशिफल चंद्रमा से, मासफल का विचार सूर्य–बुध–मंगल–शुक्र से, वर्षफल गुरु–शनि–राहु–केतु से करना चाहिये।

अष्टक वर्ग से गोचर का फल अत्यंत शुद्ध होता है। इससे ज्योतिष सर्वत्र सम्मान प्राप्त करते हैं।

होरादि सप्तवर्ग सारणी

राशि, होरा, देष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश, और त्रिशांश सप्तवर्ग कहलाते हैं। इनमें से राशि का ज्ञान तो ग्रह स्पष्ट होते ही हो जाता है। शेष छह कुंडलियां यहां दी गई सारणी से बनाना सरल होगा। इस सारणी में होरादि वर्ग के प्रारम्भिक अंशकला दी गई हैं। अत: ग्रह के अंश कला जिन दो कालमों के बीच में हों उनमें से पहले कालम के नीचे राशि के सामने ग्रह के होरादि सप्तवर्ग की राशि संख्या (१ मेष,२ वृष) मिलती है। उदाहरण के लिए लग्न स्पष्ट ५.२५.१५.५६ है तो, चयनित कालम कन्या राशि के सामने एवं २५ अंश ४२ कला ५१ विकला कालम के नीचे क्रमश होरा की राशि ५, देष्काण २, सप्तमांश ५, नवांश ५, द्वादशांश ४, त्रिशांश ८ होगा।

राशि	अंश कला विकला	२ ३० ०	३ २० ०	४ १७ ८	५ ० ०	६ ४० ०	७ ३० ०	८ ३४ १७	१० ० ०	१२ ० ०	१२ ३० ०	१२ ५१ २६	१३ २० ०	१५ ० ०	१६ ४० ०	१७ ८ ३४	१७ ३० ०	१८ ० ०	२० ० ०	२१ २५ ४३	२२ ३० ०	२३ २० ०	२५ ० ०	२५ ४२ ५१	२६ ४० ०	२७ ३० ०	३० ० ०
० मेष	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	देष्काण	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सप्तमांश	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	नवमांश	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वादशांश	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृष	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	देष्काण	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सप्तमांश	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	नवमांश	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वादशांश	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मिथुन	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	देष्काण	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सप्तमांश	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	नवमांश	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वादशांश	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ कर्क	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	देष्काण	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सप्तमांश	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	नवमांश	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वादशांश	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सिंह	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	देष्काण	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सप्तमांश	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	नवमांश	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वादशांश	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ कन्या	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	देष्काण	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सप्तमांश	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	नवमांश	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वादशांश	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	अंश कला विकला	२ ३० ०	३ २० ०	४ १७ ८	५ ० ०	६ ४० ०	७ ३० ०	८ ३४ १७	१० ० ०	१२ ० ०	१२ ३० ०	१२ ५१ २६	१३ २० ०	१५ ० ०	१६ ४० ०	१७ ८ ३४	१७ ३० ०	१८ ० ०	२० ० ०	२१ २५ ४३	२२ ३० ०	२३ २० ०	२५ ० ०	२५ ४२ ५१	२६ ४० ०	२७ ३० ०	३० ० ०
६ तुला	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	देष्काण	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	सप्तमांश	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	नवमांश	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वादशांश	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृश्चिक	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	देष्काण	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	सप्तमांश	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	नवमांश	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वादशांश	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८ धनु	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	देष्काण	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	सप्तमांश	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	नवमांश	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वादशांश	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ मकर	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	देष्काण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	सप्तमांश	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	नवमांश	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वादशांश	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कुम्भ	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	देष्काण	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	सप्तमांश	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	नवमांश	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वादशांश	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मीन	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	देष्काण	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	सप्तमांश	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	नवमांश	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वादशांश	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

सप्तवर्ग कुंडिलियों का महत्व -इन सातों कुंडलियों में जो ग्रह उच्च, मूल त्रिकोण, स्वग्रह या मित्र राशि में हो तो बलवान होता है। बलवान ग्रह अपनी दशा अंतरर्दशा में उत्तम फल देता है । अन्यथा विपरीत फल प्राप्त होता है।

सप्तवर्ग में लग्न या ग्रह की संज्ञा -यदि कोई भी ग्रह इन सात वर्गों में से दो कुंडलियों में शुभ हो तो किंशुक, तीन में व्यंजन, चार में चामर, पांच में छत्र, छह में कुंडल एवं सातों वर्गों में शुभ होने पर उस ग्रह की संज्ञा मुकुट कहलाती है।

ग्रहों की बालादि अवस्थाऐं

ग्रह स्पष्ट अंश	विषम राशि में	सम राशि में
० से ६	बाल	मृत
६ से १२	कुमार	युवा
१२ से १८	युवा	युवा
१८ से २४	युवा	कुमार
२४ से ३०	मृत	बाल

सप्तवर्गीय बल

पंचधा मैत्री	कला विकला
स्व गृह	३० । ०
अतिमित्र	२२ । ३ ०
मित्र	१५ । ०
सम	७ । ३ ०
शत्रु	३ । ४५
अति शत्रु	१।५२।३०

वर्गोत्तम नवांश ज्ञान

राशि	नवांश संख्या	अंश कला
मेष,कर्क तुला,मकर	प्रथम	० अंश से ३. २०
वृष,सिंह वृश्चि,कुंभ	पंचम्	१३.२० से १६.४०
मिथु.कन्या धनु,मीन	नवम्	२६.४० से ३०.००

वर्गोत्तम नवांश -

यदि कोई ग्रह लग्न कुंडली और नवांश कुंडली में समान राशि में हो तो वह ग्रह वर्गोत्तम नवांश में कहलाता है। यह ग्रह उच्च के समान फल देता है। इसी प्रकार वर्गोत्तम लग्न भी शुभ कही गई है।

वर्ष प्रवेश सारणी से इष्टकाल का ज्ञान

यहां पर नूतन वेध सिद्ध वर्षमान ३६५ दिन, १५ घटि, २२ पल, ५७ विपल तथा सौर आर्ष वर्षमान ३६५ दिन, १५ घटि, ३१ पल, ३० विपल, दोनों प्रकार से वर्ष प्रवेश सारणियां दी जा रहीं हैं। अपनी मान्यता के अनुसार सारणी का चयन करें। वर्तमान संवत् में से जन्म संवत् घटाने पर जो शेष रहता है वही गत वर्ष होता है। संवत् बदल जाने पर भी यदि सूर्य मीन राशि में है तो पूर्व संवत् में से जन्म संवत् घटाने पर गत वर्ष होता है। इस सारणी में गत वर्ष के नीचे जो वार, घटी पल विपल लिखे हैं उनमें जन्म समय के वार तथा इष्ट घटी-पल जोडने पर वर्ष प्रवेश का दिन, घटी पल होगा। यदि वार संख्या ७ से अधिक हो तो उसमें ७ का भाग देकर शेष को वार (वर्ष प्रवेश दिन) जानना चाहिये। यदि घटी ६० से अधिक हो तो उसमें से ६० घटाकर शेष को वर्ष प्रवेश के घटी पल जानना चाहिये तथा वार में एक जोड़ना चाहिये। वर्ष प्रवेश के वार एवं घटी पल के समय लग्न निकाल कर वार्षिक फलादेश देना चाहिये। वर्ष कुण्डली की शुद्धता की पहचान यह है कि, उस समय का सूर्य स्पष्ट, जन्म समय के सूर्य स्पष्ट के समान होता है।

मुन्था साधन विधि

जन्मलग्नात्समारभ्य गत वर्षाणि योजयेत्। द्वादशभिर्हरेद्भागं शेषा मुन्था मता बुधै:॥ अर्थात जन्म लग्न राशि में गत वर्ष जोडक़र बारह का भाग देने पर जो शेष बचे वह मुन्था राशि होती है।

मुन्थाफ ल

मुन्था पर मुन्थेस की दृष्टी होने, शुभ ग्रहों से युत दृष्ट होने, १, २, ३, ५, ९, १०, ११वें भाव में, जन्म लग्न से ४,६,७,८,१२ वीं राशि में व राहु स्पष्ट के अंशों तक मुन्था शुभ होती है।

समयेश

दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य की राशि का स्वामी एवं रात्रि में जन्म हो तो चंद्र की राशि का स्वामी समयेश कहलाता है।

त्रैराशीश चक्र

वर्ष प्रवेश के समय लग्न तथा दिन या रात्रि समय के के अनुसार त्रैराशीश निम्न चक्र से जानें।

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं	क.	तु.	वृ	ध.	म.	कुं.	मी.
दिन	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
रात्रि	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

नवीन वर्ष प्रवेश सारणी (वेध सिद्ध वर्षमानानुगतम्)

गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटि	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	६०

गतवर्ष	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटि	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	६०

गतवर्ष	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटि	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गतवर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटि	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३५
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	६०

नवीन वर्ष प्रवेश सारणी (सौर आर्षमानानुगगतम्)

गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटि	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२०	५२	२४	५५	२६	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	६०	३०	०	३०	६०	३०	०

गतवर्ष	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटि	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४१	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५३	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	६०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	६०	३०	०	३०	०

गतवर्ष	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटि	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	८	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२३	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	६०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	६०	३०	०	३०	०

गतवर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटि	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४७	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	६०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

पंचवर्गी बल निर्णय

गृह, उच्च, हद्दा, द्रेष्काण व नवांश के बलों को पंचवर्गी बल कहा जाता है। इनमें से गृह, उच्च व नवांश बल वही हैं जो जन्म कुण्डली में होते हैं, परन्तु वर्ष कुण्डली में हद्दा व द्रेष्काण कुछ अलग होते हैं जो निम्न चक्र से जानें। प्रत्येक राशि में निश्चित अंशों तक हद्देश माने गए हैं, जो चक्र से स्पष्ट हैं।

द्रेष्काण चक्र

अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं	क.	तु.	वृ	ध.	म.	कुं.	मी.
०–१०	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
११–२०	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.
२१–३०	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.

हद्दा चक्र (ग्रह से पूर्व अंश लिखे हैं)

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
६गु.	८शु.	६बु.	७मं.	६गु.	७बु.	६श.	७मं.	१२गु.	७बु.	७शु.	१२शु.
६शु.	६बु.	६शु.	६शु.	५शु.	१०शु.	८बु.	४ शु.	५शु.	७गु.	६बु.	४गु.
८बु.	८गु.	५गु.	६बु.	७श.	४गु.	७गु.	८बु.	४बु.	८शु.	७गु.	३बु.
५मं.	५श.	७मं.	७गु.	६बु.	७मं.	७शु.	५गु.	५मं.	४श.	५मं.	९मं.
५श.	३मं.	६श.	४श.	६मं.	२श.	२मं.	६श.	४श.	४मं.	५श.	२श.

वर्ष कुण्डली में निसर्ग एवं तात्कालिक मैत्री

सूर्य, चन्द्र, मंगल व वृहस्पति ये चारों ग्रह परस्पर नैसर्गिक मित्र हैं। इसी तरह शनि, बुध, शुक्र ये तीनों परस्पर मित्र हैं। नैसर्गिक मैत्री में सम ग्रह नहीं होते हैं।

तात्कालिक मैत्री में सभी ग्रह अपने अधिष्ठित स्थान से ३,५,९,११ भाव में स्थित ग्रहों को मित्र समझते हैं। परस्पर १,४,७,१०, भावों में स्थित सभी ग्रह शत्रु होते हैं। शेष २,६,८,१२ भावों में स्थित सभी ग्रह सम कहलाते हैं।

पंचवर्गीय बल चक्र

	स्वराशि	मित्रराशि	समराशि	शत्रुराशि
ग्रह	३०	२२.३०	१५	७.३०
हद्दा	१५	११.१५	७.३०	३.४५
द्रेष्काण	१०	७.३०	५	२.३०
नवांश	५	३.४५	२.३०	१.१५

(उच्चबल की गणना जातक विधि से ही करें)

ग्रहों के दीप्तांश एवं हर्ष स्थान

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
स्वराशि	५	४	१,८	३,६	९,१२	२,८	१०,११
उच्च रा.अं.	०.१०	१.३	९.२८	५.१५	३.५	११.२७	६.२०
नीच रा.अं.	६.१०	६.३	३.२८	११.१५	९.५	५.२७	०.२०
दीप्तांश	१५	१२	८	७	९	७	९
हर्ष स्थान	९	३	६	१	११	५	१२

वर्ष के पांच अधिकारी - जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश, मुन्थेश, समयेश व त्रैराशिश ये वर्ष के पांच अधिकारी होते हैं।

वर्षेश निर्णय - उपरोक्त पांच अधिकारियों में से कोई एक ही वर्षेश हो सकता है। इसका निर्णय इस प्रकार करें। १. पाचों में से जो ग्रह सर्वाधिक बली होकर लग्न को देख रहा हो वही वर्षेश होता है। २. यदि सर्वाधिक बली ग्रह लग्न को न देख रहा हो तो लग्न को देखने वाला कम बली ग्रह ही वर्षेश होता है। ३. यदि लग्न को कोई भी ग्रह न देख रहा हो तो सर्वाधिक बली ग्रह ही वर्षेश होता है।

मास मध्ये मुद्दा दशा चक्रम्

	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

मुद्दा दशा विधि :– जन्म नक्षत्र की संख्या में गतवर्ष संख्या जोड़कर और दो घटाकर ९ का भाग देने पर यदि १ शेष हो तो सूर्य, २ में चन्द्र, ३ में मंगल, ४ में राहु, ५ में गुरु ६ में शनि, ७ में बुध, ८ में केतु, ९ में शुक्र की दशा होती है।

मास मध्ये मास दशा चक्रम्

	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
दिन	१	२	१	४	४	४	४	१	५
घटि	३०	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०

मास दशा जानने के लिये गतवर्ष संख्या में १२ का गुणा कर जन्म नक्षत्र संख्या में जोड़कर दो घटाकर ९ का भाग देने पर वर्ष दशा में वर्णित क्रमश: ग्रह दशा होती है।

जातक की वृत्ति (आजीविका) विचार

आयु: कर्म: वित्तं च, विद्या निधनमेव च । पंचैतानि हि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिन: ।।

अर्थात आयु, कर्म, आर्थिक स्थिति, शिक्षा एवं मृत्यु ये पांचों का निर्धारण गर्भ के समय ही हो जाता है ।

धनोपार्जन का साधन - मुख्यत: दो प्रकार का होता है - (1) व्यापार (2) नौकरी ।

(1) **व्यापार योग** - यदि जातक की जन्म कुण्डली में अधिक से अधिक ग्रह चर राशियों में हों तो जातक स्वतंत्र व्यापार करने वाला होता है।

(अ) यदि चन्द्रमा से केन्द्र में बुध, गुरु और शुक्र हों या इनमें से दो ग्रह हों ।

(ब) यदि चन्द्रमा से द्वितीय, तृतीय, एकादश में गुरु व शुक्र हों ।

(स) दशम में बुध या लग्नेश हो तो जातक व्यापार वृत्ति वाला होता है ।

और यदि अधिकांश ग्रह द्विस्वभाव राशियों में हों तो जातक नौकरी के साथ - साथ साईड विजनिस करता है ।

(2) **नौकरी योग** - यदि अधिकांश ग्रह स्थिर राशियों में हों तो नौकरी का योग होता है। निम्न लिखित योगों में जातक सरकारी विभाग या किसी मल्टी नेशनल कम्पनी में नौकरी करता है।

(अ) केन्द्र में या कारकांश लग्न में सूर्य हो ।

(ब) केन्द्र या त्रिकोण में चन्द्रमा हो ।

(स) केन्द्र या लाभ भाव में दशमेश हो ।

(द) गुरु तथा बुध का योग हो ।

(ई) लग्न में भाग्येश हो तथा वह गुरु से दृष्ट हो ।

(फ) नवमेश शुभ वर्गों में हो ।

इनमें से कम से कम दो या तीन योग होने पर एवं योग कारक ग्रह पर अशुभ दृष्टि न होने पर जातक सरकारी कार्य करता है ।

वृत्ति कारक ग्रह - निम्न लिखित स्थितियों में जो ग्रह सर्वाधिक बलवान हो वह वृत्ति का कारक होता है।

(1) लग्न से दशम भाव स्थित ग्रह ।

(2) चन्द्रमा से दशम भाव स्थित ग्रह ।

(3) यदि लग्न या चंद्र से दशम में कोई ग्रह न हो तो सूर्य से दशमस्थ ग्रह ।

(4) दशम भाव से 5 अंश दूरी पर स्थित ग्रह ।

(5) आत्मकारक ग्रह (सर्वाधिक अंशों वाला ग्रह)।

(6) यदि दशम भाव में कोई ग्रह न हो तो दशमेश जिस ग्रह के नवांश में हो वह ग्रह ।

वृत्ति कारक ग्रह की पहचान हो जाने पर अग्र लिखित ग्रहानुसार वृत्ति कहना चाहिए ।

सूर्य की वृत्ति- खगोल शास्त्र, नाटक या फिल्म निर्देशन, संस्था प्रधान, चिकित्सा, वाद-विवाद, ऊन, तृण, जल, धान्य, पत्थर, नारियल, ज्वेलर्स, सोना, रत्न, मंत्रणा (सलाहकार), मंत्र जाप इत्यादि से जीविका होती है। नौकरी में पायलट, बैंक, शेयर बाजार, विदेशी मुद्रा बाजार, मौसम विभाग, वन विभाग, दूतावास, इत्यादि से आजीविका होती है। सूर्य की वृत्ति में स्वतंत्र व्यवसाय होने पर भी सरकार से संबंध अवश्य होता है ।

चन्द्रमा की वृत्ति- चांदी, जलजन्य वस्तुऐं जैसे- कोल्ड ड्रिंक, मिनरल वाटर इत्यादि, वस्त्र संबंधी नौकरी या व्यवसाय जैसे रेडीमेड वस्त्र, धागा, ड्राइक्लीनिंग इत्यादि, मनोरंजन, मिट्टी संबंधी, कृषि संबंधी, दुग्ध डेयरी, प्लास्टिक वस्तुऐं, खाने की वस्तुएं जैसे अचार, जैम, कैटरिंग इत्यादि, जहाज या वाटर सप्लाई की नौकरी इत्यादि। चन्द्र आजीविका में यात्रा करना पड़ती है।

मंगल की वृत्ति- सेना, पुलिस विभाग, सिक्युरिटी, जासूस, पेशेवर खिलाड़ी, पर्वतारोहण इत्यादि साहसिक कार्य। अग्निसमन विभाग की नौकरी । यदि मंगल अशुभ ग्रह से पीडित हो तो जुआरी, सट्टेबाज, चोर या पेशेवर हत्यारा या नकली डाक्टर वृत्ति होती है । अग्नि से संबंधित अन्य कार्य जैसे अतिसवाजी, माचिस, बीड़ी सिगरेट, ईट भट्टा, लुहारी, धातुकर्म, तांबा इत्यादि का व्यापार होता है। ब्लड बैंक, मैकेनिक, गैराज एवं आटो पार्टस् की दुकान, रसायन, शस्त्रों की दुकान, लाल रंग की वस्तुओं का व्यापार, चाय, कॉफी, बिजली का काम, इत्यादि से आजीविका होती है।

बुध की वृत्ति- काव्य, पुरोहिताई, शास्त्र, वेदान्त, जप तथा शिल्पकला। सेल्समैन, कमीशन कार्य, ट्रेडिंग, सम्पादन, प्रिंटिंग प्रेस, समाचार पत्र, दूरसंचार कार्य, डाक कार्य, कम्प्यूटर व्यवसाय, ब्याज से वृत्ति, राजस्व संग्रहण संबंधी कार्य जैसे बैंक कैशियर, इन्कम टैक्स, सेल्स टैक्स विभाग की नौकरी, बुद्धि एवं चतुराई से किये जाने वाले कार्य जैसे गणित अध्यापक, ज्योतिषी, अनुवादक, लेखक, वकील इत्यादि। इम्पोर्ट, वर्तन, पान मसाला, अगरबत्ती, आयुर्वेद, मुर्गीपालन, कारपेट, चित्रकला, शेम्पू, दंत मंजन, पन्ना या हरे रंग की वस्तुओं का व्यापार बुध के अधीन होता है।

गुरु की वृत्ति - पुराण, शास्त्र, धार्मिक ग्रंथों के पाठ, ब्राह्मणों की सेवा या अध्यापन से वृत्ति होती है । जज, मंत्री, ज्योतिषी, मन्दिर के पुजारी, समाज सेवी, मठाधीश, बड़े वकील, होलसेलर, भवन निर्माण, उपदेशक, वाहन व्यवसाय, फाइनेंस कंपनियों, उच्चस्तरीय पद, कचहरी की नौकरी, मैनेजर, बड़ा प्रकाशन या शेयर बाजार में उच्चपद का कारक गुरु होता है । टेंट हाउस, बैंड, अनाज की दुकान एवं खेल सामाग्री की दुकान गुरु की वृत्ति होती है ।

शुक्र की वृत्ति - चावल, गुड, हाथी, घोड़ा, गाय घी, हीरा रत्न, रेशमी वस्त्र, बूटीक, ब्यूटी पार्लर, सौन्दर्य प्रसाधन वस्तऐं, महिला चिकित्सक, मैरिज गार्डन, महंगे वस्त्र, फर्नीचर की दुकान, विदेशी मदिरा, फूलों का व्यापार, इंटीरियर डेकोरेटर एवं मनोरंजन के साधनों का व्यापार, संगीत, नाटक या फिल्मों में अभिनय कला, साईन बोर्ड, कांच, माईका एवं पेन्ट का व्यवसाय ।

शनि की वृत्ति - शनि की वृत्ति में परिश्रम अधिक होता है। यदि जन्म कुण्डली में शनि सबसे बलवान है तो जातक किसी वर्ग का नेता होता है। शनि की शुभ स्थिति में जातक किसी न किसी रूप में न्यायालयीन प्रक्रिया से जुड़ा हुआ होता है। लोहा, चमड़ा, तेल, सीसा, कोयला, गैस, काले रंग की वस्तुओं, शेयर, डीजल-पेट्रोल, खनिज पदार्थ, कबाडख़ाना एवं हड्डियों का व्यापार, मजदूर यूनियन, ठेकेदार, मिस्त्री, लेवर, कुली, माली एवं अन्य निम्न स्तरीय सेवा कार्य शनि के अधीन होते हैं।

राहू की वृत्ति- जुआ, सट्टा, देशी शराब, गैर कानूनी कार्य, मुर्गीपालन, मांस-मछली व्यापार, काला बाजारी, जहरखुरानी, कीटनाशक दवा इत्यादि वृत्ति होती है । यदि राहु शुभ स्थिति में हो तो रबड़ उद्योग, राजनीति, जिला या नगर परिषद्, विदेश व्यापार, कम्बल, पुराने वस्त्र या वाहन का व्यापार, जानवर की सवारी करवाने का काम रेलवे कर्मचारी, बिजली कार्य एवं दादा (पितामह) से धन लेकर व्यापार करने की वृत्ति होती है ।

वृत्ति की प्रकृति - प्रत्येक ग्रह कुछ शुभ तथा कुछ अशुभ (खराब) वृत्तियों का कारक होता है। यदि वृत्ति कारक ग्रह का अशुभ ग्रह से दृष्टि, युति, आदि किसी भी प्रकार का संबंध हो तो जातक अशोभनीय या पापकर्म वृत्ति वाला होता है, अन्यथा शुभ कर्म से आजीविका चलती है ।

वृत्ति का स्तर - यदि वृत्ति कारक ग्रह के साथ-साथ लग्नेश, कर्मेश, पंचमेश एवं भाग्येश प्रवल हो तो आजीविका उच्च स्तर की होती है तथा धनवान होता है । यदि इनमें से कुछ ग्रह बलहीन हों या अस्त हों तो मध्यम स्तर की वृत्ति होती है। यदि सभी ग्रह निर्वल हों तो जातक ग्रह कारक वृत्ति अपनाने पर भी असफल रहता है।

कब होगा विवाह ?

यदि शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो विवाह समय पर ही होता है। यदि शुभ एवं अशुभ दोनों का योग हो तो विवाह कुछ विलम्ब से होता है। यदि सप्तमेश अस्त एवं निर्बल होकर क्रूर ग्रहों से पीडित हो तो विवाह सुख नहीं होता है।

(१) **गुरु गोचर से** - - लग्नेश स्पष्ट एवं सप्तमेश स्पष्ट के राशि अंशादि का योग करने पर जो राशि आवे,उसमें गुरु गोचर आने पर विवाह होता है। या

- चंद्र स्पष्ट एवं सप्तमेश स्पष्ट के राशि अंशादि का योग करने पर जो राशि आवे,उसमें गुरु गोचर आने पर विवाह होता है। या

- लग्न या चंद्रमा से त्रिकोण में गुरु गोचर आने पर विवाह होता है।

(२) **महादशा या अन्तर्दशा से** -

- सप्तमेश जिस राशि में या जिस नवांश में स्थित हो उस राशि के स्वामी की दशा में।

- शुक्र या चंद्रमा में से जो बलवान हो उसकी दशा में विवाह कहना चाहिये।

गुरु गोचर एवं दशा देखकर सम्यक काल ज्ञान के विवाह समय का सटीक निर्णय लेना चाहिये।

ग्रह गुणधर्म

सूर्य एवं शनि में पिता पुत्र का सम्बन्ध होने से परस्पर वेध नहीं होता है। चन्द्रमा के गोचर में बुध का वेध नहीं होता है।

ग्रह	राशिभोग समय	उच्च राशिअंश	मूल त्रिकोण	नक्षत्र स्वामित्व	पूर्णदृष्टि	त्रिपाद	द्विपा.	१ पाद	भाग्योदय आयुवर्ष	गोचर में शुभ स्थान	विद्ध स्थान	फल समय
सूर्य	१ मास	मेष १०	सिं. १.२०	कृ.,उ.षा.उ.फा.	७ भाव	४,८	५,९	३,१०	२२ वर्ष	३, ६, १०, ११	९,१२,४,५	५ दिन पूर्व से
चन्द्र	२। दिन	वृष ३	वृ. ४.३०	रोहि.,हस्त,श्र.	७ भाव	४,८	५,९	३,१०	२४ वर्ष	३,६,७,१०,११	५,९,१२,२,४,८	३ घटी पूर्व से
मंगल	४५ दिन	मक.२८	मे. १.१२	मृग.,चि.,धनि.	४,७,८	–	५,९	३,१०	२८ वर्ष	३, ६, ११	१२,९,५	८ दिन पूर्व से
बुध	१ मास	क. १५	कन्-१६.२०	आश्ले.ज्ये.रेव.	७ भाव	४,८	५,९	३,१०	३२ वर्ष	२,४,६,८,१०,११	५,३,९,१,८,१२	२ दिन पूर्व से
गुरु	३६१ दि.	कर्क ५	धनु १.१०	पुन.विशा.पू.भा.	५,७, ९	४,८	–	३,१०	१६ वर्ष	२,५,७,९,११	१२,४,३,१०,८	४५ दिन पूर्व से
शुक्र	१ मास	मीन २७	तुला १.१५	भर.पू.फा. पू.षा.	७ भाव	४,८	५,९	३,१०	२५ वर्ष	१,२,३,४,५, ८,९,११,१२	८,७,१,१०,९ ५,११,३,६	४ दिन पूर्व से
शनि	ढ़ाई वर्ष	तु. २०	कुं १.२०	पुष्य,अनु.उ.भा.	३,७,१०	४,८	५,९	–	३६ वर्ष	३, ६, ११	१२,९,५	६ माह पूर्व से
राहु	डेढ़ वर्ष	मिथु.१५	कुम्भ	आर्द्रा,स्वा.शत.	५,७, ९	४,८	५,९	३,१०	४२ वर्ष	३, ६, ११	१२,९,५	३ माह पूर्व से
केतु	डेढ़ वर्ष	धनु १५	सिंह	अश्व.,मघा,मूल	५,७, ९	४,८	२,१०	–	४२ वर्ष	३, ६, ११	१२,९,५	३ माह पूर्व से

ग्रह	तत्व	रस	गुण	स्थान	पाद	रंग	नेष्टफल समन हेतु	कारक		राजादि विभाग	लिंग	वर्ण	दिशा स्वामी	ऋतु	उदय	अवस्था	कालपुरुष	शुभ अशुभ	विफल स्थान
								भाव	नित्य										
सूर्य	अग्नि	कटु	सत्व	वन	चतु.	मेहरून	हरिवंश पु. श्रवण	१,९,१०	आत्मा	राजा	पुरु.	क्ष.	पूर्व	ग्रीष्म	पृष्ट	वृद्ध	मुख सिर	उग्र	–
चन्द्र	जल	लवण	सत्व	जल	बहु.	गौर	त्रिपुर जाप	४	मन	रानी	स्त्री	वै.	वाय.	वर्षा	शीर्ष	प्रौढ़	हृदय	क्षीणपापी	सूर्ययुति
मंगल	अग्नि	तीखा	तम	वन	चतु.	लाल	रुद्री जाप	३, ६	पराक्रम	सेनापति	पुरु.	क्ष.	दक्षि.	ग्रीष्म	पृष्ट	युवक	पेट,पीठ	पाप ग्रह	२ भाव
बुध	भूमि	मिश्रित	रज	ग्राम	द्विपद	सॉवला	दान	४, १०	वाणी	युवराज	नपुं.	शू.	उत्त.	शरद	शीर्ष	कुमार	हाथ पैर नस	युतिवस	४ भाव
गुरु	आका.	मीठा	सत्व	ग्राम	द्विपद	गौर	अमा. व्रत	५,१०,११	ज्ञान,सुख	मंत्री	पुरु.	ब्रा.	ईशा.	हेमन्त	उभय	वृद्ध	कमर जांघ	शुभ	५ भाव
शुक्र	जल	खट्टा	रज	ग्राम	द्विपद	सॉवला	गौदान	७	काम	मंत्री	स्त्री	ब्रा.	अग्नि	वसन्त	शीर्ष	प्रौढ़	गुप्तांग	शुभ	६ भाव
शनि	वायु	कसैला	तम	संधि	भुजंग	काला	मृत्युंजयजप	६,१०,१२	दुःख	सेवक	नपुं.	जरा.	पश्चि.	शिशिर	पृष्ट	अतिवृद्ध	घुटने से नीचे	पाप ग्रह	–
राहु	वायु	विचित्र	तम	विवर	अपद	घूम्र	भुजंग दान	–	–	–	–	निषा.	नैऋ.	–	पृष्ट	वृद्ध	–	पाप ग्रह	–
केतु	वायु	विचित्र	तम	विवर	अपद	घूम्र	ध्वजा दान	–	–	–	–	निषा.		–	–	वृद्ध	–	पाप ग्रह	–

राशि गुणधर्म

राशि	राशि स्वा.	काल पुरुष	उदय	द्विपद आदि	दिग्बल	स्वभाव	लिंग	दिशा स्वा.
मेष	मंगल	सिर	पृष्ट	चतु.	**१० भाव**	. चर	**पुरुष**	पूर्व
वृष	**शुक्र**	मुख	पृष्ट	चतु.	१० भा.	स्थिर	**स्त्री**	दक्षि.
मिथुन	बुध	छाती	शीर्ष	द्विपद	**लग्न**	द्विस्व.	**पुरुष**	पश्चि
कर्क	चंद्र	हृदय	पृष्ट	जलच.	४ भा.	चर	**स्त्री**	उ●.
सिंह	सूर्य	पेट	शीर्ष	चतु.	१० भा.	स्थिर	**पुरुष**	पूर्व
कन्या	बुध	**कमर**	शीर्ष	द्विपद	**लग्न**	द्विस्व.	**स्त्री**	दक्षि
तुला	**शुक्र**	ऑत	शीर्ष	द्विपद	**लग्न**	चर	**पुरुष**	पश्चि.
वृश्चिक	मंगल	गुप्तांग	शीर्ष	—ीट	७ भा.	स्थिर	**स्त्री**	उ●
धनु	गुरु	**जंघा**	प्रष्ठ	द्वि.चतु	१, १०	द्विस्व.	**पुरुष**	पूर्व
मकर	शनि	**घुटने**	प्रष्ठ	चतु,ज.	१, ४	चर	**स्त्री**	दक्षि.
कुम्भ	शनि	पिंडली	शीर्ष	द्विपद	**लग्न**	स्थिर	**पुरुष**	पश्चि.
मीन	गुरु	पैर	उभय	जलच.	४ भा.	द्विस्व.	**स्त्री**	उ●

राशि	बीज	सजल	तत्व	पुष्करांश	पुष्कर नवांश	आकार
मेष	अल्प	निर्जल	अग्नि	१४ वां	७,९ वां	लघु
वृष	अल्प	निर्जल	पृथ्वी	२१ वां	३,५ वां	लघु
मिथुन	वांझ	निर्जल	वायु	२४ वां	६,८ वां	दीर्घ
कर्क	सवीज	सजल	जल	७ वां	१,३ वां	सम
सिंह	वांझ	निर्जल	अग्नि	२१ वां	७,९ वां	दीर्घ
कन्या	वांझ	निर्जल	पृथ्वी	१४ वां	३,५ वां	दीर्घ
तुला	अ.,निर्वीज	सजल	वायु	२४ वां	६,८ वां	दीर्घ
वृश्चिक	नि.,सवीज	सजल	जल	७ वां	१,३ वां	दीर्घ
धनु	वांझ	निर्जल	अग्नि	२१ वां	७,९ वां	सम
मकर	सवीज	सजल	पृथ्वी	१४ वां	३,५ वां	सम
कुम्भ	सवीज	सजल	वायु	२४ वां	६,८ वां	सम
मीन	सवीज	सजल	जल	७ वां	१,३ वां	सम

॥ नक्षत्र गुणधर्म एवं रोग उत्पत्ति में कष्ट समय सारणी ॥

नक्षत्र	तारा	संज्ञा	लिंग	मंडल	शून्य संज्ञा	देवता	कष्टदिन	दान पदार्थ	चरणगत कष्ट दिन	स्वामी	जापार्थ नक्षत्र मंत्राणि
अश्वि.	३	ल.क्षि.	पु.	वायु	चैत्र,पौष	अश्विनीकु.	९	भोजन	९-११-१-२०	केतु	ऊँ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्। ऊँ अश्विनीकुमारेभ्यो नमः।
भर.	३	उ.क्रू.	पु.	अग्नि	फाल्गुन	यमराज	११	गौअन्न	०-८०-४०-११	शुक्र	ऊँ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यात्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स ᳬ स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि।। ऊँ यमाय नमः
कृतिका	६	मिश्र	पु.	अग्नि	कार्तिक	अग्नि	९	स्वर्ण	९-११-१६-१७	सूर्य	ऊँ अयमग्नि सहस्त्रिणो वाजस्य शांति ᳬ वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाम्।। ऊँ अग्नये नमः।
रोहि.	५	ध्रुव	पु.	महेन्द्र	चैत्र	ब्रम्हा	७	घृत	३-९-१८-३०	चन्द्र	ऊँ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरूचोवेन आवः सुबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्रचयोनिमसतश्चविधिः।। ऊँ ब्रह्मणे नमः।
मृग.	३	मृ.मै.	पु.	वायु	--	चन्द्रमा	३०	तिल	९-५-७-१०	मंगल	ऊँ सोमेधनु ᳬ सोमाअवन्तुमाशु ᳬ सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य ᳬ सभेयम्पितृ श्रवणयोम ।। ऊँ चन्द्रमसे नमः।
आर्द्रा	१	ती.दा.	स्त्री	वरुण	पौष	रुद्रशिव	मृ.तु.	गौदान	०-१८-०-०	राहु	ऊँ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः ।। ऊँ रूद्राय नमः।
पुन.	४	चर	स्त्री	वायु	--	अदिति	७	पीतल	७-१४-२-२१	गुरु	ऊँ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिर्जातम अदितिर्जनित्वम् ।। ऊँ आदित्याय नमः।
पुष्य	३	ल.क्षि.	स्त्री	अग्नि	ज्येष्ठ	बृहस्पति	७	तिल	६-७-१०-२१	शनि	ऊँ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्ज्नेषु। यदि दयच्छ वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ।। ऊँ गुरुवे नमः।
आश्ले.	५	ती.दा.	स्त्री	वरुण	--	सर्पदेव	मृ.तु.	गोऽजादि	०-०-४-१०	बुध	ऊँ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः ।। ऊँ सर्पेभ्यो नमः।
मघा	५	उ.क्रू.	स्त्री	अग्नि	कार्तिक	पितर	२०	वस्त्र	१५-७-१७-२०	केतु	ऊँ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्त पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ।। ऊँ पित्रभ्ये नमः।
पू.फा.	२	उ.क्रू.	स्त्री	अग्नि	आषाण	भग सूर्य	मृ.तु.	भोजन	०-१५-०-३०	शुक्र	ऊँ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्ः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः।। ऊँ भगाय नमः।
उ.फा.	२	ध्रुव	स्त्री	वायु	--	अर्यमासूर्य	७	अन्न	७-१४-७-६०	सूर्य	**ऊँ दैव्या वद्धव्यू च आगत ᳬ रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ ᳬ समञ्जायेतं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम्।। ऊँ अर्यमणे नमः।**
हस्त	५	ल.क्षि.	स्त्री	वायु	चैत्र	सूर्यदेव	१५	तेल	१५-१७-१५-०	चन्द्र	ऊँ विभ्राडवृहत्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्ता व विहुतम् वातजूतोयो अभिरक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरूधाविराजति।। ऊँ सवित्रे नमः।
चित्रा	१	मृ.मै.	स्त्री	वायु	वै.माग.	विश्वकर्मा	११	दुग्ध	११-९-९-१६	मंगल	ऊँ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्री पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः च्छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः।। त्वष्ट्रेनमः।। ऊँ विश्व कर्मणे नमः।
स्वा.	१	चर	स्त्री	वायु	वैशाख	वायुदेव	मृ.तु.	गोघृत	६०-१७-३०-०	राहु	ऊँ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचक्रुः।। ऊँ वायवे नमः।
विशा.	४	मिश्र	नपुं.	अग्नि	मार्ग.	इन्द्रग्नि	१६	गोस्वर्ण	१५-०-४-१३	गुरु	ऊँ इन्द्राग्री आगत ᳬ सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं घियोषिता।। ऊँ इन्द्राग्रीभ्यॉं नमः।
अनु.	४	मृ.मै.	नपुं.	महेन्द्र	--	मित्र सूर्य	स्थिर	गोघृत	६०-१२-३६-३०	शनि	ऊँ नमो मित्रस्यवरूणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत ᳬ सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश ᳬ सत।। ऊँ मित्राय नमः।
ज्ये.	३	ती.दा.	नपुं.	महेन्द्र	फाल्गुन	इन्द्र	मृ.तु.	तिल	६९-९-६-४	बुध	ऊँ त्रातारमिंद्रमबितारमिंद्र ᳬ हवे हवेसुहव ᳬ शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरूहुतमिंद्र ᳬ स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः ।। ऊँ इन्द्राय नमः।
मूल	११	ती.दा.	पु.	वरुण	माघ	राक्षस	९	रजतपात्र	०-९-१५-६	केतु	ऊँ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि ᳬ स्वयोनावभारूषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत ।। ऊँ निऋतये नमः।
पू.षा.	२	उ.क्रू.	पु.	वरुण	--	जल	मृ.तु.	गौमुक्ता	०-१५-२४-१०	शुक्र	ऊँ अपाघ मम कील्वषम् पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्यसुवः।। ऊँ अद्भ्यो नमः।
उ.षा.	२	ध्रुव	पु.	महेन्द्र	ज्ये.श्रा.	विश्वदेव	३०	भोजन	३०-२४-२६-१६	सूर्य	ऊँ विश्वे अद्य मरूत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्रयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै।। ऊँ अद्भ्यो नमः।
श्रवण	३	चर	पु.	महेन्द्र	श्रा.मा.	विष्णु	११	श्रीफल	६०-२४-६-९	चन्द्र	ऊँ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवेसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।। ऊँ विष्णवे नमः।
धनिष्ठा	४	चर	पु.	महेन्द्र	आषाण	अष्टवसु	१५	अश्वान्न	१५-४-२०-२१	मंगल	ऊँ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः।। ऊँ वसुभ्यो नमः।
शत.	१००	चर	पु.	वरुण	भाद्रपद	वरूण	११	भोजनपात्र	०-४५-३-२२	राहु	ऊँ वरूणस्योत्तम्भनमसिवरूणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरूणस्यऋतसदनमसि।। ऊँ वरूणाय नमः।
पू.भा.	२	उ.क्रू.	पु.	अग्नि	आश्विन	अजपादसूर्य	मृ.तु.	भोजन	०-१२-२१-१९	गुरु	ऊँ उतनाऽहिर्वुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्तता अवन्तु।। ऊँ अजैकपदे नमः।
उ.भा.	२	ध्रुव	पु.	वरुण		अहिर्बुध्नयसूर्य	७	अन्न	१०-३-९-१५	शनि	ऊँ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि ᳬ सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽत्राद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्वाय)। ऊँ अहिबुर्धाय नमः।
रेव.	३२	मृ.मै.	पु.	वरुण	भाद्रपद	पूषण सूर्य	स्थिर	बृष	१८-१०-९-२०	बुध	ऊँ पूषन् तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि।। ऊँ पूष्णमे नमः।

नष्ट अथवा चोरीगत वस्तु अभिज्ञानम्

नक्षत्र संज्ञा	नक्षत्र	मिलेगी या नहीं
अंधलोचन	रोहि.पुष्,उ.फा.विशा.पू.षा.धनि.रेव.	पूर्व में शीघ्रमिले
मंदलोचन	मृग,आश्ले,हस्त,अनु,उषा.शत,अश्वि	दक्षिणे ३ दिन
मध्यलोचन	आर्द्रा.मघा,चित्रा,ज्ये.अभि,पूभा.भर.	पश्चिमे ६४ दिन
सुलोचन	पुन.पूफा.स्वा.मूल,श्रव.उभा.कृति.	उत्तरे नष्टं

अंग स्फुरण फल

मस्तक-भूमि लाभ। कंधा-भोग समृद्धि। भोंह-सुख प्राप्ति। गाल-शुभ। नेत्र-धन प्राप्ति। नाक-सुख प्राप्ति। हाथ-सद् धनलाभ। छाती-विजय। हृदय-वांछितसिद्धि। कमर-आनंद। कटिपृष्ठ-प्रीति। भग-पति प्राप्ति। कोख-प्रीति। उदर-कोष प्राप्तिलिंग-स्त्री लाभ। गुदा-वाहन लाभ। वृषण-पुत्र लाभाद्ध। ओष्ट-प्रिय वस्त ु।हनु-भय। कण्ठ-ऐश्वर्य लाभ। ग्रीवा-रिपु भय। प्रष्ठ-युद्ध में हार। मुख-मधुर भोजन। वाहु-प्रिय प्राप्ति, वाहु मध्य-धनागम। उरू-वस्त्र लाभ। धुटने-शत्रु वृद्धि। जंधा-स्वामी प्राप्ति। पैरऊपरीभाग-स्थान लाभ। पैरका तलवा-राज तुल्य।

पल्ली (छिपकली) पत्तन अंग स्थान अनुसार फल

सिर-पदलाभ। भ्रूमध्य-लाभनाक-व्याधि। दायां कान-आयु वृद्धि। वायां कान-बहु लाभ। नेत्र-धन प्राप्ति। दाया हाथ-राज्य लाभ। वायां हाथ-राज भय। नाभि-बहुधन। कमर-वाहनलाभ। गला-शत्रु नाश। स्तन-दुर्भाग्य। पीठ-वुद्धिनाशद्ध। घुटने-शुभता। जंघा-शुभ। हथेली-वस्त्र लाभ। कंधे-विजय। हृदय-धन लाभ। दाहिना पैर-यात्रा। वाया पैर-बन्धुनाश।

काक स्पर्श फल

यदि कौआ मस्तक स्पर्श करे तो धननाश। कमर एवं कन्धे पर स्पर्श भी अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर स्पर्श पति-पुत्र नाशक होता है। काक स्पर्श होने पर जो वस्त्र पहने हुए हों उन्हीं के साथ स्नान कर वस्त्रों को दान कर देना चाहिये। काक मैथुन दृष्टिगोचर हो तो ६ मास में मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। शान्ति हेतु उड़द के आटे की काक प्रतिमा बनाकर मिट्टी के वर्तन में स्थापित कर उड़द की मिठाई एवं घी से पूजन कर विसर्जन करें।

स्वप्न फल

स्वस्थ शारीरिक एवं मानसिक अवस्था में रात्रि कालीन स्वप्न ही फलीभूत होते हैं। रात्रि के प्रथम प्रहर या मध्यरात्रि के पहले का स्वप्न १ वर्ष में, मध्य रात्रि से ३ वजे का स्वप्न १ मास में एवं रात्रि ३ वजे से सूर्योदय तक का स्वप्न सात दिन में फलीभूत होता है। शुभ स्वप्न आने पर यदि जाग गये हों तो पुन: सोना नहीं चाहिये। अपितु सुवह तक जागते हुये इष्ट देव का स्मरण कर प्रात: देवपूजन कर किसी आदरणीय व्यक्ति को स्वप्न सुनाना चाहिये। अशुभ स्वप्न आने पर तत्काल दूसरे को सुनाकर सो जाना चाहिये। स्वप्न में आदरणीय व्यक्ति, ब्राम्हण, सन्यासी, पित्र, पिता, मित्र देवता या उच्च अधिकारी जो कुछ भी कहते हैं वह प्राय: सत्य फलित होता है।

॥ शुभ स्वप्न - फल ॥

स्वेत वस्त्रधारी स्त्री - शुभ सूचक । स्वयं की विजय देखना - लाभ । स्व रोदन,मरण दृष्य -दु:खनाशक । दूसरे का वध करना - सुख वृद्धि । बिष्ठा मैला खाना या देखना-धन वृद्धि । स्त्री सम्भोग - मनोकामना पूर्ती । सेना का दर्शन - शुभ सूचक । भोजन देखना या करना- पदोन्नति । नदी पार करलेना -दु:खों से छुटकारा। स्वच्छ आकाश, धूप - पद लाभ। लाल पुष्प - भाग्योदय । स्वबंधन, रूधिर देखना - शुभ सूचक । मांस भक्षण - शुभ सूचक । कमल देखना-महान व्यक्ति से मिलन । सर्वत्र वर्षा देखना - प्रसन्नता वृद्धि। अर्थी देखना - रोगमुक्ति, धनागम । स्वयं की मृत्यु देखना - आयु वृद्धि । अस्त्र शस्त्र देखना - लाभप्रद । वहता हुआ पानी देखना-दु:ख दूर हों । चाँदी, रत्न, दीपक, शेर, हाथी, घोड़ा, फलदार वृक्ष, दूध, दही देखना- शुभ । आकाश में उड़ना-उन्नति। पहाड़ पर चढ़ना-उन्नति। देव दर्शन - सर्वसुख। प्रज्वल्लित अग्नि-दु:खनाश। शव देखना - मनोकामनापूर्ण। सवारी करना - पदलाभ। फल फूल - शुभ समाचार। सज्जन पुरुष - सुखद। उच्च अधिकारी- सुखद। लहलहाती फसल- शुभता। कन्या, समुद्र - धनलाभ।

॥ अशुभ स्वप्न - फल ॥

ऊचे स्थान से गिरना -दुर्भाग्य। दलदल में फसना, पानी में नहीं तैर पाना या डूवना - संकट सूचक। विना अग्नि के धुआं-हानि, विवाद। भयानक जन्तु, राक्षस - अशुभ। वादलों सहित आकाश - विपत्ति। बिल्ली या बंदर काटे - रोग संकट। आग जलाकर पकड़ना- कष्ट । सूखी लकड़ी या वृक्ष - विपत्ति। आँधी में धिरना - मुसीवत। पत्थर देखना - शत्रु वृद्धि। लोमड़ी, सियार देखना - शत्रु वृद्धि। कोयला देखना - व्यर्थ झगड़ा। भूकंप देखना - संकट सूचक। दांत टूटते देखना - दु:ख सूचक। आकाश में सूर्य, ग्रहण, गिद्ध, काला वस्त्र, आकाश में विजली चमकना, स्वयं पर हंसना, गीत गाना, भूंख लगना, दूसरे के मरण का दृश्य, गधे की सवारी करना, राख देखना, घी या तेल से लिप्त होना अशुभ सूचक होते हैं।

विविध संज्ञा

त्रिदेव - ब्रम्हा, विष्णु, महेश। त्रिदेवी - महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती। पंचदेव - सूर्य, गणेश, देवी, शिव, विष्णु। पंचोपचार - गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य। पंच पल्लव - पीपल, आम, गूलर, वट, पाकर (अशोक)। पंचामृत - गोघृत, गोदुग्ध, गोदधि, मधु, शर्करा। पंचगव्य - गोबर, गोमूत्र, गोदुग्ध, गोघृत, गोदधि। सप्तधान्य - जौ, गेहूँ, चावल, कागनी, मूँग, उड्द, सावा। सप्तमृतिका-गौशाला, गजशाला, अश्वशाला, वाँवी, नदीसंगम, तालाव, राजद्वार। अष्टधातु - स्वर्ण, रजत, ताम्र, पीतल, लौह, रांगा, शीशा (पारा), आरकूट। अष्टांग अर्घ्य-जल, कुशा, पुष्प, दही, अक्षत, केशर, दूर्वा, सुपारी। नव रत्न - माणिक्य, मोती, प्रवाल, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया। दश औषधि- कूट, जटामांसी, दोनों हल्दी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन, बच, चम्पक और नागरमोथा ये सर्वौषधि हैं। दशमहादान - गौ, भूमि, तिल, स्वर्ण, घृत, वस्त्र, धान्य, गुड़, रजत, लवण। पंच महा पावन नारियां - अहिल्या, द्रोपती, कुन्ती, तारा, मन्दोदरी स्तथा। पंचकं नां स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम्॥ नव नाग - अनन्तं, वासुकं, शेषं, पद्मनाभं, च कम्वलं। शंखपालं, धृतराष्टं, तक्षकं, कालियं तथा। सप्त चिरजीवी - अश्वत्थामा वलिर्व्यासो हनुमान्श्च बिभीषण:। कृप:, परशुरामश्च, सप्तैते चिरजीविन:॥ अर्जुनस्य द्वादश नामा:॥ अर्जुन: , फाल्गुन: , पार्थ: , किरीटी: , श्वेतवाहन: , वीभत्स: , विजय: , सब्यसाची , धनञ्जय: , जिष्णु: , कृष्ण: , महात्मन: ।

ग्रह स्पष्ट के राशि अंश कला से नक्षत्र चरण एवं नवांश स्वामी ज्ञान चक्र

एक नक्षत्र १३ अंश २० कला का होता है। एक नक्षत्र के चार चरण होते है, अत: प्रत्येक चरण ३ अंश २० कला का होता है। जैसे मेष राशि में ०.०.० से ०.३.२० तक अश्विनी नक्षत्र का प्रथम चरण हुआ। यहां सारणी में राशि अंश कला लिखे हैं, उतने राशि अंश कला पर नक्षत्र चरण प्रारम्भ समझना चाहिए। चूंकिनक्षत्र चरण एवं नवांश का मान एकसा होता है, इसलिए नक्षत्र चरण से आगे नवांश स्वामी ग्रह भी दिया गया है। नवांश स्वामी की आवश्यकता जन्म कुण्डिली के अलावा गोचर में ग्रह के वलावल ज्ञात करने में रहती है। उदाहरण के लिए किसी दिन किसी पंचांग में सूर्योदयकालीन गुरु स्पष्ट ११.२७.३६.४७ लिखा है। इस सारिणी में मीन राशि के २६ अंश ४० कला पर रेवती नक्षत्र का ४ चरण एवं नवांशेश गुरुलिखा है। अत: उस दिन गुरुका संचार रेवती के चतुर्थ चरण एवं स्व नवांश में हो रहा है। चूकि उस समय गुरुमीन राशि में होकर मीन राशि के नवांश में भी है। अत: इस समय गुरुगोचर में वली होने से मुहूर्त्तादि प्रकरण एवं जातकों के लिए अत्यन्त शुभ है।

राशि. अं कला	नक्षत्र चरण	नवांश स्वामी	राशि. अं कला	नक्षत्र चरण	नवांश स्वामी	राशि. अं कला	नक्षत्र चरण	नवांश स्वामी	राशि. अं कला	नक्षत्र चरण	नवांश स्वामी
०.०.०	अश्वि. १	मंगल	३.०.०	पुनु. ४	चन्द्र	६.०.०	चित्रा ३	शुक्र	९.०.०	उषा. २	शनि
०.३.२०	अश्वि. २	शुक्र	३.३.२०	पुष्य १	सूर्य	६.३.२०	चित्रा ४	मंगल	९.३.२०	उषा. ३	शनि
०.६.४०	अश्वि. ३	बुध	३.६.४०	पुष्य २	बुध	६.६.४०	स्वा. १	गुरु	९.६.४०	उषा. ४	गुरु
०.१०.०	अश्वि. ४	चन्द्र	३.१०.०	पुष्य ३	शुक्र	६.१०.०	स्वा. २	शनि	९.१०.०	श्रव.१	मंगल
०.१३.२०	भर. १	सूर्य	३.१३.२०	पुष्य ४	मंगल	६.१३.२०	स्वा. ३	शनि	९.१३.२०	श्रव. २	शुक्र
०.१६.४०	भर. २	बुध	३.१६.४०	आश १	गुरु	६.१६.४०	स्वा. ४	गुरु	९.१६.४०	श्रव. ३	बुध
०.२०.०	भर. ३	शुक्र	३.२०.०	आश २	शनि	६.२०.०	विशा. १	मंगल	९.२०.०	श्रव. ४	चन्द्र
०.२३.२०	भर. ४	मंगल	३.२३.२०	आश ३	शनि	६.२३.२०	विशा. २	शुक्र	९.२३.२०	धनि. १	सूर्य
०.२६.४०	कृति.१	गुरु	३.२६.४०	आश ४	गुरु	६.२६.४०	विशा. ३	बुध	९.२६.४०	धनि. २	बुध
१.०.०	कृति.२	शनि	४.०.०	मघा १	मंगल	७.०.०	विशा. ४	चन्द्र	१०.०.०	धनि. ३	शुक्र
१.३.२०	कृति.३	शनि	४.३.२०	मघा २	शुक्र	७.३.२०	अनु.१	सूर्य	१०.३.२०	धनि. ४	मंगल
१.६.४०	कृति.४	गुरु	४.६.४०	मघा ३	बुध	७.६.४०	अनु.२	बुध	१०.६.४०	शत. १	गुरु
१.१०.०	रोहि. १	मंगल	४.१०.०	मघा ४	चन्द्र	७.१०.०	अनु.३	शुक्र	१०.१०.०	शत. २	शनि
१.१३.२०	रोहि. २	शुक्र	४.१३.२०	पू.फा.१	सूर्य	७.१३.२०	अनु.४	मंगल	१०.१३.२०	शत. ३	शनि
१.१६.४०	रोहि. ३	बुध	४.१६.४०	पू.फा.२	बुध	७.१६.४०	ज्य. १	गुरु	१०.१६.४०	शत. ४	गुरु
१.२०.०	रोहि. ४	चन्द्र	४.२०.०	पू.फा.३	शुक्र	७.२०.०	ज्ये.२	शनि	१०.२०.०	पूभा.१	मंगल
१.२३.२०	मृग. १	सूर्य	४.२३.२०	पू.फा. ४	मंगल	७.२३.२०	ज्ये. ३	शनि	१०.२३.२०	पूभा. २	शुक्र
१.२६.४०	मृग. २	बुध	४.२६.४०	उ.फा. १	गुरु	७.२६.४०	ज्ये. ४	गुरु	१०.२६.४०	पूभा. ३	बुध
२.०.०	मृग. ३	शुक्र	५.०.०	उ.फा. २	शनि	८.०.०	मूल १	मंगल	११.०.०	पूभा. ४	चन्द्र
२.३.२०	मृग. ४	मंगल	५.३.२०	उ.फा. ३	शनि	८.३.२०	मूल २	शुक्र	११.३.२०	उ.भा.१	सूर्य
२.६.४०	आर्द्रा १	गुरु	५.६.४०	उ.फा. ४	गुरु	८.६.४०	मूल ३	बुध	११.६.४०	उ.भा. २	बुध
२.१०.०	आर्द्रा २	शनि	५.१०.०	हस्त १	मंगल	८.१०.०	मूल ४	चन्द्र	११.१०.०	उ.भा. ३	शुक्र
२.१३.२०	आर्द्रा ३	शनि	५.१३.२०	हस्त २	शुक्र	८.१३.२०	पूषा. १	सूर्य	११.१३.२०	उ.भा. ४	मंगल
२.१६.४०	आर्द्रा ४	गुरु	५.१६.४०	हस्त ३	बुध	८.१६.४०	पूषा. २	बुध	११.१६.४०	रेव. १	गुरु
२.२०.०	पुन.१	मंगल	५.२०.०	हस्त ४	चन्द्र	८.२०.०	पूषा. ३	शुक्र	११.२०.०	रेव. २	शनि
२.२३.२०	पुन. २	शुक्र	५.२३.२०	चित्रा १	सूर्य	८.२३.२०	पूषा. ४	मंगल	११.२३.२०	रेव. ३	शनि
२.२६.४०	पुन. ३	बुध	५.२६.४०	चित्रा २	बुध	८.२६.४०	उषा. १	गुरु	११.२६.४०	रेवती ४	गुरु

होली के समय वायु दिशा शकुन

होली जलते समय यदि वायु का वहाव पूर्व दिशा से हो तो सुखद, अग्निकोण से आगजनी सूचक, दक्षिण से दुर्भिक्ष सूचक, नैऋत्य से फसल को हानि कारक, पश्चिम से सामान्य, वायव्य से आंधी सूचक, उत्तर एवं ईशान्य से राष्ट्रीय संकट का सूचक होता है।

नेत्र स्फुरण फल- पुरुष का दांया एवं स्त्री का बाएं नेत्र स्फुरण शुभ सूचक होता है।

व्रत का महत्व - वेदोक्तेन प्रकारेण कृच्छचान्द्रायणादिभि। शरीरशोषणं यत् तत् तप इत्युच्यते बुधै।। व्रत एक प्रकार का तप हैं। इससे मानव की लौकिक एवं परलौकिक (अध्यात्मिक) उन्नति होती है। व्रत से पापादि की निवृत्ति होती है। व्रत से शरीर तप कर शुद्ध हो जाता है। फलस्वरूप रोग निरोधक क्षमता मानसिक शक्ति, बुद्धि चतुरता, उत्साह एवं शारीरिक शक्ति बढ़ती है। आराध्यदेव के प्रसन्न होने से जीवन काल में मनोकामनाएं पूर्ण होतीं हैं एवं शरीर त्यागने के बाद सद्गति प्राप्त होती है।

व्रती के गुण - निज वर्णाश्रमाचार, निरत: शुद्ध मानस:। अलुब्ध: सत्यवादी च, सर्वभूत हिते रत:॥ पूर्वं निश्चयमाश्रित्य, यथावत् कर्मकारक:।अवेदनिन्दको धीमानधिकारी व्रतादिशु।। स्कंद पुराण के अनुसार जो अपने वर्णाश्रम के आचार-विचार से रहते हैं, निष्कपट, निर्लोभी, सत्यवादी, सब प्राणियों पर दया भाव रखने वाले, वेद के अनुयायी, बुद्धिमान एवं निश्चयकर्मी ऐसे गुणवान पुरुष, स्त्री व्रत करने योग्य होते हैं।

व्रत प्रारम्भ समय एवं उद्यापन - अस्तगते च गुरौ शुक्रे, बाले वृद्धे मलिम्लुचे। उद्यापनमुपारम्भं, व्रतानां नैव कार्येत् (गर्ग)। सौम्यवासरा: सर्वकर्मसु भवंति सिद्धदा (रत्नमाला)। हस्तमैत्रमृगपुष्यत्रयुतरा अश्विपौष्णशुभयोगसौख्यदा: (मुक्तक संग्रह)। कुर्यादुद्यापनं चैव समाप्तौ यदुदीरितम्।उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रतं निष्फलं भवेत्। (नंदिपुराण)। गुरु एवं शुक्र के उदय रहने पर भद्रादि कुयोग एवं मलमास त्याग कर, शुभ वारों में, अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, अनुराधा, रेवती नक्षत्रों में, शुभ योगों में व्रत प्रारंभ करने पर या उद्यापन करने पर मनोकामना पूर्ण होकर सुख मिलता है।

व्रत भंग कब होता है? - १. क्रोधात् प्रमादाल्लोभद् वा व्रतभंगो भवेद् (गरुणपुराण)। २. असकृज्जलपानाश्च सकृत्ताम्बूलभक्षणात्। उपवास: प्रणश्येत दिवास्वापाच्य मैथुनात् ॥ (विष्णु पुराण)। विभिन्न पुराणों के अनुसार दिन में सोने से, बार-बार जल पीने से, तांबूल (पान) चबाने से, स्त्री सहवास करने से, क्रोध, लोभ, हिंसा इत्यादि मनोविकार उत्पन्न होने पर, अयोग्य हविष्य खाने पर व्रत भंग हो जाता है।

व्रत भंग कब नहीं होता ?- अष्टौ तान्य व्रतघ्नानि, आपो मूलं फलं पय:। हविर्ब्राम्हण काम्या च, गुरोर्वचनमौषधम्॥ (पद्मपुराण)। जल, फल, मूल, दूध, हवि, ब्राह्मण की इच्छा, ओषधी और गुरु (पूज्य जनों) के वचन - इन आठ से व्रत भंग नहीं होता है।

व्रत पर्व उपयोगी काल प्रमाण - व्रत, उत्सव एवं त्योहार के दिन के निर्णय में तिथि, नक्षत्र, योग, करण एवं कर्मकाल इत्यादि के संयोग का विचार करना होता है। कुछ प्रमुख व्रत-पर्वों का निर्णय आगे दिया जा रहा है, जिनमें शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दों का अर्थ पहले जान लेना आवश्यक है जो कि इस प्रकार है: -

सावन दिन - आज के सूर्योदय से कल के सूर्योदय तक एक दिन होता है। एक दिन में ६० घटि(२४ घंटे) होतेहैं। एक दिन में ८ प्रहर होते हैं। एक प्रहर ३ घंटे का होता है।

दिनमान एवं रात्रिमान - सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय दिनमान होता है। ग्रीष्म ऋतु में दिनमान ३० घटिसे अधिक और शीत ऋतु में ३० घटि से कम होता है। दिनमान अक्षांश भेद से विभिन्न स्थानों पर पृथक-पृथक होता है। ६० घटिमें से दिनमान घटाने पर रात्रिमान होता है।

मुहूर्त काल - दिनमान या रात्रिमान का १५वां भाग एक मुहूर्त होता है। अत: एक दिनमान में १५ मुहूर्त होते हैं। यदि दिनमान ३० घटि हो तो एक मुहूर्त दो घटि यानि ४८ मिनट का होगा। सूर्योदय से तीन मुहूर्त तक प्रात:काल, तीन मुहूर्त से ६ तक संगवकाल, ६ से ९ मुहूर्त तक मध्याह्नकाल, ९ से १२ तक अपराह्नकाल, १२ से १५ मुहूर्त तक सायंकाल होता है। इस प्रकार दिनमान में ३-३ मुहूर्त के ५ भाग होते हैं।

ऊषा:काल - सूर्योदय से तीन मुहूर्त अर्थात् ६ घटि या २ घंटा २४ मिनट पहले से ऊषा:काल लग जाता है। यहां रात्रिमान का १५वां भाग लेना चाहिए।

अभिजित्काल - दिनमान का आठवां मुहूर्त अभिजित कहलाता है। यह मध्यान्हकाल से २४ मिनट पहले से २४ मिनट बाद तक होता है।

प्रदोषकाल - प्रदोषो अस्तमया दूर्ध्वं, घटिका द्वयमिष्यते (माधव)। सूर्यास्त से एक मुहूर्त यानि दो घटि अथवा ४८ मिनट तक प्रदोषकाल होता है। मतान्तर से तीन घटि तक भी प्रदोषकाल कहा गया है।

निशीथकाल - ठीक अर्धरात्रि का समय निशीथकाल कहलाता है। रात्रिमान का आठवां मुहूर्त निशीथ कहलाता है। यह अर्धरात्रि से २४ मिनट पहले से २४ मिनट बाद तक होता है।

पूजन अर्चन काल - पूर्वान्हो दैविक: कालो मध्यान्हश्चापि मानुष:। अपरान्ह: पितृणां तु मायान्हो राक्षस: स्मृत:।। (महिर्षी व्यास)।
प्रात: काल देवों का, मध्यान्ह मनुष्यों का, अपरान्ह पितरों का एवं सायंकाल राक्षसों का समय है। अत: यथा योग्य काल में दानादि से यथोचित फल मिलता है।

कर्म काल तिथि - कर्मणो यस्य य: कालस्तत्कालव्यापिनीतिथि:। तया कर्मणि कुर्वीत ह्रासवृद्धि न कारणम् (वृद्ध याज्ञवल्यक्य)।जिस व्रत उपवास या पर्व संबंधी कर्म के लिए शास्त्रों में जो समय नियत है, उस समय यदि व्रत की तिथि मौजूद हो तो उसी दिन व्रत संबंधी कार्य ठीक समय पर करना चाहिए।

तिथियों के प्रकार

१. अखंडा एवं खंडा तिथि - जो तिथि सूर्योदय से सूर्यास्त तक व्याप्त रहे वह अखंडा और जो सूर्योदय से दोपहर (दिनमान के आधे भाग) तक न रहे वह खंडा तिथि होती है। खंडा तिथि में व्रत प्रारंभ या उद्यापन नहीं करना चाहिए।

२. पूर्व विद्धा - आज जिस तिथि पर हम विचार कर रहे हैं यदि वह तिथि पिछली तिथि से पिछले दिन संयुक्त होकर आई हो तो आज की तिथि पूर्व विद्धा कहलाती है। उदाहरण के लिये आज मंगलवार को सूर्योदय के समय एकादशी तिथि है, पिछले दिन (सोमवार को) पिछली (दशमी तिथि) रात १ वजे तक थी और एकादशी लग गई थी। यानि की दोनों तिथियां पिछले दिन रात १ वजे संयुक्त थीं। अत: यहां एकादशी पूर्व विद्धा कहलायेगी। यह तिथि आने वाले अगले सूर्योदय के पहले ही समाप्त होती है।

३. पराविद्धा - आज जिस तिथि पर हम विचार कर रहे हैं यदि वह तिथि अगली आने वाली तिथि से अगले आने वाले दिन संयुक्त हो तो आज की तिथि परा विद्धा कहलाती है। यह तिथि आने वाले अगले सूर्योदय के वाद समाप्त होती है।

४. युक्ता तिथि - किसी एक दिन एक तिथि समाप्त होती है उसी समय दूसरी तिथि प्रारंभ होती है ऐसी स्थिति में दोनों तिथियां परस्पर युक्ता तिथियां होती हैं। उपरोक्त उदाहरण में सोमवार की रात्रि में १ वजे दशमी तथा एकादशी संयुक्त होने से हम यह कहेंगे कि सोमवार को दशमी तथा एकादशी युक्ता तिथियां हैं।

५. शुद्धा तिथि - सूर्योदयारंभ पुन: सूर्योदयपर्यन्ता शुद्धा - तिथिनिर्णय। अर्थात जो तिथि सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक रहे वह शुद्धा होती है, अत: स्पष्ट है कि, जो तिथि वृद्धि को प्राप्त होती है, केवल वही शुद्धा हो सकती है, अन्य सब विद्धा होतीं हैं।

कालचक्र व्यवस्था के अनुसार व्रत-पर्व के प्रकार एवं शास्त्रीय निर्णय

(अ) मासिक व्रत-पर्व- अधिकमास स्नान, वैशाख स्नान सर्वत्र, कार्तिक स्नान पुष्कर क्षेत्र, माघ स्नान अवध या प्रयागराज क्षेत्र। यह व्रत श्री विष्णु भगवान को समर्पित हैं।

(ब) पाक्षिक व्रत-पर्व- प्रत्येक पक्ष की विशिष्ट तिथियों में किये जाने वाले व्रत - संकष्ट चतुर्थी, एकादशी एवं प्रदोष व्रत पाक्षिक व्रत हैं।

१. संकष्टचतुर्थी व्रत - यह व्रत सभी मासों में कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को किया जाता है। इसमें चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी ली जाती है। यदि २ दिन चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी हो तो प्रथम दिन व्रत करना चाहिए। यदि कोई संकट का समय चल रहा हो या किसी संकट आने की संभावना हो तब विघ्न विनाशक श्री गणेश को समर्पित व्रत किया जाता है।

२. एकादशी व्रत - यह व्रत सभी महीनों के दोनों पक्षों की एकादशी तिथियों को किया जाता है। एकादशी में दशमी का वेध देखा जाता है। वेधकाल को लेकर विभिन्न मत हैं। कोई पहले दिन की ४५ घटि दशमी को त्यागते हैं तो कोई ५६ घटी। इस पंचांग में यदि दशमी ५६ घटि से कम हो तो एकादशी सभी मतों की होती है और यदि दशमी ५६ घटि या उससे अधिक हो तो स्मार्त उस दिन एकादशी को व्रत करते हैं एवं वैष्णव संप्रदाय का व्रत अगले दिन होता है। यदि एकादशी का क्षय हो तो त्रिस्पर्शस्या उपवास निषेधात् सूत्र के अनुसार आने वाले दिन (पर दिवसे) एकादशी व्रत सबका होगा।

३. प्रदोष व्रत - यह व्रत सभी महीनों के दोनों पक्षों में त्रयोदशी को भगवान शंकर की प्रसन्नता के लिए किया जाता है। इसका समय सूर्यास्त से एक मुहुर्त (दो घटि) रात्रि तक है। कृष्ण पक्ष में परविद्धा प्रदोष व्यापिनी त्रयोदशी ली जाती है और शुक्ल पक्ष में पूर्व विद्धा। (शुक्ल त्रयोदशी पूर्वा परा कृष्ण त्रयोदशी)।

(स) वार्षिक पर्व एवं व्रतोत्सव -
प्रमुख व्रत, पर्व और उत्सवों के समय निर्णय हेतु शास्त्रीय विवेचन यहां दिया जा रहा है।

नूतन संवत्सर - चैत्रे सितप्रतिपदि यो वारोऽर्कोदये स वर्षेश:।उदयद्वितीये पूर्वो नोदयुगलेऽपि पूर्व: स्यात् (ज्योतिर्निबन्ध)। जिस दिन सूर्योदय के समय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा हो उस दिन ही संवत्सर उत्सव एवं पूजन होता है। यदि दो दिन ऐसा हो तो पहले दिन संवत्सर मनाना चाहिए। यदि चैत्र अधिमास हो तो शुद्ध मास में संवत्सर पर्व होता है।

नवरात्र - १. प्रतिपत्सम्मुखी कार्या या भवेदापराह्निकी (स्कन्द पुराण)। २. अमायुक्ता न कर्त्तव्या प्रतिपत् पूजने मम । (देवी भागवत)। ३. भास्करोदयामारभ्य यावत्तु दश नाडिका:। प्रात:काल इति प्रोक्त: स्थापनारोपणादिषु । (विष्णुधर्म)।४. सम्पूर्णा प्रतिपद्धयेव चित्रायुक्ता यदा भवेत्। वैधृत्या वापि युक्ता स्यात् तदा माध्यन्दिने रवौ। अभिजितु मुहूर्तं यत् तत्र स्थापनमिष्यते। (रुद्रयामल)। ५. प्रातरावाहयेद् देवीं प्रातरेव प्रवेशयेत्। प्रात: प्रातश्च सम्पूज्य प्रातरेव विसर्जयेत (देवी पुराण)।।६. यत्र क्षयवशादमा युक्तैव लभ्यते, न द्वितीया युता । (तिथि चिंतामणि)। ७. दिन द्वये तद् व्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वेव ग्राह्या । (निर्णय सिन्धु)।

भावार्थ - चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक, एक वर्ष में चार नवरात्र पर्व होते हैं। १. नवरात्र प्रतिपदा सम्मुखी शुभ होती है। २. जिस दिन अमावस्या के बाद प्रतिपदा हो अत: उस दिन प्रतिपदा अमावस्या युक्ता होने से देवी पूजन प्रारंभ नहीं करना चाहिए।३. सूर्योदय से दश घटी (चार घंटा) तक प्रात:काल में घट स्थापना शुभ होती है। ४. यदि प्रात:काल में चित्रा नक्षत्र या वैधृति योग हो तो उस समय घट स्थापना न करें। यदि उस दिन चित्रा नक्षत्र या वैधृति योग रात्रि तक रहे तो अभिजित मुहूर्त में स्थापन करें। ५.देवी का आवाहन, प्रवेशन, नित्य पूजन और विसर्जन ये सब प्रात:काल में करना चाहिए। ६. यदि प्रतिपदा तिथि क्षय हो तो अमावस्या युक्ता प्रतिपदा को ही घट स्थापना करना चाहिए। ७. यदि प्रथमा तिथि वृद्धि हो तो प्रथम दिन घट स्थापन करना चाहिए।

गणगौर - माधव के अनुसार मुहूर्त्तमात्रसत्वेऽपि दिने गौरीव्रतंपरा। पराविद्धा तृतीया ग्रहण करना चाहिए।

दुर्गाष्टमी - अष्टम्या नवमी विद्धा कर्तव्या फलकांक्षिभि:। न कुर्यान्नवमी तात दशम्या तु कदाचन।। (दीक्षित)। एवं धर्मसिन्धु। जिस दिन नवमी युक्त अष्टमी अर्थात अष्टमी एवं नवमी का मेल (संयुक्त) हो उस दिन शुभ फल की कामना करने वालों को दुर्गा पूजन करना चाहिए।

श्रीराम नवमी - १. चैत्र शुक्ल नवम्यां पुनर्वसुयुतायां मध्यान्हे कर्क लग्न राश्यां श्री राम जन्म:। भावार्थ - जिस दिन मध्यान्ह काल में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा एवं पुनर्वसु नक्षत्र हो उस समय रामनवमी व्रतोत्सवादि करना चाहिए। २. अष्टम्या नवमी विद्धा कर्तव्या फलकांक्षिभि:। न कुर्यान्नवमी तात दशम्या तु कदाचन।। (दीक्षित)। भावार्थ - जिस दिन अष्टमी विद्धा अर्थात अष्टमी एवं नवमी का मेल हो उस दिन मध्यान्ह काल में राम नवमी पूजन-व्रत करना चाहिए, परन्तु जिस दिन नवमी में दशमी का वेध हो उस दिन वर्जित है। ३ दिन द्वये मध्यान्हव्यास अव्याप्तौ वा परा, अष्टमी विद्धाया निषेधात् । (धर्म सिन्धु)। भावार्थ - यदि चैत्र शुक्ल नवमी दोनों दिन मध्यान्हकाल में व्याप्त हो तो दूसरे दिन रामनवमी उत्सव मनाना चाहिए।

अक्षय तृतीया - १. वैशाख शुक्ल तृतीया अक्षया तृतीयोच्चते। सा पूर्वान्ह व्यापिनी ग्राह्या। (निर्णय सिन्धु)। भावार्थ - जिस दिन पूर्वान्हकाल में वैशाख शुक्ल तृतीया हो उस समय अक्षय तृतीया पर्व होत है। २. द्वेधा विभक्त दिन पूर्वाद्धक देश व्यापिनी दिनद्वये चेत्। त्रिमुहूर्तधिक व्याप्ति सत्वे परा (धर्म सिन्धु)। भावार्थ - यदि तृतीया दोनों दिन पूर्वान्हकाल में ही तो ६ घटी से अधिक व्याप्त की स्थिति में दूसरे दिन लें और यदि कम हो तो पहले दिन ही तृतीया पर्व होता है।

पशुराम जयंती - वैशाखस्य सिते पक्षे, तृतीयायां पुनर्वसौ। निशायां प्रथमे यामे, रामाख्या: समये हरि:।। जिस दिन प्रदोषकाल के समय (सूर्यास्त काल से २ घटि के मध्य) तृतीया तिथि हो उस दिन परशुराम जयंती मनाना चाहिए।

गंगा सप्तमी (गंगा गमन मेखलाम्) - वैशाख शुक्ल सप्तमी मध्यान्ह व्यापिनी लेना चाहिए। यदि दो दिन हो तो पहले दिन गंगा पूजन करना चाहिये।

नृसिंह जयंती - वैशाखे शुक्लपक्षे तु, चतुर्दश्यां निशा मुखे। मज्जन्म संभवं पुण्यं, व्रतं पाप प्रणाशनम्।।

हेमाद्री एवं नृसिंह पुराण के अनुसार जिन दिन प्रदोषकाल के समय (सूर्यास्त काल से २ घटि तक) वैशाख शुक्ल चतुर्थी हो उस दिन नृसिंह जयंती मनाना चाहिए। यदि यह स्थिति दोनों दिन हो तो दूसरे दिन व्रतादि उत्सव मनाना चाहिए।

कदली व्रत - इस व्रत का वर्णन हेमाद्री ग्रंथ में है। यह व्रत वैशाख, माघ और कार्तिक मास में से किसी भी मास में चतुर्दशी के दिन किया जा सकता है। यह विशेष रूप से गुजरात में किया जाता है। वैशाख, माघ या कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में जिस दिन पूर्वान्हकाल में चतुर्दशी हो उस दिन यह व्रत होता है।

रम्भातीज व्रत - ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को जिस दिन पूर्व विद्धा तिथि हो उस दिन यह व्रत किया जाता है। पूर्व विद्धा से तात्पर्य यह है कि जिस दिन सूर्योदय से पहले ही तृतीया प्रारंभ हो चुकी हो। पिछले वार में ही पूर्व वाली तिथि (द्वितीया) का संगम हो।

गंगा दशहरा - ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां बुध हस्तयो:। व्यतिपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषो रवौ। दशयोगे नर: स्नात्वा सर्वपापै: प्रमुच्यते। (स्कन्द पुराण)। ज्येष्ठे मलमासे सति तन्नैव दशहरा कार्या न तु शुद्धे। (निर्णय सिन्धु)। ज्येष्ठ मास में शुक्ल दशमी के समय हस्त नक्षत्र, बुधवार, व्यतिपात योग, गर, करण, आनन्द योग, वृषस्थ रवि और कन्या के चंद्र हो तो यह दुर्लभ योग में गंगा स्नान या पूजनादि करने से दश प्रकार के पापों से मुक्ति मिलती है। उपरोक्त योगों में से जिस समय अधिक से अधिक योग हों उस समय का यह पूजन करना चाहिए। यदि ज्येष्ठ अधिमास हो तो अधिमास में ही यह पूजन पुण्यदाई होती है।

रथयात्रा जगन्नाथपुरी - यह अद्भुत रथ यात्रा आषाढ़ शुक्ल द्वितीया एवं पुष्य नक्षत्र सुयोग में होती है।

गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा - यह मध्यान्हव्यापिनी पूर्णिमा ग्रहण करना चाहिए। ऐसा दो दिन होने पर दूसरे दिन ग्रहण करना चाहिए। अथैव व्यास पूजोक्ता। तत्रा त्रिमुहूर्ता चेत्परैवेति सन्यास पद्धतौ। त्रिमुहूर्ताधिकं ग्राह्यं पर्वक्षौर प्रमाणयो। (निर्णय सिन्धु)। जिस दिन आषाढ़ पूर्णिमा कम से कम तीन मुहूर्त (६ घटि) व्याप्त रहे उस दिन व्यास पूजा का विधान है।

कजली तृतीया (श्रावण की) - तृतीया श्रावणे कृष्णा, या स्याच्छ्रवण संयुता। तस्यां सम्पूज्य गोविन्दं, तुष्टिमग्रयामवाप्नुयात्।। (हेमाद्री एवं विष्णूधर्मोत्तर)। श्रावण कृष्ण तृतीया को श्रवण नक्षत्र के योग में विष्णू पूजन-व्रत किया जाता है। इसमें परविद्धा तिथि ग्राह्य होती है पर तिथि से तात्पर्य चतुर्थी तिथि है।

शीतला सप्तमी - हेमाद्री एवं भविष्य पुराण के अनुसार चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ और श्रावण कृष्ण सप्तमी को मध्यान्ह व्यापिनी तिथि में शीतला देवी का पूजन किया जाता है।

दूर्वागणपति पूजन - सौर पुराण के अनुसार श्रावण शुक्ल पक्ष में मध्यान्ह व्यापिनी चतुर्थी में यह पूजन होता है।

नाग पंचमी - श्रावण शुक्ल पक्ष में पराविद्धा पंचमी को सर्प-नाग पूजन का विधान है। मदनरत्न के अनुसार, पंचमी नाग पूजायां कार्या षष्ठी समन्विता:।

रक्षाबंधन - भविष्योत्तर पुराण एवं मदनरत्न के अनुसार रक्षाबंधन श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को होता है। इसमें अपरान्ह व्यापिनी तिथि ली जाती है यानि जिस दिन पूर्णिमा १८ घटी से २४ घटी तक या इससे अधिक समय तक व्याप्त रहे उस दिन रक्षाबंधन पर्व मनाना चाहिए। यदि ऐसी स्थिति दो दिन हो तो पहले दिन रक्षाबंधन सूत्र बांधना चाहिए। याद रखें कि उस समय भद्राकाल नहीं होना चाहि। भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।

कज्जली तृतीया (भाद्रपद कृष्ण पक्ष में) - यह तृतीया व्यापकरूप में मनाई जाती है। माहेश्वरी वैश्य समाज में इस व्रत को सातूडी तीज अथवा सतवा तीज कहा जाता है।

चन्द्रषष्ठी (भाद्रपद कृष्ण पक्ष) - भविष्यपुराण के अनुसार भाद्रपद कृष्ण पक्ष षष्ठी को चन्द्रोदय के समय चन्द्र को अर्घ्य दिया जाता है। चन्द्रमा के उदयकाल में षष्ठी का होना आवश्यक है। यह पूर्व युक्ता लेना चाहिये।

हलषष्ठी (भाद्रपद कृष्ण पक्ष) - परायुक्ता षष्ठी में हरछठ व्रत का विधान है। अर्थात् जिस दिन षष्ठी एवं सप्तमी युक्त हो उस दिन यह व्रत करना चाहिये।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण पक्ष) - विष्णुपुराण, शिवपुराण, ब्रम्हपुराण, भविष्यपुराण इत्यादि के अनुसार भगवान श्री कृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी बुधवार को रोहिणी नक्षत्र में अर्धरात्रि के समय हुआ था। अधिकांश उपासक उपरोक्त योगों का मेल अपने-अपने तरीके से ग्रहण करते है इससे इस व्रत को लेकर सर्वाधिक मत-भेद सामने आते हैं। शास्त्रों में इसके शुद्धा, सप्तमी विद्धा, नवमी विद्धा, समा, न्यूना, अधि इत्यादि से अठारह प्रकार के भेद हैं। श्री कृष्ण की जन्म स्थली मथुरा-वृन्दावन में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव , व्रतादि प्राय: उदयकालिक अष्टमी (नवमी युक्ता अष्टमी) में ही मनाया जाता है। यह वैष्णव मत भी है।

हरितालिका तीज व्रत - (भाद्रपद शुक्ल पक्ष) - मुहूर्त्तमात्र सत्वेऽपि दिने गौरीव्रतं परेति। माधवोक्त जिस दिन केवल एक मुहूर्त्त भी तृतीया हो उस दिन परायुक्ता तृतीया में हरितालिका व्रत करना चाहिये।

ऋषि पंचमी व्रत - भाद्रपद शुक्लपक्ष पंचमी। माधव के अनुसार, पूजाव्रतेषु सर्वेषु मध्याह्वव्यापिनी तिथिरिति। दिनद्वये मध्याह्वव्याप्ता व्याप्तौ वा पूर्वेव। सूत्र के अनुसार मध्याह्वव्यापिनी पंचमी को व्रत करना चाहिए। यदि दो दिन मध्याह्व व्यापिनी हो तो पहले दिन व्रत करना चाहिए।

गणेश चतुर्थी व्रत (भाद्रपद शुक्ल पक्ष) - कृत्यरत्नावली के अनुसार श्री गणेश का जन्म भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को मध्यान्ह में हुआ था। अत: मध्यान्ह व्यापिनी चतुर्थी में श्री गणेश स्थापन एवं पूजन करना चाहिए। यदि दोनों दिन मध्यान्ह व्यापिनी चतुर्थी हो तो पहले दिन स्थापन-पूजन करना चाहिए। इस दिन रात्रि में चन्द्रदर्शन कर लेने से मिथ्या कलंक लगता है, ऐसी मान्यता है। उसके निवारण के लिए भागवत पुराण में उल्लेखित स्यमन्तक की कथा सुनना या पढऩा चाहिए।

अनन्त चतुर्दशी (भाद्रपद शुक्ल पक्ष) - माधव के अनुसार, द्विमुहूर्त व्याप्तौदायिकी ग्राह्योति। जिस दिन सूर्योदय के पश्चात कम से कम दो मुहूर्त अथवा ४ घटी चतुर्दशी हो उस दिन अनन्त भगवान का पूजन व्रत करना चाहिए।

पितृपक्ष (महालय) - भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण अमावस्या तक सोलह दिन पितरों का तर्पण एवं विशेष दिन श्राद्ध करने का शा ीय विधान है, इससे पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है व घर में सुख-शांति बढ़ती है। श्रुति के अनुसार - पूर्वान्हो वै देवानां मध्यान्हो मनुष्याणमपरान्ह: पितृणाम्। अर्थात अपरान्ह पितरों का समय होता है। इसलिए जिस तिथि को श्राद्ध दिन हो, यदि वह तिथि अपरान्ह व्यापिनी हो तब श्राद्ध करना चाहिए। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि १८ घटि से २४ घटि के बीच व्याप्त रहने वाली तिथि में उस दिन संबंधित तिथि श्राद्ध होता है। यदि उस दिन १८ घटी से २४ घटी के बीच दो तिथियां व्याप्त हों तो दोनों तिथियों का श्राद्ध उसी दिन करना चाहिए। उदाहरण के लिए किसी दिन सूर्योदय के समय सप्तमी तिथि है तथा पंचांग में उस तिथि का समाप्तिकाल १८ घटी ३१ पल लिखा है तो सप्तमी अपरान्ह व्यापिनी है तथा अष्टमी भी इसलिए दोनों तिथियों के श्राद्ध एक ही दिन होंगे। अत: उस दिन सप्तमी के साथ-साथ अष्टमी का भी श्राद्ध होगा।सन्यासियों का श्राद्ध द्वादशी को करना चाहिए। युद्ध या दुर्घटना में मृत्यु को प्राप्त का श्राद्ध चतुर्दशी को करना चाहिये।

महालक्ष्मी व्रत - आश्विन कृष्ण अष्टमी को चंद्रोदय व्यापिनी तिथि में व्रत का विधान है।

विजया दशमी - शमी पूजा यात्रदौ नक्षत्रोदय व्यापिनी दशमी ग्राह्या। नवमीशेष युक्तायां दशम्यायम पराजिता। ददाति विजयं देवी पूजित जयवद्धिनी (रत्नकोष)। अर्थात जिन दिन श्रवण नक्षत्र के प्रारंभ के समय दशमी तिथि व्याप्त हो उस दिन युद्ध में विजय की कामना रखने वाले राजा की विजय होती है। यदि श्रवण नक्षत्र न मिले तो नवमी दशमी युक्ता दिवस में विजया दशमी मनाना चाहिए।

शरद पूर्णिमा - आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को गोदुग्ध की खीर का अर्धरात्रि के समय आराध्यदेव को भोग लगाया जाता है व अगले दिन उसे प्रसाद रूप में उसका भोजन किया जाता है। शरद पूर्णिमा का कर्मकाल रात्रि है अत: कर्मणो यस्य य: कालस्तत्कालव्यापिनीतिथि:। सूत्र के अनुसार इसमें प्रदोष एवं निशीथ दोनों में होने वाली पूर्णिमा ली जाती है। यदि पहले दिन निशीथव्यापिनी हो और दूसरे दिन प्रदोषव्यापिनी न हो तो पहले दिन व्रत करना चाहिए।

करवाचौथ - (कार्तिक कृष्ण पक्ष) - इस दिन सौभाग्वती महिलाएं दिनभर व्रती रहकर चन्द्रोदय के बाद अन्न-जल ग्रहण करती हैं, इसलिए इस व्रत का कर्मकाल चन्द्रोदयकाल होता है। अत: कर्मणो यस्य य: कालस्तत्कालवयापिनीतिथि:। नियम के अनुसार इसमें चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी के दिन व्रत रखा जाता है। यही निर्णय धर्मसिन्धु में भी है।

गोवत्स द्वादशी - कार्तिक कृष्ण पक्ष। वत्सपूजा वटश्चैव कर्तव्यौ प्रथमऽहनि के अनुसार इसमें प्रदोष व्यापिनी पहले दिन की द्वादशी तिथि लेना चाहिए। सायंकाल में गाय एवं बछड़ों का पूजना करना चाहिए।

धन त्रयोदशी, यम दीपदान - यह त्रयोदशी प्रदोष व्यापिनी शुभ होती है। यदि वह दो दिन हो या न हो, दोनों स्थितियों में दूसरे दिन की तिथि ली जाती है।

रूप चतुर्दशी, नरक चतुर्दशी - इसमें पहले दिन की चन्द्रोदय व्यापिनी तिथि ली जाती है (निर्णय सिन्धु)।

दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजन - १. प्रदोषार्धरात्रव्यापिनी मुख्या एकैक व्याप्तौ परैव (निर्णय सिन्धु)।

प्रदोष काल एवं अर्धरात्रि व्यापिनी अमावस्या के दिन श्री महालक्ष्मी का पूजन शुभ है। इसमें प्रदोकाल का विशेष महत्व है। यदि दो दिन प्रदोष व्यापिनी हो तो दूसरे दिन की रात्रि में लक्ष्मी पूजन शुभ होता है (तदा विहाय पूर्वेद्यु: परेऽन्हि सुखरात्रिका - निर्णय सिन्धु)।

यम द्वितीया - कार्तिक शुक्ल द्वितीया। यह मध्यान्हव्यापिनी पूर्व विद्धा शुभ होती है (यमद्वितीया मध्यान्हव्यापिनी पूर्वविद्धा चेति हेमाद्रि:। -निर्णय सिन्धु)।

आंवला नवमी (कार्तिक शुक्ल नवमी) - नवमी विद्धा कर्तव्या फलकाङ्क्षिणा।न कुर्यान्नवमी तात दशम्या तु कदाचन।। (हेमाद्रि, देवी पुराण)। इसमें पूर्वान्ह व्यापिनी तिथि लेना चाहिए। यदि वह दो दिन हो या न हो तो पूर्व विद्धा लेना चाहिए।

बैकुण्ठ चतुर्दशी - कार्तिक शुक्ल अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशी को ब्रह्म मुहूर्त में पूजन एवं व्रत करन चाहिए (तिथि निर्णय:)।

दत्त जयंती - मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा जिस दिन प्रदोष व्यापिनी हो उस दिन दत्त जयंती मनाना चाहिए। (तिथि निर्णय:)।

वसंत पंचमी - माघ शुक्लपक्ष पंचमी। इस दिन पूर्वविद्धा पंचमी को श्रीगणेश एवं सरस्वतीजी का पूजन किया जाता है।

महाशिवरात्रि - फाल्गुन कृष्णपक्ष चतुर्दशी। जैसा कि शिवरात्रि के नाम से संकेत है कि इस व्रत का पूजन कर्मकाल रात्रि है। अत: 'कर्मणो यस्य य: कालस्तत्कालव्यापिनीतिथि:' नियम के अनुसार इसमें प्रदोष एवं निशीथकाल में व्याप्त पूर्वविद्धा चतुर्थी ली जाती है। पूर्व विद्धा चतुर्दशी लेेने का कारण यह है कि शिवरात्रि का पारण चतुर्दशी में ही करना चाहिए। (तिथ्यन्ते पारणं कुर्याद् विना शिव चतुर्दशीम्)।

होलिका दहन (फाल्गुन पूर्णिमा) - १. प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या पूर्णिमा फाल्गुनी सदा। निशागमे तु पूज्येत् होलिका सर्वतोमुखै: (नारदपुराण)। २. दिनद्वये प्रदोषे चेत् पूर्णा दाह: परेऽहनि (स्मृतिसार) ३. भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा (स्मृत्यन्तर)। ४. तस्यां भद्रामुखं त्यक्त्वा पूज्या होला निशामुखे (पृथ्वीचन्द्रोदय)। ५. पूर्णिमाया: पूर्वे भागे चतुर्थप्रहरस्य पंचघटीमध्ये भद्राया मुखं ज्ञेयम् (ज्योतिर्निबन्ध)। ६. पृथिव्यां यानि कार्यापि शुभानि ह्ययशुभानि च। तानि सर्वाणि सिद्धयन्ति विष्टिपुच्छे न संसय: (आचार्य लल्ल)।। ७. प्रतिपद्भूतभद्रासु यार्चिता होलिका दिवा। संवत्सरं तु तद्राष्ट्रं पुरं दहति साद्भुताम्।। (चन्द्रप्रकश)। ८. दिनार्धात् परतो या स्यात् फाल्गुनी पूर्णिमा यदि। रात्रौ भद्रावसाने तु होलिका तत्र पूजयेत्।। (भविष्यपुराण)। ९. दिवाभद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। सा भद्रा भद्रादा यस्माद् भद्रा कल्याणकारिणी।। (ज्योतिष तत्व)।१०. ग्रहणशुद्धौ स्नात्वा कर्मणि कुर्वीत श्रुतमन्नं विसर्जयेत्। (स्मृतिकौस्तुभ)। ११.स्पष्टमासविशेषाख्याविहितं वर्जयेन्मले। (धर्मसार)। अर्थात होलिका दहन का कर्मकाल रात्रि है, इसलिए प्रदोष व्यापिनी पूर्णिमा के समय होलिका दहन करना चाहिए। यदि दोनों दिन प्रदोषकाल में पूर्णिमा व्याप्त हो तो दूसरी लेना चाहिए।

यदि प्रदोषकाल में भद्रा हो तो मुख की घटी त्यागकर प्रदोषकाल में होलिका दहन करना चाहिए। पूर्णिमा के दिन तीसरे चौथे प्रहर की आदि की ५ घटी भद्रा का मुख होता है, अत: उक्त समय में भद्रा के रहते होलिका दहन निषेध है। भद्रा का पुच्छकाल शुभ होता है। पूर्णिमा के दिन भद्रा का पुच्छकाल तीसरे प्रहर की अंतिम ३ घटी में होता है। (विशेष सूचना - भद्रा के मुख-पुच्छ प्रकरण में प्रहर की गणना सूर्योदय से न होकर तिथि के आरंभकाल से होती है।) दिन के समय, प्रतिपदा को, चतुर्दशी को या भद्राकाल में होलिका दहन करने पर वहां के राज्य, नगर और नागरिक विचित्र उत्पातों से एक वर्ष में नष्ट हो जाते हैं। यदि दोपहर पश्चात पूर्णिमा प्रारंभ हुई हो अर्ध रात्रि तक भद्रा रहती है अत: तत्पश्चात सूर्योदय के पहले तक होलिका दहन करना चाहिए। यदि पहले दिन रात भर भद्रा रहे और दूसरे दिन प्रदोष के समय पूर्णिमा मौजूद हो उस समय चंद्रग्रहण हो तो पहले दिन ही सूर्यास्त के बाद होलिका दहन कर देना चाहिए, क्योंकि पूर्णिमा में पूर्वार्ध की भद्रा रात्रिकाल में शुभ कही गई है। यदि दूसरे दिन प्रदोष के समय पूर्णिमा हो और भद्राकाल समाप्त होने वाला हो, परन्तु चंद्रग्रहण हो तो ग्रहण के शुद्धिकाल उपरांत स्नान करके होलिका दहन कर देना चाहिए। यदि फाल्गुन अधिमास हो तो शुद्ध मास (दूसरे फाल्गुन) की पूर्णिमा को होलिका दहन करना चाहिए।

शीतला अष्टमी (वासौरा) - व्रतमात्रेऽष्टमी कृष्णा पूर्वा शुक्लाष्टमी परा (माधव)। शीतला अष्टमी कृष्ण पक्ष में होने के कारण पूर्व विद्धा (सप्तमी विद्धा) ली जाती है। इस दिन शीतला माता का व्रत एवं शीतल अन्न (पहले से पकाए हुए भोजन) का भोग लगाया जाता है।

नवग्रह मन्त्र एवं समिधा

सूर्य – वैदिक मन्त्र – ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ (हवन समिधा – आक)। एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ घृणि: सूर्याय नम:। तांत्रिक सूर्य मन्त्र – ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम:। जप संख्या – ७०००(सात हजार)। जपकाल– सूर्योदय।

चन्द्र – वैदिक मन्त्र – ॐ इमं देवा असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां ँ राजा॥ हवन समिधा – पलास (ढ़ांक), खांकर, छोला। एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ सों सोमाय नम:। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्रमसे नम:। जप संख्या – ११०००(ग्यारह हजार)। जपकाल– संध्या।

भौम – वैदिक मन्त्र – ॐ अग्निर्मूर्धा दिव: ककुत्पति: पृथिव्या अयम। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति॥(समिधा – खैर) एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ अं अंगारकाय नम:। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भौमाय नम:। जप संख्या – १००००(दस हजार)। जपकाल– सू.उ. से सवा दो घड़ी।

बुध – वैदिक मन्त्र – ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥ (हवन समिधा – अपामार्ग,चिचिडा,आंधीझारा)। एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ बुं बुधाय नम:। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:। जप संख्या – ९०००(नव हजार)। जपकाल– सू.उ. से पांच घड़ी तक।

बृहस्पति– वैदिक मन्त्र – ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ (हवन समिधा – पीपल) एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ बृं बृहस्पतये नम:। तान्त्रिक गुरुमन्त्र – ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम: जप संख्या – १९०००(उन्नीस हजार)। जपकाल– संध्याकाल।

शुक्र – वैदिक मन्त्र – ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रम्हणा व्यपिबत्क्षत्रं पय: सोमं प्रजापति:। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमंधस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोक्मृतं मधु॥ (हवन समिधा – गूलर)। एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ शुं शुक्राय नम:। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:। जप संख्या – १६००० (सोलह हजार) जपकाल– सूर्योदय।

शनि – वैदिक मन्त्र – ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु न: ॥ (हवन समिधा – शमी) एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ शं शनैश्चराय नम:। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:। जप संख्या – २३०००(तेईस हजार)। जपकाल– रात्रि।

राहु – वैदिक मन्त्र – ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृध: सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ (हवन समिधा – दूर्वा)। एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ रां राहवे नम:। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ भ्रा भ्रीं भ्रौं स: राहवे नम:। जप संख्या – १८०००(अठारह हजार)। जपकाल– रात्रि।

केतु – वैदिक मन्त्र – ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथा:॥ (हवन समिधा – कुशा)। एकाक्षरी बीज मन्त्र – ॐ कें केतवे नम:। तान्त्रिक मन्त्र – ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं स: केतवे नम:। जप संख्या – १७०००(सत्रह हजार)। जपकाल– रात्रि।

नवग्रह शांति प्रार्थना – ॐ ब्रम्हा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानु: शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्र: शनिराहुकेतव: सर्वे ग्रहा: शान्तिकरा भवन्तु।। सूर्य: शौर्यमथेन्दुरूच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गल: सुबुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्र: सुखं शं शनि:। राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतु: कुलस्योन्नतिं नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहा:।।

नवग्रहों के रत्न एवं धारण विधि

महत्त्व – शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि एवं अनिष्ट कारक ग्रहों की शान्ति हेतु सुयोग्य ज्योतिषी की सलाह से विधि पूर्वक रत्न धारण करना चाहिये। कोंन सा रत्न कब पहनना चाहिये और कब हानिप्रद होगा, इस संबन्ध में विद्वानों में मतभेद हैं। इस वारे में हमारा मत है कि, तृतीयेश, षष्टेश, अष्टमेश और द्वादशेष का रत्न धारण करने की सलाह कभी नहीं देना चाहिये। लग्नेश सदैव शुभ होता है, अत: लग्न स्वामी का रत्न आजीवन धारण करना चाहिये। कारक ग्रह की महादशा में उसका रत्न विशेष लाभप्रद रहेगा। मारकेश का रत्न सदैव अशुभ कारक होगा। किसी भी रत्न को कच्चे दूध या गंगाजल में स्नान कराकर, ग्रह के मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, धूप चंदन देकर धारण करना चाहिये। रविपुष्य योग में कोई भी रत्न धारण किया जा सकता है।

माणिक्य – सूर्य की प्रसन्नता हेतु माणिक्य धारण किया जाता है। सिंह लग्न वाले जातकों को यह आजन्म धारण करना चाहिये। मेष, कर्क, वृश्चिक, धनु, लग्न वाले जातकों के लिये माणिक्य शुभ है। माणिक्य के साथ हीरा, नीलम, गोमेद और लहसुनिया कभी भी धारण नहीं करना चाहिये। धारण विधि :– रविवार के दिन सूर्योदय के समय या सूर्य की होरा मे, शुभ योग में, सोने अथवा तांबा की अंगूठी में, सूर्य मन्त्र से अमिन्त्रित करके दाहिने हाथ की तर्जनी या अनामिका अंगुली में माणिक्य धारण करना चाहिये। माणिक्य कम से कम ढ़ाई रत्ती का होना चाहिये।

मोती – यह चन्द्र देव का रत्न है। कर्क लग्न में जन्मे जातकों को यह रत्न विशेष लाभ दायक है। मेष, कन्या, तुला, वृश्चिक, एवं मीन लग्न वाले जातकों के लिये मोती शुभ होता है। मोती के साथ हीरा, पन्ना, नीलम, गोमेद और लहसुनिया कभी भी धारण नहीं करना चाहिये। मोती धारण विधि :– सोमवार को शुक्ल पक्ष की द्वितीया से पूर्णिमा तक, चन्द्रमा की होरा में या संध्या में, चाँदी की अंगूठी में, चन्द्र मन्त्र से अमिन्त्रित करके कनिष्ठा अंगुली में मोती धारण करना चाहिये।

मूंगा – मंगल देव की कृपा प्राप्ती के लिये मूंगा धारण करना चाहिये। जिन जातकों का जन्म मेष या बृश्चिक लग्न में हुआ हो उन्हें मूंगा अवश्य धारण करना चाहिये। कर्क, सिंह, धनु, मकर, मीन लग्न के लिये मूंगा शुभ होता है। मूंगा के साथ हीरा, पन्ना, नीलम, गोमेद और लहसुनिया कभी भी धारण नहीं करना चाहिये। धारण विधि :– शुक्ल पक्ष के मंगलवार को, मंगल की होरा मे, सोने या तांबा की अंगूठी में, मंगल के मन्त्र से अमिन्त्रित करके अनामिका अंगुली में मोती धारण करना चाहिये।

पन्ना – यह बुध का रत्न है। मिथुन या कन्या लग्न के जातकों के लिये पन्ना विशेष शुभ है। वृषभ, तुला, धनु, मकर एवं कुम्भ लग्न के लिये पन्ना शुभ होता है। पन्ना कम से कम ३ रत्ती का होना चाहिये। पन्ना के साथ मोती एवं मूंगा नहीं पहनना चाहिये। धारण विधि :– शुक्ल पक्ष के बुधवार को, बुध की होरा में, बुध मन्त्र से अभिमन्त्रित कर सोने की अंगूठी में कनिष्ठा अंगुली में पन्ना धारण करना चाहिये।

पुखराज – यह गुरु का प्रमुख रत्न है। धनु या मीन लग्न राशि वाले जातकों के लिये यह रत्न विशेष शुभ है। मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, कुंभ एवं मीन लग्न वाले जातकों के लिये पुखराज शुभ होता है। चूंकि गुरु का रंग पीला होता है इसलिये पीला पुखराज ही शुभ कारक होता है। पुखराज कम से कम ३ रत्ती का होना चाहिये। पुखराज के साथ हीरा, नीलम, गोमेद और लहसुनिया कभी भी धारण नहीं करना चाहिये। धारण विधि :– शुक्ल पक्ष के गुरुवार को, गुरुकी होरा में, सोने की अंगूठी में, गुरुमन्त्र से अभिमन्त्रित करके तर्जनी अंगुली में पुखराज धारण करना चाहिये। गुरु का उपरत्न :– जिरकान, सुनैला।

हीरा – वृष या तुला लग्न के जातकों को हीरा सदैव शुभ होता है। मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, मकर एवं कुंभ लग्न जातकों के लिये हीरा शुभ होता है। हीरे वजन कम से कम ढ़ाई सेन्ट होना चाहिये। हीरा के साथ माणिक्य, मोती, मूंगा या पीला पुखराज धारण नहीं करना चाहिये। धारण विधि :– शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को शुक्र की होरा में, चाँदी की अंगूठी में, शुक्र के मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, कनिष्ठिका या मध्यमा अंगुली में हीरा धारण करना चाहिये। शुक्र के उपरत्न :–फिरोजा, ओपल, सफेद स्फटिक।

नीलम – वृषभ, तुला, मकर, कुम्भ लग्न जातकों के लिये नीलम शुभ है। नीलम के साथ माणिक्य, मोती, मूंगा या पीला पुखराज धारण नहीं करना चाहिये। प्राय: नीलम धारण करने के २४ धंटे के भीतर अपना प्रभाव प्रारंभ कर देता है, इसलिये इसके पहनने का निर्णय सावधानी पूर्वक करना चाहिये। यदि नीलम अनुकूल न वैठे तो किसी भी प्रकार की हानि की संभावना रहती है, इसलिये परीक्षण के लिये कम से कम ३ दिन नीलम को अपने पास रखना चाहिये। यदि इस दौरान रोग, घबराहट या अशुभ स्वप्न आऐं तो नीलम धारण नहीं करना चाहिये। **धारण विधि** – किसी भी शनिवार को शनि की होरा में, पंचधातु, लोहे या सोने की अंगूठी में, शनि के मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, मध्यमा अंगुली में नीलम धारण करना चाहिये।

गोमेद – यह राहु का रत्न है। जिनकी लग्न कुंडली में राहु १, ४, ७, ९ या १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद धारण करना चाहिये। गोमेद के साथ माणिक्य, मोती, मूंगा या पीला पुखराज धारण नहीं करना चाहिये। धारण विधि :– किसी भी शनिवार को शनि की होरा में, पंचधातु की अंगूठी में, राहु के मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, मध्यमा अंगुली में गोमेद धारण करना चाहिये।

लहसुनियां (वैदूर्य) – यह केतु का रत्न है। जिनकी लग्न कुंडली में केतु १, ३,४, ६, ७, ९, १० या ११ वें भाव में हो, उन्हें गोमेद धारण करना चाहिये। लहसुनिया के साथ माणिक्य, मोती, मूंगा या पीला पुखराज धारण नहीं करना चाहिये। धारण विधि :– बुधवार के दिन पंचधातु की अंगूठी में, केतु के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित कर कनिष्ठ अंगुली में वैदूर्य धारण करना चाहिये।

श्री महामृत्युंजय मन्त्र

वेदोक्त मंत्र – ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारु कमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

प्रणव सहित महामृत्युंजय मंत्र – ॐ हौं जूँ स: ॐ भूर्भुव: स्व: ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्व: भुव: भू: ॐ स: जूँ हौं ॐ ॥

भावार्थ – इस महामंत्र का अर्थ अथाह एवं विश्व व्यापक है, इसे भगवान शिव ही जानते हैं। तथापि कई विद्वानों के द्वारा किये गये भावार्थ पढ़ने को मिले। जिसने जिस भाव या उद्देश्य से इस महामंत्र का पढ़ा उसे वही भावार्थ अनुभूत हुआ। उदाहरण के लिये यदि किसी गंभीर रोग या अनिष्ट से निवारण हेतु इस मंत्र का जाप करते हैं तो इसका भावार्थ इस प्रकार हो सकता है। ''हम उन भगवान त्र्यम्बक (ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्र तीनों के जनक शिव) का यजन (उपासना) करते हैं, जो कि पुष्प रुपी संसार में सुगंध की तरह व्याप्त होकर जगत का पोषण करते हैं, ऐसे प्रभु से मेरी प्रार्थना है कि हे प्रभो! यदि समय आ गया हो तो, मृत्यु बंधन से उसी तरह मुक्ति देवें जैसे खरबूजा पक जाने पर विना कष्ट के लत्ता के बंधन से छूट जाता है। अन्यथा अमृत देकर हमें सुदीर्घ जीवन प्रदान करें।''

महामृत्युंजय जाप विधि – जिस दिन शिववास शुभ हो उस समय महामृत्युंजय जाप करना चाहिये। सर्व प्रथम आचमन, पवित्रीकरण और प्राणायाम करके'' सुमुखश्चैकदन्तश्च........'' मंत्र से भगवान श्री गणेश का स्मरण करना चाहिये। तत्पश्चात संकल्प करके विनियोग करना चाहिये। विनियोग हेतु दाहिने हाथ में जल लेकर'' ॐ अस्य श्री महामृत्युंजय मन्त्रस्य वशिष्ठऋषि: अनुष्टुप्छन्द: श्री सदाशिव महामृत्युंजय रुद्रो देवता श्रीं वीजं ह्रीं शक्ति: मम अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:'' यह मंत्र पढ़कर जल नीचे पात्र में छोड़ दें।

न्यास – मंत्र को शरीर में धारण करने की क्रिया न्यास है।

ऋष्यादि न्यास – ॐ वशिष्ठ ऋषये नम: (यह मंत्र पढ़कर सिर का स्पर्श करें)। अनुष्टुप् छन्दसे नम: (यह मंत्र पढ़कर मुख का स्पर्श करें)। श्री महामृत्युंजय रुद्र देवतायै नम: (यह मंत्र पढ़कर ह्रदय का स्पर्श करें)। श्रीं वीजाय नम: (यह मंत्र पढ़कर गुह्य को छुएं)। ह्रीं शक्तये नम: (यह मंत्र पढ़कर पैरों का स्पर्श करें)।

करन्यास – ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: त्र्यम्बकं, ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नम: (यह मंत्र पढ़कर दोनों तर्जनियों से हाथ के अंगूठों का स्पर्श करें)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: यजामहे, ॐ नमो भगवते अमृत मूर्तये मां जीवाय, जीवय तर्जनीभ्यां नम: (यह मंत्र पढ़कर दोनों तर्जनियों को अंगूठे से मिलाऐं)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्, ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्र शिरसे जटिने स्वाहा, मध्यमाभ्यां वषट् (यह मंत्र पढ़कर बीच की दोनों अंगुलियों को अंगूठों से मिलाएं)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: उर्वारु कमिव बंधनात्, ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाय ह्रां ह्रीं, अनाम्यकाभ्यां हुँ (यह मंत्र पढ़कर अनामिकाओं को अंगूठे से मिलाएं)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: मृत्योर्मुक्षीय, ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजु: साममंत्राय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् (यह मंत्र पढ़कर कनिष्ठिकाओं को अंगूठे से मिलाएं)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: मामृतात्, ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल-ज्वल मां रक्ष रक्ष अधोरास्त्राय, करतलकर पृष्ठाभ्यां फट् (यह मंत्र पढ़कर हथेलियों के पिछले भाग को परस्पर रगड़ें)।

अंग न्यास – ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: त्र्यम्बकं, ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा ह्रदयाय नम: (दाईं पांच अंगुलियों से ह्रदय का स्पर्श करें)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: यजामहे, ॐ नमो भगवते अमृत मूर्तये मां जीवाय, शिर से स्वाहा (सिर का स्पर्श करें)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्, ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्र शिरसे जटिने स्वाहा, शिखायै वषट् (शिखा स्पर्श)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: उर्वारुकमिव बंधनात्, ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाय ह्रां ह्रीं,कबचाय हुँ (दाएं हाथ से बायां कंधा तथा बाएं हाथ से दाएं कंधे का स्पर्श करें)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: मृत्योर्मुक्षीय, ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजु: साममंत्राय नेत्रत्रणाय वौषट् (तर्जनी तथा अनामिका से दोनों आंखों का स्पर्श करें)। ॐ हौं ॐ जूँ स: भूर्भुव: स्व: मामृतात्, ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल-ज्वल मां रक्ष रक्ष अधोरास्त्राय, करतलकर अस्त्राय फट् (दाएं हाथ की तर्जनी और मध्यमा को सिर पर से घुमाकर बाएं हथेली पर मारकर ध्वनि करें)। तत्पश्चात महादेव का ध्यान करें।

ध्यान – शिव पुराण में ध्यान मंत्र इस प्रकार है – चन्द्रार्काग्नि विलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्त: स्थितम्। मुद्रा पाश मृगाक्ष सूत्र विलसत्पाणिं हिमांशु प्रभम्॥ कोटीरेन्दुगलत्सुधा स्नुततनुं हारादि भूषोज्वलम्। कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युंजयं भावयेत्॥

मानसपूजा एवं जप – ध्यान के पश्चात् शिवजी का मानसपूजन कर महामृत्युंजय मंत्र का संकल्प की संख्या में रुद्राक्ष की माला से संपुट सहित जाप करना चाहिये। संकल्पित जप का दशांश हवन और हवन का दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश मार्जन, का दशांश ब्राह्मण भोजन के बाद आरती, पुष्पांजलि एवं इष्टदेव से क्षमा प्रार्थना करनी चाहिये। इस प्रकार विसर्जन के पश्चात् अनुष्ठान पूर्ण हो जाता है।

॥ मूल नक्षत्रों के वेदोक्त मन्त्र॥

अश्विनीमंत्र –ॐ अश्विनीभैंषज्येनतेजसे बृम्हवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यैभैषज्यन वार्यान्नाद्याय अभिषिञ्चीमिन्द्रिस्येन्द्रियेण वलायश्रियै यशसेऽभिषिश्चामि।

अश्लेषा मंत्र – ॐ नमोस्तुसर्पेभ्योयेकेच पृथ्वीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्य: सर्पेभ्योनम:।

मघा मंत्र – ॐ पितृभ्य: स्वाधायिभ्य: स्वधानम: पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम: प्रपितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम: अक्षन्नपितरोमीमदन्त पितरोक्तीतृप्यन्त पितर: पितर: शुन्धद्ध्वम्।

ज्येष्ठा मंत्र – ॐ सजोषा इन्द्रसगणोमरूद्भि: सोममपिववृत्रहाशूरविद्वान्जहि शत्रुं रपमृधोनुदश्वाथा भयं कृणुहिविश्वतोन:।

मूल मंत्र – ॐ एषतेनिऋते भागरतांजुषस्व स्वाहार्कग्नित्रेभ्यो: देवेभ्यो: पर: सद्भ्य: स्वाहा, यमनेत्रेभ्यो दक्षिणासद्भ्य: स्वाहा, विश्वदेव नेत्रेभ्योदेवेभ्य: पश्चात्सद्भ्य: स्वाहा, मित्रावरूण नेत्रेभ्यो वामनेत्रेभ्योवा देवेभ्यक्उत्तरासदभ्य: स्वाहा:, सोमनेत्रेभ्यो उपरिसद्भ्योदुखद्भ्य: स्वाहा। अथवा – ॐ उपाधम किल्विषमयकृत्या मनयोग्य: अपामार्गवमस्मदपयु: स्वप्न् सुव।

रेवती मंत्र – ॐ पूषन्तव्रतेजयननरिष्येमकदाचन स्तोतारस्तइहस्मसि।

॥ पंचक नक्षत्रों के वेदोक्त मन्त्र॥

धनिष्ठा मंत्र –ॐ वसो: पवित्रमसिशतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्त्रधारं देवस्त्वा सवितपुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुत्वा कामधुक्ष:।

शतभिषा –ॐ वरूणस्योत्तम्भन मसिव्वरूण स्यस्यस्कम्भ सर्जनीस्थो वरूणस्य कऋत् सदन्नयसिवरूणस्यऋ सदन्नमसिव्वरूणस्यऽऋ तसदनमासीद।

पूर्वभाद्रपद – ॐ उतनोहिर्ब्बुध्न्य: श्रृणोत्वज एक पात् पृथिवि समुद्र: व्विश्वेदेवोऽऋता बृधोहुवाना स्तुता मंत्रा: कविशस्ताक्अवंतु:।

उ. भाद्रपद–ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा माहिँसी: निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्यायप्रजननाय रायस्पोषायसुप्रजा: –त्वायसुवीर्याय।

रेवती मंत्र – ॐ पूषन्तवब्रतेब्व्रते व्वयन्नरिस्येन कदाचन स्तोता रस्तइहस्मसि।

ग्रह	दान पदार्थ	दान समय	औषधि स्नान
सूर्य	कनक, माणिक्य, तांवा, सोना, लाल गाय, गुड़, घी, कमल, लाल वस्त्र, लाल चंदन, मूंगा, केशर।	सूर्योदय	कनेर पुष्प, केशर, खसखस, इलायच
चन्द्र	चावल, मोती, चांदी, सोना, श्वेत बैल, मिश्री, दही, श्वेतपुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत चंदन, शंख, कपूर।	संध्या	पंचगव्य, गोदुग्ध, गोबर, गंगाजल, श्वेत चंदन, गोमूत्र।
मंगल	मसूर, मूंगा, तांवा, सोना, लाल बैल, गुड, घी, लाल कनेर, लाल वस्त्र, लाल चंदन, केशर, कस्तूरी।	सू.उ. से सवा २ घडी	जटामासी, मौलश्री, विल्व छाल, लाल पुष्प, सिंगरफ।
बुध	मूंग, पन्ना, कांस्य, सोना, शस्त्र, शक्कर, घी, हरा वस्त्र, अनेक फल, हाथीदांत, कपूर।	सू.उ. से पांच घडी	गोवर, अक्षत, मोती, शहद, जायफल,पीपरामूल, गंगाजल।
गुरु	पीला अनाज, पुखराज, सोना, अश्व, लवण, घी, पीले पुष्प, पीत वस्त्र, पीला फल, धर्म ग्रंथ।	संध्या	चमेली पुष्प, श्वेत सरसों, गूलर, मुलहटी, गंगाजल।
शुक्र	चावल, हीरा, चांदी, सोना, श्वेत घोड़ा, मिश्री, श्वेत पुष्प, दूध, श्वेत वस्त्र, श्वेत चंदन, दही, सुगंधित द्रव्य।	सूर्योदय	पीपरामूल, जायफल, केशर, मूली बीज, मैनशिला, श्वेत चंदन, गंगाजल
शनि	उड़द, नीलम, लोहा, सोना, कालीगाय, कुलथी, तैल, कालेपुष्प, काला वस्त्र, काले जूते, भैंस, कस्तूरी।	रात्रि	काले तिल, सुरमा, लोबान, सौंफ, खसखस।
राहु	सप्त धान्य, गोमेद, सीसा, सोना, कालाघोड़ा, ताम्रपात्र, तैल, नीलपुष्प, नीलवस्त्र, नारियल, कंबल, खड्ग।	रात्रि	लोबान, तारपीन, कस्तूरी, गजदंत, गंगाजल।
केतु	सप्त धान्य, लहसुनिया, लोहा, सोना, बकरा, तेल, धूम्र वस्त्र, नारियल, कंबल, कस्तूरी।	रात्रि	लोवान, तारपीन, तिल के पत्ते, गजदंत, लाल चंदन, गंगाजल।

आहुति ग्रह मुख

एक वर्ष में सूर्य का सत्ताईस नक्षत्रों में संक्रमण एक निश्चित तारीख को होता है। अत: सूर्य किस तारीख से किस तारीख तक किस नक्षत्र में रहता है, यह नीचे लिखे चक्र से स्पष्ट है। नक्षत्र संक्रमण के दिन पंचांग में संक्रमण काल देखकर सूर्य नक्षत्र का निर्धारण करना चाहिये। बीच की तारीखों में चक्र में लिखा रवि नक्षत्र निसन्देह है। पंचांग में प्रतिदिन जो नक्षत्र लिखा रहता है वह चन्द्रमा का नक्षत्र होता है। हवन के समय सूर्य एवं चन्द्र नक्षत्र निर्धारण होने पर सूर्य नक्षत्र से हवन दिन के नक्षत्र तक गिनने पर तीन-तीन नक्षत्रों में क्रमश: सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चन्द्र, मंगल, गुरु, राहु, केतु के मुख में आहुति होती है। शुभ ग्रह बुध, शुक्र, चन्द्र, गुरु के मुख में आहुति शुभ होती है उस दिन हवन से शुभफल की प्राप्ती होती है। परन्तु क्रूर ग्रह शनि, सूर्य, मंगल, राहु या केतु के मुख में आहुति अशुभ होती है। नीचे लिखे चक्र की आडी पंक्ति में हवन के दिन का नक्षत्र एवं खडी पंक्ति में अंग्रेजी तारीख के अनुसार विद्यमान सूर्य नक्षत्र लिखे हैं। विवाह गुण मिलान की तरह ही इस सारणी से आहुति ग्रह मुख जानने में गणना करने की आवश्यकता नहीं होगी।

हवन दिनांक	रवि नक्षत्र ↓	चन्द्र नक्षत्र ➡												आहुति हेतु ग्रह मुख चक्र														
		अशि	भर	कृति	रोहि	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश	मघा	पू.फा	उ.फा	हस्त	चित्रा	स्वा	विशा	अनु.	ज्ये	मूल	पू.षा	उ.षा	श्रव	धनि	शत.	पू.भा	उ.भा	रेव
११ जनवरी से २४ जन.	अश्विनी	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के
२४ जन. से ६ फरवरी.	भरणी	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के
६ फरवरी से १९ फर.	कृतिका	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के
१९ फरवरी से ४ मार्च	रोहिणी	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा
४ मार्च से १७ मार्च	मृगशिर	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा
१७ मार्च से ३१ मार्च	आर्द्रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा
३१ मार्च से १४ अप्रैल	पुनवसु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु
१४ अप्रैल से २७ अप्रैल	पुष्य	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु
२७ अप्रैल से ११ मई	आश्लेषा	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु
११ मई से २५ मई	मघा	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं
२५ मई से ८ जून	पू.फा.	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं
८ जून से २२ जून	उ.फा.	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं
२२ जून से ६ जुलाई	हस्त	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं
६ जुलाई से २० जुलाई	चित्रा	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं
२० जुलाई से ३ अगस्त	स्वाति	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं
३ अगस्त से १७ अगस्त	विशाखा	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श
१७ अगस्त से ३१ अग.	अनुराधा	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श
३१ अगस्त से १३ सित.	ज्येष्ठा	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श
१३ सितम्बर से २७ सि.	मूल	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु
२७ सितम्बर से ११ अक्टू	पूर्वाषाढ़	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु
११ अक्टूबर से २४ अक्टू	उाराषाढ़	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु	शु
२४ अक्टू. से ६ नवम्बर	श्रवण	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु	बु
६ नवम्बर से २० नवम्बर	धनिष्ठा	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु	बु
२० नवम्बर से ३ दिसम्बर	शत.	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू	बु
३ दिसम्बर से १६ दिस.	पू.भा.	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू	सू
१६ दिसम्बर से २९ दिस.	उ.भा.	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू	सू
२९ दिसम्बर से ११ जन.14 ¥AynU ãò 27¥AynU	रेवती	सू	सू	बु	बु	बु	शु	शु	शु	श	श	श	चं	चं	चं	मं	मं	मं	गु	गु	गु	रा	रा	रा	के	के	के	सू

अग्निहोत्र मुहूर्त

सूर्य उत्तरायन हों, शुक्र, गुरु, मंगल और चन्द्रमा शत्रु ग्रही, नीच, अस्त या अन्य ग्रह से पराजित न हो। तिथि :- रिक्ता छोडक़र समस्त तिथियां शुभ हैं। नक्षत्र :- कृतिका, रोहिणी मृगशिरा, पुष्य, उ.फाल्गुनी, विशाखा, ज्येष्ठा, उ.भा., उ.षा. शुभ हैं। लग्न :- कर्क, मकर, कुंभ, मीन, इन राशियों के लग्न या नवांश में या जिस राशि में चन्द्रमा हो उस लग्न में अग्न्याधान नहीं करना चाहिये। अन्य लग्न जिसमें सूर्य, चंद्र, मंगल,गुरु ये केन्द्र त्रिकोण में हों, या धनु का गुरु या मेष का मंगल लग्न में हो, या मंगल सातवें या दशम में हो , सूर्य या चंद्रमा ३, ६, ११ हो तो याज्ञिक योग होने से अग्न्याधान शुभ होता है।

अग्निवास चक्र

जिस दिन होम करना हो उस दिन यदि शुक्ल पक्ष हो तो तिथि को यथावत् लें और यदि कृष्णपक्ष हो तो तिथि में १५ जोडक़र एक जगह लिख लें। रविवार से लेकर उस दिन के वार तक गिनें। वार संख्या में तिथि संख्या जोडकर योगफल में १ और जोड लें। अब इस योगफल में ४ का भाग देवें। यदि भागफल शून्य या तीन बचे तो अग्निवास पृथ्वी पर होने से शुभ होता है। यदि भागफल एक वचे तो अग्निवास आकाश में व दो बचने पर पाताल में होता है। आकाश एवं पाताल में अग्निवास होने पर हवन नहीं करना चाहिये।

प्रस्तुत अग्निवास चक्र में हवन के दिन जो वार हो उसके नीचे, पक्ष की तिथि के सामने मिलान करने पर बिना गणित किये अग्निवास ज्ञात हो जाता है। जब अग्निवास भूमि पर हो तभी हवन करना चाहिये। दैनिक होम एवं नवरात्रि में देवी हवन में अग्निवास का विचार करने की आवश्यकता नहीं होती है।

तिथि		वार						
शुक्ल	कृष्ण	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	2	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
2	3	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
3,	4	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
4	1, 5	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
5	6	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
6	7	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
7	8	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
8	9	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
9	10	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
10	11	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
11	12	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
12	13	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
13	14	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
14	30	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
15	X	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी

शिववास

तिथिं च द्विगुणी कृत्य पंचभिश्च समन्वितम्। सप्तभितु हरीभ्दिगं शेषं शिववास उच्चयते॥ एके कैलाश वासं च द्वितीये गौरि सन्निधौ। तृतीये वृषभारूढं चतुर्थे च सभा स्थित:॥ पंचमे भोजने चैव क्रीड़ायां तु षष्ठमे। शुन्ये श्मशाने चैव शिव वासं च योजयेत्॥ भावार्थ- शुक्ल प्रतिपदा से तिथि संख्या गिनकर दो का गुणा कर उसमें पांच जोडक़र सात का भाग देने पर यदि शून्य शेष हो तो श्मशान, १ शेष बचे तो कैलाश, २ शेष तो गौरी के समीप, ३ शेष तो वृषारूढ़, ४ शेष में सभा में, ५ शेष में भोजन और ६ शेष हो तो शिव वास क्रीड़ा रत होता है।

शुक्ल	कृष्ण	शिव वास	फल
1	X	श्मशान	मृत्युतुल्य(अशुभ)
2	1,30	गौरी के समीप	सुख-संपदा प्रद
3	2	सभा में	संताप कारक
4	3	क्रीड़ा रत	कष्ट कारक
5	4	कैलाश पर	सुख-लाभ
6	5	वृषारूढ़	अभीष्ट सिद्धि
7	6	भोजनावस्था	पीड़ा कारक
8	7	श्मशान	मृत्युतुल्य(अशुभ)
9	8	गौरी के समीप	सुख-संपदा प्रद
10	9	सभा में	संतापकारक
11	10	क्रीड़ा रत	कष्टकारक
12	11	कैलाश पर	सुख-लाभ
13	12	वृषारूढ़	अभीष्ट सिद्धि
14	13	भोजनावस्था	पीड़ा कारक
15	14	श्मशान	मृत्युतुल्य(अशुभ)

कालहोरा मुहूर्त्त चक्र

जिस दिन होरा देखना हो उस दिन सूर्योदय से एक घंटे तक उस वार की पहली होरा होती है। तत्पश्चात दूसरी तीसरी इत्यादि होरा किस ग्रह की है यह इस सारणी से देखें। जैसे बुधवार के दिन पहली होरा बुध की, दूसरी चन्द्र व तीसरी शनि की, इस क्रम से एक-एक घंटे की होरा होती है।

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
रवि	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.
सोम	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मंग	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.
बुध	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
गुरु	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.
शुक्र	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
शनि	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

कालहोरा में प्रशस्त कार्य – यस्य ग्रहस्य वारेषु कर्मकिंचितप्रकीर्तितम्,तस्य ग्रहस्य होरायां सर्व कर्म विधीयते। ज्योतिष शास्त्रों में जिस ग्रह के वार में जो कार्य करने हेतु आदेशित किया गया है, वह कर्म उस ग्रह की होरा में किसी भी वार को किया जा सकता है। अत: सूर्य की होरा में यात्रा, मंत्र, अस्त्र, नौकरी, वाद-विवाद, औषधि सेवन, शस्त्र खरीद विक्रय, पदग्रहण, पशुक्रय, स्वर्ण सम्बन्धी कार्य शुभ है। चन्द्र की होरा में वागवानी एवं कृषि कार्य, नवीन वस्त्राभूषण, औषधि क्रय विक्रय, यात्रा, जलकार्य, मोती, चांदी कार्य एवं पशुपालन शुभ हैं। मंगल की होरा में अग्नि संवंधित कार्य, युद्ध, वाद विवाद, ऋण देना, सोना, जासूसी कार्यारम्भ शुभ हैं। बुध की होरा में दीक्षा, विद्यारम्भ, सेवा, अकाउंटस्, कला, व्यापार प्रारम्भ, निर्माण कार्य, ग्रह प्रवेश शुभ हैं। गुरु की होरा में शिक्षारम्भ,यज्ञ, ग्रह शान्ति, पदग्रहण, औषधिपान, वस्त्राभूषण धारण, शपथग्रहण, विज्ञान की शिक्षा, मांगलिक कार्य शुभ हैं। शुक्र की होरा में मित्रता, कला कार्य, गायन, नूतन वस्त्राभूषण, भूमि कृय-विकृय, खेती कार्य शुभ हैं। शनि की होरा में ग्रह प्रवेश, वाहनक्रय, दीक्षा, मशीनरी कार्यारम्भ, स्थिर कार्य,सर्विस नियुक्ति शुभ हैं।

दिन का दोघड़िया

दिन समय	मुहूर्त्तपति	अधीन नक्षत्र	दिन के दोघड़िया मुहूर्त्तों में प्रसस्त कार्य
६.०० से ६.४८	शिव	आर्द्रा	शनिवार को त्यागकर। युद्ध, बन्धन, छेदन, मारण, बिष, सन्धि, अग्निकार्य, विद्यादि,क्रूर एवं उच्चाटन कार्य।
६.४८ से ७.३६	सर्प	आश्लेष	शनिवार को त्यागकर। अन्य सभी वारों को- शत्रुनाश, व्यापार, साहस, बिष, सर्प, चोरी एवं कपट कार्य।
७.३६ से ८.२४	मित्र	अनुराधा	प्रतिदिन- विवाह, उपनयन, यात्रा, वाहन, वस्त्र, चर, स्थिर समस्त शुभ कार्य।
८.२४ से ९.१२	पितृ	मघा	मंगल शुक्र को त्यागकर। पैत्रिक कार्य, वृक्षारोपण, वीज वोवनी, तालाव, कुआ, नलकूप, विवाह, युद्ध एवं साहसिक कार्य
९.१२ से १०.००	वसु	धनिष्ठा	प्रतिदिन- मुण्डन, उपनयन, युद्ध, वाहन, गृहनिर्माण, वागवानी एवं आभूषण कार्य।
१०.०० से १०.४८	जल	पूर्वाषाढ	गुरुवार को त्यागकर। कुआ, नलकूप, खेती, विग्रह, बन्धनमुक्ति, कठिनकार्य एवं लकड़ी काटनें का कार्य।
१०.४८ से ११.३६	विश्वदेव	उत्तराषाढ,	प्रतिदिन- देवस्थापना, गृहनिर्माण, पौष्टिक कार्य, शिल्पकर्म, मांगलिककार्य, उपनयन, कलाकार्य, शान्तिकर्म।
११.३६ से १२.२४	अभिजित्	अभिजित्	बुधवार को छोडकर अन्य वारों में समस्त शुभ कार्य। दक्षिण दिशा की यात्रा सर्वत्र निषेध है।
१२.२४ से १.१२	ब्रम्हा	रोहि.अभि.	सोम शुक्र को त्यागकर। पौष्टिक कार्य, विवाह, धन संचय, मन्दिर निर्माण, देव कृत्य, आभूषण एवं मांगलिक कार्य
१.१२ से २.००	इन्द्र	ज्येष्ठा	प्रतिदिन- शत्रु नाशन, भेद (जासूसी), प्रहार, लोहा कार्य, शिल्पकला, अर्क सुगन्धित तेल वनाना।
२.०० से २.४८	इन्द्राग्नि	विशाखा	प्रतिदिन- पदार्थ संग्रह, आभूषण, कारीगरी, चित्रकारी, कला, प्रहार वाहन एवं औषधि सेवन।
२.४८ से ३.३६	राक्षस	मूल	सोम गुरुको त्यागकर। वागवानी, युद्ध, सन्धि, विग्रह, कुआ, नलकूप, तालाव एवं कृषि सम्बन्धी समस्त कार्य।
३.३६ से ४.२४	वरूण	शतभिषा	प्रतिदिन- जल-थल वाहन, रत्न धारण, वास्तुपूजन, युद्ध एवं शस्त्र सम्बन्धी कार्य।
४.२४ से ५.१२	अर्यमा	उ.फा.	रविवार को त्यागकर अन्य सभी वारों को विवाह, यज्ञोपवीत, आभूषण, गृहारम्भ एवं गृहप्रवेश कार्य।
५.१२ से ६.००	भग	पू.फा.	प्रतिदिन-बन्धन, कठिनकार्य, क्रूरकार्य, शिल्पकला, कपटता, युद्ध एवं चित्रकारी।

रात का दोघड़िया

रात्रि समय	मुहूर्त्तपति	अधीन नक्षत्र	रात के दोघड़िया मुहूर्त्तों में प्रसस्त कार्य
६.०० से ६.४८	शिव	आर्द्रा,	शनिवार को त्यागकर- युद्ध, बन्धन, छेदन, मारण, बिष, सन्धि, अग्निकार्य, विद्यादि,क्रूर एवं उच्चाटन कार्य।
६.४८ से ७.३६	अजपाद्	पू.भा.	प्रतिदिन- शिल्पकला, साहसिक कार्य, काटना खेती, पशु विक्रय, जलयन्त्र कार्य।
७.३६ से ८.२४	अहिर्बुध्न्य	उ.भा.	प्रतिदिन- विवाह, यज्ञोपवीत, देव प्रतिष्ठा, गृह, वास्तु, अभिषेक।
८.२४ से ९.१२	पूषा	रेवती	प्रतिदिन- गृहप्रवेश, देव मन्दिर, आभूषण, विवाह, यज्ञोपवीत, जल व स्थल सम्बन्धी समस्त कार्य।
९.१२ से १०.००	अश्विनीकुमार	अश्विनी	प्रतिदिन- यात्रा, औषधि सेवन, आभूषण, विद्यारम्भ, चित्रकारी, कला, विवाह से सम्बन्धित कार्य, मांगलिककार्य
१०.०० से १०.४८	यम	भरणी	प्रतिदिन- साहसिक एवं क्रूर कार्य, शत्रुनाश, बिष, बन्धन, कुआ नलकूप, कृषि कार्य एवं अग्नि सम्बन्धी कार्य।
१०.४८ से ११.३६	अग्नि	कृतिका	मंगलवार को त्यागकर- सभा, साहस, अग्नि ग्रहण, शत्रुनाश, विवाद, लोहा एवं मणि सम्बन्धी कार्य।
११.३६ से १२.२४	ब्रम्हा	रोहि.अभि	सोम शुक्र को त्यागकर। पौष्टिक कार्य, विवाह, धनसंचय, मन्दिरनिर्माण, देवकृत्य, आभूषण एवं मांगलिक कार्य।
१२.२४ से १.१२	चन्द्रमा	मृगशिरा	प्रतिदिन- विवाह, यज्ञोपवीत, यात्रा, देव प्रतिष्ठा, वास्तु कार्य एवं कृषि कार्य।
१.१२ से २.००	अदिति	पुनर्वसु	प्रतिदिन- शान्ति अनुष्ठान, पुष्टता, यात्रा, आभूषण, गृह, व्रतादि, वाहन, कृषि, विद्यारम्भ।
२.०० से २.४८	गुरु	पुष्य	प्रतिदिन- चर, स्थिर, शान्ति पुष्टता, विवाह को छोडकर अन्य उत्सव कार्य।
२.४८ से ३.३६	विष्णु	श्रवण	प्रतिदिन- देव प्रतिष्ठा, गृह वास्तु, पुष्टता, कारीगरी, मांगलिक कार्य, यज्ञोपवीत, चित्र एवं शान्ति अनुष्ठान।
३.३६ से ४.२४	सूर्य	हस्त	प्रतिदिन- यात्रा, विद्याारम्भ, विवाहादि, अलंकार, वस्त्र, औषधि, गृहारम्भ, देव प्रतिष्ठा।
४.२४ से ५.१२	विश्वकर्मा	चित्रा	प्रतिदिन-शान्ति अनुष्ठान, गृह वास्तु, अलंकार, वस्त्र, यज्ञोपवीत, स्थिर , कृषि कार्य।
५.१२ से ६.००	वायु	स्वाती	प्रतिदिन-देवालय, मांगलिक कार्य, वस्त्र अलंकार, वीज वोवनी, युद्ध एवं शस्त्र सम्बन्धी कार्य।

दोघड़िया मुहूर्त्त – दिनमान या रात्रिमान का पन्द्रहवां भाग एक मुहूर्त होता है। दिन-रात में कुल ३० मुहूर्त होते हैं। यदि दिन और रात समान हो तो दो घटी [मुहूर्त्ते घटिका द्वयम्, या आधुनिक ४८ मिनट] का एक मुहूर्त्त होता है। अपने स्थान के सूर्योदय, दिनमान एवं रात्रिमान के अनुसार इन मुहूर्त्तो का समय ज्ञात कर उपयोग करना चाहिए। इन मुहूर्त्तो के जो स्वामी होते हैं, उनके अधीन नक्षत्रों में जो-जो कार्य मुहूर्त्त शास्त्रों में कहे गये हैं, वे समस्त कार्य नक्षत्र स्वामी के मुहूर्त्त समय में किये जा सकते हैं। इस सम्बन्ध में विभिन्न मुहूर्त्त शास्त्रों के वचन इस प्रकार हैं। (१) कर्मेषु भोक्तं स्मृतम् (मुहूर्त्तमार्त्तण्ड)। (२) कर्मेषु भोक्तं स्मृतम् एषु मुहूर्त्तेषु भोक्तं नक्षत्रोक्तं कर्म स्मृतम् मुनीन्द्रैरित्यध्याहार: (मुहूर्त्तमार्त्तण्ड रचनाकार द्वारा स्वयं की गई मार्त्तण्डवल्लभा टीका)। (३) वारे प्रोक्तं कालहोरासुतस्य धिष्णे प्रोक्तं स्वामितिथ्यंशकेऽस्य (मुहूर्त्तचिन्तामणि)। (४) दिनस्य य: पंचदशो विभागो रात्रेस्तथा तद्धि मुहूर्त्तनाम्। नक्षत्रनाथप्रमिते मुहूर्त्ते मौहूर्त्तिकास्तत्समकर्ममाहु: (श्रीपति कृत रत्नसार)। (५) नाक्षत्रनामतुल्येऽस्मिन् कार्यं कुर्यात् स्वभोदितम्। दिनमध्येऽभिजित् संज्ञे दोषसंघेषु सत्स्वपि (मुहूर्त्त गणपति)। इस प्रकार अधिकांश मुहूर्त्त शास्त्रों ने किसी नक्षत्र में प्रशस्त समस्त कार्यों को; उस नक्षत्र के स्वामी के मुहूर्त्त समय में प्रसन्नता पूर्वक सम्पन्न करने की अज्ञा दी है।

वार या नक्षत्र संज्ञा के अनुसार प्रसस्त कार्य

संज्ञा	वार	नक्षत्र	प्रसस्त कार्य
ध्रुव	रविवार	तीनों उत्तरा, रोहिणी	गृहारम्भ, बीज बोना, ग्रहशान्ति, बागवानी, अनुबन्ध, मित्रता, बस्त्र-आभूषण बनाना या पहनना, खेल।
चर	सोमवार	स्वाती, पुनर्वशु, श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा,	सवारी करना, यात्रा, फूल वागान लगाना, दुकान प्रारम्भ, रति, अध्ययन, आभूषण, कला सीखना
उग्र	मंगलवार	तीनों पूर्वा, भरणी, मघा	घात, अग्निकार्य, जहर आदि का प्रयोग, शस्त्र निर्माण
मिश्र	बुधवार	विशाखा एवं कृतिका	अग्निकार्य, अन्य नक्षत्रों में कहे गये कार्य, वृषोत्सर्ग
क्षिप्र	गुरुवार	अश्विनी, पुष्य, हस्त	दुकान प्रारम्भ, रति, अध्ययन, आभूषण, कला।
मृदु	शुक्रवार	मृग., अनु., चित्रा, रेवती	संगीत सीखना गाना, बस्त्र पहनना,अनुबन्ध, मित्रता।
तीक्ष्ण	शनिवार	मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले.	अभिचार, अस्त्र बनाना, घात, उग्र कार्य, पशु शिक्षा

राहुकाल

वार	समय
रवि	सायं ४.३० से ६
चन्द्र	प्रात: ७.३० से ९
मंगल	दोपहर ३ से ४.३०
बुध	दोपहर १२ से १.३०
गुरु	दोपहर १.३० से ३
शुक्र	दिन १०.३० से १२
शनि	प्रात: ९ से १०.३०

कुलिकादि वारदोष समय बोधक चक्र

कुलिक, कालवेला, कण्टक एवं यमघण्ट ये चार वारदोष होते हैं। जैसे रविवार में छटवां मुहूर्त्त मध्यम मान से १०.०० से १०.४८ तक कण्टक दोष युक्त होता है। जो कि नीचे खि चक्र में रविवार के नीचे एवं षष्ट मुहूर्त्त के सामने स्पष्ट है। मुहूर्त्त समय दिनमान ३० घटी एवं सूर्योदय ६.०० वजे मानकर मध्यम काल में दिया गया है। स्पष्ट समय जानने के लिए दिनमान में पन्द्रह का भाग देकर एक मुहूर्त्त काल निकालकर क्रमश: जोडने पर प्रथम द्वितीय मुहूर्त्त समय निकालकर कुलिकादि का दोष समय जानना चाहिए।

मुहूर्त्त संख्या	मुहूर्त्त समय दिन या रात्रि में	रविवार	सोमवार	मंगल	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
द्वितीय	६.४८ से ७.३६			कण्टक	कालवेला	यमघण्ट		कुलिक
चतुर्थ	८.२४ से ९.१२		कण्टक	कालवेला	यमघण्ट		कुलिक	
षष्ठ	१०.०० से १०.४८	कण्टक	कालवेला	यमघण्ट		कुलिक		
अष्टम	११.३६ से १२.२४	कालवेला	यमघण्ट		कुलिक			कण्टक
दशम	१.१२ से २.००	यमघण्ट		कुलिक			कण्टक	कालवेला
द्वादश	२.४८ से ३.३६		कुलिक			कण्टक	कालवेला	यमघण्ट
चतुर्दश	४.२४ से ५.१२	कुलिक			कण्टक	कालवेला	यमघण्ट	

वास्तुदेव परिचय

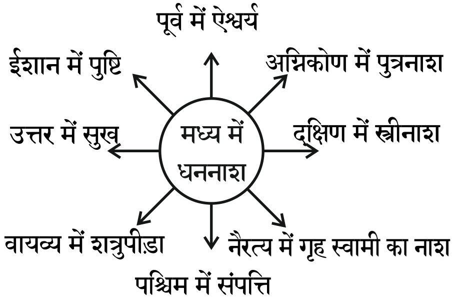
भवन एवं उसमें रहने वाले मनुष्यों की रक्षा करने वाले देवता वास्तु पुरु ष हैं। वास्तुपुरु ष वेदोक्त देव हैं। ऋ ग्वेद के सातवें मंडल के ५४ वें सूक्त में वास्तोष्पतिदेव कहा गया है एवं उनकी स्तुति की गई है। इनका मस्तक ईशान्य में एवं पैर नैऋ त्य में रहते हैं। वे भवन को संवारकर औंधे मुंह सोए हुए हैं। शतपथ ब्राम्हण में वास्तु देवता को आत्मवर्धनशील कहा गया है। मंत्राणयी संहिता में वास्तु के अधिष्ठाता देवता रूद्र देव माने गए हैं। गृह निर्माण के प्रारम्भ में, द्वार वनाने के देवकी पूजन में, गृह प्रवेश के समय, किसी कारण से घर के दूषित होने पर, हर प्रकार के यज्ञ के प्रारम्भ होने पर वास्तु पुरु ष का विधि विधान से पूजन एवं पायस बलि करना चाहिए। गृह निर्माण स्थान में ८१ पद, मंदिर या प्रसाद मंडपों में ६४ या १०० पद एवं शिव लिंग या दुर्गा की प्रतिष्ठा में १००० पद वाले वास्तु पीठ का पूजन करना चाहिए।

भूखण्ड का चयन

(१) विश्वकर्म प्रकाश के अनुसार वर्गाकार (जिसकी लम्बाई-चौडाई बरावर हो) तथा वृत्ताकार भूखंड अत्यंत शुभ होतेहैं।

(२) वराह मिहिर के अनुसार उत्तर की ओर ढ़लान वाली भूमि आरोग्य कारक,, ईशान ओर ढ़लान वाली भूमि सदा शुभ कारक, पूर्व की ओर ढ़लान वाला भूखंड सन्तान शुभ कारक है। जिस भूमि पर नेवले का निवास हो, गाय घोड़ा आदि पशुओं का वास रहा हो वह जगह शुभ है। जिस जमीन पर सर्प की बामीं या कटीले वृक्ष हों, हिंसक जानवरों का वास रहा हो स्थान वह अशुभ होता है। जिस भूखंड पर सार्वजनिक रास्ता जाकर समाप्त होता है वह अशुभ होता है।

गृह में कूप-नलकूप की दिशा का फल



प्रचलित नाम राशि से ग्राम वास

व्यक्ति को अपनी राशि के सम्मुख लिखी राशियों वाले ग्राम में निवास शुभ होता है। परन्तु शुभ राशि वाले ग्राम या शहर में भी सम्मुख लिखी दिशा में निवास नहीं करना चाहिए। व्यक्ति के प्रचलित नाम की राशि से विचार करें।

व्यक्ति की राशि	ग्राम-शहर की शुभ राशि	अशुभ दिशा
मेष	वृष, सिंह, धनु, मकर, कुंभ	उत्तर
वृष	मिथु, कन्या, मक, कुंभ, मीन	ग्राम मध्य
मिथुन	कर्क, तुला, कुंभ, मीन, मेष	ग्राम मध्य
कर्क	सिंह,वृश्चिक, मीन, मेष, वृष,	नैऋत्य
सिंह	कन्या, धनु, मेष, वृष, मिथुन	ग्राम मध्य
कन्या	तुला, मकर, वृष, मिथुन, कर्क	दक्षिण
तुला	वृश्चिक,कुम्भ, मिथुन, कर्क,सिंह	वायव्य
वृश्चिक	धनु, मीन, कर्क, सिंह, कन्या	पूर्व
धनु	मकर, मेष, सिंह, कन्या, तुला	पश्चिम
मकर	कुम्भ, वृष, कन्या, तुला, वृश्चि.	ग्राम मध्य
कुम्भ	मीन, मिथुन, तुला, वृश्चि., धनु	ईशान
मीन	मेष, कर्क, वृश्चि., धनु, मकर	अग्नि

गृह पिंड से आय-व्यय आदि

भूखंड पर निर्मित भाग (छत एरिया) की लम्बाई एवं चौड़ाई का गुणा करने पर गृह पिण्ड प्राप्त होता है। गृह पिण्ड में ८ का भाग देने पर जो शेष बचे उसके अनुसार निम्न चक्र से गृह की आय एवं फ ल जानना चाहिए। गृह पिण्ड में उपरोक्त चक्र में दिए गए गुणक से गुणा कर, भाजक से भाग देने पर गृह की आय आदि प्राप्त होती है।

गृह पिंड		
शेष	आय	फल
1	ध्वज	शुभ
2	धूम	अशुभ
3	सिंह	शुभ
4	श्वान	अशुभ
5	वृष	शुभ
6	गदर्भ	अशुभ
7	गज	शुभ
8	ध्वांक्ष	अशुभ

गृह आयादि		
गुणक	भाजक	आय आदि
9	8	आय
9	7	वार
6	9	अंश
8	12	धन
3	8	ऋण
8	27	नक्षत्र
8	15	तिथि
4	27	योग
8	120	आयु

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त सूत्र

समय शुद्धि- उत्तरायन सूर्य में, गुरु शुक्र व चन्द्रमा के उदित रहने पर।

तिथियां- शुक्ल पक्ष की द्वितीया से लेकर कृष्ण पक्ष की पंचमी तक रिक्ता तिथियां छोड़कर।

नक्षत्र- हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा नक्षत्रों में, वार - मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में,।

लग्न -मध्यान्ह समय तक, स्थिर या द्विस्वभाव बलवान लग्न में, अष्टम राशि, लग्न छोड़कर देव प्रतिष्ठा शुभ है। अन्य - नवरात्र में दुर्गा की, चतुर्थी में गणेश की, भाद्रपद में श्री कृष्ण की, चतुर्दशी में शिवजी की प्रतिष्ठा सुखद है। इसी प्रकार उग्रप्रकृति के देवता जैसे भैरव, मातृका, वराह, नृसिंह, वामन, महिषासुर मर्दिनी आदि की प्रतिष्ठा दक्षिणायन सूर्य में भी शुभ है।

ग्राम वास में काकिणी विचार

निम्न लिखित सारणी से अपने नाम तथा ग्राम के नाम के प्रथम अक्षर से वर्ग संख्या के अनुसार मिलान कर ग्राम वास में लाभ-हानि जानें।

प्रथम अक्षर	वर्ग संख्या	प्रथम अक्षर	वर्ग संख्या
अ इ उ ए	1	त थ द ध न	5
क ख ग घ ङ	2	प फ व भ म	6
च छ ज झ	3	य र ल व	7
ट ठ ड ढ ण	4	श ष स ह	8

काकिणी	ग्राम या नगर की वर्ग संख्या							
जातक के नाम की वर्ग संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८
१	सम	लाभ	लाभ	हानि	हानि	लाभ	लाभ	हानि
२	हानि	सम	हानि	लाभ	लाभ	लाभ	हानि	हानि
३	हानि	लाभ	सम	लाभ	लाभ	लाभ	हानि	हानि
४	लाभ	हानि	हानि	सम	लाभ	हानि	हानि	लाभ
५	लाभ	हानि	हानि	हानि	सम	लाभ	लाभ	लाभ
६	हानि	हानि	हानि	लाभ	हानि	सम	लाभ	लाभ
७	हानि	लाभ	लाभ	लाभ	हानि	हानि	सम	लाभ
८	लाभ	लाभ	लाभ	हानि	हानि	हानि	हानि	सम

नीव खुदाई प्रारंभ करने की दिशा

खात या नींव खुदाई प्रारंभ की दिशा सूर्य की राशि से निर्धारित होती है। गृह और देवालय में खात की दिशा सूर्य की राशि के अनुसार नीचे लिखी सारणी से निर्धारित करें।

खात की दिशा	ईशान कोण	वायव्य कोण	नैऋत्य कोण	अग्नि कोण
गृहारंभ में सूर्य राशि	वृश्चिक,धनु,मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कर्क	सिंह, कन्या,तुला
देवालय में सूर्य राशि	मिथुन,कर्क सिंह	कन्या, तुला,वृश्चि.	धनु, मक. कुम्भ	मीन,मेष, वृष

शिलान्यास ;या नींव भरने की दिशा - शिलान्यास हमेशा अग्निकोण या ईशान कोण में किया जाता है। नाग नागिन के जोड़े का मुंह हमेशा पूर्व की ओर रखना चाहिये।

गृहारम्भ मुहूर्त

शुभ चंद्रमास- वैशाख, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, एवं फाल्गुन। शुभसौरमास - मेष, वृष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुंभ राशि के सूर्य होने पर गृहारंभ शुभ है। शुभ तिथियां - २,३,५,७,१०,११,१२,१३, १५। शुभ वार - सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनि। शुभ नक्षत्र - मूल, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाति, तथा रेवती शुभ हैं। मतान्तर से अन्य नक्षत्र भी। भूशयन- जिस नक्षत्र में सूर्य हो उससे ५, ७, ९, १२, १९ और २६ वाँ इन नक्षत्रों पृथ्वी शयन करती है, इसलिये इन नक्षत्रों में गृहारम्भ न करें। वृषभचक्र शुद्धि- सूर्य अधिष्ठित नक्षत्र से गृहारंभ नक्षत्र ८ वां, ९वां, १० वां, ११ वां, १२वां, १३ वां, १४ वां, १५ वां्र १६वां, १७ वां या १८ वां होने पर वृषभ चक्र शुभ होता है।

गृह प्रवेश मुहूर्त

समय शुद्धि- नूतन गृह प्रवेश के समय गुरु -शुक्र उदित हों। परन्तु सपूर्व गृह प्रवेश में गुरु -शुक्र उदित रहना आवश्यक नहीं है।

मास- नव निर्मित गृह में वैशाख, ज्येष्ठ, माघ एवं फाल्गुन मासों में गृह प्रवेश शुभ होता है। परन्तु पुनर्निर्मित गृह में श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष मासों में भी गृह प्रवेश शुभ है। सूर्य - कर्क, कन्या और कुंभ त्यागकर।

तिथि- रिक्ता, अमावस्या छोड़कर।

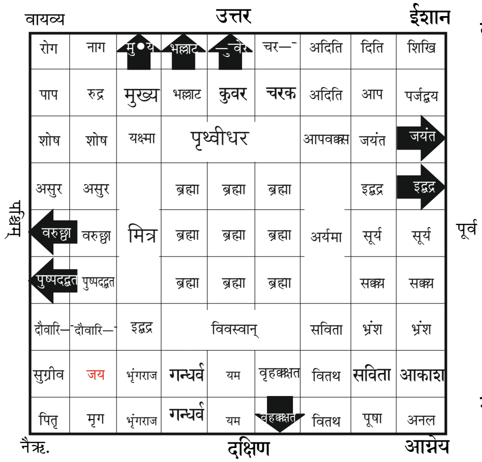
वार- सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

नक्षत्र- नूतन गृह में तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, चित्रा, रेवती एवं द्वार दिशा के नक्षत्रों में गृह प्रवेश शुभ है। पुनर्निर्मित गृह या सपूर्व गृह प्रवेश में उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा, एवं शतभिषा नक्षत्रों में भी किया जा सकता है।

कुंभक चक्र के अनुसार गृह प्रवेश के समय का नक्षत्र, सूर्य के नक्षत्र से ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, २२, २३, २४, २५, २६ या २७ वां होना चाहिये। चंन्द्र वल- गृह स्वामी की राशि से चौथा, आठवां निषेध। लग्न- स्थिर लग्न में उत्तम, द्विस्वभाव में मध्यम। लग्न में चन्द्रमा न हो। प्रवेश लग्न में सूर्य वायां एवं शुक्र पृष्ट हो। शुक्र की दिशा यात्रा मुहूर्त्त में वर्णित है।

अन्य- यात्रा मुहूर्त की तरह ग्रहप्रवेश की दिशा से राहु, योगिनी, दिशासूल एवं काल-पांस का विचार करना चाहिए। गृह प्रवेश काले रवि वाम दिशा - गृह प्रवेश लग्न के समय रवि ८, ९, १०, ११, १२ भाव में हों तो पूर्व दिशा, ५, ६, ७, ८, ९ भाव में हों तो दक्षिण दिशा, २, ३, ४, ५, ६ भाव में हों तो पश्चिम दिशा और लग्न से १, १२,१, २, ३ भाव में हों तो उत्तर दिशा के घर में प्रवेश शुभ होता है।

वर्गाकार एवं विना झुके हुए भूखंड पर मुख्य द्वार हेतु शुभ स्थान



वर्गाकार भूखण्ड के पद -

वर्गाकार अर्थात् समान लम्बाई-चौडाई एवं विना झुके हुये भूखंड की लम्बाई या चौड़ाई का ९वां भाग पद होता है। उदाहरण के लिए किसी भूखंड की पूर्व दिशा में माप २७ फिट है। २९ का ९वां हिस्सा ३ फीट का एक पद हुआ। प्रत्येक दिशा में तीर द्वारा प्रदर्शित पद पर मुख्य द्वार बनाना शुभ होता है। पूर्व दिशा में इन्द्र एवं जयंत पद में, दक्षिण में वृहत्क्षत् पद में, पश्चिम में वरु ण एवं पुष्पदंत पद में, उत्तर में मुख्य, भल्लाट एवं कुवेर पद में मुख्य द्वार शुभ होता है।

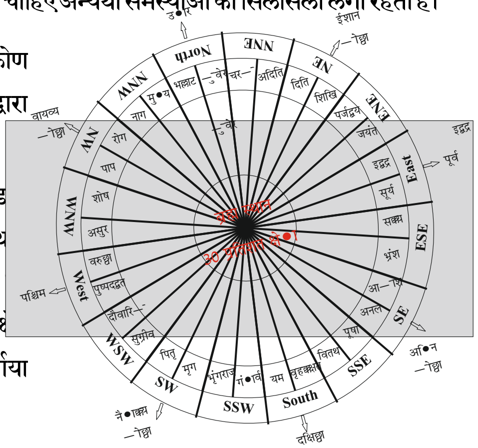
मुख्य द्वार का आकार - द्वार की उंचाई, उसकी चौड़ाई से दुगनी होना चाहिए।

मुख्य द्वार हेतु शुभ पद का फल - पूर्व दिशा में जयंत स्थान पर मुख्य द्वार बनाने से धनलाभ, इन्द्र पर राज्यप्रियता, दक्षिण दिशा में वृहत्क्षत पर द्वार बनाने से संतति वृद्धि, पश्चिम दिशा में पुष्पदंत पर द्वारा वनाने से धनवृद्धि, वरूण पर द्वार वनाने से योग प्राप्ती होती है। उत्तर दिशा में मुख्य पर द्वार से धनलाभ, भल्लाट पर विपुल लक्ष्मी एवं कुवेर स्थान पर मुख्य द्वारा वनाने से धर्म -शील में वृद्धि होती है।

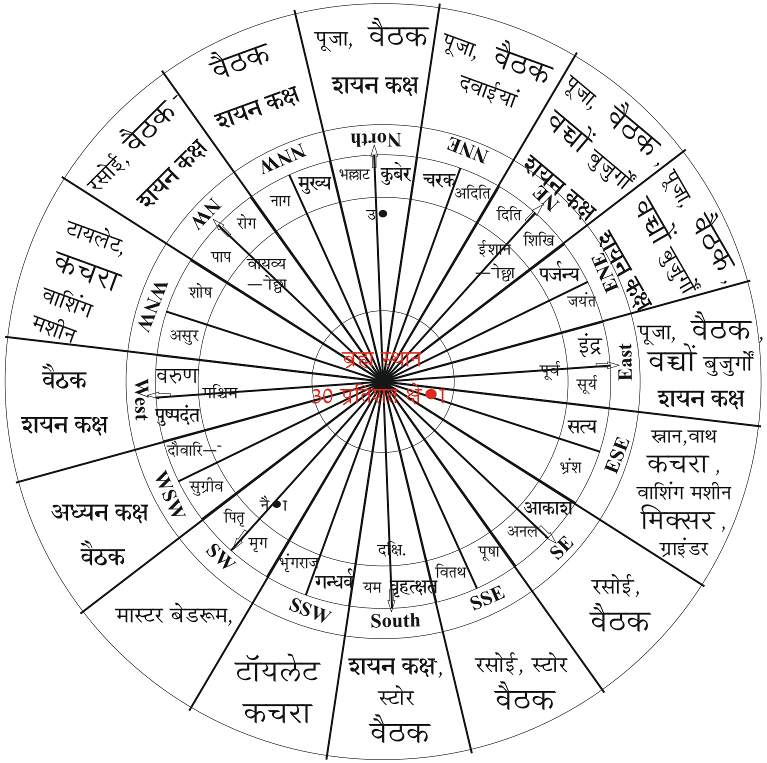
मुख्य द्वार में गुण-दोष - मुख्य द्वार के सामने वृक्ष, खंभा, हेंडपंप, टंकी, पिलर इत्यादि से वेध दोष होता है। दरवाजे में यथा संभव दो पल्ले होना चाहिए। दरवाजे लगाते-खोलते समय आवाज रहित होना चाहिए अन्यथा भय पैदा होता है। यदि दरवाजा अपने आप बंद होता हो तो वह अशुभ होता है। मुख्य द्वार के ठीक सीध में मकान में अंदर की तरफ अन्य दरवाजा नहीं होना चाहिए। शीशम, महुआ, शाक, अशोक, नीम, सागवान, खैर इत्यादि का दरवाजा शुभ होता है। पीपल, वरगद या किसी अधजली लकड़ी का दरवाजा अशुभ होता है। दरवाजों में दरार दरिद्रता का कारण होती है। प्रमुख दरवाजे पर दहलीज अवश्य होनी चाहिए, अन्यथा घर में बचत नहीं होती है। यथा संभव दरवाजे एवं चौखट लकड़ी के होना चाहिए। अज्ञात वास्तुदोष निवारण हेतु मुख्य द्वार पर श्री गणेश या स्वस्तिक चिन्ह वनाना चाहिए। मुख्य प्रवेश द्वार की चौखट के ऊ पर झरोखा होने से घर में आनन्द मंगल रहता है। दरवाजे अंदर की ओर खुलने वाले होना चाहिए अन्यथा समस्याओं का सिलसिला लगा रहता है।

असमान लम्बाई चौडाई, आयताकार असमान कोण एवं विदिशा झुके हुये भूखण्डों के लिये वृत्त वास्तु द्वारा मुख्य द्वार के पदों का ८१ पद वास्तु चक्र -

इस चित्र में चक्र में प्रदर्शित देवताओं के पद भूखण्ड वाहर या अन्दर दिखाई दे रहे हैं। वास्तव में बृम्ह स्थ से पद की ओर देखने पर वह कोणीय क्षेत्र भूखण्ड भुजा पर जहां दिख रहा है, वहां पर उस देवता का क्ष है। चित्र में कुवेर एवं इन्द्र पदों को भूखण्ड पर दर्शाया गया है।



१६ क्षेत्र (जोन) में निर्माण हेतु गृह विभाग



ईशान	पूर्व					अग्नि
उत्तर	देवस्थान	सर्व संग्रह	स्नानगृह	**मंथन**	रसोई	दक्षिछा
	औषधि	आंगन			**घृत संग्रह**	
	भंडार				शयनगृह	
	स्त्री प्रसंग				पयखाना	
	धान्य स्टोर	रोदनगृह	भोजन सं.	विद्या	**शस्त्रागार**	
वायव्य	पश्चिम्					नैऋक्ष्य

वास्तुदोष शांति के उपाय

(१) मुख्यद्वार पर मांगलिक ओम या स्वस्तिक चिन्ह का उपयोग करना चाहिए। धर में नमक से पौंछा लगायें। कपूर जलाऐं। (२) प्रतिदिन अग्निहोत्र, हवन करना चाहिए। (३) प्रतिदिन गाय, कौआ, कुत्ते को यथा शक्ति भोजन का भाग, ग्रास खिलाना चाहिये। (४) वर्ष में एक वार अमावस्या के दिन दही-चावल एवं नारियल पूरे घर से उतार कर बाहर फेंक देना चाहिए। यह बली का स्वरूप है। वास्तु पूजन एवं बलि से शांति होती है। (५) वर्ष में एक वार हवन-पूजन करवाना चाहिए। (६) घर को सदैव स्वच्छ रखना चाहिए। (७) घर के प्रत्येक सदस्य को परस्पर आदर करना चाहिए।

गृह वास्तु के सामान्य नियम

भूखंड के दक्षिण पश्चिम भाग में अधिकाधिक निर्माण करना चाहिए। पूर्वोत्तर यथा संभव खाली छोडऩा चाहिए।

उत्तर या ईशान्य में भूमिगत टेंक वनाना या कुआ- नलकूप खुदवाना चाहिए। ओवरहेड टैंक छत पर पश्चिम में या वायव्य में बनाना चाहिए। शयन कक्ष में भगवान के चित्र न लगाएं। वीम के नीचे न सोएं। शयनकक्ष में पलंग इस प्रकार विछाएं कि सोते समय सिर दक्षिण या पूर्व में रहे। काले एवं लाल रंग का प्रयोग मकान में नहीं करना चाहिए। जमीन एवं छत का ढ़लान पूर्व ईशान या उत्तर में करवाना चाहिए। प्रकृति में धनात्मक शुभ ऊर्जा का प्रवाह पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर है, इसलिए पूर्व एवं उत्तर दिशा में मकान की खिडक़ी इस प्रकार वनाऐं कि इन दिशाओं से अधिक से अधिक सकारात्मक ऊर्जा घर में प्रवेश कर सके। दक्षिण पश्चिम में कम से कम खिड़कियां रखना चाहिए। खिड़कि यां सम संख्या में होना चाहिए। मकान के सभी कोने समकोण होने चाहिए अन्यथा कोण वेध होता है। दक्षिण पश्चिम भरी होना चाहिए इसलिए इन दिशाओं की दीवारें मोटी होना चाहिए तथा भारी सामान इन्हीं दिशाओं में रखा जाना चाहिए। इन दिशाओं में भारी पेढ़ लगाऐं। घर में तुलसी का पौधा अवश्य होना चाहिए। नैऋ त्य में सैप्टिक टेंक या किसी भी प्रकार का गड्ढा नहीं होना चाहिए। टायलेट, स्नानग्रह भृंगराज या असुर के पद में वनाएं। टायलेट का पॉट इस प्रकार रहे कि शौच के लिए बैठते समय व्यक्ति का मुंह उत्तर या दक्षिण की तरफ रहे। दो मंजिल मकान में दरवाजे के ऊ पर दरवाजा होना चाहिए। ऊ परी मंजिल के छत की ऊ चाई, निचली मंजिल की ऊ चाई का बारहवां भाग कम होना चाहिए। रसोईघर मुख्यद्वार के ठीक सामने नहीं होना चाहिए।

कारखाने में वास्तु-पूर्व में मुख्यद्वार, खुली जगह। अग्निकोण में ट्रांसफार्मर, वायलर। दक्षिण में मशीनरी, मार्केटिंग मैनेजर, नैऋ त्य में भारी मशीनरी, पश्चिम में कच्चा माल एवं कर्मचारियों के लिए कैंटीन, वायव्य में पक्का माल, उत्तर में मुख्य दरवाजा, कैशियर के कागजात, कम्प्यूटर, मालिक के बैठने का कमरा, ईशान्य में जल स्टोर, कम्प्यूटर, मालिक के बैठने का कमरा होना चाहिए।

प्रमुख वास्तु दोष

(१) नैऋ त्य दिशा में गड्ढा - यदि नैऋ त्य दिशा में गड्ढा हो तो परिवार के मुखिया की असमय मृत्यु, नींद न आना, व्यवसाय में हानि एवं कई समस्याऐं आती हैं।

(२) ईशान्य, अग्नि या नैऋत्य कोण में टायलेट - ऐसी स्थिति में बुद्धि ठीक से काम नहीं करती व ज्यादातर गलत निर्णय लेने से परेशानियां आती रहतीं हैं। आर्थिक एवं रोग समस्या और गृहस्थी में नाना प्रकार कीं समस्याऐं आती हैं।

(३) उत्तर में मिट्टी का टीला होना।

यात्रा प्रकरण सूत्र

वार दिशाशूल
(पीछे एवं वायें शुभ)

रवि	पश्चिम
चंद्र	पूर्व,अग्निकोण
मंगल	उत्तर,वायव्य
बुध	उत्तर, ईशान
गुरु	दक्षिण
शुक्र	पश्चिम,नैऋत्य
शनि	पूर्व, ईशान

राहूवास
(पीछे एवं वायें शुभ)

सूर्य राशि	राहूवास
मेष,सिंह,धनु	पूर्व
वृष,कन्या,मक.	दक्षिण
मिथु.तुला,कुंभ	पश्चिम
कर्क,वृश्चि.मीन	उत्तर

चन्द्रवास
सम्मुख एवं दाएं शुभ

चंद्र राशि	चंद्रवास
मेष,सिंह,धनु	पूर्व
वृष,कन्या,मक.	दक्षिण
मिथु.तुला,कुंभ	पश्चिम
कर्क,वृश्चि.मीन	उत्तर

योगिनीवास दिशा
(पीछे दायें शुभ)

तिथि	दिशा
२,१०	उत्तर
८,३०	ईशान
१,९	पूर्व
३,११	अग्नि
५,१३	दक्षिण
४,१२	नैऋत्य
६,१४	पश्चिम
७, १५	वायव्य

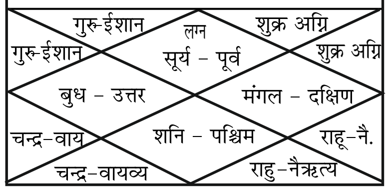
घात चक्रम्
केवल यात्रा, नोंकरी प्रारम्भ या वाद-विवाद हेतु

जन्म राशि	घातचंद्र	घात तिथि.	वार	नक्षत्र	लग्न
मेष	मेष	१, ६, ११	रवि	मघा	मेष
वृष	सिंह	५, १०, १५	शनि	हस्त	सिंह
मिथु.	धनु	२, ७, १२	सोम	स्वा.	धनु
कर्क	वृष	२, ७, १२	बुध	अनु.	वृष
सिंह	कन्या	३, ८, १३	शनि	मूल	कन्या
क.	मकर	५, १०, १५	शनि	श्रव.	मकर
तुला	मिथुन	४, ९, १४	गुरु	शत.	मिथु.
वृश्चि.	तुला	१, ६, ११	शुक्र	रेव.	तुला
धनु	कर्क	३, ८, १३	शुक्र	भर.	कर्क
मक.	वृश्चिक	४, ९, १४	मंग.	रोहि.	वृश्चि.
कुंभ	कुम्भ	३, ८, १३	गुरु	आर्द्रा	कुंभ
मीन	मीन	५, १०, १५	शुक्र	आश्ले.	मीन

वार के अनुसार काल-पांश चक्र
दिन में जो काल की दिशा होती है, वही दिशा रात्रिकाल में पांश की होती है।

वार	चंद्र	मंग.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
काल	वाय.	पश्चि	नैऋ	दक्षि.	अग्नि	पूर्व	उत्त.
पांश	अग्नि	पूर्व	ईशा.	उत्त.	वाय.	पश्चि	दक्षि.

यात्रा लग्न कुण्डली में ललाटी ग्रह
यात्रा के समय यदि दिशा का स्वामी ग्रह नीचे दिए गये ललाटिक चक्र में प्रदर्शित भाव में हो तो, वह ग्रह ललाट (माथे) पर माना जाता है। ऐसी स्थिति में यात्रा पर गया हुआ व्यक्ति बापस नहीं आता है।



परिघदण्ड (वायव्य से अग्नि कोण)

नक्षत्र समूह की दिशा	यात्रा में शुभ दिशा
पूर्व दिशा के नक्षत्र- कृतिका से आश्लेषा	पूर्व एवं अग्निकोण
दक्षिण दिशा के नक्षत्र- मघा से विशाखा	दक्षिण एवं नैऋत्य
पश्चिम दिशा के नक्षत्र- अनुराधा से श्रवण	पश्चिम एवं वायव्य
उत्तर दिशा के नक्षत्र- धनिष्ठा से भरणी तक	उत्तर एवं ईशान

यात्रा में प्रसस्त तिथि :- १ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३।

नक्षत्र :- अश्वि., मृग., पुन., पष्य.,हस्त., अनु., श्रव., घनि., रेवती। इनमें अश्वि., पुष्य.,हस्त एवं अनु. नक्षत्र अत्यंत शुभ होने से पृष्ट चंद्र, परिघदण्ड एवं शूलदोष नहीं होता है।

यात्रा लग्न - (१) दिग्द्वार लग्न - यदि गन्तव्य दिशा की राशि लग्न में हो तो वह दिग्द्वार लग्न कहलाती है। जैसे पूर्व दिशा में यात्रा करना हो तो मेष, सिंह, या धनु लग्न, दक्षिण दिशा की यात्रा में वृष, कन्या, मकर लग्न, पश्चिम दिशा की यात्रा में मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न एवं उत्तर दिशा की यात्रा में कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न दिग्द्वार लग्न कहलाती है। दिग्द्वार लग्न में यात्रा करने पर धनलाभ एवं विजय होती है। (२) ललाटी चक्र में प्रत्येक ग्रह का दिशा स्वामित्व दिया गया है। यदि गन्तव्य दिशा का स्वामी केन्द्र में हो तो यात्रा शुभ होती है, परन्तु दिशा का स्वामी ललाटी नहीं होना चाहिए। (३) यात्रा लग्न में जन्म राशि, जन्म लग्न से अष्टम राशि, कुम्भ या मीन राशि और नवांश, पृष्टोदय राशियां (मेष, वृष, कर्क, धनु, मकर) राशियों की लग्न नहीं होना चाहिए। (४) यात्रा लग्न में अधिकाधिक शुभग्रह केन्द्र या त्रिकोण में शुभ होते हैं। पाप ग्रह ३, ६, ११ में शुभ होते हैं। परन्तु चन्द्रमा ६, ८, १२ भाव में, शनि १० वे भाव में, शुक्र ७ वें में तथा लग्नेश ६, ७, ८, १२ वें भाव में अशुभ होते हैं।

यात्रा में अन्य विधि सूत्र - (१) यदि एक ही दिन में यात्रा कर गन्तव्य स्थान में पहुचना हो तो वारशूल, नक्षत्रशूल, सम्मुख शुक्र एवं योगिनी वास के विचार की आवश्यकता नहीं है। (२) किसी नगर या ग्राम में प्रवेश के दिन से ९ वां नक्षत्र, ९ वीं तिथि, ९ वें वार में यात्रा नहीं करना चाहिए।

सम्मुख शुक्र दिशा- शुक्र की दिशा का निर्धारण तीन तरह से होता है। पहला -शुक्रास्त के वाद जिस दिन शुक्र का उदय हो उस समय यदि शुक्र मार्गी हो तो शुक्र की दिशा पूर्व होती है, और यदि वक्री हो तो पश्चिम दिशा में आगामी अस्त होने तक रहता है। दूसरा- शुक्र अपनी क्रांति की दिशा में रहता है। तीसरा- परिघदण्ड के साथ प्रत्येक नक्षत्र की दिशा लिखी है। अत: शुक्र जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र की दिशा में रहता है। इन तीनों प्रकार से यदि भिन्न-भिन्न दिशा मिले तो उनके बीच की दिशा ही शुक्र की दिशा होती है। यात्रा के समय शुक्र सम्मुख या दाहिने नहीं होना चाहिए। यदि शुक्र रेवती, अश्विनी, भरणी या कृतिका के प्रथम चरण में हो तो अंधा होने से सम्मुख या दाहिने शुक्र का दोष नहीं होता है।

यात्रा में शुभ शकुन - श्वेत पुष्प, भरा घड़ा, दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, गाय, सफेद बैल, हाथी, घोड़ा, देव प्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, तिलकधारी ब्राह्मण, सोना, चांदी, रत्न, औषधियां, पीढा, जिसके पास कोई रोता हुआ न हो ऐसा शव, वेश्या, वाजे, नीलकंठ का दर्शन, मोर, कोयल, तीतर, गधे की आवाज, पुत्र सहित स्त्री, दूध-दही, ध्वजा, मंगल बस्तु, मदिरा, गीतगान, आदर्श पुरुष, कार्यसिद्धि वाक्य, मिट्टी, मछली, गन्ना, छिपकली, मुँह में अहार लिए बिल्ली, सूकरी, बादल गर्जन , भक्ति संगीत, बिजली की चमक, मन की प्रसन्नता ये सभी शुभ शकुन होते हैं।

यात्रा में अशुभ **शकुन** - चूहा, रीक्ष सियार, बिलाव, शेर, खाली घडा,विधवा स्त्री , सम्मुख कौआ, इत्यादि अशुभ शकुन माने गये है।

पक्षी शकुन - १. यदि काक जल के घड़े पर बैठकर ध्वनि करे तो स्त्री एवं धन की प्राप्ती होती है। २. यदि कौआ देव मन्दिर, राजभवन, लहलहाते खेत, धान्य का ढेर, घोडा या हाथी की पीठ पर बैठा हुआ दिखाई दे तो धन की प्राप्ति होती है। ३. यदि कौआ अपनी चोंच से जमीन खोदता हुआ दिखाई दे तो व्यक्ति को अकस्मात् धन की प्राप्ती होती है। ४. यदि उल्लू सामने की ओर से वोले तो भय होता है। ५. यदि कोई कुत्ता दाएं पैर से अपने सिर या पेट को खुजा रहा हो तो धन लाभ होता है।

यात्रा में छींक विचार- यात्रा पर जाते समय सम्मुख एवं दाहिने की छींक अशुभ होती है। स्वयं की छींक भी अशुभ होती है। बाएं एवं पीठ की छींक शुभ होती है। भोजन, शयन, दान, बीज बोवनी, युद्ध, विवाह, औषधि सेवन, शौच, विद्यारम्भ के समय छींक हो तो शुभ फल दायक होती है। बालक की, वृद्ध की, हठ अप्राकृतिक छींक का दोष नहीं होता है। यदि पहली वार छींक हो तो लगभग १० श्वांस ठहर कर पुन: चलना चाहिये। यदि दूसरी वार छींक हो तो ३० श्वांस रुक कर यात्रा प्रारम्भ करना चाहिये। तीसरी वार छींक हो तो यात्रा स्थगित कर देना चाहिये।

यात्रा में प्रस्थान बस्तु - यदि किसी कारण से शोधित लग्न में यात्रा पर चलने में विलम्ब की संभावना हो तो, लग्न समय में अपनी किसी प्रिय बस्तु को यात्रा की दिशा में अपने घर से यथा संभव दूर प्रस्थित कराऐं तो यात्रा समझी जाती है। ऐसा भृगु, गर्ग, भारद्वाज आदि ऋषियों का मत है।

दोहद - यदि यात्रा के दिन वार सम्वन्धी दोष हो तो वार के सम्मुख लिखी निम्न बस्तुओं का अपने कुल-धर्म परम्परा के अनुसार भक्षण या दर्शन कर यात्रा आरम्भ करना चाहिए।

नक्ष. दोहद

अश्विनी	उड़द
भरणी	तिल, चावल
कृतिका	उड़द
रोहिणी	दधि
मृगशिरा	घृत
आर्द्रा	दुग्ध
पुनर्वसु	मृग
पुष्य	मृग रक्त
आश्लेषा	खीर
मघा	चाष पक्षी
पू. फा.	मृग
उ. फा.	खरगोस
हस्त	साठी का भात
चित्रा	ककुनी
स्वाति	पुआ
विशाखा	बहुरंगी पक्षी
अनुराधा	फल
ज्येष्ठा	कछुआ
मूल	सारिका पक्षी
पू. षा.	गोह
उ. षा.	शाही
अभिजित	मूंग, हविष्य
श्रवण	खिचडी
धनिष्ठा	मूंग
शतभिषा	जौ की पिट्टी
पू. भा.	मत्स्य भात
उ. भा.	खिचड़ी
रेवती	भात

दोहद

वार दोहद

रवि	रसाल, आम
चंद्र	खीर
मंगल	कांजी
बुध	दही
गुरु	दही
शुक्र	कच्चा दूध
शनि	तिल-भात

तिथि दोहद

१	मदार पत्ता
२	घृत
३	चावल धोवन
४	हलुआ
५	हविष्य
६	सोने का जल
७	मालपुआ
८	अनार
९	जल
१०	गोमूत्र
११	जौ का भात
१२	खीर
१३	गुड़
१४	भात
१५,३०	मूंग

गोरख पतरा - श्री गोरखनाथ जी के पूंछने पर श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी ने इस यात्रा मुहुर्त्त को मुहुर्त्तराज कहा है। इस चक्र के अनुसार यात्रा करने वालों को चंद्रवल, भद्रा, तारावल, दिशासूल, योगिनीवास, घातवार इत्यादि का दोष नहीं लगता है।

चक्र से यात्रा मुहूर्त्त जानने के नियम - (१) निम्न लिखित चक्र में जो तिथियां लिखी हैं, वह दोनों पक्षों के लिये हैं। (२) उपरोक्त चक्र में १३, १४, १५ एवं ३० तिथियों का उल्लेख नहीं है। इस स्थिति में १३ का फल ३ के समान, १४ का फल ४ के समान तथा १५ का फल ५ के समान समक्षना चाहिये। ३० तिथि को यात्रा वर्जित है। (३) दिनमान या रात्रिमान का चौथा भाग एक प्रहर होता है। दिनरात में कुल आठ प्रहर होते हैं। उक्त चक्र में दिन या रात के चार प्रहरों का उल्लेख है। दिनमान को ६० में से घटाने पर रात्रिमान निकल आता है।

उदाहरण - (१) माना कि किसी को ज्येष्ठ शुक्ल १४ को पूर्व दिशा में यात्रा मुहूर्त्त देखना है। १४ तिथि का फल ४ के समान होता है। अत: उपरोक्त चक्र में ज्येष्ठ मास के नीचे ४ तिथि के सामने तिथि फल देखा तो "भय, विवाद, क्लेश, मानषिक कष्ट" लिखा मिला अत: यात्रा शुभ नहीं होगी।

यात्रा हेतु श्री गोकुलनाथ जी का वचनामृत चक्र

पौष	माघ	फा.	चैत्र	वैशा	ज्ये.	आ.	श्रा.	भाद्र	आशि	कार्ति	मार्ग.	तिथि फल	प्रहर१	प्रहर२	प्रहर३	प्रहर४	पूर्व	दक्षिछा	पश्चिम	उ●
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	यात्रा सुख - सुविधा हो, कोई क्लेश नहीं हो।	अर्थसि.	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भय	द्रव्य
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	विवाद, पछतावा, भय, मानसिक दु:ख।	भय	क्लेश	सुख	कुशल	०	नाश	दरिद्रय	चिंता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	यात्रा कार्यसिद्धि, सार्थक।	धनलाभ	पदलाभ	सुख	विनाश	द्रव्य	दुख	इष्ट प्राप्ती	धनलाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	परिश्रम से कार्य सिद्धि।	क्लेश	कल्याण	क्लेश	अहित	क्लेश	हानि	धन	सुख
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	बस्तुलाभ, मित्र मिलन, व्याधि दूर हो।	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	धन	धन	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	चिंता, विवाद, वियोग, न्यून कार्यसिद्धि।	संकट	क्लेश	मित्र	धनलाभ	भय	लाभ	मृत्यु	धनलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	यात्रा में लाभ, संपर्क, कार्यसिद्धि।	विलंब	धनलाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कुयोग, कार्यहानि, न्यून व्यवहार।	०	०	०	०	कष्ट	सुख	०	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	धनलाभ, सुखद यात्रा, कार्य सफलता।	लाभ	भय	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	यात्रा शुभ परन्तु परिश्रम अधिक, कार्य विलम्ब	लाभ	पूर्णता	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	धन	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	भय, विवाद, क्लेश, मानसिक कष्ट।	मरण	अर्थ	कुशल	मृत्यु	लोभ	धननाश	०	मित्र
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	यात्रा में सुख एवं सुविधा, मित्र मिलन, सिद्धि	मरण	अर्थ	सुख	सुख	०	सुख	मृत्यु	कष्ट

।। अथ मुहूर्तचिंतामणि-मार्तण्ड-गणपत्यादि मतानुसारेण आवश्यक मुहूर्त कोष्टकाः ।।

क्रम	मुहूर्त	नक्षत्र	मास	तिथि	वार	लग्न
१	रजोदर्शने श्रेष्ठानि मुहूर्त	श्र. ध. श. मृ. चि. अनु. ह. पू. स्वा. अश्वि. उत्तरा ३ रोहि.	वै. फा. अश्वि. ज्ये. श्रावण	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चं. गु. बु. शु.	२, ३, ४, ६, ७, ९, १२
२	रजः स्नान मुहूर्त	ह. स्वा. अनु. रे. अश्वि. मृ. भ. रो. उ. ३ ज्येष्ठा	---	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चं. गु. बु. शु.	२, ३, ४, ६, ७, ९, १२
३	गर्भाधान मुहूर्त	उ. ३ मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. शत.	---	शुभ	चं. गु. बु. शु.	शुभ
४	पुंसवन सीमांत मुहूर्त	मृग. पुन. मूल. श्रव. पुष्य, ह. रो. उ. ३. जन्म नक्षत्र त्याज्य, पुंस. मा. २-३ सीम ६-८	---	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ शुक्ल	सू. मं. गु.	१, ४, ५, ७, ९, १०
५	सूतिका गृह प्रवेश	रो. मृ. पुष्य, स्वा. शत. पुन. ह. ध. अनु. चि. अश्वि. रे. उ. ३ श्र.	---	१, २, ३, ५, १०, ११, १२, १३	चं. बु. गु. शु.	शुभ
६	जातकर्म मुहूर्त	मृ. रे. चित. अनु. उ. ३ रो. पुन. श्र. स्वा. ध. शत. ह. पु. अश्वि.	---	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३	चं. बु. गु. शु.	शुभ
७	स्तनपान मुहूर्त	उ. ३ रो. अश्वि. रे. पुष्य, पुन. अनु. श्र. ह. चि. मू. ध. शत.	---	रिक्ता अमावस्या को त्यागकर अन्य तिथि	चं. बु. गु. शु.	शुभ
८	सूतिका पथ्य मुहूर्त	रो. उ. ३ रेव. मृ. चि. अनु. पुन. पुष्य, ह. अश्वि. अभि. स्वा. श्र. ध. शत.	---	२, ३, ५, ७, १०, १३	चं. बु. गु. शु.	२, ३, ४, ५
९	सूतिका स्नान मुहूर्त	रे. उ. ३ रो. मृ. ह. स्वा. अश्वि. अनु.	---	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	सू. मं. गु.	शुभ
१०	दोलारोहण (हिण्डोला) मुहूर्त	जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन मृ. चि. रे. अनु. ह. अ. पुष्य, उ. ३, रो. सूर्य नक्षत्र से ५ आरो. ५ मृत्यु, ५ देहकष्ट ५ रोग, ७ सुख	---	रिक्ता तिथि त्याज्य एवं ३० भी	चं. बु. गु. शु.	४, ५, ७, ९, १०, ११

।। अथ मुहूर्तचिंतामणि-मार्तण्ड-गणपत्यादि मतानुसारेण आवश्यक मुहूर्त कोष्टकाः ।।

क्रम	मुहूर्त	नक्षत्र	मास	तिथि	वार	लग्न
११	जलपूजन मुहूर्त	श्र. पु. पुष्य, मृ. ह. मू. अनु.	चैत्र, पौष एवं अधिमास तथा गुरुशुक्रास्य त्याज्य	४, ९, १४, ३० त्याज्य शेष ग्राह्य	च. बु. गु.	शुभ
१२	भूभ्युपवेशत मुहूर्त	उ. ३ रो. मृ. अनु. ज्ये. चि. रे. अश्वि. ह. पुष्य, अभि.	---	४, ९, १४, ३० त्याज्य शेष ग्राह्य	शुभ वार	चर लग्न १, ४, ७, १०
१३	नामकरण मुहूर्त	रे. पुष्य, चि. अनु. उ. ३ रो. ह. अश्वि. पुन. स्वा. श्र. ध. शत.	---	१,२,३,५,७, १०,११,१३	चं. बु. गु. शु.	२, ५, ८, ११
१४	अन्नप्राशन मुहूर्त	रो. उ. ३ मृ. रे. चि. अनु. ह. पुष्य,अश्वि. पुन. स्वा. श्र. ध. शत.	---	१, ३, ५, ७, १०, ११	चं. बु. गु. शु.	२,३,४,५,७, ९,१०,११
१५	कर्णवेध मुहूर्त	श्र. पु. अश्वि. मृ. ह. मू. अनु. अभि. रेव.	चै.पौ. सम वर्ष २ जन्म तारा चार्तुमास त्याज्य, अन्य ग्राह्य	शुभ तिथि	शुभ वार	शुभ
१६	चौल कर्म मुहूर्त	ज्ये. मृ. रे. चि. ह. अश्वि. पु. अभि. स्वा. श्र. पुन. ध. शत.	---	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	चं. बु. गु. शु.	२, ३, ४, ६, ७, ९, १२
१७	ताम्बूल भक्षण मुहूर्त	उ.३ रो. मृ. चि. रे. अनु. ह. अश्वि. पुष्य, अभि. स्वा. श्र. पुन. ध. मू.	---	२, ३, ६, ५, १०, ११, १३	सू. चं. बु. गु.	४, ५, ७, ९, ११
१८	क्षेमार्थ शांति कर्म मुहूर्त	ह. अश्वि. रे. उ. ३ रो. स्वा. श्र. ध. शत. अनु. मघा	---	शुभ	शुभ	शुभ
१९	अक्षरारंभ मुहूर्त	अश्वि. आर्द्रा , पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. अभि. रेव.	माघ, फाल्गुन, चै. वै, ज्ये.	२, ३, ५, ६, १०, ११, १२, शुक्ल	चं. बु. गु. शु.	२, ३, ६, ९, १२
२०	विद्यारंभ मुहूर्त	पू. ३ पुष्य, आश्ले ,रेव. मू. श्र. ह. चि. स्वा. मृ. आर्द्रा,पुन. अश्वि. रो. अनु. उ. ३	---	२, ३, ५, १०, ११, १२	सू. गु. शु.	शुभ
२१	व्रतबंध (यज्ञोपवीत) मुहूर्त	पू. षा. अश्वि. ह. चि. स्वा. श्र. ध. शत. ज्ये. पू. फा. पु. मृ. रे. उ. ३	उत्तरायण मास चै+मीन सं.	२,३,५,१०, ११,१२ शुक्ल	सू. गु. चं. शु.	५, ९, २, ६, ३
२२	दीक्षा ग्रहण मुहूर्त	अश्वि. रो.मृ. उ. ३. चि. पू. फा.	चै.वै. अश्वि. का. माघ	२, ३, ५, ८, १०, ११, १२	सू. चं. गु. शु.	३, ४, ५, ६, ७, १२

।। अथ मुहूर्तचिंतामणि-मार्तण्ड-गणपत्यादि मतानुसारेण आवश्यक मुहूर्त कोष्टकाः ।।

क्रम	मुहूर्त	नक्षत्र	मास	तिथि	वार	लग्न
२३	वधु प्रवेश मुहूत	ह. चि. स्वा. रो. मृ. मघा पुष्य, ध. उ. ३ मू. अनु. अश्वि. रे.	---	१,२,३,५,६, ७,८,१०,१२	सू. शु. चं. श.	२, ५, ८, ११
२४	पतिगृह से पितृग्रह जाने का मुहूर्त	रो. चि. अनु. ध. मृ. म. स्वा. मू. ज्ये. आ. आश्ले. पू.३ रे. अनु.	---	शुभ	शुभ	शुभ
२५	द्विरागमन मुहूर्त	अश्वि. ह. पुन. उ. ३ रो. स्वा. श्र. ध. मू. मृ. रे. चि.	वै. मार्ग. फा. सूर्य गुरू की शुद्धि हो तब	१,२,३,५,७, ८,१०,११, १२,१३,१५	चं. बु. गु. शु.	२, ३, ६, ७, १२
२६	वापी कूप तडागा रम्भ मुहूर्त	म. ह. रे. मृ. पुष्य, ध. शत. पू. षा. उ. ३ रो. अश्वि.	---	४,९,१४,३० को त्याग कर अन्य तिथी	चं. बु. गु. शु.	शुभ
२७	क्रय विक्रय मुहूर्त	पुष्य, पू. मा. उ. ३ अनु. अश्वि. श्र. ह. मृ. स्वा. आश्ले. रेव.	---	शुभ	चं. बु. गु. शु.	शुभ
२८	विपणि (दुकान) मुहूर्त	मृ. रे. चि. अनु. रो. उ. ३ ह. अश्वि. पुष्य,	---	शुभ	सू. चं. गु. बु. शु.	शुभ
२९	नौकर रखने का मुहूर्त	ह. अभि अश्वि. पुष्य, मृ. रे. चि. अनु.	---	शुभ	सू. बु. गु. शु.	१, ४, १०, ५, ९
३०	चूड़ी धारण मुहूर्त	अश्वि. ह. चि. स्वा. वि. अनु. ध. रे. तथा सूर्य नक्षत्र से ३ ने. श्र. ३ ने. ९ श्रे. २ ने. ४ श्रे. १ नेष्ट	---	शुभ	बु. गु. शु. सू.	शुभ
३१	नूतन वध्वा पाककर्म (नई बहु से रसोई बनाने का मुहूर्त)	मू. रो. ह. मृ. स्वा.	---	१, २, ३, ५, ७, १०	सू. मं. गु.	शुभ
३२	हल चलाने का मुहूर्त	अश्वि. रो. मू. पुन. मं. ह. उ. ३ चि. स्वा. अनु. श्र. रे. शत. अभि	---	शुभ	शुभ	शुभ
३३	रोग मुक्त के स्नान का मुहूर्त	चि. ह. वि. पू. ३ पुन. मृ. आर्द्रा, म. कृ.	---	शुभ	सू. मं. बु. शु	शुभ
३४	काष्ठ संग्रह मुहूर्त	सूर्य नक्षत्र से ६ श्रे. ६ ने. ४ श्रे. ४ ने. ४ ने. ४ श्रे.	---	शुभ	शुभ	शुभ

।। अथ मुहूर्तचिंतामणि-मार्तण्ड-गणपत्यादि मतानुसारेण आवश्यक मुहूर्त कोष्टकाः ।।

क्रम	मुहूर्त	नक्षत्र	मास	तिथि	वार	लग्न
३५	गृहारम्भ मुहूर्त	म. उ. ३ पुन. पुष्य, ध. अनु. शत. चि. ह. स्वा. रो. रे. (वृषभ चक्रशुद्धि)	व. श्राव. पौष का.	१, २, ३, ५, १०, ११, १२, १३	शुभ	शुभ
३६	द्वारशाखा मुहूर्त	सूर्य नक्षत्र से ४ श्रे. ४ ने. ८ श्रे. ३ ने. ४ श्रेष्ठ	---	५, ७, ८	गु. शु. श. सू.	शुभ
३७	नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त	उ. ३ , रो. अनु. मृ. चि. रे. (कलश चक्रानुसार)	---	शुभ	शुभ	शुभ
३८	खट्वारोहण मुहूर्त	मू. रे. चि. अनु. उ. रो. ह. पूर्व अथवा दक्षिण दिशा मे सिर रखना	---	शुभ	शुभ	शुभ
३९	सुगंध पदार्थ भोग मुहूर्त	श्र. ध. श. अश्वि. पुष्य, पू. षा. अनु. चि. स्वा. पुन. रे. मृग.	---	शुभ	शुभ	शुभ
४०	भूषण घट्टन मुहूर्त	त्रिपुष्कर योग एवं उ. ३ रो. रे. अश्वि. श्र. ध. श. मृ. पुष्य, अनु. ह. चि. स्वा. पुन.	---	शुभ	शुभ	शुभ
४१	चुल्ली स्थापन मुहूर्त	पू. भा. रो. पुष्य, अभि रवि नक्षत्र से ६ श्रे. ४ ने . ८ श्रे. ५ ने. २ श्रे. ३ ने.	---	शुभ	बु. गु. शु.	शुभ
४२	इक्षुरोपण मुहूर्त	आर्द्रा , पुष्य, ध. अनु. मू . रे. उ. ३	---	शुभ	शुभ	शुभ
४३	कोल्हूचक्र मुहूर्त	सूर्य नक्षत्र से ५, ६, ९, १०, ११, १२, १२, १४, २०, २१ अशुभ शेष नक्षत्र शुभ	---	शुभ	शुभ	शुभ
४४	शकटारम्भ मुहूर्त	सूर्य नक्षत्र से - ३ ने. ३ ने. ३ श्रे. ९ ने. ३ श्रे. ३ ने. ३ श्रे.	---	शुभ	शुभ	शुभ
४५	पाटडास्थापन मुहूर्त	सूर्य नक्षत्र से - ३ श्रे. ४ ने. ४ ने. ३ श्रे. ४ ने. ४ श्रे. ५ श्रे.	---	शुभ	शुभ	शुभ

।। अथ मुहूर्तचिंतामणि-मार्तण्ड-गणपत्यादि मतानुसारेण आवश्यक मुहूर्त कोष्टकाः ।।

क्रम	मुहूर्त	नक्षत्र	मास	तिथि	वार	लग्न
४६	सेतुबंधन मुहूर्त	मृ. आर्द्रा ,पू. षा. श्र. ध. श. अश्वि. पुष्य, ह. अभि रो.उ. ३	---	शुभ	सू. गु. शु. श.	शुभ
४७	कलश चक्र मुहूर्त	सूर्यनक्षत्र से - ५ ने. ८ श्रे. ८ श्रे. ६ श्रे	---	शुभ	शुभ	शुभ
४८	मोभ (धरन) मुहूर्त	मृ. पुन. पुष्य,ह. चि. स्वा. अनु. श्र ध. रे. सूर्य नक्षत्र से- ३ ने. १३ श्रे. ८ ने. ३ श्रे.	---	शुभ	सू. गु. शु.	शुभ
४९	हल चक्रम मुहूर्त	सूर्यनक्षत्र से - ३ ने. ३ श्रे. ३ ने. ५ श्रे. ३ ने. ५ श्रे. ३ ने. २ श्रे.	---	शुभ	शुभ	शुभ
५०	बीज वपन मुहूर्त	राहुनक्षत्र से - ८ ने. ३ श्रे. १ ने. ३श्रे. १ ने. ३ श्रे. ४ ने.	---	शुभ	शुभ	शुभ
५१	कणमर्दन मुहूर्त	अनु. श्र. मू. रे. पू. फा. उ. फा. ज्ये. रो. मघा.	---	शुभ	शुभ	शुभ
५२	धान्य संग्रह मुहूर्त	भर. कृति. आर्द्रा, वि. आ. पू. ३ ज्ये. मघा को छोड़कर अन्य नक्षत्र शुभ	---	शुभ	शुभ	२, ५, ८, १०, ११, ३, ६, ९, १२
५३	मिट्टी के बर्तन बनाने का मुहूर्त कुंभकार कृत्य	पुन. पुष्य, ह. चि. स्वाती, रे. रो. मृ. अनु. श्र. ज्ये.	---	शुभ	सू. चं. बु. गु. शु.	शुभ
५४	शिल्प विद्यारंभ मुहूर्त (हुनर सीखना)	ह. चि. स्वा. श्र. ध. शत. पू. ३ रो. मृ. रे. अश्वि. पुन. पुष्य, अनुराधा	---	शुभ	सू. चं. बु. गु. शु.	शुभ
५५	गीत विद्या नृत्य विद्या शिक्षा मुहूर्त	रे. अनु. ध. शत. ह. रो. उ. ३ आर्द्रा	---	शुभ	सू. चं. बु. गु. शु.	शुभ
५६	नौका कृत्य मुहूर्त (नाव बनाना)	ज्ये. मू. वि. आर्द्रा, रो. भर. कृति. अश्लेषा	---	शुभ	सू. गु.	शुभ
५७	दत्तक पुत्र मुहूर्त	ह. चि. स्वा. वि. अनु. अश्वि. ध. पुष्य	---	४, ९, ११, ३० को छोड़कर अन्य तिथि	सू. मं. गु. शु.	५, २

।। अथ मुहूर्तचिंतामणि-मार्तण्ड-गणपत्यादि मतानुसारेण आवश्यक मुहूर्त कोष्टकाः ।।

क्रम	मुहूर्त	नक्षत्र	मास	तिथि	वार	लग्न
५८	निष्क्रमण मु. (बच्चे को प्रथम बार घर से बाहर ले जाना)	ह. पुन. पुष्य, श्र. ध. अनु. ज्ये. मू. रे. रो. उ. फा. मृ. उ. षा. स्वा. जन्म से ३ अथवा ४ मास में	---	४,९,१४, ३० को छोड़कर अन्य तिथि	सू. चं. बु. गु. शु.	५, ६, ७, १
५९	वाग्दान मु. (लड़के लड़की का संबंध)	रो. उ. ३ रे. मू. स्वाती, मृ. म. अनु. ह. कृ. पू. ३ श्र. ध.	---	शुभ	शुभ	शुभ
६०	स्त्रियों के लिए नूतन वस्त्र धारण मुहूर्त मु.	ह. चि. स्वा. वि. अनु. अश्वि. ध. रे. केवल स्त्रियों के लिए	---	शुभ	गु. शु. बु.	१२, ६, ३, २
६१	पुरुषों के लिए नूतन वस्त्र धारण मुहूर्त मु.	ह. चि. स्वा. वि. अनु. अश्वि. ध. रे. पुनः पुष्य रो. उ. ३	---	शुभ	- '' -	- '' -
६२	भषज्य मुहूर्त (दवाई लेना)	ह. अश्वि. पुष्य. श्र. ध. शत. मू. पुन. स्वा. मृ. रे. चि. अनु.	---	४,९,१४,३० को छोड़कर अन्य तिथि	सू. चं. बु. गु. शु.	शुभ
६३	शस्त्रकर्म मुहूर्त (ऑपरेशन)	---	---	---	सू. मं.	रवि. मंगल. केंद्र में
६४.	तैलिक यन्त्र मुहूर्त (आयल मिल घाणी आदि)	अश्वि. पुष्य, पुन. ह. चि. अनु. ज्ये. ध. रे. तथा उस दिन कोई अशुभ योग न हों।	---	रिक्ता तथा अमा. के बिना अन्य तिथि	शुभ	शुभ
६५	तैलिक यन्त्र चक्रम मुहूर्त	सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र तक गणना ७ संप ६ शोक २ विषद् ७ धन ३ ऋषि ५ सौख्य	---	---	---	केंद्र में शुभ ग्रह
६६	वस्त्र निर्माण यंत्र मु. (कपड़ा मिल चालू करना)	रो. रे. चि. अनु. मृ. उ. ३	---	शुभ	सू. चं. मं. बु. गु. शु.	---
६७	संवेदन प्रतिष्ठा मुहूर्त	ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. मू. श्र. ध. शत. रे. अश्वि. पुन. पुष्य, उ. ३ रो. मृ.	---	कृष्ण पक्ष दशमी तक तथा शु. पक्ष	सो. बु. गु. शु.	३, ६, ९, १२, २, ५, ८, ११
६८	संवेदन प्रतिष्ठा मुहूर्त	चैत्र, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ एवं माघ मास	---	२,३,५,६, ७,१०,११,१२,१३,१५	- '' -	- '' -
६९	मंत्र दीक्षा मुहूर्त	पू.षा. अश्वि. ह. चि. स्वा. श्र. रे. ध. शत. ज्ये. पु. फा. पुष्य, मृ. उ. ३/च. पो ज्ये. आषा. भाद्र इन मासों को छोड़कर अन्य मास	---	सूर्य अथवा चंद्र ग्रहण	---	---
७०	सन्यरत दीक्षा मुहूर्त	पुष्य, उ. ३ मृ. रे. अनु. ध.	---	५, १०, १५ शुक्ल पक्ष	गु. श.	शुभ

#卐 नक्षत्र गुण मिलान वोधक चक्र 卐

यदि अष्टकूटीय गुणों का योग १८ से कम हो तो मिलान शुभ नहीं माना जाता है, १८ से २७ तक शुभ और २७ से अधिक अत्यंत शुभ होते है।

वधु ↓ ॐ		वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह		
			अश्वि.	भरणी	कृति.१	कृ. ३	रोहि.	मृग.२	मृग.२	आर्द्रा	पुन.३	पुन.१	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उफा.१
मेष	अश्वि.	चूचेचोला	२८	३३	२८ ॥	१८ ॥	२१ ॥	२२ ॥	२६	१७	१९	२३ ॥	३१ ॥	२८	२१॥	२५ न.	१५॥ ना.न.
	भरणी	लिलूलेलो	३४	२८	२९	१९	२२ ॥	१४॥	१८	२६	२७	३१ ॥	२३ ॥	२५॥ग.	२० ग.न.	१८ ना.न.	२६ न.
	कृति.१	अ	२७ ॥	२९	२८	१८	१०	१६ ॥	२०	२०	२१	२५ ॥	२६ ॥	२३॥ना.	१६॥ना.न.	२० ग.न.	२० ॥
वृष	कृति.३	इउए	१८ ॥	२०	१९	२८	२०	२६ ॥	१७ ॥	१७ ॥	१८ ॥	२२	२३	२०	१८ ॥	२२	२२
	रोहिणी.	ओववीवू	२३ ॥	२३ ॥	११	२०	२८	३६	२५॥	२३ ॥	२२ ॥	२६	२७	१२	१० ॥	२४ ॥	२७
	मृग.२	वे वो	२३ ॥	१४ ॥	१८ ॥	२७ ॥	३५	२८	१९	२४	२२ ॥	२६	१९	२१	१९ ॥	१५ ॥	२४॥
मिथु	मृग.२	क की	२७	१८	२२	१९ ॥	२७	२०	२८	३३	३१ ॥	१९	१२	१४	२३ ॥	१९ ॥	२८ ॥
	आर्द्रा	कूघङछ	१९	२७	२१	१८ ॥	२४ ॥	२६	३४	२८	२५	१२ ॥	२० ॥	१३ ॥	२३ ॥	२९ ॥	२१ ॥
	पुन.३	केकोह	२०	२७	२३	२० ॥	२२ ॥	२३ ॥	३१ ॥	२४	२८	१५ ॥	२२ ॥	१७	२२ ॥	२६ ॥	२१ ॥
कर्क	पुन.१	ही	२२ ॥	२९ ॥	२५ ॥	२२	२४	२५	१८	१० ॥	१४ ॥	२८	३५	२९ ॥	१६ ॥	२० ॥	१५ ॥
	पुष्य	हूहेहोडा	३० ॥	२१ ॥	२६ ॥	२३	२५	१८	११	१८	२१ ॥	३५	२८	३०	१९ ॥	१५ ॥	२३ ॥
	आश्ले.	डीडूडेहो	२६ ॥	२४ ॥	२२ ॥	१९	११	१९	१२	१२	१५	२८ ॥	२९	२८	१५	१५ ॥	१८ ॥
सिंह	मघा	ममीमेमो	२०	२०	१६ ॥	१७ ॥	९ ॥	१७ ॥	२१ ॥	२२ ॥	२० ॥	१६ ॥	१९	१६	२८	३०	२७ ॥
	पू.फा.	मोटाटीटू	२६	१८	२०	२१	२३ ॥	१५ ॥	१९ ॥	२८ ॥	२६ ॥	२२ ॥	१७ ॥	१६ ॥	३०	२८	३५
	उफा.१	टे	१७ ॥	२६	२०	२१	२६	२४ ॥	२८ ॥	२० ॥	२१ ॥	१७ ॥	२५ ॥	१९ ॥	२७ ॥	३५	२८
कन्या	उफा.३	टोपपी	११	२२ ॥	१६ ॥	२१	२६	२४ ॥	३१ ॥	२३ ॥	२४ ॥	२०	२८	२२	१७ ॥	२५	१८
	हस्त	पूषणठ	९	२०	१७ ॥	२२	२५	२६	३३	२२ ॥	२४ ॥	२०	२८	२३	१८ ॥	२२ ॥	१६
	चित्रा२	पे पो	१३	५	१९	२३ ॥	२०	१२	१९	२७	२५ ॥	२१	१२	२७	२२ ॥	८ ॥	१४ ॥
तुला	चित्रा२	र रा	२३ ॥	१४ ॥	२८ ॥	२३ ॥	२०	१२	१३	२१	१९ ॥	२० ॥	११ ॥	२६ ॥	२५ ॥	११ ॥	१७ ॥
	स्वाति	रूरेरोता	२८ ॥	२९ ॥	१७ ॥	१२ ॥	१५ ॥	२६	२७	२६	२८	२९	२७ ॥	१४ ॥	१३ ॥	२५ ॥	२५ ॥
	विशा.३	तितूते	२२ ॥	२२ ॥	२० ॥	१५ ॥	१० ॥	१८ ॥	१९ ॥	२१	२१	२२	२१	१८ ॥	१७ ॥	१९ ॥	१७ ॥
वृश्चि	विशा.१	तो	१६ ॥	१६ ॥	१४ ॥	१९ ॥	१४ ॥	२२ ॥	१२	१३ ॥	१३ ॥	१९	१८	१५ ॥	२१ ॥	२३ ॥	२१ ॥
	अनुरा.	ननानूने	२४ ॥	१५ ॥	१९ ॥	२४ ॥	२७ ॥	२० ॥	१०	१५	२० ॥	२६	१८	२१	२४ ॥	२० ॥	२९ ॥
	ज्येष्ठा	नोयायीयु	१२	१८ ॥	२४ ॥	२९ ॥	२२ ॥	२२ ॥	१२	२	५	१० ॥	२०	२६	३१	२३ ॥	१६ ॥
धनु	मूल	येयोभभी	१२	२०	२४ ॥	१९	१३	१६	२१	१५	१२	८	१७	२३ ॥	२५	१९	९ ॥
	पू.षा.	भूधफढ	२६	१८	१८	१२ ॥	१८	१०	१८	२७	२७	२३	१३	१७	१९	१७	२५
	उ.षा.१	भे	२४ ॥	२६	१२	६ ॥	१० ॥	१७	२५	२७	२७	२३	२३	९	८ ॥	२४	२५
मकर	उ.षा.३	भोजजी	२७	२८ ॥	१४ ॥	१२	१६	२२ ॥	२०	२२	२२	२८	२८	१४	४ ॥	२०	२१
	श्रवण	खीखूखेखो	२७	२६	१३ ॥	११	१६	२५	२२ ॥	२१	२२	२८	२६	१५	६ ॥	१८ ॥	२०
	धनि.२	ग गी	२०	११	२६	२३ ॥	२०	१२	९ ॥	१६ ॥	१५	२१	१३	२७	१९ ॥	५ ॥	१२ ॥
कुम्भ	धनि.२	गु गे	२०	११	२६	३० ॥	२७	१९	१२	१९	१७ ॥	१२ ॥	४ ॥	१८ ॥	२५ ॥	११ ॥	१८ ॥
	शत.	गोसासीसू	१५	२१	२८	३२ ॥	२५	२७	२०	१२	१३	६ ॥	१४ ॥	२० ॥	२६ ॥	२० ॥	१२ ॥
	पू.भा.३	सेसोद	१८	२५	२०	२४ ॥	३१ ॥	३१ ॥	२४ ॥	१७	१७	१२	२०	१२ ॥	१९ ॥	२५ ॥	१६ ॥
मीन	पू.भा.१	दी	१४ ॥	२१ ॥	१६	१९	२६	२६	२५ ॥	१८	१८	१७	२५	१७ ॥	१७	२३ ॥	१४ ॥
	उ.भा.	दूथझञ	२४ ॥	१६ ॥	१८ ॥	२१	२६	१८	१७ ॥	२५ ॥	२८	२७	१९	२१	१८ ॥	१६ ॥	२५ ॥
	रेवती	देदोचची	२५	२४ ॥	११ ॥	१४	१७	२६	२५ ॥	२४ ॥	२६ ॥	२५ ॥	२७	१४	१३	२३ ॥	२३ ॥

वधु ↓ ॐ		वर →	कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			उफा.३	हस्त	चित्रा२	चित्रा२	स्वाति	वि. ३	वि. १	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उषा.१	उषा.३	श्रवण	धनि.२	धनि.२	शत.	पूभा.३	पूभा.१	उ.भा.	रेवती
मेष	अश्वि.	चूचेचोला	११ ना.ष.	९ यो.ना.ष.	१३ ष.	२२ ॥	२६॥ यो.	२२ ॥	१८॥ ष.	२५॥ ष.	१४ ना.ष.	१३ ना.न.	२५ न.	२३॥ न.	२५	२६	२०	२०	१५ ना.	१६ ना.	१४॥ ना.द्वि.	२४॥ द्वि.	२६ द्वि.
	भरणी	लिलूलेलो	२१॥ ष.	२० ष.	४ ग.ना.ष.	१३॥ ना.ग.	२९ ॥	२१॥ ग.	१७॥ ग.ष.	१७॥ ना.ष.	१९ ग.ष.	२० न.ग.	१८ ना.न.	२६ न.	२७ ॥	२६	१० ग.ना.यो.	१० ग.ना.यो.	२० ग.	२४ यो.	२२॥ यो.द्वि.	१७॥ ना.द्वि.	२६॥ द्वि.
	कृति.१	अ	१५ ॥	१५ ॥	१८	२७ ॥	१५ ॥	१९ ॥	१५ ॥	१९ ॥	२५ ॥	२४ ॥	१८	१२	१३ ॥	११ ॥	२५	२५	२७	१९ ॥	१७ ॥	१९ ॥	११ ॥
वृष	कृति.३	इउए	२१	२१	२३ ॥	२२ ॥	१० ॥	१४ ॥	२० ॥	२४ ॥	३० ॥	२०	१३ ॥	७॥	१२	१०	२३ ॥	२९ ॥	३१ ॥	२३ ॥	२०	२२	१४
	रोहिणी.	ओववीवू	२६	२६	२०	१९	१५ ॥	९ ॥	१५ ॥	२९ ॥	२३ ॥	१४	१९	११ ॥	१६	१७	२०	२४ ॥	२४ ॥	३० ॥	२७	२७	१९
	मृग.२	वे वो	२३ ॥	२६	१३	१२	२५	१८ ॥	२४ ॥	२१ ॥	२४ ॥	१५	१०	१७	२१ ॥	२५	१३	१९	२७	२९ ॥	२६	१८	२७
मिथु	मृग.२	क की	३१ ॥	३४	२१	१४	२७	२० ॥	१४	११	१४	२३	१८	२५	२०	२३ ॥	११ ॥	१३	२१	२३ ॥	२५ ॥	१७ ॥	२६ ॥
	आर्द्रा	कूघङछ	२४ ॥	२४ ॥	२८	२१	२७	२१	१४ ॥	१७	६	१६	२८	२८	२३ ॥	२३ ॥	१७ ॥	१९	१२	१७	१९ ॥	२६ ॥	२६ ॥
	पुन.३	केकोह	२४ ॥	२५ ॥	२७ ॥	२० ॥	२८	२२	१५ ॥	२१ ॥	७	१४	२७	२७	२२	२३	१७	१८ ॥	१४	१६	१८	२८	२७ ॥
कर्क	पुन.१	ही	१८	१९	२१	२० ॥	२८	२२	२०	२६	११ ॥	८	२१	२१	२६	२७	२१	१२ ॥	८	१०	१६	२६	२५ ॥
	पुष्य	हूहेहोडा	२६	२७	१२	११ ॥	२६ ॥	२१	१७	१८	२१	१७	११	२१	२६	२५	१३	४ ॥	१४ ॥	१८	२४	१८	२७
	आश्ले.	डीडूडेहो	२१	२१	२६	२५ ॥	१२ ॥	१७ ॥	१५ ॥	२०	२६	२२ ॥	१६	८	१३	१३	२६	१७ ॥	१९ ॥	११ ॥	१७ ॥	२१	१३
सिंह	मघा	ममीमेमो	१६ ॥	१६ ॥	२१ ॥	२४ ॥	११ ॥	१६ ॥	२२ ॥	२५ ॥	३३	२५	१९	८ ॥	३ ॥	४ ॥	१८ ॥	२४ ॥	२५ ॥	१८ ॥	१८ ॥	१९ ॥	१३
	पू.फा.	मोटाटीटू	२२ ॥	२२ ॥	७ ॥	१० ॥	२५ ॥	१८ ॥	२४ ॥	२३ ॥	२५ ॥	१९	१७	२४	१७ ॥	१८ ॥	४ ॥	१० ॥	१९ ॥	२४ ॥	२४ ॥	१७ ॥	२५ ॥
	उफा.१	टे	१७	१६	१३ ॥	१६ ॥	२५ ॥	१६ ॥	२२ ॥	३१ ॥	१७ ॥	९ ॥	२५	२५	२०	२०	११ ॥	१७ ॥	११ ॥	१५ ॥	१५ ॥	२६ ॥	२५ ॥
कन्या	उफा.३	टोपपी	२८	२७	२४ ॥	१६ ॥	२५ ॥	१६ ॥	१८	२७	१३	१४	२९ ॥	२९ ॥	२४ ॥	२४ ॥	१६	१६ ॥	१० ॥	१४ ॥	१७ ॥	२८ ॥	२७ ॥
	हस्त	पूषणठ	२६	२८	२८	२०	२६ ॥	१८ ॥	२०	२६	१३	१५	२७	२८ ॥	२३ ॥	२४ ॥	१८ ॥	१९	८ ॥	१३ ॥	१६ ॥	२६ ॥	२७ ॥
	चित्रा२	पे पो	२४ ॥	२७	२८	२०	१९	२६ ॥	२८	११	२५	२८	१४	२२	१७	१८ ॥	१५	१६	२४	१६ ॥	१९ ॥	१० ॥	११ ॥
तुला	चित्रा२	र रा	१७ ॥	२०	२९	२८	२७	३४ ॥	२३ ॥	६ ॥	२० ॥	२८	१४	२२	२५	२६ ॥	२३ ॥	१८	२६	१८ ॥	१२ ॥	३ ॥	१२ ॥
	स्वाति	रूरेरोता	२५ ॥	२७ ॥	२१	२८	२८	२०	९	२१ ॥	१६ ॥	२३	२७	१९	२२	२३	२६ ॥	२१	२०	२५	१९	१९ ॥	१२ ॥
	विशा.३	तितूते	२७ ॥	१८ ॥	२७ ॥	३४ ॥	१९	२८	१७	१६	२० ॥	२८	२२	१४	१७ ॥	१७ ॥	३०	२४ ॥	२६	२०	१४	१३	४ ॥
वृश्चि	विशा.१	तो	१७	१८	२७	२२ ॥	७	१६	२८	२७	३१ ॥	२२ ॥	१६ ॥	८ ॥	१२	१२	२५	२४	२५ ॥	१९ ॥	१९	१८	९ ॥
	अनुरा.	ननानूने	२५	२५	११	६ ॥	२० ॥	१६	२८	२८	२९ ॥	१५ ॥	१३ ॥	२१ ॥	२५	२६	१२	११	२१	२४ ॥	२४	१८	२७
	ज्येष्ठा	नोयायीयु	१२	११	२४	१९ ॥	१४ ॥	१९ ॥	३१ ॥	३०	२८	१४	१६ ॥	१६ ॥	२०	२०	२५	२४	१८	१०	९ ॥	२१	२१
धनु	मूल	येयोभभी	१३	१३	२७	२७	२१	२६	२३ ॥	१५ ॥	१५	२८	२८	२६ ॥	१५	१५	२०	२८ ॥	२१ ॥	१४ ॥	१६	२५	२६
	पू.षा.	भूधफढ	२८ ॥	२७	१३	१३	२७	२१	१७ ॥	१५	१७ ॥	२८	२८	३४	२२ ॥	२३	६	१४ ॥	२३ ॥	२८ ॥	३०	२३	३१
	उ.षा.१	भे	२८ ॥	२८ ॥	२१	२१	१९	१३	९ ॥	२३ ॥	१७ ॥	२६ ॥	३४	२८	१६ ॥	१४ ॥	१५	२३ ॥	२३ ॥	२९ ॥	३१	३१	२३
मकर	उ.षा.३	भोजजी	२४ ॥	२४ ॥	१७	२४	२२	१६	१३	२७	२१	१६	२३ ॥	१७ ॥	२८	२६	२६ ॥	१७	१७	२३	३० ॥	३० ॥	२२ ॥
	श्रवण	खीखूखेखो	२३ ॥	२४ ॥	१९ ॥	२६ ॥	२२	१७	१४	२७	२२	१७	२३	१४ ॥	२५	२८	२८	१८ ॥	१८	२१	२८ ॥	२९ ॥	२२ ॥
	धनि.२	ग गी	१५	१७ ॥	१५ ॥	२२ ॥	२४ ॥	२९	२६	१२	२६	२१	७	१६	२६ ॥	२७	२८	१८ ॥	२३ ॥	१९	२६ ॥	१५ ॥	२२ ॥
कुम्भ	धनि.२	गु गे	१७ ॥	१९	१७	१८	२०	२४ ॥	२५	११	२५	२९ ॥	१५ ॥	२४ ॥	१८	१८ ॥	१९ ॥	२८	३३	२८ ॥	१८ ॥	७	१४
	शत.	गोसासीसू	११ ॥	८ ॥	२५	२५	१९	२६	२६ ॥	२१	१९	२२ ॥	२४ ॥	२४ ॥	१८	१८	२४ ॥	३३	२८	१९	८ ॥	१७	१६
	पू.भा.३	सेसोद	१५ ॥	१५ ॥	१७ ॥	१८ ॥	२६	२०	२० ॥	२६ ॥	११	१५ ॥	२९ ॥	३० ॥	२४	२३	२०	२८ ॥	१९	२८	१७ ॥	२२ ॥	२०
मीन	पू.भा.१	दी	१६ ॥	१६ ॥	१८ ॥	११ ॥	१९	१३	१९	२५	९ ॥	१५	२९	३०	२९ ॥	२८ ॥	२५ ॥	१७	७ ॥	१६ ॥	२८	३३	३० ॥
	उ.भा.	दूथझञ	२७ ॥	२६ ॥	९ ॥	२ ॥	१९ ॥	१२	१८	१९	२१	२४	२२	३०	२९ ॥	२९ ॥	१४ ॥	६	१६	२१ ॥	३३	२८	३५
	रेवती	देदोचची	२५ ॥	२६ ॥	१९ ॥	१२ ॥	११ ॥	४ ॥	१० ॥	२७	२२	२६ ॥	२९	२१	२० ॥	२१ ॥	२२ ॥	१४	१६	१८	२९ ॥	३४	२८

वर-वधु गुण मिलान में नाड़ी आदि ज्ञान हेतु अवकहडा चक्र

अक्षर	चू चे चो,ला	ली,लू ल,लो	अ ई उ ए	ओ वा वी वू	वे वो का की	कू घ ङ छ	के को हा ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे टो पा पी	पू पा ण ठ	पे पो रा री
नक्षत्र	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुनर्व.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
राशि	मेष	मेष	मे१वृ३	वृष	वृ२मि२	मिथुन	मि३क१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिं१क३	कन्या	क२तु२
वर्ण्ण	क्षत्री	क्षत्री	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२	शूद्र	शू३ब्रा१	ब्राह्मण	ब्राह्मण	क्षत्री	क्षत्री	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२
वश्य	चतुष्प.	चतुष्प.	चतुष्प.	चतुष्प.	च२मा२	मानव	मा३ज१	जलचर	जलचर	वनचर	वनचर	व१मा३	मानव	मानव
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जा	मेष	मार्जा	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र
राशि स्वामी	मंगल	मंगल	मं१शु३	शुक्र	शु२बु२	बुध	बु३चं१	चन्द्र	चन्द्र	सूर्य	सूर्य	सू१बु३	बुध	बु२शु२
गण्ण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस
नाड़ी	आदि	मध्य	अंत्य	अंत्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अंत्य	अंत्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य
हंस—`	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२
युंजा	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य

अक्षर	रू रे रो ता	ती तू ते ता	ना नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भ भी	भू ध ढ़ ढ	भे भो जा जी	खी खू खे खो	ग गी गू गे	गो स सी सू	से सो दा दी	दू थ झ त्र	दे दो चाची
नक्षत्र	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
राशि	तुला	तु३वृ१	वृश्चि.	वृश्चि.	धनु	धनु	ध१म३	मकर	म२कुं२	कुंभ	कुं३मी१	मीन	मीन
वर्ण्ण	शूद्र	शू३ब्रा१	ब्राह्मण	ब्राह्मण	क्षत्री	क्षत्री	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२	शूद्र	शू३ब्रा१	ब्राह्मण	ब्राह्मण
वश्य	मानव	मा३की१	कीट	कीट	नर	नर१च२	चतुष्पद	च१॥ज१॥	ज२न२	नर	न३ज१	जलचर	जलचर
योनि	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
राशि स्वामी	शुक्र	शु३मं१	मंगल	मंगल	गुरु	गुरु	गु१श३	शनि	शनि	शनि	श३गु१	गुरु	गुरु
गण्ण	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी	अंत्य	अंत्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अंत्य	अंत्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अंत्य
हंस—`	वायु	वा३ज१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल
युंजा	मध्य	मध्य	मध्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य

तारा का ज्ञान - अवकहडा चक्र से वर एवं कन्या के नाम के प्रथम अक्षर से अथवा नक्षत्र से राशी, राशी स्वामी, वर्ण, योनि, गण एवं नाड़ी जानकर क्रमश: भुकूट, ग्रहमैत्री, वर्ण, योनि, गण एवं नाडी गुण मिलान संख्या ज्ञात होती है. वर की तारा के लिए वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनने पर जो संख्या मिले उसमें ९ का भाग देने पर शेष वर की तारा होती है, इसी प्रकार कन्या की तारा जानकर ९ का भाग देने पर वर-वधू की तारा संख्या ज्ञात होती है। तारा चक्र से गुण ज्ञात होते हैं।

प्रीति (मित्र) षड़ाष्टक						वैर षड़ाष्टक					
मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	तुला	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	तुला
वृश्चि	तुला	मकर	धनु	मीन	वृष	कन्या	धनु	वृश्चिक	कुम्भ	मकर	मीन

भुकूट गुण ७

ॐ	वर राशि												
	राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	धनु	मक	कु.	मी.
कन्या	मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
	वृ.	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
	मि.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
	क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
	सिं.	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
	क.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
	तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
	वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
	धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
	मक	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
	कु.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
	मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

	कन्या का वर्ण				
	वर्ण्ण	ब्रा.	क्ष.	वै.	शूद्र
कन्या का वर्ण	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

कन्या वश्य	वर वश्य				
	चतु	मा	जल	वन	कीट
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

४		वर की योनी													
	योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वा	मा	मूष	गौ	महि	व्या	मृग	वान	न—ु	सिंह
कन्या की योनी	अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
	गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	३	२	२	०
	मेष	३	३	४	२	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
	सर्प	२	२	२	४	२	१	१	१	२	२	२	२	०	२
	श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
	मार्जा	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
	मूषक	३	३	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
	गौ	३	३	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
	महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
	व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	२	४	१	१	२	२
	मृग	३	३	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
	वानर	२	२	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	२
	नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
	सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	३	२	२	२	२	४

5. ग्रह मैत्री		वर राशि स्वामी						
स्वामी ग्रह		सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
कन्या का राशि स्वामी	सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
	चंद्र	५	५	४	१	४	॥	॥
	मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
	बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
	गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
	शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
	शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

कन्या	३. वर की तारा								
	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

६.गण कूट

		वर का गण		
कन्या	गण	देव	मनु	राक्ष
	देव	६	५	१
	मनु	६	६	०
	राक्ष	०	०	६

८. नाडी कूट

		वर नाड़ी		
कन्या	नाड़ी	आ.	म.	अं
	आदि	०	८	८
	मध्य	८	०	८
	अन्त्य	८	८	०

५. निसर्ग मैत्री

ग्रह मैत्री	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चं.मं.गु.	सूर्य,बुध	सू.चं.गु.	सू.शु.	सू.चं.मं.	बु.श.	बु.शु.
सम	बुध	अन्य ग्रह	शुक्र,शनि	मं.गु.श.	शनि	मं.गु.	गुरु
शत्रु	शुक्र,शनि	----	बुध	चंद्र	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं.मं.

अष्टकूट मिलान से विचारणीय विषय

वर्ण से वर-वधू के मध्य आपसी तालमेल, वश्य से परस्पर आदर भाव, तारा से स्वास्थ्य, योनि से सामजस्य, ग्रहमैत्री से वौद्धिक स्तर पर तालमेल, गण से आपसी मिजाज, भकूट से पारिवारिक मेलजोल, नाड़ी से परस्पर भौतिक स्वास्थ्य तालमेल का विचार किया जाता है।

तीन प्रकार के विष कन्या योग

१. जनोर्लग्ने रिपुक्षेत्रे, संस्थितः पाप खेचरः। द्वौ सौम्यावपि योगेश्मिन्, संजाता बिषकन्यकः॥ जिस कन्या के जन्म लग्न में एवं रिपु(छटे)भाव में पापग्रह (सूर्य,क्षीण चन्द्र, मंगल,शनि, राहू, केतु)हों एवं दो शुभ ग्रह हों तो बिषकन्या योग होता है। यदि पापग्रहों के साथ दो से अधिक शुभ ग्रह हों तो बिषकन्या योग नहीं होता है।

२. लग्ने शनैश्चरो यस्याः, सुतेऽर्कौ नवमे कुजः। बिषाख्या सापि नोद्वाह्या त्रिविधा बिषकन्यकाः॥ यदि कन्या के लग्न में शनि, पांचवें सूर्य, नवें मंगल हो तो बिषकन्या होती है।

३. सूर्य भौमार्कि वारेषु, तिथि भद्रा शताधिकम्। आश्लेषा कृतिका चेत् स्यात्तत्र जाता बिषाङ्गना॥ यदि कन्या के जन्म के समय २ तिथि, आश्लेषा नक्षत्र और शनिवार हो या ७ तिथि, कृतिका नक्षत्र और शनिवार हो या ७,१२ तिथि, शतभिषा नक्षत्र और मंगलवार हो या १२ तिथि, विशाखा नक्षत्र और रविवार का योग हो तो विषकन्या योग होता है।

॥ विषकन्या योग ॥

तिथि	२	७	७, १२	१२
वार	शनिवार	शनिवार	मंगलवार	रविवार
नक्षत्र	अश्लेषा	कृतिका	शतभिषा	विशाखा

बिषकन्या योग परिहार

सावित्र्यादि व्रतं कृत्वा, वैधव्य विनिवृत्तये। अश्वत्थादिभिरूद्वाह्य, दद्यात्तां चिरजीविने॥ ऐसी कन्या को ज्येष्ठ शुक्ल १४ को सावित्री का व्रत करने पर दोष शांत हो जाता है। विषकन्या का सर्वप्रथम पीपल से विवाह करके, जिस वर की कुण्डिली में अधिक आयु का योग हो ऐसे वर से विवाह करने की शास्त्राज्ञा है।

विवाह में कुंडली मिलान

जन्म राशि से मिलान करें या नाम राशि से ?

कार्य के अनुसार जन्म राशि या नाम राशि विचार

(अ) विवाहे सर्वमांगल्ये , यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं, नाम राशिं न चिंतयेत्॥ भावार्थ - विवाह एवं अन्य मांगलिक कार्य, यात्रा एवं गोचर ग्रह फलादेश करने में जन्म राशि से ही विचार करना चाहिए।

(ब) देशे ग्रामे गृहे युद्धे, सेवायां व्योहारके। नाम राशे प्रधानत्वं, जन्म राशिं न चिंतयेत्॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च, वादे द्युते स्वरोदये। मंत्रे पुनर्भूवरणे च, नाम राशेः प्रधानता॥ भावार्थ - देश या ग्राम में निवास हेतु कांकिणी विचार, गृह प्रवेश, वाद-विवाद, नौकरी, एवं दैनिक व्यवहार के कार्यों में नाम राशि से विचार करना चाहिये।

यदि वर या वधु में से किसी की जन्म राशि ज्ञात न हो तव क्या करें ?

मुहू. सग्रह दर्पण (वसिष्ठ)- के अनुसार - अज्ञात जन्मनां नृणां, नाम्नि भं परिकल्पयेत्। तैनेव चिंतयेत् सर्वं, राशि कूटादि जन्मवत्॥ जन्मभं जन्म धिष्णयेन, नाम धिष्णयेन नामभम्। व्यत्ययेन यदा योज्यं, दम्पत्योर्निधनं भवेत् ॥ भावार्थ :- वर वधु में से किसी एक की अज्ञात जन्म राशि होने पर दोनों के प्रचलित नाम राशियों से कुंडली मिलान देखना चाहिये, अन्यथा अनिष्ट की संभावना होती है।

कितने गुण मिलने पर शुभ मिलान का आदेश करें ?

अष्टकूटों के कुल गुण ३६ में से आधे १८ गुण मिलान होने पर शुभ होने की परम्परा है। मुहूत्त गणपति के श्लोक क्रमांक १३ में - गुणाधिको समुद्वाह कत्तव्यो वर कन्ययो:।। यह लिखकर केवल अधिक गुण मिलान का आदेश किया है। न्यूनतम गुण संख्या का स्पष्ट उल्लेख नहीं है। मुहूत्त चिंतामणि के किसी भी श£ोक में न्यूतम् गुण मिलान संख्या का आदेश नहीं है। इसकी श्री योगेश्वर पाठक की टीका में न्यूनतम् १८ गुण का एक श्लोक मिला है - अशुभोऽष्टादशाल्पश्चेत्, शुभस्त्वष्टादशाधिकः।गुणयोगः शुभोऽतीव, सप्तविंशाधिकः स्म्तः॥अन्यत्र सूत्र : - गुणै षोडशभिर्निन्दं, मध्यमा विंशतिस्तथा। श्रेष्ठं त्रिंशद् गुणं यावत, परतस्तूत्तमोत्तमः॥ भावार्थ :- १६ तक गुण मिलान निंदनीय हैं। १७ से २० तक गुण मिलान मध्यम हैं। २३ तक गुण श्रेष्ठ हैं। २३ से अधिक गुण मिलान उत्तरोत्तर उत्तम हैं। (मंगलीक, षडाष्टक इत्यादि का सपरिहार शुभ हो तो उसके वाद शुभ कुंडली मिलान का आदेश करें)

नाड़ी दोष परिहार

(१) - मुहू.संग्रह दर्पण- विवाह प्रकरण, श्लोक ८४

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां, वर्ण दोषस्तु क्षत्रिणः। गण दोषस्तु वैश्यानां, योनि दोषस्तु पादुजान्॥ भवार्थ : - ब्राम्हण वर्ण के लिये नाड़ी दोष, क्षत्रिय को वर्ण दोष, वैश्य के लिये गणदोष और क्षुद्रों को योनि दोष त्याज्य है।

(२) - राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः, स्यान्नक्षत्रैक्ये राशि युग्मं तथैव। नाड़ी दोषो नो गणानां च दोषो, नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्॥ मुहू. कल्पद्रुमः- ॠक्षं भिन्नं राशिरोयदि स्याद्, राशि द्वन्द्वं चैकमृक्षं यदापि। नक्षत्रैक्ये पादभेदो यदि स्यान, नाड़ी दोषो नो गणास्यापि दोषः॥ भावार्थ- यदि वर एवं कन्या की राशी एक ही हो तथा नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा नक्षत्र एक ही हों तथा नक्षत्र चरण भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी और गण दोष नहीं होता है।

(३) ज्योतिष चिंतामणिः- रोहिण्याद्रा मृगेन्द्रागनी पुष्य श्रवण पौष्णभम्। अहिर्बवुध्न्यऋषमे तेषां नाड़ी दोषो न विद्यते ।। भावार्थ - रोहिणी, मृगशिर, आद्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों में दोनों का एक नक्षत्र हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।

(४) - हेमाज्य रत्नगोदानं मृत्युंजय जपं तथा। कुर्यादावश्यके द्वाहे नाड़ी दोषापनुत्तये॥भवार्थः- अति आवश्यकता में स्वर्णादि रत्न एवं गोदान तथा मृत्युंजय जाप कराने से नाड़ी दोष की शान्ति कराई जा सकती है।

दुष्ट भकूट - षडाष्टक , नवमपंचम एवं द्विद्वादशदोष परिहार

यदि वर एवं कन्या की राशियां परस्पर छटवीं-आठवीं, नवम-पंचम या द्वितीय-द्वादश हो तो मिलान निषेध होता है।

परिहार -(१) प्रोक्ते दुष्टभकूटेति राश्योरेकाधिपत्यके। मैत्र्या चोद्वाहनं श्रेष्ठं ह्येकनाडी न चेत्तयोः॥ राशिपौ वैरभावेऽपि मैत्रो चेत् स्यात्तदंशयोः। नाड़ी पश्येच्च ताराणां शुद्धमुद्वाहनं शुभम्॥ यदि वरकन्या की राशियों का स्वामी एक ग्रह हो या परस्पर मित्रता हो या दोनों की नाड़ी एक न हो तो दुष्टकूट दोष न होकर मिलान शुभ होता है। इसी प्रकार यदि वरकन्या के नवांश स्वामियों में मित्रता तथा राशि नाथों में शत्रुता रहने पर भी नाड़ी एवं तारा शुद्धि हो तो विवाह शुभ होता है।

(२)मुहू. गणपतिः- ताम्रं द्विद्वादशे दद्यात् सुवर्णं च षडष्टके। गोयुग्मं नवपंच्याख्ये स्वर्णं वर्णादिदूषणे॥ द्विद्वादश योग में तांबा, षडाष्टक में सोना, नवमपंचम दोष में दो गायें एवं वर्णादि दोष में सोना दान कर विवाह शुभ होता है।

मंगलीक योग एवं परिहार

लग्ने व्यये च पाताले, जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुर्विनाशाय, भर्ता कन्या विनाशदः।। अर्थात लग्न या चंद्र से १, ४, ७, या १२ वें भाव में मंगल होने पर जन्म कुंडली मंगलीक होती है। कन्या के मंगलीक हाने पर वर को हानि या वर के मंगलीक होने पर कन्या को हानिकारक होता है।

(१) कुज दोष वती देया, कुज दोष वते किल। नास्ति दोषो चानिष्टं दम्पत्यो सुख वर्धनम्।। भावार्थ- वर कन्या दोनों के मंगलीक होने पर विवाह शुभ है।

(२) शनि भौमोऽथवा कश्चित, पापो व तादृशो भवेत्। तेष्वेव भवनेष्वेव, भौम दोष विनाश कृत्।। भावार्थ- यदि एक की जन्म कुण्डली में मंगल दोष हो और दूसरे की कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल, शनि, सूर्य, राहू, केतु पाप ग्रह हो तो मंगल दोष भंग हो जाता है।

(३) राशीमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते।। भावार्थ- यदि राशि मैत्री एवं एक ही गण हो या २७ से अधिक गुण मिले हों तो मंगल दोष अविचारणीय होता है।

(४) ज्योतिष रत्नमाला :- सप्तमे वाऽष्टमे भौमे, गुरु णा चेन्निरीक्षितः। तदा तु सर्वसौख्यं स्यात, भौमदोषो विनश्यति॥ भावार्थ :- सप्तम् या अष्टम् में वैठे मंगल पर यदि गुरु की दृष्टि हो तो मंगल दोष समाप्त होकर सर्व सुख प्रदायक हो जाता है।

(५) अस्त नीचस्थ संधिश्च , बलहीनं भौमः यदा।जीव पश्च्योयुर्तिराहु, भौम दोषो तदा नहि।। भावार्थ- अस्त, संधिगत या नीच राशि गत , इस प्रकार बलहीन मंगल का दोष नगण्य होता है, अथवा गुरु से दृष्ट या राहु से युत मंगल की स्थिति में भी मंगल दोष नहीं होता है।

(६) अजे लग्ने व्यये चापे, पाताले वृश्चिके कुजे। द्यूने मृगे कर्कीचाष्टौ, भौमदोषो न विद्यते॥ भावार्थ- यदि मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक का चौथे भाव में,मकर का सातवे में, कर्क का आठवे में या धनु का मंगल वारहवे भाव में हो तो भौम दोष नहीं होता है।

ग्रह मैत्री से गण, योनि, वर्ण एवं षडाष्टकदोष परिहार

बृहज्जयोतिःसार-गणदोषो योनिदोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्। चत्वारि नैव दुष्यंति, राशी मैत्री यदा भवेत्।। ग्रह मैत्री होने पर चारों दोष शान्त होकर विवाह शुभ होता है। गण दोष विशेष में - मैत्र्यां राशीशयोरंशस्वामिनोर्वरकन्ययोः। न तत्र गणदोषः स्वाद्विवाहः शुभदो मतः।। अर्थात यदि वरकन्या के राशि या नवांश के स्वामियों में मित्रता हो तो गणदोष नहीं होता है।

विवाह लग्न शोधन विधि एवं गोधूलि लग्न

(१) मुहूर्त ग्रंथों के अनुसार विवाह लग्न से ३, ६, ८, ११ वें सूर्य, राहू, केतु व शनि शुभ होते हैं। ३, ६, ११ वें मंगल, २, ३, ११ वें चंद्र, १, २, ३, ४, ५, ६, ९, १०, ११ वें गुरु तथा बुध तथा १, २, ४, ५, ९, १०, ११ वें स्थान में शुक्र शुभ होते है।

(२) त्रिविक्रम संहिता के अनुसार - त्याज्या लग्ने अब्दयो मंद: षष्टे शुक्रेन्दु लग्नपा:। रन्ध्रे चंद्रादय: पंच, सर्वे अब्ज गुरु समौ॥ भावार्थ- लग्न में चंद्र या पापग्रह न हों, लग्न से छटे घर में शुक्र चंद्र या लग्नेश न हों, आठवें स्थान में चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश न हों सप्तम् भाव में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। परिहार स्वरूप सातवें चंद्र तथा गुरु सम फ ल करते हैं, १२वें शनि, ३ रे शुक्र, चतुर्थ में राहू, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि से शांति हो जाती है। इसलिये पंचांग में विवाह लग्न के साथ जहां दान लिखा हो वहां दानादि करवाना चाहिए।

(३) लग्न कर्तृरी दोष, अष्टम मंगल, छटें-बारहवें चंद्र, एवं छटें-आठवें शुक्र इत्यादि दोषों का परिहार संबंधित ग्रह के निर्बल होने या बुध-गुरु -शुक्र के केन्द्र या त्रिकोण में हो जाता है।

विवाह लग्न में पंचेष्ठ बल - लग्न में ग्रहों के जो शुभ स्थान बताये गये हैं, उनमें ग्रह रहने पर प्रत्येक ग्रह को एक बल प्राप्त होता है। लग्न में सूर्यादि ९ ग्रहों में से कम से कम ५ ग्रह शुभ स्थान में होने पर लग्न को ५ अंक बल प्राप्त होने पर लग्न ग्राह्य हो जाती है। इसे ही पंचेष्ट बल कहते हैं।

विवाह लग्न में विंशोपक बल - उपरोक्त पंचेष्ट बल पद्धति में प्रत्येक ग्रह को एक समान बली माना गया है, जवकि वास्तव में प्रत्येक ग्रह का नैसर्गिक बल पृथक-पृथक होता है । मुहुर्त चिंतामणि के अनुसार चंद्र बल-५, सूर्यबल-३।३०, मंगलबल-१।३०,गुरु का बल-३, शनि, राहू, और केतु का बल मंगल के समान (डेढ़-डेढ़) होता है। नैसगृक बल लेने के कारण विंशोपक पद्धति, पंचेष्ट से सूक्ष्म है। समस्त ग्रहों के नैसर्गिक बल का योग २० होने से यह विंशोपक कहलाता है। इस पद्धति में १० बल प्राप्त होने पर लग्न ग्राह्य हो जाती है।

विवाह मुहूर्तों में १० दोष - (१) लत्ता (२) पात (३) युति (४) वेध (५) जामित्र (६) मृत्युवाण (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) क्रान्सिाम्य और (१०) दग्धा तिथि, कृमानुसार दश दोष होते हैं। सीधी रेखा (।) दोष अभाव अर्थात् गुण की सूचक है तथा वक्र रेखा (ऽ) दोष सूचक होती है।

गोधूली लग्न - कुलिक: क्रांतिसाम्यं च लग्ने षष्ठाष्ठमे शशी। तदा गोधूलिका त्याज्य: पंच दोषश्च दूषित:।।विवाह मुहूर्त में पंचांग शुद्धि के साथ-साथ लग्न में चन्द्र एवं पापग्रह शुद्धि, षष्ठ भाव में चन्द्र शुद्धि तथा अष्टम में चन्द्र-मंगल शुद्धि देखकर तथा क्रांतिसाम्य काल छोडक़र गोधूलि लग्न स्वीकार की गई है। गुरु वार को सूर्यास्त के उपरान्त एवं शनिवार को सूर्यास्त के पहले कुलिक होने से उस समय गोधूलि लग्न त्याज्य है।

गोधूलि लग्न समय- सूर्यास्त काल से आधा घटि (१२ मिनट) पहले व १२ मिनट वाद तक, जिस समय गाय आदि चौपाये अपने-अपने घरों को लौटते हुए अपने खुरों से मार्ग में धूल उड़ाते हुए आते हैं, उस काल को मुहूत्र्त शास्त्रों में गोधूलि कहा है।

बली लग्न एवं शुभ योगों से अनेक अशुभ योगों का परिहार

बली लग्न से अनेक दोषों का परिहार

विवाह, मुंडन, उपनयन आदि मांगलिक कार्यों में पंचाग शुद्धि (शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण) के पश्चात लग्न शुद्धि की जाती है। लग्न शुद्धि के विना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फ ल वैसे ही व्यर्थ जाता है जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी। सूत्र- लग्न वीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधै:। तत्फ लं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ अन्य सूत्र- सर्वे दोषा: विनश्यन्ति लग्न शुद्धिर्यदा भवेत्।

(अ) मुहूर्त चिंतामणि के अनुसार -केन्द्रे कोणे जीव आये रवौ लग्ने चंद्रे वापि वर्गोत्तमे वा। सर्वे दोषा नाशमायन्ति चंद्र लाभे तद्वमुहूत्र्त नवांश दोषा:॥ भावार्थ- यदि गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हों, सूर्य ग्यारहवैं भाव में हों या लग्न वर्गोत्तम या चंद्र वर्गोत्तम में हों तो समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं। यदि चंद्र ग्यारहवें भाव में हों तो नवांश दोष भी नष्ट होकर शुभ मुहूत्र्तकाल हो जाता है।

(ब) मुहूर्तचिंतामणि के अनुसार -त्रिकोणे केन्द्र वा मदनरहिते दोषशतकं हरेत्सौम्या: शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरु । भवेदाये केन्द्रेऽङ्गप उत लवेशो यदि तदा समूहं दोषानां दहन इव तूलं शमयति॥ भावार्थ-यदि बुध केन्द्र या त्रिकोण में हों तो सौ दोष, यदि शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में हों तो एक हजार दोष और यदि गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हों तो एक लाख दोषों का नाश करते हैं। यदि लग्नेश या नवांशेश ग्यारहवें भाव में हो तो दोषों का समूह उसी तरह नष्ट हो जाता है जैसे आग से रुई का ढेर।

(स) मुहूर्त चिंतामणि के अनुसार- अव्दायनत्र्तुतिथि मास भपक्षदग्धतिथ्यन्ध काणवघिरांगमुखाश्च दोषा। नश्यन्ति विद्गुरु शितेष्विह केन्द्रकोणो तद्वच्च पापविधुयुक्तनवांशदोष:॥ भावार्थ- यदि बुध, गुरु शुक्र ये केन्द्र या त्रिकोण में हों तो लुप्त संवत्सरादि वर्षदोष, अयन दोष, ऋ तु दोष, रिक्तादि तिथि दोष, अधिक-क्षय मासादि दोष, दग्धतिथि दोष, अंध-वघिर-कांणादि लग्न दोष एवं पापग्रह की चंद्र से युति दोष , नवांश जन्य दोष, इन सभी दोषों का नाश हो जाता है।

शुभ योगों से अशुभकाल का परिहार

अयोगे सुयोगऽपि चेत् स्ययात्तदानीमयोगं निहत्यै सिद्धिं तनोति (मुहूत्र्त चिंतामणि) भावार्थ-यदि किसी अशुभ योग के समय कोई शुभ योग आ जाये तो वह समय शुभ हो जाता है। रवियोग, अमृत सिद्धियोग, सर्वार्थ सिद्धियोग, कुमार योग, सिद्धयोग एवं आनन्दादि योगों में से शुभ योग में अशुभ एवं दोष युक्त समय का समन होकर वह समय शुभ हो जाता है।

(अ) दोष समूह नाशक रवियोग- रवियोगा: स्युर्दोषसङ्घविनाशका: (मुहूत्र्तचिन्तामणि) । सूर्ययद्दशमे षष्टे तुर्यें विंशे त्रयोदशे। नवमे चन्द्र नक्षत्रे रवियोग:इशुभप्रद:॥ अनेक दोषसङ्घानां ध्वंसकोऽय मुदाहृत:॥ (मुहूर्तगणपति)। रवियोग में दोषों का समूह नष्ट हो जाता है। यह प्रबल शुभ योग होता है।

(ब) दोष समूह नाशक अमृतसिद्धि योग - अमृत: सिद्धियोग: स्यात् सर्वकार्यार्थसिद्धिद:। यथा सूर्यस्तमो हन्ति दोषसङ्घास्था त्वयम्।। (मुहूत्र्तगणपति)। जिस प्रकार सूर्य अन्धकार का नाश करता है, उसी **प्रकार अमृत सिद्धियोग से दोष समुदाय का नाश होकर वह समय सभी कार्यों के लिए शुभ हो जाता है।**

भद्रा किन कार्यों में शुभ होती है ?

युद्धे, भूपतिदर्शने भयपदे घाते च पाते हठे, वैद्यस्यागमने जलप्रतरणे शत्रौ: समुच्चाटने। संघट्टे गदमज्जने गजमृगोष्ट्राष्वादिके संग्रहे, स्त्रीसेवा ऋतुमज्जने च शकटे भद्रा सदा गृह्यते॥ भावार्थ - युद्ध, राजदर्शन, आक्रमण, घातकार्य, हठ, वैद्य को बुलाना, तैरना, शत्रु से मुकावला, चिकित्सा, पशुक्रय, वाहन लेना देना, प्रेम, स्नान आदि में भद्रा शुभ होती है।

भद्रा परिहार

१) मुहूर्त चिंतामणि:- कुंभे कर्कद्वये मत्र्ये स्वर्गेऽब्जेकजात्त्रयेऽलिगे। स्त्री धनुर्जूकनक्रेऽधो, भद्रा तत्रैव तत्फ लम्॥ भावार्थ- यदि कुंभ, कर्क, मीन या सिंह राशि में चंद्रमा हो तो भद्रा मनुष्य लोक में रहती है। यदि मेष, वृष, मिथुन या वृश्चिक राशि में चंद्र हो तो भद्रा वास स्वर्ग में व शेष राशियों में भद्रा पाताल में होता है। भद्रा का वास जहां होता है, वहीं उसका फ ल होता है। इसके अलावा दिन में तिथि के उत्तरार्ध की भद्रा और रात्री में पूर्वार्ध की भद्रा शुभ कही गई है। एवं मुहूर्त चिंतामणि एवं भविष्य पुराण के अनुसार ''पुच्छे जयावहा:'' अर्थात पुच्छ में अवश्य विजय एवं कार्य सिद्धि होती है।

(२) मुहूर्त गणपति:- तिथे: पूर्वार्धजा रात्रौ, दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात्, कार्येऽत्यावश्यके सति।।२२ भावार्थ - तिथि के प्रथम अर्ध भाग की भद्रा रात में तथा दूसरे अर्ध भाग की भद्रा दिन में शुभ होती है।

भद्रा का पुच्छ काल

यदि एक तिथि का औसतन भोगकाल ६० घटी मान लिया जाय तो साढ़े सात घटी का एक प्रहर बनता है। भद्रा का पुच्छकाल पक्ष एवं तिथियों के विभिन्न प्रहरों की अन्तिम तीन घटी में विद्यमान रहता है, जो कि इस कोष्टक में स्पष्ट है। प्रहर के प्रारम्भ की गणना तिथि के प्रारम्भ समय से की जाती है।

कृष्ण पक्ष में		
तिथि	प्रहर	पुच्छ घटी
३	सातवें प्रहर	४९ घटी ३० पल से ५२ घटी ३० पल
७	दूसरे प्रहर	१२ घटी ०० पल से १५ घटी ०० पल
१०	पांचवें प्रहर	३४ घटी ३० पल से ३७ घटी ३० पल
१४	चौथा प्रहर	२७ घटी ०० पल से ३० घटी ०० पल

शुक्ल पक्ष में		
तिथि	प्रहर	पुच्छ घटी
४	आठवें प्रहर	५७ घटी ०० पल से ६० घटी ०० पल
८	प्रथम प्रहर	४ घटी ३० पल से ७ घटी ३० पल
११	छटवें प्रहर	४२ घटी ०० पल से ४५ घटी ०० पल
१५	तीसरे प्रहर	१९ घटी ३० पल से २२ घटी ३० पल

विवाहाङ्ग कार्य गणेश पूजन, तेल , मण्डप

मुहूर्त गणपति एवं अन्य ग्रन्थों के अनुसार, विवाह के नक्षत्र के अलावा अन्य सौम्य नक्षत्रों में (अश्विनी, भरणी,आद्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा नक्षत्रों को छोडकर), वरकन्या को चन्द्रवल के दिन शुभ तिथि में, गणेश पूजन, तेल, अंकुरार्पण, कंकणादि आभूषण, वेदी, एवं मण्डप रोपना चाहिए। घर से वाहर निकलते समय जो वाम दिशा पड़े, उस दिशा में चार-चार हाथ चौड़ी एवं एक हाथ ऊँची सुन्दर वेदी का निर्माण करना चाहिए। वेदी का प्रथम स्तम्भ गाढ़ते समय यदि सिंह, कन्या, तुला के सूर्य हों तो ईशान कोण में गाढना चाहिए। यदि वृश्चिक धनु मकर के सूर्य हों तो वायव्य कोण में, कुम्भ, मीन, मेष में नैऋत्य में और वृष, मिथुन कर्क के सूर्य होने पर प्रथम स्तम्भ अग्निकोण में गाढना चाहिए। विवाह के दिन से सम दिनों (छटवां दिन त्यागकर) में या पांचवें-सातवें दिन शुभ नक्षत्र वार में मण्डप विसर्जन शुभ होता है।

विवाह संस्कार - शुभ मास- मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक, मकर एवं कुम्भ के सूर्य में। देवशयनकाल त्यागकर। शुक्र गुरु के उदयकाल में। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रथमा तक पांच दिन छोडकर। रोहिणी, मृगशिरा, मघा, उत्तराफाल्गुनी, स्वांति, अनुराधा, मूल, उत्तरभाद्रपद एवं रेवती (कात्तायनोक्त चार नक्षत्र अश्वि, हस्त, चित्रा, श्रव. एवं घनिष्ठा) नक्षत्रों में। व्यतिपातादि अशुभ योगों के शास्त्रोक्त अशुभकाल को त्याग कर। शकुनादि चार करण त्यागकर। लत्तादि दस दोष विचार कर विवाह शुभ है।

वधू प्रवेश मुहूर्त - मास- विवाह से विषम मास या २, ४,५,६, ७,८, १०, १२, १४ वें दिन। तिथि- १, २, ३, ५, ७,८, १०, १२, १३, १५ शुभ हैं। भद्रा काल छोडकर। वार- सोम, बुध, गुरु, शुक्र शुभ। नक्षत्र- तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी,हस्त, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा,स्वांती, श्रवण, घनिष्ठा, मूल। लग्न- २, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२,लग्न शुभ। केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ में अशुभ ग्रह हों, लग्न से चतुर्थ एवं अष्टम स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो।

द्विरागमन मुहूर्त - विविध- मेष, वृश्चिक, कुंभ के सूर्य में, विवाह के एक वर्ष के अंदर या विषम वर्षों में, गुरु-शुक्र उदित हों, एवं मलमास न हो। शुभ वारों में, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, अश्विनी एवं मूल नक्षत्रों में द्विरागमन शुभ है।

नूतन वध्वा: पाककर्म मुहूर्त - तिथि- पर्व एवं रिक्ता त्यागकर। नक्षत्र- मृगशिरा, तीनों उत्तरा, कृषानु, शाक्र, श्रुतित्रये। वार- सोम, बुध, गुरु, शुक्र शुभ। लग्न- स्थिर २, ५, ८, ११ लग्न। चतुर्थ एवं सप्तम् भाव शुद्ध व वली हो। षष्ट भाव ग्रह रहित हो। ऐसे शुभ समय में नव वधू से प्रथम वार भोजन वनवाकर, देवताओं को भोग लगाकर, ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए।

विवाह के १० दोषों का वर्णन

१. लत्ता दोष - विवाह नक्षत्र से १२ वें नक्षत्र पर सूर्य, २२ वें नक्षत्र पर चंद्र, ३ रे नक्षत्र पर मंगल, ७ वें नक्षत्र पर बुध, ६ वें नक्षत्र पर गुरु , ५ वें नक्षत्र पर शुक्र, ८ वें नक्षत्र पर शनि, ९ वें नक्षत्र पर राहु लात मारते हैं।

२. पात - चण्डायुध दोष - साध्य, हर्षण, शूल, वैधृति, व्यतिपात, या गंड योग के समाप्ती काल के समय जो नक्षत्र विद्यमान होता है, वह पात दोष से दूषित होता है।

३. पाप युति दूषित नक्षत्र दोष एवं परिहार - जिस नक्षत्र में सूर्य, मंगल, शनि, राहू या केतु होते हैं, वह नक्षत्र पाप ग्रहों से युत होने के कारण युति दूषित होता है। ऐसे नक्षत्र में मांगलिक कार्य वर्जित होते हैं।

४. वेध दोष ,एवं परिहार- नक्षत्र वेध दो प्रकार का होता है, पहला पंच शलाका और दूसरा सप्त शलाका। इस पंचांग के मुख पृष्ट पर दोनों प्रकार के वेध जानने के चक्र दिए गये हैं। पंच शलाका वेध का विचार विवाह, दान, वधु प्रवेश एवं वर वरण एवं द्विरागमन में करना चाहिए। शेष मांगलिक कार्यों में सप्त शलाका वेध से विचार करना चाहिए।

५. जामित्र दोष एवं परिहार - विवाह नक्षत्र से ५५ वें नवांश या १४ वें नक्षत्र में ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। शुभ ग्रह जामित्र में विवाह की परम्परा है।

६. बाण दोष - बाण पांच होते हैं। यथा रोग बाण उपनयन में, अग्नि बाण गृह निर्माण में, राज बाण राज कार्यों में, चोर बाण यात्रा में तथा मृत्यु बाण का विचार विवाह में करना चाहिए। जिस समय सूर्य का गतांश १, १०, १९ या २८ होता है उस समय मृत्यु बाण होता है।

७. खार्जूल (एकार्गल) दोष - जिस समय व्याघात, गंड, व्यतिपात, विष्कुंभ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगंड में से कोई योग हो तथा सूर्य नक्षत्र से अभिजित् सहित गिनने पर चन्द्रमा व सूर्य के बीच नक्षत्र विषम संख्यक हों तो यह दोष होता है।

८. उपग्रह दोष - यदि सूर्य नक्षत्र से विवाह नक्षत्र ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४, २५ संख्या पर पड़े तो उपग्रह दोष होता है।

९. दग्धातिथि दोष - धनु व मीन के सूर्य में द्वितीया, वृष-कुम्भ में चतुर्थी, मेष-कर्क में षष्ठी, मिथुन-कन्या में अष्टमी, सिंह-वृश्चिक में दशमी, मकर-तुला के सूर्य में द्वादशी तिथि दग्ध होती है।

१० . क्रान्तिसाम्य दोष काल -जिस समय सायन सूर्य एवं सायन चन्द्र स्पष्ट का योग ६ या १२ राशि के तुल्य होता है, उस समय दोनों की क्रान्ति समान होने से यह योग क्रान्तिसाम्य कहलाता है। क्रान्तिसाम्य, सूर्य चंद्र क्रांतियों के वीच ३३ कला अंतर पर प्रारंभ और अंत होता है। कहते हैं कि अग्नि में लकडी जलने से बच सकती है, परन्तु क्रान्तिसाम्य काल में शुभ कर्म नहीं। यह अत्यन्त महा दोष काल होता है।

विवाह या अन्य कार्य में सूतक - अशौच निर्णय

(१) मुहूर्त संग्रह दर्पण, विवाह प्रकरण- वध्वा वरस्यापि कुले त्रिपुरु षे नाशं व्रजेत् कश्चन निश्चयोत्तरम्। मासोत्तरं तत्र विवाह इष्यते शान्त्यार्थ वा सूतक निर्गमऽपरै:।। १०३

भावार्थ - विवाह के निश्चय हो जाने पर कन्या या वर के कुल में तीन पीढ़ी तक कोई मृत्यु को प्राप्त हो जाय तो, एक माह बाद विवाह करना शुभ है। परन्तु आवश्यकता में अशौच के बाद शान्ति करके शुभ है।

(२) मुहूर्त संग्रह दर्पण, विवाह प्रकरण- ब्रह्म पुराण - व्रत यज्ञ विवाहेषु, श्राद्धे होमेऽर्चने जपे। आरब्धे सूतकं न स्याद्, अनारब्धे तु सूतकम्।। १०८ ॥ प्रारंभो वरणं यज्ञे, संकल्पो व्रत सत्रयो:। नांदीमुखं विवाहादौ, श्राद्धे पाक परिक्रिया॥ १०९ ॥

भावार्थ - व्रत, यज्ञ, विवाह, श्राद्ध, होम, हवन अनुष्ठान, जप का प्रारम्भ हो जाने के उपरान्त जन्म या मरण अशौच आ जाये तो सूतक नहीं माना जाता। ब्रह्म पुराण के अनुसार यदि पण्डित ने यजमान से मधुपर्क ग्रहण कर लिया हो तो उसके वाद सूतक नहीं माना जाता है। यज्ञ में ब्राम्हण वरण हो जाने पर प्रारंभ जानना, ब्रतबंध महायज्ञ में संकल्प हो जाने पर प्रारंभ जाना जाता है। विवाहादि का प्रारम्भ नान्दीमुख श्राद्ध से माना जाता है। यज्ञ में २१ दिन पूर्व, विवाह में १० दिन पूर्व, मुण्डन में ३ पूर्व एवं यज्ञोपवीत में ६ दिन पूर्व नांदीमुख श्राद्ध की शास्त्राज्ञा है। श्राद्ध में पाकक्रिया और ब्राम्हणों को निमंत्रण देने पर प्रारंभ माना जाता है।

लघु -गुरु मांगलिक संस्कार विभाजन

चूड़ा केशान्त सीमन्त, विवाहोपनयान बुधा:। गुरु मंगलं इत्याहुस्तद्ः, अन्य लघु मंगलम् ॥ भावार्थ - चूडाकर्म (मुंडन), सीमन्त पुंसवन, विवाह एवं उपनयन, ये चार वड़े संस्कार होते हैं तथा अन्य सभी छोटे श्रेणी के होते हैं।

अभिजित् मुहूर्त

जिस समय सूर्य ठीक याम्योत्तर वृत पर होते हैं वह समय मध्याह्न कहलाता है। मध्याह्न काल जानने के लिये दिनमान में ५ भाग देकर स्थानीय सूर्योदय में जोड़ लें। मध्याह्न काल से एक घटी पहले से एक घटी वाद तक का समय अभिजित् काल कहलाता है। यह नित्य प्रतिदिन शुभ समय होता है। एक घटी का मान २४ मिनट होता है। बुधवार के दिन अभिजित् मुहूर्त का त्याग करना चाहिये।

अबूझ एवं स्वयं सिद्ध मुहूर्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, दशहरा, एवं कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा का अर्ध भाग ये साढे तीन स्वयं सिद्ध मुहूर्त हैं। इस दिन किसी भी शुभ कार्य के लिये पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं होती है।

पंचक नक्षत्रों में क्या - क्या करना अशुभ है ?

धनिष्ठा के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र तक साढ़े चार नक्षत्र का समय पंचक काल होता है। इनमें दाहक्रिया, दक्षिण दिशा की यात्रा, पलंग-पालना या खटिया का प्रथम उपयोग, घर पर छावनी डालना, मकान पर छत डालना इत्यादि कर्म पंचकों में वर्जित होते है। अन्य कार्यों में पंचकों का कोई दोष नहीं होता है।

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग

द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथि, शनि, मंगल, रविवार, उ.फ ा., विशाखा, पू.भा., पुनर्वसु, कृतिका, उ.षा. नक्षत्र इन तीनों का जब योग हो तव त्रिपुष्कर नामक योग होता है। यह मृत्यु, विनाश या वृद्धि में तीन गुना फ ल देता है। यदि उपर्युक्त दिन व तिथियों में धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिरा का योग हो तो द्विपुष्कर नामक योग दो गुना फल देता है।

क्षौरकर्म (हजामत, बाल बनवाना, नखदन्त कर्म) के लिए शुभवार

(१) क्षुरकर्म बुधै: प्रोक्तं त्यक्त्वा भौमं शनिं रविम् (मुहूर्त्तगणपति)।

(२) इन्दुशुक्रेज्यकानाम् (मुहूर्त चिन्तामणि)।

अर्थात मंगल, शनि एवं रविवार को छोडकर अन्य वारों अर्थात् सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार में हजामत वनवाना शुभ है। वारों के वारे में एक मत यह भी है कि, ब्राम्हण वर्ण को रविवार, क्षत्रियों को मंगलवार, वैश्य एवं क्षुद्रों को शनिवार के दिन क्षौर कर्म शुभ है।

क्षौरकर्म में सप्तवारों का फल - भानुर्मासं शनि: सप्त, भौमोऽष्टौ नाशयेत् सुखम्। वद्र्धयेद्बोधन: पंच, मासान् सप्त विशांपति:॥ मुहूर्त गणपति के अनुसार रविवार में क्षौरकर्म (हजामत)बनवाने से एक मास तक, शनिवार में सात मास तक, मंगलवार में आठ मास तक सुख का विनाश होता है। बुधवार में हजामत बनवाने पर पांच मास तक, सोमवार में सात मास तक, शुक्रवार में ग्यारह मास तक सुख में वृद्धि होती है।

क्षौरकर्म में अशुभ तिथियां - अष्टमी प्रतिपत् षष्टी, रिक्ता पर्वाणि संत्येत्। चतुर्दशी त्वमावस्या क्षौरे त्याज्या तु सर्वथा। अर्थात् अष्टमी, प्रतिपदा, छट, रिक्ता, पर्व, चौदस व अमावस्या को हजामत नहीं बनवाना चाहिए।

क्षौर प्रतिबन्ध - भुक्तोऽभ्यक्तो व्रती यात्रारणोद्योगी कृताह्निक:। दत्कटाभरणी रात्रौ सन्ध्ययोरूभयोरपि॥ शुभेच्छुर्नवमे चाह्नि क्षुरकर्म न कारयेत्। प्राग्वया: स्नातको राजा योगीन्द्रो गर्भिणीपति:। सजीवत्पितृको नैते मुण्डया: प्राक्थिता अपि॥ अर्थात् भोजन के वाद, उवटन लगाने के पहले, व्रत के दिन, यात्रा व युद्ध के समय, सन्ध्यादि करने के तत्काल वाद, दोनों संध्या के समय, रात्रि में व नवें दिन क्षौरकर्म नहीं करना चाहिए। अल्पअवस्था वाले को, स्नातक, राजा, मंत्री, योगी, गर्भवती के पति को, पिता के जीवित रहने वाले को तथा उत्कृष्ट आभूषणधरी को मुण्डन (चौलकर्म) नहीं करवाना चाहिए।

क्षौरकर्म अपवाद - अज्ञया विप्राज्ञोवह्न्याधाने बन्धमोक्षणे। मृताशौचे तु दीक्षायां मुण्डनं स्यातु सर्वदा॥ उराजा या अधिकारी की आज्ञा से, अग्न्याधान्य में, जेल से छूटने में, मरण सूतक में, दीक्षा काल में यदि तिथिवार हजामत हेतु ग्रहणीय न हो तो भी मुण्डन कराना चाहिए। आधुनिक मत यह भी है कि, जो लोग प्रतिदिन हजामत बनवाते हैं, उनके लिए उपरोक्त तिथिवारों के प्रतिबन्ध नहीं हैं।

विवाह एवं अन्य मांगलिक कार्यों में १० दोष परिहार

युति दोष परिहार

मुहूर्त चिंतामणि:- नश्यन्ति विद्गुरु सितेष्विह केन्द्र कोणे, तद्वच्च पाप विधु युक्त नवांश दोषः।। ८९ भावार्थ- यदि बुध, गुरु या शुक्र, केन्द्र या त्रिकोण में हों तो पाप युति एवं नवांश दोष नष्ट हो जाते हैं।

मुहूर्त गणपति:- स्वर्क्षस्थः स्वोच्चगश्चंद्रो, मित्र क्षेत्र गतोऽपि वा। गुरु श्च स्वीयवर्गस्थो, बली केन्द्र गतो विधुः।। विलोकयन्ति चेद्दोषं, नाशयत्येष संग्रहः।चंद्रर्क्षे पाप युक्तृत् स्याद्युति दोषस्तदोदितः।। धिष्णैक्ये राशि भेदेभ पापयुग् राशिगं त्यजेत्।। भावार्थ- यदि चंद्रमा स्वराशि (कर्क)या उच्च राशि (वृषभ)या मित्र राशि (मिथुन, सिंह, कन्या)में हो या बलवान होकर केन्द्रस्थ हो और उसे स्व वर्गीय गुरु की दृष्टि हो तो सग्रहचंद्र (युति दोष) नष्ट हो जाता है। यदि चंद्रमा व पाप ग्रह का एकही नक्षत्र हो परन्तु राशि भिन्न हों तो शुभ होता है।

मुहूर्त कल्पद्रुमः विवाह कुसुम - चंद्रः सौम्येज्यान्वितः स्याच्छुभाय, नान्यैः रिःफाष्टारिगोऽपीह नेष्टः। पश्यंच्छीतांशुं गुरु : स्वीय वर्गे, केन्द्रे दोषं सग्रहाख्यं हिनस्ति।। ५०।।भावार्थ- यदि चंद्र की युति सौम्य ग्रहों (गुरु , शुक्र या शुभ युत बुध)से हो तो लग्न से चंद्रमा का ६.८.१२ दोष नही होता है। यदि चंद्रमा पर स्व वर्गीय गुरु की दृष्टि हो तो सग्रहचंद्र (युति दोष) नष्ट हो जाता है।

मुहूर्त प्रकाश - स्वक्षेत्रग: स्वोच्चगो वा मित्र क्षेत्र गतो विधुः। युति दोषाय न भवेद्म्पत्योः श्रेयसे तदा।। भावार्थ- यदि चन्द्र स्वक्षेत्री (कर्क राशि में), उच्चस्थ (वृष राशि में), या मित्र क्षेत्री (मिथुन, सिंह, कन्या राशि में)हो तो युति दोष का परिहार हो जाता है।

बहुदोष समूह परिहार

मुहूर्त चिंतामणि के अनुसार -

(१) त्रिकोणे केन्द्र वा मदन रहिते दोष शतकं, हरेत्सौम्याः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरु । भवेदाये केन्द्रेऽङ्गप उत लवेशो यदि तदा , समूहं दोषानां दहन इव तूलं शमयति॥ ९१॥ भावार्थ-यदि बुध केन्द्र या त्रिकोण में हों तो सौ दोष, यदि शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में हों तो एक हजार दोष और यदि गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हों तो एक लाख दोषों का नाश करते हैं। यदि लग्नेश या नवांशेश ग्यारहवें भाव में हो तो दोषों का समूह उसी तरह नष्ट हो जाता है जैसे आग से रुई का ढेर।

(२) अब्दायनर्त्तुतिथि मास भपक्षदग्धतिथ्यन्ध काणवधिरांगमुखाश्च दोषा। नश्यन्ति विद्गुरु शितेष्विह केन्द्रकोणो तद्वच्च पापविधुयुक्तनवांशदोषः॥ भावार्थ- यदि बुध, गुरु शुक्र ये केन्द्र या त्रिकोण में हों तो लुप्त संवत्सरादि वर्षदोष, अयन दोष, ऋ तु दोष, रिक्तादि तिथि दोष, अधिक-क्षय मासादि दोष, दग्धतिथि दोष, अंध-वधिर-कांणादि लग्न दोष एवं पापग्रह की चंद्र से युति दोष , नवांश जन्य दोष, इन सभी दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार

मुहूर्त चिंतामणि: विवाह प्रकरणम् - ऋक्षाणि क्रूर विद्धानि, क्रूर भुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तान, शुभार्हाणि प्रचक्षते।। ५८।।भावार्थ- जो नक्षत्र क्रूर ग्रह से वेधित, क्रूर ग्रह से भुक्त या भोग्य हो उस नक्षत्र को यदि च्रद्रमा ने भोगकर छोड़ दिया हो तो वह नक्षत्र शुभ हो जाता है।

मुहूर्त मार्तण्ड:- लग्नेशे भवगे अथवा शशिनि सद्दृष्टे शुभे वाऽङ्गगे। होरायां च शुभस्य वा व्यध भयं नास्तीति पूर्वे जगुः।। ४/१६। भावार्थ- यदि लग्न स्वामी ग्यारहवें भाव में हो या चंद्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो या चंद्रमा को छोड़ कर शेष शुभ ग्रहों में से कोई ग्रह लग्न में हो, या लग्न में किसी शुभ ग्रह की होरा हो तो ग्रह वेध दोष नहीं होता है।

मुहूर्त गणपति: - पाप वेधे च नक्षत्रं, सम्पूर्ण त्याज्यमेव हि। शुभ वेधे च तुर्या द्यौः, पादयो ब्रि तृतीय योः।।१५/१३८ लग्ने शुभ ग्रहे वाथ, लग्नेशो लाभपोऽथवा। सौम्यैर्दृष्टो युतो वापि, काल होरा शुभस्य वा।।१३९।। वेध दोषस्तदा न स्याद्, विवाहादौ सतां मतम्।। १४०।। भावार्थ- पाप ग्रह से वेधित सम्पूर्ण नक्षत्र का त्याग और शुभ ग्रह से वेधित नक्षत्र का पाद भेद होने पर नक्षत्र शुभ होताहै। यदि लग्न में शुभ ग्रह हो, लग्नेश या लाभेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, लग्नेश या लाभेश से शुभ ग्रह की युति हो, या शुभ ग्रह की काल होरा हो तो विवाह आदि मांगलिक कार्यों में वेध दोष नहीं होता है।

मुहूर्त कल्पद्रुम:- पीयूषांशौ शोभनैः संप्रदृष्टे, सद्धोरायां व तनुस्थे शुभेऽपि। लग्नेशे वा लाभगे वेधदोषो, भ्रष्टावेशो दूर दूरं प्रयाति।।१३/ ४२ ।। भावार्थ- यदि चंद्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रह का लग्न हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह हो या लग्नेश लाभ स्थान में गया हो तो वेध दोष दूर हो जाता है।

मुहूर्त प्रकाश :- लग्ने शुभ ग्रहो वाऽथ लग्नेशो ताभगोऽभवा। सौम्यैर्दृष्टो युतो वा अपि कालहोरा शुभस्य वा।।१०३।। भावार्थ-यदि लग्न में शुभ ग्रह हो या लग्नेश ग्यारहवें भाव में हो या लग्नेश पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो या किसी शुभ ग्रह की होरा हो तो वेध दोष का परिहार होकर वेधित नक्षत्र शुभ हो जाता है।

आवश्यक कार्य में तिथि-नक्षादि बहुदोष दान पदार्थ परिहार

मुहूत्त गणपति: शुभाशुभ प्रकरण- तन्दुलांश्च तिथौ दुष्टे, वारे रत्नं सकाञ्चनम्। गामृक्षे कनकं योगे, करणे धान्यमेव च॥ ३७॥ शंङ्खं रौप्य युतं चन्द्रे, तारायां सैन्धवं तथा। नाड्यां हेमं नृपो दद्यात, कार्ये आवश्यके यदि॥ ३८॥

भावार्थ - आवश्यक कार्य में यदि तिथि दोष हो तो चावल दान, वार दोष में रत्न ज़डित स्वर्ण दान, नक्षत्र में गोदान, योग दूषित होने पर स्वर्ण दान, करण दोष में अनाज दान, चंद्रमा में दोष होने पर शंख दान,तारा दूषित होने पर सैंधा नमक, नाड़ी दोष होने पर स्वर्ण दान कर कार्य संपादन करना चाहिये।

मृत्युबाण दोष परिहार

मुहूर्त गणपति के अनुसार -

(१) रात्रौ चौर रु जौ जह्याद्, दिवसे राज पंचकम्। संध्ययो उभयो मृत्यु, सर्वदा वन्हि पंचकम्।।१६३ भावार्थ - रोग एवं चोर वाण रात्रि में निषिद्ध हैं। राजवाण एवं अग्निवाण दिन में त्याज्य हैं। दोनों संध्याकाल में मृत्युवाण त्याज्य हैं।

(२) रवौ रोगं नृपं मन्दे, बुधे मृत्युं परित्यजेत्। भौमे तु पावकं चौरं, लग्ने हीनबले न सत्।। १६४ (लग्ने पूर्ण बलो पेते, न दोषः पंचकस्य च) भावार्थ- रविवार को रोगबाण, शनिवार को राजबाण, बुधवार को मृत्युबाण, मंगलवार को अग्निबाण तथा चोरबाण का त्याग करना चाहिये। यदि लग्न निर्बल हो तभी इन पंचबाणों का फल अशुभ होता है। यदि बली लग्न हो तो पंचबाणों का दोष नहीं होता है।

(३) रोगे रोगं गृहे वन्हि, मार्गे तु चौर पंचकम्। विवाहे मृत्यु संज्ञं च, सेवायां राज पंचकम्।। भावार्थ - रोग में रोगबाण का, गृह निर्माण में अग्निबाण का, यात्रा मे चोरबाण का, विवाह में मृत्युबाणका एवं नौकरी में राजबाण का त्याग करना चाहिये ।

मुहूर्त प्रकाश के अनुसार -

(१) यद्यर्कवारे किल रोग पंचकं सोमे च राज्यं क्षितिजे च वह्निः। शनौ च मृत्युः सुरमंत्रिचौर्य्यं विवाहकाले परिवर्जनीयम्।।१०८।। भावार्थ- रविवार को रोगबाण, सोमवार को राजबाण, मंगलवार को अग्निबाण, शनिवार को मृत्युबाण एवं गुरु वार को चोरबाण भरे हुए (सशल्य) होने से विवाह में अशुभ हैं। निष्कर्षतः इनके अलावा अन्य परिस्थितियों में पंचबाण रीते (खाली) होने से विशेष दोष कारक नहीं हैं।

(२) रोगं चौरं त्यजेद्रात्रौ दिवा राजाग्नि पंचकम्। उभयोः सन्ध्ययोर्मृत्यु अन्यकाले न निंदितः।। १०९।। भावार्थ - रोग एवं चोर वाण रात्रि में निषिद्ध हैं। राजवाण एवं अग्निवाण दिन में त्याज्य हैं। दोनों संध्याकाल में मृत्युवाण त्याज्य है अन्य काल में नहीं।

(३) नृपाख्यं नृप सेवायां गृहगोपे अग्नि पंचकम्।याने चौरं व्रते रोगं त्यजेन्मृत्युं कर ग्रहे।। ११०।।भावार्थ - राजबाण नौकरी में, अग्निबाण घर छाने में, चोरबाण यात्रा में, रोगबाण यज्ञोपवीत में एवं मृत्युबाण विवाह में निषिद्ध है, अन्य कार्यों में निषिद्ध नहीं है।

प्रदेश भेद से लत्ता पातादि १० दोष परिहार

मुहूर्त चिंतामणि के अनुसार- उपग्रर्क्षं कुरु वाह्लिकेषु कलिङ्ग बङ्गेषु च पातितं भम्। सौराष्ट्र शाल्वेषु च लत्तित भं त्यजेत् तु विद्धं किल सर्व देशे॥ विवाह प्रकरण ६९॥

भावार्थ-लत्ता दोष मालवा व गुजरात में, पात दोष कुरु क्षेत्र एवं फि रोजपुर क्षेत्र में, एकार्गल दोष काश्मीर में, उपग्रह दोष पंजाव, हरियाणा, कुरु क्षेत्र व आगरा क्षेत्र में, युति दोष बंगाल में एवं वेध दोष सर्वत्र त्याज्य कहा गया है।

विवाह में गोचर से त्रिबल शुद्धि परिहार

(१) सूर्य बल परिहार

मुहूर्त चिंतामणि: गोचर प्रकरण, श्लोक १९ - राश्यादिगौ रविकुजौ फलदो सितेज्यौ, मध्ये सदा शशि सुतश्चरमेऽब्ज मंदौ॥ भावार्थ - सूर्य और मंगल राशि के आदि भाग (प्रथम देष्काण, १ अंश से १० तक) में फल देते हैं।

गर्गाचार्य के अनुशार- अनिष्ट स्थाने सूर्ये, शुभ राशि:पुरो भवेत्। त्रयोदश दिनं त्यक्त्वा, परं शुभमादिशेत॥ अर्थात् जन्म राशि से सूर्य अशुभ स्थान में हो एवं सूर्य की अग्रिम राशि शुभ हो तो अशुभ राशि की संक्रान्ति से १३ दिन (य़ानि १३ अंश) पश्चात् उसे शुभ मानना चाहिए।

(२) चन्द्र बल परिहार

दैवज्ञकल्पद्रुम:- गर्भाधाने जन्मकाले, अभिषेके मौञ्जिबन्धने।पाणिग्रहे प्रयाणे च , चंद्रो द्वावदशग: शुभ:॥ अर्थात विवाह, गर्भाधान, स्त्रीप्रसंग, उपनयन, यात्रा, व्रत-उपवास आदि कार्यों में पुरु ष को १२ वां चंद्र प्रशस्त है, स्त्री या वधू को नहीं।

(३) गुरु बल परिहार

ज्योतिर्निबंध : - रजस्वला यदा कन्या गुरु शुद्धिं न चिन्तयेत। अष्टऽमेपि प्रकत्त्तव्यो, विवाह: स्त्रिगुणार्चनात्॥ भावार्थ- कन्या के रजस्वलावती हो जाने पर ४, ८, १२वें गुरु तीन गुनी पूजार्चन एवं गौदान के वाद विवाह प्रसस्त है।

मुहूर्त चिंतामणि: - स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे, वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरु । रिष्फष्टतुर्यगोऽ पीष्टो नीचारिस्थ: शुभोऽप्यसत्॥ भावार्थ- अशुभ गुरु यदि उच्चराशि में, स्वराशि में, मित्रराशि में या स्व नवांश में हो तो वह शुभ होता है। नीचराशि में या शत्रु ग्रह की राशि में स्थित शुभ गुरु भी पूज्य होता है। विवाह संस्कार के समय यदि कन्या रजस्वला हो तो कूस्माण्ड सूक्त एवं युञ्जानसूक्त से हवनादि कराकर विवाह कराना चाहिये।

अष्टकवर्ग से त्रिबल शुद्धि

सभी ज्योतिष ग्रंथों में स्पष्ट आदेश है कि गोचर की तुलना में अष्टकवर्ग शुद्धि सूक्ष्म होता है। लेकिन विस्त्रत गणना युक्त कुंडली के अभाव में वर कन्या के टीपना में सूर्य, गुरु , चंद्र की राशियों को देखकर विवाह लग्न शोधन होता रहा है। यह स्थूल साधन है। वर्तमान में कम्प्यूर प्रोग्राम, गणित करने में लगने वाले श्रम एवं समय वचाने का एक उत्तम साधन है, अत: उसमें संवंधित ग्रह के अष्टकवर्ग देखकर जातक को यदि उस राशि में चार या चार से अधिक रेखा प्राप्त हों तो ४, ८,१२ वें या पूज्य सूर्य, गुरु , चंद्र शुभ होने से विवाह शुभ कहना चाहिये।

राजमार्तंड: - सूक्ष्माष्टवर्ग संशुद्धि:, स्थूला शुद्धितु गोचरे:।अष्टकवर्ग विशुद्धेषु, गुरु शीतांशु भानुषु।

सिंहस्थ गुरु का परिहार

मुहू. चिंतामणि: - शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक ४९ - सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरतश्च यावत्। भागीरथीयाम्यतटं हि दोषो नान्यत्र देशे तपनेऽपि मेषे।। ४९ मघादि पंचपादेषु, गुरु सर्वत्र निंदित:। गंगा गोदान्तरं हित्वा, शेषांघ्रिशु न दोषकृत्।। ५०

मुहूर्त गणपति: सिंहराशिस्थिते जीवे, मेषेऽर्के न दूषणम्।।

जव गुरु सिंह राशि में और सिंह के नवांश में हों तव केवल गोदावरी नदी से उत्तर और गंगा के दक्षिण तट पर्यन्त क्षेत्र में विवाह अशुभ है। अन्य क्षेत्र में दोष नहीं है। मघा के चारों चरण एवं पूर्वाफाल्गुनी के प्रथम चरण तक के पांच चरणों में सिंहस्थ गुरु सभी जगह त्याज्य है, परन्तु यदि मेष का सूर्य हो तो सिंहस्थ गुरु काल का किसी भी क्षेत्र में दोष नहीं है।

मकरस्थ गुरु का परिहार

मु.चिं.- रेवापूर्वे गण्डकीपश्चिमे च शोणस्योदग्दक्षिणे नीच इज्य:। वञ्यो नायं कौङ्कणे मागधे च गौडे सिन्धौ वर्जनीय: शुभेषु।। ५२।। भावार्थ - रेवा (नर्मदा) के पूर्व में, पटना के पास गंगा में मिलने वाली गण्डकी नदी के पश्चिम में, शोण नदी (अमरकंटक से निकलकर पटना से पहले गंगा में मिलने वाली सोन नदी) के उत्तर-दक्षिण में नीच के गुरु वर्जित नहीं हैं। यह मकर का गुरु कौङ्कण (महाराष्ट्र और गोवा के समुद्र तटीय जिले), मगध (विहार का दक्षिणी भाग), गौड (पश्चिम बंगाल), सिन्धु देश (पाकिस्तान का सिंध प्रान्त) में वर्जित है।

मु. गणपति :- मगधे गौड देशे च, सिंधु देशे च कौंकणे। विवाहादि शुभे त्याज्यो, नान्यस्मिन् नक्रगो गुरु :॥ ९२॥ भावार्थ - मकर (नीच राशि) के गुरु केवल मगध, गौड, सिंधु और कौंकण देशों में विवाहदि मांगलिक कार्य वर्जित हैं, अन्य क्षेत्रों में शुभ हैं।

कन्या के शीघ्र विवाह हेतु अनुष्ठान मंत्र

श्रीमद्भागवत् के दशम स्कन्ध के २२ वें अध्याय में दिये गये कात्यायनि देवी के मंत्र के यथा संभव संख्या में जाप करने या योग्य पंडित् से कराने पर कन्या के विवाह में आ रहीं वाधायें समाप्त होकर शीघ्र विवाह होता है। मंत्र इस प्रकार है -

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरी।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नम:।।

अर्थ - हे कात्यायनि देवि ! हे महामाया ! हे महायोगिनी ! हे अधिश्वरी ! आप श्री नन्दबाबा के पुत्र श्री कृष्ण को मेरा पति बनाईये। हे देवि में आपको नमस्कार करती हूँ।

वर के शीघ्र विवाह हेतु अनुष्ठान मंत्र

श्री दुर्गासप्तशती के अर्गलास्तोत्रम् का २४ वां श्लोक -
पत्नीं मनोरमां देहि, मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीम् दुर्ग संसार, सागरस्य कुलोद् भवाम्।।

अर्थ - हे देवि ! मेरी मनोवृत्ति के अनुसार चलने वाली मनोहर पत्नी प्रदान करो जो इस दुर्गम संसार रूपी सागर से पार होने में सहायक हो तथा उत्तम कुल में उत्पन्न हुई हो।

मंत्र जाप विधि - स्नानादि से पवित्र होकर, अपने गृह में स्थित पूजाघर या पूजा स्थान में, पूर्वाभिमुख बैठकर, घी का दीपक जलाकर, श्रद्धा एवं विश्वास के ११ माला का जाप करें या ब्राह्मण से करवायें। अपवित्र रहते हुये जाप न करें।

गुरु एवं शुक्र अस्त काल में वर्जित कर्म

मुहू. गणपति के विवाह प्रकरण श्लोक क्रमांक ८० से ८४ तक तथा हेमाद्रि व निर्णयसिन्धु के अनुसार अनित्य कर्म जैसे महादान, अग्नि का आधान, यज्ञ, अपूर्व तीर्थ यात्रा एवं स्नान, अपूर्व देवता का दर्शन, वापी-तालाव निर्माणारम्भ, सुर प्रतिष्ठा, यज्ञोपवीत, सन्यास, वालक को प्रथम वार बाहर निकालना, राज्याभिषेक, प्रथम मुण्डन, कर्णवेध, सन्यास, वेदव्रत, व्रत का उद्यापन, वधू का प्रथम प्रवेश, अष्टका श्राद्ध, व्रतारम्भ, गृहारम्भ और गृहप्रवेश, विवाह, नामकरण, प्रायश्चित्त कर्म और उपाकर्म गुरु - शुक्रास्त में निषेध हैं। परन्तु अन्य मांगलिक कार्यों में गुरु -शुक्र अस्त का निषेध नहीं है।

परिहार - सामान्य परिस्थितियों में गुरु -शुक्रास्त दोष युक्त समय है। परन्तु अति आवश्यक परिस्थितियों में गुरु या शुक्र में से किसी एक के उदित रहने पर मांगलिक कार्य किए जा सकते हैं। प्रयोग परिजात में आचार्य लल्ल ने कहा है कि,

यद्येकस्यापि मूढत्वे, शुभ कर्म न दोषकृत।
द्वयो मूढत्मेवोक्तं, दोषत्वं गुरु शुक्रयो:।।

ऐसा ही उल्लेख मुहूर्त्तचिन्तामणि की पियूषधारा टीका में भी है।

गुरु के नीचस्थ, अतिचारी, सिंहस्थ, धनाऽर्क या मीनाऽर्क में वर्जित कार्य
- यज्ञोपवीत, सन्यास, यक्ष और वेद की दीक्षा, विवाह, कर्णवेध, वास्तु पूजन, देव प्रतिष्ठा, मुण्डन, वधु प्रवेश वर्जित कहे गये हैं।

विवाह में त्रिज्येष्ठ निषेध

जन्ममासे जन्मभे च, न च जन्मदिने बुध:। ज्येष्ठमासे न ज्येष्ठस्य विवाहं कारयेत्कचित्। न कन्यावरयोज्येष्ठे न ज्येष्ठो दोषमावहेत्।

अर्थात् जन्म मास, जनम नक्षत्र एवं जन्म वार को विवाह नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार ज्येष्ठ मास में जेठे लडके या लडकी का विवाह न करें। ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ वर एवं ज्येष्ठ कन्या इन तीनों के योग होने पर तो विवाह कदापि नहीं करना चाहिए।

विवाह विषयक अन्य सूत्र

मुहू. कल्पद्रुम: - विवाह कुसुम - नैकस्य कन्या द्वितयं सहोस्थमं, देयं तथा सोदरस्य पुंसो:। शुभे न कार्यं पितृकर्म गेहे, द्विमंगलं सद्यविनाब्द भेदात्॥ ३३॥

अर्थात् दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से नहीं करना चाहिये। ६ मासों के भीतर दो मांगलिक कार्य न करें। संवत्सर बदलने पर कर सकते हैं।

वशिष्ठ: - पुत्री विवाहात्परत: सदैव शुभप्रदं पुत्र विवाह कर्म॥ अर्थात् पुत्री के विवाह के पश्चात् पुत्र के विवाह सब काल में शुभ होता है। इसमें ६ मास का प्रतिबंध नहीं है।

मुहू. चिन्तामणि- सुतपरिणयात् षड्मासान्त: सुताकरपीडिनं, न च निजकुले तद्वद्वा मण्डनादपि मुण्डनम्। न च सहजयोर्दये भ्रात्रो: सहोदर कन्यके, न सहजसुतोद्वाहोऽब्दार्धे शुभे न पितृक्रिया॥ भावार्थ लडके की शादी के ६ माह के भीतर लडके का विवाह नहीं करना चाहिए। और न ही अपने कुल में किसी का मुण्डन करना चाहिए। दो सहोदर वहनों का दो सगे भाईयों से विवाह नहीं करना चाहिए। ६ मास के भीतर दो वहनों का विवाह नहीं करना चाहिए। विवाहादि शुभ कार्य में माता या पिता का श्राद्ध नहीं पडना चाहिए।

शुभ विवाह
मुहूर्त्त वि. संवत् २०८३
शाके १९४८ (सन् २०२६-२७)

समय शुद्धि

अधिक मास - ज्येष्ठ : १७ मई २०२६ से १५ जून २०२६ तक
गुरु सिंहस्थ - ३१ अक्टूबर २०२६ से २४ जनवरी २०२७ तक
त्रयोदशदिन पक्ष -नहीं।
गुरु अस्त - दिनांक १५ जुलाई २०२६ से १० अगस्त २०२६ तक।
शुक्र अस्त - १२ अक्टूबर २०२६ से २८ अक्टूबर २०२६ तक।

होलाष्टक- दिनांक १५ मार्च २०२७ से २२ मार्च २०२७ तक
देवशयन - दिनांक २५ जुलाई २०२६ से २१ नवंबर २०२६ तक
धनु मलमास - दिनांक १६ दिसंबर २०२६ से १४ जनवरी २०२७ तक
मीन मलमास - दिनांक १५ मार्च २०२७ से वर्ष तक तक।

त्रिवल शुद्धि	शुभ	पूज्य	नेष्ठ
वर को सूर्य	३, ६, १०, ११	१,२,५,७,९	४,८,१२
कन्या को गुरु	२,५,७,९,११ स्व,मित्र या कर्क नवांश	१,३,६,१०	४,८,१२
दोनों को चन्द्र	१,२,३,५,६,७,९,१०,११	----	४,८,१२

गोचर			मास-तिथि वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	सपरिहार शुभ लग्नें । ७ रेखा से कम की लग्नें अति आवश्यकता में ही लेवें	भद्रा, वेध, पापयुति, वेध, बाण, महापात, दग्धतिथि इत्यादि 10 दोष
गुरू	रवि	चंद्रमा						
मिथुन	मेष	मेष। दि. १२:३६ से वृष	वैशाख शुक्ल २ रवि	१९ अप्रैल २०२६	रोहिण्यां		निर्दोष लग्न अभाव है।	
मिथुन	मेष	वृष	वैशाख शुक्ल ३ चंद्र	२० अप्रैल २०२६	रोहिणी मृगशिर	१०	लग्न मिथुन प्रातः ९:१८ से दिन ११:२१ वजे । लग्न कर्क दिन ११:३२ से दिन १:३७ वजे ।	भद्रा—सा.५:५५से रात ४:१८ (स्व.)। उपग्रह दोष रा. २:१३ से रा.अं. तक।
मिथुन	मेष	वृष। दि. १:०६ से मिथुन	वैशाख शुक्ल ५ मंगल	२१ अप्रैल २०२६	मृगशिर	९	लग्न मिथुन प्रातः ९:१४ से दिन ११:१७ वजे । लग्न कर्क दिन ११:२८ से दिन १२:३६ वजे । गोधूलि लग्न।	अतिगंड दोष दिन १२:३६ वजे से दिन ३:०० वजे । उपग्रह दोष सू.उ. से रा. १२:४ तक। दग्धतिथि रात १:०२ वजे से रातअंत।
मिथुन	मेष	कर्क। रा. ८:१३ से सिंह	वैशाख शुक्ल ९ शनि	२५ अप्रैल २०२६	मघा		निर्दोष लग्न अभाव है।	क्रान्तिसाम्य दोष सायं ६:४१ से रात १०:५८ वजे तक। मृत्युबाण सूर्योदय से १५:४१ तक,। मघायां पातदोषः,केतु युति। उपग्रह दोष रा. ८:१३ से रा.अं. तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से २०:१३
मिथुन	मेष	सिंह	वैशाख शुक्ल १० रवि	२६ अप्रैल २०२६	मघा	७	लग्न वृष प्रातः ६:५६ से प्रातः ८:४४ वजे । लग्न कर्क दिन ११:०९ से दिन १:१४ वजे । गोधूलि लग्न।	मघायां पातदोषः,केतु युति। । उपग्रह दोष सू.उ. से रा. ८:३७ तक।
मिथुन	मेष	सिंह। रा. ३:४४ से कन्या	वैशाख शुक्ल ११ चंद्र	२७ अप्रैल २०२६	उ.फा.		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा—प्रा.६:११ वजेसे सा.६:२२ (भू.)। व्याघात दोष रात ९:४५ वजे से रात १:२१ वजे । उ.फा. में मंगल वेध। हस्त में शनि वेध, । उ.फाल्गुन्यां सूर्य लत्ता, गुरु लत्ता, ।
मिथुन	मेष	कन्या	वैशाख शुक्ल १२ मंगल	२८ अप्रैल २०२६	उ.फा. हस्त		उ.फा. में भौम वेध। हस्त में शनि वेध। निर्दोष लग्न अभाव है।	उ.फा. में भौम वेध। हस्त में शनि वेध। उ.फा. में बुध वेध प्रातः ५:५३ से दिन १०:०३ वजे तक। उ.फाल्गुन्यां गुरु लत्ता,। हस्ते सूर्य लत्ता, पातदोषः,शनि जामित्र। एकार्गल दो. सूर्योदय से २१:१३
मिथुन	मेष	कन्या	वैशाख शुक्ल १३ बुध	२९ अप्रैल २०२६	हस्त		हस्त में शनि वेध। निर्दोष लग्न अभाव है।	वज्र दोष रात ८:५८ वजे से रात १०:१० वजे । हस्त में शनि वेध। स्वाती में राहु वेध, । हस्ते सूर्य लत्ता, पातदोषः,शनि जामित्र, ।
मिथुन	मेष	कन्या। दि. १:२० से तुला	वैशाख शुक्ल १४ गुरु	३० अप्रैल २०२६	स्वाती		स्वाती में राहु वेध। निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा—रा.९:१५से रा. अंत (पा.)। स्वाती में राहु वेध। स्वाते बुध जामित्र । उपग्रह दोष रा. २:२१ से रा.अं. तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से २०:५९
मिथुन	मेष	तुला	वैशाख शुक्ल १५ शुक्र	१ मई २०२६	स्वाती		स्वाती में राहु वेध। निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा—सू.उ.से दि.१०:०० वजे (पा.)। व्यतिपात दोष रात ९:१६ वजे से रातअंत। स्वाती में राहु वेध। अनुराधा में । उपग्रह दोष दिनरात।
मिथुन	मेष	वृश्चिक	प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण २ रवि	३ मई २०२६	अनुराधा	८	अनुराधा में सूर्य वेध। अति आवश्यकता में लग्न वृष प्रातः ७:०९ से प्रातः ८:१७ वजे (चंद्र,दान)। लग्न कर्क दिन १०:४१ से दिन १२:४६ वजे । गोधूलि लग्न।	परिघ दोष रात १०:२८ वजे से रातअंत। अनुराधा में सूर्य वेध। मृत्युबाण २१:१६ से रातअंत। उपग्रह दोष सू.उ. से प्रा. ७:९ तक।
मिथुन	मेष	वृश्चिक। दि. १२:५३ से धनु	प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ४ मंगल	५ मई २०२६	मूल	९	गोधूलि लग्न। लग्न मकर रात्रि ११:५२ से रात्रि १:३० वजे ।	उपग्रह दोष दि. १२:५३ से रा.अं. तक।
मिथुन	मेष	धनु	प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ४ बुध	६ मई २०२६	मूल		निर्दोष लग्न अभाव है।	मूल में गुरु वेध प्रातः ५:४७ से प्रातः ९:०८ वजे तक। उपग्रह दोष दिनरात।

गोचर			मास-तिथि वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	सपरिहार शुभ लग्नें । ७ रेखा से कम की लग्नें अति आवश्यकता में ही लेवें	भद्रा, वेध, पापयुति, वेध, बाण, महापात, दग्धतिथि, 10 दोष
गुरू	रवि	चंद्रमा						
मिथुन	मेष	धनु। रा. १:२५ से मकर	प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ५ गुरु	७ मई २०२६	उ.षा.	८	गोधूलि लग्न। लग्न मकर रात्रि ११:४४ से रात्रि १:२२ वजे ।	उ.षाण्यां पातदोषः,गुरु जामित्र, उपग्रह दोष सू.उ. से शा. ६:४३ तक। दग्धतिथि दिन ९:४९ वजे से रातअंत।
मिथुन	मेष	मकर	प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ६ शुक्र	८ मई २०२६	उ.षा.	८	लग्न वृष प्रातः ६:०८ से प्रातः ७:५७ वजे । लग्न कर्क दिन १०:२१ से दिन १२:२० वजे (चंद्र,दान)। तदग्रे भद्रा	भद्रा–दि.१२:२० वजेसे रा.१:१५ (पा.)। उ.षाण्यां पातदोषः,। उपग्रह दोष रा. ९:१७ से रा.अं. तक। दग्धतिथि सू.उ. से दिन १२:१९ वजे ।
मिथुन	मेष	कुंभ। रा. ७:१७ से मीन	प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण १० मंगल	१२ मई २०२६	उ.भा.		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा–सू.उ.से दि.२:५०वजे (भू.)। वैधृतिदोष सूर्योदय से रात ११:१३ वजे । विष्कुंभ दोष रात ११:१३ वजे से रात १२:२५ वजे । मृत्युबाण २८:३१ से रातअंत। उ.भाद्रपदे शनि युति। उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से २३:१३ एकार्गल दो.२३:१३ से रातअंत ।
मिथुन	मेष	मीन	प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ११ बुध	१३ मई २०२६	उ.भा. रेवती		उ.भा. मृत्युबाण दोष	मृत्युबाण सूर्योदय से २९:२३ तक,। उ.भाद्रपदे शनि युति। । उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से २०:४७
मिथुन	मेष	मीन। रा. १०:२८ से मेष	प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण १२ गुरु	१४ मई २०२६	रेवती	९	लग्न वृष प्रातः ५:४५ से प्रातः ७:३३ वजे । लग्न मिथुन प्रातः ७:४३ से प्रातः ९:४६ वजे ।	कृष्णानंग चतुर्दिनम् ११:१५ से रातअंत। उपग्रह दोष सू.उ. से रा. १०:२८ तक।
मिथुन	वृष	वृष	प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल १ रवि	१७ मई २०२६	रोहिणी		अधिक मास प्रारंभ।	कृप्नांग चतुर्दिनं सूर्योदय से २१:४७। अतिगंड दोष प्रातः ६:१८ वजे से प्रातः ८:४२ वजे । मृत्युबाण सूर्योदय से ८:०२ तक,।
कर्क	मिथुन	कर्क। दि. १०:१७ से सिंह	द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ५ शुक्र	१९ जून २०२६	मघा	८	गोधूलि लग्न। लग्न वृष रात्रि ३:२३ से रात्रिअंत ५:०८ वजे (शुक्र,दान)। केतु युति परिहार	वज्र दोष दिन ३:०४ वजे से दिन ४:१६ वजे । मघायां पातदोषः,केतु युति। । उपग्रह दोष सू.उ. से दि. १०:१७ तक।
कर्क	मिथुन	सिंह	द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ६ शनि	२० जून २०२६	मघा		निर्दोष लग्न अभाव है।	मघायां पातदोषः,केतु युति। । उपग्रह दोष दि. ९:३४ से रा.अं. तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से १२:५८ ।
कर्क	मिथुन	सिंह। दि. ३:४९ से कन्या	द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ७ रवि	२१ जून २०२६	उ.फा.		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा–दि.३:२३ वजेसे रा.३:२३ (भू.,२६:२८से पा.)। व्यतिपात दोष दिन ११:२९ वजे से रातअंत। उ.फा. में शनि वेध। उपग्रह दोष दिनरात। दग्धतिथि दिन ३:३० वजे से रातअंत।
कर्क	मिथुन	कन्या	द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ८ चंद्र	२२ जून २०२६	हस्त	७	लग्न तुला दिन २:०५ से दिन ४:०९ वजे। गोधूलि लग्न। लग्न मकर रात्रि ८:४३ से रात्रि १०:२० वजे (गुरु, बुध, शुक्र, दान)। लग्न मेष रात्रि १:४३ से रात्रि ३:०३ वजे (शनि, दान)।	व्यतिपातदोष सूर्योदय से दिन १०:३७ वजे । उ.फा. में शनि वेध। हस्ते गुरु लत्ता, पातदोषः,। उपग्रह दोष सू.उ. से दि. १०:२८ तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से १०:३७ । दग्धतिथि सू.उ. से दिन ३:४८ वजे ।
कर्क	मिथुन	कन्या। रा. १२:५८ से तुला	द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ९ मंगल	२३ जून २०२६	हस्त	८	लग्न कर्क प्रातः ७:२० से प्रातः ९:२५ वजे ।	परिघ दोष दिन १०:१८ वजे से रात १०:३१ वजे । हस्ते गुरु लत्ता, । उपग्रह दोष सू.उ. से दि. ११:६० तक।
कर्क	मिथुन	तुला	द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १० बुध	२४ जून २०२६	स्वाती		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा–रा.अंतसे रा.अंत (पा.)। स्वाती में राहु वेध। उपग्रह दोष दि. २:४ से रा.अं. तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से १०:२७
कर्क	मिथुन	तुला	द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ११ गुरु	२५ जून २०२६	स्वाती		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा–प्रा.७:०९ वजेसे रा.८:१० (पा.)। स्वाती में राहु वेध। मृत्युबाण २४:१८ से रातअंत। उपग्रह दोष सू.उ. से दि. ४:३३ तक।
कर्क	मिथुन	तुला। दि. १२:३६ से वृश्चिक	द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १२ शुक्र	२६ जून २०२६	अनुराधा	७	लग्न मेष रात्रि १:२८ से रात्रि २:४७ वजे (शनि,दान)।	मृत्युबाण सूर्योदय से २५:२८ तक,। अनुराधायां सूर्य लत्ता, पातदोषः,मंगल जामित्र, ।

गोचर			मास-तिथि वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	सपरिहार शुभ लग्नें । ७ रेखा से कम की लग्नें अति आवश्यकता में ही लेवें	भद्रा, वेध, पापयुति, वेध, बाण, महापात, दग्धतिथि, 10 दोष
गुरू	रवि	चंद्रमा						
कर्क	मिथुन	वृश्चिक	द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १३ शनि	२७ जून २०२६	अनुराधा	७	लग्न कर्क प्रातः ७:०४ से प्रातः ९:०९ वजे । लग्न तुला दिन १:४५ से दिन ३:४९ वजे। गोधूलि लग्न। लग्न मकर रात्रि ८:२३ से रात्रि १०:०१ वजे (गुरु, बुध, शुक्र, दान)।	अनुराधायां सूर्य लत्ता, पातदोषः,मंगल जामित्र, ।
कर्क	मिथुन	वृश्चिक। रा. १:१० से धनु	द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १४ रवि	२८ जून २०२६	मूल	८	लग्न मेष रात्रि १:५८ से रात्रि २:३९ वजे (शनि,दान)।	भद्रा—रा.३:०६से रा.अंत (पा.)। ज्येष्ठा में गुरु वेध सायं ६:२६ वजे से रात १:१० वजे तक।मूल में बुधवेध रात १:१० वजे से रातअंत ७:५४ वजे तक। क्रान्तिसाम्य दोष रात ८:२५ से रात १२:५० वजे तक। उपग्रह दोष रा. १:१० से रा.अं. तक।
कर्क	मिथुन	धनु	द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १५ चंद्र	२९ जून २०२६	मूल	९	गोधूलि लग्न। लग्न मकर रात्रि ८:१५ से रात्रि ९:५३ वजे (गुरु, बुध, शुक्र, दान)। लग्न मेष रात्रि १:१६ से रात्रि २:३५ वजे (शनि, दान)।	भद्रा—सू.उ.से दि.४:१६ वजे (पा.)। मूल में बुध वेध प्रातः ५:४१ से प्रातः ७:५४ वजे तक। उपग्रह दोष दिनरात।
कर्क	मिथुन	धनु। दि. १:३० से मकर	आषाढ कृष्ण १ बुध	१ जुलाई २०२६	उ.षा.	१०	लग्न तुला दिन १:२९ से दिन ३:३३ वजे ।	वैधृति दोष दिन ४:०२ वजे से रातअंत। उ.षाण्यां बुध जामित्र । उपग्रह दोष सू.उ. से प्रा. ६:५१ तक।
कर्क	मिथुन	कुंभ। दि. ९:५७ से मीन	आषाढ कृष्ण ६ चंद्र	६ जुलाई २०२६	उ.भा.	१०	लग्न मेष रात्रि १:४५ से रात्रि २:०७ वजे (शनि,दान)।	भद्रा—दि.१:४९ वजेसे रा.१:४५ (भू.)। मृत्युबाण सूर्योदय से १२:०० तक,। उपग्रह दोष दि. १२:० से दि. ४:६ तक।
कर्क	मिथुन	मीन	आषाढ कृष्ण ७ मंगल	७ जुलाई २०२६	उ.भा. रेवती	७	लग्न कर्क प्रातः ६:२५ से प्रातः ८:३० वजे । गोधूलि लग्न। लग्न मेष रात्रि १२:४४ से रात्रि २:०३ वजे (शनि, दान)।	अतिगंड दोष दिन २:३० वजे से दिन ४:५४ वजे । रेवत्यां चंद्र लत्ता, शनि युति परिहार । उपग्रह दोष दि. ४:२३ से रा.अं. तक। दग्धतिथि दिन १:२४ वजे से रातअंत।
कर्क	मिथुन	मीन। दि. ३:५९ से मेष	आषाढ कृष्ण ८ बुध	८ जुलाई २०२६	रेवती	६	लग्न कर्क प्रातः ६:२१ से प्रातः ८:२६ वजे ।	रेवत्यां चंद्र लत्ता, शनि युति परिहार। उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से १२:३७ । दग्धतिथि सू.उ. से दिन १२:२२ वजे ।
कर्क	मिथुन	वृष	आषाढ कृष्ण १२ शनि	११ जुलाई २०२६	रोहिणी	६	लग्न मेष रात्रि १२:२८ से रात्रि १:४८ वजे (शनि,दान)।	कृष्णानंग चतुर्दिनम् २६:०२ से रातअंत। गण्डदोष सूर्योदय से प्रातः ६:१६ वजे । क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:२४ से रात ११:१५ वजे तक। रोहिण्यां पातदोषः,मंगल युति। । उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से ११:०१, शनि युति परिहार ।
कर्क	मिथुन	कर्क। रा. ८:०२ से सिंह	आषाढ शुक्ल २ गुरु	१६ जुलाई २०२६	मघा		तदग्रे गुरु अस्त। संक्रांति दिन। देव शयनकाल।	व्यतिपात दोष रात १:३० वजे से रातअंत। मघायां केतु युति।
सिंह	वृश्चिक	मीन	कार्तिक शुक्ल १० शुक्र	२० नवम्वर २०२६	उ.भा. रेवत्यां	६	देव शयन समाप्त प्रातः ७:१५ । लग्न धनु प्रातः ८:५४ से दिन १०:३७ वजे । लग्न मेष दिन ३:४८ से सायं ५:०७ वजे (शनि,बुधदान)। गोधूलि लग्न।	भद्रा—सा.६:५२से रात ६:३० (भू.)। वज्रदोष सूर्योदय से प्रातः ७:५३ वजे । उ.भाद्रपदे शनि युति। उपग्रह दोष प्रा. ६:५७ से रा. ६:१ तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से २८:५५। दग्धतिथि सू.उ. से प्रातः ६:५१ वजे ।
सिंह	वृश्चिक	मीन। रा. ५:५५ से मेष	कार्तिक शुक्ल १२ शनि	२१ नवम्वर २०२६	उ.भा. रेवती	९	लग्न धनु प्रातः ८:५० से दिन १०:३३ वजे। लग्न मेष दिन ३:४४ से सायं ५:०३ वजे (शनि,बुधदान)। गोधूलि लग्न। लग्न मिथुन रात्रि ७:१० से रात्रि ९:१३ वजे शुद्ध। लग्न कर्क रात्रि ९:२४ से रात्रि ११:२९ वजे (शुक्र,दान)।	व्यतिपात दोष रात २:२९ वजे से रातअंत। उ.भाद्रपदे शनि युति। उपग्रह दोष सू.उ. से प्रा. ६:५१ तक।
सिंह	वृश्चिक	मेष। प्रा. ७:३१ से वृष	कार्तिक शुक्ल १५ मंगल	२४ नवम्वर २०२६	रोहिणी		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा—सू.उ.से दि.१०:१३ वजे (स्व.)। रोहिण्यां सूर्य जामित्र, । उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से १६:११
सिंह	वृश्चिक	वृष	मार्गशीर्ष कृष्ण १ बुध	२५ नवम्वर २०२६	रोहिणी मृगशिर	८	लग्न मेष दिन ३:२८ से दिन ४:४७ वजे (शनि,बुधशुक्रदान)। गोधूलि लग्न। लग्न मिथुन सायं ६:५४ से रात्रि ८:५७ वजे शुद्ध। लग्न कर्क रात्रि ९:०९ से रात्रि ११:१४ वजे ।	रोहिण्यां सूर्य जामित्र, । उपग्रह दोष सू.उ. से रा. ८:४५ तक।
सिंह	वृश्चिक	वृष। प्रा. ७:२१ से मिथुन	मार्गशीर्ष कृष्ण २ गुरु	२६ नवम्वर २०२६	मृगशिर	१०	लग्न धनु प्रातः ८:३० से दिन १०:१३ वजे (चंद्र,दान)। लग्न मेष दिन ३:२४ से दिन ४:४३ वजे (शनि, बुधशुक्रदान)।	भद्रा—रा.११:३९से रा.अंत (स्व.)। मृत्युबाण १७:३१ से रातअंत।
सिंह	वृश्चिक	कर्क। दि. ९:४३ से सिंह	मार्गशीर्ष कृष्ण ७ चंद्र	३० नवम्वर २०२६	मघा		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा—सू.उ.से दि.१२:५२ वजे (भू.)। वैधृति दोष दिन २:३० वजे से रातअंत। मघायां बुध लत्ता, शुक्र लत्ता, राहु जामित्र, मंगल गुरु केतु युति। । उपग्रह दोष दि. ९:४३ से रा.अं. तक।

गोचर			मास-तिथि वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	सपरिहार शुभ लग्नें । ७ रेखा से कम की लग्नें अति आवश्यकता में ही लेवें	भद्रा, वेध, पापयुति, वेध, बाण, महापात, दग्धतिथि, 10 दोष
गुरू	रवि	चंद्रमा						
सिंह	वृश्चिक	सिंह। दि. ३:०१ से कन्या	मार्गशीर्ष कृष्ण ९ बुध	२ दिसम्वर २०२६	उ.फा.	७	लग्न धनु प्रातः ८:५५ से प्रातः ९:५० वजे। लग्न मेष दिन ३:०० से दिन ४:२० वजे (शनि, बुध शुक्रदान)। गोधूलि लग्न। लग्न कर्क रात्रि ८:४१ से रात्रि १०:४६ वजे। लग्न तुला रात्रि ३:२२ से रात्रिअंत ५:२२ वजे ।	उ.फाल्गुन्यां मंगल लत्ता,। उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से ८:५५ दग्धतिथि रात १०:५५ वजे से रातअंत।
सिंह	वृश्चिक	कन्या	मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरु	३ दिसम्वर २०२६	उ.फा.	७	लग्न धनु प्रातः ८:०२ से प्रातः ९:४६ वजे। हस्त में शनि वेध।	भद्रा—दि.१०:५१ वजेसे रा.११:०३ (पा.)। हस्त में शनि वेध। उ.फाल्गुन्यां मंगल लत्ता, । हस्ते शनि जामित्र, । उपग्रह दोष दिनरात। दग्धतिथि सू.उ. से रात १०:४३ वजे ।
सिंह	वृश्चिक	कन्या। रा. ११:०७ से तुला	मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शुक्र	४ दिसम्वर २०२६	हस्त		हस्त में शनि वेध। निर्दोष लग्न अभाव है।	हस्त में शनि वेध। हस्ते शनि जामित्र, । उपग्रह दोष दिनरात।
सिंह	वृश्चिक	तुला	मार्गशीर्ष कृष्ण १२ शनि	५ दिसम्वर २०२६	स्वाती		निर्दोष लग्न अभाव है।	कृष्णानंग चतुर्दिनम् २४:५६ से रातअंत। मृत्युबाण १४:४१ से रातअंत। स्वाते गुरु लत्ता, राहु लत्ता, शुक्र युति। । उपग्रह दोष दिनरात।
सिंह	वृश्चिक	धनु	मार्गशीर्ष शुक्ल १ गुरु	१० दिसम्वर २०२६	मूल		निर्दोष लग्न अभाव है।	कृप्नांग चतुर्दिनं सूर्योदय से ८:४४। गण्ड दोष प्रातः ९:२४ वजे से दिन ११:४८ वजे । क्रान्तिसाम्य दोष रात ४:३५ से रातअंत वजे तक। मूले पातदोषः,। एकार्गल दो. सूर्योदय से ९:२४ एकार्गल दो.९:२४ से ३०:५५ ।
सिंह	वृश्चिक	धनु	मार्गशीर्ष शुक्ल २ शुक्र	११ दिसम्वर २०२६	उ.षा.	९	लग्न तुला रात्रि ३:०३ से रात्रिअंत ४:४७ वजे (राहु,दान)।	एकार्गल दो. सूर्योदय से १०:१७
सिंह	वृश्चिक	धनु। दि. ९:५० से मकर	मार्गशीर्ष शुक्ल ३ शनि	१२ दिसम्वर २०२६	उ.षा.	९	गोधूलि लग्न। लग्न तुला रात्रि २:४२ से रात्रि ३:२५ वजे (राहु,दान)।	भद्रा—रा.३:२५से रा.अंत (पा.)। उपग्रह दोष रा. ६:११ से रा.अं. तक।
सिंह	धनु	मीन	पौष शुक्ल ६ गुरु	१४ जनवरी २०२७	उ.भा. रेवती		संक्रांति दिन।	उ.भाद्रपदे शनि युति। । उपग्रह दोष रा. ११:२२ से रा.अं. तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से १७:२५
सिंह	मकर	मीन। रा. ११:५४ से मेष	पौष शुक्ल ७ शुक्र	१५ जनवरी २०२७	रेवती	९	लग्न वृष दिन १:३४ से दिन २:२० वजे (शुक्र दान)।	भद्रा—दि.२:२० वजेसे रा.२:१२ (भू.)। मृत्युबाण २०:५० से रातअंत। उपग्रह दोष दिनरात।
सिंह	मकर	वृष	पौष शुक्ल १० चंद्र	१८ जनवरी २०२७	रोहिणी		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा—रा.९:११से रा.अंत (स्व.)। मृगशिर में । क्रान्तिसाम्य दोष दिन ३:०८ से रात ७:०६ वजे तक। उपग्रह दोष सू.उ. से रा. ९:३ तक।
सिंह	मकर	वृष। रा. ५:३७ से मिथुन	पौष शुक्ल ११ मंगल	१९ जनवरी २०२७	रोहिणी	९	लग्न वृष दिन १:१९ से दिन ३:०७ वजे (शुक्र दान)। मृगशिर में सूर्य वेध।	भद्रा—सू.उ.से प्रा.७:४९ वजे (स्व.)। मृगशिरे सूर्य लत्ता, शुक्र जामित्र, । दग्धतिथि प्रातः ७:५० वजे से रात ४:१६ वजे ।
सिंह	मकर	मिथुन	पौष शुक्ल १३ बुध	२० जनवरी २०२७	मृगशिर		मृगशिर में सूर्य वेध।	वैधृति दोष रात १०:२१ वजे से रातअंत। मृगशिर में सूर्य वेध। मृगशिरे सूर्य लत्ता,।
सिंह	मकर	कर्क। रा. ४:५८ से सिंह	माघ कृष्ण १ शनि	२३ जनवरी २०२७	मघायां	८	लग्न धनु रात्रिअंत ५:६० से रात्रिअंत ६:२१ वजे ।	मघायां बुध जामित्र, राहु जामित्र मघा में गुरु युति। । उपग्रह दोष सू.उ. से प्रा. ७:३३ तक।
गुरौ कर्क रात्री १२:२४ वजेः।	मकर	सिंह	माघ कृष्ण २ रवि	२४ जनवरी २०२७	मघा	८	लग्न वृष दिन १२:५९ से दिन २:४८ वजे (शुक्र दान)।	भद्रा—रा.९:३४ से रा.अंत (भू.)। मृत्युबाण १७:०३ से रातअंत। मघायां गुरु जामित्र, राहु जामित्र, गुरु युति। उपग्रह दोष शा. ५:३ से शा. ५:३ तक।
कर्क	मकर	सिंह। रा. ६:४८ से कन्या	माघ कृष्ण ३ चंद्र	२५ जनवरी २०२७	उ.फा.	९	लग्न तुला रात्रि १:२६ से रात्रि १:५३ वजे (राहु,दान)।	भद्रा—सू.उ.से दि.८:१२ वजे (भू.)। अतिगंड दोष रात ११:०२ वजे से रात १:२६ वजे । मृत्युबाण सूर्योदय से १६:३९ तक,। उपग्रह दोष रा. १:१० से रा.अं. तक।
कर्क	मकर	कन्या	माघ कृष्ण ५ मंगल	२६ जनवरी २०२७	उ.फा.	९	लग्न वृष दिन १२:५१ से दिन २:४० वजे (शुक्र दान)। लग्न तुला रात्रि ११:४५ से रात्रि १२:१३ वजे (राहु,दान)।	हस्त में शनि वेध। हस्ते मंगल लत्ता, शनि जामित्र, । उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से २०:२६

गोचर			मास-तिथि वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	सपरिहार शुभ लग्नें । ७ रेखा से कम की लग्नें अति आवश्यकता में ही लेवें	भद्रा, वेध, पापयुति, वेध, बाण, महापात, दग्धतिथि, 10 दोष
गुरू	रवि	चंद्रमा						
कर्क	मकर	कन्या	माघ कृष्ण ६ बुध	२७ जनवरी २०२७	हस्त		हस्त में शनि वेध।	भद्रा—रा.३:५२से रा.अंत (पा.)। हस्त में शनि वेध। हस्ते मंगल लत्ता, शनि जामित्र, । उपग्रह दोष सू.उ. से रा. १२:१ तक।
कर्क	मकर	कन्या। दि. १२:११ से तुला	माघ कृष्ण ७ गुरु	२८ जनवरी २०२७	स्वाती	७	लग्न तुला रात्रि १२:३५ से रात्रि १:४१ वजे (राहु,दान)।	भद्रा—सू.उ.से दि.३:५२ वजे (पा.)। शूल दोष सायं ५:०२ वजे से रात ७:०२ वजे । स्वाते चंद्र लत्ता, राहु लत्ता, पातदोष:,। उपग्रह दोष रा. १२:३५ से रा.अं. तक।
कर्क	मकर	तुला	माघ कृष्ण ८ शुक्र	२९ जनवरी २०२७	स्वाती	६	लग्न तुला रात्रि ११:३३ से रात्रि १:३७ वजे (शुक्र,राहु,दान)।	गण्ड दोष दिन ४:१५ वजे से सायं ६:३९ वजे। स्वाते चंद्र लत्ता, शुक्र लत्ता, राहु लत्ता, पातदोष:। उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से १६:१५ एकार्गल दो.१६:१५ से रातअंत।
कर्क	मकर	तुला। रा. ९:२३ से वृश्चिक	माघ कृष्ण ९ शनि	३० जनवरी २०२७	अनुराधा		निर्दोष लग्न अभाव है।	क्रान्तिसाम्य दोष दिन १०:२८ से दिन ३:०४ वजे तक। अनुराधायां बुध लत्ता, । उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से १६:०३
कर्क	मकर	वृश्चिक	माघ कृष्ण १० रवि	३१ जनवरी २०२७	अनुराधा	८	लग्न मेष दिन ११:०४ से दिन १२:२३ वजे (शनि,दान)। लग्न मिथुन दिन २:३० से दिन ४:३३ वजे (शुक्रदान)।	भद्रा—रा.७:३२ वजेसे रा.अंत (स्व.)। अनुराधायां बुध लत्ता, । उपग्रह दोष दिनरात।
कर्क	मकर	वृश्चिक। दि. ९:१९ से धनु	माघ कृष्ण ११ मंगल	२ फरवरी २०२७	मूल	८	लग्न मेष दिन १०:५६ से दिन १२:१५ वजे (शनि,दान)।	मृत्युबाण १३:४० से रातअंत। मूले शुक्र युति। । उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से ९:१९ दग्धतिथि दिन ११:०८ वजे से रातअंत।
कर्क	मकर	कुंभ। रा. ९:१५ से मीन	माघ शुक्ल ३ मंगल	९ फरवरी २०२७	उ.भा.		निर्दोष लग्न अभाव है।	
कर्क	मकर	मीन	माघ शुक्ल ४ बुध	१० फरवरी २०२७	उ.भा.	१०	लग्न मेष दिन १०:२४ से दिन ११:४४ वजे (शनि,दान)। लग्न मिथुन दिन १:५१ से दिन २:४४ वजे (शुक्रदान)।	भद्रा—दि.२:४४ वजेसे रा.३:०५ (भू.)। रेवत्यां पातदोष:,शनि युति। । उपग्रह दोष रा. ४:५८ से रा. अं. तक।
कर्क	मकर	मीन। रा. ५:४७ से मेष	माघ शुक्ल ५ गुरु	११ फरवरी २०२७	रेवती		शनि युति। निर्दोष लग्न अभाव है।	मृत्युबाण १०:४९ से रातअंत। रेवत्यां पातदोष:,शनि युति। । उपग्रह दोष सू.उ. से रा. ५:४७ तक।
कर्क	कुंभ	मेष। दि. ११:३४ से वृष	माघ शुक्ल ८ रवि	१४ फरवरी २०२७	रोहिणी		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा—सू.उ.से दि.१:३५ वजे (स्व.)। मृत्युबाण १०:०१ से रातअंत। उपग्रह दोष सू.उ. से रा. ४:५५ तक।
कर्क	कुंभ	वृष	माघ शुक्ल ९ चंद्र	१५ फरवरी २०२७	रोहिणी	१०	मृगशिर वैधृति दोष लग्न मेष दिन १०:०५ से दिन ११:२४ वजे ।	वैधृति दोष दिन १२:३८ वजे से रातअंत। मृत्युबाण सूर्योदय से ९:४६ तक,। मृगशिरे पातदोष:,। उपग्रह दोष रा. ३:३१ से रा.अं. तक।
कर्क	कुंभ	वृष। दि. २:३८ से मिथुन	माघ शुक्ल १० मंगल	१६ फरवरी २०२७	मृगशिर	७	लग्न मेष दिन १०:५१ से दिन ११:२० वजे । लग्न मिथुन दिन १:२७ से दिन ३:३० वजे (शुक्र दान)। लग्न तुला रात्रि १०:२२ से रात्रि १२:२६ वजे (शुक्र,राहु,दान)।	वैधृतिदोष सूर्योदय से प्रात: ९:३९ वजे। विष्कुंभ दोष प्रात: ९:३९ वजे से दिन १०:५१ वजे। मृगशिरे पातदोष:। उपग्रह दोष सू.उ. से रा. १:४० तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से ९:३९ एकार्गल दो.९:३९ से रातअंत।
कर्क	कुंभ	कर्क। दि. ४:०७ से सिंह	माघ शुक्ल १४ शनि	२० फरवरी २०२७	मघा	७	लग्न तुला रात्रि १०:०६ से रात्रि १२:१० वजे (शुक्र,राहु,दान)। मंगल युति परिहार।	भद्रा—प्रा.७:५६ वजेसे सा.६:२३ (भू.)। अतिगंड दोष दिन ३:०८ वजे से सायं ५:३२ वजे । मघायां बुध जामित्र राहु जामित्र, मंगल युति। उपग्रह दोष दि. ४:७ से रा.अं. तक।
कर्क	कुंभ	सिंह	फाल्गुन कृष्ण १ रवि	२१ फरवरी २०२७	मघा	६	लग्न मेष प्रात: ९:४१ से दिन ११:०० वजे । लग्न मिथुन दिन १:०७ से दिन १:५२ वजे (शुक्र दान)।	मघायां राहु जामित्र, मंगल युति। । उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से ११:२८ ।
कर्क	कुंभ	सिंह। सा. ५:३४ से कन्या	फाल्गुन कृष्ण २ चंद्र	२२ फरवरी २०२७	उ.फा.		उ.फा. में शनि वेध।	शूलदोष रातअंत ५:३४ वजे से रातअंत । उ.फा. में शनि वेध। उ.फाल्गुन्यां मंगल लत्ता, । उपग्रह दोष सू.उ. से दि. ११:५७ तक।
कर्क	कुंभ	कन्या	फाल्गुन कृष्ण ३ मंगल	२३ फरवरी २०२७	उ.फा. हस्त		निर्दोष लग्न अभाव है।	भद्रा—दि.१०:३४ वजेसे रा.९:४७ (पा.)। शूलदोष सूर्योदय से प्रात: ६:५८ वजे । गण्ड दोष रात २:३० वजे से रातअंत ४:५४ वजे । उ.फा. में शनि वेध। मृत्युबाण ८:०७ से रातअंत। उ.फाल्गुन्यां मंगल लत्ता, । हस्ते पातदोष:,। एकार्गल दो. सूर्योदय से २६:३० एकार्गल दो.२६:३० से रात. अंत । दग्धतिथि रात ९:५५ वजे से रातअंत।

गोचर			मास-तिथि वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	सपरिहार शुभ लग्नें । ७ रेखा से कम की लग्नें अति आवश्यकता में ही लेवें	भद्रा, वेध, पापयुति, वेध, बाण, महापात, दग्धतिथि, 10 दोष
गुरू	रवि	चंद्रमा						
कर्क	कुंभ	कन्या। रा. ९:३६ से तुला	फाल्गुन कृष्ण ४ बुध	२४ फरवरी २०२७	हस्त	७	लग्न मेष प्रातः ९:२९ से प्रातः ९:४२ वजे ।	क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:२० से रात ११:४३ वजे तक। मृत्युबाण सूर्योदय से ७:५७ तक,। हस्ते पातदोषः,। उपग्रह दोष दि. ९:४२ से रा.अं. तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से ९:४२ दग्धतिथि सू.उ. से रात ८:४७ वजे ।
कर्क	कुंभ	तुला। रा. ५:१५ से वृश्चिक	फाल्गुन कृष्ण ६ शुक्र	२६ फरवरी २०२७	स्वाती		स्वाती में सूर्य वेध।	भद्रा—रा.८:४१से रा.अंत (पा.)। व्याघात दोष रात १०:२३ वजे से रात १:५९ वजे । स्वाती में सूर्य वेध। स्वाते राहु लत्ता, । उपग्रह दोष सू.उ. से दि. १०:१६ तक।
कर्क	कुंभ	वृश्चिक	फाल्गुन कृष्ण ७ शनि	२७ फरवरी २०२७	अनुराधा	७	लग्न वृष दिन ११:४१ से दिन १२:३४ वजे (चंद्र,दान)। लग्न तुला रात्रि ९:३९ से रात्रि ११:४३ वजे (राहु,दान)।	भद्रा—सू.उ.से दि.९:०७ वजे (स्व.)। अनुराधायां बुध लत्ता, शुक्र लत्ता, । उपग्रह दोष दि. ११:४१ से रा.अं. तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से २२:११ ।
कर्क	कुंभ	वृश्चिक	फाल्गुन कृष्ण ८ रवि	२८ फरवरी २०२७	अनुराधा	८	लग्न मेष प्रातः ९:१३ से दिन १०:३३ वजे । लग्न वृष दिन १०:४१ से दिन १२:३० वजे (चंद्र,दान)।	वज्र दोष रात १०:२९ वजे से रात ११:४१ वजे । अनुराधायां बुध लत्ता, शुक्र लत्ता, । उपग्रह दोष दिनरात।
कर्क	कुंभ	वृश्चिक। दि. ४:२६ से धनु	फाल्गुन कृष्ण ९ चंद्र	१ मार्च २०२७	मूल	९	लग्न तुला रात्रि ९:३१ से रात्रि ११:३५ वजे (राहु,दान)।	उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से २३:१० ।
कर्क	कुंभ	धनु	फाल्गुन कृष्ण १० मंगल	२ मार्च २०२७	मूल	९	लग्न मेष प्रातः ९:०६ से दिन १०:२५ वजे ।	भद्रा—दि.३:१८ वजेसे रा.४:३८ (पा.)। व्यतिपात दोष रात १२:०५ वजे से रातअंत। उपग्रह दोष दिनरात।
कर्क	कुंभ	धनु। रा. ५:१९ से मकर	फाल्गुन कृष्ण ११ बुध	३ मार्च २०२७	उ.षा.		निर्दोष लग्न अभाव है।	व्यतिपातदोष सूर्योदय से रात १:०५ वजे । उ.षाण्यां पातदोषः,शुक्र युति। । उपग्रह दोष दिनरात। एकार्गल दो. सूर्योदय से २५:०५ ।
कर्क	कुंभ	मीन	फाल्गुन शुक्ल १ मंगल	९ मार्च २०२७	उ.भा.	१०	लग्न वृश्चिक रात्रि ११:१५ से रात्रि १:२० वजे (शुक्र,दान)।	कृप्नांग चतुर्दिनं सूर्योदय से १५:३९।
कर्क	कुंभ	मीन	फाल्गुन शुक्ल २ बुध	१० मार्च २०२७	रेवती	९	लग्न वृश्चिक रात्रि ११:११ से रात्रि १:१६ वजे (शुक्र,दान)। शनि युति परिहार	क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:१४ से दिन १२:२७ वजे तक। रेवत्यां शनि युति।
कर्क	कुंभ	मीन। दि. ११:१९ से मेष	फाल्गुन शुक्ल ३ गुरु	११ मार्च २०२७	रेवती	९	लग्न मेष प्रातः ८:३० से प्रातः ९:४९ वजे । लग्न वृष प्रातः ९:५८ से दिन १०:३१ वजे ।	भद्रा—रा.३:२२से रा.अंत (स्व.)। रेवत्यां शनि युति।दग्धतिथि दिन ३:३६ वजे से रातअंत।
कर्क	कुंभ	वृष	फाल्गुन शुक्ल ६ रवि	१४ मार्च २०२७	रोहिणी	८	लग्न वृष दिन १०:२८ से दिन ११:३५ वजे । गोधूलि लग्न। लग्न वृश्चिक रात्रि १०:५५ से रात्रि १:०० वजे (शुक्र,चंद्र,दान)।	मृत्युबाण सूर्योदय से ७:०४ तक,। उपग्रह दोष दि. १०:२८ से रा.अं. तक। एकार्गल दो. सूर्योदय से १७:१५ ।
कर्क	कुंभ	वृष। रा. ८:५७ से मिथुन	फाल्गुन शुक्ल ७ चंद्र	१५ मार्च २०२७	रोहिणी मृगशिर		संक्रांति दिन। होलाष्टक प्रारम्भ १०:५७ से।	भद्रा—दि.१०:५७ वजेसे रा.१०:०१ (स्व.)। उपग्रह दोष दिनरात।

(विवाह मुहूर्त इति)

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त

वैशाख शुक्ल ३ चंद्र (२० अप्रैल) – देव प्रतिष्ठा रोहिणी में सूर्योदय से प्रात: ७:३१ बजे तक रवियो.–सू.उ.से रा.२:१३वजे। स.सि.योग–रात्रि २:१३वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.२:१३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ६ बुध (२२ अप्रैल) – देव प्रतिष्ठा पुनर्वसु में रात १०:५० बजे से रात्रिअंत तक ल. ९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.१०:१८वजे। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ७ गुरु (२३ अप्रैल) – देव प्रतिष्ठा पुनर्वसु में सूर्योदय से रात ८:४९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,६, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)स.सि.योग–रात्रि ९:०३वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.९:०३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:१९ तक।

वैशाख शुक्ल ८ शुक्र (२४ अप्रैल) – देव प्रतिष्ठा पुष्य में प्रात: ७:५८ बजे से रात ७:२३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,६, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष रात १:२९ वजे से रात ३:५३ वजे ।)रवियो.–रा.८:२१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ११ चंद्र (२७ अप्रैल) – देव प्रतिष्ठा उ.फा. में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत तक ल. ८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात ९:४५ वजे से रात १:२१ वजे । पूर्वा. फा. में सूर्य वेध । उ.फा. में मंगल वेध,।) चंद्रमा– सिंह में रा. ३:४४ तक।

वैशाख शुक्ल १३ बुध (२९ अप्रैल) – देव प्रतिष्ठा हस्त में सूर्योदय से रात ७:५६ बजे तक लग्न. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात ८:५८ वजे से रात १०:१० वजे । हस्त में शनि वेध।)रवियो.–रा.१२:२३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि १२:२३वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १५ शुक्र (१ मई) – देव प्रतिष्ठा स्वाती में दिन १०:०० बजे से रात ९:१६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ३,४,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – स्वाती में राहु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ५ गुरु (७ मई) – देव प्रतिष्ठा उ.षा. में सायं ६:४३ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०,११,१२,रवियो.–शा.६:४३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में रा. १:२५ तक।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ६ शुक्र (८ मई) – देव प्रतिष्ठा उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे एवं श्रवण में रात १:१५ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,ल. १०,११,१२,रवियो.–सू.उ.से रा.९:१७वजे। स.सि.योग.रा.९:१७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ७ शनि (९ मई) – देव प्रतिष्ठा श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ९:११ से दिन १:२५ वजे तक।)स.सि.योग–रात्रि ११:२१वजे तक। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ८ रवि (१० मई) – देव प्रतिष्ठा धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन ३:०५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,६, (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में राहु युति।) चंद्रमा– मकर में दि. १२:०८ तक।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ९ चंद्र (११ मई) – देव प्रतिष्ठा शतभिषा में दिन ३:२३ बजे से रात १२:५९ बजे तक लग्न ६,७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में राहु युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ३ बुध (१७ जून) – देव प्रतिष्ठा पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात ९:०२ बजे तक लग्न. ६, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में बुध गुरु युति। पुष्य में शुक्र युति।)रवियो.–दि.१:४८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ८:२२ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १० बुध (२४ जून) – उग्र देव प्रतिष्ठा, चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – स्वाती में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ११ गुरु (२५ जून) – उग्र देव प्रतिष्ठा, स्वाती में सूर्योदय से प्रात: ७:०९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – स्वाती में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से दि.४:३३वजे। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १२ शुक्र (२६ जून) – उग्र देव प्रतिष्ठा, अनुराधा में रात ७:१९ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक स.सि.योग.रा.७:१९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दि. १२:३६ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १३ शनि (२७ जून) – उग्र देव प्रतिष्ठा, अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:१३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,८,१०,रवियो.–रा.१०:१३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

आषाढ कृष्ण १ बुध (१ जुलाई) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में प्रात: ६:५१ बजे से दिन ४:०२ बजे तक ल. ४,ल. ४,५,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – पूर्वाषाढ. में सूर्य वेध ।) चंद्रमा– धनु में दि. १:३० तक।

आषाढ कृष्ण २ गुरु (२ जुलाई) – उग्र देव प्रतिष्ठा, श्रवण में सायं ५:४८ बजे से रात्रि १०:२८ बजे तक ल. ८,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – श्रवण में मंगल वेध,।) चंद्रमा– मकर में दिनरात।

आषाढ कृष्ण ४ शनि (४ जुलाई) – उग्र देव प्रतिष्ठा, धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १२:३८ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में राहु युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

आषाढ कृष्ण ५ रवि (५ जुलाई) – उग्र देव प्रतिष्ठा, शतभिषा में सूर्योदय से दिन ३:१० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७, (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में राहु युति।)रवियो.–दि.३:१० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

आषाढ कृष्ण ६ चंद्र (६ जुलाई) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.भा. में रात १:४५ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक रवियो.–सू.उ.से दि.१२:००वजे, पुन:दि.४:०६से रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में दि. ९:५७ तक।

आषाढ कृष्ण ८ बुध (८ जुलाई) – उग्र देव प्रतिष्ठा, रेवती में सूर्योदय से दिन १२:२५ बजे तक लग्न. ४,६, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।) चंद्रमा– मीन में दि. ३:५९ तक।

श्रावण शुक्ल २ शुक्र (१४ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.फा. में रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ५:६० बजे तक (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में शनि वेध,।)रवियो.–रा.३:४७ वजेसे रा.अं.। सिद्धयोग–रात्रि ३:४७वजे तक। चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ३ शनि (१५ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.फा. में सूर्योदय से सायं ५:३१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में शनि वेध। हस्त में शुक्र युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.३:३१वजे। चंद्रमा– सिंह में दि. ९:४० तक।

श्रावण शुक्ल ४ रवि (१६ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, हस्त में एवं चित्रा में दिन ४:५५ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक लग्न १, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शुक्र युति।)रवियो.–रा.३:५६ वजेसे रा. अं.। अमृ.सि.योग–रात्रि ३:५६वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ७ बुध (१९ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, स्वाती में सूर्योदय से प्रात: ६:५२ बजे तक (परिहार चिंतनीय – विशाखा में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:५२वजे। चंद्रमा– तुला में रा. २:३५ तक।

श्रावण शुक्ल १३ बुध (२६ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, श्रवण में सूर्योदय से प्रात: ७:५८ बजे तक (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में राहु युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.१२:४७वजे। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १४ गुरु (२७ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, धनिष्ठा में एवं शतभिषा में रात ९:३० बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक लग्न १,२,३,ल. ३,४, (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में गुरु वेध रात ७:५५ वजे से रात २:१५ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।) चंद्रमा– मकर में दि. १:३४ तक।

भाद्रपद कृष्ण १ शनि (२९ अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.भा. में रात ३:४१ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक ल. ४, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में शुक्रवेध दिन ३:२९ वजे से रात ९:३५ वजे तक।) चंद्रमा– कुंभ में रा. ९:३५ तक।

भाद्रपद कृष्ण २ रवि (३० अगस्त) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.भा. में प्रात: ७:२३ बजे से रात ९:१४ बजे तक लग्न. ६,७,अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,८,९,१०,११,१२,१,२, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)स.सि.योग–रात्रि ३:४३वजे तक। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

भाद्रपद कृष्ण ७ गुरु (३ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, रोहिणी में रात १२:३१ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक रवियो.–सू.उ.से रा.१२:३१वजे। चंद्रमा– मेष में प्रा. ७:२८ तक।

भाद्रपद कृष्ण ८ शुक्र (४ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:१७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,८,९,१०,१२,१, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष दिन ३:४७ वजे से दिन ४:५९ वजे ।) चंद्रमा– वृष में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल १ शनि (१२ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.फा. में एवं हस्त में प्रात: ७:४७ बजे से रात्रिअंत ६:१० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,८, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ९:१५ से रात १:३३ वजे तक। उ.फा. में शनि वेध। उ.फा. में बुध युति।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल २ रवि (१३ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त हैं। रवियो.–दि.१:११ वजेसे रा.९:५६वजे। अमृ.सि.योग–दिन १:११वजे तक। चंद्रमा– कन्या में रा. १:३० तक।

भाद्रपद शुक्ल ३ चंद्र (१४ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ७:०६ बजे तक लग्न. ६, (परिहार चिंतनीय – स्वाती में शुक्र युति।)रवियो.–दि.१:६० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल ५ बुध (१६ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, अनुराधा में सायं ५:२८ बजे से रात्रिअंत ६:११ बजे तक ल. ११,१२,१,२,३,४, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में राहु वेध, ।)रवियो.–शा.५:२८ वजेसे रा.अं.। अमृ.सि.योग.सा.५:२८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दि. १०:५४ तक।

भाद्रपद शुक्ल ९ रवि (२० सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में रात ४:३२ बजे से रात्रिअंत ६:१२ बजे तक ल. ५,रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। स.सि.योग.रा.४:३२ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल १० चंद्र (२१ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में सूर्योदय से रात ६:१३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,९,१०,१२,१,लग्न ३, (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष दिन ४:०२ वजे से सायं ६:२६ वजे ।)रवियो.–सू.उ.से रा.७:०५वजे। स.सि.योग.रा.७:०५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दि. ११:११ तक।

भाद्रपद शुक्ल १२ बुध (२३ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में गुरु वेध दिन ३:२९ वजे से रात ९:५३ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।) चंद्रमा– मकर में रा. ९:५३ तक।

भाद्रपद शुक्ल १३ गुरु (२४ सितम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात ११:१८ बजे तक लग्न. ७,अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ८,९,१०,११,१२,१,२,३, (परिहार चिंतनीय –

शूल दोष दिन ३:५२ वजे से सायं ५:५२ वजे । शतभिषा में शुक्रवेध रात ११:०१ वजे से रात. अंत ५:१५ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)रवियो.–दि.१०:३३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण ७ रवि (१ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, पुष्य में सूर्योदय से रात ४:३१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में मंगल युति।)रविपुष्य योग–रात्रि ४:३१वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल २ बुध (११ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, अनुराधा में सूर्योदय से दिन ११:३८ बजे तक लग्न. ९, (परिहार चिंतनीय – अनुराधा में भौम वेध ।)अमृ.सि.योग–दिन ११:३८वजे तक। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ५ शनि (१४ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में रात ८:२५ बजे से रात्रिअंत ६:३८ बजे तक ल. ३,४,ल. ४,५,६,रवियो.–रा.८:२५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में रा. ३:१२ तक।

कार्तिक शुक्ल ६ रवि (१५ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में एवं श्रवण में प्रात: ८:४८ बजे से रात १:४० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १:४० से रात ६:११ वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से रा.११:२९वजे। स.सि.योग–रात्रि ११:२९वजे तक। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १० शुक्र (२० नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.भा. में प्रात: ७:५३ बजे से सायं ६:५२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ९,१०,११,१२,१,२, (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.६:०१वजे। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण १ बुध (२५ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। स.सि.योग–रात्रि ८:४५वजे तक। स.सि.योग.रा.८:४५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण २ गुरु (२६ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, मृगशिर में सूर्योदय से सायं ५:५८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११,लग्न ११,१२,१,२, चंद्रमा– वृष में प्रा. ७:२१ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण ५ शनि (२८ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, पुनर्वसु में एवं पुष्य में प्रात: ९:२८ बजे से रात्रिअंत ६:४७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष प्रात: ५:१७ से दिन ९:२८ वजे तक।) चंद्रमा– मिथुन में प्रा. ७:२९ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण ६ रवि (२९ नवम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:०४ बजे तक लग्न. १०, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में सूर्य वेध,।)रवियो.–दि.११:०४ वजेसे रा.अं.। रविपुष्य योग–दिन ११:०४वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ९ बुध (२ दिसम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.फा. में रात १०:४९ बजे से रात्रिअंत ६:५० बजे तक चंद्रमा– सिंह में दि. ३:०१ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरु (३ दिसम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.फा. में सूर्योदय से प्रात: ९:२५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल २ शुक्र (११ दिसम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में रात ३:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक रवियो.–रा.३:०३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ३ शनि (१२ दिसम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, उ.षा. में सूर्योदय से दिन २:०३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,रवियो.–सू.उ.से रा.६:११वजे। स.सि.योग.रा.६:११ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दि. ९:५० तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ४ रवि (१३ दिसम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, श्रवण में दिन ४:४६ बजे से रात ६:५७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष दिन १२:१४ वजे से दिन ३:५० वजे ।)रवियो.–रा. ९:१४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ५ चंद्र (१४ दिसम्वर) – उग्र देव प्रतिष्ठा, श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – श्रवण में गुरु वेध प्रात: ६:५८ से प्रात: ९:१३ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)रवियो.–दि.९:१३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ९:१३वजे तक। चंद्रमा– मकर में रा. १०:३५ तक।

पौष शुक्ल ७ शुक्र (१५ जनवरी) – देव प्रतिष्ठा रेवती में सूर्योदय से दिन २:२० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,१, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में मंगल वेध,।)अमृ.सि.योग–रात्रि ११:५४वजे तक। स.सि.योग.रा.११:५४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ११:५४ तक।

पौष शुक्ल १० चंद्र (१८ जनवरी) – देव प्रतिष्ठा रोहिणी में रात ९:०३ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ३:०८ से रात ७:०६ वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से रा.९:०३वजे। स.सि.योग.रा.९:०३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

पौष शुक्ल १३ बुध (२० जनवरी) – देव प्रतिष्ठा मृगशिर में सूर्योदय से दिन ४:१४ बजे तक लग्न. १, (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में सूर्य वेध ।)रवियो.–दि.४:१४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ४:१४वजे तक। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

पौष शुक्ल १५ शुक्र (२२ जनवरी) – देव प्रतिष्ठा पुनर्वसु में एवं पुष्य में प्रात: ७:३५ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – पुष्य में शुक्रवेध रात ८:६० वजे से रात २:१७ वजे तक।)स.सि.योग–दिन १०:२६वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

माघ कृष्ण १ शनि (२३ जनवरी) – देव प्रतिष्ठा पुष्य में सूर्योदय से प्रात: ७:३३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में केतु युति। मघा में गुरु युति।) चंद्रमा– कर्क में रा. ४:५८ तक।

माघ कृष्ण ६ बुध (२७ जनवरी) – देव प्रतिष्ठा हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ३:५२ बजे तक लग्न. १०,१२,१,२,६,७, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।)रवियो.–रा.१२:०१ वजेसे रा. अं.। स.सि.योग–रात्रि १२:०१वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

माघ कृष्ण ७ गुरु (२८ जनवरी) – देव प्रतिष्ठा चित्रा में एवं स्वाती में दिन ३:५२ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – शूल दोष सायं ५:०२ वजे से रात ७:०२ वजे ।)रवियो.–सू.उ.से रा.१२:३५वजे। चंद्रमा– कन्या में दि. १२:११ तक।

माघ कृष्ण ८ शुक्र (२९ जनवरी) – देव प्रतिष्ठा स्वाती में सूर्योदय से रात १:५५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,१२,१,२,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष दिन ४:१५ वजे से सायं ६:३९ वजे । विशाखा में राहु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

माघ कृष्ण ९ शनि (३० जनवरी) – देव प्रतिष्ठा अनुराधा में रात ६:२८ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन १०:२८ से दिन ३:०४ वजे तक। विशाखा में राहु वेध, । अनुराधा में केतु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में रा. ९:२३ तक।

माघ कृष्ण १० रवि (३१ जनवरी) – देव प्रतिष्ठा अनुराधा में सूर्योदय से रात ७:३२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,१२,१,२, (परिहार चिंतनीय – अनुराधा में केतु वेध, ।) चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

माघ शुक्ल २ चंद्र (८ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा शतभिषा में प्रात: ९:४८ बजे से रात १:५५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ,१२,१,२,६,७,लग्न ७,८, (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में बुध युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

माघ शुक्ल ४ बुध (१० फरवरी) – देव प्रतिष्ठा उ.भा. में एवं रेवती में रात ३:०५ बजे से रात्रिअंत तक लग्न ८,९, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.४:५८वजे। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

माघ शुक्ल ५ गुरु (११ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा रेवती में सूर्योदय से रात ५:४७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११,१२,१,२,३,६,७,८,९,लग्न ९, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–रा.५:४७ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ५:४७वजे तक। स.सि.योग.रा.५:४७ वजेसे रा. अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ५:४७ तक।

माघ शुक्ल ११ बुध (१७ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा पुनर्वसु में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – आर्द्रा में शुक्रवेध प्रात: ७:११ वजे से दिन १२:३७ वजे तक।) चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

माघ शुक्ल १२ गुरु (१८ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त हैं। रवियो.–रा.९:०४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ९:०४वजे तक। अमृ.सि.योग. रा.९:०४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:४२ तक।

माघ शुक्ल १३ शुक्र (१९ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:११ बजे तक लग्न. १२,१, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में बुधवेध सायं ६:३४ वजे से रात ११:५७ वजे तक।अश्लेषा में गुरु केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:३४वजे, पुन:रा.१२:४४से रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण २ चंद्र (२२ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा उ.फा. में दिन ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. २,३,४,५,६,७,ल. ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में शनि वेध,।) चंद्रमा– सिंह में सा. ५:३४ तक।

फाल्गुन कृष्ण ४ बुध (२४ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा चित्रा में रात ११:४३ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:२० से रात ११:४३ वजे तक।)स.सि. योग–दिन ९:४२वजे तक। चंद्रमा– कन्या में रा. ९:३६ तक।

फाल्गुन कृष्ण ५ गुरु (२५ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – स्वाती में सूर्य वेध,।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ६ शुक्र (२६ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा स्वाती में सूर्योदय से दिन १०:१६ बजे तक लग्न. १२,१, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात १०:२३ वजे से रात १:५९ वजे । स्वाती में सूर्य वेध । विशाखा में राहु वेध, ।)रवियो.–दि.१०:१६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में रा. ५:१५ तक।

फाल्गुन कृष्ण ७ शनि (२७ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा अनुराधा में दिन ११:४१ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. २,३,४,५,६,७,ल. ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में राहु वेध, । अनुराधा में केतु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से दि.११:४१वजे। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ८ रवि (२८ फरवरी) – देव प्रतिष्ठा अनुराधा में सूर्योदय से दिन १:४८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १२,१,२, (परिहार चिंतनीय – अनुराधा में केतु वेध, ।) चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल २ बुध (१० मार्च) – रेवती में दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:१४ से दिन १२:२७ वजे तक। रेवती में शनि युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल ३ गुरु (११ मार्च) – देव प्रतिष्ठा रेवती में सूर्योदय से दिन ११:१९ बजे तक लग्न. १२,१,२, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। स.सि.

योग–दिन ११:१९वजे तक। स.सि.योग.दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ११:१९ तक।

फाल्गुन शुक्ल ६ रवि (१४ मार्च) – देव प्रतिष्ठा रोहिणी में दिन १०:२८ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. २,३,ल. ३,४,५,६,७,८,९,१०,रवियो.–सू.उ.से दि.१०:२८वजे। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

उपनयन मुहूर्त

वैशाख शुक्ल ३ चंद्र (२० अप्रैल) – उपनयन, रोहिणी में सूर्योदय से प्रात: ७:३१ बजे तक रवियो.–सू.उ.से रा.२:१३वजे। स.सि.योग–रात्रि २:१३वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.२:१३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ११ चंद्र (२७ अप्रैल) – उपनयन, पू.फा. में सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे तक (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात ९:४५ वजे से रात १:२१ वजे । पूर्वा.फा. में सूर्य वेध । उ.फा. में मंगल वेध,।) चंद्रमा– सिंह में रा. ३:४४ तक।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण २ रवि (३ मई) – उपनयन, अनुराधा में प्रात: ७:०९ बजे से रात १०:२८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. २,३,४,५,६,७,८,९, चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ४ बुध (६ मई) – उपनयन, मूल में प्रात: ७:४९ बजे से दिन ३:५२ बजे तक लग्न २,३,४,५,६, (परिहार चिंतनीय – मूल में गुरु वेध प्रात: ५:४७ से प्रात: ९:०८ वजे तक।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ५ गुरु (७ मई) – उपनयन, पू.षा. में सूर्योदय से दिन १०:१२ बजे तक लग्न. २,३,रवियो.–शा.६:४३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में रा. १:२५ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ३ बुध (१७ जून) – उपनयन, पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात ९:०२ बजे तक लग्न. ६, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में बुध गुरु युति। पुष्य में शुक्र युति।)रवियो.–दि. १:४८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ८:२२ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ५ शुक्र (१९ जून) – उपनयन, अश्लेषा में सूर्योदय से दिन १०:१७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष दिन ३:०४ वजे से दिन ४:१६ वजे । मघा में केतु युति।)रवियो.–दि.१०:१७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दि. १०:१७ तक।

पौष शुक्ल १५ शुक्र (२२ जनवरी) – उपनयन (आवश्यके), पुनर्वसु में एवं पुष्य में प्रात: ७:३५ बजे से सायं ५:४६ बजे तक लग्न. ११,अभिजित् मुहूर्त एवं ल. १२,१,२,३,४, (परिहार चिंतनीय – पुष्य में शुक्रवेध रात ८:६० वजे से रात २:१७ वजे तक।)स.सि.योग–दिन १०:२६वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

माघ शुक्ल २ चंद्र (८ फरवरी) – उपनयन, शतभिषा में प्रात: ९:४८ बजे से रात १:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ,१२,१,२,६,७, (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में बुध युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

माघ शुक्ल ५ गुरु (११ फरवरी) – उपनयन, रेवती में सूर्योदय से रात ३:२१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११,१२,१,२,३,६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–रा. ५:४७ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ५:४७वजे तक। स.सि.योग.रा.५:४७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ५:४७ तक।

माघ शुक्ल १२ गुरु (१८ फरवरी) – उपनयन, पुनर्वसु में सूर्योदय से दिन २:२६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १२,१,२,रवियो.–रा.९:०४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ९:०४वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.९:०४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:४२ तक।

फाल्गुन कृष्ण ५ गुरु (२५ फरवरी) – उपनयन, चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ९:३६ बजे तक लग्न. १२,१, (परिहार चिंतनीय – स्वाती में सूर्य वेध,।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल २ बुध (१० मार्च) – उपनयन, उ.भा. में सूर्योदय से प्रात: ८:१४ बजे एवं रेवती में दिन १२:२७ बजे से दिन ३:५२ बजे तक लग्न. १२,ल. ३,४, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:१४ से दिन १२:२७ वजे तक। रेवती में शनि युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल ३ गुरु (११ मार्च) – उपनयन, रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से दिन ३:३७ बजे तक लग्न. १२,१,२,अभिजित् मुहूर्त एवं ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ११:१९वजे तक। स.सि.योग.दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ११:१९ तक।

मुंडन मुहूर्त

वैशाख शुक्ल ७ गुरु (२३ अप्रैल) – मुंडन, पुनर्वसु में सूर्योदय से रात ८:४९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,६, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)स.सि.योग–रात्रि ९:०३वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.९:०३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:१९ तक।

वैशाख शुक्ल १३ बुध (२९ अप्रैल) – मुंडन, हस्त में सूर्योदय से रात ७:५६ बजे तक लग्न. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात ८:५८ वजे से रात १०:१० वजे । हस्त में शनि वेध।)रवियो.–रा.१२:२३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि १२:२३वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ३ बुध (१७ जून) – मुंडन, पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात ९:०२ बजे तक लग्न. ६, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में बुध गुरु युति। पुष्य में शुक्र युति।)रवियो.–दि. १:४८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ८:२२ तक।

पौष शुक्ल ७ शुक्र (१५ जनवरी) – मुंडन, रेवती में सूर्योदय से दिन २:२० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,१, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में मंगल वेध,।)अमृ.सि.योग–रात्रि ११:५४वजे तक। स.सि.योग.रा.११:५४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ११:५४ तक।

पौष शुक्ल १३ बुध (२० जनवरी) – मुंडन, मृगशिर में सूर्योदय से दिन ४:१४ बजे तक लग्न. १, (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में सूर्य वेध ।)रवियो.–दि.४:१४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ४:१४वजे तक। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

माघ कृष्ण ७ गुरु (२८ जनवरी) – मुंडन, चित्रा में दिन ३:५२ बजे से रात १२:३५ बजे तक लग्न. ,६,७, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष सायं ५:०२ वजे से रात ७:०२ वजे ।)रवियो.–सू.उ.से रा.१२:३५वजे। चंद्रमा– कन्या में दि. १२:११ तक।

माघ कृष्ण १० चंद्र (१ फरवरी) – मुंडन, ज्येष्ठा में प्रात: ८:३६ बजे से रातअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १२,१,२,३,४,५,६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष दिन ४:५५ वजे से रात ८:३१ वजे ।) चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

माघ शुक्ल २ चंद्र (८ फरवरी) – मुंडन, शतभिषा में प्रात: ९:४८ बजे से रात १:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ,१२,१,२,६,७, (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में बुध युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

माघ शुक्ल ५ गुरु (११ फरवरी) – मुंडन, रेवती में सूर्योदय से रात ३:२१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११,१२,१,२,३,६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–रा. ५:४७ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ५:४७वजे तक। स.सि.योग.रा.५:४७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ५:४७ तक।

माघ शुक्ल १३ शुक्र (१९ फरवरी) – मुंडन, पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:११ बजे तक लग्न. १२,१, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में बुधवेध सायं ६:३४ वजे से रात ११:५७ वजे तक।अश्लेषा में गुरु केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:३४वजे, पुन:रा.१२:४४से रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ५ गुरु (२५ फरवरी) – मुंडन, चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ८:१६ बजे तक लग्न. १२,१,अभिजित् मुहूर्त एवं ल. १,२,३,४,५,६, (परिहार चिंतनीय – स्वाती में सूर्य वेध,।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल ३ गुरु (११ मार्च) – मुंडन, रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से दिन ३:३७ बजे तक लग्न. १२,१,२,अभिजित् मुहूर्त एवं ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ११:१९वजे तक। स.सि.योग.दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ११:१९ तक।

नींव-खनन मुहूर्त

वैशाख शुक्ल १ शनि (१८ अप्रैल) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , भरणी में दिन २:१४ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – भरणी में केतु वेध, । अश्विनी में सूर्य युति।) चंद्रमा– मेष में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ९ शनि (२५ अप्रैल) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १५:४१ से, त्यागकर), मघा में रात १०:५८ बजे से रात्रिअंत तक ल. ९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष सायं ६:४१ से रात १०:५८ वजे तक। मघा में केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में रा. ८:१३ तक।

वैशाख शुक्ल ११ चंद्र (२७ अप्रैल) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , पू.फा. में सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे एवं सायं ६:२२ बजे से रात ९:२९ बजे तक लग्न ७,८, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात ९:४५ वजे से रात १:२१ वजे । पूर्वा.फा. में सूर्य वेध । उ.फा. में मंगल वेध,।) चंद्रमा– सिंह में रा. ३:४४ तक।

श्रावण शुक्ल २ शुक्र (१४ अगस्त) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पू.फा. में सूर्योदय से रात ३:४७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,८,९,१०,लग्न १०,११,१२,१,२,३, (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में शनि वेध,।)रवियो.–रा.३:४७ वजेसे रा.अं.। सिद्धयोग–रात्रि ३:४७वजे तक। चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १० शनि (२२ अगस्त) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , मूल में दिन २:४९ बजे से रात्रिअंत ६:०३ बजे तक ल. ९,१०,११,१२,१,२,३,ल. ३,४,रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– वृश्चिक में दि. २:४९ तक।

श्रावण शुक्ल १२ चंद्र (२४ अगस्त) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , पू.षा. में सूर्योदय से रात ८:२६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,८,१०,१२, (परिहार चिंतनीय – पूर्वाषाढ. में भौम वेध ।) चंद्रमा– धनु में रा. ३:०५ तक।

कार्तिक कृष्ण ८ चंद्र (२ नवम्वर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , अश्लेषा में सूर्योदय से दिन १:०९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ८, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष सायं ५:५७ से रात १०:१२ वजे तक। अश्लेषा में मंगल युति। मघा में गुरु केतु युति।) चंद्रमा– कर्क में रा. ३:४८ तक।

कार्तिक कृष्ण १० बुध (४ नवम्वर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पू.फा. में दिन ११:०५

बजे से रात ३:३६ बजे तक चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ३ गुरु (१२ नवम्वर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मूल में दिन २:१९ बजे से सायं ६:०६ बजे तक रवियो.–दि.२:१९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृश्चिक में दि. २:१९ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण ७ चंद्र (३० नवम्वर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मघा में दिन १२:५२ बजे से दिन २:३० बजे तक (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में सूर्य वेध । मघा में मंगल गुरु केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.९:४३वजे। चंद्रमा– कर्क में दि. ९:४३ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल १ गुरु (१० दिसम्वर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मूल में एवं पू.षा. में प्रात: ८:४४ बजे से रात्रिअंत ४:३५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ४:३५ से रातअंत वजे तक। गण्ड दोष प्रात: ९:२४ वजे से दिन ११:४८ वजे ।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल २ शुक्र (११ दिसम्वर) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पू.षा. में सूर्योदय से रात ३:०३ बजे तक लग्न. ११,रवियो.–रा.३:०३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दिनरात।

माघ कृष्ण १ शनि (२३ जनवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , अश्लेषा में प्रात: ७:३३ बजे से रात्रिअंत ५:२६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ११,१२,१,२,ल. २,३,४,५,६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में केतु युति। मघा में गुरु युति।) चंद्रमा– कर्क में रा. ४:५८ तक।

माघ कृष्ण ८ शुक्र (२९ जनवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , विशाखा में रात १:५५ बजे से रात ४:५३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष दिन ४:१५ वजे से सायं ६:३९ वजे । विशाखा में राहु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

माघ कृष्ण १२ बुध (३ फरवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १३:१९ से, त्यागकर), मूल में सूर्योदय से दिन १२:२५ बजे तक लग्न. १०,११,१२,१,२, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष सायं ६:४४ वजे से रात ७:५६ वजे । मूल में शुक्र युति।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

माघ शुक्ल २ चंद्र (८ फरवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , पू.भा. में रात १:५५ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में बुध युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

माघ शुक्ल १४ शनि (२० फरवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , मघा में सायं ६:२३ बजे से रात्रिअंत ५:११ बजे तक ल. ५,६,७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में गुरु केतु युति। मघा में मंगल युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.४:०७वजे। चंद्रमा– कर्क में दि. ४:०७ तक।

फाल्गुन कृष्ण २ चंद्र (२२ फरवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , पू.फा. में सूर्योदय से दिन ११:५७ बजे तक लग्न. १२,१,२, (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में शनि वेध,।) चंद्रमा– सिंह में सा. ५:३४ तक।

फाल्गुन कृष्ण ६ शुक्र (२६ फरवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , विशाखा में दिन १०:१६ बजे से रात ८:४१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. १,२,३,४,५,६, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात १०:२३ वजे से रात १:५९ वजे । स्वाती में सूर्य वेध । विशाखा में राहु वेध, ।)रवियो.–दि.१०:१६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में रा. ५:१५ तक।

फाल्गुन कृष्ण ७ शनि (२७ फरवरी) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , विशाखा में प्रात: ९:०७ बजे से दिन ११:४१ बजे तक लग्न. १,२, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में राहु वेध, । अनुराधा में केतु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से दि.११:४१वजे। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ९ चंद्र (१ मार्च) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मूल में रात २:०१ बजे से रात्रिअंत तक ल. ८,९,१०, चंद्रमा– वृश्चिक में दि. ४:२६ तक।

फाल्गुन शुक्ल ५ शनि (१३ मार्च) – नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , कृतिका में रात ८:४५ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०,रवियो.–दि.११:०५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मेष में दि. ४:५७ तक।

गृहारंभ मुहूर्त

वैशाख शुक्ल ३ चंद्र (२० अप्रैल) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , रोहिणी में सूर्योदय से प्रात: ७:३१ बजे तक रवियो.–सू.उ.से रा.२:१३वजे। स.सि.योग–रात्रि २:१३वजे तक। अमृ.सि.योग.रा. २:१३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ८ शुक्र (२४ अप्रैल) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , पुष्य में प्रात: ७:५८ बजे से रात ७:२३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,६, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष रात १:२९ वजे से रात ३:५३ वजे ।)रवियो.–रा.८:२१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १५ शुक्र (१ मई) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , स्वाती में दिन १०:०० बजे से रात ९:१६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ३,४,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – स्वाती में राहु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

श्रावण शुक्ल २ शुक्र (१४ अगस्त) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.फा. में रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ५:६० बजे तक (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में शनि वेध,।)रवियो.–रा.३:४७ वजेसे रा.अं.। सिद्धयोग–रात्रि ३:४७वजे तक। चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ३ शनि (१५ अगस्त) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.फा. में सूर्योदय से सायं ५:३१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में शनि वेध। हस्त में शुक्र युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.३:३१वजे। चंद्रमा– सिंह में दि. ९:४० तक।

श्रावण शुक्ल ७ बुध (१९ अगस्त) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १०:०१ से, त्यागकर), स्वाती में सूर्योदय से प्रात: ६:५२ बजे तक (परिहार चिंतनीय – विशाखा में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:५२वजे। चंद्रमा– तुला में रा. २:३५ तक।

श्रावण शुक्ल ८ गुरु (२० अगस्त) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १०:५७ तक, त्यागकर), अनुराधा में प्रात: ९:१२ बजे से रात ९:१९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ६,७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में राहु वेध, ।)स.सि.योग.दि.९:१२ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १० शनि (२२ अगस्त) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , मूल में दिन २:४९ बजे से रात्रिअंत ६:०३ बजे तक ल. ९,१०,११,१२,१,२,३,ल. ३,४,रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– वृश्चिक में दि. २:४९ तक।

श्रावण शुक्ल १३ बुध (२६ अगस्त) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , श्रवण में सूर्योदय से प्रात: ७:५८ बजे तक (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में राहु युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.१२:४७वजे। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १४ गुरु (२७ अगस्त) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , धनिष्ठा में एवं शतभिषा में रात ९:३० बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक लग्न १,२,३,ल. ३,४, (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में गुरु वेध रात ७:५५ वजे से रात २:१५ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।) चंद्रमा– मकर में दि. १:३४ तक।

कार्तिक कृष्ण १० बुध (४ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.फा. में रात ३:३६ बजे से रात्रिअंत ६:३२ बजे तक ल. ६, चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल २ बुध (११ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , अनुराधा में सूर्योदय से दिन ११:३८ बजे तक लग्न. ९, (परिहार चिंतनीय – अनुराधा में भौम वेध ।)अमृ.सि.योग–दिन ११:३८वजे तक। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ३ गुरु (१२ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मूल में दिन २:१९ बजे से सायं ६:०६ बजे तक रवियो.–दि.२:१९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृश्चिक में दि. २:१९ तक।

कार्तिक शुक्ल ५ शनि (१४ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.षा. में रात ८:२५ बजे से रात्रिअंत ६:३८ बजे तक ल. ३,४,ल. ४,५,६,रवियो.–रा.८:२५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में रा. ३:१२ तक।

कार्तिक शुक्ल १० शुक्र (२० नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , उ.भा. में प्रात: ७:५३ बजे से सायं ६:५२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ९,१०,११,१२,१,२, (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.६:०१वजे। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १२ शनि (२१ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , रेवती में प्रात: ६:५१ बजे से रात २:२९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ९,१०,११,१२,१,२,३,४,५,६, (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:५१वजे। चंद्रमा– मीन में रा. ५:५५ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण १ बुध (२५ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , मुहूर्त्त हैं। स.सि.योग–रात्रि ८:४५वजे तक। स.सि.योग.रा.८:४५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण २ गुरु (२६ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , मृगशिर में सूर्योदय से सायं ५:५८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११,लग्न ११,१२,१,२, चंद्रमा– वृष में प्रा. ७:२१ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण ५ शनि (२८ नवम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १६:५६ तक, त्यागकर), पुनर्वसु में प्रात: ९:२८ बजे से दिन १२:५९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष प्रात: ५:१७ से दिन ९:२८ वजे तक।) चंद्रमा– मिथुन में प्रा. ७:२९ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण ९ बुध (२ दिसम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.फा. में रात १०:४९ बजे से रात्रिअंत ६:५० बजे तक चंद्रमा– सिंह में दि. ३:०१ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरु (३ दिसम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शुक्र (४ दिसम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में शुक्र युति।) चंद्रमा– कन्या में रा. ११:०७ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण १२ शनि (५ दिसम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात १२:५३ बजे तक लग्न. १०,११, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में शुक्र युति। स्वाती में शुक्र युति।)स.सि.योग.दि.११:५३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल १ गुरु (१० दिसम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मूल में प्रात: ८:४४ बजे से रात ११:५७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ४:३५ से रातअंत वजे तक। गण्ड दोष प्रात: ९:२४ वजे से दिन ११:४८ वजे ।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल २ शुक्र (११ दिसम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.षा. में रात ३:०३ बजे

से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक रवियो.–रा.३:०३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ३ शनि (१२ दिसम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.षा. में सूर्योदय से दिन २:०३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,रवियो.–सू.उ.से रा.६:११वजे। स.सि.योग.रा. ६:११ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दि. ९:५० तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ५ चंद्र (१४ दिसम्वर) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , धनिष्ठा में प्रातः ९:१३ बजे से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक (परिहार चिंतनीय – श्रवण में गुरु वेध प्रातः ६:५८ से प्रातः ९:१३ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)रवियो.–दि.९:१३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ९:१३वजे तक। चंद्रमा– मकर में रा. १०:३५ तक।

माघ कृष्ण १ शनि (२३ जनवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ७:३३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में केतु युति। मघा में गुरु युति।) चंद्रमा– कर्क में रा. ४:५८ तक।

माघ कृष्ण ६ बुध (२७ जनवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , चित्रा में रात १२:०१ बजे से रात ३:५२ बजे तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।)रवियो.–रा.१२:०१ वजेसे रा. अं.। स.सि.योग–रात्रि १२:०१वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

माघ कृष्ण ७ गुरु (२८ जनवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , चित्रा में एवं स्वाती में दिन ३:५२ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – शूल दोष सायं ५:०२ वजे से रात ७:०२ वजे ।)रवियो.–सू.उ.से रा.१२:३५वजे। चंद्रमा– कन्या में दि. १२:११ तक।

माघ कृष्ण ८ शुक्र (२९ जनवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , स्वाती में सूर्योदय से रात १:५५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,१२,१,२,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष दिन ४:१५ वजे से सायं ६:३९ वजे । विशाखा में राहु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

माघ कृष्ण ९ शनि (३० जनवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , अनुराधा में रात ६:२८ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन १०:२८ से दिन ३:०४ वजे तक। विशाखा में राहु वेध, । अनुराधा में केतु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में रा. ९:२३ तक।

माघ कृष्ण १२ बुध (३ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १३:१९ से, त्यागकर), मूल में सूर्योदय से दिन १२:२५ बजे तक लग्न. १०,११,१२,१,२, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष सायं ६:४४ वजे से रात ७:५६ वजे । मूल में शुक्र युति।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

माघ शुक्ल २ चंद्र (८ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , शतभिषा में प्रातः ९:४८ बजे से रात १:५५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ,१२,१,२,६,७,लग्न ७,८, (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में बुध युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

माघ शुक्ल ४ बुध (१० फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.भा. में रात ३:०५ बजे से रात ४:५८ बजे तक लग्न ८,९, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.४:५८वजे। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

माघ शुक्ल ५ गुरु (११ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , अश्विनी में रात ५:४७ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–रा.५:४७ वजेसे रा.अं. । स.सि.योग–रात्रि ५:४७वजे तक। स.सि.योग.रा.५:४७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ५:४७ तक।

माघ शुक्ल ६ शुक्र (१२ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १०:३२ से, त्यागकर), अश्विनी में सूर्योदय से रात १:१२ बजे एवं रात ५:२४ बजे से रात ६:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११,१२,१,२,३,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १:१२ से रात ५:२४ वजे तक। भरणी में मंगल वेध,।)रवियो.–सू.उ.से रा.६:०४वजे। स.सि.योग–रात्रि ६:०४वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

माघ शुक्ल १२ गुरु (१८ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , पुष्य में रात ९:०४ बजे से रात्रिअंत तक ल. ६,७,८,९,१०,रवियो.–रा.९:०४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ९:०४वजे तक। अमृ. सि.योग.रा.९:०४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:४२ तक।

माघ शुक्ल १३ शुक्र (१९ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:११ बजे तक लग्न. १२,१, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में बुधवेध सायं ६:३४ वजे से रात ११:५७ वजे तक।अश्लेषा में गुरु केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:३४वजे, पुनःरा.१२:४४से रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण २ चंद्र (२२ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , उ.फा. में दिन ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. २,३,४,५,६,७,ल. ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – उ. फा. में शनि वेध,।) चंद्रमा– सिंह में सा. ५:३४ तक।

फाल्गुन कृष्ण ४ बुध (२४ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण ७:५७ से, त्यागकर), चित्रा में रात ११:४३ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:२० से रात ११:४३ वजे तक।)स.सि.योग–दिन ९:४२वजे तक। चंद्रमा– कन्या में रा. ९:३६ तक।

फाल्गुन कृष्ण ५ गुरु (२५ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण ७:४८ तक, त्यागकर), चित्रा में सूर्योदय से प्रातः ९:३६ बजे तक लग्न. १२,१, (परिहार चिंतनीय – स्वाती में सूर्य वेध,।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ७ शनि (२७ फरवरी) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , अनुराधा में दिन ११:४१ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. २,३,४,५,६,७,ल. ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में राहु वेध, । अनुराधा में केतु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से दि.११:४१वजे। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ९ चंद्र (१ मार्च) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मूल में रात २:०१ बजे से रात्रिअंत तक ल. ८,९,१०, चंद्रमा– वृश्चिक में दि. ४:२६ तक।

फाल्गुन कृष्ण ११ बुध (३ मार्च) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.षा. में रात १:०५ बजे से रात ६:४४ बजे तक ल. ८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – उ.षा. में शुक्र युति।) चंद्रमा– धनु में रा. ५:१९ तक।

फाल्गुन कृष्ण ११ गुरु (४ मार्च) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , उ.षा. में सूर्योदय से रात १:३४ बजे तक लग्न. १२,अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १२,१,२,३,४,५,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – उ. षा. में शुक्र युति। श्रवण में शुक्र युति।) चंद्रमा– मकर में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल २ बुध (१० मार्च) – रेवती में दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:१४ से दिन १२:२७ वजे तक। रेवती में शनि युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल ३ गुरु (११ मार्च) – गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से दिन ३:३७ बजे तक लग्न. १२,१,२,अभिजित् मुहूर्त एवं ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ११:१९वजे तक। स.सि.योग.दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ११:१९ तक।

नवनिर्मित गृह प्रवेश मुहूर्त

वैशाख शुक्ल ३ चंद्र (२० अप्रैल) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ७:३१ बजे तक रवियो.–सू.उ.से रा.२:१३वजे। स.सि.योग–रात्रि २:१३वजे तक। अमृ.सि.योग. रा.२:१३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ८ शुक्र (२४ अप्रैल) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), पुष्य में प्रातः ७:५८ बजे से रात ७:२३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,६, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष रात १:२९ वजे से रात ३:५३ वजे ।)रवियो.–रा.८:२१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ११ चंद्र (२७ अप्रैल) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), उ.फा. में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत तक ल. ८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात ९:४५ वजे से रात १:२१ वजे । पूर्वा.फा. में सूर्य वेध । उ.फा. में मंगल वेध,।) चंद्रमा– सिंह में रा. ३:४४ तक।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ५ गुरु (७ मई) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), उ.षा. में सायं ६:४३ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०,११,१२,रवियो.–शा.६:४३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में रा. १:२५ तक।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ६ शुक्र (८ मई) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,रवियो.–सू.उ.से रा.९:१७वजे। स.सि.योग.रा. ९:१७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ९ चंद्र (११ मई) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), शतभिषा में दिन ३:२३ बजे से रात १२:५९ बजे तक लग्न ६,७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में राहु युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण १२ गुरु (१४ मई) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), रेवती में सूर्योदय से दिन ११:१५ बजे तक लग्न. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में मंगल युति।)स.सि.योग–रात्रि १०:२८वजे तक। स.सि.योग.रा.१०:२८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. १०:२८ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ३ बुध (१७ जून) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), पुष्य में दिन १:४८ बजे से रात ९:०२ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में बुध गुरु युति। पुष्य में शुक्र युति।)रवियो.–दि.१:४८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ८:२२ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १० बुध (२४ जून) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), चित्रा में सूर्योदय से दिन २:०४ बजे तक लग्न. ६,७, (परिहार चिंतनीय – स्वाती में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा. अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १२ शुक्र (२६ जून) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), अनुराधा में रात ७:१९ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक स.सि.योग.रा.७:१९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दि. १२:३६ तक।

माघ कृष्ण ६ बुध (२७ जनवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), चित्रा में रात १२:०१ बजे से रात ३:५२ बजे तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।)रवियो.–रा.१२:०१ वजेसे रा. अं.। स.सि.योग–रात्रि १२:०१वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

माघ कृष्ण ७ गुरु (२८ जनवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), चित्रा में दिन ३:५२ बजे से रात १२:३५ बजे तक लग्न. ,६,७, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष सायं ५:०२ वजे से रात ७:०२ वजे ।)रवियो.–सू.उ.से रा.१२:३५वजे। चंद्रमा– कन्या में दि. १२:११ तक।

माघ शुक्ल २ चंद्र (८ फरवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), शतभिषा में प्रातः ९:४८ बजे से रात १:५५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ,१२,१,२,६,७,लग्न ७,८, (परिहार चिंतनीय –

शतभिषा में बुध युति।) चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

माघ शुक्ल ४ बुध (१० फरवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), उ.भा. में एवं रेवती में रात ३:०५ बजे से रात्रिअंत तक लग्न ८,९, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.४:५८वजे। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

माघ शुक्ल ५ गुरु (११ फरवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), रेवती में सूर्योदय से रात ५:४७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११,१२,१,२,३,६,७,८,९,लग्न ९, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–रा.५:४७ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ५:४७वजे तक। स.सि.योग.रा.५:४७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ५:४७ तक।

माघ शुक्ल १२ गुरु (१८ फरवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), पुष्य में रात ९:०४ बजे से रात्रिअंत तक ल. ६,७,८,९,१०,रवियो.–रा.९:०४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ९:०४वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.९:०४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:४२ तक।

माघ शुक्ल १३ शुक्र (१९ फरवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:११ बजे तक लग्न. १२,१, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में बुधवेध सायं ६:३४ वजे से रात ११:५७ वजे तक।अश्लेषा में गुरु केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:३४वजे, पुन:रा.१२:४४से रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण २ चंद्र (२२ फरवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), उ.फा. में दिन ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. २,३,४,५,६,७,ल. ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में शनि वेध,।) चंद्रमा– सिंह में सा. ५:३४ तक।

फाल्गुन कृष्ण ४ बुध (२४ फरवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), चित्रा में रात ११:४३ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:२० से रात ११:४३ वजे तक।)स.सि.योग–दिन ९:४२वजे तक। चंद्रमा– कन्या में रा. ९:३६ तक।

फाल्गुन कृष्ण ५ गुरु (२५ फरवरी) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ९:३६ बजे तक लग्न. १२,१, (परिहार चिंतनीय – स्वाती में सूर्य वेध,।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ११ बुध (३ मार्च) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), उ.षा. में रात १:०५ बजे से रात ६:४४ बजे तक ल. ८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – उ.षा. में शुक्र युति।) चंद्रमा– धनु में रा. ५:१९ तक।

फाल्गुन शुक्ल २ बुध (१० मार्च) – रेवती में दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:१४ से दिन १२:२७ वजे तक। रेवती में शनि युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल ३ गुरु (११ मार्च) – नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), रेवती में सूर्योदय से दिन ११:१९ बजे तक लग्न. १२,१,२, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ११:१९वजे तक। स.सि.योग.दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ११:१९ तक।

जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त

श्रावण कृष्ण १ गुरु (३० जुलाई) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।धनिष्ठा में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक चंद्रमा– मकर में दिनरात।

श्रावण कृष्ण २ शुक्र (३१ जुलाई) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में राहु युति।) चंद्रमा– मकर में प्रा. ६:३८ तक।

श्रावण कृष्ण ५ चंद्र (३ अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ७ बुध (५ अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।अश्विनी में प्रात: ९:३१ बजे से रात ९:१९ बजे तक लग्न. ६,७,१०,लग्न ११,१२, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष सायं ५:२९ वजे से रात ७:५३ वजे । भरणी में केतु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा.९:१९वजे। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ९ शुक्र (७ अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।रोहिणी में सायं ६:४५ बजे से रात्रि ३:२६ बजे तक चंद्रमा– वृष में दिनरात।

श्रावण शुक्ल २ शुक्र (१४ अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।उ.फा. में रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ५:६० बजे तक (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में शनि वेध,।)रवियो.–रा.३:४७ वजेसे रा.अं.। सिद्धयोग–रात्रि ३:४७वजे तक। चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ७ बुध (१९ अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।स्वाती में सूर्योदय से प्रात: ६:५२ बजे तक (परिहार चिंतनीय – विशाखा में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:५२वजे। चंद्रमा– तुला में रा. २:३५ तक।

श्रावण शुक्ल ८ गुरु (२० अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।अनुराधा में प्रात: ९:१२ बजे से रात ९:१९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ६,७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में राहु वेध, ।)स.सि.योग.दि.९:१२ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १२ चंद्र (२४ अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।उ.षा. में रात ८:२६ बजे से रात ६:०४ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पूर्वाषाढ. में भौम वेध ।) चंद्रमा– धनु में रा. ३:०५ तक।

श्रावण शुक्ल १३ बुध (२६ अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।श्रवण में सूर्योदय से प्रात: ७:५८ बजे तक (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में राहु युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.१२:४७वजे। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १४ गुरु (२७ अगस्त) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।धनिष्ठा में एवं शतभिषा में रात ९:३० बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक लग्न १,२,३,ल. ३,४, (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में गुरु वेध रात ७:५५ वजे से रात २:१५ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।) चंद्रमा– मकर में दि. १:३४ तक।

कार्तिक कृष्ण ३ बुध (२८ अक्टूवर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।रोहिणी में दिन १:३३ बजे से दिन २:४३ बजे तक स.सि.योग–दिन १:३३वजे तक। स.सि.योग.दि.१:३३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण ४ गुरु (२९ अक्टूवर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।मृगशिर में रात १०:१३ बजे से रात्रिअंत ६:२८ बजे तक चंद्रमा– वृष में रा. १०:१२ तक।

कार्तिक कृष्ण ५ शुक्र (३० अक्टूवर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।मृगशिर में सूर्योदय से प्रात: ९:०८ बजे तक चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण १० बुध (४ नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।उ.फा. में रात ३:३६ बजे से रात्रिअंत ६:३२ बजे तक ल. ६, चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल २ बुध (११ नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।अनुराधा में सूर्योदय से दिन ११:३८ बजे तक लग्न. ९, (परिहार चिंतनीय – अनुराधा में भौम वेध ।)अमृ.सि.योग–दिन ११:३८वजे तक। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ३ गुरु (१२ नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।मूल में दिन २:१९ बजे से सायं ६:०६ बजे तक रवियो.–दि.२:१९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृश्चिक में दि. २:१९ तक।

कार्तिक शुक्ल १० शुक्र (२० नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।उ.भा. में प्रात: ७:५३ बजे से सायं ६:५२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ९,१०,११,१२,१,२, (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.६:०१वजे। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण १ बुध (२५ नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।रोहिणी में एवं मृगशिर में दिन ४:५९ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक लग्न २,३,स.सि.योग–रात्रि ८:४५वजे तक। स.सि.योग.रा.८:४५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण २ गुरु (२६ नवम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।मृगशिर में सूर्योदय से सायं ५:५८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११,लग्न ११,१२,१,२, चंद्रमा– वृष में प्रा. ७:२१ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण ९ बुध (२ दिसम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।उ.फा. में रात १०:४९ बजे से रात्रिअंत ६:५० बजे तक चंद्रमा– सिंह में दि. ३:०१ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरु (३ दिसम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शुक्र (४ दिसम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में शुक्र युति।) चंद्रमा– कन्या में रा. ११:०७ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल १ गुरु (१० दिसम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।मूल में प्रात: ८:४४ बजे से रात ११:५७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ४:३५ से रातअंत वजे तक। गण्ड दोष प्रात: ९:२४ वजे से दिन ११:४८ वजे ।) चंद्रमा– धनु में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल २ शुक्र (११ दिसम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।उ.षा. में रात ३:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक रवियो.–रा.३:०३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ५ चंद्र (१४ दिसम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – श्रवण में गुरु वेध प्रात: ६:५८ से प्रात: ९:१३ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)रवियो.–दि.९:१३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ९:१३वजे तक। चंद्रमा– मकर में रा. १०:३५ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ९ शुक्र (१८ दिसम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।रेवती में रात ११:१७ बजे से रात्रिअंत ६:६० बजे तक (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।)रवियो.–दि.४:०८ वजेसे रा.अं.। अमृ.सि.योग.दि.४:०८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल १४ बुध (२३ दिसम्वर) – जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।मृगशिर में रात ८:५६ बजे से रात्रिअंत ४:५६ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १०:२९ से रात २:२७ वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.७:६०वजे। स.सि.योग–प्रा. ७:६०वजे तक। स.सि.योग.प्रा.७:६० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में सा. ६:२९ तक।

व्यापार प्रारंभ मुहूर्त

वैशाख शुक्ल ३ चंद्र (२० अप्रैल) – व्यापार प्रारंभ, रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ७:३१ बजे तक रवियो.–सू.उ.से रा.२:१३वजे। स.सि.योग–रात्रि २:१३वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.२:१३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ८ शुक्र (२४ अप्रैल) – व्यापार प्रारंभ, पुष्य में प्रातः ७:५८ बजे से रात ७:२३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,६, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष रात १:२९ वजे से रात ३:५३ वजे ।)रवियो.–रा.८:२१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ११ चंद्र (२७ अप्रैल) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.फा. में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत तक ल. ८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात ९:४५ वजे से रात १:२१ वजे । पूर्वा.फा. में सूर्य वेध । उ.फा. में मंगल वेध,।) चंद्रमा– सिंह में रा. ३:४४ तक।

वैशाख शुक्ल १३ बुध (२९ अप्रैल) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), हस्त में सूर्योदय से रात ७:५६ बजे तक लग्न. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात ८:५८ वजे से रात १०:१० वजे । हस्त में शनि वेध।)रवियो.–रा.१२:२३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि १२:२३वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ५ गुरु (७ मई) – व्यापार प्रारंभ, उ.षा. में सायं ६:४३ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०,११,१२,रवियो.–शा.६:४३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में रा. १:२५ तक।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ६ शुक्र (८ मई) – व्यापार प्रारंभ, उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,रवियो.–सू.उ.से रा.९:१७वजे। स.सि.योग.रा.९:१७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ११ बुध (१३ मई) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण १२ गुरु (१४ मई) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), रेवती में सूर्योदय से दिन ११:१५ बजे तक लग्न. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में मंगल युति।)स.सि.योग–रात्रि १०:२८वजे तक। स.सि.योग.रा.१०:२८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. १०:२८ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ३ बुध (१७ जून) – व्यापार प्रारंभ, पुष्य में दिन १:४८ बजे से रात ९:०२ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में बुध गुरु युति। पुष्य में शुक्र युति।)रवियो.–दि. १:४८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ८:२२ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ८ चंद्र (२२ जून) – व्यापार प्रारंभ, हस्त में दिन १०:३७ बजे से दिन ३:४२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ५,६,७, (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में शनि वेध।)रवियो.–दि.१०:२८ वजेसे दि.१२:२६वजे। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १० बुध (२४ जून) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), चित्रा में सूर्योदय से दिन २:०४ बजे तक लग्न. ६,७, (परिहार चिंतनीय – स्वाती में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

आषाढ कृष्ण १ बुध (१ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.षा. में प्रातः ६:५१ बजे से दिन ४:०२ बजे तक ल. ४,ल. ४,५,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – पूर्वाषाढ. में सूर्य वेध ।) चंद्रमा– धनु में दि. १:३० तक।

आषाढ कृष्ण ६ चंद्र (६ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ, उ.भा. में रात १:४५ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक रवियो.–सू.उ.से दि.१२:००वजे, पुन:दि.४:०६से रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में दि. ९:५७ तक।

आषाढ कृष्ण ८ बुध (८ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ, रेवती में सूर्योदय से दिन १२:२५ बजे तक लग्न. ४,६, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।) चंद्रमा– मीन में दि. ३:५९ तक।

आषाढ कृष्ण ९ गुरु (९ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ, अश्विनी में दिन १०:४० बजे से दिन २:५४ बजे तक (परिहार चिंतनीय – भरणी में केतु वेध, ।)स.सि.योग–दिन २:५४वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

आषाढ शुक्ल १ बुध (१५ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), पुष्य में दिन ११:५८ बजे से रात ९:५४ बजे तक (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष प्रातः ८:०९ वजे से प्रातः ९:२१ वजे । पुष्य में गुरु युति।) चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

आषाढ शुक्ल ७ चंद्र (२० जुलाई) – व्यापार प्रारंभ, हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ४:०६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,८,९,१०,रवियो.–दि.११:३२से रा.७:१९। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

आषाढ शुक्ल १५ बुध (२९ जुलाई) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.षा. में प्रातः ७:१७ बजे से दिन ३:३६ बजे तक लग्न. ६,७,८, (परिहार चिंतनीय – उ.षा. में भौम वेध ।) चंद्रमा– मकर में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ५ चंद्र (३ अगस्त) – व्यापार प्रारंभ, उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक व्यापार प्रारंभ, मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ७ बुध (५ अगस्त) – व्यापार प्रारंभ, अश्विनी में प्रातः ९:३१ बजे से रात ९:१९ बजे तक लग्न. ६,७,१०,लग्न ११,१२, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष सायं ५:२९ वजे से रात ७:५३ वजे । भरणी में केतु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा.९:१९वजे। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ९ शुक्र (७ अगस्त) – व्यापार प्रारंभ, रोहिणी में सायं ६:४५ बजे से रात्रि ३:२६ बजे तक चंद्रमा– वृष में दिनरात।

श्रावण शुक्ल २ शुक्र (१४ अगस्त) – व्यापार प्रारंभ, उ.फा. में रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ५:६० बजे तक (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में शनि वेध,।)रवियो.–रा.३:४७ वजेसे रा.अं.। सिद्धयोग–रात्रि ३:४७वजे तक। चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १२ चंद्र (२४ अगस्त) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.षा. में रात ८:२६ बजे से रात ६:०४ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पूर्वाषाढ. में भौम वेध ।) चंद्रमा– धनु में रा. ३:०५ तक।

भाद्रपद कृष्ण ७ गुरु (३ सितम्वर) – व्यापार प्रारंभ, रोहिणी में रात १२:३१ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक रवियो.–सू.उ.से रा.१२:३१वजे। चंद्रमा– मेष में प्रा. ७:२८ तक।

भाद्रपद कृष्ण ८ शुक्र (४ सितम्वर) – व्यापार प्रारंभ, रोहिणी में सूर्योदय से रात ११:०८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,८,९,१०,१२,१, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष दिन ३:४७ वजे से दिन ४:५९ वजे ।) चंद्रमा– वृष में दिनरात।

भाद्रपद कृष्ण ११ चंद्र (७ सितम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), पुष्य में सायं ६:२० बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में मंगल युति।)स.सि.योग.सा.६:२० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. १२:४५ तक।

भाद्रपद शुक्ल ३ चंद्र (१४ सितम्वर) – व्यापार प्रारंभ, चित्रा में सूर्योदय से प्रातः ७:०६ बजे तक लग्न. ६, (परिहार चिंतनीय – स्वाती में शुक्र युति।)रवियो.–दि.१:६० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल १० चंद्र (२१ सितम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.षा. में सूर्योदय से रात ६:१३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,९,१०,१२,१,लग्न ३, (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष दिन ४:०२ वजे से सायं ६:२६ वजे ।)रवियो.–सू.उ.से रा.७:०५वजे। स.सि.योग. रा.७:०५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दि. ११:११ तक।

आश्विन शुक्ल ८ चंद्र (१९ अक्टूवर) – व्यापार प्रारंभ, उ.षा. में सूर्योदय से दिन १०:४९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – शूल दोष रात १२:३२ वजे से रात २:३२ वजे ।)रवियो.–दि.३:३५ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग.दि.३:३५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

आश्विन शुक्ल १२ शुक्र (२३ अक्टूवर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.भा. में रात ८:५९ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात १०:०५ वजे से रात १:४१ वजे । पू.भा. में सूर्य वेध । उ.भा. में शनि युति।)रवियो.–रा.८:५९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में दि. २:५९ तक।

आश्विन शुक्ल १५ चंद्र (२६ अक्टूवर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:४५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – भरणी में केतु वेध, ।) चंद्रमा– मेष में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण ३ बुध (२८ अक्टूवर) – व्यापार प्रारंभ, रोहिणी में दिन १:३३ बजे से दिन २:४३ बजे तक स.सि.योग–दिन १:३३वजे तक। स.सि.योग.दि.१:३३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण १० बुध (४ नवम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.फा. में रात ३:३६ बजे से रात्रिअंत ६:३२ बजे तक ल. ६, चंद्रमा– सिंह में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १० शुक्र (२० नवम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.भा. में प्रातः ७:५३ बजे से सायं ६:५२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ९,१०,११,१२,१,२, (परिहार चिंतनीय – उ. भा. में शनि युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.६:०१वजे। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण १ बुध (२५ नवम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), रोहिणी में सूर्योदय से रात ८:४५ बजे तक लग्न. १०,११,१,लग्न २,३,स.सि.योग–रात्रि ८:४५वजे तक। स.सि.योग.रा.८:४५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ९ बुध (२ दिसम्वर) – व्यापार प्रारंभ, उ.फा. में रात १०:४९ बजे से रात्रिअंत ६:५० बजे तक चंद्रमा– सिंह में दि. ३:०१ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरु (३ दिसम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शुक्र (४ दिसम्वर) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में शुक्र युति।) चंद्रमा– कन्या में रा. ११:०७ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल २ शुक्र (११ दिसम्वर) – व्यापार प्रारंभ, उ.षा. में रात ३:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक रवियो.–रा.३:०३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में दिनरात।

पौष शुक्ल ७ शुक्र (१५ जनवरी) – व्यापार प्रारंभ, रेवती में सूर्योदय से दिन २:२० बजे एवं अश्विनी में रात २:१२ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,१,ल. ७,८,९, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में मंगल वेध,।)अमृ.सि.योग–रात्रि ११:५४वजे तक। स.सि.योग.रा.११:५४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ११:५४ तक।

पौष शुक्ल १० चंद्र (१८ जनवरी) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), रोहिणी में रात ९:०३ बजे से

रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ३:०८ से रात ७:०६ वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से रा.९:०३वजे। स.सि.योग.रा.९:०३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

पौष शुक्ल १५ शुक्र (२२ जनवरी) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), पुष्य में दिन १०:२६ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. १२,१,२,३,४,ल. ४,५,६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – पुष्य में शुक्रवेध रात ८:६० वजे से रात २:१७ वजे तक।)स.सि.योग–दिन १०:२६वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

माघ कृष्ण ६ बुध (२७ जनवरी) – व्यापार प्रारंभ, हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ३:५२ बजे तक लग्न. १०,१२,१,२,६,७, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।)रवियो.–रा.१२:०१ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि १२:०१वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

माघ कृष्ण ७ गुरु (२८ जनवरी) – व्यापार प्रारंभ, चित्रा में दिन ३:५२ बजे से रात १२:३५ बजे तक लग्न. ,६,७, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष सायं ५:०२ वजे से रात ७:०२ वजे ।)रवियो.–सू.उ.से रा.१२:३५वजे। चंद्रमा– कन्या में दि. १२:११ तक।

माघ शुक्ल ४ बुध (१० फरवरी) – व्यापार प्रारंभ, उ.भा. में एवं रेवती में रात ३:०५ बजे से रात्रिअंत तक लग्न ८,९, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.४:५८वजे। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

माघ शुक्ल ५ गुरु (११ फरवरी) – व्यापार प्रारंभ, रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–रा.५:४७ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ५:४७वजे तक। स.सि.योग.रा.५:४७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ५:४७ तक।

माघ शुक्ल ६ शुक्र (१२ फरवरी) – व्यापार प्रारंभ, अश्विनी में सूर्योदय से रात १:१२ बजे एवं रात ५:२४ बजे से रात ६:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११,१२,१,२,३,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १:१२ से रात ५:२४ वजे तक। भरणी में मंगल वेध,।)रवियो.–सू.उ.से रा.६:०४वजे। स.सि.योग–रात्रि ६:०४वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

माघ शुक्ल १२ गुरु (१८ फरवरी) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), पुष्य में रात ९:०४ बजे से रात्रिअंत तक ल. ६,७,८,९,१०,रवियो.–रा.९:०४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ९:०४वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.९:०४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:४२ तक।

माघ शुक्ल १३ शुक्र (१९ फरवरी) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:११ बजे तक लग्न. १२,१, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में बुधवेध सायं ६:३४ वजे से रात ११:५७ वजे तक।अश्लेषा में गुरु केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:३४वजे, पुन:रा.१२:४४से रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण २ चंद्र (२२ फरवरी) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.फा. में दिन ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. २,३,४,५,६,७,ल. ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – उ. फा. में शनि वेध,।) चंद्रमा– सिंह में सा. ५:३४ तक।

फाल्गुन कृष्ण ४ बुध (२४ फरवरी) – व्यापार प्रारंभ, चित्रा में रात ११:४३ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:२० से रात ११:४३ वजे तक।)स. सि.योग–दिन ९:४२वजे तक। चंद्रमा– कन्या में रा. ९:३६ तक।

फाल्गुन कृष्ण ५ गुरु (२५ फरवरी) – व्यापार प्रारंभ, चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ९:३६ बजे तक लग्न. १२,१, (परिहार चिंतनीय – स्वाती में सूर्य वेध,।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ११ बुध (३ मार्च) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.षा. में रात १:०५ बजे से रात ६:४४ बजे तक ल. ८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – उ.षा. में शुक्र युति।) चंद्रमा– धनु में रा. ५:१९ तक।

फाल्गुन कृष्ण ११ गुरु (४ मार्च) – व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), उ.षा. में सूर्योदय से रात १:३४ बजे तक लग्न. १२,अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १२,१,२,३,४,५,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – उ.षा. में शुक्र युति। श्रवण में शुक्र युति।) चंद्रमा– मकर में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल २ बुध (१० मार्च) – रेवती में दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:१४ से दिन १२:२७ वजे तक। रेवती में शनि युति।) चंद्रमा– मीन में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल ३ गुरु (११ मार्च) – व्यापार प्रारंभ, रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से दिन ३:३७ बजे तक लग्न. १२,१,२,अभिजित् मुहूर्त एवं ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ११:१९वजे तक। स.सि.योग.दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ११:१९ तक।

ट्यूबबेल मुहूर्त

चैत्र शुक्ल १० शनि (२८ मार्च) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, अश्लेषा में दिन ३:०० बजे से रात्रिअंत तक ल. ४,५,६,७,८,९,१०,११,रवियो.–सू.उ.से दि.३:००वजे। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

चैत्र शुक्ल ११ रवि (२९ मार्च) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. २:४९ तक, अश्लेषा में प्रात: ७:५४ बजे से दिन २:४९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १,२,३,४, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष सायं ६:३० वजे से रात ८:३० वजे । मघा में केतु युति।) चंद्रमा– कर्क में दि. २:४९ तक।

वैशाख शुक्ल ९ शनि (२५ अप्रैल) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. ८:१३ तक, मघा में रात १०:५८ बजे से रात्रिअंत तक ल. ९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष सायं ६:४१ से रात १०:५८ वजे तक। मघा में केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में रा. ८:१३ तक।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण २ रवि (३ मई) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, विशाखा में सूर्योदय से प्रात: ७:०९ बजे तक लग्न. २, चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ६ शुक्र (२२ मई) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. २:१३ तक, मघा में रात २:१३ बजे से रात्रिअंत तक ल. १२,१, (परिहार चिंतनीय – मघा में केतु युति।) चंद्रमा– कर्क में रा. २:१३ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण १ चंद्र (१ जून) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. ७:०८ तक, मूल में रात ७:०८ बजे से रात्रिअंत तक ल. ८,९,१०,११,१२,१, चंद्रमा– वृश्चिक में रा. ७:०८ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ५ शुक्र (१९ जून) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. १०:१७ तक, मघा में दिन १०:१७ बजे से रात्रिअंत ५:३९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष दिन ३:०४ वजे से दिन ४:१६ वजे । मघा में केतु युति।)रवियो.–दि.१०:१७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दि. १०:१७ तक।

आषाढ कृष्ण ५ रवि (५ जुलाई) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में दिन ३:१० बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में राहु युति।)रवियो. –दि.३:१० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

आषाढ कृष्ण ६ चंद्र (६ जुलाई) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में सूर्योदय से दिन १:४९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,रवियो.–सू.उ.से दि.१२:००वजे, पुन:दि. ४:०६से रा.अं.। चंद्रमा– कुंभ में दि. ९:५७ तक।

आषाढ शुक्ल १ बुध (१५ जुलाई) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, अश्लेषा में रात ९:५४ बजे से रात्रिअंत ५:४७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष प्रात: ८:०९ वजे से प्रात: ९:२१ वजे । पुष्य में गुरु युति।) चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १ गुरु (१३ अगस्त) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में प्रा. ६:०८ तक, मघा में रात ११:०९ बजे से रात्रिअंत ५:१६ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में सूर्य युति। मघा में केतु युति।) चंद्रमा– कर्क में प्रा. ६:०८ तक।

श्रावण शुक्ल १० शनि (२२ अगस्त) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. २:४९ तक, मूल में दिन २:४९ बजे से रात्रिअंत ६:०३ बजे तक ल. ९,१०,११,१२,१,२,३,ल. ३,४,रवियो. –सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– वृश्चिक में दि. २:४९ तक।

भाद्रपद कृष्ण १ शनि (२९ अगस्त) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में प्रात: ९:५६ बजे से रात ३:४१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,८,९,१०,११,१२,१,२,३,४, (परिहार चिंतनीय – पू.भा. में शुक्रवेध दिन ३:२९ वजे से रात ९:३५ वजे तक।) चंद्रमा– कुंभ में रा. ९:३५ तक।

भाद्रपद शुक्ल ७ शुक्र (१८ सितम्वर) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. १०:४७ तक, मूल में रात २:११ बजे से रात्रिअंत ६:१२ बजे तक ल. ४,५, (परिहार चिंतनीय – मूल में मंगल वेध,।) चंद्रमा– वृश्चिक में रा. १०:४७ तक।

आश्विन शुक्ल ६ शुक्र (१६ अक्टूवर) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में प्रा. ६:४९ तक, मूल में प्रात: ६:४९ बजे से रात्रिअंत ६:२२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ७,८,९,१०,११,१२,१,२,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष रात १०:०८ वजे से रात १२:३२ वजे । ज्येष्ठा में भौम वेध ।)रवियो.–प्रा.६:४९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृश्चिक में प्रा. ६:४९ तक।

कार्तिक कृष्ण ७ रवि (१ नवम्वर) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, अश्लेषा में रात ४:३१ बजे से रात्रिअंत ६:३० बजे तक (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में मंगल युति।)रविपुष्य योग–रात्रि ४:३१वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण ८ चंद्र (२ नवम्वर) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. ३:४८ तक, अश्लेषा में सूर्योदय से दिन १:०९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ८, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष सायं ५:५७ से रात १०:१२ वजे तक। अश्लेषा में मंगल युति। मघा में गुरु केतु युति।) चंद्रमा– कर्क में रा. ३:४८ तक।

पौष कृष्ण ४ रवि (२७ दिसम्वर) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में सा. ६:१५ तक, अश्लेषा में सायं ५:१७ बजे से सायं ६:१५ बजे तक लग्न ३, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में केतु युति। मघा में गुरु युति।) चंद्रमा– कर्क में सा. ६:१५ तक।

माघ कृष्ण १ शनि (२३ जनवरी) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. ४:५८ तक, अश्लेषा में दिन २:१३ बजे से रात्रिअंत ५:२६ बजे तक ल. २,३,४,५,६,७,८,९, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में केतु युति। मघा में गुरु युति।) चंद्रमा– कर्क में रा. ४:५८ तक।

माघ शुक्ल २ चंद्र (८ फरवरी) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पू.भा. में रात १:५५ बजे से रात्रिअंत तक (परिहार चिंतनीय – शतभिषा में बुध युति।) चंद्रमा– कुंभ में

दिनरात।

माघ शुक्ल १४ शनि (२० फरवरी) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. ४:०७ तक, मघा में सायं ६:२३ बजे से रात्रिअंत ५:११ बजे तक ल. ५,६,७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में गुरु केतु युति। मघा में मंगल युति।)रवियो.–सू.उ.से दि.४:०७वजे। चंद्रमा– कर्क में दि. ४:०७ तक।

फाल्गुन कृष्ण ७ शनि (२७ फरवरी) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, विशाखा में प्रात: ९:०७ बजे से दिन ११:४१ बजे तक लग्न. १,२, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में राहु वेध, । अनुराधा में केतु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से दि.११:४१वजे। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ९ चंद्र (१ मार्च) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. ४:२६ तक, मूल में रात २:०१ बजे से रात्रिअंत तक ल. ८,९,१०, चंद्रमा– वृश्चिक में दि. ४:२६ तक।

चैत्र कृष्ण ६ रवि (२८ मार्च) – नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. १२:३४ तक, मूल में रात ६:०८ बजे से रात्रिअंत तक रवियो.–सू.उ.से रा.१२:३४वजे। स.सि.योग.रा.१२:३४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृश्चिक में रा. १२:३४ तक।

वाहन क्रय मुहूर्त

चैत्र शुक्ल ७ बुध (२५ मार्च) – वाहन क्रय, मृगशिर में सूर्योदय से दिन १:५० बजे तक लग्न. २,३,स.सि.योग–सायं. ५:३८वजे तक। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

चैत्र शुक्ल ९ शुक्र (२७ मार्च) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), पुनर्वसु में एवं पुष्य में दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,५,ल. ५,६,७,८,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। स.सि.योग–दिन ३:३३वजे तक। चंद्रमा– मिथुन में दि. ९:४२ तक।

चैत्र शुक्ल १४ बुध (१ अप्रैल) – वाहन क्रय, हस्त में रात ७:२६ बजे से रात्रिअंत तक ल. ६,७,८,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में सूर्य वेध । हस्त में शनि वेध,।)रवियो.–सू.उ.से दि.४:२४वजे। स.सि.योग.दि.४:२४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

चैत्र शुक्ल १५ गुरु (२ अप्रैल) – वाहन क्रय, हस्त में सूर्योदय से प्रात: ७:४३ बजे तक लग्न. १, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में मंगल वेध,।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

वैशाख कृष्ण १ शुक्र (३ अप्रैल) – वाहन क्रय, चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – चित्रा में भौम वेध । स्वाती में राहु वेध, । चित्रा में बुधवेध दिन १२:५९ वजे से रात ७:२९ वजे तक।) चंद्रमा– कन्या में प्रा. ६:३० तक।

वैशाख कृष्ण १० रवि (१२ अप्रैल) – वाहन क्रय, श्रवण में सूर्योदय से दिन १२:५८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १,३, चंद्रमा– मकर में रा. ३:४१ तक।

वैशाख शुक्ल ६ बुध (२२ अप्रैल) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में रात १०:१८ बजे से रात्रिअंत तक ल. ८,९,ल. ९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.१०:१८वजे। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

वैशाख शुक्ल ७ गुरु (२३ अप्रैल) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में सूर्योदय से रात ८:४९ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,६, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)स.सि.योग–रात्रि ९:०३वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.९:०३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:१९ तक।

वैशाख शुक्ल ८ शुक्र (२४ अप्रैल) – वाहन क्रय, पुष्य में प्रात: ७:५८ बजे से रात ७:२३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,६, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष रात १:२९ वजे से रात ३:५३ वजे ।)रवियो.–रा.८:२१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १३ बुध (२९ अप्रैल) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), हस्त में सूर्योदय से रात ७:५६ बजे तक लग्न. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात ८:५८ वजे से रात १०:१० वजे । हस्त में शनि वेध।)रवियो.–रा.१२:२३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि १२:२३वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

वैशाख शुक्ल १५ शुक्र (१ मई) – वाहन क्रय, स्वाती में दिन १०:०० बजे से रात ९:१६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ३,४,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – स्वाती में राहु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ६ शुक्र (८ मई) – वाहन क्रय, श्रवण में रात १:१५ बजे से रात्रिअंत तक ल. १०,११,१२,रवियो.–सू.उ.से रा.९:१७वजे। स.सि.योग.रा.९:१७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल २ चंद्र (१८ मई) – वाहन क्रय, मृगशिर में दिन ११:४० बजे से रात्रिअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ४,५,६,७,ल. ७,८,९,१०,११,१२,१, (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में शुक्र युति।)स.सि.योग–दिन ११:४०वजे तक। अमृ.सि.योग.दि.११:४० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में रा. १०:१४ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ४ बुध (२० मई) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में दिन ११:१२ बजे से रात्रिअंत ४:५८ बजे तक (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष दिन २:२० वजे से दिन ४:४४ वजे । आर्द्रा में शुक्र युति। पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:१९वजेपुन:पुन:रा.४:५८सेरा.२:५५अगलेदिन। चंद्रमा– मिथुन में रा. १०:४८ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ५ गुरु (२१ मई) – वाहन क्रय, पुष्य में सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे एवं दिन १०:२० बजे से रात २:५५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष प्रात: ६:११ से दिन १०:२० वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से रा.२:५५वजे। अमृ.सि.योग–रात्रि २:५५वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ११ बुध (२७ मई) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), चित्रा में रात ३:२९ बजे से रात्रिअंत तक ल. १,रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:०१वजे। स.सि.योग–प्रा. ६:०१वजे तक। चंद्रमा– कन्या में रा. ७:०६ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल १२ गुरु (२८ मई) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रि ३:५८ बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – स्वाती में राहु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ५ शुक्र (५ जून) – वाहन क्रय, श्रवण में सूर्योदय से रातअंत तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ३,४,६,७,९,१०,लग्न १२,१,रवियो.–रा.६:०३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ६:०३वजे तक। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ११ गुरु (११ जून) – वाहन क्रय, अश्विनी में प्रात: ८:१३ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ४,५,६,७,८,९,१०,ल. १०,११,१२,१, (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष रात १२:५५ वजे से रात ३:१९ वजे । रेवती में शनि युति।)स.सि.योग–दिन ८:१३वजे तक। स.सि.योग.दि.८:१३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ८:१३ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण १२ शुक्र (१२ जून) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), अश्विनी में सूर्योदय से प्रात: ६:२६ बजे तक लग्न. ३, (परिहार चिंतनीय – भरणी में केतु वेध, । भरणी में मंगल युति।)स.सि.योग–प्रा. ६:२६वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ३ बुध (१७ जून) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात ९:०२ बजे तक लग्न. ६, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में बुध गुरु युति। पुष्य में शुक्र युति।)रवियो.–दि.१:४८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ८:२२ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ८ चंद्र (२२ जून) – वाहन क्रय, हस्त में दिन १०:३७ बजे से दिन ३:४२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ५,६,७, (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में शनि वेध।)रवियो.–दि. १०:२८ वजेसे दि.१२:२६वजे। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १० बुध (२४ जून) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४० बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – स्वाती में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ११ गुरु (२५ जून) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), स्वाती में सूर्योदय से प्रात: ७:०९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – स्वाती में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से दि.४:३३वजे। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

आषाढ कृष्ण २ गुरु (२ जुलाई) – वाहन क्रय, श्रवण में सायं ५:४८ बजे से रात्रि १०:२८ बजे तक ल. ८,९,१०,११, (परिहार चिंतनीय – श्रवण में मंगल वेध,।) चंद्रमा– मकर में दिनरात।

आषाढ कृष्ण ९ गुरु (९ जुलाई) – वाहन क्रय, अश्विनी में दिन १०:४० बजे से दिन २:५४ बजे तक (परिहार चिंतनीय – भरणी में केतु वेध, ।)स.सि.योग–दिन २:५४वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

आषाढ शुक्ल १ बुध (१५ जुलाई) – वाहन क्रय, पुष्य में दिन ११:५८ बजे से रात ९:५४ बजे तक (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष प्रात: ८:०९ वजे से प्रात: ९:२१ वजे । पुष्य में गुरु युति।) चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

आषाढ शुक्ल ६ रवि (१९ जुलाई) – वाहन क्रय, हस्त में सायं ६:२३ बजे से रात ३:३४ बजे तक (परिहार चिंतनीय – उ.फा. में शनि वेध।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:२३वजे, पुन:रा.११:३२से रा.अं.। स.सि.योग–सायं. ६:२३वजे तक। अमृ.सि.योग.सा.६:२३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

आषाढ शुक्ल ७ चंद्र (२० जुलाई) – वाहन क्रय, हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ४:०६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,८,९,१०,रवियो.–दि.११:३२से रा.७:१९। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

आषाढ शुक्ल १५ बुध (२९ जुलाई) – वाहन क्रय, श्रवण में दिन ३:३६ बजे से रात ८:०५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – उ.षा. में भौम वेध ।) चंद्रमा– मकर में दिनरात।

श्रावण कृष्ण १ गुरु (३० जुलाई) – वाहन क्रय, श्रवण में सूर्योदय से सायं ५:४१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,८,९, चंद्रमा– मकर में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ७ बुध (५ अगस्त) – वाहन क्रय, अश्विनी में प्रात: ९:३१ बजे से रात ९:१९ बजे तक लग्न. ६,७,१०,लग्न ११,१२, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष सायं ५:२९ वजे से रात ७:५३ वजे । भरणी में केतु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से रा.९:१९वजे। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

श्रावण कृष्ण ११ रवि (९ अगस्त) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मृगशिर में सूर्योदय से दिन २:४५ बजे तक लग्न. ६,७,अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,८, (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष रात २:०६ वजे से रात ३:१८ वजे । मृगशिर में मंगल युति।) चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ४ रवि (१६ अगस्त) – वाहन क्रय, हस्त में दिन ४:५५ बजे से रात ३:५६ बजे तक लग्न १, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शुक्र युति।)रवियो.–रा.३:५६ वजेसे रा.अं.। अमृ.सि.

योग–रात्रि ३:५६वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

श्रावण शुक्ल ५ चंद्र (१७ अगस्त) – वाहन क्रय, चित्रा में सूर्योदय से रात ५:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,८,९,१०,लग्न १०,११,१२,१,२,३,४,रवियो.–सू.उ.से दि.८:०६वजे, पुन:रा. ५:०४से रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दि. ४:२९ तक।

श्रावण शुक्ल ७ बुध (१९ अगस्त) – वाहन क्रय, स्वाती में सूर्योदय से प्रात: ६:५२ बजे तक (परिहार चिंतनीय – विशाखा में राहु वेध, ।)रवियो.–सू.उ.से प्रा.६:५२वजे। चंद्रमा– तुला में रा. २:३५ तक।

श्रावण शुक्ल १३ बुध (२६ अगस्त) – वाहन क्रय, श्रवण में सूर्योदय से प्रात: ७:५८ बजे तक (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में राहु युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.१२:४७वजे। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

भाद्रपद कृष्ण ८ शुक्र (४ सितम्बर) – वाहन क्रय, मृगशिर में रात ११:०८ बजे से रात १२:१७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष दिन ३:४७ बजे से दिन ४:५९ बजे ।) चंद्रमा– वृष में दिनरात।

भाद्रपद कृष्ण ११ चंद्र (७ सितम्बर) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), पुनर्वसु में एवं पुष्य में प्रात: ६:४७ बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में मंगल युति।)स.सि.योग.सा.६:२० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. १२:४५ तक।

भाद्रपद शुक्ल २ रवि (१३ सितम्बर) – वाहन क्रय, हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१० बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। रवियो.–दि.१:११ वजेसे रा.९:५६वजे। अमृ.सि.योग–दिन १:११वजे तक। चंद्रमा– कन्या में रा. १:३० तक।

भाद्रपद शुक्ल ३ चंद्र (१४ सितम्बर) – वाहन क्रय, चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ७:०६ बजे तक लग्न. ६, (परिहार चिंतनीय – स्वाती में शुक्र युति।)रवियो.–दि.१:६० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल १२ बुध (२३ सितम्बर) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), श्रवण में सूर्योदय से प्रात: ९:०६ बजे तक लग्न. ७, (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में गुरु वेध दिन ३:२९ वजे से रात ९:५३ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।) चंद्रमा– मकर में रा. ९:५३ तक।

आश्विन कृष्ण २ चंद्र (२८ सितम्बर) – वाहन क्रय, अश्विनी में दिन १२:३२ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक ल. ९,१०,११,१२,१,ल. १,२,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।) चंद्रमा– मीन में दि. १०:१८ तक।

आश्विन कृष्ण ६ शुक्र (२ अक्टूबर) – वाहन क्रय, मृगशिर में रात ९:०६ बजे से रात २:५६ बजे तक लग्न ३,रवियो.–सू.उ.से रा.२:५६वजे। चंद्रमा– वृष में दि. ३:४२ तक।

आश्विन कृष्ण १० चंद्र (५ अक्टूबर) – वाहन क्रय, पुष्य में सूर्योदय से दिन ३:०४ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ७,१०, (परिहार चिंतनीय – पुष्य में मंगल युति। अश्लेषा में गुरु युति।)स.सि. योग–रात्रि ११:१६वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

आश्विन शुक्ल १ रवि (११ अक्टूबर) – वाहन क्रय, चित्रा में एवं स्वाती में रात १०:२० बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक लग्न ३,ल. ३,४,५, (परिहार चिंतनीय – चित्रा में सूर्य युति। स्वाती में बुध शुक्र युति।) चंद्रमा– कन्या में दि. १०:०६ तक।

आश्विन शुक्ल २ चंद्र (१२ अक्टूबर) – वाहन क्रय, स्वाती में सूर्योदय से रात ११:५३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,१२,१,२,३,लग्न ३, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में राहु वेध, । स्वाती में बुध शुक्र युति। विशाखा में बुध युति।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

आश्विन शुक्ल १४ रवि (२५ अक्टूवर) – वाहन क्रय, अश्विनी में रात १०:५६ बजे से रात्रिअंत ६:२६ बजे तक (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष सायं ५:२३ वजे से सायं ६:३५ वजे ।)रवियो.–सू. उ.से रा.७:२३वजे। स.सि.योग.रा.७:२३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ७:२३ तक।

आश्विन शुक्ल १५ चंद्र (२६ अक्टूवर) – वाहन क्रय, अश्विनी में सूर्योदय से प्रात: ९:४६ बजे तक (परिहार चिंतनीय – भरणी में केतु वेध, ।) चंद्रमा– मेष में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण ४ गुरु (२९ अक्टूवर) – वाहन क्रय, मृगशिर में रात १०:१३ बजे से रात्रिअंत ६:२८ बजे तक चंद्रमा– वृष में रा. १०:१२ तक।

कार्तिक कृष्ण ५ शुक्र (३० अक्टूवर) – वाहन क्रय, मृगशिर में सूर्योदय से प्रात: ९:०८ बजे तक चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण ७ रवि (१ नवम्वर) – वाहन क्रय, पुष्य में सूर्योदय से रात ४:३१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में मंगल युति।)रविपुष्य योग–रात्रि ४:३१वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

कार्तिक कृष्ण १२ शुक्र (६ नवम्वर) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), हस्त में सूर्योदय से दिन १०:३५ बजे तक लग्न. ८,९, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में शुक्र युति।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ६ रवि (१५ नवम्वर) – वाहन क्रय, श्रवण में रात ११:२९ बजे से रात १:४० बजे तक ल. ४,५, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १:४० से रात ६:११ वजे तक।)रवियो. –सू.उ.से रा.११:२९वजे। स.सि.योग–रात्रि ११:२९वजे तक। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ७ चंद्र (१६ नवम्वर) – वाहन क्रय, श्रवण में सूर्योदय से रात २:१६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ९,१,३,४,५,६, (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में सूर्य वेध,। श्रवण में गुरु वेध रात ७:३६ वजे से रात २:१६ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)स.सि.योग–रात्रि २:१६वजे तक। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल १३ रवि (२२ नवम्वर) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), अश्विनी में रात ११:२८ बजे से रात २:३९ बजे तक लग्न. ४, (परिहार चिंतनीय – भरणी में मंगल वेध,केतु वेध, ।)रवियो.–रा. ४:१७ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ४:१७वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण १ बुध (२५ नवम्वर) – वाहन क्रय, मृगशिर में रात ८:४५ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक स.सि.योग–रात्रि ८:४५वजे तक। स.सि.योग.रा.८:४५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण २ गुरु (२६ नवम्वर) – वाहन क्रय, मृगशिर में सूर्योदय से सायं ५:५८ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११,लग्न ११,१२,१,२, चंद्रमा– वृष में प्रा. ७:२१ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण ६ रवि (२९ नवम्वर) – वाहन क्रय, पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:०४ बजे तक लग्न. १०, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में सूर्य वेध,।)रवियो.–दि.११:०४ वजेसे रा.अं.। रविपुष्य योग–दिन ११:०४वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरु (३ दिसम्वर) – वाहन क्रय, हस्त में प्रात: ९:२५ बजे से दिन १०:५१ बजे एवं रात ११:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,।) चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शुक्र (४ दिसम्वर) – वाहन क्रय, हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध। चित्रा में शुक्र युति।) चंद्रमा– कन्या में रा. ११:०७ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ४ रवि (१३ दिसम्वर) – वाहन क्रय, श्रवण में दिन ४:४६ बजे से रात ६:५७ बजे तक (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष दिन १२:१४ वजे से दिन ३:५० वजे ।)रवियो.–रा. ९:१४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ५ चंद्र (१४ दिसम्वर) – वाहन क्रय, श्रवण में सूर्योदय से प्रात: ९:१३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – श्रवण में गुरु वेध प्रात: ६:५८ से प्रात: ९:१३ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)रवियो.–दि.९:१३ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ९:१३वजे तक। चंद्रमा– मकर में रा. १०:३५ तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल ११ रवि (२० दिसम्वर) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), अश्विनी में सूर्योदय से प्रात: ९:२३ बजे तक (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में भौम वेध ।)रवियो.–सू.उ.से दि.२:५२वजे। स.सि. योग–दिन २:५२वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल १४ बुध (२३ दिसम्वर) – वाहन क्रय, मृगशिर में रात ८:५६ बजे से रात्रिअंत ४:५६ बजे तक (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १०:२९ से रात २:२७ वजे तक।)रवियो. –सू.उ.से प्रा.७:६०वजे। स.सि.योग–प्रा. ७:६०वजे तक। स.सि.योग.प्रा.७:६० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृष में सा. ६:२९ तक।

पौष कृष्ण २ शुक्र (२५ दिसम्वर) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में सूर्य वेध । पुनर्वसु में बुधवेध दिन १२:२६ वजे से सायं ५:४३ वजे तक।)स.सि.योग–रात्रि ११:००वजे तक। चंद्रमा– मिथुन में सा. ५:४३ तक।

पौष कृष्ण ७ बुध (३० दिसम्वर) – वाहन क्रय, हस्त में दिन ३:३९ बजे से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध,।)रवियो.–सू.उ.से दि.३:३९वजे। स.सि.योग.दि.३:३९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

पौष कृष्ण ८ गुरु (३१ दिसम्वर) – वाहन क्रय, हस्त में सूर्योदय से दिन १२:२७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ९,११, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।) चंद्रमा– कन्या में रा. ४:४६ तक।

पौष कृष्ण ९ शुक्र (१ जनवरी) – वाहन क्रय, चित्रा में एवं स्वाती में दिन १:०६ बजे से रात्रि १:३९ बजे तक लग्न १,२,३, चंद्रमा– तुला में दिनरात।

पौष शुक्ल ३ रवि (१० जनवरी) – वाहन क्रय, श्रवण में सूर्योदय से दिन ३:१० बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ११,१,२, (परिहार चिंतनीय – श्रवण में गुरु वेध प्रात: ८:२७ वजे से दिन ३:१० वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)रवियो.–दि.३:१० वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मकर में रा. ४:३४ तक।

पौष शुक्ल ७ शुक्र (१५ जनवरी) – वाहन क्रय, अश्विनी में रात २:१२ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९, (परिहार चिंतनीय – अश्विनी में मंगल वेध,।)अमृ.सि.योग–रात्रि ११:५४वजे तक। स. सि.योग.रा.११:५४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ११:५४ तक।

पौष शुक्ल १३ बुध (२० जनवरी) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मृगशिर में सूर्योदय से दिन ४:१४ बजे तक लग्न. १, (परिहार चिंतनीय – मृगशिर में सूर्य वेध ।)रवियो.–दि.४:१४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ४:१४वजे तक। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

पौष शुक्ल १५ शुक्र (२२ जनवरी) – वाहन क्रय, पुनर्वसु में एवं पुष्य में प्रात: ७:३५ बजे से सायं ५:४६ बजे तक लग्न. ११,अभिजित् मुहूर्त एवं ल. १२,१,२,३,४, (परिहार चिंतनीय – पुष्य में शुक्रवेध रात ८:६० वजे से रात २:१७ वजे तक।)स.सि.योग–दिन १०:२६वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

माघ कृष्ण ६ बुध (२७ जनवरी) – वाहन क्रय, हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ३:५२ बजे तक लग्न. १०,१२,१,२,६,७, (परिहार चिंतनीय – हस्त में शनि वेध।)रवियो.–रा.१२:०१ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि १२:०१वजे तक। चंद्रमा– कन्या में दिनरात।

माघ कृष्ण ७ गुरु (२८ जनवरी) – वाहन क्रय, चित्रा में एवं स्वाती में दिन ३:५२ बजे से रात ३:५९ बजे तक लग्न. ,६,७, (परिहार चिंतनीय – शूल दोष सायं ५:०२ वजे से रात ७:०२ वजे ।)रवियो.–सू.उ.से रा.१२:३५वजे। चंद्रमा– कन्या में दि. १२:११ तक।

माघ कृष्ण ८ शुक्र (२९ जनवरी) – वाहन क्रय, स्वाती में सूर्योदय से रात १:५५ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,१२,१,२,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – गण्ड दोष दिन ४:१५ वजे से सायं ६:३९ वजे । विशाखा में राहु वेध, ।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

माघ शुक्ल ६ शुक्र (१२ फरवरी) – वाहन क्रय, अश्विनी में सूर्योदय से रात १:१२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११,१२,१,२,३,६,७,८, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात १:१२ से रात ५:२४ वजे तक। भरणी में मंगल वेध,।)रवियो.–सू.उ.से रा.६:०४वजे। स.सि.योग–रात्रि ६:०४वजे तक। चंद्रमा– मेष में दिनरात।

माघ शुक्ल ११ बुध (१७ फरवरी) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), पुनर्वसु में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – आर्द्रा में शुक्रवेध प्रात: ७:११ वजे से दिन १२:३७ वजे तक।) चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

माघ शुक्ल १२ गुरु (१८ फरवरी) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं। रवियो.–रा.९:०४ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ९:०४वजे तक। अमृ.सि.योग.रा.९:०४ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दि. ३:४२ तक।

माघ शुक्ल १३ शुक्र (१९ फरवरी) – वाहन क्रय, पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:११ बजे तक लग्न. १२,१, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में बुधवेध सायं ६:३४ वजे से रात ११:५७ वजे तक।अश्लेषा में गुरु केतु युति।)रवियो.–सू.उ.से सा.६:३४वजे, पुन:रा.१२:४४से रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ४ बुध (२४ फरवरी) – वाहन क्रय, चित्रा में रात ११:४३ बजे से रात्रिअंत तक ल. ७,८,९,१०, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:२० से रात ११:४३ वजे तक।)स.सि.योग–दिन ९:४२वजे तक। चंद्रमा– कन्या में रा. ९:३६ तक।

फाल्गुन कृष्ण ५ गुरु (२५ फरवरी) – वाहन क्रय, चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – स्वाती में सूर्य वेध,।) चंद्रमा– तुला में दिनरात।

फाल्गुन कृष्ण ६ शुक्र (२६ फरवरी) – वाहन क्रय, स्वाती में सूर्योदय से दिन १०:१६ बजे तक लग्न. १२,१, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात १०:२३ वजे से रात १:५९ वजे । स्वाती में सूर्य वेध । विशाखा में राहु वेध, ।)रवियो.–दि.१०:१६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में रा. ५:१५ तक।

फाल्गुन कृष्ण ११ गुरु (४ मार्च) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), श्रवण में रात १:३४ बजे से रात्रि १:६० बजे तक ल. ८,९, (परिहार चिंतनीय – उ.षा. में शुक्र युति। श्रवण में शुक्र युति।) चंद्रमा– मकर में दिनरात।

फाल्गुन शुक्ल ३ गुरु (११ मार्च) – वाहन क्रय, अश्विनी में दिन ११:१९ बजे से दिन ३:३७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. २,३,४, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–दिन ११:१९वजे तक। स.सि.योग.दि.११:१९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ११:१९ तक।

फाल्गुन शुक्ल ७ चंद्र (१५ मार्च) – वाहन क्रय, मृगशिर में प्रात: ९:३२ बजे से दिन १०:५७ बजे एवं रात १०:०१ बजे से रात्रिअंत तक ल. १,२,ल. ७,८,९,१०,११,स.सि.योग–दिन ९:३२वजे तक। चंद्रमा– वृष में रा. ८:५७ तक।

फाल्गुन शुक्ल ९ बुध (१७ मार्च) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), पुनर्वसु में प्रात: ६:५३ बजे से रात्रिअंत ४:१८ बजे तक ल. १२,रवियो.–सू.उ.से रा.५:०५वजे। चंद्रमा– मिथुन में रा. ११:३९ तक।

फाल्गुन शुक्ल ११ गुरु (१८ मार्च) – वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), पुष्य में प्रात: ८:१७ बजे से दिन ३:१० बजे एवं रात १:५४ बजे से रात ३:२६ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ,२,३,४,लग्न १०, (परिहार चिंतनीय – अश्लेषा में मंगल गुरु केतु युति।)रवियो.–दि. ३:२८से रा.३:२६। अमृ.सि.योग–रात्रि ३:२६वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

चैत्र कृष्ण २ बुध (२४ मार्च) – वाहन क्रय, चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष प्रात: ९:१५ वजे से दिन १२:५१ वजे ।) चंद्रमा– कन्या में प्रा. ७:३२ तक।

चैत्र कृष्ण १० गुरु (१ अप्रैल) – वाहन क्रय, श्रवण में प्रात: ९:२२ बजे से दिन ११:२७ बजे एवं रात १२:४० बजे से रात्रिअंत तक ल. २,३,ल. ९,१०,११, चंद्रमा– मकर में दिनरात।

चैत्र कृष्ण ११ शुक्र (२ अप्रैल) – वाहन क्रय, श्रवण में सूर्योदय से दिन १२:१३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १२,१,२,३, (परिहार चिंतनीय – धनिष्ठा में गुरु वेध रात १:३१ वजे से रातअंत ८:१० वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)स.सि.योग–दिन १२:१३वजे तक। चंद्रमा– मकर में रा. १:३१ तक।

संपत्ति क्रय मुहूर्त

चैत्र शुक्ल ९ शुक्र (२७ मार्च) – संपत्ति क्रय, पुनर्वसु में दिन १०:११ बजे से दिन ३:३३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न २,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में गुरु युति।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। स.सि.योग–दिन ३:३३वजे तक। चंद्रमा– मिथुन में दि. ९:४२ तक।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ५ गुरु (७ मई) – संपत्ति क्रय, पू.षा. में सूर्योदय से सायं ६:४३ बजे तक लग्न. २,३,अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ३,४,५,६,७,रवियो.–शा.६:४३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– धनु में रा. १:२५ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ११ गुरु (११ जून) – संपत्ति क्रय, रेवती में सूर्योदय से प्रात: ८:१३ बजे तक लग्न. ३,४, (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष रात १२:५५ वजे से रात ३:१९ वजे । रेवती में शनि युति।)स.सि.योग–दिन ८:१३वजे तक। स.सि.योग.दि.८:१३ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दि. ८:१३ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ५ शुक्र (१९ जून) – संपत्ति क्रय, मघा में दिन १०:१७ बजे से रात्रिअंत ५:३९ बजे तक (परिहार चिंतनीय – वज्र दोष दिन ३:०४ वजे से दिन ४:१६ वजे । मघा में केतु युति।)रवियो.–दि.१०:१७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– कर्क में दि. १०:१७ तक।

आषाढ शुक्ल ९ गुरु (२३ जुलाई) – संपत्ति क्रय, विशाखा में एवं अनुराधा में प्रात: ७:०४ बजे से रात्रि २:१२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,८,९,१०,११,१२,२, (परिहार चिंतनीय – क्रान्तिसाम्य दोष रात २:१२ से रातअंत वजे तक।)रवियो.–सू.उ.से रा.अं.। स.सि.योग. रा.१:४५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में रा. ७:०४ तक।

आषाढ शुक्ल १० शुक्र (२४ जुलाई) – संपत्ति क्रय, अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:२२ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न ६,७,८,९,१०,११,१२, (परिहार चिंतनीय – ज्येष्ठा में सूर्य वेध,।)रवियो.–सू.उ.से रा.४:३७वजे। स.सि.योग–रात्रि ४:३७वजे तक। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

श्रावण शुक्ल १५ शुक्र (२८ अगस्त) – संपत्ति क्रय, पू.भा. में रात ३:१३ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक ल. ४, चंद्रमा– कुंभ में दिनरात।

भाद्रपद शुक्ल ६ गुरु (१७ सितम्वर) – संपत्ति क्रय, अनुराधा में सूर्योदय से दिन १०:४९ बजे तक लग्न. ७,रवियो.–सू.उ.से रा.७:५८वजे। स.सि.योग–रात्रि ७:५८वजे तक। चंद्रमा– वृश्चिक में दिनरात।

आश्विन शुक्ल ६ शुक्र (१६ अक्टूवर) – संपत्ति क्रय, मूल में प्रात: ६:४९ बजे से रात ५:५३ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. ७,८,९,१०,११,१२,१,२,३,४,५, (परिहार चिंतनीय – अतिगंड दोष रात १०:०८ वजे से रात १२:३२ वजे । ज्येष्ठा में भौम वेध ।)रवियो.–प्रा. ६:४९ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– वृश्चिक में प्रा. ६:४९ तक।

कार्तिक कृष्ण ४ गुरु (२९ अक्टूवर) – संपत्ति क्रय, मृगशिर में रात १०:१३ बजे से रात्रिअंत ६:२८ बजे तक चंद्रमा– वृष में रा. १०:१२ तक।

कार्तिक कृष्ण ५ शुक्र (३० अक्टूवर) – संपत्ति क्रय, मृगशिर में सूर्योदय से प्रात: ९:०८ बजे तक चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

कार्तिक शुक्ल ४ शुक्र (१३ नवम्वर) – संपत्ति क्रय, पू.षा. में रात ८:४० बजे से रात्रिअंत ५:२३ बजे तक रवियो.–सू.उ.से सा.५:१८वजे। चंद्रमा– धनु में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल ९ शुक्र (१८ दिसम्वर) – संपत्ति क्रय, रेवती में रात ११:१७ बजे से रात्रिअंत ६:६० बजे तक (परिहार चिंतनीय – उ.भा. में शनि युति।)रवियो.–दि.४:०८ वजेसे रा.अं.। अमृ.सि.योग.दि.४:०८ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में दिनरात।

मार्गशीर्ष शुक्ल १५ गुरु (२४ दिसम्वर) – संपत्ति क्रय, पुनर्वसु में रात १:५५ बजे से रात्रि ३:२६ बजे तक (परिहार चिंतनीय – पुनर्वसु में सूर्य वेध,।)स.सि.योग.रा.१:५५ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मिथुन में दिनरात।

पौष शुक्ल १५ शुक्र (२२ जनवरी) – संपत्ति क्रय, पुनर्वसु में प्रात: ७:३५ बजे से दिन १०:२६ बजे तक लग्न. ११, (परिहार चिंतनीय – पुष्य में शुक्रवेध रात ८:६० वजे से रात २:१७ वजे तक।)स.सि.योग–दिन १०:२६वजे तक। चंद्रमा– कर्क में दिनरात।

माघ शुक्ल ५ गुरु (११ फरवरी) – संपत्ति क्रय, रेवती में सूर्योदय से रात ५:४७ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं लग्न १०,११,१२,१,२,३,६,७,८,९,लग्न ९, (परिहार चिंतनीय – रेवती में शनि युति।)रवियो.–रा.५:४७ वजेसे रा.अं.। स.सि.योग–रात्रि ५:४७वजे तक। स.सि.योग.रा.५:४७ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– मीन में रा. ५:४७ तक।

फाल्गुन कृष्ण ६ शुक्र (२६ फरवरी) – संपत्ति क्रय, विशाखा में दिन १०:१६ बजे से रात ८:४१ बजे तक अभिजित् मुहूर्त एवं ल. १,२,३,४,५,६, (परिहार चिंतनीय – व्याघात दोष रात १०:२३ वजे से रात १:५९ वजे । स्वाती में सूर्य वेध । विशाखा में राहु वेध, ।)रवियो.–दि.१०:१६ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में रा. ५:१५ तक।

चैत्र कृष्ण ४ शुक्र (२६ मार्च) – संपत्ति क्रय, विशाखा में एवं अनुराधा में दिन १२:४१ बजे से रात्रिअंत तक लग्न ३,४,५,६,७, (परिहार चिंतनीय – विशाखा में राहु वेध, । अनुराधा में मंगल वेध,केतु वेध, ।)स.सि.योग.रा.८:४१ वजेसे रा.अं.। चंद्रमा– तुला में दि. २:२२ तक।

चैत्र शुक्ल पक्ष

चैत्र शुक्ल २ शुक्र। २० मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात २:३१ तक। रेवती में सूर्योदय से रात २:२८ बजे तक अग्न्याधान, । रेवती में सूर्योदय से रात २:२८ बजे एवं अश्विनी मेंरात २:३० बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – रेवती में सूर्योदय से रात २:२८ बजे तक अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । रेवती में सूर्योदय से रात २:२८ बजे एवं अश्विनी मेंरात २:३० बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –रेवती में सूर्योदय से रात २:२८ बजे एवं अश्विनी मेंरात २:३० बजे से रात्रिअंत तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । अश्विनी में रात २:३० बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रेवती में सूर्योदय से रात २:२८ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । रेवती में सूर्योदय से रात २:२८ बजे एवं अश्विनी मेंरात २:३० बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, मनी इन्वेस्टमेन्ट, । अश्विनी में रात २:३० बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में सूर्योदय से रात २:२८ बजे एवं अश्विनी मेंरात २:३० बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। रेवती में सूर्योदय से रात २:२८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (अश्विनी में केतु वेध, । रेवती में शुक्र युति।)

चैत्र शुक्ल ३ शनि। २१ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अश्विनी में वैधृति से पहले, सूर्योदय से रात ७:०० बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अश्विनी में वैधृति से पहले, सूर्योदय से रात ७:०० बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अश्विनी में वैधृति से पहले, सूर्योदय से रात ७:०० बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में वैधृति से पहले, सूर्योदय से रात ७:०० बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (अश्विनी में केतु वेध, ।)

चैत्र शुक्ल ४ रवि। २२ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ९:१८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ९:१८ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – भरणी में भद्रा से पहले वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, रात ९:१५ बजे से रात १०:४३ बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –भरणी में एवं कृतिका में रात ९:१५ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

चैत्र शुक्ल ५ चंद्र। २३ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से सायं ६:४० तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से सायं ६:४० तक। वृषारूढ सायं ६:४० से रातअंत । कृतिका में एवं रोहिणी में सूर्योदय से रात्रिअंत तक अग्न्याधान, । रोहिणी में रात ८:५१ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – रोहिणी में रात ८:५१ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –कृतिका में सूर्योदय से रात ८:५१ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । कृतिका में एवं रोहिणी में सूर्योदय से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । रोहिणी में रात ८:५१ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रोहिणी में रात ८:५१ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

चैत्र शुक्ल ६ मंगल। २४ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ४:११ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रात ७:०८। शुक्र रात ७:०८ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ४:११ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । मृगशिर में रात ७:०८ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रोहिणी में सूर्योदय से रात ७:०८ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – मृगशिर में रात ७:०८ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में रात ७:०८ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं।

चैत्र शुक्ल ७ बुध। २५ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से दिन १:५० बजे तक अग्न्याधान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से दिन १:५० बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, पुनर्विवाह, । मृगशिर में सूर्योदय से दिन १:५० बजे एवं आर्द्रा मेंरात १२:४८ बजे से रात्रिअंत तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मृगशिर में सूर्योदय से दिन १:५० बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, । मृगशिर में सूर्योदय से दिन १:५० बजे एवं आर्द्रा मेंरात १२:४८ बजे से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से दिन १:५० बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में सूर्योदय से दिन १:५० बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं।

चैत्र शुक्ल ८ गुरु। २६ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ११:५५ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ११:५५ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – आर्द्रा में सूर्योदय से दिन ११:५१ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण २६:५० तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – आर्द्रा में सूर्योदय से दिन ११:५१ बजे तक मंत्र दीक्षा, । पुनर्वसु में दिन ४:२५ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –आर्द्रा में सूर्योदय से दिन ११:५१ बजे तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

चैत्र शुक्ल ९ शुक्र। २७ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १०:१५ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से दिन ३:३३। शनि दिन ३:३३ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १०:१५ तक। पुनर्वसु में एवं पुष्य में दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । पुष्य में दिन ३:३३ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में दिन ३:३३ बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुनर्वसु में दिन १०:११ बजे से दिन ३:३३ बजे तक जैन विद्यारंभ । पुनर्वसु में एवं पुष्य में दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । पुष्य में दिन ३:३३ बजे से रात्रिअंत तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में दिन १०:११ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। पुनर्वसु में दिन १०:११ बजे से दिन ३:३३ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। पुष्य में दिन ३:३३ बजे से रात्रिअंत तक राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

चैत्र शुक्ल १० शनि। २८ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन ३:०० बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पुष्य में सूर्योदय से दिन ३:०० बजे तक पशु क्रय विक्रय, । अश्लेषा में दिन ३:०० बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन ३:०० बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में सूर्योदय से दिन ३:०० बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं।

चैत्र शुक्ल ११ रवि। २९ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर प्रात: ७:५७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मघा में दिन २:४९ बजे से रात्रिअंत तक जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अश्लेषा में प्रात: ७:५४ बजे से दिन २:४९ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. २:४९ तक, । मघा में दिन २:४९ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मघा में केतु युति।)

चैत्र शुक्ल १२ चंद्र। ३० मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से दिन २:५९। चंद्र दिन २:५९ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से प्रात: ७:२० तक। वृषारूढ प्रात: ७:२० से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मघा में सूर्योदय से दिन २:५९ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मघा में सूर्योदय से दिन २:५९ बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मघा में केतु युति।)

चैत्र शुक्ल १३ मंगल। ३१ मार्च २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से प्रात: ७:०४ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.फा. में दिन ३:३० बजे से रात्रिअंत तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में दिन ३:३० बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन १०:३४ से दिन २:५६ वजे तक। उ.फा. में सूर्यवेध, । पूर्वा.फा. में शुक्रवेध ६:१७ से प्रात: ९:१८ वजे तक।)

चैत्र शुक्ल १४ बुध। १ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – हस्त में भद्रा पश्चात् रात ७:२६ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.फा. में सूर्योदय से प्रात: ७:१० बजे एवं हस्त मेंरात ७:२६ बजे से रात्रिअंत तक पुनर्विवाह, । हस्त में भद्रा पश्चात् रात ७:२६ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में सूर्योदय से प्रात: ७:१० बजे तक धान्य विक्रय, । हस्त में भद्रा पश्चात् रात ७:२६ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –हस्त में भद्रा

पश्चात् रात ७:२६ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (उ.फा. में सूर्य वेध । हस्त में शनि वेध,।)

चैत्र शुक्ल १५ गुरु। २ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप प्रातः ७:४६ से रातअंत । हस्त में सूर्योदय से प्रातः ७:४३ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में सूर्योदय से दिन २:२४ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – हस्त में सूर्योदय से प्रातः ७:४३ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – हस्त में सूर्योदय से प्रातः ७:४३ बजे तक अन्नप्राशन, । हस्त में सूर्योदय से दिन २:२४ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, । हस्त में सूर्योदय से दिन २:२४ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त –हस्त में सूर्योदय से प्रातः ७:४३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । हस्त में सूर्योदय से दिन २:२४ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । हस्त में सूर्योदय से दिन २:२४ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । चित्रा में व्याघात पश्चात सायं ५:६० बजे से रात्रिअंत तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में व्याघात पश्चात सायं ५:६० बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में सूर्योदय से दिन २:२४ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। हस्त में सूर्योदय से दिन २:२४ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त हैं। हस्त में सूर्योदय से प्रातः ७:४३ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (हस्त में शनि वेध। चित्रा में मंगल वेध,।)

वैशाख कृष्ण पक्ष

वैशाख कृष्ण १ शुक्र। ३ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रात ७:२९। मंगल रात ७:२९ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ८:४५ तक। चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । स्वाती में रात ७:२९ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में प्रातः ८:४२ बजे से रात ७:२९ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण २९:१२ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – चित्रा में प्रातः ८:४२ बजे से रात ७:२९ बजे तक मंत्र दीक्षा, । चित्रा में सूर्योदय से रात ७:२९ बजे तक कर्णवेध, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, । चित्रा में एवं स्वाती में प्रातः ८:४२ बजे से रात्रिअंत तक अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । स्वाती में रात ७:२९ बजे से रात्रिअंत तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –चित्रा में सूर्योदय से रात ७:२९ बजे तक बीज बोवनी, । चित्रा में सूर्योदय से प्रातः ८:४२ बजे एवं स्वाती मेंरात ७:२९ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । चित्रा में एवं स्वाती में प्रातः ८:४२ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । स्वाती में रात ७:२९ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में सूर्योदय से रात ७:२९ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त हैं। चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। चित्रा में एवं स्वाती में प्रातः ८:४२ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (चित्रा में भौम वेध । स्वाती में राहु वेध, । चित्रा में बुधवेध दिन १२:५९ वजे से रात ७:२९ वजे तक।)

वैशाख कृष्ण २ शनि। ४ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – स्वाती में सूर्योदय से रात ९:३८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में रात ९:३८ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में सूर्योदय से रात ९:३८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (स्वाती में राहु वेध, ।)

वैशाख कृष्ण ३ रवि। ५ अप्रैल २०२६। विशाखा में भद्रा दोष। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १२:०३ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन १२:०३ से रातअंत ।

वैशाख कृष्ण ४ चंद्र। ६ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन २:१३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रात २:५८। गुरु रात २:५८ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन २:१३ तक। वृषारूढ दिन २:१३ से रातअंत । अनुराधा में दिन २:१० बजे से दिन ३:२६ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से दिन २:१० बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । अनुराधा में दिन २:१० बजे से दिन ३:२६ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –अनुराधा में दिन २:१० बजे से दिन ३:२६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अनुराधा में दिन २:१० बजे से दिन ३:२६ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में दिन २:१० बजे से दिन ३:२६ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (अनुराधा में शुक्रवेध रात ८:१५ वजे से रात २:५८ वजे तक।)

वैशाख कृष्ण ५ मंगल। ७ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ४:३६ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ४:३६ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – ज्येष्ठा में व्यतिपात पश्चात, दिन ४:१६ बजे से रात ५:५४ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । मूल में रात ५:५४ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

वैशाख कृष्ण ६ बुध। ८ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में परिघ से पहले, सूर्योदय से सायं ५:०८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मूल में गुरु वेध रात २:०४ वजे से रातअंत ८:४८ वजे तक।)

वैशाख कृष्ण ७ गुरु। ९ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ९:१७ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ९:१७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:११ बजे से प्रातः ८:४६ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –मूल में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:११ बजे से प्रातः ८:४६ बजे तक धान्य रोपण, । पू.षा. में प्रातः ८:४६ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.षा. में प्रातः ८:४६ बजे से रात्रिअंत तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मूल में गुरु वेध प्रातः ६:०८ से प्रातः ८:४६ वजे तक।)

वैशाख कृष्ण ८ शुक्र। १० अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ११:११ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से दिन ११:२३। राहु दिन ११:२३ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ११:११ तक। उ.षा. में दिन ११:२३ बजे से रात्रिअंत तक अग्न्याधान, । उ.षा. में दिन ११:२३ बजे से रात ११:१२ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में दिन ११:२३ बजे से रात ११:१२ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से दिन ११:२३ बजे तक जैन विद्यारंभ । उ.षा. में दिन ११:२३ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, । उ.षा. में दिन ११:२३ बजे से रात ११:१२ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.षा. में एवं उ.षा. में सूर्योदय से रात ११:१२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.षा. में दिन ११:२३ बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । उ.षा. में दिन ११:२३ बजे से रात ११:१२ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से दिन ११:२३ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । उ.षा. में दिन ११:२३ बजे से रात ११:१२ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में दिन ११:२३ बजे से रात ११:१२ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

वैशाख कृष्ण ९ शनि। ११ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में रात १२:३४ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में सूर्योदय से दिन १:३४ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में रात १२:३४ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में रात १२:३४ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

वैशाख कृष्ण १० रवि। १२ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात १:१२ से रातअंत । श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १२:५८ बजे एवं धनिष्ठा मेंरात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १२:५८ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १२:५८ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १२:५८ बजे एवं धनिष्ठा मेंरात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १२:५८ बजे एवं धनिष्ठा मेंरात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । धनिष्ठा में रात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १२:५८ बजे एवं धनिष्ठा मेंरात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १२:५८ बजे एवं धनिष्ठा मेंरात १:१३ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १२:५८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं।

वैशाख कृष्ण ११ चंद्र। १३ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात १:०४ तक। वृषारूढ रात १:०४ से

रातअंत । धनिष्ठा में एवं शतभिषा मेंक्रांतिसाम्य से पहले क्रांतिसाम्य पश्चात, सूर्योदय से रात ११:२५ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन ३:५६ बजे तक कर्णवेध, पुनर्विवाह, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा मेंक्रांतिसाम्य से पहले क्रांतिसाम्य पश्चात, सूर्योदय से रात ११:२५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन ३:५६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा मेंक्रांतिसाम्य से पहले क्रांतिसाम्य पश्चात, सूर्योदय से रात ११:२५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन ३:५६ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा मेंक्रांतिसाम्य से पहले क्रांतिसाम्य पश्चात, सूर्योदय से रात ११:२५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन ३:५६ बजे तक यात्रा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। शतभिषा मेंक्रांतिसाम्य से पहले क्रांतिसाम्य पश्चात, दिन ३:५६ बजे से रात ११:२५ बजे एवं रात ३:३० बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ११:२५ से रात ३:३० वजे तक। शतभिषा में राहु युति।)

वैशाख कृष्ण १२ मंगल। १४ अप्रैल २०२६। पू.भा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से दिन ९:२५। राहु दिन ९:२५ से दिन ३:५९ केतु दिन ३:५९ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १२:०८ तक।

वैशाख कृष्ण १३ बुध। १५ अप्रैल २०२६। पू.भा. में निर्बल चंद्र। उ.भा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव।

वैशाख कृष्ण १४ गुरु। १६ अप्रैल २०२६। उ.भा. में निर्बल चंद्र। रेवती में वैधृति दोष निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ८:०९ से रातअंत ।

वैशाख कृष्ण ३० शुक्र। १७ अप्रैल २०२६। रेवती में निर्बल चंद्र। अश्विनी में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सायं ५:२२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से दिन १२:०२। सूर्य दिन १२:०२ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से सायं ५:२२ तक।

वैशाख शुक्ल पक्ष

वैशाख शुक्ल १ शनि। १८ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप दिन २:१४ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – भरणी में निर्बल चंद्रकाल पश्चात दिन २:१४ बजे से रात्रिअंत तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (भरणी में केतु वेध, । अश्विनी में सूर्य युति।)

वैशाख शुक्ल २ रवि। १९ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १०:५५ तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रात ४:४०। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १०:५५ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – भरणी में सूर्योदय से प्रातः ७:१४ बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –भरणी में एवं कृतिका में सूर्योदय से रात्रिअंत ४:४९ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (भरणी में केतु वेध, । कृतिका में शुक्र युति।)

वैशाख शुक्ल ३ चंद्र। २० अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ७:३१ बजे तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ७:३१ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , गृहछादन छत,, नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ७:३१ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, उपनयन, कन्या वरण, वर वरण, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ७:३१ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । रोहिणी में सूर्योदय से सायं ५:५५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ७:३१ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में सूर्योदय से प्रातः ७:३१ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

वैशाख शुक्ल ५ मंगल। २१ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात १:२६ तक। वृषारूढ रात १:२६ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:०४ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:०४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:०४ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं।

वैशाख शुक्ल ६ बुध। २२ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रात १०:१८। शुक्र रात १०:१८ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १०:५६ तक। पुनर्वसु में रात १०:५० बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – आर्द्रा में सूर्योदय से रात १०:१८ बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । आर्द्रा में एवं पुनर्वसु में सूर्योदय से रात १०:५० बजे तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । पुनर्वसु में रात १०:१८ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, मंत्र दीक्षा, द्विरागमन, । पुनर्वसु में रात १०:५० बजे से रात्रिअंत तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –आर्द्रा में एवं पुनर्वसु में सूर्योदय से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । पुनर्वसु में रात १०:१८ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । पुनर्वसु में रात १०:५० बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में रात १०:१८ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । पुनर्वसु में रात १०:५० बजे से रात्रिअंत तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –आर्द्रा में सूर्योदय से रात १०:१८ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। पुनर्वसु में रात १०:१८ बजे से रात्रिअंत तक वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। पुनर्वसु में रात १०:५० बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

वैशाख शुक्ल ७ गुरु। २३ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – पुनर्वसु में सूर्योदय से रात ८:४९ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में सूर्योदय से रात ८:४९ बजे तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, मुंडन, मंत्र दीक्षा, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में सूर्योदय से रात ८:४९ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में सूर्योदय से रात ८:४९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में सूर्योदय से रात ८:४९ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (पुनर्वसु में गुरु युति।)

वैशाख शुक्ल ८ शुक्र। २४ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ७:३० से रातअंत । पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:५८ बजे से रात ७:२३ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:५८ बजे से रात ८:२१ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:५८ बजे से रात ७:२३ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , गृहछादन छत,, नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:५८ बजे से रात ७:२३ बजे तक मंत्र दीक्षा, । पुष्य में भद्रा पश्चात् रात ७:२३ बजे से रात ८:२१ बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:५८ बजे से रात ८:२१ बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:५८ बजे से रात ७:२३ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:५८ बजे से रात ७:२३ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:५८ बजे से रात ७:२३ बजे तक वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

वैशाख शुक्ल ९ शनि। २५ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से सायं ६:३८ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – मघा में क्रांतिसाम्य पश्चात, रात १०:५८ बजे से रात्रिअंत तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १५:४१ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – मघा में क्रांतिसाम्य पश्चात, रात १०:५८ बजे से रात्रिअंत तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –मघा में क्रांतिसाम्य पश्चात, रात १०:५८ बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. ८:१३ तक, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (क्रान्तिसाम्य दोष सायं ६:४१ से रात १०:५८ वजे तक। मघा में केतु युति।)

वैशाख शुक्ल १० रवि। २६ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मघा में सूर्योदय से सायं ६:१२ बजे तक कन्या वरण, । मघा में सूर्योदय से रात ८:३७ बजे तक पुनर्विवाह, । मघा में एवं पू.फा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक जैन विद्यारंभ । पू.फा. में रात ८:३७ बजे से रात्रिअंत तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –मघा में सूर्योदय से रात ८:३७ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पूर्वा. फा. में सूर्य वेध,। मघा में केतु युति।)

वैशाख शुक्ल ११ चंद्र। २७ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सायं ६:२८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शनि

सूर्योदय से रात १:१४। शनि रात १:१४ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सायं ६:२८ से रातअंत । उ.फा. में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – पू.फा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे एवं सायं ६:२२ बजे से रात ९:२९ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । उ.फा. में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत,, नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त – पू.फा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे तक उपनयन, कन्या वरण, । पू.फा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे एवं सायं ६:२२ बजे से रात ९:२९ बजे तक वर वरण, । उ.फा. में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.फा. में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, बैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (पूर्वा.फा. में सूर्य वेध । उ.फा. में मंगल वेध,।)

वैशाख शुक्ल १२ मंगल। २८ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ७:०३ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ७:०३ तक। वृषारूढ रात ७:०३ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में सूर्योदय से रात १०:४५ बजे तक वर वरण, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । हस्त में रात १०:४५ बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में सूर्योदय से रात १०:४५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –हस्त में रात १०:४५ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (उ.फा. में भौम वेध । हस्त में शनि वेध,। उ.फा. में बुध वेध प्रात: ५:५३ से दिन १०:०३ वजे तक।)

वैशाख शुक्ल १३ बुध। २९ अप्रैल २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ८:०१ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रात १२:२३। चंद्र रात १२:२३ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ८:०१ तक। हस्त में सूर्योदय से रात ७:५६ बजे तक देव प्रतिष्ठा धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – हस्त में सूर्योदय से रात ७:५६ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, मुंडन, कन्या वरण, द्विरागमन, । हस्त में रात ७:५६ बजे से रात १२:२३ बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –हस्त में सूर्योदय से रात ७:५६ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – हस्त में सूर्योदय से रात ७:५६ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में सूर्योदय से रात ७:५६ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध।)

वैशाख शुक्ल १४ गुरु। ३० अप्रैल २०२६। चित्रा में भद्रा दोष मुहूर्त अभाव।

वैशाख शुक्ल १५ शुक्र।१ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात १०:५६ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात १०:५६ से रातअंत । स्वाती में भद्रा पश्चात् व्यतिपात से पहले, दिन १०:०० बजे से रात ९:१६ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – स्वाती में भद्रा पश्चात् व्यतिपात से पहले, दिन १०:०० बजे से रात ९:१६ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । {३} संस्कार मुहूर्त – स्वाती में भद्रा पश्चात् व्यतिपात से पहले, दिन १०:०० बजे से रात ९:१६ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ कन्या वरण, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –स्वाती में भद्रा पश्चात् व्यतिपात से पहले, दिन १०:०० बजे से रात ९:१६ बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – स्वाती में भद्रा पश्चात् व्यतिपात से पहले, दिन १०:०० बजे से रात ९:१६ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में भद्रा पश्चात् व्यतिपात से पहले, दिन १०:०० बजे से रात ९:१६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। (स्वाती में राहु वेध, ।)

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण १ शनि। २ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात १२:५२ तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रात ७:०९। मंगल रात ७:०९ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १२:५२ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में व्यतिपात पश्चात, रात ९:४६ बजे से रातअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – विशाखा में व्यतिपात पश्चात, रात ९:४६ बजे से रातअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण २ रवि। ३ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – विशाखा में एवं अनुराधा में परिघ से पहले सूर्योदय से रात १०:२८ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । अनुराधा में परिघ से पहले प्रात: ७:०९ बजे से रात १०:२८ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में परिघ से पहले प्रात: ७:०९ बजे से रात १०:२८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, उपनयन, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में सूर्योदय से प्रात: ७:०९ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पशु क्रय विक्रय, । अनुराधा में परिघ से पहले प्रात: ७:०९ बजे से रात १०:२८ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – विशाखा में एवं अनुराधा में परिघ से पहले सूर्योदय से रात १०:२८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ३ चंद्र। ४ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर रात ५:२४ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –ज्येष्ठा में भद्रा से पहले परिघ पश्चात दिन १०:५२ बजे से दिन ४:१० बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – ज्येष्ठा में भद्रा से पहले परिघ पश्चात दिन १०:५२ बजे से दिन ४:१० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ४ मंगल। ५ मई २०२६। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ७:५१ तक। वृषारूढ रात ७:५१ से रातअंत ।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ४ बुध। ६ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से प्रात: ७:५१ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से दिन ३:५२। गुरु दिन ३:५२ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से प्रात: ७:५१ तक। वृषारूढ प्रात: ७:५१ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में प्रात: ७:४९ बजे से दिन ३:५२ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, उपनयन, मंत्र दीक्षा, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.षा. में दिन ३:५२ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.षा. में दिन ३:५२ बजे से रात्रिअंत तक बैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मूल में गुरु वेध प्रात: ५:४७ से प्रात: ९:०८ वजे तक।)

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ५ गुरु। ७ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १०:१३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन १०:१३ तक। उ.षा. में सायं ६:४३ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में सायं ६:४३ बजे से रात्रिअंत तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से दिन १०:१२ बजे तक उपनयन, कन्या वरण, । पू.षा. में सूर्योदय से सायं ६:४३ बजे तक वर वरण, । पू.षा. में एवं उ.षा. में सूर्योदय से रात्रिअंत तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । उ.षा. में सायं ६:४३ बजे से रात्रिअंत तक प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.षा. में सूर्योदय से दिन १०:१२ बजे एवं उ.षा. मेंसायं ६:४३ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.षा. में सायं ६:४३ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से सायं ६:४३ बजे तक बैंक लॉकर खोलना, । उ.षा. में सायं ६:४३ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –पू.षा. में सूर्योदय से सायं ६:४३ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। उ.षा. में सायं ६:४३ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ६ शुक्र। ८ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे एवं श्रवण मेंरात १:१५ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । श्रवण में भद्रा पश्चात् रात १:१५ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे एवं श्रवण मेंरात १:१५ बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे एवं श्रवण मेंरात १:१५ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, । श्रवण में भद्रा पश्चात् रात १:१५ बजे से रात्रिअंत तक अन्नप्राशन, कर्णवेध, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे तक धान्य रोपण, धान्य विक्रय, । उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे एवं श्रवण मेंरात १:१५ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । श्रवण में भद्रा पश्चात् रात १:१५ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे तक व्यापार प्रारंभ, । उ.षा. में सूर्योदय से दिन

१२:२० बजे एवं श्रवण मेंरात १:१५ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, ।श्रवण में भद्रा पश्चात् रात १:१५ बजे से रात्रिअंत तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे एवं श्रवण मेंरात १:१५ बजे से रात्रिअंत तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:२० बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में भद्रा पश्चात् रात १:१५ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ७ शनि। ९ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १:५९ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रात ११:२१। राहु रात ११:२१ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १:५९ से रातअंत ।श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –धनिष्ठा में रात ११:२१ बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में सूर्योदय से रात ११:२१ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से दिन २:०१ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन ९:११ से दिन १:२५ वजे तक।)

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ८ रवि। १० मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ३:०२ तक। धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन ३:०५ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन ३:०५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जैन विद्यारंभ कन्या वरण, ।धनिष्ठा में सूर्योदय से रात १२:४६ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन ३:०५ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ।धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन ३:०५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन ३:०५ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (शतभिषा में राहु युति।)

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ९ चंद्र। ११ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शतभिषा में दिन ३:२३ बजे से रात १२:५९ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – शतभिषा में दिन ३:२३ बजे से रात १२:५९ बजे तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – शतभिषा में दिन ३:२३ बजे से रात १२:५९ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –शतभिषा में दिन ३:२३ बजे से रात १२:५९ बजे तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, ।शतभिषा में सूर्योदय से रात १२:५९ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – शतभिषा में दिन ३:२३ बजे से रात १२:५९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में दिन ३:२३ बजे से रात १२:५९ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (शतभिषा में राहु युति।)

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण १० मंगल। १२ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर दिन २:४५ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.भा. में रात १२:२५ बजे से रात १:१२ बजे तक वर वरण, ।उ.भा. में रात १:१२ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.भा. में रात १:१२ बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (उ.भा. में शनि युति।)

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ११ बुध। १३ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रात १२:१२। केतु रात १२:१२ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन १:२३ तक। वृषारूढ दिन १:२३ से रातअंत ।उ.भा. में एवं रेवती में दिन १:२७ बजे से रात्रिअंत तक अग्न्याधान, ।रेवती में रात १२:१२ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.भा. में सूर्योदय से दिन १:२७ बजे तक कन्या वरण, ।उ.भा. में सूर्योदय से रात १२:१२ बजे तक वर वरण, ।उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, द्विरागमन, पुनर्विवाह, ।रेवती में रात १२:१२ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.भा. में सूर्योदय से रात १२:१२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय, ।उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, ईंधन स्थापन, ।रेवती में रात १२:१२ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.भा. में सूर्योदय से रात १२:१२ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, ।उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । रेवती में रात १२:१२ बजे से रात्रिअंत तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में सूर्योदय से रात १२:१२ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। रेवती में रात १२:१२ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (उ.भा. में शनि युति।)

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण १२ गुरु। १४ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ११:१५ तक। रेवती मेंनिर्बल चंद्रकाल से पहले, सूर्योदय से दिन ११:१५ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – रेवती मेंनिर्बल चंद्रकाल से पहले, सूर्योदय से दिन ११:१५ बजे तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – रेवती मेंनिर्बल चंद्रकाल से पहले, सूर्योदय से दिन ११:१५ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, कन्या वरण, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रेवती मेंनिर्बल चंद्रकाल से पहले, सूर्योदय से दिन ११:१५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रेवती मेंनिर्बल चंद्रकाल से पहले, सूर्योदय से दिन ११:१५ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती मेंनिर्बल चंद्रकाल से पहले, सूर्योदय से दिन ११:१५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (अश्विनी में मंगल युति।)

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण १३ शुक्र। १५ मई २०२६। अश्विनी में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष भरणी में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव।

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ३० शनि। १६ मई २०२६। भरणी में निर्बल चंद्र। कृतिका में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १:३४ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल १ रवि। १७ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ९:४७ से रातअंत ।रोहिणी में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – रोहिणी में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत, (अग्निबाण ८:०२ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – रोहिणी में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रस. ूति स्नान, अन्नप्राशन, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रोहिणी में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात ९:४७ बजे से रात्रिअंत तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (कृतिका में सूर्य बुध युति।)

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल २ चंद्र। १८ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से सायं ६:०३ तक। रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, ।मृगशिर में दिन ११:४० बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से दिन ११:४० बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण ८:५७ तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, ।मृगशिर में दिन ११:४० बजे से रात्रिअंत तक कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रोहिणी में सूर्योदय से दिन ११:४० बजे तक धान्य विक्रय, ।रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, ।मृगशिर में दिन ११:४० बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रोहिणी में सूर्योदय से दिन ११:४० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, ।मृगशिर में दिन ११:४० बजे से रात्रिअंत तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में सूर्योदय से दिन ११:४० बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। मृगशिर में दिन ११:४० बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (मृगशिर में शुक्र युति।)

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ३ मंगल। १९ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ८:५० बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ८:५० बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ८:५० बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (मृगशिर में शुक्र युति। आर्द्रा में शुक्र युति।)

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ४ बुध। २० मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर दिन ११:१८ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुनर्वसु में दिन ११:१२ बजे से रात्रिअंत ४:५८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण,

अन्नप्राशन, कर्णवेध, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में दिन ११:१२ बजे से रात्रिअंत ४:५८ बजे तक हल प्रवहण जुताई, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में दिन ११:१२ बजे से रात्रिअंत ४:५८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में दिन ११:१२ बजे से रात्रिअंत ४:५८ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। (आर्द्रा में शुक्र युति। पुनर्वसु में गुरु युति।)

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ५ गुरु। २१ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रात २:५५। शुक्र रात २:५५ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ८:३५ तक। वृषारूढ दिन ८:३५ से रातअंत । पुष्य मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे एवं दिन १०:२० बजे से रात २:५५ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुष्य मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे तक अन्नप्राशन, । पुष्य मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे एवं दिन १०:२० बजे से रात २:५५ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । अश्लेषा में रात २:५५ बजे से रात्रिअंत तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पुष्य मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । पुष्य मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे एवं दिन १०:२० बजे से रात २:५५ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । पुष्य मेंक्रांतिसाम्य से पहले, एवं अश्लेषा मेंक्रांतिसाम्य पश्चात, दिन १०:२० बजे से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुष्य मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । पुष्य मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे एवं दिन १०:२० बजे से रात २:५५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे एवं दिन १०:२० बजे से रात २:५५ बजे तक वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। पुष्य मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ६:११ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष प्रात: ६:११ से दिन १०:२० वजे तक।)

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ६ शुक्र। २२ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से प्रात: ६:२९ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अश्लेषा में सूर्योदय से रात २:१३ बजे तक मंत्र दीक्षा, । मघा में रात २:१३ बजे से रात्रिअंत तक जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अश्लेषा में एवं मघा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । मघा में रात २:१३ बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. २:१३ तक, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मघा में केतु युति।)

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ८ शनि। २३ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ४:३१ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ४:३१ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मघा में भद्रा पश्चात् दिन ४:४६ बजे से रात २:१४ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पूर्वा.फा. में मंगल वेध,। मघा में केतु युति।)

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ९ रवि। २४ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रात २:५६। शनि रात २:५६ से रातअंत। शुक्र १५:३५ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ४:३६ तक। उ.फा. में वज्र पश्चात रात ५:०१ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में वज्र पश्चात रात ५:०१ बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.फा. में वज्र से पहले वज्र पश्चात रात २:५६ बजे से रात ३:४९ बजे एवं रात ५:०१ बजे से रात्रिअंत तक पुनर्विवाह, । उ.फा. में वज्र पश्चात रात ५:०१ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ. फा. में वज्र से पहले वज्र पश्चात रात २:५६ बजे से रात ३:४९ बजे एवं रात ५:०१ बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । उ.फा. में वज्र पश्चात रात ५:०१ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में वज्र पश्चात रात ५:०१ बजे से रात्रिअंत तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (पूर्वा.फा. में भौम वेध । उ.फा. में शनि वेध,।)

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल १० चंद्र। २५ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – उ.फा. में सूर्योदय से रात ४:१४ बजे तक अग्न्याधान, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में रात ४:१४ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात ५:१४ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.फा. में सूर्योदय से रात ४:१४ बजे तक अन्नप्राशन, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । हस्त में रात ४:१४ बजे से रात्रिअंत तक कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में सूर्योदय से रात ४:१४ बजे तक बीज बोवनी, धान्य विक्रय, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । हस्त में रात ४:१४ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.फा. में सूर्योदय से रात ४:१४ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में सूर्योदय से रात ४:१४ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। हस्त में रात ४:१४ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (उ.फा. में शनि वेध।)

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ११ मंगल। २६ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ६:२७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में व्यतिपात से पहले, सूर्योदय से रात ३:१५ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –हस्त में व्यतिपात से पहले, सूर्योदय से रात ३:१५ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं।

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल ११ बुध। २७ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से प्रात: ६:२७ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर प्रात: ६:२७ से रातअंत । चित्रा में व्यतिपात पश्चात रात ३:२९ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – चित्रा में व्यतिपात पश्चात रात ३:२९ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –चित्रा में व्यतिपात पश्चात रात ३:२९ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में व्यतिपात पश्चात रात ३:२९ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं।

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल १२ गुरु। २८ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ८:०२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ८:०२ तक। वृषारूढ दिन ८:०२ से रातअंत । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रि ३:५८ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । स्वाती में परिघ से पहले प्रात: ८:१३ बजे से रात्रि ३:५८ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ८:१३ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ७:६० बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ८:१३ बजे तक कर्णवेध, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रि ३:५८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । चित्रा में एवं स्वाती में परिघ से पहले प्रात: ७:६० बजे से रात्रि ३:५८ बजे तक अन्नप्राशन, । स्वाती में परिघ से पहले प्रात: ८:१३ बजे से रात्रि ३:५८ बजे तक प्रसूति स्नान, । {४} कृषि मुहूर्त्त –चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ८:१३ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रि ३:५८ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रि ३:५८ बजे तक पूंजी निवेश, । स्वाती में परिघ से पहले प्रात: ८:१३ बजे से रात्रि ३:५८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ८:१३ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रि ३:५८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। (स्वाती में राहु वेध, ।)

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल १३ शुक्र। २९ मई २०२६। स्वाती में परिघ दोष। परिघ दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ९:५५ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से दिन १०:४१। चंद्र दिन १०:४१ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ९:५५ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल १४ शनि। ३० मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में भद्रा पश्चात् रात १:०५ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अनुराधा में भद्रा पश्चात् रात १:०५ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में भद्रा पश्चात् रात १:०५ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं।

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल १५ रवि। ३१ मई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप दिन २:१६ से रातअंत । अनुराधा में सूर्योदय से दिन २:१४ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । अनुराधा में सूर्योदय से दिन ४:१२ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में सूर्योदय से दिन २:१४ बजे तक अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ । अनुराधा में सूर्योदय से

दिन ४:१२ बजे तक प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । अनुराधा में एवं ज्येष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त –अनुराधा में सूर्योदय से दिन २:१४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । ज्येष्ठा में दिन ४:१२ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से दिन ४:१२ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में सूर्योदय से दिन ४:१२ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं।

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण १ चंद्र। १ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रात ७:०८। मंगल रात ७:०८ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ४:३७ तक। ज्येष्ठा में दिन ४:३५ बजे से रात ७:०८ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –ज्येष्ठा में सूर्योदय से रात ७:०८ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । मूल में रात ७:०८ बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. ७:०८ तक, धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – ज्येष्ठा में दिन ४:३५ बजे से रात ७:०८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण २ मंगल। २ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में सूर्योदय से रात १०:०४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मूल में शुक्रवेध दिन ३:२० वजे से रात १०:०४ वजे तक।)

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ३ बुध। ३ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ९:१९ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –पू.षा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ८:१० बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.षा. में रात १२:५७ बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.षा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ८:१० बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन ३:०४ से रात ७:२७ वजे तक। पूर्वाषाढ. में बुधवेध सायं ६:१४ वजे से रात १२:५७ वजे तक।)

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ४ गुरु। ४ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ११:२८ तक। वृषारूढ रात ११:२८ से रातअंत । उ.षा. में रात ११:२८ बजे से रात ३:४० बजे तक अग्न्याधान, । उ.षा. में एवं श्रवण में रात ११:२८ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । श्रवण में रात ३:४० बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में एवं श्रवण में रात ११:२८ बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत, (अग्निबाण २५:५१ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में रात ११:२८ बजे से रात ३:४० बजे तक प्रसूति स्नान, अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, । उ.षा. में एवं श्रवण में रात ११:२८ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, । श्रवण में रात ३:४० बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में रात ११:२८ बजे से रात ३:४० बजे तक धान्य रोपण, । उ.षा. में सूर्योदय से रात ३:४० बजे तक धान्य विक्रय, । उ.षा. में एवं श्रवण में रात ११:२८ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.षा. में एवं श्रवण में रात ११:२८ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । श्रवण में रात ३:४० बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में एवं श्रवण में रात ११:२८ बजे से रात्रिअंत तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। उ.षा. में रात ११:२८ बजे से रात ३:४० बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। श्रवण में रात ३:४० बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (अभिजित् में सूर्य वेध,।)

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ५ शुक्र। ५ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १:१९ तक। श्रवण में सूर्योदय से रातअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से रात १:१९ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण २६:५५ तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से रात १:१९ बजे तक अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । श्रवण में सूर्योदय से रातअंत तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –श्रवण में सूर्योदय से रातअंत तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से रात १:१९ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । श्रवण में सूर्योदय से रातअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में सूर्योदय से रातअंत तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से रात १:१९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं।

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ६ शनि। ६ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में वैधृति से पहले सूर्योदय से दिन १०:०२ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में वैधृति से पहले प्रातः ६:०३ बजे से दिन १०:०२ बजे तक धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में वैधृति से पहले सूर्योदय से दिन १०:०२ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में वैधृति से पहले सूर्योदय से दिन १०:०२ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ६:०३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं।

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ७ रवि। ७ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ३:२६ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ३:२६ से रातअंत । शतभिषा में भद्रा पश्चात् वैधृति, विष्कुंभ पश्चात दिन ३:०५ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – शतभिषा में भद्रा पश्चात् वैधृति, विष्कुंभ पश्चात दिन ३:०५ बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जैन विद्यारंभ । शतभिषा में भद्रा पश्चात् वैधृति, विष्कुंभ पश्चात दिन ३:०५ बजे से रात ३:२६ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –शतभिषा में भद्रा पश्चात् वैधृति, विष्कुंभ पश्चात दिन ३:०५ बजे से रात्रिअंत तक धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । शतभिषा में भद्रा पश्चात् वैधृति, विष्कुंभ पश्चात दिन ३:०५ बजे से रात ३:२६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – शतभिषा में भद्रा पश्चात् वैधृति, विष्कुंभ पश्चात दिन ३:०५ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में भद्रा पश्चात् वैधृति, विष्कुंभ पश्चात दिन ३:०५ बजे से रात ३:२६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (शतभिषा में राहु युति।)

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ८ चंद्र। ८ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ३:२४ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से दिन ९:०९। राहु दिन ९:०९ से दिन १:२६। गुरु दिन १:२६ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ३:२४ तक। शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ९:०९ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ९:०९ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त –शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ९:०९ बजे तक धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । पू.भा. में प्रातः ९:०९ बजे से रात ३:२५ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ९:०९ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । शतभिषा में एवं पू.भा. में सूर्योदय से रात ३:२५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में सूर्योदय से प्रातः ९:०९ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (शतभिषा में राहु युति।)

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ९ मंगल। ९ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में प्रातः ९:३८ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक पुनर्विवाह, । उ.भा. में रात २:३५ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में प्रातः ९:३८ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण १० बुध। १० जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात १२:५४ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात १२:५४ से रातअंत । उ.भा. में एवं रेवती में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १:५० बजे तक अग्न्याधान, । रेवती में भद्रा से पहले प्रातः ९:१९ बजे से दिन १:५० बजे एवं रात १२:५७ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में सूर्योदय से प्रातः ९:१९ बजे तक मंत्र दीक्षा, । उ.भा. में एवं रेवती में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १:५० बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । उ.भा. में एवं रेवती में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १:५० बजे तक अन्नप्राशन, । रेवती में भद्रा से पहले प्रातः ९:१९ बजे से दिन १:५० बजे एवं रात १२:५७ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, कर्णवेध, । रेवती में भद्रा से पहले प्रातः ९:१९ बजे से दिन १:५० बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में सूर्योदय से प्रातः ९:१९ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय, । उ.भा. में एवं रेवती में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १:५० बजे तक हल प्रवहण जुताई, ईंधन स्थापन, । रेवती में भद्रा से पहले प्रातः ९:१९ बजे से दिन १:५० बजे एवं रात १२:५७ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.भा. में सूर्योदय से प्रातः ९:१९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । रेवती में भद्रा से पहले प्रातः ९:१९ बजे से दिन १:५० बजे एवं रात १२:५७ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में एवं रेवती में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १:५० बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। उ.भा. में सूर्योदय से प्रातः ९:१९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। रेवती में भद्रा से पहले प्रातः ९:१९ बजे से दिन १:५० बजे

एवं रात १२:५७ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (रेवती में शनि युति।)

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ११ गुरु। ११ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात १०:३० तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात १०:३० तक। वृषारूढ रात १०:३० से रातअंत । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – रेवती में सूर्योदय से प्रात: ८:१३ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, पुनर्विवाह, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात १०:३४ बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । अश्विनी में प्रात: ८:१३ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । अश्विनी में प्रात: ८:१३ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रेवती में सूर्योदय से प्रात: ८:१३ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक पूंजी निवेश, । अश्विनी में प्रात: ८:१३ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात १०:३४ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। रेवती में सूर्योदय से प्रात: ८:१३ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। अश्विनी में प्रात: ८:१३ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (रेवती में शनि युति।)

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण १२ शुक्र। १२ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ७:३० से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से प्रात: ६:२६। केतु प्रात: ६:२६ से रात ४:०३। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ७:३० तक। अश्विनी में सूर्योदय से प्रात: ६:२६ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अश्विनी में सूर्योदय से प्रात: ६:२६ बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, पुनर्विवाह, । अश्विनी में एवं भरणी में निर्बल चंद्रकाल से पहले सूर्योदय से रात ७:३० बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –अश्विनी में सूर्योदय से प्रात: ६:२६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । अश्विनी में एवं भरणी में निर्बल चंद्रकाल से पहले सूर्योदय से रात ७:३० बजे तक ईंधन स्थापन, । भरणी में निर्बल चंद्रकाल से पहले प्रात: ६:२६ बजे से रात ७:३० बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अश्विनी में सूर्योदय से प्रात: ६:२६ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में सूर्योदय से प्रात: ६:२६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (भरणी में केतु वेध, । भरणी में मंगल युति।)

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण १३ शनि। १३ जून २०२६। कृतिका में निर्बल चंद्र। भद्रा दोष निर्बल चंद्र दोष रोहिणी में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव।

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण १४ रवि। १४ जून २०२६। रोहिणी में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष मृगशिर में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रात १०:१५। सूर्य रात १०:१५ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १२:२० से रात. अंत ।

द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ३० चंद्र। १५ जून २०२६। मृगशिर में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष आर्द्रा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिन ८:२८ सेरात ४:५४तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ८:२८ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल २ मंगल। १६ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात १:०२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १:०२ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुनर्वसु में दिन ४:२२ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुनर्वसु में दिन ४:२२ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में दिन ४:२२ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (पुनर्वसु में बुध गुरु युति।)

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ३ बुध। १७ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में व्याघात से पहले सूर्योदय से रात ९:०२ बजे तक देव प्रतिष्ठा । पुष्य में व्याघात से पहले दिन १:४८ बजे से रात ९:०२ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में व्याघात से पहले दिन १:४८ बजे से रात ९:०२ बजे तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में व्याघात से पहले सूर्योदय से रात ९:०२ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, मुंडन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, उपनयन, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में व्याघात से पहले सूर्योदय से रात ९:०२ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । पुष्य में व्याघात से पहले दिन १:४८ बजे से रात ९:०२ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में व्याघात से पहले सूर्योदय से रात ९:०२ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । पुष्य में व्याघात से पहले दिन १:४८ बजे से रात ९:०२ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में व्याघात से पहले सूर्योदय से रात ९:०२ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। पुष्य में व्याघात से पहले दिन १:४८ बजे से रात ९:०२ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (पुनर्वसु में बुध गुरु युति। पुष्य में शुक्र युति।)

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ४ गुरु। १८ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ७:१३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ७:१३ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुष्य में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ८:१७ बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । अश्लेषा में रात ७:०५ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अश्लेषा में रात ७:०५ बजे से रात्रिअंत ५:३८ बजे तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पुष्य में शुक्र युति।)

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ५ शुक्र। १९ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से सायं ५:१३ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से सायं ५:१३ तक। वृषारूढ सायं ५:१३ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अश्लेषा में सूर्योदय से दिन १०:१७ बजे तक उपनयन, मंत्र दीक्षा, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । मघा में दिन १०:१७ बजे से रात्रिअंत ५:३९ बजे तक जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अश्लेषा में एवं मघा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:३९ बजे तक ईंधन स्थापन, । मघा में दिन १०:१७ बजे से रात्रिअंत ५:३९ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. १०:१७ तक, बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –मघा में दिन १०:१७ बजे से रात्रिअंत ५:३९ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। (मघा में केतु युति।)

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ६ शनि। २० जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ३:५८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से दिन ९:३४। शुक्र दिन ९:३४ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ३:५८ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मघा में सूर्योदय से प्रात: ९:३४ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मघा में केतु युति।)

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ७ रवि। २१ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – उ.फा. में व्यतिपात से पहले प्रात: ९:३८ बजे से दिन ११:२९ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में व्यतिपात से पहले प्रात: ९:३८ बजे से दिन ११:२९ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.फा. में सूर्योदय से प्रात: ९:३८ बजे तक जैन विद्यारंभ कन्या वरण, वर वरण, । उ.फा. में व्यतिपात से पहले प्रात: ९:३८ बजे से दिन ११:२९ बजे तक प्रसूति स्नान, अन्नप्राशन, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में व्यतिपात से पहले प्रात: ९:३८ बजे से दिन ११:२९ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में व्यतिपात से पहले प्रात: ९:३८ बजे से दिन ११:२९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (उ.फा. में शनि वेध,।)

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ८ चंद्र। २२ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से दिन १२:२६। शुक्र दिन १२:२६ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ३:४८ से रातअंत । हस्त में व्यतिपात पश्चात दिन १०:३७ बजे से दिन ३:४२ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – हस्त में व्यतिपात पश्चात दिन १०:३७ बजे से दिन ३:४२ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में व्यतिपात पश्चात दिन १०:३७ बजे से रात्रिअंत ५:३९ बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –हस्त में व्यतिपात पश्चात दिन १०:३७ बजे से दिन ३:४२ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – हस्त में व्यतिपात पश्चात दिन १०:३७ बजे से दिन ३:४२ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में व्यतिपात पश्चात दिन १०:३७ बजे से दिन ३:४२ बजे तक वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (उ.फा. में शनि वेध।)

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ९ मंगल। २३ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ४:४७ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में परिघ से पहले, सूर्योदय से दिन १०:१८ बजे एवं चित्रा मेंरात १०:३१ बजे से रात्रिअंत

५:३९ बजे तक पुनर्विवाह, । चित्रा में परिघ पश्चात रात १०:३१ बजे से रात्रिअंत ५:३९ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में परिघ पश्चात रात १०:३१ बजे से रात्रिअंत ५:३९ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में परिघ पश्चात रात १०:३१ बजे से रात्रिअंत ५:३९ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १० बुध। २४ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में सूर्योदय से दिन २:०४ बजे तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त – चित्रा में सूर्योदय से दिन २:०४ बजे तक कर्णवेध, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४० बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से सायं ६:१४ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४० बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से सायं ६:१४ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में सूर्योदय से दिन २:०४ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । स्वाती में दिन २:०४ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४० बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (स्वाती में राहु वेध, ।)

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ११ गुरु। २५ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर रात ८:१४ से रातअंत । स्वाती में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ७:०९ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । स्वाती में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ७:०९ बजे एवं विशाखा मेंरात ८:१० बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । विशाखा में रात ८:१० बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – स्वाती में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ७:०९ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, कन्या वरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –स्वाती में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ७:०९ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । स्वाती में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ७:०९ बजे एवं विशाखा मेंरात ८:१० बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक ईंधन स्थापन, । विशाखा में रात ८:१० बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – स्वाती में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ७:०९ बजे एवं विशाखा मेंरात ८:१० बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । विशाखा में रात ८:१० बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक बैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ७:०९ बजे एवं विशाखा मेंरात ८:१० बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। स्वाती में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ७:०९ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। (स्वाती में राहु वेध, ।)

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १२ शुक्र। २६ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात १०:२५ तक। वृषारूढ रात १०:२५ से रातअंत । विशाखा में सूर्योदय से रात ७:१९ बजे तक अग्न्याधान, । विशाखा में एवं अनुराधा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४० बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । अनुराधा में रात ७:१९ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अनुराधा में रात ७:१९ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में रात ७:१९ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह, । अनुराधा में रात १०:२३ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में सूर्योदय से रात ७:१९ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । विशाखा में एवं अनुराधा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४० बजे तक ईंधन स्थापन, । अनुराधा में रात ७:१९ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – विशाखा में सूर्योदय से रात ७:१९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, बैंक लॉकर खोलना, । विशाखा में एवं अनुराधा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४० बजे तक धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –विशाखा में एवं अनुराधा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४० बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। अनुराधा में रात ७:१९ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक राजसेवा, मुहूर्त हैं। अनुराधा में रात १०:२३ बजे से रात्रिअंत ५:४० बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १३ शनि। २७ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १२:४५ तक। अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:१३ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:१३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –ज्येष्ठा में रात १०:१३ बजे से रात १२:४४ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:१३ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:१३ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त हैं।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १४ रवि। २८ जून २०२६। मूल में भद्रा दोष मुहूर्त अभाव।

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १५ चंद्र। २९ जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ५:२७ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ५:२७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में भद्रा पश्चात् दिन ४:१६ बजे से रात ४:०४ बजे तक कन्या वरण, । पू.षा. में रात ४:०४ बजे से रात ५:२५ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –मूल में भद्रा पश्चात् दिन ४:१६ बजे से रात ४:०४ बजे तक धान्य रोपण, । पू.षा. में रात ४:०४ बजे से रात्रिअंत ५:४१ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.षा. में रात ४:०४ बजे से रात ५:२५ बजे तक बैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पूर्वाषाढ. में सूर्य वेध,। मूल में बुध वेध प्रातः ५:४१ से प्रातः ७:५४ वजे तक।)

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

आषाढ कृष्ण १ मंगल। ३० जून २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ७:३८ तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रात ६:५१। मंगल रात ६:५१ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ७:३८ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से रात ५:४१ बजे तक वर वरण, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पूर्वाषाढ. में सूर्य वेध ।)

आषाढ कृष्ण १ बुध। १ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से प्रातः ७:३८ तक। उ.षा. में वैधृति से पहले प्रातः ६:५१ बजे से दिन ४:०२ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । उ.षा. में वैधृति से पहले प्रातः ७:३७ बजे से दिन ४:०२ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से प्रातः ६:५१ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में वैधृति से पहले प्रातः ६:५१ बजे से दिन ४:०२ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । उ.षा. में वैधृति से पहले प्रातः ७:३७ बजे से दिन ४:०२ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.षा. में एवं उ.षा. में वैधृति से पहले सूर्योदय से दिन ४:०२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.षा. में वैधृति से पहले प्रातः ६:५१ बजे से दिन ४:०२ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से प्रातः ६:५१ बजे तक बैंक लॉकर खोलना, । उ.षा. में वैधृति से पहले प्रातः ६:५१ बजे से दिन ४:०२ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । उ.षा. में वैधृति से पहले प्रातः ७:३७ बजे से दिन ४:०२ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में वैधृति से पहले प्रातः ६:५१ बजे से दिन ४:०२ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। उ.षा. में वैधृति से पहले प्रातः ७:३७ बजे से दिन ४:०२ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पूर्वाषाढ. में सूर्य वेध ।)

आषाढ कृष्ण २ गुरु। २ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – श्रवण में भद्रा से पहले वैधृति, विष्कुंभ पश्चात सायं ५:४८ बजे से रात्रि १०:२८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में भद्रा से पहले वैधृति, विष्कुंभ पश्चात सायं ५:४८ बजे से रात्रि १०:२८ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में भद्रा से पहले वैधृति, विष्कुंभ पश्चात सायं ५:४८ बजे से रात्रि १०:२८ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –श्रवण में भद्रा से पहले वैधृति, विष्कुंभ पश्चात सायं ५:४८ बजे से रात्रि १०:२८ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में भद्रा से पहले वैधृति, विष्कुंभ पश्चात सायं ५:४८ बजे से रात्रि १०:२८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में भद्रा से पहले वैधृति, विष्कुंभ पश्चात सायं ५:४८ बजे से रात्रि १०:२८ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (श्रवण में मंगल वेध,।)

आषाढ कृष्ण ३ शुक्र। ३ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर दिन ११:१७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में दिन ११:१८ बजे से दिन ११:४३ बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में दिन ११:४३ बजे से रात्रिअंत ५:४२ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (श्रवण में भौम वेध । धनिष्ठा में शुक्रवेध दिन ११:४३ वजे से सायं ६:१४ वजे तक।)

आषाढ कृष्ण ४ शनि। ४ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से दिन १:४०।

गुरु दिन १:४० से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन १२:३७ तक। वृषारूढ दिन १२:३७ से रातअंत । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १२:३८ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १२:३८ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक धान्य विक्रय, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १२:३८ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा में एवं शतभिषा में दिन १२:३८ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में दिन १२:३८ बजे से दिन १:४० बजे तक यात्रा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। शतभिषा में दिन १:४० बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (शतभिषा में राहु युति।)

आषाढ कृष्ण ५ रवि। ५ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १:२८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। गुरु १२:०० से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन १:२८ तक। शतभिषा में सूर्योदय से दिन ३:१० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – शतभिषा में सूर्योदय से दिन १:३० बजे तक अन्नप्राशन, । शतभिषा में सूर्योदय से दिन ३:१० बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । शतभिषा में एवं पू.भा. में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –शतभिषा में सूर्योदय से दिन ३:१० बजे तक धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । पू.भा. में दिन ३:१० बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – शतभिषा में सूर्योदय से दिन ३:१० बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में सूर्योदय से दिन ३:१० बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (शतभिषा में राहु युति।)

आषाढ कृष्ण ६ चंद्र। ६ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – उ.भा. में भद्रा पश्चात् रात १:४५ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.भा. में सूर्योदय से दिन १:४९ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.भा. में भद्रा पश्चात् रात १:४५ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.भा. में सूर्योदय से दिन १:४९ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । पू.भा. में सूर्योदय से दिन १:४९ बजे एवं उ.भा. मेंरात १:४५ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.भा. में भद्रा पश्चात् रात १:४५ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.भा. में सूर्योदय से दिन १:४९ बजे एवं उ.भा. मेंरात १:४५ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । उ.भा. में भद्रा पश्चात् रात १:४५ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में भद्रा पश्चात् रात १:४५ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

आषाढ कृष्ण ७ मंगल। ७ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १:२४ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १:२४ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३० बजे तक वर वरण, । उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३० बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, । रेवती में अतिगंड पश्चात दिन ४:५४ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में सूर्योदय से दिन २:३० बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रेवती में अतिगंड पश्चात दिन ४:५४ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में अतिगंड पश्चात दिन ४:५४ बजे से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (रेवती में शनि युति।)

आषाढ कृष्ण ८ बुध। ८ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १२:२२ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से दिन ३:५९। राहु दिन ३:५९ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १२:२२ तक। रेवती में सूर्योदय से दिन १२:२५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । रेवती में सूर्योदय से दिन ३:५९ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – रेवती में सूर्योदय से दिन १२:२५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, कन्या वरण, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:४४ बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –रेवती में सूर्योदय से दिन १२:२५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रेवती में सूर्योदय से दिन १२:२५ बजे तक व्यापार प्रारंभ, वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में सूर्योदय से दिन १२:२५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (रेवती में शनि युति।)

आषाढ कृष्ण ९ गुरु। ९ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अश्विनी में दिन १०:४० बजे से दिन २:५४ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अश्विनी में दिन १०:४० बजे से दिन २:५४ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, । अश्विनी में सूर्योदय से दिन २:५४ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अश्विनी में दिन १०:४० बजे से दिन २:५४ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । अश्विनी में एवं भरणी में भद्रा से पहलेदिन १०:४० बजे से रात्रि ९:३२ बजे तक ईंधन स्थापन, । भरणी में भद्रा से पहले दिन २:५४ बजे से रात्रि ९:३२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में दिन १०:४० बजे से दिन २:५४ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में दिन १०:४० बजे से दिन २:५४ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (भरणी में केतु वेध, ।)

आषाढ कृष्ण १० शुक्र। १० जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ८:१७ तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ८:१७ सेरात ४:५५। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – भरणी में शूल से पहले, प्रातः ९:१५ बजे से दिन १:१३ बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –भरणी में एवं कृतिका में शूल पश्चात्, प्रातः ९:१५ बजे से रात्रिअंत ४:५५ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (भरणी में केतु वेध, ।)

आषाढ कृष्ण १२ शनि। ११ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से दिन ११:०१। केतु दिन ११:०१ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात २:०२ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – रोहिणी में निर्बल चंद्रकाल से पहले दिन ११:०१ बजे से रात २:०२ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में निर्बल चंद्रकाल से पहले दिन ११:०१ बजे से रात २:०२ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में निर्बल चंद्रकाल से पहले दिन ११:०१ बजे से रात २:०२ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:२४ से रात ११:१५ वजे तक। रोहिणी में मंगल युति।)

आषाढ कृष्ण १३ रवि। १२ जुलाई २०२६। रोहिणी में निर्बल चंद्र। मृगशिर में निर्बल चंद्र दोष भद्रा दोष निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव।

आषाढ कृष्ण १४ चंद्र। १३ जुलाई २०२६। आर्द्रा में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष पुनर्वसु में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से सायं ६:५० तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रात २:५२। सूर्य रात २:५२ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सायं ६:५० से रातअंत ।

आषाढ कृष्ण ३० मंगल। १४ जुलाई २०२६। पुनर्वसु में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष पुष्य में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ३:१७ तक।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

आषाढ शुक्ल १ बुध। १५ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ११:५८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ११:५८ से रातअंत । पुष्य में दिन ११:५८ बजे से रात ९:५४ बजे तक अग्न्याधान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में दिन ११:५८ बजे से रात ९:५४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –पुष्य में दिन ११:५८ बजे से रात ९:५४ बजे तक बीज बोवनी, धान्य छेदन, कटाई, पशु क्रय विक्रय, । अश्लेषा में रात ९:५४ बजे से रात्रिअंत ५:४७ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुष्य में दिन ११:५८ बजे से रात ९:५४ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में दिन ११:५८ बजे से रात ९:५४ बजे तक वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पुष्य में गुरु युति।)

आषाढ शुक्ल २ गुरु। १६ जुलाई २०२६। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ९:०१ तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रात ८:०२। बुध रात ८:०२ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ९:०१ तक।

आषाढ शुक्ल ३ शुक्र। १७ जुलाई २०२६। मघा में व्यतिपात दोष। व्यतिपात दोष मुहूर्त अभाव।

आषाढ शुक्ल ५ शनि। १८ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ३:५१ तक। वृषारूढ रात ३:५१ से रात.

अंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में परिघ से पहले सायं ६:१२ बजे से रात ८:५६ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में परिघ से पहले सायं ६:१२ बजे से रात ८:५६ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में परिघ से पहले सायं ६:१२ बजे से रात ८:५६ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (उ.फा. में शनि वेध,। पू.फा. में शुक्र युति।)

आषाढ शुक्ल ६ रवि। १९ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ३:३७ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से सायं ६:२३। शुक्र सायं ६:२३ से रातअंत। बुध ११:३२ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ३:३७ तक। उ.फा. में एवं हस्त में परिघ पश्चात, प्रात: ८:०७ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में सायं ६:२३ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में एवं हस्त में परिघ पश्चात, प्रात: ८:०७ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण २७:०९ तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में परिघ पश्चात, प्रात: ८:०७ बजे से सायं ६:२३ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.फा. में एवं हस्त में परिघ पश्चात, प्रात: ८:०७ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक प्रस. ूति स्नान, पुनर्विवाह, । उ.फा. में परिघ पश्चात, प्रात: ८:०७ बजे से सायं ६:२३ बजे एवं हस्त मेंरात ३:३४ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । हस्त में सायं ६:२३ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में परिघ पश्चात, प्रात: ८:०७ बजे से सायं ६:२३ बजे तक धान्य विक्रय, । उ.फा. में एवं हस्त में परिघ पश्चात, प्रात: ८:०७ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । हस्त में सायं ६:२३ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में परिघ पश्चात, प्रात: ८:०७ बजे से सायं ६:२३ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। हस्त में सायं ६:२३ बजे से रात ३:३४ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। हस्त में रात ३:३४ बजे से रात्रिअंत ५:४९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (उ. फा. में शनि वेध।)

आषाढ शुक्ल ७ चंद्र। २० जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – हस्त में सूर्योदय से रात ७:१९ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ४:०६ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ४:०६ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – हस्त में सूर्योदय से रात ७:१९ बजे तक कन्या वरण, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ४:०६ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –हस्त में सूर्योदय से रात ७:१९ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ४:०६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ४:०६ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । चित्रा में रात ७:१९ बजे से रात ४:०६ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ४:०६ बजे तक वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। हस्त में सूर्योदय से रात ७:१९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। चित्रा में रात ७:१९ बजे से रात ४:०६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं।

आषाढ शुक्ल ८ मंगल। २१ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ५:२० तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ५:२० से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ४:४२ बजे से रात्रिअंत ५:५० बजे तक पुनर्विवाह, । चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ४:४२ बजे से रात ५:१९ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । स्वाती में रात ८:५६ बजे से रात्रिअंत ५:५० बजे तक प्रसूति स्नान, । {४} कृषि मुहूर्त –चित्रा में भद्रा पश्चात् दिन ४:४२ बजे से रात ८:५६ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ४:४२ बजे से रात ५:१९ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ४:४२ बजे से रात ५:१९ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (स्वाती में राहु वेध, ।)

आषाढ शुक्ल ९ बुध। २२ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ७:०५ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ७:०५ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – स्वाती में सूर्योदय से रात ११:०८ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (स्वाती में राहु वेध, ।)

आषाढ शुक्ल ९ गुरु। २३ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रात १:४५। शनि रात १:४५ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से प्रात: ७:०६ तक। विशाखा में एवं अनुराधा में क्रांतिसाम्य से पहले, प्रात: ७:०४ बजे से रात्रि २:१२ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । अनुराधा में क्रांतिसाम्य से पहले, रात १:४५ बजे से रात्रि २:१२ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में क्रांतिसाम्य से पहले, रात १:४५ बजे से रात्रि २:१२ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में प्रात: ७:०४ बजे से रात १:४५ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । विशाखा में एवं अनुराधा में क्रांतिसाम्य से पहले, प्रात: ७:०४ बजे से रात्रि २:१२ बजे तक ईंधन स्थापन, । अनुराधा में क्रांतिसाम्य से पहले, रात १:४५ बजे से रात्रि २:१२ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – विशाखा में प्रात: ७:०४ बजे से रात १:४५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, बैंक लॉकर खोलना, । विशाखा में एवं अनुराधा में क्रांतिसाम्य से पहले, प्रात: ७:०४ बजे से रात्रि २:१२ बजे तक धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –विशाखा में एवं अनुराधा में क्रांतिसाम्य से पहले, प्रात: ७:०४ बजे से रात्रि २:१२ बजे तक संपत्ति क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। अनुराधा में क्रांतिसाम्य से पहले, रात १:४५ बजे से रात्रि २:१२ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात २:१२ से रातअंत वजे तक।)

आषाढ शुक्ल १० शुक्र। २४ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:२२ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से प्रात: ९:१२ बजे तक अन्नप्राशन, कन्या वरण, । अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:२२ बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:२२ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:२२ बजे तक धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:२२ बजे तक संपत्ति क्रय, यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (ज्येष्ठा में सूर्य वेध,।)

आषाढ शुक्ल ११ शनि। २५ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ११:३५ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –ज्येष्ठा में दिन ११:३३ बजे से रात ५:५१ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (ज्येष्ठा में सूर्य वेध । ज्येष्ठा में गुरु वेध दिन ११:२२ वजे से सायं ६:०६ वजे तक।)

आषाढ शुक्ल १२ रवि। २६ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १:५८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन १:५८ तक। वृषारूढ दिन १:५८ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से प्रात: ७:३६ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । मूल में वैधृति से पहले प्रात: ७:३६ बजे से रात्रि १०:०६ बजे तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –ज्येष्ठा में सूर्योदय से प्रात: ७:३६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । मूल में वैधृति से पहले प्रात: ७:३६ बजे से रात्रि १०:०६ बजे तक धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (ज्येष्ठा में सूर्य वेध ।)

आषाढ शुक्ल १३ चंद्र। २७ जुलाई २०२६। मूल में वैधृति, विष्कुंभ दोष। पू.षा. में वैधृति, विष्कुंभ दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ४:१५ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से दिन १०:२९। चंद्र दिन १०:२९ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ४:१५ तक।

आषाढ शुक्ल १४ मंगल। २८ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में दिन १:११ बजे से सायं ६:१९ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (उ.षा. में मंगल वेध,।)

आषाढ शुक्ल १५ बुध। २९ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ८:०४ तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ८:०४ से रातअंत । उ.षा. में भद्रा पश्चात् प्रात: ७:१७ बजे से दिन ३:३६ बजे तक अग्न्याधान, । श्रवण में दिन ३:३६ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में भद्रा पश्चात् प्रात: ७:१७ बजे से दिन ३:३६ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में एवं श्रवण में भद्रा पश्चात् प्रात: ७:१७ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । उ.षा. में एवं श्रवण में भद्रा पश्चात् प्रात: ७:१७ बजे से रात ८:०५ बजे तक अन्नप्राशन, । श्रवण में दिन ३:३६ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । श्रवण में दिन ३:३६ बजे से रात ८:०५ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में भद्रा पश्चात् प्रात: ७:१७ बजे से दिन ३:३६ बजे तक धान्य विक्रय, । उ.षा. में एवं श्रवण में भद्रा पश्चात् प्रात: ७:१७ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक

कर्म मुहूर्त – उ.षा. में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:१७ बजे से दिन ३:३६ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । उ.षा. में एवं श्रवण में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:१७ बजे से रात ८:०५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । श्रवण में दिन ३:३६ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में एवं श्रवण में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:१७ बजे से रात ८:०५ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। उ.षा. में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:१७ बजे से दिन ३:३६ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। श्रवण में दिन ३:३६ बजे से रात्रिअंत ५:५३ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। श्रवण में दिन ३:३६ बजे से रात ८:०५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (उ.षा. में भौम वेध ।)

श्रावण कृष्ण पक्ष

श्रावण कृष्ण १ गुरु। ३० जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ९:२८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से सायं ५:४१। मंगल सायं ५:४१ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ९:२८ तक। श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । धनिष्ठा में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – धनिष्ठा में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से सायं ५:४१ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, कन्या वरण, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, । धनिष्ठा में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । धनिष्ठा में सायं ५:४१ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । धनिष्ठा में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । धनिष्ठा में सायं ५:४१ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । धनिष्ठा में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से सायं ५:४१ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। धनिष्ठा में सायं ५:४१ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। धनिष्ठा में रात ९:२९ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

श्रावण कृष्ण २ शुक्र। ३१ जुलाई २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:२३ बजे तक कन्या वरण, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:२३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:२३ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:२३ बजे तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। शतभिषा में रात ७:२३ बजे से रात्रिअंत ५:५४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (शतभिषा में राहु युति।)

श्रावण कृष्ण ३ शनि। १ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ११:०३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ११:०३ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – शतभिषा में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त –शतभिषा में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – शतभिषा में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (शतभिषा में राहु युति।)

श्रावण कृष्ण ४ रवि। २ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ११:१२ तक। वृषारूढ रात ११:१२ से रात. अंत । उ.भा. में रात ११:१३ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में रात ११:१३ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में रात ९:३३ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक धान्य विक्रय, । उ.भा. में रात ११:१३ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में रात ११:१३ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

श्रावण कृष्ण ५ चंद्र। ३ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से दिन १०:२५। मंगल दिन १०:२५ से रात ९:५८ गुरु रात ९:५८ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १०:५२ तक। उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । रेवती में रात ९:५८ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में सूर्योदय से रात ९:५८ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात १०:५४ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में सूर्योदय से रात ९:५८ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय, । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक धान्य संग्रह, । रेवती में रात ९:५८ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.भा. में सूर्योदय से रात ९:५८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । रेवती में रात ९:५८ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, पूंजी निवेश, । रेवती में रात ९:५८ बजे से रात १०:५४ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में सूर्योदय से रात ९:५८ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। रेवती में रात ९:५८ बजे से रात्रिअंत ५:५५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (रेवती में शनि युति।)

श्रावण कृष्ण ६ मंगल। ४ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – रेवती में सूर्योदय से रात ९:५३ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रेवती में सूर्योदय से रात ९:५३ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में सूर्योदय से रात ९:५३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (रेवती में शुक्रवेध दिन १०:०१ वजे से दिन ३:५७ वजे तक रेवती में शनि युति।)

श्रावण कृष्ण ७ बुध। ५ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ८:४३ से रातअंत । अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रातः ९:३१ बजे से रात ९:१९ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रातः ९:३१ बजे से रात ९:१९ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त – अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रातः ९:३१ बजे से रात ८:४६ बजे तक अन्नप्राशन, । अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रातः ९:३१ बजे से रात ९:१९ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त –अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रातः ९:३१ बजे से रात ८:४६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । भरणी में रात ९:१९ बजे से रात्रिअंत ५:५६ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में भद्रा पश्चात् रात ८:४६ बजे से रात ९:१९ बजे तक पूंजी निवेश, । अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रातः ९:३१ बजे से रात ९:१९ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रातः ९:३१ बजे से रात ९:१९ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। अश्विनी में भद्रा पश्चात् प्रातः ९:३१ बजे से रात ८:४६ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (भरणी में केतु वेध, ।)

श्रावण कृष्ण ८ गुरु। ६ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से सायं ६:५४ तक। कृतिका में रात ८:१५ बजे से रात्रिअंत ५:५७ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –भरणी में सूर्योदय से सायं ६:५७ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन १०:१२ से दिन २:०८ वजे तक। भरणी में केतु वेध, ।)

श्रावण कृष्ण ९ शुक्र। ७ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – रोहिणी में भद्रा से पहले सायं ६:४५ बजे से रात्रि ३:२६ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – रोहिणी में भद्रा से पहले सायं ६:४५ बजे से रात्रि ३:२६ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण २३:०१ तक, त्यागकर), जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – कृतिका में दिन ४:४१ बजे से सायं ६:४५ बजे तक वर वरण, । रोहिणी में भद्रा से पहले सायं ६:४५ बजे से रात्रि ३:२६ बजे तक अन्नप्राशन, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –कृतिका में दिन ४:४१ बजे से सायं ६:४५ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । कृतिका में एवं रोहिणी में भद्रा से पहलेदिन ४:४१ बजे

से रात्रि ३:२६ बजे तक ईंधन स्थापन, । रोहिणी में भद्रा से पहले सायं ६:४५ बजे से रात्रि ३:२६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रोहिणी में भद्रा से पहले सायं ६:४५ बजे से रात्रि ३:२६ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में भद्रा से पहले सायं ६:४५ बजे से रात्रि ३:२६ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

श्रावण कृष्ण १० शनि। ८ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर दिन २:०१ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – रोहिणी में एवं मृगशिर में दिन २:०२ बजे से रात्रिअंत ५:५७ बजे तक पुनर्विवाह, । मृगशिर में दिन ४:५३ बजे से रात्रिअंत ५:५७ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त्त –रोहिणी में दिन २:०२ बजे से दिन ४:५३ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – मृगशिर में दिन ४:५३ बजे से रात्रिअंत ५:५७ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में दिन २:०२ बजे से दिन ४:५३ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। मृगशिर में दिन ४:५३ बजे से रात्रिअंत ५:५७ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (मृगशिर में मंगल युति।)

श्रावण कृष्ण ११ रवि। ९ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ११:०७ तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से दिन २:४५। केतु दिन २:४५ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ११:०७ तक। वृषारूढ दिन ११:०७ से रातअंत । मृगशिर में सूर्योदय से दिन २:४५ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – आर्द्रा में दिन २:४५ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से दिन ११:०७ बजे तक कन्या वरण, । मृगशिर में सूर्योदय से दिन २:४५ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मृगशिर में सूर्योदय से दिन २:४५ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से दिन २:४५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में सूर्योदय से दिन २:४५ बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं। मृगशिर में सूर्योदय से दिन ११:०७ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। आर्द्रा में दिन २:४५ बजे से रात्रिअंत ५:५८ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (मृगशिर में मंगल युति।)

श्रावण कृष्ण १२ चंद्र। १० अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ८:०३ सेरात ५:०३तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ८:०३ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – आर्द्रा में सूर्योदय से प्रातः ८:०२ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –आर्द्रा में सूर्योदय से प्रातः ८:०२ बजे तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –आर्द्रा में सूर्योदय से प्रातः ८:०२ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

श्रावण कृष्ण १४ मंगल। ११ अगस्त २०२६। पुनर्वसु में भद्रा दोष।निर्बल चंद्र। पुष्य में निर्बल चंद्र दोष व्यतिपात दोष निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। शिववास गौरी के समीप रात १:५५ से रातअंत ।

श्रावण कृष्ण ३० बुध। १२ अगस्त २०२६। पुष्य में व्यतिपात दोष।निर्बल चंद्र। अश्लेषा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ११:१० तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से दिन ८:०२। सूर्य दिन ८:०२ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ११:१० तक।

श्रावण शुक्ल पक्ष

श्रावण शुक्ल १ गुरु। १३ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रात ४:४१। शिववास गौरी के समीप रात ८:४७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मघा में परिघ पश्चात निर्बल चंद्रकाल पश्चात रात ११:०९ बजे से रात्रिअंत ५:१६ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मघा में परिघ पश्चात निर्बल चंद्रक. ाल पश्चात रात ११:०९ बजे से रात्रिअंत ५:१६ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में प्रा. ६:०८ तक, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (अश्लेषा में सूर्य युति। मघा में केतु युति।)

श्रावण शुक्ल २ शुक्र। १४ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से सायं ६:५४ तक। उ.फा. में रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ५:६० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – पू.फा. में सूर्योदय से रात ३:४७ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । उ.फा. में रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ५:६० बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , गृहछादन छत,, जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.फा. में सूर्योदय से सायं ६:४८ बजे तक कन्या वरण, । पू.फा. में सूर्योदय से रात ३:४७ बजे तक जैन विद्यारंभ वर वरण, । उ.फा. में रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ५:६० बजे तक जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ५:६० बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.फा. में रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ५:६० बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ५:६० बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (उ.फा. में शनि वेध,।)

श्रावण शुक्ल ३ शनि। १५ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – उ.फा. में सूर्योदय से सायं ५:३१ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में सूर्योदय से सायं ५:३१ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में सूर्योदय से रात ३:३१ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में सूर्योदय से सायं ५:३१ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (उ.फा. में शनि वेध। हस्त में शुक्र युति।)

श्रावण शुक्ल ४ रवि। १६ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सायं ५:०२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। बुध ८:०५ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सायं ५:०२ से रातअंत । हस्त में दिन ४:५५ बजे से रात ३:५६ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में एवं चित्रा में दिन ४:५५ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – हस्त में एवं चित्रा में दिन ४:५५ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण ७:०७ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में दिन ४:५५ बजे से रात ३:५६ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, अन्नप्राशन, । हस्त में एवं चित्रा में दिन ४:५५ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –हस्त में दिन ४:५५ बजे से रात ३:५६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । हस्त में एवं चित्रा में दिन ४:५५ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में रात ३:५६ बजे से रात्रिअंत ६:०१ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में दिन ४:५५ बजे से रात ३:५६ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शुक्र युति।)

श्रावण शुक्ल ५ चंद्र। १७ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से सायं ५:१० तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से दिन ८:०६। बुध दिन ८:०६ से रात ५:०४ बुध रात ५:०४ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से सायं ५:१० तक। वृषारूढ सायं ५:१० से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में सूर्योदय से रात ५:०४ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं।

श्रावण शुक्ल ६ मंगल। १८ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सायं ५:५९ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रात ६:५०। शुक्र रात ६:५० से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से सायं ५:५९ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – स्वाती में सूर्योदय से रात ६:०१ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – स्वाती में सूर्योदय से रात ६:०१ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में सूर्योदय से रात ६:०१ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन १०:०४ से दिन २:३० वजे तक।)

श्रावण शुक्ल ७ बुध। १९ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – स्वाती में सूर्योदय से प्रातः ६:५२ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात ७:२२ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – स्वाती में सूर्योदय से प्रातः ६:५२ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १०:०१ से, त्यागकर), जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – स्वाती में सूर्योदय से प्रातः ६:५२ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कन्या वरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –स्वाती में सूर्योदय से प्रातः ६:५२ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, । स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात ७:२२ बजे तक ईंधन स्थापन, । विशाखा में प्रातः ६:५२ बजे से रात ७:२२ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात ७:२२ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । विशाखा में प्रातः ६:५२ बजे से रात ७:२२ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात ७:२२ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। स्वाती में सूर्योदय से प्रातः ६:५२ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (विशाखा में राहु वेध, ।)

श्रावण शुक्ल ८ गुरु। २० अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ९:२२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ९:२२ से रातअंत । विशाखा में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:१६ बजे से प्रातः ९:१२ बजे तक अग्न्याधान, । विशाखा में एवं अनुराधा में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:१६ बजे से रात ९:१९ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । अनुराधा में प्रातः ९:१२ बजे से रात ९:१९ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अनुराधा में प्रातः ९:१२ बजे से रात ९:१९ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १०:५७ तक, त्यागकर), जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में वैधृति से पहले प्रातः ९:१२ बजे से रात्रिअंत ४:२८ बजे तक प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । अनुराधा में प्रातः ९:१२ बजे से रात ९:१९ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में एवं अनुराधा में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:१६ बजे से रात ९:१९ बजे तक ईंधन स्थापन, । अनुराधा में प्रातः ९:१२ बजे से रात ९:१९ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – विशाखा में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:१६ बजे से प्रातः ९:१२ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । विशाखा में एवं अनुराधा में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:१६ बजे से रात ९:१९ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –विशाखा में एवं अनुराधा में भद्रा पश्चात् प्रातः ८:१६ बजे से रात ९:१९ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। अनुराधा में प्रातः ९:१२ बजे से रात ९:१९ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त हैं। (विशाखा में राहु वेध, ।)

श्रावण शुक्ल ९ शुक्र। २१ अगस्त २०२६। अनुराधा में वैधृति, विष्कुंभ दोष। ज्येष्ठा में वैधृति, विष्कुंभ दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ११:३७ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ११:३७ तक।

श्रावण शुक्ल १० शनि। २२ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – मूल में दिन २:४९ बजे से रात्रिअंत ६:०३ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में दिन २:४९ बजे से रात्रिअंत ६:०३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –ज्येष्ठा में विष्कुंभ, प्रीति पश्चात, प्रातः ६:३१ बजे से दिन २:४९ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । मूल में दिन २:४९ बजे से रात्रिअंत ६:०३ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. २:४९ तक, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

श्रावण शुक्ल ११ रवि। २३ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर रात ४:१७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन ३:०७ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),कन्या वरण, पुनर्विवाह, । पू.षा. में रात ४:१६ बजे से रात्रिअंत ६:०३ बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –मूल में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन ३:०७ बजे तक धान्य रोपण, । पू.षा. में रात ४:१६ बजे से रात्रिअंत ६:०३ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पूर्वाषाढ. में मंगल वेध,।)

श्रावण शुक्ल १२ चंद्र। २४ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ६:२० तक। वृषारूढ रात ६:२० से रातअंत । उ.षा. में रात ८:२६ बजे से रात ६:०४ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से रात ८:२६ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । उ.षा. में रात ८:२६ बजे से रात ६:०४ बजे तक गृहछादन छत,, जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से रात ८:२६ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में रात ८:२६ बजे से रात ६:०४ बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.षा. में एवं उ.षा. में सूर्योदय से रात ६:०४ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । उ.षा. में रात ८:२६ बजे से रात ६:०४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से रात ८:२६ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । उ.षा. में रात ८:२६ बजे से रात ६:०४ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में रात ८:२६ बजे से रात ६:०४ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पूर्वाषाढ. में भौम वेध ।)

श्रावण शुक्ल १२ मंगल। २५ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से प्रातः ६:२१ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रात १०:५०। चंद्र रात १०:५० से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से प्रातः ६:२१ तक। वृषारूढ प्रातः ६:२१ से रात. अंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से रात १०:५० बजे तक प्रसूति स्नान, वर वरण, । उ. षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक सीमन्त पुंसवन, पुनर्विवाह, । श्रवण में रात १०:५० बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में सूर्योदय से रात १०:५० बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में रात १०:५० बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में रात १०:५० बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं।

श्रावण शुक्ल १३ बुध। २६ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर प्रातः ७:५९ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से प्रातः ७:५९ तक। श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ७:५८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ७:५८ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ७:५८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कन्या वरण, । श्रवण में प्रातः ७:५८ बजे से रात १२:४७ बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । {४} कृषि मुहूर्त –श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ७:५८ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । धनिष्ठा में रात १२:४७ बजे से रात्रिअंत ६:०४ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ७:५८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ७:५८ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (धनिष्ठा में राहु युति।)

श्रावण शुक्ल १४ गुरु। २७ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – धनिष्ठा में एवं शतभिषा में भद्रा पश्चात्, अतिगंड पश्चात्, रात ९:३० बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – धनिष्ठा में एवं शतभिषा में भद्रा पश्चात्, अतिगंड पश्चात्, रात ९:३० बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा में अतिगंड से पहले, रात ९:३० बजे से रात २:१५ बजे तक अन्नप्राशन, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में भद्रा पश्चात्, अतिगंड पश्चात्, रात ९:३० बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, । शतभिषा में रात २:१५ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में अतिगंड से पहले, रात ९:३० बजे से रात २:१५ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । धनिष्ठा में अतिगंड से पहले, एवं शतभिषा मेंभद्रा पश्चात्, अतिगंड पश्चात्, रात ९:३० बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक धान्य विक्रय, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में भद्रा पश्चात्, अतिगंड पश्चात्, रात ९:३० बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा में अतिगंड से पहले, रात ९:३० बजे से रात २:१५ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में भद्रा पश्चात्, अतिगंड पश्चात्, रात ९:३० बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में अतिगंड से पहले, रात ९:३० बजे से रात २:१५ बजे तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (धनिष्ठा में गुरु वेध रात ७:५५ वजे से रात २:१५ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)

श्रावण शुक्ल १५ शुक्र। २८ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ९:४८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रात ३:१३। मंगल रात ३:१३ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ९:४८ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –पू.भा. में रात ३:१३ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

भाद्रपद कृष्ण १ शनि। २९ अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ९:५६ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। मंगल २८:०४ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ९:५६ तक। उ.भा. में रात ३:४१ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –पू.भा. में प्रातः ९:५६ बजे से रात ३:४१ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । उ.भा. में रात ३:४१ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में रात ३:४१ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पू.भा. में शुक्रवेध दिन ३:२९ वजे से रात ९:३५ वजे तक।)

भाद्रपद कृष्ण २ रवि। ३० अगस्त २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – उ.भा. में शूल, गण्ड पश्चात, प्रातः ७:२३ बजे से रात ९:१४ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में शूल, गण्ड पश्चात, प्रातः

७:२३ बजे से प्रातः ९:३५ बजे तक कन्या वरण, । उ.भा. में शूल, गण्ड पश्चात, प्रातः ७:२३ बजे से रात ९:१४ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, अन्नप्राशन, वर वरण, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में शूल, गण्ड पश्चात, प्रातः ७:२३ बजे से रात ९:१४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में शूल, गण्ड पश्चात, प्रातः ७:२३ बजे से रात ९:१४ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (रेवती में शनि युति।)

भाद्रपद कृष्ण ३ चंद्र। ३१ अगस्त २०२६। रेवती में भद्रा दोष। मुहूर्त्त अभाव। शिववास कैलाश पर दिन ८:४९ से रातअंत ।

भाद्रपद कृष्ण ४ मंगल। १ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रात २:४१। गुरु रात २:४१ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से प्रातः ७:४१ तक। वृषारूढ प्रातः ७:४१ सेरात ५:५५। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अश्विनी में प्रातः ७:४० बजे से रात २:४१ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अश्विनी में प्रातः ७:४० बजे से रात २:४१ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में प्रातः ७:४० बजे से रात २:४१ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (अश्विनी में सूर्य वेध । भरणी में केतु वेध, । अश्विनी में बुधवेध दिन ३:०३ वजे से रात ८:५२ वजे तक।)

भाद्रपद कृष्ण ५ बुध। २ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से प्रातः ६:१३ तक। कृतिका में रात १:४३ बजे से रात्रिअंत ४:११ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –भरणी में एवं कृतिका में प्रातः ६:१२ बजे से रात्रिअंत ४:११ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (भरणी में केतु वेध, ।)

भाद्रपद कृष्ण ७ गुरु। ३ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात २:२८ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात २:२८ से रातअंत । कृतिका में एवं रोहिणी में भद्रा पश्चात् दिन ३:२८ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक अग्न्याधान, । रोहिणी में रात १२:३१ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – रोहिणी में रात १२:३१ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – कृतिका में भद्रा पश्चात् दिन ३:२८ बजे से रात १२:३१ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । रोहिणी में रात १२:३१ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, । रोहिणी में रात १२:३१ बजे से रात २:२८ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –कृतिका में भद्रा पश्चात् दिन ३:२८ बजे से रात १२:३१ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । रोहिणी में रात १२:३१ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रोहिणी में रात १२:३१ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । रोहिणी में रात १२:३१ बजे से रात २:२८ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में रात १२:३१ बजे से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

भाद्रपद कृष्ण ८ शुक्र। ४ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात १२:१७ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रात ११:०८। राहु रात ११:०८ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १२:१७ तक। रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक अग्न्याधान, । रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:१७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । मृगशिर में रात ११:०८ बजे से रात १२:१७ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – रोहिणी में सूर्योदय से रात ११:०८ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – रोहिणी में सूर्योदय से रात ११:०८ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:०७ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । मृगशिर में रात ११:०८ बजे से रात १२:१७ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रोहिणी में सूर्योदय से रात ११:०८ बजे तक धान्य विक्रय, । रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात १२:१७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । मृगशिर में रात ११:०८ बजे से रात १२:१७ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रोहिणी में सूर्योदय से रात ११:०८ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । मृगशिर में रात ११:०८ बजे से रात १२:१७ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में सूर्योदय से रात ११:०८ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। मृगशिर में रात ११:०८ बजे से रात १२:१७ बजे तक वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं।

भाद्रपद कृष्ण ९ शनि। ५ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से रात ९:३६ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –आर्द्रा में रात ९:५८ बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

भाद्रपद कृष्ण १० रवि। ६ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ७:३५ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – आर्द्रा में भद्रा से पहले व्यतिपात से पहले, सूर्योदय से प्रातः ८:४७ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण २५:१६ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –आर्द्रा में भद्रा से पहले व्यतिपात से पहले, सूर्योदय से प्रातः ८:४७ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (पुनर्वसु में मंगल युति।)

भाद्रपद कृष्ण ११ चंद्र। ७ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से सायं ५:११ तक। वृषारूढ सायं ५:११ से रातअंत । पुनर्वसु में व्यतिपात पश्चात, एवं पुष्य में प्रातः ६:४७ बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । पुष्य में सायं ६:२० बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक अग्न्याधान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में सायं ६:२० बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण २६:०१ तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुनर्वसु में व्यतिपात पश्चात, एवं पुष्य में प्रातः ६:४७ बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पुनर्वसु में व्यतिपात पश्चात, एवं पुष्य में प्रातः ६:४७ बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । पुष्य में सायं ६:२० बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुनर्वसु में व्यतिपात पश्चात, एवं पुष्य में प्रातः ६:४७ बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । पुष्य में सायं ६:२० बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में व्यतिपात पश्चात, एवं पुष्य में प्रातः ६:४७ बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं। पुनर्वसु में व्यतिपात पश्चात, प्रातः ६:४७ बजे से सायं ५:०९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। पुष्य में सायं ६:२० बजे से रात्रिअंत ६:०८ बजे तक राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (पुनर्वसु में मंगल युति।)

भाद्रपद कृष्ण १२ मंगल। ८ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन २:४९ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुष्य में परिघ पश्चात, दिन २:१४ बजे से दिन २:४७ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुष्य में परिघ पश्चात, दिन २:१४ बजे से दिन २:४७ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (अश्लेषा में गुरु युति।)

भाद्रपद कृष्ण १३ बुध। ९ सितम्वर २०२६। अश्लेषा में निर्बल चंद्र। भद्रा दोष निर्बल चंद्र दोष मघा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव।

भाद्रपद कृष्ण १४ गुरु। १० सितम्वर २०२६। मघा में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष पू.फा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से दिन २:०९। सूर्य दिन २:०९ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १०:३८ से रातअंत ।

भाद्रपद कृष्ण ३० शुक्र। ११ सितम्वर २०२६। पू.फा. में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष उ.फा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिन ८:५९ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ८:५९ तक।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

भाद्रपद शुक्ल १ शनि। १२ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप प्रातः ७:४७ से रातअंत । उ.फा. में एवं हस्त में निर्बल चंद्रकाल पश्चात, प्रातः ७:४७ बजे से रात्रिअंत ६:१० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में दिन १२:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१० बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में प्रातः ७:४७ बजे से दिन १२:५९ बजे तक धान्य विक्रय, । हस्त में दिन १२:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१० बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में प्रातः ७:४७ बजे से दिन १२:५९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। हस्त में दिन १२:५९ बजे से रात्रिअंत ६:१० बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ९:१५ से रात १:३३ वजे तक। उ.फा. में शनि वेध। उ.फा. में बुध युति।)

भाद्रपद शुक्ल २ रवि। १३ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से प्रातः ७:०९ तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से दिन १:११। बुध दिन १:११ से रात ९:५६। सूर्य रात ९:५६ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से प्रातः ७:०९

तक। हस्त में सूर्योदय से दिन १:११ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१० बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – हस्त में सूर्योदय से प्रातः ७:०७ बजे तक कन्या वरण, । हस्त में सूर्योदय से दिन १:११ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१० बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –हस्त में सूर्योदय से दिन १:११ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१० बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में दिन १:११ बजे से रात्रिअंत ६:१० बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में सूर्योदय से दिन १:११ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१० बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। चित्रा में दिन १:११ बजे से रात्रिअंत ६:१० बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं।

भाद्रपद शुक्ल ३ चंद्र। १४ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – चित्रा में सूर्योदय से प्रातः ७:०६ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहुर्त – चित्रा में सूर्योदय से प्रातः ७:०६ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – चित्रा में सूर्योदय से प्रातः ७:०६ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –चित्रा में सूर्योदय से प्रातः ७:०६ बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में सूर्योदय से प्रातः ७:०६ बजे तक व्यापार प्रारंभ, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में सूर्योदय से प्रातः ७:०६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (स्वाती में शुक्र युति।)

भाद्रपद शुक्ल ४ मंगल। १५ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से प्रातः ७:४७ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर प्रातः ७:४७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहुर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – स्वाती में प्रातः ७:४४ बजे से दिन १२:२५ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – स्वाती में प्रातः ७:४४ बजे से दिन १२:२५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में प्रातः ७:४४ बजे से दिन १२:२५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (विशाखा में राहु वेध, । स्वाती में शुक्र युति।)

भाद्रपद शुक्ल ५ बुध। १६ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ९:०३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ९:०३ तक। वृषारूढ दिन ९:०३ से रातअंत । विशाखा में दिन १:४० बजे से सायं ५:२८ बजे तक अग्न्याधान, । विशाखा में एवं अनुराधा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात्, दिन १:४० बजे से रात्रिअंत ६:११ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । अनुराधा में सायं ५:२८ बजे से रात्रिअंत ६:११ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में सायं ५:२८ बजे से रात्रिअंत ६:११ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में दिन १:४० बजे से सायं ५:२८ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । विशाखा में एवं अनुराधा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात्, दिन १:४० बजे से रात्रिअंत ६:११ बजे तक ईंधन स्थापन, । अनुराधा में सायं ५:२८ बजे से रात्रिअंत ६:११ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – विशाखा में दिन १:४० बजे से सायं ५:२८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –विशाखा में एवं अनुराधा में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात्, दिन १:४० बजे से रात्रिअंत ६:११ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (विशाखा में राहु वेध, ।)

भाद्रपद शुक्ल ६ गुरु। १७ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १०:५२ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रात ७:५८। शुक्र रात ७:५८ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन १०:५२ तक। {२} वास्तु मुहुर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में सूर्योदय से दिन १०:४९ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं। अनुराधा में दिन १०:४९ बजे से रात ७:५८ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं।

भाद्रपद शुक्ल ७ शुक्र। १८ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन १:०१ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में भद्रा पश्चात् रात २:११ बजे से रात्रिअंत ६:१२ बजे तक मंत्र दीक्षा, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन १:०१ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन १:०१ बजे एवं मूल मेंरात २:११ बजे से रात्रिअंत ६:१२ बजे तक ईंधन स्थापन, । मूल में भद्रा पश्चात् रात २:११ बजे से रात्रिअंत ६:१२ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. १०:४७ तक, हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन १:०१ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मूल में मंगल वेध,।)

भाद्रपद शुक्ल ८ शनि। १९ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ३:२६ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ३:२६ से रातअंत । {२} वास्तु मुहुर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में सूर्योदय से दिन ३:२५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । मूल में सूर्योदय से रात १:४२ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मूल में भौम वेध ।)

भाद्रपद शुक्ल ९ रवि। २० सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रात ४:३२। शनि रात ४:३२ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से सायं ५:४८ तक। उ.षा. में रात ४:३२ बजे से रात्रिअंत ६:१२ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में रात ४:३२ बजे से रात्रिअंत ६:१२ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण ९:४८ तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – पू.षा. में सायं ५:४८ बजे से रात ४:३२ बजे तक जैन विद्यारंभ वर वरण, । उ.षा. में रात ४:३२ बजे से रात्रिअंत ६:१२ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.षा. में एवं उ.षा. में सायं ५:४८ बजे से रात्रिअंत ६:१२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.षा. में रात ४:३२ बजे से रात्रिअंत ६:१२ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में रात ४:३२ बजे से रात्रिअंत ६:१२ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

भाद्रपद शुक्ल १० चंद्र। २१ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से रात ७:५६ बजे तक अग्न्याधान, । उ.षा. में सूर्योदय से रात ६:१३ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से रात ७:५६ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से रात ७:५६ बजे तक अन्नप्राशन, कन्या वरण, । उ.षा. में सूर्योदय से रात ६:१३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, वर वरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में सूर्योदय से रात ६:१३ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से रात ६:१३ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में सूर्योदय से रात ६:१३ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

भाद्रपद शुक्ल ११ मंगल। २२ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ९:३७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहुर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से प्रातः ७:०४ बजे तक प्रसूति स्नान, वर वरण, । उ.षा. में एवं श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रातः ८:५४ बजे तक सीमन्त पुंसवन, पुनर्विवाह, । श्रवण में भद्रा से पहले प्रातः ७:०४ बजे से प्रातः ८:५४ बजे एवं रात ९:३९ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में सूर्योदय से प्रातः ७:०४ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में भद्रा से पहले प्रातः ७:०४ बजे से प्रातः ८:५४ बजे एवं रात ९:३९ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में भद्रा से पहले प्रातः ७:०४ बजे से प्रातः ८:५४ बजे एवं रात ९:३९ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं।

भाद्रपद शुक्ल १२ बुध। २३ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात १०:४६ तक। वृषारूढ रात १०:४६ से रातअंत । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ९:०६ बजे तक कन्या वरण, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । धनिष्ठा में रात १०:४८ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ९:०६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । धनिष्ठा में प्रातः ९:०६ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । धनिष्ठा में प्रातः ९:०६ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ९:०६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। धनिष्ठा में प्रातः ९:०६ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। धनिष्ठा में रात १०:४८ बजे से रात्रिअंत ६:१३ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (धनिष्ठा में गुरु वेध दिन ३:२९ वजे से रात ९:५३ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)

भाद्रपद शुक्ल १३ गुरु। २४ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से दिन १०:३३।

चंद्र दिन १०:३३ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ११:१५ तक। धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात ११:१८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन १०:३३ बजे तक कन्या वरण, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात ११:१८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । शतभिषा में दिन १०:३३ बजे से रात ११:१८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन १०:३३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१४ बजे तक धान्य विक्रय, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात ११:१८ बजे तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन १०:३३ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात ११:१८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन १०:३३ बजे तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। शतभिषा में दिन १०:३३ बजे से रात ११:१८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (शतभिषा में शुक्रवेध रात ११:०१ वजे से रात. अंत ५:१५ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)

भाद्रपद शुक्ल १४ शुक्र। २५ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –शतभिषा में सूर्योदय से दिन ११:२१ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पू.भा. में बुधवेध रात ११:३० वजे से रातअंत ५:३५ वजे तक।)

भाद्रपद शुक्ल १५ शनि। २६ सितम्वर २०२६। मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात १०:१८ से रातअंत ।

आश्विन कृष्ण पक्ष

आश्विन कृष्ण १ रवि। २७ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ८:५८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से दिन ११:०९। मंगल दिन ११:०९ से दिन १:२६। चंद्र दिन १:२६ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ८:५८ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –रेवती में दिन ११:०९ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (रेवती में सूर्य वेध,। रेवती में शनि युति।)

आश्विन कृष्ण २ चंद्र। २८ सितम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में व्याघात पश्चात दिन १२:३२ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। अश्विनी में व्याघात पश्चात दिन १२:३२ बजे से रात्रिअंत ६:१५ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (रेवती में शनि युति।)

आश्विन कृष्ण ३ मंगल। २९ सितम्वर २०२६। भरणी में भद्रा दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सायं ५:११ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सायं ५:११ से रातअंत ।

आश्विन कृष्ण ४ बुध। ३० सितम्वर २०२६। मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन २:५६ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रात ६:०३। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन २:५६ तक। वृषारूढ दिन २:५६ से रातअंत ।

आश्विन कृष्ण ५ गुरु। १ अक्टूवर २०२६। मृगशिर में व्यतिपात दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिन १२:३६ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन १२:३६ तक।

आश्विन कृष्ण ६ शुक्र। २ अक्टूवर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में रात ९:०६ बजे से रात २:५६ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं।

आश्विन कृष्ण ७ शनि। ३ अक्टूवर २०२६। मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिन ८:०१ सेरात ६:०५तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रात १:३२। राहु रात १:३२ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ८:०१ सेरात ६:०५।

आश्विन कृष्ण ९ रवि। ४ अक्टूवर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुष्य में रात ३:५७ बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में रात ३:५७ बजे से रात्रिअंत ६:१७ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (पुष्य में मंगल युति।)

आश्विन कृष्ण १० चंद्र। ५ अक्टूवर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात २:१४ तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात २:१४ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन ३:०४ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (पुष्य में मंगल युति। अश्लेषा में गुरु युति।)

आश्विन कृष्ण ११ मंगल। ६ अक्टूवर २०२६। मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर रात १२:४३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रात १०:२६। केतु रात १०:२६ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात १२:४३ तक। वृषारूढ रात १२:४३ से रातअंत ।

आश्विन कृष्ण १२ बुध। ७ अक्टूवर २०२६। मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ११:२५ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ११:२५ तक।

आश्विन कृष्ण १३ गुरु। ८ अक्टूवर २०२६। पू.फा. में निर्बल चंद्र। उ.फा. में निर्बल चंद्र दोष भद्रा दोष निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव।

आश्विन कृष्ण १४ शुक्र। ९ अक्टूवर २०२६। उ.फा. में निर्बल चंद्र। हस्त में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ९:४१ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रात ९:२५। सूर्य रात ९:२५ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ९:४१ से रातअंत ।

आश्विन कृष्ण ३० शनि। १० अक्टूवर २०२६। हस्त में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष चित्रा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ९:२३ तक।

आश्विन शुक्ल पक्ष

आश्विन शुक्ल १ रवि। ११ अक्टूवर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ९:३३ से रातअंत । चित्रा में एवं स्वाती में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात्, निर्बल चंद्रकाल पश्चात, रात १०:२० बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । स्वाती में रात १०:३४ बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में रात १०:२० बजे से रात १०:३४ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – चित्रा में एवं स्वाती में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात्, निर्बल चंद्रकाल पश्चात, रात १०:२० बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, पुनर्विवाह, । स्वाती में रात १०:३४ बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक प्रसूति स्नान, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –चित्रा में एवं स्वाती में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात्, निर्बल चंद्रकाल पश्चात, रात १०:२० बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में एवं स्वाती में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात्, निर्बल चंद्रकाल पश्चात, रात १०:२० बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात्, निर्बल चंद्रकाल पश्चात, रात १०:२० बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (चित्रा में सूर्य युति। स्वाती में बुध शुक्र युति।)

आश्विन शुक्ल २ चंद्र। १२ अक्टूवर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १०:१५ तक। स्वाती में सूर्योदय से रात ११:५३ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:२० बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । विशाखा में रात ११:५३ बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – स्वाती में सूर्योदय से रात १०:१० बजे तक कन्या वरण, । स्वाती में सूर्योदय से रात ११:५३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –स्वाती में सूर्योदय से रात १०:१० बजे तक बीज बोवनी, । स्वाती में सूर्योदय से रात ११:५३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । विशाखा में रात ११:५३ बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:२० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । विशाखा में रात ११:५३ बजे से रात्रिअंत ६:२० बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में सूर्योदय से रात ११:५३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (विशाखा में राहु वेध, । स्वाती में बुध शुक्र युति। विशाखा में बुध युति।)

आश्विन शुक्ल ३ मंगल। १३ अक्टूवर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – विशाखा में सूर्योदय से रात ११:२५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (विशाखा में राहु वेध, । विशाखा में बुध युति।)

आश्विन शुक्ल ४ बुध। १४ अक्टूबर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर रात १:१५ से रातअंत । अनुराधा में भद्रा से पहले रात १:१२ बजे से रात ४:०४ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । ज्येष्ठा में रात ४:०४ बजे से रात्रिअंत ६:२१ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में भद्रा से पहले रात १:१२ बजे से रात ४:०४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त –अनुराधा में भद्रा से पहले रात १:१२ बजे से रात ४:०४ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । ज्येष्ठा में रात ४:०४ बजे से रात्रिअंत ६:२१ बजे तक ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अनुराधा में भद्रा से पहले रात १:१२ बजे से रात ४:०४ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । ज्येष्ठा में रात ४:०४ बजे से रात्रिअंत ६:२१ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में भद्रा से पहले रात १:१२ बजे से रात ४:०४ बजे तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (ज्येष्ठा में मंगल वेध,।)

आश्विन शुक्ल ५ गुरु। १५ अक्टूबर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ३:२७ तक। वृषारूढ रात ३:२७ से रातअंत । ज्येष्ठा में सूर्योदय से रात ६:२२ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से रात ६:२२ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त –ज्येष्ठा में सूर्योदय से रात ६:२२ बजे तक ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से रात ६:२२ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (ज्येष्ठा में भौम वेध ।)

आश्विन शुक्ल ६ शुक्र। १६ अक्टूबर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ५:५५ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में प्रात: ६:४९ बजे से रात्रिअंत ६:२२ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –ज्येष्ठा में सूर्योदय से प्रात: ६:४९ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । ज्येष्ठा में एवं मूल में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:२२ बजे तक ईंधन स्थापन, । मूल में प्रात: ६:४९ बजे से रात्रिअंत ६:२२ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में प्रा. ६:४९ तक, धान्य रोपण, । मूल में रात ५:५३ बजे से रात्रिअंत ६:२२ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से प्रात: ६:४९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –मूल में प्रात: ६:४९ बजे से रात ५:५३ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं। (ज्येष्ठा में भौम वेध ।)

आश्विन शुक्ल ७ शनि। १७ अक्टूबर २०२६। पू.षा. में भद्रा दोष मुहूर्त अभाव।

आश्विन शुक्ल ७ रवि। १८ अक्टूबर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – उ.षा. में भद्रा पश्चात् रात ९:३८ बजे से रात्रिअंत ६:२३ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में भद्रा पश्चात् रात ९:३८ बजे से रात्रिअंत ६:२३ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से प्रात: ८:२६ बजे तक जैन विद्यारंभ कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में भद्रा पश्चात् रात ९:३८ बजे से रात्रिअंत ६:२३ बजे तक प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.षा. में सूर्योदय से प्रात: ८:२६ बजे एवं उ.षा. मेंरात ९:३८ बजे से रात्रिअंत ६:२३ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.षा. में भद्रा पश्चात् रात ९:३८ बजे से रात्रिअंत ६:२३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में भद्रा पश्चात् रात ९:३८ बजे से रात्रिअंत ६:२३ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

आश्विन शुक्ल ८ चंद्र। १९ अक्टूबर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १०:४९ से रातअंत । उ.षा. में सूर्योदय से दिन १०:४९ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । उ.षा. में सूर्योदय से दिन ३:३५ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से दिन १०:४९ बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण २०:२१ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से दिन १०:४९ बजे तक मंत्र दीक्षा, कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:२३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में सूर्योदय से दिन १०:४९ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । उ.षा. में सूर्योदय से दिन ३:३५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से दिन १०:४९ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में सूर्योदय से दिन १०:४९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

आश्विन शुक्ल ९ मंगल। २० अक्टूबर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १२:४५ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में दिन १२:४६ बजे से सायं ५:५६ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:२४ बजे तक पुनर्विवाह, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में दिन १२:४६ बजे से रात्रिअंत ६:२४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में सायं ५:५६ बजे से रात्रिअंत ६:२४ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में दिन १२:४६ बजे से रात्रिअंत ६:२४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में दिन १२:४६ बजे से रात्रिअंत ६:२४ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। श्रवण में दिन १२:४६ बजे से सायं ५:५६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (धनिष्ठा में गुरु वेध सायं ५:५६ वजे से रात १२:२७ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)

आश्विन शुक्ल १० बुध। २१ अक्टूबर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:१० बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन २:०८ बजे तक अन्नप्राशन, कन्या वरण, । धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:१० बजे तक पुनर्विवाह, । धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:१० बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:१० बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:१० बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा में दिन २:०८ बजे से रात ७:१० बजे तक पूंजी निवेश, । धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:१० बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:१० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:१० बजे तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। शतभिषा में भद्रा से पहलेक्रांतिसाम्य पश्चात, रात ११:२५ बजे से रात्रि २:३४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:१० से रात ११:२५ वजे तक। धनिष्ठा में राहु युति।)

आश्विन शुक्ल ११ गुरु। २२ अक्टूबर २०२६। शतभिषा में भद्रा दोष। मुहूर्त अभाव। शिववास कैलाश पर दिन २:४१ से रातअंत ।

आश्विन शुक्ल १२ शुक्र। २३ अक्टूबर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रात ८:५९। चंद्र रात ८:५९ से रातअंत। शनि १२:५७ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन २:३१ तक। वृषारूढ दिन २:३१ से रातअंत । उ.भा. में रात ८:५९ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.भा. में सूर्योदय से दिन २:३५ बजे तक कन्या वरण, । पू.भा. में सूर्योदय से रात ८:५९ बजे तक जैन विद्यारंभ वर वरण, । उ.भा. में रात ८:५९ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.भा. में सूर्योदय से रात ८:५९ बजे तक ईंधन स्थापन, । पू.भा. में एवं उ.भा. में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.भा. में रात ८:५९ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.भा. में एवं उ.भा. में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । उ.भा. में रात ८:५९ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में रात ८:५९ बजे से रात्रिअंत ६:२५ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पू.भा. में सूर्य वेध । उ.भा. में शनि युति।)

आश्विन शुक्ल १३ शनि। २४ अक्टूबर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन १:३५ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में सूर्योदय से रात ८:३० बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में सूर्योदय से दिन १:३८ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (उ.भा. में शनि युति।)

आश्विन शुक्ल १४ रवि। २५ अक्टूबर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अश्विनी में भद्रा पश्चात् रात १०:५६ बजे से रात्रिअंत ६:२६ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अश्विनी में भद्रा पश्चात् रात १०:५६ बजे से रात्रिअंत ६:२६ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –अश्विनी में भद्रा पश्चात् रात १०:५६ बजे से रात्रिअंत ६:२६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में भद्रा पश्चात् रात १०:५६ बजे से रात्रिअंत ६:२६ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में भद्रा पश्चात् रात १०:५६ बजे से रात्रिअंत ६:२६ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं।

आश्विन शुक्ल १५ चंद्र। २६ अक्टूबर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ९:४६ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ९:४६ से रातअंत । अश्विनी में सूर्योदय से प्रात: ९:४६ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:४५ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अश्विनी में सूर्योदय से प्रात: ९:४६ बजे तक अन्नप्राशन, । अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:४५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त –अश्विनी में सूर्योदय से प्रात: ९:४६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:४५ बजे तक

पशु क्रय विक्रय, । भरणी में सायं ५:४५ बजे से रात्रिअंत ६:२७ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में सूर्योदय से प्रातः ९:४६ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:४५ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में सूर्योदय से सायं ५:४५ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। अश्विनी में सूर्योदय से प्रातः ९:४६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (भरणी में केतु वेध, ।)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

कार्तिक कृष्ण १ मंगल। २७ अक्टूवर २०२६। कृतिका में व्यतिपात दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से प्रातः ७:०९ तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से दिन ३:४५। मंगल दिन ३:४५ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से प्रातः ७:०९ तक।

कार्तिक कृष्ण ३ बुध। २८ अक्टूवर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात १:१३ से रातअंत । कृतिका में एवं रोहिणी में व्यतिपात पश्चात, भद्रा से पहले प्रातः ७:२५ बजे से दिन २:४३ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – रोहिणी में भद्रा से पहले दिन १:३३ बजे से दिन २:४३ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – कृतिका में व्यतिपात पश्चात, प्रातः ७:२५ बजे से दिन १:३३ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । रोहिणी में भद्रा से पहले दिन १:३३ बजे से दिन २:४३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –कृतिका में व्यतिपात पश्चात, प्रातः ७:२५ बजे से दिन १:३३ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । रोहिणी में भद्रा से पहले दिन १:३३ बजे से दिन २:४३ बजे एवं रात १:१२ बजे से रात्रिअंत ६:२८ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रोहिणी में भद्रा से पहले दिन १:३३ बजे से दिन २:४३ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, बैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में भद्रा से पहले दिन १:३३ बजे से दिन २:४३ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

कार्तिक कृष्ण ४ गुरु। २९ अक्टूवर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात १०:१६ तक। वृषारूढ रात १०:१६ से रातअंत । मृगशिर में रात १०:१३ बजे से रात्रिअंत ६:२८ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – मृगशिर में रात १०:१३ बजे से रात्रिअंत ६:२८ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मृगशिर में रात १०:१३ बजे से रात्रिअंत ६:२८ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मृगशिर में रात १०:१३ बजे से रात्रिअंत ६:२८ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – मृगशिर में रात १०:१३ बजे से रात्रिअंत ६:२८ बजे तक धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में रात १०:१३ बजे से रात्रिअंत ६:२८ बजे तक संपत्ति क्रय, यात्रा, वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं।

कार्तिक कृष्ण ५ शुक्र। ३० अक्टूवर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से दिन ९:०८। गुरु दिन ९:०८ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ७:२९ तक। मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ९:०८ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ। {२} वास्तु मुहूर्त – मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ९:०८ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)। आर्द्रा में प्रातः ९:०८ बजे से रात ७:२५ बजे तक गृहछादन छत। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ९:०८ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मंत्र दीक्षा, कन्या वरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ९:०८ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ९:०८ बजे तक धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश। {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में सूर्योदय से प्रातः ९:०८ बजे तक संपत्ति क्रय, यात्रा, वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। आर्द्रा में प्रातः ९:०८ बजे से रात्रिअंत ६:२९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

कार्तिक कृष्ण ६ शनि। ३१ अक्टूवर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुनर्वसु में भद्रा पश्चात्प्रातः ७:१३ बजे से दिन ४:५६ बजे एवं रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त्त –पुनर्वसु में भद्रा पश्चात्प्रातः ७:१३ बजे से दिन ४:५६ बजे एवं रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुनर्वसु में भद्रा पश्चात्प्रातः ७:१३ बजे से दिन ४:५६ बजे एवं रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –आर्द्रा में सूर्योदय से प्रातः ७:१३ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। पुनर्वसु में भद्रा पश्चात् रात ३:४७ बजे से रात्रिअंत ६:०५ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं।

कार्तिक कृष्ण ७ रवि। १ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन २:५४ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रात ४:३१। राहु रात ४:३१ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन २:५४ से रातअंत । पुष्य में सूर्योदय से रात ४:३१ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से रात ४:३१ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन २:४९ बजे तक अन्नप्राशन, । पुष्य में सूर्योदय से रात ४:३१ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त्त –पुष्य में सूर्योदय से दिन २:४९ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । पुष्य में सूर्योदय से रात ४:३१ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । अश्लेषा में रात ४:३१ बजे से रात्रिअंत ६:३० बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से रात ४:३१ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में सूर्योदय से रात ४:३१ बजे तक वाहन क्रय, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। पुष्य में सूर्योदय से दिन २:४९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (अश्लेषा में मंगल युति।)

कार्तिक कृष्ण ८ चंद्र। २ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १:१३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १:१३ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अश्लेषा में सूर्योदय से दिन १:०९ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अश्लेषा में सूर्योदय से दिन १:०९ बजे तक मंत्र दीक्षा, । मघा में रात ३:४८ बजे से रात्रिअंत ६:३१ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अश्लेषा में सूर्योदय से दिन १:०९ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. ३:४८ तक, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (क्रान्तिसाम्य दोष सायं ५:५७ से रात १०:१२ वजे तक। अश्लेषा में मंगल युति। मघा में गुरु केतु युति।)

कार्तिक कृष्ण ९ मंगल। ३ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मघा में सूर्योदय से रात ११:२७ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मघा में दिन ११:५४ बजे से रात ११:२७ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मघा में गुरु केतु युति।)

कार्तिक कृष्ण १० बुध। ४ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ११:०९ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रात ३:३६। केतु रात ३:३६ से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ११:०९ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – पू.फा. में दिन ११:०५ बजे से रात ३:३६ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । उ.फा. में रात ३:३६ बजे से रात्रिअंत ६:३२ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.फा. में दिन ११:०५ बजे से रात ३:३६ बजे तक वर वरण, । उ.फा. में रात ३:३६ बजे से रात्रिअंत ६:३२ बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.फा. में एवं उ.फा. में दिन ११:०५ बजे से रात्रिअंत ६:३२ बजे तक ईंधन स्थापन, । उ.फा. में रात ३:३६ बजे से रात्रिअंत ६:३२ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.फा. में रात ३:३६ बजे से रात्रिअंत ६:३२ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में रात ३:३६ बजे से रात्रिअंत ६:३२ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

कार्तिक कृष्ण ११ गुरु। ५ नवम्वर २०२६। उ.फा. में वैधृति, विष्कुंभ दोष। वैधृति, विष्कुंभ दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १०:४३ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। केतु २१:०६ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन १०:४३ तक। वृषारूढ दिन १०:४३ से रातअंत ।

कार्तिक कृष्ण १२ शुक्र। ६ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १०:३८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रात ९:०६। केतु रात ९:०६ से रात ४:४८ केतु रात ४:४८ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन १०:३८ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –हस्त में सूर्योदय से दिन १०:३५ बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध। चित्रा में शुक्र युति।)

कार्तिक कृष्ण १३ शनि। ७ नवम्वर २०२६। चित्रा में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष स्वाती में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव।

कार्तिक कृष्ण १४ रवि। ८ नवम्वर २०२६। स्वाती में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष विशाखा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रात ७:२३। सूर्य रात ७:२३ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ११:३२ से रातअंत ।

कार्तिक कृष्ण ३० चंद्र। ९ नवम्वर २०२६। स्वाती में निर्बल चंद्र। विशाखा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिन १२:३३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से प्रातः ७:२५। सूर्य प्रातः ७:२५ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १२:३३ तक।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

कार्तिक शुक्ल १ मंगल। १० नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप दिन २:०० से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में निर्बल चंद्रकाल पश्चात दिन २:०० बजे से रात्रिअंत ६:३५ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अनुराधा में निर्बल चंद्रकाल पश्चात दिन २:०० बजे से रात्रिअंत ६:३५ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अनुराधा में निर्बल चंद्रकाल पश्चात दिन २:०० बजे से रात्रिअंत ६:३५ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में निर्बल चंद्रकाल पश्चात दिन २:०० बजे से रात्रिअंत ६:३५ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (विशाखा में राहु वेध, । अनुराधा में मंगल वेध,। विशाखा में सूर्य युति।)

कार्तिक शुक्ल २ बुध। ११ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ३:५३ तक। अनुराधा में सूर्योदय से दिन ११:३८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । ज्येष्ठा में दिन ११:३८ बजे से रात्रिअंत ६:३६ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से दिन ११:३८ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में सूर्योदय से दिन ११:३८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कन्या वरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अनुराधा में सूर्योदय से दिन ११:३८ बजे तक बीज बोवनी, । ज्येष्ठा में दिन ११:३८ बजे से रात्रिअंत ६:३६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अनुराधा में सूर्योदय से दिन ११:३८ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । ज्येष्ठा में दिन ११:३८ बजे से रात्रिअंत ६:३६ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में सूर्योदय से दिन ११:३८ बजे तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। (अनुराधा में भौम वेध ।)

कार्तिक शुक्ल ३ गुरु। १२ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन २:१९ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – मूल में दिन २:१९ बजे से सायं ६:०६ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन २:१९ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । मूल में दिन २:१९ बजे से सायं ६:०६ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त्त –ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन २:१९ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । मूल में दिन २:१९ बजे से सायं ६:०६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से दिन २:१९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

कार्तिक शुक्ल ४ शुक्र। १३ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ८:४३ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.षा. में शूल से पहले रात ८:४० बजे से रात्रिअंत ५:२३ बजे तक मंत्र दीक्षा, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.षा. में शूल से पहले रात ८:४० बजे से रात्रिअंत ५:२३ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.षा. में शूल से पहले रात ८:४० बजे से रात्रिअंत ५:२३ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –पू.षा. में शूल से पहले रात ८:४० बजे से रात्रिअंत ५:२३ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं।

कार्तिक शुक्ल ५ शनि। १४ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ११:२४ तक। वृषारूढ रात ११:२४ से रातअंत । उ.षा. में रात ८:२५ बजे से रात्रिअंत ६:३८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में रात ८:२५ बजे से रात्रिअंत ६:३८ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.षा. में रात ८:२५ बजे से रात्रिअंत ६:३८ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.षा. में रात ८:२५ बजे से रात्रिअंत ६:३८ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में रात ८:२५ बजे से रात्रिअंत ६:३८ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

कार्तिक शुक्ल ६ रवि। १५ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात २:०१ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रात ११:२९। शुक्र रात ११:२९ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात २:०१ तक। उ.षा. में एवं श्रवण में गण्ड, वृद्धी पश्चात, क्रांतिसाम्य से पहले क्रांतिसाम्य पश्चात, प्रातः ८:४८ बजे से रात १:४० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । श्रवण मेंक्रांतिसाम्य से पहले क्रांतिसाम्य पश्चात, रात ११:२९ बजे से रात १:४० बजे एवं रात ६:११ बजे से रात्रिअंत ६:३९ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में एवं श्रवण में गण्ड, वृद्धी पश्चात, क्रांतिसाम्य से पहले क्रांतिसाम्य पश्चात, प्रातः ८:४८ बजे से रात १:४० बजे तक गृहछादन छत, (अग्निबाण २०:०० से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.षा. में गण्ड, वृद्धी पश्चात, प्रातः ८:४८ बजे से रात ११:२९ बजे तक प्रसूति स्नान, कन्या वरण, वर वरण, । उ.षा. में एवं श्रवण में गण्ड, वृद्धी पश्चात, क्रांतिसाम्य से पहले क्रांतिसाम्य पश्चात, प्रातः ८:४८ बजे से रात १:४० बजे तक सीमन्त पुंसवन, पुनर्विवाह, । श्रवण मेंक्रांतिसाम्य से पहले क्रांतिसाम्य पश्चात, रात ११:२९ बजे से रात १:४० बजे एवं रात ६:११ बजे से रात्रिअंत ६:३९ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.षा. में गण्ड, वृद्धी पश्चात, प्रातः ८:४८ बजे से रात ११:२९ बजे तक धान्य रोपण, धान्य विक्रय, । उ.षा. में एवं श्रवण में गण्ड, वृद्धी पश्चात, क्रांतिसाम्य से पहले क्रांतिसाम्य पश्चात, प्रातः ८:४८ बजे से रात १:४० बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – श्रवण मेंक्रांतिसाम्य से पहले क्रांतिसाम्य पश्चात, रात ११:२९ बजे से रात १:४० बजे एवं रात ६:११ बजे से रात्रिअंत ६:३९ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में एवं श्रवण में गण्ड, वृद्धी पश्चात, क्रांतिसाम्य से पहले क्रांतिसाम्य पश्चात, प्रातः ८:४८ बजे से रात १:४० बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में क्रांतिसाम्य से पहले रात ११:२९ बजे से रात १:४० बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में क्रांतिसाम्य पश्चात, रात ६:११ बजे से रात्रिअंत ६:३९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात १:४० से रात ६:११ वजे तक।)

कार्तिक शुक्ल ७ चंद्र। १६ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ४:१९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से रात २:१६ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (धनिष्ठा में सूर्य वेध,। श्रवण में गुरु वेध रात ७:३६ वजे से रात २:१६ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)

कार्तिक शुक्ल ८ मंगल। १७ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ६:०५ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ६:०५ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – धनिष्ठा में भद्रा पश्चात् सायं ५:१३ बजे से रात ४:३४ बजे तक पुनर्विवाह, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में भद्रा पश्चात् सायं ५:१३ बजे से रात ६:०४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। शतभिषा में रात ४:३४ बजे से रात ६:०४ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –धनिष्ठा में एवं शतभिषा में भद्रा पश्चात् सायं ५:१३ बजे से रात्रिअंत ६:४० बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – धनिष्ठा में एवं शतभिषा में भद्रा पश्चात् सायं ५:१३ बजे से रात ६:०४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में रात ४:३४ बजे से रात ६:०४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (धनिष्ठा में सूर्य वेध । धनिष्ठा में राहु युति।)

कार्तिक शुक्ल ९ बुध। १८ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ७:०६ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रात ६:१०। शनि रात ६:१० से रातअंत। शुक्र २७:०९ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ७:०६ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –शतभिषा में सूर्योदय से रात ६:१० बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (शतभिषा में बुधवेध सायं ५:२४ वजे से रात ११:४७ वजे तक।)

कार्तिक शुक्ल ९ गुरु। १९ नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रात ३:०९। शुक्र रात ३:०९ से रातअंतशिववास गौरी के समीप सूर्योदय से प्रातः ७:०६ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – पू.भा. में प्रातः ७:०५ बजे से रात ६:२१ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण १९:१४ तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.भा. में प्रातः ७:०५ बजे से रात ६:२१ बजे तक वर वरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.भा. में प्रातः ७:०५ बजे से रात ६:२१ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.भा. में प्रातः ७:०५ बजे से रात ६:२१ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –पू.भा. में प्रातः ७:०५ बजे से रात ६:२१ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। (पू.भा. में शुक्रवेध सायं ६:३४ वजे से रात १२:४५ वजे तक।)

कार्तिक शुक्ल १० शुक्र। २० नवम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – उ.भा. में भद्रा से पहले वज्र पश्चात प्रातः ७:५३ बजे से सायं ६:५२ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.भा. में भद्रा से पहले वज्र पश्चात प्रातः ७:५३ बजे से सायं ६:५२ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.भा. में भद्रा से पहले वज्र पश्चात प्रातः ७:५३ बजे से सायं ६:५२ बजे तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.भा. में भद्रा से पहले वज्र पश्चात प्रातः ७:५३ बजे से सायं ६:५२ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.भा. में भद्रा से पहले वज्र पश्चात प्रातः ७:५३ बजे से सायं ६:५२ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में भद्रा से पहले वज्र पश्चात प्रातः ७:५३

बजे से सायं ६:५२ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (उ.भा. में शनि युति।)

कार्तिक शुक्ल १२ शनि। २१ नवम्बर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ४:५६ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रात ५:५५। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ४:५६ तक। वृषारूढ रात ४:५६ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – रेवती में व्यतिपात से पहले प्रात: ६:५१ बजे से रात २:२९ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – रेवती में व्यतिपात से पहले प्रात: ६:५१ बजे से रात २:२९ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रेवती में व्यतिपात से पहले प्रात: ६:५१ बजे से रात २:२९ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रेवती में व्यतिपात से पहले प्रात: ६:५१ बजे से रात २:२९ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में व्यतिपात से पहले प्रात: ६:५१ बजे से रात २:२९ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (उ.भा. में शनि युति।)

कार्तिक शुक्ल १३ रवि। २२ नवम्बर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रात ४:१७। चंद्र रात ४:१७ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात २:३७ तक। अश्विनी में व्यतिपात पश्चात, रात ११:२८ बजे से रात २:३९ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अश्विनी में व्यतिपात पश्चात, रात ११:२८ बजे से रात २:३९ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ । अश्विनी में व्यतिपात पश्चात, रात ११:२८ बजे से रात ४:१७ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अश्विनी में व्यतिपात पश्चात, रात ११:२८ बजे से रात २:३९ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अश्विनी में व्यतिपात पश्चात, रात ११:२८ बजे से रात २:३९ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में व्यतिपात पश्चात, रात ११:२८ बजे से रात २:३९ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं। (भरणी में मंगल वेध,केतु वेध, ।)

कार्तिक शुक्ल १४ चंद्र। २३ नवम्बर २०२६। भरणी में भद्रा दोष परिघ दोष कृतिका में भद्रा दोष मुहूर्त्त अभाव।

कार्तिक शुक्ल १५ मंगल। २४ नवम्बर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ८:२९ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – कृतिका में भद्रा पश्चात् दिन १०:१३ बजे से रात ११:३१ बजे तक वर वरण, । रोहिणी में रात ११:३१ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रोहिणी में रात ११:३१ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

मार्गशीर्ष कृष्ण १ बुध। २५ नवम्बर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ४:६० तक। रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । रोहिणी में एवं मृगशिर में दिन ४:५९ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक अग्न्याधान, । मृगशिर में रात ८:४५ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । रोहिणी में एवं मृगशिर में दिन ४:५९ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – रोहिणी में सूर्योदय से दिन ४:५९ बजे तक कन्या वरण, । रोहिणी में दिन ४:५९ बजे से रात ८:४५ बजे तक मंत्र दीक्षा, । रोहिणी में सूर्योदय से रात ८:४५ बजे तक वर वरण, । रोहिणी में एवं मृगशिर में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, । रोहिणी में एवं मृगशिर में दिन ४:५९ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक अन्नप्राशन, । मृगशिर में रात ८:४५ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रोहिणी में सूर्योदय से रात ८:४५ बजे तक धान्य विक्रय, । मृगशिर में रात ८:४५ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रोहिणी में दिन ४:५९ बजे से रात ८:४५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । रोहिणी में सूर्योदय से रात ८:४५ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), वैंक लॉकर खोलना, । मृगशिर में रात ८:४५ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में सूर्योदय से रात ८:४५ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। रोहिणी में दिन ४:५९ बजे से रात ८:४५ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। मृगशिर में रात ८:४५ बजे से रात्रिअंत ६:४५ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं।

मार्गशीर्ष कृष्ण २ गुरु। २६ नवम्बर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से सायं ५:५८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – मृगशिर में सूर्योदय से सायं ५:५८ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। आर्द्रा में भद्रा से पहले सायं ५:५८ बजे से रात्रि ११:३९ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से दिन १:२४ बजे तक कन्या वरण, । मृगशिर में सूर्योदय से सायं ५:५८ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मृगशिर में सूर्योदय से सायं ५:५८ बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से सायं ५:५८ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में सूर्योदय से सायं ५:५८ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। आर्द्रा में भद्रा से पहले सायं ५:५८ बजे से रात्रि ११:३९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

मार्गशीर्ष कृष्ण ३ शुक्र। २७ नवम्बर २०२६। आर्द्रा में भद्रा दोष। मुहूर्त्त अभाव। शिववास कैलाश पर दिन ९:५९ से रातअंत ।

मार्गशीर्ष कृष्ण ५ शनि। २८ नवम्बर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ४:०२ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से दिन १२:५९। गुरु दिन १२:५९ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ४:०२ तक। पुनर्वसु में एवं पुष्य मेंक्रांतिसाम्य पश्चात, प्रात: ९:२८ बजे से रात्रिअंत ६:४७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुनर्वसु मेंक्रांतिसाम्य पश्चात, प्रात: ९:२८ बजे से दिन १२:५९ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १६:५६ तक, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य मेंक्रांतिसाम्य पश्चात, प्रात: ९:२८ बजे से रात्रिअंत ६:४७ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य मेंक्रांतिसाम्य पश्चात, प्रात: ९:२८ बजे से रात्रिअंत ६:४७ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य मेंक्रांतिसाम्य पश्चात, प्रात: ९:२८ बजे से रात्रिअंत ६:४७ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य मेंक्रांतिसाम्य पश्चात, प्रात: ९:२८ बजे से रात ३:५९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। पुष्य में दिन १२:५९ बजे से रात्रिअंत ६:४७ बजे तक राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष प्रात: ५:१७ से दिन ९:२८ वजे तक।)

मार्गशीर्ष कृष्ण ६ रवि। २९ नवम्बर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:०४ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:०४ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:०४ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। {४} कृषि मुहूर्त्त –पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:०४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:०४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:०४ बजे तक वाहन क्रय, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (अश्लेषा में सूर्य वेध,।)

मार्गशीर्ष कृष्ण ७ चंद्र। ३० नवम्बर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप रात १२:१४ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – मघा में भद्रा पश्चात् वैधृति से पहले दिन १२:५२ बजे से दिन २:३० बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –मघा में भद्रा पश्चात् वैधृति से पहले दिन १२:५२ बजे से दिन २:३० बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (अश्लेषा में सूर्य वेध । मघा में मंगल गुरु केतु युति।)

मार्गशीर्ष कृष्ण ८ मंगल। १ दिसम्वर २०२६। मघा में वैधृति, विष्कुंभ दोष। मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से दिन ९:००। राहु दिन ९:०० से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ११:१६ तक।

मार्गशीर्ष कृष्ण ९ बुध। २ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – उ.फा. में रात १०:४९ बजे से रात्रिअंत ६:५० बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में रात १०:४९ बजे से रात्रिअंत ६:५० बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.फा. में प्रात: ८:५५ बजे से रात्रिअंत ६:५० बजे तक पुनर्विवाह, । उ.फा. में रात १०:४९ बजे से रात्रिअंत ६:५० बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में प्रात: ८:५५ बजे से रात्रिअंत ६:५० बजे तक धान्य विक्रय, । उ.फा. में रात १०:४९ बजे से रात्रिअंत ६:५० बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.फा. में रात १०:४९ बजे से रात्रिअंत ६:५० बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में रात १०:४९ बजे से रात्रिअंत ६:५० बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरु। ३ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से प्रातः ७:२९। राहु प्रातः ७:२९ से दिन ९:२५ राहु दिन ९:२५ से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ११:०७ से रातअंत । उ.फा. में सूर्योदय से प्रातः ९:२५ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, । उ.फा. में एवं हस्त में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में भद्रा से पहले प्रातः ९:२५ बजे से दिन १०:५१ बजे एवं रात ११:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में एवं हस्त में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। उ.फा. में एवं हस्त में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.फा. में सूर्योदय से प्रातः ९:२५ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । उ.फा. में एवं हस्त में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक प्रसूति स्नान, जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । उ.फा. में एवं हस्त में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक अन्नप्राशन, । उ.फा. में सूर्योदय से प्रातः ९:२५ बजे एवं हस्त मेंरात ११:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । हस्त में भद्रा से पहले प्रातः ९:२५ बजे से दिन १०:५१ बजे एवं रात ११:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में सूर्योदय से प्रातः ९:२५ बजे तक धान्य विक्रय, । उ.फा. में एवं हस्त में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । हस्त में भद्रा से पहले प्रातः ९:२५ बजे से दिन १०:५१ बजे एवं रात ११:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । हस्त में भद्रा से पहले प्रातः ९:२५ बजे से दिन १०:५१ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.फा. में सूर्योदय से प्रातः ९:२५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । उ.फा. में एवं हस्त में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में एवं हस्त में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन १०:५१ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। उ.फा. में सूर्योदय से प्रातः ९:२५ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। हस्त में भद्रा से पहले प्रातः ९:२५ बजे से दिन १०:५१ बजे एवं रात ११:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध,।)

मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शुक्र। ४ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ११:४९ तक। वृषारूढ रात ११:४९ से रातअंत । हस्त में सूर्योदय से दिन १०:२६ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , गृहछादन छत,, जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में सूर्योदय से दिन १०:२६ बजे तक कन्या वरण, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –हस्त में सूर्योदय से दिन १०:२६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ११:४६ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । चित्रा में दिन १०:२६ बजे से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। हस्त में सूर्योदय से दिन १०:२६ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में दिन १०:२६ बजे से रात्रिअंत ६:५१ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध। चित्रा में शुक्र युति।)

मार्गशीर्ष कृष्ण १२ शनि। ५ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से दिन ११:५३। केतु दिन ११:५३ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १२:५६ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात १२:५३ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात १२:५३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात १२:५३ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात १२:५३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में सूर्योदय से दिन ११:५३ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (चित्रा में शुक्र युति। स्वाती में शुक्र युति।)

मार्गशीर्ष कृष्ण १३ रवि। ६ दिसम्वर २०२६। स्वाती में निर्बल चंद्र। विशाखा में निर्बल चंद्र दोष भद्रा दोष निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव।

मार्गशीर्ष कृष्ण १४ चंद्र। ७ दिसम्वर २०२६। विशाखा में निर्बल चंद्र। अनुराधा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ४:१३ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ४:१३ से रातअंत ।

मार्गशीर्ष कृष्ण ३० मंगल। ८ दिसम्वर २०२६। अनुराधा में निर्बल चंद्र। ज्येष्ठा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ६:२० तक।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

मार्गशीर्ष शुक्ल १ बुध। ९ दिसम्वर २०२६। ज्येष्ठा में निर्बल चंद्र। मूल में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर ८:४३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप ८:४३ से रातअंत ।

मार्गशीर्ष शुक्ल १ गुरु। १० दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ८:४४ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – मूल में प्रातः ८:४४ बजे से रात ११:५७ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। मूल में एवं पू.षा. में निर्बल चंद्रकाल पश्चात, क्रांतिसाम्य से पहले, प्रातः ८:४४ बजे से रात्रिअंत ४:३५ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – मूल में प्रातः ८:४४ बजे से रात ११:५७ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मूल में प्रातः ८:४४ बजे से रात ११:५७ बजे तक धान्य रोपण, । पू.षा. में क्रांतिसाम्य से पहले, रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत ४:३५ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.षा. में क्रांतिसाम्य से पहले, रात ११:५७ बजे से रात्रिअंत ४:३५ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ४:३५ से रातअंत वजे तक।)

मार्गशीर्ष शुक्ल २ शुक्र। ११ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ११:२१ तक। उ.षा. में रात ३:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – पू.षा. में सूर्योदय से रात ३:०३ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । उ.षा. में रात ३:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , गृहछादन छत,, जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध नहीं)।। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.षा. में सूर्योदय से दिन ११:१९ बजे तक कन्या वरण, । पू.षा. में सूर्योदय से रात ३:०३ बजे तक जैन विद्यारंभ वर वरण, । उ.षा. में रात ३:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.षा. में एवं उ.षा. में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.षा. में रात ३:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.षा. में सूर्योदय से रात ३:०३ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । उ.षा. में रात ३:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में रात ३:०३ बजे से रात्रिअंत ६:५६ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

मार्गशीर्ष शुक्ल ३ शनि। १२ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – उ.षा. में सूर्योदय से दिन २:०३ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से दिन २:०३ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.षा. में सूर्योदय से रात ३:२५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में सूर्योदय से दिन २:०३ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

मार्गशीर्ष शुक्ल ४ रवि। १३ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ४:४६ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ४:४६ से रातअंत । श्रवण में दिन ४:४६ बजे से रात ६:५७ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में दिन ४:४६ बजे से रात ६:५७ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – श्रवण में दिन ४:४६ बजे से रात ६:५७ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –श्रवण में दिन ४:४६ बजे से रात ६:५७ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – श्रवण में दिन ४:४६ बजे से रात ६:५७ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में दिन ४:४६ बजे से रात ६:५७ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

मार्गशीर्ष शुक्ल ५ चंद्र। १४ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ७:१५ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ७:१५ तक। वृषारूढ रात ७:१५ से रातअंत । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक उग्र देव प्रतिष्ठा, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ९:१३ बजे तक गृहछादन छत,, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। धनिष्ठा में प्रातः ९:१३ बजे से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – श्रवण में सूर्योदय से प्रातः ९:१३ बजे तक मंत्र दीक्षा, कन्या वरण, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:१६ बजे तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा

में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:१६ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । धनिष्ठा में प्रात: ९:१३ बजे से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक धान्य रोपण, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:१६ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । धनिष्ठा में प्रात: ९:१३ बजे से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:१६ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से प्रात: ९:१३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (श्रवण में गुरु वेध प्रात: ६:५८ से प्रात: ९:१३ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ६ मंगल। १५ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ९:१९ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से दिन ११:५४। शुक्र दिन ११:५४ से रातअंत। बुध १०:३० से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ९:१९ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन ११:५४ बजे तक पुनर्विवाह, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),। शतभिषा में दिन ११:५४ बजे से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में दिन ११:५४ बजे से रात्रिअंत ६:५८ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (शतभिषा में शुक्रवेध सायं ६:२८ वजे से रात १:०३ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ७ बुध। १६ दिसम्वर २०२६। पू.भा. में भद्रा दोष मुहूर्त अभाव।

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ गुरु। १७ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ११:२५ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ११:२५ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.भा. में भद्रा पश्चात् व्यतिपात से पहले, दिन ११:१८ बजे से दिन १:२२ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –पू.भा. में भद्रा पश्चात् व्यतिपात से पहले, दिन ११:१८ बजे से दिन १:२२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पू.भा. में भद्रा पश्चात् व्यतिपात से पहले, दिन ११:१८ बजे से दिन १:२२ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (उ.भा. में शनि युति।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ९ शुक्र। १८ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ११:१२ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ११:१२ तक। रेवती में रात ११:१७ बजे से रात्रिअंत ६:६० बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – रेवती में रात ११:१७ बजे से रात्रिअंत ६:६० बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में एवं रेवती में व्यतिपात पश्चात, दिन १२:१९ बजे से रात्रिअंत ६:६० बजे तक पुनर्विवाह, । रेवती में रात ११:१७ बजे से रात्रिअंत ६:६० बजे तक अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में व्यतिपात पश्चात, दिन १२:१९ बजे से दिन ४:०८ बजे तक धान्य विक्रय, । रेवती में रात ११:१७ बजे से रात्रिअंत ६:६० बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – रेवती में रात ११:१७ बजे से रात्रिअंत ६:६० बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में रात ११:१७ बजे से रात्रिअंत ६:६० बजे तक संपत्ति क्रय, यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (उ.भा. में शनि युति।)

मार्गशीर्ष शुक्ल १० शनि। १९ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अश्विनी में परिघ पश्चात रात ९:०३ बजे से रात्रिअंत ७:०० बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अश्विनी में परिघ पश्चात रात ९:०३ बजे से रात्रिअंत ७:०० बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में परिघ पश्चात रात ९:०३ बजे से रात्रिअंत ७:०० बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में परिघ पश्चात रात ९:०३ बजे से रात्रिअंत ७:०० बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (अश्विनी में मंगलवेध,।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ११ रवि। २० दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर रात ८:०९ से रातअंत । अश्विनी में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ९:२३ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अश्विनी में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ९:२३ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),पुनर्विवाह, । अश्विनी में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ९:२३ बजे एवं भरणी मेंरात ८:१४ बजे से रात्रिअंत ७:०१ बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –अश्विनी में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ९:२३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । भरणी में रात ८:१४ बजे से रात्रिअंत ७:०१ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अश्विनी में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ९:२३ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में भद्रा से पहले सूर्योदय से प्रात: ९:२३ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। (अश्विनी में भौम वेध ।)

मार्गशीर्ष शुक्ल १२ चंद्र। २१ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से सायं ५:३२ तक। वृषारूढ सायं ५:३२ से रातअंत । कृतिका में दिन १:०६ बजे से रात्रिअंत ७:०१ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –भरणी में एवं कृतिका में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०१ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

मार्गशीर्ष शुक्ल १३ मंगल। २२ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन २:२३ तक। {२} वास्तु मुहुर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहुर्त – रोहिणी में दिन १०:४५ बजे से रात्रिअंत ७:०२ बजे तक पुनर्विवाह, । रोहिणी में दिन १०:४५ बजे से दिन २:२४ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, । {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में दिन १०:४५ बजे से रात्रिअंत ७:०२ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

मार्गशीर्ष शुक्ल १४ बुध। २३ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – मृगशिर में भद्रा पश्चात् रात ८:५६ बजे से रात्रिअंत ४:५६ बजे तक अग्न्याधान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – मृगशिर में भद्रा पश्चात् रात ८:५६ बजे से रात्रिअंत ४:५६ बजे तक जीर्ण गृहप्रवेश(कलशचक्र शुद्ध)।। {३} संस्कार मुहूर्त – मृगशिर में प्रात: ७:६० बजे से दिन १०:५० बजे तक प्रसुति जल/कुआ पूजन, । मृगशिर में भद्रा पश्चात् रात ८:५६ बजे से रात्रिअंत ४:५६ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में सूर्योदय से प्रात: ७:६० बजे तक धान्य विक्रय, । मृगशिर में भद्रा पश्चात् रात ८:५६ बजे से रात्रिअंत ४:५६ बजे तक बीज बोवनी, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – मृगशिर में भद्रा पश्चात् रात ८:५६ बजे से रात्रिअंत ४:५६ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में भद्रा पश्चात् रात ८:५६ बजे से रात्रिअंत ४:५६ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात १०:२९ से रात २:२७ वजे तक।)

मार्गशीर्ष शुक्ल १५ गुरु। २४ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप प्रात: ७:०४ सेरात ३:२८। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में रात १:५५ बजे से रात्रि ३:२६ बजे तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसुति क्वाथ, (आव.),जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में रात १:५५ बजे से रात्रि ३:२६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में रात १:५५ बजे से रात्रि ३:२६ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में रात १:५५ बजे से रात्रि ३:२६ बजे तक संपत्ति क्रय, यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (पुनर्वसु में सूर्य वेध,।)

पौष कृष्ण पक्ष

पौष कृष्ण २ शुक्र। २५ दिसम्वर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । पुष्य में रात ११:०० बजे से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक अग्न्याधान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में रात ११:०० बजे से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में सूर्योदय से रात ११:०० बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, जैन विद्यारंभ । पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । पुष्य में रात ११:०० बजे से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। पुष्य में रात ११:०० बजे से रात्रिअंत ७:०३ बजे तक राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (पुनर्वसु में सूर्य वेध । पुनर्वसु में बुधवेध दिन १२:२६ वजे से सायं ५:४३ वजे तक।)

पौष कृष्ण ३ शनि। २६ दिसम्वर २०२६। पुष्य में वैधृति, विष्कुंभ दोष। वैधृति, विष्कुंभ दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर रात ८:१७

से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ८:१७ से रातअंत ।

पौष कृष्ण ४ रवि। २७ दिसम्बर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से सायं ५:२४ तक। वृषारूढ सायं ५:२४ से रात. अंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मघा में सायं ६:१५ बजे से रात्रिअंत ७:०४ बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –अश्लेषा में सायं ५:१७ बजे से सायं ६:१५ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में सा. ६:१५ तक, । मघा में सायं ६:१५ बजे से रात्रिअंत ७:०४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (अश्लेषा में केतु युति। मघा में गुरु युति।)

पौष कृष्ण ५ चंद्र। २८ दिसम्बर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। गुरु १२:४५ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ३:०६ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –मघा में सूर्योदय से दिन ४:४१ बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मघा में गुरु युति। पू.फा. में मंगल युति।)

पौष कृष्ण ६ मंगल। २९ दिसम्बर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में भद्रा पश्चात् रात १२:५२ बजे से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में भद्रा पश्चात् रात १२:५२ बजे से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पू.फा. में मंगल युति।)

पौष कृष्ण ७ बुध। ३० दिसम्बर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १२:३९ से रातअंत । उ.फा. में सूर्योदय से दिन ३:३९ बजे तक अग्न्याधान, । हस्त में दिन ३:३९ बजे से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में सूर्योदय से दिन १२:३३ बजे तक अन्नप्राशन, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । हस्त में दिन ३:३९ बजे से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में सूर्योदय से दिन ३:३९ बजे तक धान्य विक्रय, । उ. फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । हस्त में दिन ३:३९ बजे से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.फा. में सूर्योदय से दिन ३:३९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, बैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में सूर्योदय से दिन ३:३९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। हस्त में दिन ३:३९ बजे से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। (हस्त में शनि वेध,।)

पौष कृष्ण ८ गुरु। ३१ दिसम्बर २०२६। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १२:३३ तक। हस्त में अतिगंड से पहले, सूर्योदय से दिन १२:२७ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – हस्त में अतिगंड से पहले, सूर्योदय से दिन १२:२७ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – हस्त में अतिगंड से पहले, सूर्योदय से दिन १२:२७ बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । हस्त में अतिगंड से पहले, सूर्योदय से दिन १२:२७ बजे एवं दिन २:५१ बजे से दिन ४:१५ बजे तक प्रसूति स्नान, । हस्त में अतिगंड से पहले, एवं चित्रा में अतिगंड पश्चात्, दिन २:५१ बजे से रात्रिअंत ७:०५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त –हस्त में अतिगंड से पहले, सूर्योदय से दिन १२:२७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –हस्त में अतिगंड से पहले, सूर्योदय से दिन १२:२७ बजे तक वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (हस्त में शनि वेध।)

पौष कृष्ण ९ शुक्र। १ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा से पहलेदिन १:०६ बजे से रात्रि १:३९ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । स्वाती में भद्रा से पहले सायं ५:३१ बजे से रात्रि १:३९ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में दिन १:०६ बजे से सायं ५:३१ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – चित्रा में दिन १:०६ बजे से सायं ५:३१ बजे तक मंत्र दीक्षा, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रि १:३९ बजे तक पुनर्विवाह, । चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा से पहलेदिन १:०६ बजे से रात्रि १:३९ बजे तक अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । स्वाती में भद्रा से पहले सायं ५:३१ बजे से रात्रि १:३९ बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा से पहलेदिन १:०६ बजे से रात्रि १:३९ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा से पहलेदिन १:०६ बजे से रात्रि १:३९ बजे तक पूंजी निवेश, । स्वाती में भद्रा से पहले सायं ५:३१ बजे से रात्रि १:३९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा से पहलेदिन १:०६ बजे से रात्रि १:३९ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। चित्रा में दिन १:०६ बजे से सायं ५:३१ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त हैं।

पौष कृष्ण १० शनि। २ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर दिन २:२६ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – स्वाती में दिन २:२१ बजे से रात ७:२१ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में रात ७:२१ बजे से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – स्वाती में एवं विशाखा में दिन २:२१ बजे से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में दिन २:२१ बजे से रात ७:२१ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (विशाखा में राहु वेध, । विशाखा में शुक्र युति।)

पौष कृष्ण ११ रवि। ३ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ४:१० तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रात ९:३८। केतु रात ९:३८ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ४:१० तक। वृषारूढ दिन ४:१० से रातअंत । विशाखा में एवं अनुराधा में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । अनुराधा में रात ९:३८ बजे से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में रात ९:३८ बजे से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में सूर्योदय से रात ९:३८ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । अनुराधा में रात ९:३८ बजे से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – विशाखा में एवं अनुराधा में सूर्योदय से रात्रिअंत ७:०६ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (विशाखा में राहु वेध, । अनुराधा में केतु वेध, । विशाखा में शुक्र युति।)

पौष कृष्ण १२ चंद्र। ४ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सायं ६:१७ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से सायं ६:१७ तक। अनुराधा में सूर्योदय से सायं ६:१४ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से सायं ६:१४ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अनुराधा में सूर्योदय से सायं ६:१४ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से सायं ६:१४ बजे तक धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में सूर्योदय से सायं ६:१४ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:०३ से रातअंत वजे तक। अनुराधा में केतु वेध, ।)

पौष कृष्ण १३ मंगल। ५ जनवरी २०२७। ज्येष्ठा में निर्बल चंद्र। भद्रा दोष निर्बल चंद्र दोष मूल में भद्रा दोष निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव।

पौष कृष्ण १४ बुध। ६ जनवरी २०२७। मूल में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष पू.षा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर रात ११:१४ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रात ६:०८। सूर्य रात ६:०८ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ११:१४ से रातअंत ।

पौष कृष्ण ३० गुरु। ७ जनवरी २०२७। पू.षा. में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष उ.षा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १:५३ तक।

पौष शुक्ल पक्ष

पौष शुक्ल १ शुक्र। ८ जनवरी २०२७। पू.षा. में निर्बल चंद्र। उ.षा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ४:३२ तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ४:३२ से रातअंत ।

पौष शुक्ल २ शनि। ९ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ७:०६ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ७:०६ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में दिन १२:१४ बजे से रात ७:०४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में सूर्योदय से दिन १२:१४ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में दिन १२:१४ बजे से रात ७:०४ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात ७:०४ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। श्रवण में दिन १२:१४ बजे से रात ७:०४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (उ.षा. में बुध युति।)

पौष शुक्ल ३ रवि। १० जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:०७ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म

अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से दिन ३:१० बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से दिन ३:१० बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:०७ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:०७ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । धनिष्ठा में दिन ३:१० बजे से रात ७:०७ बजे तक धान्य रोपण, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:०७ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात ७:०७ बजे तक यात्रा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से दिन ३:१० बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (श्रवण में गुरु वेध प्रात: ८:२७ वजे से दिन ३:१० वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)

पौष शुक्ल ३ चंद्र। ११ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से प्रात: ९:२६ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से प्रात: ९:२६ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, । धनिष्ठा में सूर्योदय से सायं ५:३७ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से प्रात: ९:२६ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । धनिष्ठा में सूर्योदय से सायं ५:३७ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से प्रात: ९:२६ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –धनिष्ठा में सूर्योदय से प्रात: ९:२६ बजे तक यात्रा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (धनिष्ठा में राहु युति।)

पौष शुक्ल ४ मंगल। १२ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ११:२९ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ११:२९ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – शतभिषा में सायं ५:५७ बजे से रात ८:१३ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –शतभिषा में सायं ५:५७ बजे से रात ८:१३ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – शतभिषा में सायं ५:५७ बजे से रात ८:१३ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में सायं ५:५७ बजे से रात ८:१३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं।

पौष शुक्ल ५ बुध। १३ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १:०३ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन १:०३ तक। वृषारूढ दिन १:०३ से रातअंत । उ.भा. में परिघ पश्चात रात ५:३१ बजे से रात्रिअंत ७:०८ बजे तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.भा. में सूर्योदय से सायं ५:५५ बजे तक मंत्र दीक्षा, । उ.भा. में परिघ पश्चात रात ५:३१ बजे से रात्रिअंत ७:०८ बजे तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पू.भा. में सूर्योदय से सायं ५:५५ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । उ.भा. में परिघ पश्चात रात ५:३१ बजे से रात्रिअंत ७:०८ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पू.भा. में सूर्योदय से सायं ५:५५ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में परिघ पश्चात रात ५:३१ बजे से रात्रिअंत ७:०८ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (उ.भा. में शनि युति।)

पौष शुक्ल ६ गुरु। १४ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन २:०१ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रात ११:२२। शुक्र रात ११:२२ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन २:०१ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.भा. में एवं रेवती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –रेवती में रात ११:२२ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (उ.भा. में शनि युति।)

पौष शुक्ल ७ शुक्र। १५ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – रेवती में सूर्योदय से दिन २:२० बजे तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, । रेवती में सूर्योदय से दिन २:२० बजे एवं अश्विनी मेंरात २:१२ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – रेवती में सूर्योदय से दिन २:२० बजे तक अन्नप्राशन, मुंडन, कन्या वरण, । रेवती में सूर्योदय से दिन २:२० बजे एवं अश्विनी मेंरात २:१२ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, मंत्र दीक्षा, जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रेवती में सूर्योदय से दिन २:२० बजे तक पशु क्रय विक्रय, । रेवती में सूर्योदय से दिन २:२० बजे एवं अश्विनी मेंरात २:१२ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । अश्विनी में भद्रा पश्चात् रात २:१२ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रेवती में सूर्योदय से दिन २:२० बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । रेवती में सूर्योदय से दिन २:२० बजे एवं अश्विनी मेंरात २:१२ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ, पूंजी निवेश, । अश्विनी में भद्रा पश्चात् रात २:१२ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में सूर्योदय से दिन २:२० बजे एवं अश्विनी मेंरात २:१२ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। रेवती में सूर्योदय से दिन २:२० बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। अश्विनी में भद्रा पश्चात् रात २:१२ बजे से रात्रिअंत तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (अश्विनी में मंगल वेध,।)

पौष शुक्ल ८ शनि। १६ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १:४६ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १:४६ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अश्विनी में सूर्योदय से दिन १:४९ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । अश्विनी में सूर्योदय से रात ११:४१ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अश्विनी में सूर्योदय से दिन १:४९ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी में सूर्योदय से दिन १:४९ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (अश्विनी में भौम वेध । भरणी में शुक्रवेध रात ११:४१ वजे से रातअंत ५:३४ वजे तक।)

पौष शुक्ल ९ रवि। १७ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रात १०:४२। शनि रात १०:४२ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन १२:२९ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – भरणी में दिन १२:३१ बजे से रात १०:४२ बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –भरणी में एवं कृतिका में दिन १२:३१ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

पौष शुक्ल १० चंद्र। १८ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – कृतिका में सूर्योदय से दिन १०:२९ बजे तक अग्न्याधान, । रोहिणी में रात ९:०३ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – कृतिका में सूर्योदय से दिन १०:२९ बजे तक कन्या वरण, । कृतिका में सूर्योदय से रात ९:०३ बजे तक वर वरण, । रोहिणी में रात ९:०३ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –कृतिका में सूर्योदय से रात ९:०३ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । कृतिका में एवं रोहिणी में सूर्योदय से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । रोहिणी में रात ९:०३ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रोहिणी में रात ९:०३ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में रात ९:०३ बजे से रात्रिअंत तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन ३:०८ से रात ७:०६ वजे तक।)

पौष शुक्ल ११ मंगल। १९ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर प्रात: ७:५० सेरात ४:१७। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – रोहिणी में प्रात: ७:४९ बजे से सायं ६:५१ बजे तक वर वरण, । रोहिणी में एवं मृगशिर में प्रात: ७:४९ बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । मृगशिर में सायं ६:५१ बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रोहिणी में प्रात: ७:४९ बजे से सायं ६:५१ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – मृगशिर में सायं ६:५१ बजे से रात्रिअंत ४:१६ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मृगशिर में सूर्य वेध,।)

पौष शुक्ल १३ बुध। २० जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात १:०९ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से दिन ४:१४। चंद्र दिन ४:१४ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात १:०९ तक। मृगशिर में सूर्योदय से दिन ४:१४ बजे तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से दिन ४:१४ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन, कन्या वरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –मृगशिर में सूर्योदय से दिन ४:१४ बजे तक बीज बोवनी, धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से दिन ४:१४ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में सूर्योदय से दिन ४:१४ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं। आर्द्रा में वैधृति से पहले दिन ४:१४ बजे से रात १०:२१ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (मृगशिर में सूर्य वेध ।)

पौष शुक्ल १४ गुरु। २१ जनवरी २०२७। आर्द्रा में वैधृति, विष्कुंभ दोष। मुहूर्त्त अभाव।

पौष शुक्ल १५ शुक्र। २२ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सायं ५:५० से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सायं ५:५० से रातअंत । पुनर्वसु में एवं पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रात: ७:३५ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा । पुनर्वसु में एवं पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रात: ७:३५ बजे से सायं ५:४६ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । पुष्य में दिन १०:२६ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में दिन १०:२६ बजे से सायं ५:४६ बजे तक गृहछादन

छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुनर्वसु में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:३५ बजे से दिन १०:२६ बजे तक जैन विद्यारंभ । पुनर्वसु में एवं पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:३५ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, । पुनर्वसु में एवं पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:३५ बजे से सायं ५:४६ बजे तक अन्नप्राशन, उपनयन (आवश्यके), । पुष्य में दिन १०:२६ बजे से सायं ५:४६ बजे तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:३५ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । पुनर्वसु में एवं पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:३५ बजे से सायं ५:४६ बजे तक धान्य संग्रह, । पुष्य में दिन १०:२६ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । पुष्य में दिन १०:२६ बजे से सायं ५:४६ बजे तक धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:३५ बजे से रात्रिअंत तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । पुनर्वसु में एवं पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:३५ बजे से सायं ५:४६ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । पुष्य में दिन १०:२६ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:३५ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। पुनर्वसु में एवं पुष्य में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:३५ बजे से सायं ५:४६ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। पुनर्वसु में भद्रा पश्चात् प्रातः ७:३५ बजे से दिन १०:२६ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त्त हैं। पुष्य में दिन १०:२६ बजे से रात्रिअंत तक राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। पुष्य में दिन १०:२६ बजे से सायं ५:४६ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। (पुष्य में शुक्रवेध रात ८:६० वजे से रात २:१७ वजे तक।)

माघ कृष्ण पक्ष

माघ कृष्ण १ शनि। २३ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन २:१८ तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से प्रातः ७:३३। मंगल प्रातः ७:३३ से रात ४:५८। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन २:१८ तक। पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ७:३३ बजे तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ७:३३ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । अश्लेषा में प्रातः ७:३३ बजे से रात्रिअंत ५:२६ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ७:३३ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ७:३३ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । अश्लेषा में दिन २:१३ बजे से रात्रिअंत ५:२६ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. ४:५८ तक, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ७:३३ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में सूर्योदय से प्रातः ७:३३ बजे तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (अश्लेषा में केतु युति। मघा में गुरु युति।)

माघ कृष्ण २ रवि। २४ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मघा में सूर्योदय से दिन १०:५९ बजे तक कन्या वरण, । मघा में सूर्योदय से रात ९:३४ बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –मघा में सूर्योदय से रात ९:३४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मघा में गुरु युति। पू.फा. में मंगल युति।)

माघ कृष्ण ३ चंद्र। २५ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर दिन ८:१५ सेरात ६:५०। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में अतिगंड पश्चात रात १:२६ बजे से रात्रिअंत ६:४८ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पू.फा. में मंगल युति।)

माघ कृष्ण ५ मंगल। २६ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ४:३७ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रात १२:१३। गुरु रात १२:१३ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ४:३७ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.फा. में सूर्योदय से रात १२:१३ बजे तक वर वरण, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, । हस्त में रात १२:१३ बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में सूर्योदय से रात १२:१३ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (हस्त में शनि वेध,।)

माघ कृष्ण ६ बुध। २७ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ३:५२ बजे तक देव प्रतिष्ठा धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में रात १२:०१ बजे से रात ३:५२ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में सूर्योदय से रात १२:०१ बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, कन्या वरण, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ३:५२ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –हस्त में सूर्योदय से रात १२:०१ बजे तक बीज बोवनी, पशु क्रय विक्रय, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ३:५२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ३:५२ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात ३:५२ बजे तक वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में रात १२:०१ बजे से रात ३:५२ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (हस्त में शनि वेध।)

माघ कृष्ण ७ गुरु। २८ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ४:०४ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ४:०४ से रातअंत । चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५२ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । स्वाती में रात १२:३५ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में भद्रा पश्चात् दिन ३:५२ बजे से रात १२:३५ बजे तक गृहछादन छत,, नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५२ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – चित्रा में भद्रा पश्चात् दिन ३:५२ बजे से रात १२:३५ बजे तक कर्णवेध, मुंडन, । चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५२ बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, । चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५२ बजे से रात ३:५९ बजे तक अन्नप्राशन, । स्वाती में रात १२:३५ बजे से रात्रिअंत तक प्रसूति स्नान, । {४} कृषि मुहूर्त्त –चित्रा में भद्रा पश्चात् दिन ३:५२ बजे से रात १२:३५ बजे तक बीज बोवनी, । चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५२ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । स्वाती में रात १२:३५ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – चित्रा में भद्रा पश्चात् दिन ३:५२ बजे से रात १२:३५ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५२ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । स्वाती में रात १२:३५ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५२ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में एवं स्वाती में भद्रा पश्चात् दिन ३:५२ बजे से रात ३:५९ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। चित्रा में भद्रा पश्चात् दिन ३:५२ बजे से रात १२:३५ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त्त हैं।

माघ कृष्ण ८ शुक्र। २९ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ४:५७ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रात १:५५। राहु रात १:५५ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ४:५७ तक। स्वाती में सूर्योदय से रात १:५५ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात ४:५३ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । विशाखा में रात १:५५ बजे से रात्रिअंत तक अग्न्याधान, । {२} वास्तु मुहूर्त – स्वाती में सूर्योदय से रात १:५५ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । विशाखा में रात १:५५ बजे से रात ४:५३ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – स्वाती में सूर्योदय से रात १:५५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, जैन विद्यारंभ कन्या वरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –स्वाती में सूर्योदय से रात १:५५ बजे तक हल प्रवहण जुताई, बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । विशाखा में रात १:५५ बजे से रात ४:५३ बजे तक ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात ४:५३ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । विशाखा में रात १:५५ बजे से रात ४:५३ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात ४:५३ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। स्वाती में सूर्योदय से रात १:५५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (विशाखा में राहु वेध, ।)

माघ कृष्ण ९ शनि। ३० जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अनुराधा में रात ६:२८ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – अनुराधा में रात ६:२८ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में रात ६:२८ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अनुराधा में रात ६:२८ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में रात ६:२८ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन १०:२८ से दिन ३:०४ वजे तक। विशाखा में राहु वेध, । अनुराधा में केतु वेध, ।)

माघ कृष्ण १० रवि। ३१ जनवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर ८:३८ से रातअंत । अनुराधा में भद्रा से पहले सूर्योदय से रात ७:३२ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अनुराधा में भद्रा से पहले सूर्योदय से रात ७:३२ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, जैन विद्यारंभ कन्या वरण, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अनुराधा में भद्रा से पहले सूर्योदय से रात ७:३२ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अनुराधा में भद्रा से पहले सूर्योदय से रात ७:३२ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में भद्रा से पहले सूर्योदय से रात ७:३२ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (अनुराधा में केतु वेध, ।)

माघ कृष्ण १० चंद्र। १ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ८:३९ तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से ९:१९। केतु ९:१९ से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन ८:३९ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में प्रात: ८:३६ बजे से रातअंत तक मुंडन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –ज्येष्ठा में प्रात: ८:३६ बजे से रातअंत तक ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में प्रात: ८:३६ बजे से रातअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

माघ कृष्ण ११ मंगल। २ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ११:०८ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से दिन ९:१९। केतु दिन ९:१९ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन ११:०८ तक। वृषारूढ दिन ११:०८ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – ज्येष्ठा में सूर्योदय से प्रात: ९:१९ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । मूल में प्रात: ९:१९ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मूल में शुक्र युति।)

माघ कृष्ण १२ बुध। ३ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १:४९ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन १:४९ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – मूल में सूर्योदय से दिन १२:२५ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १३:१९ से, त्यागकर), गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १३:१९ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – मूल में एवं पू.षा. में सूर्योदय से दिन १:४७ बजे तक विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मूल में शुक्र युति।)

माघ कृष्ण १३ गुरु। ४ फरवरी २०२७। पू.षा. में निर्बल चंद्र। उ.षा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव।

माघ कृष्ण १४ शुक्र। ५ फरवरी २०२७। उ.षा. में निर्बल चंद्र। श्रवण में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ७:०४ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से सायं ६:३१। सूर्य सायं ६:३१ से रातअंत। केतु २०:१३ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ७:०४ से रातअंत ।

माघ कृष्ण ३० शनि। ६ फरवरी २०२७। श्रवण में निर्बल चंद्र। धनिष्ठा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त्त अभाव। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ९:२४ तक।

माघ शुक्ल पक्ष

माघ शुक्ल १ रवि। ७ फरवरी २०२७। धनिष्ठा में निर्बल चंद्र। परिघ दोष शतभिषा में परिघ दोष मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ११:२५ से रातअंत ।

माघ शुक्ल २ चंद्र। ८ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १:०४ तक। शतभिषा में परिघ पश्चात, प्रात: ९:४८ बजे से रात १:५५ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – शतभिषा में परिघ पश्चात, प्रात: ९:४८ बजे से रात १:५५ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । पू.भा. में रात १:५५ बजे से रात्रिअंत तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – शतभिषा में परिघ पश्चात, प्रात: ९:४८ बजे से रात १:०४ बजे तक अन्नप्राशन, मुंडन, उपनयन, । शतभिषा में परिघ पश्चात, प्रात: ९:४८ बजे से रात १:५५ बजे तक जातकर्म, नामकरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –शतभिषा में परिघ पश्चात, प्रात: ९:४८ बजे से रात १:५५ बजे तक धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । पू.भा. में रात १:५५ बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – शतभिषा में परिघ पश्चात, प्रात: ९:४८ बजे से रात १:५५ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । शतभिषा में परिघ पश्चात, एवं पू.भा. में प्रात: ९:४८ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में परिघ पश्चात, प्रात: ९:४८ बजे से रात १:५५ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (शतभिषा में बुध युति।)

माघ शुक्ल ३ मंगल। ९ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पू.भा. में सूर्योदय से रात २:१८ बजे तक वर वरण, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.भा. में रात ३:४० बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

माघ शुक्ल ४ बुध। १० फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर रात ३:०५ से रातअंत । उ.भा. में एवं रेवती में रात ३:०५ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, । रेवती में रात ४:५८ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.भा. में भद्रा से पहले रात ३:०५ बजे से रात ४:५८ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । उ.भा. में एवं रेवती में रात ३:०५ बजे से रात्रिअंत तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.भा. में भद्रा से पहले रात ३:०५ बजे से रात ४:५८ बजे तक वर वरण, । उ.भा. में एवं रेवती में रात ३:०५ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, । रेवती में रात ४:५८ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, कर्णवेध, मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.भा. में भद्रा से पहले रात ३:०५ बजे से रात ४:५८ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । उ.भा. में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन २:४४ बजे एवं रात ३:०५ बजे से रात ४:५८ बजे तक धान्य विक्रय, । उ.भा. में एवं रेवती में रात ३:०५ बजे से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, । रेवती में रात ४:५८ बजे से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.भा. में भद्रा से पहले रात ३:०५ बजे से रात ४:५८ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । उ.भा. में एवं रेवती में रात ३:०५ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –उ.भा. में एवं रेवती में रात ३:०५ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। उ.भा. में भद्रा से पहले रात ३:०५ बजे से रात ४:५८ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। रेवती में रात ४:५८ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (रेवती में शनि युति।)

माघ शुक्ल ५ गुरु। ११ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ३:२२ तक। वृषारूढ रात ३:२२ से रातअंत । रेवती में सूर्योदय से रात ५:४७ बजे तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – रेवती में सूर्योदय से रात ५:४७ बजे तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । अश्विनी में रात ५:४७ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – रेवती में सूर्योदय से रात ३:२१ बजे तक अन्नप्राशन, मुंडन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, उपनयन, कन्या वरण, । रेवती में सूर्योदय से रात ५:४७ बजे तक सीमन्त पुंसवन, मंत्र दीक्षा, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत तक प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, पुनर्विवाह, । अश्विनी में रात ५:४७ बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रेवती में सूर्योदय से रात ३:२१ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, पशु क्रय विक्रय, । अश्विनी में रात ५:४७ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रेवती में सूर्योदय से रात ३:२१ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । रेवती में सूर्योदय से रात ५:४७ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ, पूंजी निवेश, । अश्विनी में रात ५:४७ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में सूर्योदय से रात ५:४७ बजे तक संपत्ति क्रय, सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। रेवती में सूर्योदय से रात ३:२१ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (रेवती में शनि युति।)

माघ शुक्ल ६ शुक्र। १२ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ३:०५ तक। अश्विनी मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से रात १:१२ बजे एवं रात ५:२४ बजे से रात ६:०४ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अश्विनी मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से रात १:१२ बजे एवं रात ५:२४ बजे से रात ६:०४ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित (अग्निबाण १०:३२ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अश्विनी मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से रात १:१२ बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, विद्यारंभ, उच्च शिक्षा, । अश्विनी मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से रात १:१२ बजे एवं रात ५:२४ बजे से रात ६:०४ बजे तक जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, पुनर्विवाह, । अश्विनी मेंक्रांतिसाम्य से पहले, एवं भरणी मेंक्रांतिसाम्य पश्चात, रात ५:२४ बजे से रात्रिअंत तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –अश्विनी मेंक्रांतिसाम्य से पहले, रात ५:२४ बजे से रात ६:०४ बजे तक हल प्रवहण जुताई, । अश्विनी मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से रात १:१२ बजे एवं रात ५:२४ बजे से रात ६:०४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । अश्विनी मेंक्रांतिसाम्य से पहले, एवं भरणी मेंक्रांतिसाम्य पश्चात, रात ५:२४ बजे से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । भरणी में रात ६:०४ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अश्विनी मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से रात १:१२ बजे एवं रात ५:२४ बजे से रात ६:०४ बजे तक व्यापार प्रारंभ, धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अश्विनी मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से रात १:१२ बजे एवं रात ५:२४ बजे से रात ६:०४ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। अश्विनी मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से रात १:१२ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। अश्विनी मेंक्रांतिसाम्य से पहले, रात ५:२४ बजे से रात ६:०४ बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात १:१२ से रात ५:२४ वजे तक। भरणी में मंगल वेध,।)

माघ शुक्ल ७ शनि। १३ फरवरी २०२७। भरणी में भद्रा दोष मुहूर्त अभाव।

माघ शुक्ल ८ रवि। १४ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात १२:४७ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात १२:४७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – कृतिका में भद्रा पश्चात् दिन १:३५ बजे से रात १२:४९ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । रोहिणी में रात ४:५५ बजे से रात्रिअंत तक प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –कृतिका में भद्रा पश्चात् दिन १:३५ बजे से रात १२:४९ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । रोहिणी में रात ४:५५ बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

माघ शुक्ल ९ चंद्र। १५ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात १०:४८ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रात ३:३१। शनि रात ३:३१ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात १०:४८ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – रोहिणी में वैधृति से पहले, सूर्योदय से दिन १२:३८ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –रोहिणी में वैधृति से पहले, सूर्योदय से दिन १२:३८ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

माघ शुक्ल १० मंगल। १६ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मृगशिर में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, दिन १०:५१ बजे से रात १:४० बजे तक सीमन्त पुंसवन, शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –मृगशिर में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, दिन १०:५१ बजे से रात ८:२३ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – मृगशिर में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, दिन १०:५१ बजे से रात १:४० बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात, दिन १०:५१ बजे से रात १:४० बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं।

माघ शुक्ल ११ बुध। १७ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से सायं ५:३२ तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सायं ५:३२ से रातअंत । पुनर्वसु में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –आर्द्रा में एवं पुनर्वसु में सायं ५:३२ बजे से रात्रिअंत तक ईंधन स्थापन, । पुनर्वसु में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –आर्द्रा में भद्रा से पहले सायं ५:३२ बजे से रात ११:२९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। पुनर्वसु में रात ११:२९ बजे से रात्रिअंत तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (आर्द्रा में शुक्रवेध प्रातः ७:११ वजे से दिन १२:३७ वजे तक।)

माघ शुक्ल १२ गुरु। १८ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन २:२७ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रात ९:०४। चंद्र रात ९:०४ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन २:२७ तक। वृषारूढ दिन २:२७ से रातअंत । पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । पुष्य में रात ९:०४ बजे से रात्रिअंत तक अग्न्याधान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में रात ९:०४ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , गृहछादन छत,, नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त – पुनर्वसु में सूर्योदय से दिन २:२६ बजे तक उपनयन, । पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, द्विरागमन, । पुनर्वसु में एवं पुष्य में दिन २:२६ बजे से रात्रिअंत तक अन्नप्राशन, । पुष्य में रात ९:०४ बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त –पुनर्वसु में सूर्योदय से रात ९:०४ बजे तक ईंधन स्थापन, । पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । पुष्य में रात ९:०४ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । पुष्य में रात ९:०४ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में एवं पुष्य में सूर्योदय से रात्रिअंत तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। पुनर्वसु में एवं पुष्य में दिन २:२६ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, मुहूर्त हैं। पुष्य में रात ९:०४ बजे से रात्रिअंत तक राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं।

माघ शुक्ल १३ शुक्र। १९ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ११:१३ तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रात १२:४४। चंद्र रात १२:४४ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ११:१३ तक। पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:११ बजे तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:११ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , गृहछादन छत,, नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:११ बजे तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, मुंडन, द्विरागमन, । पुष्य में दिन ११:११ बजे से सायं ६:३४ बजे तक प्रसुति जल/कुआ पूजन, । {४} कृषि मुहूर्त –पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:११ बजे तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:११ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में सूर्योदय से दिन ११:११ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (अश्लेषा में बुधवेध सायं ६:३४ वजे से रात ११:५७ वजे तक।अश्लेषा में गुरु केतु युति।)

माघ शुक्ल १४ शनि। २० फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – मघा में भद्रा पश्चात् अतिगंड पश्चात सायं ६:२३ बजे से रात्रिअंत ५:११ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । {३} संस्कार मुहूर्त – मघा में भद्रा पश्चात् अतिगंड पश्चात सायं ६:२३ बजे से रात्रिअंत ५:११ बजे तक पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –मघा में भद्रा पश्चात् अतिगंड पश्चात सायं ६:२३ बजे से रात्रिअंत ५:११ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. ४:०७ तक, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (अश्लेषा में गुरु केतु युति। मघा में मंगल युति।)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

फाल्गुन कृष्ण १ रवि। २१ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात २:०४ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात २:०४ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मघा में सूर्योदय से दिन १:५२ बजे तक कन्या वरण, । पू.फा. में रात १:६० बजे से रात्रिअंत तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –मघा में सूर्योदय से दिन १:५२ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (मघा में मंगल युति।)

फाल्गुन कृष्ण २ चंद्र। २२ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – उ.फा. में दिन ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – पू.फा. में सूर्योदय से दिन ११:५७ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्ध , । उ.फा. में दिन ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध , गृहछादन छत,, नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त – पू.फा. में सूर्योदय से दिन ११:५७ बजे तक मंत्र दीक्षा, कन्या वरण, वर वरण, । उ.फा. में दिन ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में दिन ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.फा. में दिन ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में दिन ११:५७ बजे से रात्रिअंत तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (उ.फा. में शनि वेध,।)

फाल्गुन कृष्ण ३ मंगल। २३ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ९:५५ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात ९:५५ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.फा. में शूल, गण्ड पश्चात, प्रातः ६:५८ बजे से दिन १०:३१ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, वर वरण, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.फा. में शूल, गण्ड पश्चात, प्रातः ६:५८ बजे से दिन १०:३१ बजे तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (उ.फा. में शनि वेध।)

फाल्गुन कृष्ण ४ बुध। २४ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ८:४७ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ८:४७ तक। वृषारूढ रात ८:४७ से रातअंत । चित्रा में क्रांतिसाम्य पश्चात, रात ११:४३ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में क्रांतिसाम्य पश्चात, रात ११:४३ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण ७:५७ से, त्यागकर), नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त – हस्त में सूर्योदय से प्रातः ९:४२ बजे तक प्रसूति जल/कुआ पूजन, । चित्रा में क्रांतिसाम्य पश्चात, रात ११:४३ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, मंत्र दीक्षा, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –चित्रा में क्रांतिसाम्य पश्चात, रात ११:४३ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में क्रांतिसाम्य पश्चात, रात ११:४३ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में क्रांतिसाम्य पश्चात, रात ११:४३ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष रात ७:२० से रात ११:४३ वजे तक।)

फाल्गुन कृष्ण ५ गुरु। २५ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ८:२४ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय

से दिन ९:३६। गुरु दिन ९:३६ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ८:२४ तक। चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । स्वाती में प्रात: ९:३६ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ९:३६ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्ध (अग्निबाण ७:४८ तक, त्यागकर), गृहछादन छत, (अग्निबाण ७:४८ तक, त्यागकर), नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त – चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ९:३६ बजे तक कर्णवेध, उपनयन, मंत्र दीक्षा, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात ८:१६ बजे तक अन्नप्राशन, मुंडन, । स्वाती में प्रात: ९:३६ बजे से रात्रिअंत तक प्रस. ूति स्नान, । {४} कृषि मुहूर्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ९:३६ बजे तक व्यापार प्रारंभ, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । स्वाती में प्रात: ९:३६ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। चित्रा में सूर्योदय से प्रात: ९:३६ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त हैं। (स्वाती में सूर्य वेध,।)

फाल्गुन कृष्ण ६ शुक्र। २६ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – स्वाती में सूर्योदय से दिन १०:१६ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात ८:४१ बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – विशाखा में दिन १०:१६ बजे से रात ८:४१ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त – स्वाती में सूर्योदय से दिन १०:१६ बजे तक जातकर्म, नामकरण, जैन विद्यारंभ कन्या वरण, द्विरागमन, । {४} कृषि मुहूर्त –स्वाती में सूर्योदय से दिन १०:१६ बजे तक बीज बोवनी, धान्य रोपण, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, । विशाखा में दिन १०:१६ बजे से रात ८:४१ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात ८:४१ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । विशाखा में दिन १०:१६ बजे से रात ८:४१ बजे तक बैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –स्वाती में एवं विशाखा में सूर्योदय से रात ८:४१ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। स्वाती में सूर्योदय से दिन १०:१६ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। विशाखा में दिन १०:१६ बजे से रात ८:४१ बजे तक संपत्ति क्रय, मुहूर्त हैं। (स्वाती में सूर्य वेध । विशाखा में राहु वेध, ।)

फाल्गुन कृष्ण ७ शनि। २७ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर रात ९:५७ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ९:५७ से रातअंत । अनुराधा में दिन ११:४१ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा । {२} वास्तु मुहूर्त – विशाखा में भद्रा पश्चात् प्रात: ९:०७ बजे से दिन ११:४१ बजे तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । अनुराधा में दिन ११:४१ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में दिन ११:४१ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में भद्रा पश्चात् प्रात: ९:०७ बजे से दिन ११:४१ बजे तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दिनरात, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – विशाखा में एवं अनुराधा में भद्रा पश्चात् प्रात: ९:०७ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में दिन ११:४१ बजे से रात्रिअंत तक राजसेवा, मुहूर्त हैं। (विशाखा में राहु वेध, । अनुराधा में केतु वेध, ।)

फाल्गुन कृष्ण ८ रवि। २८ फरवरी २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ११:४६ तक। अनुराधा में सूर्योदय से दिन १:४८ बजे तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से दिन १:४८ बजे तक प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जैन विद्यारंभ कन्या वरण, । अनुराधा में एवं ज्येष्ठा में वज्र से पहले सूर्योदय से रात १०:२९ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त –अनुराधा में सूर्योदय से दिन १:४८ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से दिन १:४८ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (अनुराधा में केतु वेध, ।)

फाल्गुन कृष्ण ९ चंद्र। १ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – मूल में रात २:०१ बजे से रात्रिअंत तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त –मूल में रात २:०१ बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में दि. ४:२६ तक, हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

फाल्गुन कृष्ण १० मंगल। २ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर रात ४:४१ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन ३:१८ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

फाल्गुन कृष्ण ११ बुध। ३ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रात १०:३२। केतु रात १०:३२ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ७:२३ तक। वृषारूढ रात ७:२३ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में व्यतिपात पश्चात रात १:०५ बजे से रात ६:४४ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध), । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में व्यतिपात पश्चात रात १:०५ बजे से रात ६:४४ बजे तक जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में व्यतिपात पश्चात रात १:०५ बजे से रात ६:४४ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.षा. में व्यतिपात पश्चात रात १:०५ बजे से रात ६:४४ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में व्यतिपात पश्चात रात १:०५ बजे से रात ६:४४ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। (उ.षा. में शुक्र युति।)

फाल्गुन कृष्ण ११ गुरु। ४ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से प्रात: ७:२१ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। केतु रात ७:०२ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से प्रात: ७:२१ तक। वृषारूढ प्रात: ७:२१ से रातअंत । उ.षा. में प्रात: ७:२० बजे से रात १:३४ बजे तक अग्न्याधान, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रि १:६० बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । श्रवण में परिघ से पहले रात १:३४ बजे से रात्रि १:६० बजे तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से रात १:३४ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रि १:६० बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से प्रात: ७:२० बजे तक कन्या वरण, । उ.षा. में सूर्योदय से रात १:३४ बजे तक प्रसूति स्नान, वर वरण, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रि १:६० बजे तक सीमन्त पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, द्विरागमन, पुनर्विवाह, । श्रवण में परिघ से पहले रात १:३४ बजे से रात्रि १:६० बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में सूर्योदय से रात १:३४ बजे तक धान्य रोपण, धान्य विक्रय, । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रि १:६० बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से रात १:३४ बजे तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रि १:६० बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । श्रवण में परिघ से पहले रात १:३४ बजे से रात्रि १:६० बजे तक धनसंग्रह, बैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में सूर्योदय से रात १:३४ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। उ.षा. में एवं श्रवण में सूर्योदय से रात्रि १:६० बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त हैं। श्रवण में परिघ से पहले रात १:३४ बजे से रात्रि १:६० बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त हैं। (उ.षा. में शुक्र युति। श्रवण में शुक्र युति।)

फाल्गुन कृष्ण १२ शुक्र। ५ मार्च २०२७। श्रवण में परिघ दोष। धनिष्ठा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिन ९:५२ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से प्रात: ७:०१। केतु प्रात: ७:०१ से रात ४:२२ केतु रात ४:२२ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन ९:५२ तक।

फाल्गुन कृष्ण १३ शनि। ६ मार्च २०२७। धनिष्ठा में निर्बल चंद्र। निर्बल चंद्र दोष शतभिषा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव।

फाल्गुन कृष्ण १४ रवि। ७ मार्च २०२७। धनिष्ठा में निर्बल चंद्र। शतभिषा में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन १:४६ से रातअंत ।

फाल्गुन कृष्ण ३० चंद्र। ८ मार्च २०२७। शतभिषा में निर्बल चंद्र। पू.भा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिन २:५८ से रात. अंत तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से दिन ८:३६। सूर्य दिन ८:३६ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन २:५८ तक।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

फाल्गुन शुक्ल १ मंगल। ९ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप दिन ३:३९ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. में दिन ३:४१ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. में दिन ३:४१ बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (पू.भा. में सूर्य युति।)

फाल्गुन शुक्ल २ बुध। १० मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति सूर्य सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन ३:५१ तक। रेवती मेंक्रांतिसाम्य पश्चात दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा

अग्न्याधान, । रेवती मेंक्रांतिसाम्य पश्चात दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – रेवती मेंक्रांतिसाम्य पश्चात दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.भा. मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ८:१४ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । रेवती मेंक्रांतिसाम्य पश्चात दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, द्विरागमन, । उ.भा. में क्रांतिसाम्य से पहले, क्रांतिसाम्य पश्चात सूर्योदय से प्रात: ८:१४ बजे एवं रेवती मेंदिन १२:२७ बजे से दिन ३:५२ बजे तक उपनयन, । रेवती मेंक्रांतिसाम्य पश्चात दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.भा. मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ८:१४ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, धान्य विक्रय, । रेवती मेंक्रांतिसाम्य पश्चात दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.भा. मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ८:१४ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । रेवती मेंक्रांतिसाम्य पश्चात दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक व्यापार प्रारंभ (हट्टचक्र शुद्ध), । रेवती मेंक्रांतिसाम्य पश्चात दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती मेंक्रांतिसाम्य पश्चात दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त्त हैं। उ.भा. मेंक्रांतिसाम्य से पहले, सूर्योदय से प्रात: ८:१४ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। रेवती मेंक्रांतिसाम्य पश्चात दिन १२:२७ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन ८:१४ से दिन १२:२७ वजे तक। रेवती में शनि युति।)

फाल्गुन शुक्ल ३ गुरु। ११ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – रेवती में सूर्योदय से दिन ११:१९ बजे तक देव प्रतिष्ठा अग्न्याधान, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से दिन ३:३७ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – रेवती में सूर्योदय से दिन ११:१९ बजे तक नवीन गृहप्रवेश (कलशचक्र शुद्ध नहीं), । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से दिन ३:३७ बजे तक गृहारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – रेवती में सूर्योदय से दिन ११:१९ बजे तक सीमन्त पुंसवन, कन्या वरण, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से दिन ३:३७ बजे तक प्रसूति स्नान, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, मुंडन, उपनयन, द्विरागमन, । अश्विनी में दिन ११:१९ बजे से दिन ३:३७ बजे तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से दिन ३:३७ बजे तक धान्य संग्रह, पशु क्रय विक्रय, । अश्विनी में दिन ११:१९ बजे से दिन ३:३७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – रेवती में सूर्योदय से दिन ११:१९ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से दिन ३:३७ बजे तक व्यापार प्रारंभ, पूंजी निवेश, । अश्विनी में दिन ११:१९ बजे से दिन ३:३७ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –रेवती में एवं अश्विनी में सूर्योदय से दिन ३:३७ बजे तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। अश्विनी में दिन ११:१९ बजे से दिन ३:३७ बजे तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं। (रेवती में शनि युति।)

फाल्गुन शुक्ल ४ शुक्र। १२ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन २:५७ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – भरणी में वैधृति से पहले दिन २:५७ बजे से रात्रि ९:३६ बजे तक जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त्त –भरणी में वैधृति से पहले दिन २:५७ बजे से रात्रि ९:३६ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

फाल्गुन शुक्ल ५ शनि। १३ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन १:५६ तक। वृषारूढ दिन १:५६ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – कृतिका में वैधृति, विष्कुंभ पश्चात रात ८:४५ बजे से रात्रिअंत तक नींव खनन प्रारंभ वत्स चक्र शुद्धि रहित , । {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

फाल्गुन शुक्ल ६ रवि। १४ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १२:३६ तक। ग्रह मुख आहुति बुध सूर्योदय से दिन १०:२८। शुक्र दिन १०:२८ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन १२:३६ तक। रोहिणी में दिन १०:२८ बजे से रात्रिअंत तक देव प्रतिष्ठा शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – रोहिणी में दिन १०:२८ बजे से रात्रिअंत तक गृहछादन छत, (अग्निबाण ७:०४ से, त्यागकर), । {३} संस्कार मुहूर्त्त – कृतिका में सूर्योदय से दिन १०:२८ बजे तक कन्या वरण, वर वरण, । रोहिणी में दिन १०:२८ बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, प्रसूति स्नान, पुनर्विवाह, । रोहिणी में दिन १२:३६ बजे से रात्रिअंत तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –कृतिका में सूर्योदय से दिन १०:२८ बजे तक धान्य छेदन, कटाई, । रोहिणी में दिन १०:२८ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, धान्य विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –रोहिणी में दिन १०:२८ बजे से रात्रिअंत तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं।

फाल्गुन शुक्ल ७ चंद्र। १५ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –मृगशिर में भद्रा पश्चात्प्रात: ९:३२ बजे से दिन १०:५७ बजे एवं रात १०:०१ बजे से रात्रिअंत तक वाहन क्रय, मुहूर्त्त हैं।

फाल्गुन शुक्ल ८ मंगल। १६ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन ९:०२ तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ९:०२ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – मृगशिर में सूर्योदय से प्रात: ८:२० बजे तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

फाल्गुन शुक्ल ९ बुध। १७ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर प्रात: ६:५१ सेरात ४:१९तक। ग्रह मुख आहुति शुक्र सूर्योदय से प्रात: ६:५३। शनि प्रात: ६:५३ से रात ५:१४। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से प्रात: ६:५१ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – अभाव। {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –पुनर्वसु में प्रात: ६:५३ बजे से रात्रिअंत ४:१८ बजे तक यात्रा, वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं।

फाल्गुन शुक्ल ११ गुरु। १८ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – शिववास कैलाश पर रात १:५६ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – पुष्य में भद्रा से पहले अतिगंड पश्चात, प्रात: ८:१७ बजे से दिन ३:१० बजे एवं रात १:५४ बजे से रात ३:२६ बजे तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –पुष्य में भद्रा से पहले अतिगंड पश्चात, प्रात: ८:१७ बजे से दिन ३:१० बजे एवं रात १:५४ बजे से रात ३:२६ बजे तक वाहन क्रय (चक्रशुद्ध), मुहूर्त्त हैं। पुष्य में भद्रा से पहले अतिगंड पश्चात, प्रात: ८:१७ बजे से दिन ३:१० बजे तक यात्रा, मुहूर्त्त हैं। (अश्लेषा में मंगल गुरु केतु युति।)

फाल्गुन शुक्ल १२ शुक्र। १९ मार्च २०२७। मुहूर्त्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति शनि सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात ११:२० तक। वृषारूढ रात ११:२० से रातअंत ।

फाल्गुन शुक्ल १३ शनि। २० मार्च २०२७। मुहूर्त्त अभाव। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ८:४७ तक।

फाल्गुन शुक्ल १४ रवि। २१ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.फा. में भद्रा पश्चात् रात ५:०९ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, । {४} कृषि मुहूर्त्त –अभाव। {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव। (उ.फा. में शनि वेध,।)

फाल्गुन शुक्ल १५ चंद्र। २२ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन ४:१४ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप दिन ४:१४ से रातअंत । उ.फा. में सूर्योदय से दिन ४:०९ बजे तक अग्न्याधान, शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । हस्त में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.फा. में सूर्योदय से दिन ४:०९ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त्त – उ.फा. में सूर्योदय से दिन ४:०९ बजे तक अन्नप्राशन, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, । हस्त में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक कर्णवेध, । {४} कृषि मुहूर्त्त –उ.फा. में सूर्योदय से दिन ४:०९ बजे तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । उ.फा. में सूर्योदय से रात ८:४७ बजे तक धान्य विक्रय, । उ.फा. में एवं हस्त में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । हस्त में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त्त – उ.फा. में सूर्योदय से दिन ४:०९ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । उ.फा. में सूर्योदय से रात ८:४७ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –उ.फा. में सूर्योदय से दिन ४:०९ बजे तक राज्याभिषेक–शपथ ग्रहण गुरु शुक्र उदय एवं उत्तरायण में श्रेष्ठ, मुहूर्त्त हैं। हस्त में रात ८:४७ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त्त हैं। (क्रान्तिसाम्य दोष दिन ९:०५ से दिन १:१७ वजे तक। उ.फा. में शनि वेध। हस्त में सूर्य वेध,।)

चैत्र कृष्ण पक्ष

चैत्र कृष्ण १ मंगल। २३ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन २:३० तक। ग्रह मुख आहुति चंद्र सूर्योदय से रात ७:५२। मंगल रात ७:५२ से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से दिन २:३० तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त्त – हस्त में सूर्योदय से रात ७:५२ बजे तक सीमन्त पुंसवन, प्रसूति स्नान, । हस्त में एवं चित्रा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक

शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –हस्त में सूर्योदय से रात ७:५२ बजे तक बीज बोवनी, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में रात ७:५२ बजे से रात्रिअंत तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –हस्त में सूर्योदय से रात ७:५२ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। चित्रा में रात ७:५२ बजे से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (हस्त में सूर्य वेध ।)

चैत्र कृष्ण २ बुध। २४ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । {४} कृषि मुहूर्त –चित्रा में सूर्योदय से रात ७:२९ बजे तक बीज बोवनी, । चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – चित्रा में दिन १:१० बजे से रात ७:२९ बजे तक पूंजी निवेश, । स्वाती में रात ७:२९ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –चित्रा में एवं स्वाती में सूर्योदय से रात्रिअंत तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं।

चैत्र कृष्ण ३ गुरु। २५ मार्च २०२७। स्वाती में भद्रा दोष। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १२:४१ तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर दिन १२:४१ से रातअंत ।

चैत्र कृष्ण ४ शुक्र। २६ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिन १२:४७ से रातअंत तक। ग्रह मुख आहुति मंगल सूर्योदय से रात ८:४१। गुरु रात ८:४१ से रातअंत। शिववास कैलाश पर सूर्योदय से दिन १२:४७ तक। वृषारूढ दिन १२:४७ से रातअंत । विशाखा में वज्र पश्चात, दिन १२:४१ बजे से रात ८:४१ बजे तक अग्न्याधान, । विशाखा में एवं अनुराधा में दिन १२:४१ बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । अनुराधा में रात ८:४१ बजे से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में रात ८:४१ बजे से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, जैन विद्यारंभ । {४} कृषि मुहूर्त –विशाखा में वज्र पश्चात, दिन १२:४१ बजे से रात ८:४१ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । अनुराधा में रात ८:४१ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य संग्रह, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – विशाखा में वज्र पश्चात, दिन १२:४१ बजे से रात ८:४१ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, वैंक लॉकर खोलना, । विशाखा में एवं अनुराधा में दिन १२:४१ बजे से रात्रिअंत तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –विशाखा में एवं अनुराधा में दिन १२:४१ बजे से रात्रिअंत तक संपत्ति क्रय, नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। अनुराधा में रात ८:४१ बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, राजसेवा, मुहूर्त हैं। (विशाखा में राहु वेध, । अनुराधा में मंगल वेध,केतु वेध, ।)

चैत्र कृष्ण ५ शनि। २७ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से दिन १:३७ तक। ग्रह मुख आहुति गुरु सूर्योदय से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से दिन १:३७ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:१९ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –ज्येष्ठा में व्यतिपात से पहले रात १०:१९ बजे से रात्रिअंत ५:४३ बजे तक पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:१९ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –अनुराधा में सूर्योदय से रात १०:१९ बजे तक राजसेवा, मुहूर्त हैं। अनुराधा में सूर्योदय से दिन १:३१ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। (अनुराधा में भौम वेध केतु वेध, ।)

चैत्र कृष्ण ६ रवि। २८ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – मूल में भद्रा पश्चात् व्यतिपात पश्चात रात ६:०८ बजे से रात्रिअंत तक सीमन्त पुंसवन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –मूल में भद्रा पश्चात् व्यतिपात पश्चात रात ६:०८ बजे से रात्रिअंत तक नलकूप कुआ खनन, चंद्रमा जलराशि में रा. १२:३४ तक, धान्य रोपण, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

चैत्र कृष्ण ७ चंद्र। २९ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास गौरी के समीप सायं ५:१२ से रातअंत । {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – पू.षा. में रात ३:१८ बजे से रात्रिअंत तक मंत्र दीक्षा, । {४} कृषि मुहूर्त –मूल में सूर्योदय से रात ३:१८ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य रोपण, । पू.षा. में रात ३:१८ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – अभाव। {६} विविध मुहुर्त –अभाव।

चैत्र कृष्ण ८ मंगल। ३० मार्च २०२७। मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ७:३८ तक।

चैत्र कृष्ण ९ बुध। ३१ मार्च २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अभाव। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में रात १०:११ बजे से रात्रिअंत तक अन्नप्राशन, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में प्रात: ६:१८ बजे से रात्रिअंत तक धान्य विक्रय, । उ.षा. में रात १०:११ बजे से रात्रिअंत तक धान्य छेदन, कटाई, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.षा. में रात १०:११ बजे से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में रात १०:११ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं।

चैत्र कृष्ण १० गुरु। १ अप्रैल २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से रातअंत। शिववास कैलाश पर रात १२:४२ से रातअंत । उ.षा. में सूर्योदय से प्रात: ९:२२ बजे तक अग्न्याधान, । उ.षा. में एवं श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन ११:२७ बजे तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, । श्रवण में भद्रा से पहले प्रात: ९:२२ बजे से दिन ११:२७ बजे एवं रात १२:४० बजे से रात्रिअंत तक धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – उ.षा. में एवं श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन ११:२७ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – उ.षा. में सूर्योदय से प्रात: ९:२२ बजे तक प्रसूति स्नान, मंत्र दीक्षा, । उ.षा. में एवं श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन ११:२७ बजे तक सीमन्त पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, पुनर्विवाह, । उ.षा. में एवं श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन ११:२७ बजे तक अन्नप्राशन, । श्रवण में भद्रा से पहले प्रात: ९:२२ बजे से दिन ११:२७ बजे एवं रात १२:४० बजे से रात्रिअंत तक शल्यक्रिया ऑपरेशन, औषधि सेवन–निर्माण, प्रसूति क्वाथ, । श्रवण में भद्रा से पहले प्रात: ९:२२ बजे से दिन ११:२७ बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । {४} कृषि मुहूर्त –उ.षा. में सूर्योदय से प्रात: ९:२२ बजे तक धान्य रोपण, धान्य विक्रय, । उ.षा. में एवं श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन ११:२७ बजे तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – उ.षा. में एवं श्रवण में भद्रा से पहले सूर्योदय से दिन ११:२७ बजे तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, । श्रवण में भद्रा से पहले प्रात: ९:२२ बजे से दिन ११:२७ बजे एवं रात १२:४० बजे से रात्रिअंत तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –उ.षा. में सूर्योदय से प्रात: ९:२२ बजे तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। श्रवण में भद्रा से पहले प्रात: ९:२२ बजे से दिन ११:२७ बजे एवं रात १२:४० बजे से रात्रिअंत तक यात्रा, सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं।

चैत्र कृष्ण ११ शुक्र। २ अप्रैल २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – शिववास कैलाश पर सूर्योदय से रात २:५१ तक। वृषारूढ रात २:५१ से रातअंत । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक शांति पौष्टिक कर्म अनुष्ठान, धर्मशास्त्र पुराण प्रारंभ, । {२} वास्तु मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से दिन १२:१३ बजे तक गृहछादन छत,, । {३} संस्कार मुहूर्त – श्रवण में सूर्योदय से दिन १२:१३ बजे तक अक्षरारंभ, स्कूल प्रवेश, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक जातकर्म, नामकरण, जैन विद्यारंभ पुनर्विवाह, । {४} कृषि मुहूर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक हल प्रवहण जुताई, धान्य छेदन, कटाई, धान्य संग्रह, ईंधन स्थापन, । धनिष्ठा में दिन १२:१३ बजे से रात्रिअंत तक धान्य रोपण, धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात्रिअंत तक धान्यवृद्धि, लाभार्थ अन्न भंडारण, पूंजी निवेश, । श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात २:४९ बजे तक धनसंग्रह, वैंकखाता खोलना, । धनिष्ठा में दिन १२:१३ बजे से रात २:४९ बजे तक वैंक लॉकर खोलना, । {६} विविध मुहुर्त –श्रवण में एवं धनिष्ठा में सूर्योदय से रात २:४९ बजे तक यात्रा, मुहूर्त हैं। श्रवण में सूर्योदय से दिन १२:१३ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, वाहन क्रय, मुहूर्त हैं। धनिष्ठा में दिन १२:१३ बजे से रात्रिअंत तक नवीन वस्त्र–आभूषण, मुहूर्त हैं। (धनिष्ठा में गुरु वेध रात १:३१ वजे से रातअंत ८:१० वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति।)

चैत्र कृष्ण १२ शनि। ३ अप्रैल २०२७। {१} अनुष्ठान मुहूर्त – अग्निवास पृथ्वी पर दिनरात। ग्रह मुख आहुति राहु सूर्योदय से दिन २:३९। केतु दिन २:३९ से रातअंत। शिववास वृषारूढ सूर्योदय से रात ४:२८ तक। {२} वास्तु मुहूर्त – अभाव। {३} संस्कार मुहूर्त – धनिष्ठा में सूर्योदय से दिन २:३९ बजे तक पुनर्विवाह, । धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात ४:२७ बजे तक औषधि सेवन–निर्माण, प्रस. ूति क्वाथ, । {४} कृषि मुहूर्त –धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात ४:२७ बजे तक धान्य विक्रय, पशु क्रय विक्रय, । {५} आर्थिक कर्म मुहूर्त – धनिष्ठा में एवं शतभिषा में सूर्योदय से रात ४:२७ बजे तक पूंजी निवेश, । {६} विविध मुहुर्त –शतभिषा में दिन २:३९ बजे से रात ४:२७ बजे तक सर्व वस्तु क्रय, मुहूर्त हैं। (धनिष्ठा में गुरु वेध प्रात: ६:१४ से प्रात: ८:०७ वजे तक।धनिष्ठा में राहु युति। शतभिषा में शुक्र युति।)

चैत्र कृष्ण १३ रवि। ४ अप्रैल २०२७। शतभिषा में निर्बल चंद्र। पू.भा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव।

चैत्र कृष्ण १४ चंद्र। ५ अप्रैल २०२७। पू.भा. में निर्बल चंद्र। उ.भा. में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। अग्निवास पृथ्वी पर सूर्योदय से रात ५:४६ तक। ग्रह मुख आहुति केतु सूर्योदय से रातअंत। शिववास गौरी के समीप रात ५:४६ से रातअंत ।

चैत्र कृष्ण ३० मंगल। ६ अप्रैल २०२७। उ.भा. में निर्बल चंद्र। रेवती में निर्बल चंद्र दोष मुहूर्त अभाव। शिववास गौरी के समीप सूर्योदय से रात ५:२६ तक।

चैत्र शुक्लपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शकः १९४८। रौद्र संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। वसन्त ऋतुः। श्री सूर्य उत्तरायन-दक्षिणगोले। मार्च-अप्रैल ईसवी सन् २०२६। मार्च-अप्रैल। वंगला सन् १४३२ । वीर निर्वाण संवत् २५५२।

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदय पश्चिमेः। मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र- उत्तरभाद्रपदे रविः, शतभिषायां भौमः, शतभिषायां वुधः, पुनर्वसे गुरौ, रेवत्यां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, शतभिषायां राहु, पूर्वाफाल्गुण्यां केतु।
२	शु.	५०।०९	रा.२:३१	रेव	५०।०	रा. २:२८	ब्रह्म	३१।२५	रा.१०:१४	बाल	२३।७	दि.३:४३	कौल	मीन	५०।००	रा. २:२८ तक	२९।५९	६:२८	६:२७	११।०५।१२।१८	६०	श्रीवत्स	२० मार्च	वालेन्दु व्रत। नेत्र व्रत। श्री झूलेलाल ज.।मीन खरमास। पंचक समाप्त रा. २ :२८ समये। मूल दिनरात। श्री सूर्य उत्तरगोल प्रवेश रात्रि ८:१२। (A)
३	श.	४३।४५	रा.११:५७	अश्वि	४५।२८	रा. १२:३८	ऐंद्र	३१।२५	रा.७:०१	तैति	१७।०	दि.१:१५	गर	मेष	--	दिनरात	३०।०२	६:२७	६:२८	११।०६।११।५३	६०	सौम्य	२१ मार्च	गणगौर व्रत। मत्स्यावतार। मन्वादितिथि। दोलनोत्सव।मीन खरमास। मूल सू.उ.से रात १२:३८ तक। रवियोग रात्रि १२:३८ से रात्रिअंत। (B)
४	र.	३७।१०	रा.९:१८	भर	४०।४४	रा. १०:४३	वैधृ	२३।१०	दि.३:४२	वणि	१०।२९	दि.१०:३७	भद्रा	मेष	५४।३३	रा. ४:१५ तक	३०।०६	६:२६	६:२८	११।०७।११।२५	६०	कालदंड	२२ मार्च	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। मीन खरमास। रवियोग सू.उ.से रात्रि १०:४३ तक । ज्वालामुखीयो रात्रि ९:१८ से रात्रि १०:४३ तक। भद्रा दिन (C)
५	चं.	३०।३९	सा.६:४०	कृत्ति	३६।६	रा. ८:५१	विष्कु	१४।५५	दि.१२:२३	बव	३।५२	प्रा.७:५७	बाल	वृष	--	दिनरात	३०।०९	६:२५	६:२८	११।०८।१०।५६	५९	स्थिर	२३ मार्च	कल्पादि तिथि। श्री लक्ष्मी व्रत।मीन खरमास। रवियोग रात्रि ८:५१ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ८:५१ से रातअंत।
६	मं.	२४।२८	दि.४:११	रोहि	३१।५०	रा. ७:०८	प्रीति, आयु	६।५१, ५९।५८	दि.९:०८, रा.६:२३	तैति	२४।२८	दि.४:११	गर	वृष	५९।४८	रा. ६:१९ तक	३०।१२	६:२४	६:२९	११।०९।१०।२५	५९	मातंग	२४ मार्च	श्री स्कन्द षष्ठी। कुमारव्रत।मीन खरमास। रवियोग सू.उ.से रात्रि ७:०८ तक । द्विपुष्कर योग रात्रि ७। ०८ से से रातअंत
७	बु.	१८।४९	दि.१:५४	मृग	२८।८	सा. ५:३८	सौभ	५२।७	रा.३:१३	वणि	१८।४९	दि.१:५४	भद्रा	मिथुन	××	दिनरात	३०।१६	६:२३	६:२९	११।१०।०९।५२	५९	अमृत	२५ मार्च	कमलासप्तमी जैन। मोदनव्रत। धातासप्तमीव्रत। सूर्यव्रतारंभ।मीन खरमास। सर्वार्थसिद्धी सायं ५:३८ पर्यन्त। भद्रा दिन १:५४ से रात्रि १२:५३ (D)
८	गु.	१३।५३	दि.११:५५	आर्द्रा	२५।९	दि. ४:२६	शोभ	४५।४१	रा.१२:३८	बव	१३।५३	दि.११:५५	बाल	मिथुन	××	दिनरात	३०।१९	६:२२	६:२९	११।११।०९।१७	५९	काण	२६ मार्च	श्रीराम नवमी। पुनर्वसुभे श्रेष्ठ। नवरात्र दुर्गा अष्टमी व्रत। अशोक कलिका प्राशनव्रत।दुर्गा अष्टमी व्रत।मीन खरमास। रवियोग दिन ४:२६ से (E)
९	शु.	९।४४	दि.१०:१५	पुन	२२।६०	दि. ३:३३	अति	३९।५५	रा.१०:१९	कौल	९।४४	दि.१०:१५	तैति	मिथुन	८।२४	दि. ९:४३ तक	३०।२३	६:२१	६:३०	११।१२।०८।४०	५९	लुम्बक	२७ मार्च	मातृकाव्रत।मीन खरमास। रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन ३:३३ पर्यन्त। शुक्र पुष्य योग दिन ३:३३ से रातअंत।
१०	श.	६।२८	दि.८:५५	पुष्य	२१।४२	दि. ३:०१	सुक	३४।५१	रा.८:१६	गर	६।२८	दि.८:५५	वणि	कर्क	××	दिनरात	३०।२६	६:२०	६:३०	११।१३।०८।०१	५९	मित्र	२८ मार्च	मीन खरमास। मूल दिन ३:०१ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से दिन ३:०१ तक । शनि पुष्य योग सू उ से दिन ३:०१ तक। भद्रा रात्रि ८:२६ से (F)
११	र.	४।०४	प्रा.७:५७	श्ले	२१।१६	दि. २:४९	धृति	३०।२८	सा.६:३०	भद्रा	४।४	प्रा.७:५७	बव	कर्क	२१।१६	दि. २:४९ तक	३०।२९	६:१९	६:३१	११।१४।०७।१९	५९	वज्र	२९ मार्च	कामदा एकादशी व्रत सर्वे। मीन खरमास। मूल दिनरात। भद्रा सू.उ.से प्रातः ७:५७(भूमि)।
१२	चं.	२।३४	प्रा.७:२०	मघा	२१।४२	दि. २:५९	शूल	२६।४८	सा.५:०१	बाल	२।३४	प्रा.७:२०	कौल	सिंह	××	दिनरात	३०।३३	६:१८	६:३१	११।१५।०६।३६	५९	ध्वांक्ष	३० मार्च	सोमप्रदोष व्रतं। मदन द्वादशी।मीन खरमास। मूल सू.उ.से दिन २:५९ तक। रवियोग दिन २:५९ से रात्रिअंत।
१३	मं.	१।५८	प्रा.७:०४	पू.फा.	२३।३	दि. ३:३०	गंड	२३।५२	दि.३:५०	तैति	१।५८	प्रा.७:०४	गर	सिंह	३८।३१	रा. ९:४२ तक	३०।३६	६:१७	६:३१	११।१६।०५।५१	५९	धूम्र	३१ मार्च	महावीर जयंती जैन। मदनपूजन।मीन खरमास। रवियोग सू.उ.से दिन ३:३० तक , पुनः रात्रि ८:०८ से रात्रिअंत। क्रांतिसाम्य दिन १०:३६ से (G)
१४	बु.	२।२१	प्रा.७:१२	उ.फा.	२५।२१	दि. ४:२५	बृद्धि	२१।४२	दि.२:५७	वणि	२।२१	प्रा.७:१२	भद्रा	कन्या	××	दिनरात	३०।३९	६:१६	६:३२	११।१७।०५।०३	५९	प्रवर्ध	०१ अप्रै	मीन खरमास। रवियोग सू.उ.से दिन ४:२५ तक। सर्वार्थसिद्धी दिन ४:२५ से रातअंत। भद्रा प्रातः ७:१२ से रात्रि ७:२१ (पाताल)। पूर्वभाद्रपदे (H)
१५	गु.	३।४६	प्रा.७:४६	हस्त	२८।४२	सा. ५:४४	ध्रुव	२०।२२	दि.२:२४	बव	३।४६	प्रा.७:४६	बाल	कन्या	××	दिनरात	३०।४३	६:१५	६:३२	११।१८।०४।१४	५९	राक्षस	०२ अप्रै	पूर्णिमा। हनुमत उत्सवः। मन्वादि तिथि।मीन खरमास। मीने भौमः दिन ३:३६ समये।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-३५

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय उदय	अस्त
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
२	शु.	११।१८।०४।१५	८५९	१०।१९।३०।३०	४७	१०।१४।१७।३४	-२	२।२०।५९।१८	२	११।२२।३९।२४	७४	११।०९।५०।०५	७	१०।१३।४८।३१	××	७:४५
३	श.	०।०२।२३।०६	८६७	१०।२०।१७।३७	४७	१०।१४।१५।५४	४	२।२१।०१।०७	२	११।२३।५३।३७	७४	११।०९।५७।३२	७	१०।१३।४५।२१	७:२६	८:५३
४	र.	०।१६।४९।५९	८६९	१०।२१।४।४४	४७	१०।१४।२०।७	१०	२।२१।०३।०७	२	११।२५।०७।४८	७४	११।१०।०५।००	७	१०।१३।४२।१०	८:१२	१०:०४
५	चं.	१।०१।१९।०३	८६६	१०।२१।५१।४९	४७	१०।१४।२९।५९	१५	२।२१।०५।१९	२	११।२६।२१।५८	७४	११।१०।१२।२८	७	१०।१३।३८।५९	९:०५	११:१७
६	मं.	१।१५।४४।४९	८५८	१०।२२।३८।५३	४७	१०।१४।४५।१४	२०	२।२१।०७।४२	३	११।२७।३६।०५	७४	११।१०।१९।५७	७	१०।१३।३५।४९	१०:०४	१२:२८
७	बु.	२।००।०२।४७	८४७	१०।२३।२५।५७	४७	१०।१५।५।३६	२५	२।२१।१०।१५	३	११।२८।५०।१०	७४	११।१०।२७।२५	७	१०।१३।३२।३८	११:०९	१:३५
८	गु.	२।१४।०९।५७	८३५	१०।२४।१२।५९	४७	१०।१५।३०।४९	३०	२।२१।१३।००	३	०।००।०४।१३	७४	११।१०।३४।५४	७	१०।१३।२९।२८	१२:१७	२:३४
९	शु.	२।२८।०४।४८	८२२	१०।२५।०।१	४७	१०।१६।०।३८	३४	२।२१।१५।५६	३	०।०१।१८।१४	७४	११।१०।४२।२२	७	१०।१३।२६।१७	१:२५	३:२५
१०	श.	३।११।४७।०४	८१०	१०।२५।४७।१	४७	१०।१६।३४।४७	३८	२।२१।१९।०३	३	०।०२।३२।१३	७४	११।१०।४९।५०	७	१०।१३।२३।०६	२:३१	४:०८
११	र.	३।२५।१७।०८	७९८	१०।२६।३४।०	४७	१०।१७।१३।२	४२	२।२१।२२।२१	३	०।०३।४६।११	७४	११।१०।५७।१८	७	१०।१३।१९।५६	३:३२	४:४६
१२	चं.	४।०८।३५।२८	७८७	१०।२७।२०।५८	४७	१०।१७।५५।८	४६	२।२१।२५।४९	४	०।०५।००।०६	७४	११।११।०४।४६	७	१०।१३।१६।४५	४:३०	५:२०
१३	मं.	४।२१।४२।१८	७७५	१०।२८।७।५५	४७	१०।१८।४०।५२	४९	२।२१।२९।२८	४	०।०६।१३।५८	७४	११।११।१२।१४	७	१०।१३।१३।३५	५:२५	५:५१
१४	बु.	५।०४।३७।२८	७६३	१०।२८।५४।५०	४७	१०।१९।३०।२	५२	२।२१।३३।१७	४	०।०७।२७।४९	७४	११।११।१९।४१	७	१०।१३।१०।२४	६:१७	६:२०
१५	गु.	५।१७।२०।४२	७५१	१०।२९।४१।४४	४७	१०।२०।२२।२६	५५	२।२१।३७।१७	४	०।०८।४१।३८	७४	११।११।२७।०७	७	१०।१३।०७।१३	७:०८	६:५१

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

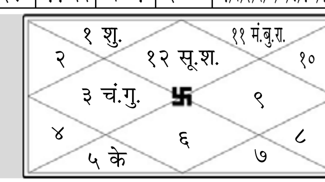
दिनांक	प्रातः पूर्व मीने	प्रातः मेषे	दिन वृषे	दिन मिथुने	दिन कर्के	दिन सिंहे	सायं कन्यायां	रात्रि तुलायां	रात्रि वृश्चिके	रात्रि धनुषे	रात्रि मकरे	रात्रि कुंभे	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
२० मार्च	६:१२	७:४२	९:२३	११:२१	१:३५	३:५१	६:०४	८:१५	१०:३०	१२:४७	२:५२	४:३९	२,३,४,६,७,९,११,
२१ मार्च	६:०८	७:३८	९:१९	११:१७	१:३१	३:४८	५:६०	८:११	१०:२६	१२:४३	२:४८	४:३५	२,३,४,६,७,८,९,११,
२२ मार्च	६:०४	७:३४	९:१५	११:१३	१:२७	३:४४	५:५६	८:०७	१०:२२	१२:३९	२:४४	४:३१	२,३,४,६,७,८,९,११,
२३ मार्च	५:६०	७:३१	९:११	११:०९	१:२३	३:४०	५:५२	८:०३	१०:१८	१२:३५	२:४०	४:२७	३,४,६,७,८,९,११,
२४ मार्च	५:५६	७:२७	९:०७	११:०५	१:१९	३:३६	५:४८	७:५९	१०:१४	१२:३१	२:३६	४:२३	२,३,६,७,८,९,११,
२५ मार्च	५:५२	७:२३	९:०३	११:०१	१:१५	३:३२	५:४४	७:५५	१०:१०	१२:२७	२:३२	४:१९	२,३,६,७,९,११,
२६ मार्च	५:४८	७:१९	८:५९	१०:५७	१:११	३:२८	५:४०	७:५१	१०:०६	१२:२३	२:२८	४:१५	१,२,३,४,६,७,९,१०,११,
२७ मार्च	५:४४	७:१५	८:५५	१०:५४	१:०७	३:२४	५:३६	७:४७	१०:०३	१२:१९	२:२४	४:११	१,२,३,४,६,७,९,१०,११,
२८ मार्च	५:४०	७:११	८:५१	१०:५०	१:०३	३:२०	५:३२	७:४३	९:५९	१२:१५	२:२०	४:०७	१,२,३,६,७,९,१०,११,
२९ मार्च	५:३६	७:०७	८:४७	१०:४६	१२:५९	३:१६	५:२८	७:४०	९:५५	१२:११	२:१७	४:०३	१,२,३,६,७,८,९,१०,११,
३० मार्च	५:३२	७:०३	८:४३	१०:४२	१२:५६	३:१२	५:२४	७:३६	९:५१	१२:०७	२:१३	३:५९	१,२,३,६,७,८,९,१०,११,
३१ मार्च	५:२८	६:५९	८:३९	१०:३८	१२:५२	३:०८	५:२०	७:३२	९:४७	१२:०३	२:०९	३:५५	१,२,३,४,६,७,८,९,१०,११,
०१ अप्रै	५:२४	६:५५	८:३५	१०:३४	१२:४८	३:०४	५:१७	७:२८	९:४३	११:५९	२:०५	३:५१	१,२,३,४,६,७,८,९,१०,११,
०२ अप्रै	५:२०	६:५१	८:३१	१०:३०	१२:४४	३:००	५:१३	७:२४	९:३९	११:५५	२:०१	३:४७	१,२,३,६,७,८,९,१०,११,

तिथि २
शुक्रवार
इष्ट ०।०



चैत्रशुक्ल २ पूर्वभाद्रपदे भौम तिलहन, सुपारी और बस्त्र महंगे। चैत्रशुक्ल १४ पूर्वभाद्रपदे बुध - दुर्भिक्षमथपूभायांक्षेममारोग्यतास्मृता।। पूर्वाभाद्रपद में हो तो दुर्भिक्ष हो और क्षेम तथा आरोग्य हो।। (A) अमृतसिद्धियोग रात्रि २:२८ पर्यन्त। सर्वार्थसिद्धी रात्रि २:२८ से रातअंत। पूर्वभाद्रपदे भौमः रात्रि ९:२९ समये। (B) वैधृति रा.७:०१ वजे तक। से रातअंत। बुध मार्गी प्रातः ०:३८ समये (C) १०:३७ से रात्रि ९:१८ (स्वर्ग)। वैधृति सू.उ.से दि.३:४२ वजे तक। (D) (स्वर्ग)। शुक्रः मेषे अश्विन्यांश्च रात्रि ५:०१ समये। (E) रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन ४:२६ से रातअंत। (F) रात्रिअंत (भूमि)। मघायां केतु २९:४८ समये। (G) दिन २:५३। क्रांतिसाम्य दिन १०:३६ से दिन २:५३। रेवत्यां रवि रात्रि ८:०८ समये। (H) वुधः रात्रि ७:५९ समये।

तिथि ९
शुक्रवार
इष्ट ०।०



वैशाख कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शकः १९४८। रौद्र संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। वसन्त ऋतुः। श्री सूर्य उत्तरायन-उत्तरगोले। अप्रैल ईसवी सन् २०२६। अप्रैल। वंगला सन् १४३२ -१४३३ ।वीर निर्वाण संवत् २५५२।

१५		तिथि		नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल		
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट
१	शु.	६।१८	दि.८:४५	चित्रा	३३।६	रा. ७:२९	व्या	१९।५३	दि.२:११	कौल	६।१८	दि.८:४५	तैति	कन्या	०।३९	प्रा. ६:३० तक
२	श.	९।५६	दि.१०:१२	स्वा	३८।३३	रा. ९:३८	हर्ष	२०।१५	दि.२:१९	गर	९।५६	दि.१०:१२	वणि	तुला	--	दिनरात
३	र.	१४।३६	दि.१२:०३	विशा	४४।५५	रा. १२:१०	वज्र	२१।२३	दि.२:४५	भद्रा	१४।३६	दि.१२:०३	बव	तुला	२८।१६	सा. ५:३० तक
४	चं.	२०।०५	दि.२:१३	अनु	५१।५७	रा. २:५८	सिद्धि	२३।७	दि.३:२६	बाल	२०।५	दि.२:१३	कौल	वृश्चिक	--	दिनरात
५	मं.	२६।०४	दि.४:३६	ज्ये	५९।२०	रा. ५:५४	व्यति	२५।१५	दि.४:१६	तैति	२६।४	दि.४:३६	गर	वृश्चिक	५९।२०	रा. ५:५४ तक
६	बु.	३२।०९	रा.७:०१	मूल	६०।०	वृद्धि	वरी	२७।२८	सा.५:०८	वणि	३२।९	रा ७:०१	भद्रा	धनु	××	दिनरात
७	गु.	३७।५१	रा.९:१७	मूल	६।३४	दि. ८:४६	परि	२९।२५	सा.५:५४	भद्रा	५।७	दि.८:११	बव	धनु	××	दिनरात
८	शु.	४२।३९	रा.११:११	पू.षा	१३।१०	दि. ११:२४	शिव	३०।४४	सा.६:२५	बाल	१०।२५	दि.१०:१८	कौल	धनु	२९।३८	सा. ५:५९ तक
९	श.	४६।०५	रा.१२:३३	उ.षा	१८।३८	दि. १:३४	सिद्ध	३१।४	सा.६:३२	तैति	१४।३४	दि.११:५६	गर	मकर	××	दिनरात
१०	र.	४७।४६	रा.१:१२	श्रव	२२।३३	दि. ३:०७	साध्य	३०।७	सा.६:०९	वणि	१७।७	दि.१२:५७	भद्रा	मकर	५३।५९	रा. ३:४१ तक
११	चं.	४७।२८	रा.१:०४	धनि	२४।३८	दि. ३:५६	शुभ	२७।४१	सा.५:०९	बव	१७।४९	दि.१:१२	बाल	कुंभ	××	दिनरात
१२	मं.	४५।१०	रा.१२:०८	शत	२४।४८	दि. ३:५९	शुक्ल	२३।४२	दि.३:३३	कौल	१६।३२	दि.१२:४१	तैति	कुंभ	××	दिनरात
१३	बु.	४१।००	रा.१०:२७	पू.भा	२३।५	दि. ३:१७	ब्रह्म	१८।१२	दि.१:२०	गर	१३।२०	दि.११:२३	वणि	कुंभ	८।४७	दि. ९:३४ तक
१४	गु.	३५।१७	रा.८:०९	उ.भा	१९।४४	दि. १:५६	ऐंद्र	११।२२	दि.१०:३५	भद्रा	८।२५	दि.९:२४	शकु	मीन	××	दिनरात
३०	शु.	२८।२०	सा.५:२२	रेव	१५।२	दि. १२:०२	वैधृ	३।२३	प्रा.७:२२	चतु	२।५	प्रा.६:५२	नाग	मीन	१५।०२	दि. १२:०२ तक

(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदयपश्चिमेः | मूल निवास पाताले

पक्षारंभिक नक्षत्र-रेवत्यां रविः, पूर्वभाद्रपदे भौमः, पूर्वभाद्रपदे वुधः, पुनर्वसे गुरौ, अश्विन्यां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, शतभिषायां राहु, मघायां केतु।

तिथि	श्री सूर्य दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति	आनंदादि योग	दिनांक	
१	३०।४६	६:१४	६:३३	११।१९।०३।२३	५९	मुसल	०३ अप्रै	गलन्तिका बंधन। मीन खरमास।
२	३०।४९	६:१३	६:३३	११।२०।०२।२९	५९	सिद्धि	०४ अप्रै	मीन खरमास। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ९:३८ पर्यन्त। भद्रा रात्रि ११:०५ से रात्रिअंत (पाताल)।
३	३०।५३	६:१२	६:३३	११।२१।०१।३४	५९	उत्पात	०५ अप्रै	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। मीन खरमास। भद्रा सू.उ.से दिन १२:०३(पाताल)। भरण्यां शुक्रः रात्रि १२:४९ समये।
४	३०।५६	६:११	६:३४	११।२२।००।३६	५९	मानस	०६ अप्रै	मीन खरमास। मूल रात २:५८ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि २:५८ पर्यन्त। व्यतिपात् दि.३:२६ वजे तक। से रातअंत। उत्तरभाद्रपदे भौमः रात्रि १०:०३ समये।
५	३०।५९	६:१०	६:३४	११।२२।५९।३७	५९	मुद्गर	०७ अप्रै	मीन खरमास। मूल दिनरात। रवियोग रात्रि ५:५४ से रात्रिअंत। व्यतिपात् सू.उ.से दि.४:१६ वजे तक।।
६	३१।०३	६:९	६:३४	११।२३।५८।३५	५९	ध्वज	०८ अप्रै	मीन खरमास। मूल सू.उ.से वृद्धि दिनरात तक। रवियोग सू.उ.से रात्रि ८:४८ तक । भद्रा रात्रि ७:०१ से रा.अंत (पाताल)।
७	३१।०६	६:८	६:३५	११।२४।५७।३२	५९	धूम्र	०९ अप्रै	कालाष्टमी व्रतं। मीन खरमास। मूल सू.उ.से दिन ८:४६ तक। रवियोग सू.उ.से दिन ८:४६ तक । भद्रा सू.उ.से दिन ८:११(पाताल)।
८	३१।०९	६:८	६:३५	११।२५।५६।२६	५९	प्रवर्ध	१० अप्रै	शीतला अष्टमी (स्कन्दपुराणोक्त)। कालाष्टमी ।मीन खरमास। मीने बुधः रात्रि १:०७ समये।
९	३१।१२	६:७	६:३६	११।२६।५५।१९	५९	राक्षस	११ अप्रै	चण्डिका नवमी ।मीन खरमास। सर्वार्थसिद्धी दिन १:३४ से रातअंत।
१०	३१।१६	६:६	६:३६	११।२७।५४।०९	५९	गद	१२ अप्रै	मीन खरमास। पंचक प्रारंभ रा. ३:४१ तक समये। भद्रा दिन १२:५७ से रात्रि १:१२ (भूमि)। (&) सू.उ.से प्रा.७:२२ वजे तक।
११	३१।१९	६:५	६:३६	११।२८।५२।५८	५९	शुभ	१३ अप्रै	वरूथिनी एकादशी व्रत सर्वे। मीन खरमास। पंचक दिनरात। क्रांतिसाम्य रात्रि ११:२१ से रात्रि ३:३५। क्रांतिसाम्य रात्रि ११:२१ से रात्रि ३:३५। ($)
१२	३१।२२	६:४	६:३७	११।२९।५१।४४	५९	मृत्यु	१४ अप्रै	सेन जयंती ।मीन खरमास। पंचक दिनरात। मेषे अश्विन्यां च रवि दिन ९:२७ समये। (%) तक। से रातअंत। कृत्तिकायां शुक्रः रात्रि १०:०४ समये।
१३	३१।२५	६:३	६:३७	०।००।५०।२९	५९	पद्म	१५ अप्रै	बुधप्रदोष व्रतं। मासिक शिवरात्रि व्रतं। पंचक दिनरात। भद्रा रात्रि १०:२७ से रात्रिअंत (भूमि)। ($) उत्तरभाद्रपदे वुधः दिन २:१३ समये।
१४	३१।२८	६:२	६:३८	०।०१।४९।१२	५९	छत्र	१६ अप्रै	पंचक दिनरात। मूल दिन १:५६ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन १:५६ से रातअंत। भद्रा सू.उ.से दिन ९:२४(भूमि)। वैघृति दि.१०:३५ वजे (%)
३०	३१।३१	६:१	६:३८	०।०२।४७।५२	५९	श्रीवत्स	१७ अप्रै	अमावस्या। पंचक समाप्त दि. १२ :२ समये। मूल दिनरात। अमृतसिद्धियोग दिन १२:०२ पर्यन्त। सर्वार्थसिद्धी दिन १२:०२ से रातअंत। वैघृति (&)

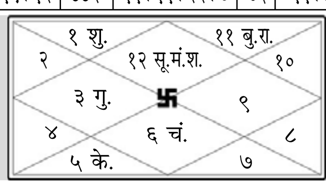
सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-३६

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय	
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	उदय दिन	अस्त रात
१	शु.	५।२९।५१।५४	७४०	११।०।२८।३७	४७	१०।२१।१७।५५	५८	२।२१।४१।२७	४	०।०९।५५।२५	७४	११।११।३४।३४	७	१०।१३।०४।०३	७:५८	७:०५
२	श.	६।१२।११।२९	७२९	११।१।१५।२८	४७	१०।२२।१६।१९	६१	२।२१।४५।४८	५	०।११।०९।०९	७४	११।११।४१।५९	७	१०।१३।००।५२	८:४९	७:३८
३	र.	६।२४।२०।३७	७२१	११।२।२।१७	४७	१०।२३।१७।२८	६४	२।२१।५०।१८	५	०।१२।२२।५१	७४	११।११।४९।२४	७	१०।१२।५७।४१	९:४०	८:१३
४	चं.	७।०६।२१।१३	७१५	११।२।४९।६	४७	१०।२४।२१।१५	६६	२।२१।५४।५९	५	०।१३।३६।३१	७४	११।११।५६।४८	७	१०।१२।५४।३१	१०:३१	८:५४
५	मं.	७।१८।१५।५५	७१२	११।३।३५।५३	४७	१०।२५।२७।३२	६९	२।२१।५९।४९	५	०।१४।५०।०९	७४	११।१२।०४।१२	७	१०।१२।५१।२०	११:२१	९:३८
६	बु.	८।००।०८।००	७१३	११।४।२२।३८	४७	१०।२६।३६।१३	७१	२।२२।०४।५०	५	०।१६।०३।४४	७४	११।१२।११।३५	७	१०।१२।४८।१०	१२:१०	१०:२६
७	गु.	८।१२।०१।१६	७१९	११।५।९।२१	४७	१०।२७।४७।१२	७३	२।२२।१०।००	५	०।१७।१७।१७	७४	११।१२।१८।५६	७	१०।१२।४४।५९	१२:५५	११:१८
८	शु.	८।२४।००।०२	७२९	११।५।५६।३	४७	१०।२९।०।२३	७५	२।२२।१५।२०	५	०।१८।३०।४८	७३	११।१२।२६।१७	७	१०।१२।४१।४८	१:३६	१२:१२
९	श.	९।०६।०८।५९	७४४	११।६।४२।४३	४७	११।०।१५।४२	७७	२।२२।२०।४९	६	०।१९।४४।१७	७३	११।१२।३३।३७	७	१०।१२।३८।३८	२:१५	१:०६
१०	र.	९।१८।३२।५९	७६४	११।७।२९।२२	४७	११।१।३३।४	७९	२।२२।२६।२८	६	०।२०।५७।४३	७३	११।१२।४०।५५	७	१०।१२।३५।२७	२:५०	२:०१
११	चं.	१०।०१।१६।४१	७८७	११।८।१५।५९	४७	११।२।५२।२६	८१	२।२२।३२।१६	६	०।२२।११।०७	७३	११।१२।४८।१३	७	१०।१२।३२।१६	३:२५	२:५८
१२	मं.	१०।१४।२३।५६	८१३	११।९।२।३३	४७	११।४।१३।४४	८३	२।२२।३८।१४	६	०।२३।२४।२९	७३	११।१२।५५।२९	७	१०।१२।२९।०६	४:०१	३:५५
१३	बु.	१०।२७।५७।०३	८३९	११।९।४९।६	४७	११।५।३६।५६	८५	२।२२।४४।२०	६	०।२४।३७।४८	७३	११।१३।०२।४४	७	१०।१२।२५।५५	४:३८	४:५६
१४	गु.	११।११।५६।१६	८६३	११।१०।३५।३८	४६	११।७।१।५८	८७	२।२२।५०।३६	६	०।२५।५१।०४	७३	११।१३।०९।५८	७	१०।१२।२२।४४	५:१८	६:००
३०	शु.	११।२६।१९।१२	८८२	११।११।२२।७	४६	११।८।२८।४९	८९	२।२२।५७।००	७	०।२७।०४।१९	७३	११।१३।१७।१०	७	१०।१२।१९।३४	××	७:०८

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

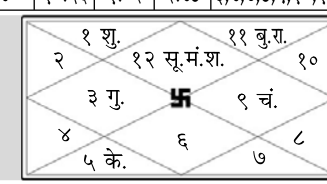
दिनांक	प्रातः पूर्व मीने	प्रातः मेषे	दिन वृषे	दिन मिथुने	दिन कर्के	दिन सिंहे	सायं कन्यायां	रात्रि तुलायां	रात्रि वृश्चिके	रात्रि धनुषे	रात्रि मकरे	रात्रि कुंभे	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
०३ अप्रै	५:१७	६:४७	८:२८	१०:२६	१२:४०	२:५६	५:०९	७:२०	९:३५	११:५१	१:५७	३:४४	१,२,३,६,७,९,१०,११,
०४ अप्रै	५:१३	६:४३	८:२४	१०:२२	१२:३६	२:५२	५:०५	७:१६	९:३१	११:४७	१:५३	३:४०	१,२,३,६,७,९,१०,११,
०५ अप्रै	५:०९	६:३९	८:२०	१०:१८	१२:३२	२:४८	५:०१	७:१२	९:२७	११:४३	१:४९	३:३६	१,२,३,६,७,१०,११,
०६ अप्रै	५:०५	६:३५	८:१६	१०:१४	१२:२८	२:४५	४:५७	७:०८	९:२३	११:४०	१:४५	३:३२	१,२,३,६,७,९,१०,११,
०७ अप्रै	५:०१	६:३१	८:१२	१०:१०	१२:२४	२:४१	४:५३	७:०४	९:१९	११:३६	१:४१	३:२८	१,२,३,६,७,९,१०,११,
०८ अप्रै	४:५७	६:२८	८:०८	१०:०६	१२:२०	२:३७	४:४९	७:००	९:१५	११:३२	१:३७	३:२४	१,२,३,४,६,७,९,१०,११,
०९ अप्रै	४:५३	६:२४	८:०४	१०:०२	१२:१६	२:३३	४:४५	६:५६	९:११	११:२८	१:३३	३:२०	१,२,३,४,६,७,९,१०,११,
१० अप्रै	४:४९	६:२०	७:६०	९:५८	१२:१२	२:२९	४:४१	६:५२	९:०७	११:२४	१:२९	३:१६	१,२,३,४,६,७,८,९,१०,११,
११ अप्रै	४:४५	६:१६	७:५६	९:५४	१२:०८	२:२५	४:३७	६:४८	९:०३	११:२०	१:२५	३:१२	१,३,४,७,८,९,१०,११,
१२ अप्रै	४:४१	६:१२	७:५२	९:५०	१२:०४	२:२१	४:३३	६:४४	८:५९	११:१६	१:२१	३:०८	१,३,६,७,८,९,१०,११,
१३ अप्रै	४:३७	६:०८	७:४८	९:४७	१२:००	२:१७	४:२९	६:४०	८:५६	११:१२	१:१७	३:०४	१,३,४,६,७,९,१०,११,
१४ अप्रै	४:३३	६:०४	७:४४	९:४३	११:५६	२:१३	४:२५	६:३७	८:५२	११:०८	१:१४	३:००	१,३,६,७,९,१०,११,
१५ अप्रै	४:२९	५:६०	७:४०	९:३९	११:५२	२:०९	४:२१	६:३३	८:४८	११:०४	१:१०	२:५६	३,६,७,९,१०,११,
१६ अप्रै	४:२५	५:५६	७:३६	९:३५	११:४९	२:०५	४:१७	६:२९	८:४४	११:००	१:०६	२:५२	३,४,७,१०,११,
१७ अप्रै	४:२१	५:५२	७:३२	९:३१	११:४५	२:०१	४:१३	६:२५	८:४०	१०:५६	१:०२	२:४८	३,४,७,८,९,१०,११,

तिथि १
शुक्रवार
इष्ट ०।०



मेष संक्रान्ति फलम्- वैशाख कृष्ण १२ मंगलवासरे दिन ९:२७ समये मेषसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम महोदरी संज्ञक संक्रांति चोर-तस्कर, अनैतिक कार्यशील एवं ठगों को शुभकारी है। तस्य काले शतनक्षत्र नाम महोदरी संज्ञक संक्रांति चोर, तस्करो एवं जमाखोरों का सुखद। ४५ अनाज मूल्य में गिरावट संकेतक। कौलव करण फल- वराह वाहनं, वृष उपवाहनं, हरित वस्त्रं, खड्ग आयुधं, ताम्र पात्रं, भिक्षा भक्षणं, चंदन लेपनं, सर्प वर्ण, मौलश्री पुष्पं, मोती भूषणं, हरित कंचुकी, कुमारी अवस्था, उतिष्टा स्थिति। मंहगाई भाव सूचक। अनाज का दाना दुलभ हो, कपास, गुड़ एवं शक्कर मँहगे होंगे। लोग कलह प्रिय होंगे। वैशाखकृष्ण ४ उत्तरभाद्रपदे भौम वर्षातथा अनाज की कमी। वैशाखकृष्ण ११ उत्तरभाद्रपदे बुध - उभायानृपतिक्लेशआरोग्यंपशुपक्षिणाम्। उत्तरा भाद्रपदमे में हो तो राजाओं में क्लेश तथा पक्षियों में आरोग्यता हो। और।

तिथि ८
शुक्रवार
इष्ट ०।०



१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदयपश्चिमेः। मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-अश्विन्यां रविः, उत्तरभाद्रपदे भौमः, उत्तरभाद्रपदे वुधः, पुनर्वसे गुरौ, कृत्तिकायां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, शतभिषायां राहु, मघायां केतु।
१	श.	२०।३३	दि.२:१४	अश्वि	९।२१	दि. ९:४५	प्रीति	४४।५६	रा.११:५९	बव	२०।३३	दि.२:१४	बाल	मेष	--	दिनरात	३१।३५	६:१	६:३८	०।०३।४६।३१	५९	सौम्य	१८ अप्रै	मूल सू.उ.से दिन ९:४५ तक। शनि उदय पूर्वेः प्रातः ५:०४ समये।
२	र.	१२।१७	दि.१०:५५	भर, कृत्ति	३:६।५६:४१	प्रा. ७:१४, रा.४:४०	आयु	३५।१७	रा.८:०६	कौल	१२।१७	दि.१०:५५	तैति	मेष	१६।३०	दि. १२:३६ तक	३१।३८	५:६०	६:३९	०।०४।४५।०८	५९	कालदंड	१९ अप्रै	श्री परशुराम जयंती। सम्राट विक्रमादित्य जयंती। रवियोग रात्रि ४:४९ से रात्रिअंत। त्रिपुष्कर योग प्रातः ७।१४ से से दिन १०:५५ तक। (A)
३,४	चं.	३।५५, ५५।४९	प्रा.७:३३,रा ४:१८	रोहि	५०।३७	रा. २:१४	सौभ	२५।४४	दि.४:१७	गर	३।५५	प्रा.७:३३	वणि	वृष	--	दिनरात	३१।४१	५:५९	६:३९	०।०५।४३।४३	५९	प्रवर्ध	२० अप्रै	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। अक्षय तृतीया, बद्री केदारधाम यात्रा। ० रवियोग सू.उ.से रात्रि २:१४ तक । सर्वार्थसिद्धी रात्रि २:१४ पर्यन्त। (B)
५	मं.	४८।३९	रा.१:२६	मृग	४५।१४	रा. १२:०४	शोभ	१६।३५	दि.१२:३६	बव	२२।१४	दि.२:५२	बाल	वृष	१७।५१	दि. १:०७ तक	३१।४४	५:५८	६:४०	०।०६।४२।१६	५९	राक्षस	२१ अप्रै	श्री आदिशंकराचार्य जयंती युधिष्ठिर संवत २६३१। पुत्र प्राप्ति व्रतारम्भ। रवियोग रात्रि १२:०४ से रात्रिअंत।
६	बु.	४२।२६	रा.१०:५६	आर्द्रा	४०।५३	रा. १०:१९	अति	८।६	दि.९:१२	कौल	१५।२४	दि.१२:०७	तैति	मिथुन	××	दिनरात	३१।४७	५:५७	६:४०	०।०७।४०।४७	५८	मुसल	२२ अप्रै	श्री रामानुजाचार्य जयंती। रवियोग सू.उ.से रात्रि १०:१९ तक । रेवत्यां वुधः दिन १:३० समये।
७	गु.	३७।२९	रा.८:५६	पुन	३७।४७	रा. ९:०३	सुक, धृति	०।३०, ५९।५२	प्रा.६:०९, रा.५:५४	गर	९।४३	दि.९:५०	वणि	मिथुन	२३।२६	दि. ३:१९ तक	३१।५०	५:५७	६:४०	०।०८।३९।१६	५८	सिद्धि	२३ अप्रै	गंगा सप्तमी। अर्यमा सप्तमीव्रत। निंब सप्तमी। शर्करा सप्तमी। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ९:०३ पर्यन्त। अमृतसिद्धि रात्रि ९:०३ से रातअंत। गुरुपुष्य योग (C)
८	शु.	३३।५५	रा.७:३०	पुष्य	३६।४	रा. ८:२१	शूल	४८।५५	रा.१:३०	भद्रा	५।२३	दि.८:०५	बव	कर्क	××	दिनरात	३१।५३	५:५६	६:४१	०।०९।३७।४४	५८	उत्पात	२४ अप्रै	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। मां वगलामुखी जयंती। मूल रात ८:२१ से रातअंत। रवियोग रात्रि ८:२१ से रात्रिअंत। शुक्र पुष्य योग सू उ से रात्रि ८:२१ (D)
९	श.	३१।४६	सा.६:३८	श्ले	३५।४६	रा. ८:१३	गंड़	४४।४९	रा.११:५१	बाल	२।३०	प्रा.६:५५	कौल	कर्क	३५।४६	रा. ८:१३ तक	३१।५६	५:५५	६:४१	०।१०।३६।०९	५८	मानस	२५ अप्रै	जानकी जयंती। चण्डिका नवमी। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत। क्रांतिसाम्य सायं ६:४४ से रात्रि १०:५६। ज्वालामुखीयो सायं ६:३८ (E)
१०	र.	३०।५९	सा.६:१८	मघा	३६।४७	रा. ८:३७	बृद्धि	४१।४६	रा.१०:३७	तैति	१।४	प्रा.६:२०	गर	सिंह	××	दिनरात	३१।५९	५:५४	६:४२	०।११।३४।३३	५८	मुद्गर	२६ अप्रै	मूल सू.उ.से रात ८:३७ तक। रवियोग सू.उ.से रात्रि ८:३७ तक । (A) मंगल उदय पूर्वे प्रातः ४:५५ समये। वृषे शुक्रः दिन ३:३८ समये।
११	चं.	३१।२५	सा.६:२८	पू.फा.	३८।५८	रा. ९:२९	ध्रुव	३९।३९	रा.९:४५	वणि	०।५६	प्रा.६:१६	भद्रा	सिंह	५४।३८	रा. ३:४४ तक	३२।०२	५:५३	६:४२	०।१२।३२।५५	५८	ध्वज	२७ अप्रै	मोहिनी एकादशी व्रत सर्वे। भद्रा प्रातः ६:१६ से सायं ६:२८ (भूमि)। भरण्यां रवि रात्रि १:१६ समये। रोहिण्यां शुक्रः रात्रि ८:५६ समये।
१२	मं.	३२।५५	रा.७:०३	उ.फा.	४२।११	रा. १०:४५	व्या	३८।२०	रा.९:१३	बव	१।५६	प्रा.६:३९	बाल	कन्या	××	दिनरात	३२।०५	५:५३	६:४३	०।१३।३१।१५	५८	धाता	२८ अप्रै	मंगलप्रदोष व्रतं। मधुसूदन पूजन। मास शून्यतिथि। त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से रात्रि ७:०३ तक। बुध अस्त पूर्वेः प्रातः ५:०४ समये।
१३	बु.	३५।२१	रा.८:०१	हस्त	४६।१८	रा. १२:२३	हर्ष	३७।४६	रा.८:५८	कौल	३।५७	प्रा.७:२७	तैति	कन्या	××	दिनरात	३२।०८	५:५२	६:४३	०।१४।२९।३३	५८	आनंद	२९ अप्रै	बुधप्रदोष व्रतं। वैशाखी कामदेव व्रत। रवियोग रात्रि १२:२३ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १२:२३ पर्यन्त।
१४	गु.	३८।३९	रा.९:१९	चित्रा	५१।१४	रा. २:२१	वज्र	३७।५१	रा.८:६०	गर	६।५१	दि.८:३६	वणि	कन्या	१८।४१	दि. १:२० तक	३२।१०	५:५१	६:४४	०।१५।२७।५०	५८	चर	३० अप्रै	श्री नृसिंह अवतार। कदली व्रत। रवियोग सू.उ.से रात्रि २:२१ तक । भद्रा रात्रि ९:१९ से रात्रिअंत (पाताल)। अश्विन्यां श्च मेषे बुध प्रातः ६:४४ समये
१५	शु.	४२।४५	रा.१०:५६	स्वा	५६।५५	रा. ४:३७	सिद्धि	३८।३३	रा.९:१६	भद्रा	१०।३४	दि.१०:०४	बव	तुला	××	दिनरात	३२।१३	५:५१	६:४४	०।१६।२६।०४	५८	गद	०१ मई	बुद्धपूर्णिमा। महर्षि भृगु जयंती ।कूर्म अवतार। भद्रा सू.उ.से दिन १०:०४(पाताल)। व्यतिपात् रा.९:१६ वजे तक। से रातअंत।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-३८

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	श.	०।११।००।४७	८९३	११।१२।८।३४	४६	११।९।५७।२७	९०	२।२३।०३।३४	७	०।२८।१७।३०	७३	११।१३।२४।२१	७	१०।१२।१६।२३	६:०४	७:४६
२	र.	०।२५।५३।४५	८९६	११।१२।५४।५९	४६	११।११।२७।५१	९२	२।२३।१०।१५	७	०।२९।३०।४०	७३	११।१३।३१।३०	७	१०।१२।१३।१३	६:५५	९:०१
३,४	चं.	१।१०।४९।२८	८९०	११।१३।४१।२३	४६	११।१२।५९।५९	९४	२।२३।१७।०६	७	१।००।४३।४७	७३	११।१३।३८।३८	७	१०।१२।१०।०२	७:५४	१०:१६
५	मं.	१।२५।३९।१४	८७६	११।१४।२७।४४	४६	११।१४।३३।५१	९६	२।२३।२४।०५	७	१।०१।५६।५१	७३	११।१३।४५।४३	७	१०।१२।०६।५१	८:६०	११:२७
६	बु.	२।१०।१५।३४	८५८	११।१५।१४।३	४६	११।१६।९।२६	९७	२।२३।३१।१२	७	१।०३।०९।५३	७३	११।१३।५२।४८	७	१०।१२।०३।४१	१०:०९	१२:३०
७	गु.	२।२४।३३।१४	८३७	११।१६।०।२०	४६	११।१७।४६।४४	९९	२।२३।३८।२८	७	१।०४।२२।५२	७३	११।१३।५९।५०	७	१०।१२।००।३०	११:१९	१:२४
८	शु.	३।०८।२९।४६	८१६	११।१६।४६।३५	४६	११।१९।२५।४५	१०१	२।२३।४५।५२	८	१।०५।३५।४८	७३	११।१४।०६।५१	७	१०।११।५७।१९	१२:२६	२:१०
९	श.	३।२२।०५।१८	७९६	११।१७।३२।४७	४६	११।२१।६।२८	१०२	२।२३।५३।२४	८	१।०६।४८।४२	७३	११।१४।१३।४९	७	१०।११।५४।०९	१:२९	२:४९
१०	र.	४।०५।२१।४५	७८०	११।१८।१८।५८	४६	११।२२।४८।५५	१०४	२।२४।०१।०३	८	१।०८।०१।३४	७३	११।१४।२०।४६	७	१०।११।५०।५८	२:२७	३:२३
११	चं.	४।१८।२१।५६	७६७	११।१९।५।६	४६	११।२४।३३।४	१०६	२।२४।०८।५१	८	१।०९।१४।२२	७३	११।१४।२७।४०	७	१०।११।४७।४७	३:२१	३:५४
१२	मं.	५।०१।०८।४१	७५६	११।१९।५१।११	४६	११।२६।१८।५७	१०८	२।२४।१६।४६	८	१।१०।२७।०८	७३	११।१४।३४।३३	७	१०।११।४४।३७	४:१२	४:२३
१३	बु.	५।१३।४४।१७	७४६	११।२०।३७।१५	४६	११।२८।६।३४	१०९	२।२४।२४।४९	८	१।११।३९।५१	७३	११।१४।४१।२३	७	१०।११।४१।२६	५:०२	४:५२
१४	गु.	५।२६।१०।११	७३७	११।२१।२३।१६	४६	११।२९।५५।५६	-१११	२।२४।३२।६०	८	१।१२।५२।३२	७३	११।१४।४८।११	७	१०।११।३८।१५	५:५२	५:२१
१५	शु.	६।०८।२७।४६	७३०	११।२२।९।१५	४६	०।१।४७।२	११३	२।२४।४१।१८	८	१।१४।०५।१०	७३	११।१४।५४।५७	७	१०।११।३५।०५	६:४२	५:५३

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
१८ अप्रै	५:४८	७:२८	९:२७	११:४१	१:५७	४:१०	६:२१	८:३६	१०:५२	१२:५८	२:४४	४:१७	३,४,७,८,९,१०,११,
१९ अप्रै	५:४४	७:२४	९:२३	११:३७	१:५३	४:०६	६:१७	८:३२	१०:४८	१२:५४	२:४०	४:१४	३,४,७,८,९,१०,११,
२० अप्रै	५:४०	७:२१	९:१९	११:३३	१:४९	४:०२	६:१३	८:२८	१०:४४	१२:५०	२:३७	४:१०	३,४,६,८,९,१०,११,
२१ अप्रै	५:३६	७:१७	९:१५	११:२९	१:४५	३:५८	६:०९	८:२४	१०:४०	१२:४६	२:३३	४:०६	३,४,६,९,१०,११,
२२ अप्रै	५:३२	७:१३	९:११	११:२५	१:४१	३:५४	६:०५	८:२०	१०:३६	१२:४२	२:२९	४:०२	२,३,४,६,७,८,९,१०,११,
२३ अप्रै	५:२८	७:०९	९:०७	११:२१	१:३८	३:५०	६:०१	८:१६	१०:३३	१२:३८	२:२५	३:५८	२,३,४,६,१०,११,
२४ अप्रै	५:२४	७:०५	९:०३	११:१७	१:३४	३:४६	५:५७	८:१२	१०:२९	१२:३४	२:२१	३:५४	२,३,४,६,१०,११,
२५ अप्रै	५:२१	७:०१	८:५९	११:१३	१:३०	३:४२	५:५३	८:०८	१०:२५	१२:३०	२:१७	३:५०	२,३,४,८,१०,११,
२६ अप्रै	५:१७	६:५७	८:५५	११:०९	१:२६	३:३८	५:४९	८:०४	१०:२१	१२:२६	२:१३	३:४६	२,३,४,८,१०,११,
२७ अप्रै	५:१३	६:५३	८:५१	११:०५	१:२२	३:३४	५:४५	८:००	१०:१७	१२:२२	२:०९	३:४२	२,३,४,६,८,११,
२८ अप्रै	५:०९	६:४९	८:४७	११:०१	१:१८	३:३०	५:४१	७:५६	१०:१३	१२:१८	२:०५	३:३८	२,३,४,६,८,९,१०,११,
२९ अप्रै	५:०५	६:४५	८:४३	१०:५७	१:१४	३:२६	५:३७	७:५३	१०:०९	१२:१४	२:०१	३:३४	२,३,४,८,९,१०,११,
३० अप्रै	५:०१	६:४१	८:४०	१०:५३	१:१०	३:२२	५:३३	७:४९	१०:०५	१२:१०	१:५७	३:३०	२,३,४,६,७,८,९,१०,११,
०१ मई	४:५७	६:३७	८:३६	१०:४९	१:०६	३:१८	५:३०	७:४५	१०:०१	१२:०७	१:५३	३:२६	२,३,४,६,७,८,९,१०,११

तिथि १
शनिवार
इष्ट ०।०



वैशाखशुक्ल ७ रेवत्यां भौम पर्याप्त अनाज उत्पादन,लक्ष्मी कृपा, रोग भय। वैशाखशुक्ल ६ रेवत्यां बुध - रेवत्यांनंदनंचन्द्रोमहर्घकुंकुमाद्यपि रेवती में बुध हो तो कुंकुम आदि महंगे हों। वैशाखशुक्ल १४ अश्विन्यां बुध - बुधेश्विन्यां तु पीड़्यन्ते गोधूमश्च यवादयः। क्षुदुग्धरसादीनांसमर्घचघृतादिषु।। अश्विनी में बुध हो तो जौ गेहूँ में रोग हो। ईख, दूध, रस और घी आदि सस्ते हों।

(B) अमृतसिद्धि रात्रि २:१४ से रातअंत। भद्रा सायं ५:५७ से रात्रि ४:२० (स्वर्ग)। (C) रात्रि ९:०३ से रातअंत। भद्रा रात्रि ८:५६ से रात्रिअंत (स्वर्ग)। रेवत्यां भौमः रात्रि २:३२ समये। (D) तक। भद्रा सू.उ.से दिन ८:०५(भूमि)। (E) से रात्रि ८:१३ तक। क्रांतिसाम्य सायं ६:४४ से रात्रि १०:५६।

तिथि ९
शनिवार
इष्ट ०।०



प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शकः १९४८। रौद्र संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। ग्रीष्म ऋतुः। श्री सूर्य उत्तरायन-उत्तरगोले। मई ईसवी सन् २०२६। मई। वंगला सन् १४३३ । वीर निर्वाण संवत् २५५२।

१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदयपश्चिमेः। मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-भरण्यां रविः, रेवत्यां भौमः, अश्विन्यां वुधः, पुनर्वसे गुरौ, रोहिण्यां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, शतभिषायां राहु, मघायां केतु।
१	श.	४७।३४	रा.१२:५२	विशा	६०।०	वृद्धि	व्यति	३९।५०	रा.९:४६	बाल	१५।४	दि.११:५२	कौल	तुला	४६।४३	रा. १२:३१ तक	३२।१६	५:५०	६:४४	०।१७।२४।१७	५८	शुभ	०२ मई	व्यतिपात् सू.उ.से रा.९:४६ वजे तक।।
२	र.	५३।०३	रा.३:०२	विशा	३।२०	प्रा. ७:१०	वरी	४१।३६	रा.१०:२८	तैति	२०।१५	दि.१:५५	गर	वृश्चिक	--	दिनरात	३२।१९	५:४९	६:४५	०।१८।२२।२९	५८	उत्पात	०३ मई	श्री नारद जयंती। त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से प्रातः ७:१० तक।
३	चं.	५८।५९	रा.५:२४	अनु	१०।२१	दि. ९:५७	परि	४३।४६	रा.११:१९	वणि	२५।६०	दि.४:१३	भद्रा	वृश्चिक	--	दिनरात	३२।२२	५:४९	६:४५	०।१९।२०।३८	५८	मानस	०४ मई	मूल दिन ९:५७ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन ९:५७ पर्यन्त। भद्रा दिन ४:१३ से रात्रि ५:२४ (स्वर्ग)।
४	मं.	६०।००	वृद्धि	ज्ये	१७।४४	दि. १२:५४	शिव	४६।८	रा.१२:१५	बव	२६।५५	सा.६:३८	बाल	वृश्चिक	१७।४४	दि. १२:५४ तक	३२।२४	५:४८	६:४६	०।२०।१८।४६	५८	मुद्गर	०५ मई	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। मूल दिनरात।
४	बु.	५।०८	प्रा.७:५१	मूल	२५।११	दि. ३:५२	सिद्ध	४८।२७	रा.१:१०	बाल	५।८	प्रा.७:५१	कौल	धनु	××	दिनरात	३२।२७	५:४७	६:४६	०।२१।१६।५३	५८	ध्वज	०६ मई	मां आनन्दमयी जयंती। मूल सू.उ.से दिन ३:५२ तक। भरण्यां वुधः रात्रि ३:४९ समये।
५	गु.	११।०४	दि.१०:१३	पू.षा	३२।२१	सा. ६:४३	साध्य	५०।२६	रा.१:५७	तैति	११।४	दि.१०:१३	गर	धनु	४९।०५	रा. १:२५ तक	३२।३०	५:४७	६:४७	०।२२।१४।५७	५८	धाता	०७ मई	रवियोग सायं ६:४३ से रात्रिअंत।
६	शु.	१६।२२	दि.१२:१९	उ.षा	३८।४६	रा. ९:१७	शुभ	५१।४४	रा.२:२८	वणि	१६।२२	दि.१२:१९	भद्रा	मकर	××	दिनरात	३२।३२	५:४६	६:४७	०।२३।१३।००	५८	आनंद	०८ मई	रवियोग सू.उ.से रात्रि ९:१७ तक। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ९:१७ से रातअंत। भद्रा दिन १२:१९ से रात्रि १:१५ (पाताल)। मृगशिरायां शुक्रः रात्रि ९:३९ समये।
७	श.	२०।३४	दि.१:५९	श्रव	४३।५९	रा. ११:२१	शुक्ल	५१।५९	रा.२:३३	बव	२०।३४	दि.१:५९	बाल	मकर	××	दिनरात	३२।३५	५:४६	६:४८	०।२४।११।०२	५८	स्थिर	०९ मई	कालाष्टमी व्रतं। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ११:२१ पर्यन्त। क्रांतिसाम्य दिन ९:०८ से दिन १:२९। क्रांतिसाम्य दिन ९:०८ से दिन १:२९।
८	र.	२३।११	दि.३:०२	धनि	४७।३३	रा. १२:४६	ब्रह्म	५०।५१	रा.२:०६	कौल	२३।११	दि.३:०२	तैति	मकर	१५।५८	दि. १२:०८ तक	३२।३७	५:४५	६:४८	०।२५।०९।०२	५८	मातंग	१० मई	पंचक प्रारंभ दि. १२:०८ तक समये।
९	चं.	२३।५४	दि.३:१८	शत	४९।९	रा. १:२४	ऐंद्र	४८।८	रा.१२:६०	गर	२३।५४	दि.३:१८	वणि	कुंभ	××	दिनरात	३२।४०	५:४५	६:४९	०।२६।०६।६०	५८	अमृत	११ मई	पंचक दिनरात। भद्रा रात्रि ३:१३ से रात्रिअंत (भूमि)। वैघृति रा.१२:६० वजे तक। से रातअंत। कृत्तिकायां रवि रात्रि ७:२५ समये। अश्विन्यां (A)
१०	मं.	२२।३३	दि.२:४५	पू.भा	४८।४०	रा. १:१२	वैधृ	४३।४३	रा.११:१३	भद्रा	२२।३३	दि.२:४५	बव	कुंभ	३३।५३	रा. ७:१७ तक	३२।४२	५:४४	६:४९	०।२७।०४।५७	५८	काण	१२ मई	पंचक दिनरात। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १:१२ से रातअंत। भद्रा सू.उ.से दिन २:४५(भूमि)। वैघृति सू.उ.से रा.११:१३ वजे तक।।
११	बु.	१९।०८	दि.१:२३	उ.भा	४६।१०	रा. १२:१२	विष्कु	३७।४०	रा.८:४८	बाल	१९।८	दि.१:२३	कौल	मीन	××	दिनरात	३२।४४	५:४४	६:४९	०।२८।०२।५२	५८	लुंबक	१३ मई	अपरा एकादशी व्रत सर्वे। पंचक दिनरात। मूल रात १२:१२ से रातअंत। कृत्तिकायां वुधः दिन ११:३६ समये। (A) मेषे च भौमः दिन १२:४६।
१२	गु.	१३।५१	दि.११:१५	रेव	४१।५३	रा. १०:२९	प्रीति	३०।९	सा.५:४७	तैति	१३।५१	दि.११:१५	गर	मीन	४१।५३	रा. १०:२९ तक	३२।४७	५:४३	६:५०	०।२९।००।४६	५८	मित्र	१४ मई	गुरुप्रदोष व्रतं। पंचक समाप्त रा. १० :२९ समये। मूल दिनरात। सर्वार्थसिद्धी दिनरात। वृषे बुधः रात्रि १२:२३ समये। मिथुने शुक्रः दिन १०:४५ समये।
१३,१४	शु.	६।५७, ५८।४७	दि.८:२९,रा ५:१३	अश्वि	३६।१२	रा. ८:१२	आयु	२१।२६	दि. २:१७	वणि	६।५७	दि.८:२९	भद्रा	मेष	××	दिनरात	३२।४९	५:४३	६:५०	०।२९।५८।३८	५८	वज्र	१५ मई	मासिक शिवरात्रि व्रतं। ० मूल सू.उ.से रात ८:१२ तक। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ८:१२ पर्यन्त। भद्रा दिन ८:२९ से सायं ६:५१ (स्वर्ग)। वृषे रवि (B)
३०	श.	४९।३९	रा.१:३४	भर	२९।३१	सा. ५:३१	सौभ	११।४८	दि.१०:२६	चतु	२४।१३	दि.३:२४	नाग	मेष	४२।४५	रा. १०:४८ तक	३२।५१	५:४२	६:५१	१।००।५६।२९	५८	ध्वांक्ष	१६ मई	शनिचरी अमावस्या। अमावस्या। वट सावित्री व्रत। शनि जयंती। (B) प्रातः ६:१७ समये। पुण्यकाल आज।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-४०

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	श.	६।२०।३७।२५	७२३	११।२२।५५।११	४६	०।३।३९।५३	११५	२।२४।४९।४३	९	१।१५।१७।४५	७३	११।१५।०१।४०	७	१०।११।३१।५४	७:३२	६:२९
२	र.	७।०२।४०।०५	७१७	११।२३।४१।४	४६	०।५।३४।२९	११६	२।२४।५८।१५	९	१।१६।३०।१७	७२	११।१५।०८।२१	७	१०।११।२८।४३	८:२३	६:५०
३	चं.	७।१४।३६।५९	७१३	११।२४।२६।५६	४६	०।७।३०।४९	११८	२।२५।०६।५४	९	१।१७।४२।४६	७२	११।१५।१४।६०	७	१०।११।२५।३२	९:१४	७:३२
४	मं.	७।२६।२९।५०	७११	११।२५।१२।४४	४६	०।९।२८।५१	१२०	२।२५।१५।४१	९	१।१८।५५।१२	७२	११।१५।२१।३६	७	१०।११।२२।२२	१०:०२	८:१९
४	बु.	८।०८।२०।५८	७१२	११।२५।५८।३०	४६	०।११।२८।३५	१२१	२।२५।२४।३४	९	१।२०।०७।३६	७२	११।१५।२८।०९	७	१०।११।१९।११	१०:४८	९:०९
५	गु.	८।२०।१३।१९	७१७	११।२६।४४।१४	४६	०।१३।२९।५८	१२३	२।२५।३३।३४	९	१।२१।१९।५६	७२	११।१५।३४।४०	६	१०।११।१६।००	११:३१	१०:०२
६	शु.	९।०२।१०।३५	७२७	११।२७।२९।५५	४६	०।१५।३२।५६	१२४	२।२५।४२।४१	९	१।२२।३२।१४	७२	११।१५।४१।०८	६	१०।११।१२।५०	१२:०९	१०:५५
७	श.	९।१४।१७।०७	७४१	११।२८।१५।३३	४६	०।१७।३७।२५	१२६	२।२५।५१।५४	९	१।२३।४४।२८	७२	११।१५।४७।३३	६	१०।११।०९।३९	१२:४५	११:४९
८	र.	९।२६।३७।४७	७६०	११।२९।१।९	४६	०।१९।४३।१९	१२७	२।२६।०१।१४	९	१।२४।५६।४०	७२	११।१५।५३।५५	६	१०।११।०६।२८	१:२०	१२:४३
९	चं.	१०।०९।१७।४४	७८४	११।२९।४६।४२	४६	०।२१।५०।३१	१२८	२।२६।१०।४०	१०	१।२६।०८।४८	७२	११।१६।००।१५	६	१०।११।०३।१७	१:५५	१:३९
१०	मं.	१०।२२।२१।४०	८१२	०।०।३२।१२	४५	०।२३।५८।५२	१२९	२।२६।२०।१२	१०	१।२७।२०।५३	७२	११।१६।०६।३१	६	१०।११।००।०७	२:३०	२:३७
११	बु.	११।०५।५३।११	८४१	०।१।१७।३९	४५	०।२६।८।१२	१३०	२।२६।२९।५१	१०	१।२८।३२।५५	७२	११।१६।१२।४५	६	१०।१०।५६।५६	३:०९	३:३९
१२	गु.	११।१९।५३।४६	८६८	०।२।३।३	४५	०।२८।१८।२०	१३१	२।२६।३९।३५	१०	१।२९।४४।५४	७२	११।१६।१८।५५	६	१०।१०।५३।४५	३:५१	४:४५
१३,१४	शु.	०।०४।२२।०६	८९२	०।२।४८।२५	४५	१।०।२९।३	१३१	२।२६।४९।२६	१०	२।००।५६।५०	७२	११।१६।२५।०२	६	१०।१०।५०।३५	४:४०	५:५६
३०	श.	०।१९।१३।४०	९०७	०।३।३३।४४	४५	१।२।४०।५	१३१	२।२६।५९।२२	१०	२।०२।०८।४२	७२	११।१६।३१।०६	६	१०।१०।४७।२४	५:३६	७:११

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

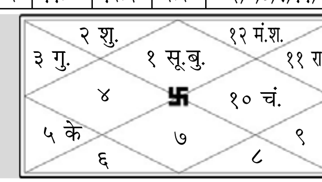
दिनांक	प्रातः पूर्व: मेषे	प्रातः: वृषे	दिन: मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	सायं: तुलायां	रात्रि: वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
०२ मई	४:५३	६:३३	८:३२	१०:४६	१:०२	३:१४	५:२६	७:४१	९:५७	१२:०३	१:४९	३:२२	२,३,४,६,७,८,९,१०,११,
०३ मई	४:४९	६:२९	८:२८	१०:४२	१२:५८	३:१०	५:२२	७:३७	९:५३	११:५९	१:४५	३:१८	२,३,४,६,७,८,१०,११,
०४ मई	४:४५	६:२५	८:२४	१०:३८	१२:५४	३:०७	५:१८	७:३३	९:४९	११:५५	१:४१	३:१४	२,३,४,६,७,८,१०,११,
०५ मई	४:४१	६:२१	८:२०	१०:३४	१२:५०	३:०३	५:१४	७:२९	९:४५	११:५१	१:३७	३:१०	२,३,४,६,७,८,९,१०,११,
०६ मई	४:३७	६:१७	८:१६	१०:३०	१२:४६	२:५९	५:१०	७:२५	९:४१	११:४७	१:३४	३:०७	२,३,४,६,७,८,९,१०,११,
०७ मई	४:३३	६:१४	८:१२	१०:२६	१२:४२	२:५५	५:०६	७:२१	९:३७	११:४३	१:३०	३:०३	२,३,४,६,७,८,९,१०,११,
०८ मई	४:२९	६:१०	८:०८	१०:२२	१२:३८	२:५१	५:०२	७:१७	९:३३	११:३९	१:२६	२:५९	२,३,४,६,७,८,१०,११,
०९ मई	४:२५	६:०६	८:०४	१०:१८	१२:३४	२:४७	४:५८	७:१३	९:३०	११:३५	१:२२	२:५५	२,३,४,६,७,८,१०,११,
१० मई	४:२१	६:०२	८:००	१०:१४	१२:३१	२:४३	४:५४	७:०९	९:२६	११:३१	१:१८	२:५१	२,३,४,६,७,८,९,१०,११,
११ मई	४:१७	५:५८	७:५६	१०:१०	१२:२७	२:३९	४:५०	७:०५	९:२२	११:२७	१:१४	२:४७	२,३,४,६,७,८,९,१०,११,
१२ मई	४:१४	५:५४	७:५२	१०:०६	१२:२३	२:३५	४:४६	७:०१	९:१८	११:२३	१:१०	२:४३	२,३,४,६,७,८,१०,११,
१३ मई	४:१०	५:५०	७:४८	१०:०२	१२:१९	२:३१	४:४२	६:५७	९:१४	११:१९	१:०६	२:३९	२,३,६,८,९,१०,११,
१४ मई	४:०६	५:४६	७:४४	९:५८	१२:१५	२:२७	४:३८	६:५३	९:१०	११:१५	१:०२	२:३५	२,३,४,६,७,८,१०,११,
१५ मई	४:०२	५:४२	७:४०	९:५४	१२:११	२:२३	४:३४	६:४९	९:०६	११:११	१२:५८	२:३१	३,७,८,९,११,
१६ मई	३:५८	५:३८	७:३६	९:५०	१२:०७	२:१९	४:३०	६:४६	९:०२	११:०७	१२:५४	२:२७	३,७,८,९,११,

तिथि १
शनिवार
इष्ट ०।०



वृष संक्रान्ति फलम्- प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृष्ण १३ शुक्रवासरे प्रातः ६:१७ समये वृषसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम मिश्रा संज्ञक संक्रांति पशुपालक एवं तत्संबंधी उत्पादकों को लाभकारी है। तस्य काले अश्विनक्षत्र नाम ध्वांक्षी संज्ञक संक्रांति वणिकानाम् सुखदाः। मुहूर्त्त ३० धान्य मूल्य साम्य संकेतक। वणिज करण फल- महिषी वाहनं, ऊँट उपवाहनं, श्याम वस्त्रं, तोमर आयुधं, तीकर पात्रं, दधि भक्षणं, महावर लेपनं, मृग वर्णा, मन्दार पुष्पं, मणि भूषणं, पा श्वेत कंचुकी, प्रगल्भ अवस्था, उपविष्टा स्थिति। अन्नादि में स्थिर भाव सूचक। समस्त प्रकार के रस एवं अन्न प्रचुर मात्रा में पैदां होंगे। प्रथम ज्येष्ठ शुद्धकृष्ण ९ अश्विन्यां भौम अन्न महंगाई योग। प्रथम ज्येष्ठ शुद्धकृष्ण ४ भरण्यां बुध - बुधभरण्यांमातंगपीड़ाचाण्ड़ालनाशनम्। तीव्ररोगाद्धान्यवस्तुमहर्घलोकवैरतः।। भरणी पर बुध हो तो हाथियों को पीड़ा हो, चाण्ड़ालों का नाश हो, तीव्र रोग हो, धान्य महँगे हों और वैर बढ़े। प्रथम ज्येष्ठ शुद्धकृष्ण ११ कृत्तिकायां बुधे विप्रपीड़ा मेघाल्पता जने।अन्नमल्पज्वरंबाधा क्वचिद्विग्रहकारणम्।। कृत्तिका में बुध हो तो ब्राह्मणों को पीड़ा हो, मेघ कम हो, अन्न अल्प हो मनुष्यों में ज्वरपीड़ा हो और कहीं कुछ बखेड़ा खड़ा हो।

तिथि ७
शनिवार
इष्ट ०।०



१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदयपश्चिमेः । मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-कृत्तिकायां रविः, अश्विन्यां भौमः, कृत्तिकायां वुधः, पुनर्वसे गुरौ, मृगशिरायां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, शतभिषायां राहु, मघायां केतु।
१	र.	४०।१३	रा.९:४७	कृत्ति	२२।१७	दि. २:३७	शोभ, अति	१।३२, ५९।४८	प्रा.६:१९, रा.५:३८	किंस्तु	१४।५८	दि.११:४१	बव	वृष	--	दिनरात	३२।५४	५:४२	६:५१	१।०१।५४।१८	५८	धूम्र	१७ मई	पुरुषोत्तम मास प्रारंभ, रेवत्यां शनि सायं ५:१९ समये।
२	चं.	३०।५४	सा.६:०३	रोहि	१४।५५	दि. ११:४०	सुक	४०।३६	रा.९:५६	बाल	५।३०	प्रा.७:५४	कौल	वृष	४१।२०	रा. १०:१४ तक	३२।५६	५:४२	६:५२	१।०२।५२।०६	५८	प्रवर्ध	१८ मई	सर्वार्थसिद्धी दिन ११:४० पर्यन्त। अमृतसिद्धि दिन ११:४० से रातअंत।
३	मं.	२२।०२	दि.२:३०	मृग	७।५३	दि. ८:५०	धृति	३०।४३	सा.५:५८	गर	२२।२	दि.२:३०	वणि	मिथुन	--	दिनरात	३२।५८	५:४१	६:५२	१।०३।४९।५३	५८	राक्षस	१९ मई	रवियोग दिन ८:५० से रात्रिअंत। भद्रा रात्रि १२:५० से रात्रिअंत (स्वर्ग)। रोहिण्यां वुधः दिन २:२९ समये। आर्द्रायां शुक्रः रात्रि १२:२७ समये।
४	बु.	१४।०२	दि.११:१८	आर्द्रा, पुन	१: ३५।५६: ३४	प्रा. ६:१९, रा. ४:११	शूल	२१।३७	दि.२:२०	भद्रा	१४।२	दि.११:१८	बव	मिथुन	४२।५०	रा. १०:४९ तक	३३।००	५:४१	६:५३	१।०४।४७।३८	५८	मुसल	२० मई	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। रवियोग सू.उ.से प्रातः ६:१९ तक पुनःपुनःरात्रि ४:५८ से रात्रिअंत। भद्रा सू.उ.से दिन ११:१८(स्वर्ग)।
५	गु.	७।१६	दि.८:३५	पुष्य	५३।७	रा. २:५५	गंड़	१३।३५	दि.११:०६	बाल	७।१६	दि.८:३५	कौल	कर्क	××	दिनरात	३३।०२	५:४०	६:५३	१।०५।४५।२२	५८	शुभ	२१ मई	मूल रात २:५५ से रातअंत। अगस्त्य अस्त रात्रि ११:१३। रवियोग सू.उ.से रात्रि २:५५ तक । अमृतसिद्धि रात्रि २:५५ पर्यन्त। क्रांतिसाम्य प्रातः (A)
६,७	शु.	२।०३, ५८।३७	प्रा.६:२१,रा ५:०७	श्ले	५१।२३	रा. २:१४	बृद्धि	६।४९	दि.८:२४	तैति	२।३	प्रा.६:२१	गर	कर्क	५१।२४	रा. २:१४ तक	३३।०४	५:४०	६:५४	१।०६।४३।०४	५८	मृत्यु	२२ मई	मूल दिनरात। भद्रा रात्रि ५:०८ से रातअंत। (A) ६:१५ से दिन १०:१६। गुरुपुष्य योग सूउ से रात्रि २:५५ तक। क्रांतिसाम्य प्रातः ६:१५ से दिन १०:१६
८	श.	५७।०९	रा.४:३१	मघा	५१।२६	रा. २:१४	ध्रुव, व्या	१।३१, ५९।५७	प्रा.६:१६, रा.५:३१	भद्रा	२७।५३	दि.४:४९	बव	सिंह	××	दिनरात	३३।०६	५:४०	६:५४	१।०७।४०।४६	५८	पद्म	२३ मई	मूल सू.उ.से रात २:१४ तक। रवियोग रात्रि २:१४ से रात्रिअंत। भद्रा सू.उ.से दिन ४:४९ (भूमि)।
९	र.	५७।२०	रा.४:३६	पू.फा.	५३।१२	रा. २:५६	हर्ष	५५।२३	रा.३:४९	बाल	२७।१२	दि.४:३२	कौल	सिंह	××	दिनरात	३३।०८	५:४०	६:५५	१।०८।३८।२६	५८	छत्र	२४ मई	रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत, पुनः रात्रि १५:३७ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि २:५६ से रातअंत। बुध उदय पश्चिमेः रात्रि ७:४७ समये।
१०	चं.	५९।०३	रा.५:१६	उ.फा.	५६।२७	रा. ४:१४	वज्र	५४।१३	रा.३:२०	तैति	२८।९	दि.४:५५	गर	सिंह	८।५३	दि. ९:१३ तक	३३।१०	५:३९	६:५५	१।०९।३६।०४	५८	श्रीवत्स	२५ मई	गंगा दशहरा। रवियोग सू.उ.से दिन ३:३७ तक, पुनः दिन ३:३७ से रात्रिअंत। रोहिण्यां रवि दिन ३:३७ समये। मृगशिरायां वुधः रात्रि ११:४५ समये।
११	मं.	६०।००	वृद्धि	हस्त	६०।०	वृद्धि	सिद्धि	५४।१	रा.३:१६	वणि	२८।३१	सा.५:५१	भद्रा	कन्या	××	दिनरात	३३।११	५:३९	६:५६	१।१०।३३।४२	५८	सौम्य	२६ मई	एकादशी व्रतं स्मार्त्त। रवियोग सू.उ.से रात्रि ६:०१ तक । भद्रा सायं ५:५१ से रा.अंत (पाताल)। व्यतिपात् रा.३:१६ वजे तक। से रातअंत।
११	बु.	२।०२	प्रा.६:२७	हस्त	०।५६	प्रा. ६:०१	व्यति	५४।३७	रा.३:३०	भद्रा	२।२	प्रा.६:२७	बव	कन्या	३३।३९	रा. ७:०७ तक	३३।१३	५:३९	६:५६	१।११।३१।१९	५८	आनंद	२७ मई	परमा एकादशी व्रतं सर्वे। रवियोग सू.उ.से प्रातः ६:०१ तक। सर्वार्थसिद्धी प्रातः ६:०१ पर्यन्त। भद्रा सू.उ.से प्रातः ६:२७(पाताल)। व्यतिपात् (B)
१२	गु.	५।६०	दि.८:०२	चित्रा	६।२६	दि. ८:१३	वरी	५५।४८	रा.३:५८	बाल	५।६०	दि.८:०२	कौल	तुला	××	दिनरात	३३।१५	५:३९	६:५६	१।१२।२८।५४	५८	चर	२८ मई	गुरुप्रदोष व्रतं। (B) सू.उ.से रा.३:३० वजे तक।
१३	शु.	१०।४२	दि.९:५५	स्वा	१२।३८	दि. १०:४२	परि	५७।२८	रा.४:३७	तैति	१०।४२	दि.९:५५	गर	तुला	××	दिनरात	३३।१६	५:३८	६:५७	१।१३।२६।२८	५८	गद	२९ मई	रवियोग दिन १०:४२ से रात्रिअंत। भरण्यां भौमः प्रातः ६:३४ समये। मिथुने बुधः दिन ११:११ समये।
१४	श.	१५।५६	दि.१२:०१	विशा	१९।२१	दि. १:२३	शिव	५९।२७	रा.५:२५	वणि	१५।५६	दि.१२:०१	भद्रा	तुला	२।३६	प्रा. ६:४१ तक	३३।१८	५:३८	६:५७	१।१४।२४।०१	५८	शुभ	३० मई	रवियोग सू.उ.से दिन १:२३ तक । भद्रा दिन १२:०१ से रात्रि १:०७ (पाताल)।
१५	र.	२१।३५	दि.२:१६	अनु	२६।२६	दि. ४:१२	सिद्ध	६०	वृद्धि	बव	२१।३५	दि.२:१६	बाल	वृश्चिक	××	दिनरात	३३।१९	५:३८	६:५८	१।१५।२१।३३	५८	मृत्यु	३१ मई	पूर्णिमा। मूल दिन ४:१२ से रातअंत। पुनर्वसे शुक्रः प्रातः ५:४४ समये।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-४२

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	र.	१।०४।२०।५३	९१३	०।४।१८।६०	४५	१।४।५१।११	१३१	२।२७।०९।२४	१०	२।०३।२०।३१	७२	११।१६।३७।०७	६	१०।१०।४४।१३	××	८:२७
२	चं.	१।१९।३४।०२	९०९	०।५।४।१३	४५	१।७।२।४	१३०	२।२७।१९।३२	१०	२।०४।३२।१७	७२	११।१६।४३।०४	६	१०।१०।४१।०२	६:४२	९:०९
३	मं.	२।०४।४२।३५	८९४	०।५।४९।२३	४५	१।९।१२।२९	१३०	२।२७।२९।४५	१०	२।०५।४३।५९	७२	११।१६।४८।५८	६	१०।१०।३७।५२	७:५३	१०:१८
४	बु.	२।१९।३६।५८	८७३	०।६।३४।३०	४५	१।११।२२।८	१२९	२।२७।४०।०४	१०	२।०६।५५।३८	७२	११।१६।५४।४९	६	१०।१०।३४।४१	९:०६	११:१८
५	गु.	३।०४।०९।५१	८४७	०।७।१९।३४	४५	१।१३।३०।४३	१२७	२।२७।५०।२८	१०	२।०८।०७।१३	७२	११।१७।००।३६	६	१०।१०।३१।३०	१०:१७	१२:०८
६,७	शु.	३।१८।१७।०५	८२१	०।८।४।३६	४५	१।१५।३८।१	१२६	२।२८।००।५८	११	२।०९।१८।४५	७१	११।१७।०६।१९	६	१०।१०।२८।१९	११:२३	१२:५०
८	श.	४।०१।५७।४४	७९६	०।८।४९।३४	४५	१।१७।४३।४५	१२४	२।२८।११।३२	११	२।१०।३०।१३	७१	११।१७।११।५९	६	१०।१०।२५।०९	१२:२३	१:२६
९	र.	४।१५।१३।३१	७७४	०।९।३४।२९	४५	१।१९।४७।४२	१२२	२।२८।२२।१२	११	२।११।४१।३८	७१	११।१७।१७।३५	६	१०।१०।२१।५८	१:१९	१:५८
१०	चं.	४।२८।०७।५२	७५७	०।१०।१९।२१	४५	१।२१।४९।४१	१२०	२।२८।३२।५७	११	२।१२।५२।५८	७१	११।१७।२३।०८	५	१०।१०।१८।४७	२:११	२:२७
११	मं.	५।१०।४४।५१	७४४	०।११।४।१०	४५	१।२३।४९।३०	११८	२।२८।४३।४६	११	२।१४।०४।१६	७१	११।१७।२८।३६	५	१०।१०।१५।३६	३:०१	२:५५
११	बु.	५।२३।०८।२९	७३४	०।११।४८।५५	४५	१।२५।४७।०	११५	२।२८।५४।४१	११	२।१५।१५।२९	७१	११।१७।३४।०१	५	१०।१०।१२।२५	३:४९	३:२४
१२	गु.	६।०५।२२।०७	७२६	०।१२।३३।३८	४५	१।२७।४२।५	११३	२।२९।०५।४०	११	२।१६।२६।३८	७१	११।१७।३९।२२	५	१०।१०।०९।१५	४:३८	३:५५
१३	शु.	६।१७।२८।१८	७२१	०।१३।१८।१७	४५	१।२९।३४।३८	११०	२।२९।१६।४४	११	२।१७।३७।४४	७१	११।१७।४४।३९	५	१०।१०।०६।०४	५:२८	४:२८
१४	श.	६।२९।२८।५७	७१७	०।१४।२।५३	४५	२।१।२४।३३	१०७	२।२९।२७।५२	११	२।१८।४८।४५	७१	११।१७।४९।५२	५	१०।१०।०२।५३	६:१८	५:०६
१५	र.	७।११।२५।३१	७१४	०।१४।४७।२६	४४	२।३।११।४६	१०४	२।२९।३९।०५	११	२।१९।५९।४२	७१	११।१७।५५।००	५	१०।०९।५९।४२	७:०८	५:४९

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

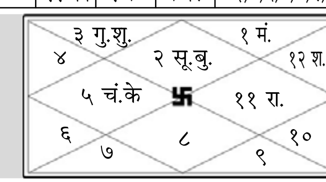
दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
१७ मई	५:३४	७:३३	९:४६	१२:०३	२:१५	४:२६	६:४२	८:५८	११:०३	१२:५०	२:२३	३:५४	३,७,८,९,११,
१८ मई	५:३०	७:२९	९:४२	११:५९	२:११	४:२३	६:३८	८:५४	१०:६०	१२:४६	२:१९	३:५०	३,६,७,९,१०,११,
१९ मई	५:२६	७:२५	९:३९	११:५५	२:०७	४:१९	६:३४	८:५०	१०:५६	१२:४२	२:१५	३:४६	६,७,९,१०,
२० मई	५:२२	७:२१	९:३५	११:५१	२:०३	४:१५	६:३०	८:४६	१०:५२	१२:३८	२:११	३:४२	६,७,९,१०,११,
२१ मई	५:१८	७:१७	९:३१	११:४७	१:६०	४:११	६:२६	८:४२	१०:४८	१२:३४	२:०७	३:३८	३,६,७,९,१०,११,
२२ मई	५:१४	७:१३	९:२७	११:४३	१:५६	४:०७	६:२२	८:३८	१०:४४	१२:३०	२:०३	३:३४	३,७,८,९,१०,११,
२३ मई	५:१०	७:०९	९:२३	११:३९	१:५२	४:०३	६:१८	८:३४	१०:४०	१२:२७	१:६०	३:३०	३,७,८,९,११,
२४ मई	५:०७	७:०५	९:१९	११:३५	१:४८	३:५९	६:१४	८:३०	१०:३६	१२:२३	१:५६	३:२६	३,६,७,८,९,११,
२५ मई	५:०३	७:०१	९:१५	११:३१	१:४४	३:५५	६:१०	८:२६	१०:३२	१२:१९	१:५२	३:२२	३,६,७,८,९,११,
२६ मई	४:५९	६:५७	९:११	११:२७	१:४०	३:५१	६:०६	८:२३	१०:२८	१२:१५	१:४८	३:१८	३,६,७,९,११,
२७ मई	४:५५	६:५३	९:०७	११:२४	१:३६	३:४७	६:०२	८:१९	१०:२४	१२:११	१:४४	३:१४	३,७,९,१०,११,
२८ मई	४:५१	६:४९	९:०३	११:२०	१:३२	३:४३	५:५८	८:१५	१०:२०	१२:०७	१:४०	३:१०	३,७,९,१०,११,
२९ मई	४:४७	६:४५	८:५९	११:१६	१:२८	३:३९	५:५४	८:११	१०:१६	१२:०३	१:३६	३:०७	३,६,७,८,९,१०,११,
३० मई	४:४३	६:४१	८:५५	११:१२	१:२४	३:३५	५:५०	८:०७	१०:१२	११:५९	१:३२	३:०३	३,७,९,११,
३१ मई	४:३९	६:३७	८:५१	११:०८	१:२०	३:३१	५:४६	८:०३	१०:०८	११:५५	१:२८	२:५९	३,४,६,७,८,९,

तिथि १
रविवार
इष्ट ०।०



प्रथम ज्येष्ठ अधिमास शुक्ल १३ भरन्यां भौम बुद्धिजीवियों को कष्ट। प्रथम ज्येष्ठ अधिमास शुक्ल ३ रोहिण्यां बुध - रोहिण्यांज्ञे च कार्पासतिलसूत्रमर्हाता। रोहिणी में बुध हो तो कपास, तिल, सूत महँगे हों। प्रथम ज्येष्ठ अधिमास शुक्ल १० मृगशिरायां बुध - मृगशीर्षेसुभिक्षंस्याद्वातवृष्टिर्महीयसी।। मृगशिर में हो तो सुभिक्ष हो, वायु से वर्षा हो।

तिथि ९
रविवार
इष्ट ०।०



 द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शकः १९४८। रौद्र संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। ग्रीष्म ऋतुः। श्री सूर्य उत्तरायन-उत्तरगोले। जून ईसवी सन् २०२६। जून। वंगला सन् १४३३ । वीर निर्वाण संवत् २५५२।

१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदयपश्चिमेः। मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-रोहिण्यां रविः, भरण्यां भौमः, मृगशिरायां वुधः, पुनर्वसे गुरौ, पुनर्वसे शुक्रः, रेवत्यां शनिः, शतभिषायां राहु, मघायां केतु।
१	चं.	२७।२८	दि.४:३७	ज्ये	३३।४५	रा. ७:०८	सिद्ध	१।४१	प्रा.६:१८	कौल	२७।२८	दि.४:३७	तैति	वृश्चिक	३३।४५	रा. ७:०८ तक	३३।२१	५:३८	६:५८	१।१६।११।०४	५७	पद्म	०१ जून	मूल दिनरात। गुरु कर्के रात्रि १:५९ समये।
२	मं.	३३।२५	सा.६:६०	मूल	४१।७	रा. १०:०५	साध्य	४।२	प्रा.७:१५	तैति	०।२७	प्रा.५:४९	गर	धनु	--	दिनरात	३३।२२	५:३८	६:५९	१।१७।१६।३४	५७	छत्र	०२ जून	मूल सू.उ.से रात १०:०५ तक। आर्द्रायां वुधः प्रातः ६:०८ समये।
३	बु.	३९।१४	रा.९:१९	पू.षा	४८।११	रा. १२:५८	शुभ	६।२१	दि.८:१०	वणि	६।२२	दि.८:११	भद्रा	धनु	--	दिनरात	३३।२३	५:३८	६:५९	१।१८।१४।०३	५७	श्रीवत्स	०३ जून	संकष्टी श्रीगणेश ४ व्रतं। क्रांतिसाम्य दिन ३:०३ से रात्रि ७:२८। भद्रा दिन ८:११ से रात्रि ९:१९ (पाताल)। क्रांतिसाम्य दिन ३:०३ से रात्रि ७:२८।
४	गु.	४४।३७	रा.११:२८	उ.षा	५५।६	रा. ३:४०	शुक्ल	८।२७	दि.९:००	बव	११।६०	दि.१०:२६	बाल	धनु	५।०५	प्रा. ७:४० तक	३३।२५	५:३८	६:५९	१।१९।११।३१	५७	सौम्य	०४ जून	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं।
५	शु.	४९।१३	रा.१:१९	श्रव	६०।०	वृद्धि	ब्रह्म	१०।६	दि.९:४०	कौल	१७।०	दि.१२:२६	तैति	मकर	××	दिनरात	३३।२६	५:३८	६:६०	१।२०।०८।५८	५७	धूम्र	०५ जून	सर्वार्थसिद्धी रात्रि ६:०३ पर्यन्त।
६	श.	५२।३९	रा.२:४१	श्रव	१।३	प्रा. ६:०३	ऐंद्र	११।१	दि.१०:०२	गर	२१।२	दि.२:०२	वणि	मकर	३३।२८	रा. ७:०१ तक	३३।२७	५:३८	७:०	१।२१।०६।२४	५७	स्थिर	०६ जून	पंचक प्रारंभ रा. ७:०१ तक समये। रवियोग प्रातः ६:०३ से रात्रिअंत। द्विपुष्कर योग रातअंत २।४१ से रातअंत सर्वार्थसिद्धी प्रातः ६:०३ पर्यन्त। (A)
७	र.	५४।३०	रा.३:२६	धनि	५।४४	प्रा. ७:५५	वैधृ	१०।५६	दि.१०:००	भद्रा	२३।४०	दि.३:०५	बव	कुंभ	××	दिनरात	३३।२८	५:३८	७:१	१।२२।०३।५०	५७	मातंग	०७ जून	पंचक दिनरात। रवियोग सू.उ.से प्रातः ७:५५ तक। द्विपुष्कर योग सूर्योदय से प्रातः ७:५५ तक। भद्रा सू.उ.से दिन ३:०५(भूमि)। वैधृति सू.उ.(B)
८	चं.	५४।२७	रा.३:२४	शत	८।४९	दि. ९:०९	विष्कु	९।३३	दि.९:२७	बाल	२४।३४	दि.३:२७	कौल	कुंभ	५४।५८	रा. ३:३७ तक	३३।२९	५:३८	७:१	१।२३।०१।१४	५७	अमृत	०८ जून	पंचक दिनरात। मृगशिरायां रवि दिन १:२८ समये। कर्के शुक्रः सायं ५:३९ समये।
९	मं.	५२।२०	रा.२:३४	पू.भा	१०।१	दि. ९:३८	प्रीति	६।४०	दि.८:१८	तैति	२३।३०	दि.३:०१	गर	मीन	××	दिनरात	३३।३०	५:३८	७:१	१।२३।५८।३८	५७	काण	०९ जून	पंचक दिनरात। सर्वार्थसिद्धी दिन ९:३८ से रातअंत। (A) भद्रा रात्रि २:४१ से रात्रिअंत (भूमि)। वैधृति दि.१०:०२ वजे तक। से रातअंत।
१०	बु.	४८।११	रा.१२:५४	उ.भा	९।१३	दि. ९:१९	आयु, सौभ	२।११, ५९।५५	प्रा.६:३०, रा.५:३६	वणि	२०।२४	दि.१:४७	भद्रा	मीन	××	दिनरात	३३।३०	५:३८	७:२	१।२४।५६।०१	५७	लुंबक	१० जून	पंचक दिनरात। मूल दिन ९:१९ से रातअंत। भद्रा दिन १:४७ से रात्रि १२:५४ (भूमि)। (B) से दि.१०:०० वजे तक।
११	गु.	४२।११	रा.१०:३०	रेव	६।३०	दि. ८:१३	शोभ	४८।१३	रा.१२:५५	बव	१५।२४	दि.११:४७	बाल	मीन	६।३०	दि. ८:१३ तक	३३।३१	५:३८	७:२	१।२५।५३।२३	५७	मित्र	११ जून	एकादशी व्रतं सर्वे। पंचक समाप्त दि. ८ :१३ समये। मूल दिनरात। सर्वार्थसिद्धी दिनरात। पुनर्वसे वुधः दिन ११:२९ समये। पुष्ये शुक्रः दिन २:०३ समये।
१२	शु.	३४।४२	रा.७:३०	अश्वि, भर	२: १।५६: २	प्रा. ६:२६, रा.४:०३	अति	३९।१७	रा.९:२०	कौल	८।४३	दि.९:०७	तैति	मेष	××	दिनरात	३३।३२	५:३८	७:२	१।२६।५०।४४	५७	वज्र	१२ जून	शुक्रप्रदोष व्रतं। मूल सू.उ.से प्रातः ६:२६ तक। सर्वार्थसिद्धी प्रातः ६:२६ पर्यन्त।
१३	श.	२६।०५	दि.४:०४	कृत्ति	४९।३	रा. १:१५	सुक	२९।२७	सा.५:२५	गर	०।४०	प्रा.५:५४	वणि	मेष	९।२१	दि. ९:२२ तक	३३।३३	५:३८	७:३	१।२७।४८।०५	५७	ध्वज	१३ जून	अमृतसिद्धि रात्रि १:१५ से रातअंत। भद्रा दिन ४:०४ से रात्रि २:१४ (स्वर्ग)।
१४	र.	१६।४५	दि.१२:२०	रोहि	४१।३३	रा. १०:१५	धृति	१९।२	दि.१:१५	शकु	१६।४५	दि.१२:२०	चतु	वृष	××	दिनरात	३३।३३	५:३८	७:३	१।२८।४५।२५	५७	धाता	१४ जून	($) से रात्रि ३:६०। मिथुने रवि दिन १२:५२ समये। पुण्यकाल आज।
३०,१	चं.	७।०४, ५७।२५	दि.८:२८,रा ४:३६	मृग	३३।६०	रा. ७:१४	शूल, गंड़	८।२२, ५९।५६	दि.८:५९, रा.५:३७	नाग	७।४	दि.८:२८	किंस्तु	वृष	७।४५	दि. ८:४४ तक	३३।३४	५:३८	७:३	१।२९।४२।४४	५७	आनंद	१५ जून	सोमवती अमावस्या। पुरुषोत्तम मास समाप्त , अमृतसिद्धि रात्रि ७:१४ पर्यन्त। क्रांतिसाम्य रात्रि १२:०९ से रात्रि ३:६०। क्रांतिसाम्य रात्रि १२:०९ ($)

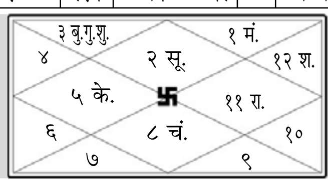
सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-४५

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय	
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	उदय दिन	अस्त रात
१	चं.	७।२३।११।११	७१२	०।१५।३१।५६	४४	२।४।५६।१६	१०२	२।२९।५०।२२	११	२।२१।१०।३६	७१	११।१८।००।०५	५	१०।०९।५६।३१	७:५७	६:१४
२	मं.	८।०५।११।४१	७१३	०।१६।१६।२३	४४	२।६।३७।५७	९९	३।००।०१।४४	११	२।२२।२१।२५	७१	११।१८।०५।०५	५	१०।०९।५३।२१	८:४४	७:०३
३	बु.	८।१७।०४।१६	७१५	०।१७।०।४६	४४	२।८।१६।४९	९६	३।००।१३।०९	११	२।२३।३२।०९	७१	११।१८।१०।०२	५	१०।०९।५०।१०	९:२७	७:५५
४	गु.	८।२८।५९।०५	७२०	०।१७।४५।५	४४	२।९।५२।५०	९३	३।००।२४।३९	१२	२।२४।४२।५०	७१	११।१८।१४।५३	५	१०।०९।४६।५९	१०:०६	८:४७
५	शु.	९।१०।५८।५१	७२८	०।१८।२९।२२	४४	२।११।२५।५८	९०	३।००।३६।१३	१२	२।२५।५३।२६	७१	११।१८।१९।४१	५	१०।०९।४३।४८	१०:४३	९:४१
६	श.	९।२३।०६।५८	७४१	०।१९।१३।३५	४४	२।१२।५६।११	८७	३।००।४७।५१	१२	२।२७।०३।५८	७०	११।१८।२४।२४	५	१०।०९।४०।३७	११:१७	१०:३४
७	र.	१०।०५।२७।३५	७५८	०।१९।५७।४५	४४	२।१४।२३।२७	८४	३।००।५९।३२	१२	२।२८।१४।२५	७०	११।१८।२९।०२	५	१०।०९।३७।२७	११:५१	११:२८
८	चं.	१०।१८।०५।२७	७८०	०।२०।४१।५१	४४	२।१५।४७।४५	८१	३।०१।११।१८	१२	२।२९।२४।४७	७०	११।१८।३३।३६	४	१०।०९।३४।१६	१२:२५	१२:२३
९	मं.	११।०१।०५।२५	८०६	०।२१।२५।५४	४४	२।१७।९।२	७८	३।०१।२३।०७	१२	३।००।३५।०५	७०	११।१८।३८।०६	४	१०।०९।३१।०५	१:०१	१:२१
१०	बु.	११।१४।३१।३८	८३५	०।२२।९।५४	४४	२।१८।२७।१७	७५	३।०१।३४।५९	१२	३।०१।४५।१७	७०	११।१८।४२।३१	४	१०।०९।२७।५४	१:४१	२:२४
११	गु.	११।२८।२६।३३	८६३	०।२२।५३।५०	४४	२।१९।४२।२६	७२	३।०१।४६।५६	१२	३।०२।५५।२५	७०	११।१८।४६।५१	४	१०।०९।२४।४३	२:२६	३:३१
१२	शु.	०।१२।५०।०१	८८९	०।२३।३७।४२	४४	२।२०।५४।२७	६९	३।०१।५८।५५	१२	३।०४।०५।२८	७०	११।१८।५१।०६	४	१०।०९।२१।३२	३:१८	४:४३
१३	श.	०।२७।३८।३७	९०७	०।२४।२१।३१	४४	२।२२।३।१६	६६	३।०२।१०।५८	१२	३।०५।१५।२६	७०	११।१८।५५।१७	४	१०।०९।१८।२२	४:१८	५:६०
१४	र.	१।१२।४५।३९	९१६	०।२५।५।१७	४४	२।२३।८।४९	६२	३।०२।२३।०४	१२	३।०६।२५।१९	७०	११।१८।५९।२३	४	१०।०९।१५।११	५:२६	७:१६
३०,१	चं.	१।२८।०१।४८	९१५	०।२५।४८।५९	४४	२।२४।११।२	५९	३।०२।३५।१४	१२	३।०७।३५।०६	७०	११।१९।०३।२३	४	१०।०९।११।६०	××	८:२७

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

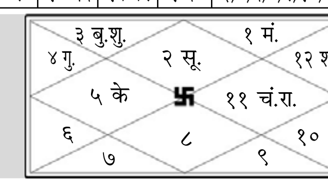
दिनांक	प्रातः पूर्व वृषे	प्रातः मिथुने	दिन कर्के	दिन सिंहे	दिन कन्यायां	दिन तुलायां	सायं वृश्चिके	रात्रि धनुषे	रात्रि मकरे	रात्रि कुंभे	रात्रि मीने	रात्रि मेषे	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
०१ जून	४:३५	६:३३	८:४७	११:०४	१:१६	३:२७	५:४२	७:५९	१०:०४	११:५१	१:२४	२:५५	३,७,९,११,१२,
०२ जून	४:३१	६:२९	८:४३	१०:६०	१:१२	३:२३	५:३९	७:५५	१०:००	११:४७	१:२०	२:५१	३,४,६,७,८,९,१२,
०३ जून	४:२७	६:२६	८:३९	१०:५६	१:०८	३:१९	५:३५	७:५१	९:५६	११:४३	१:१६	२:४७	३,४,६,७,९,१०,१२,
०४ जून	४:२३	६:२२	८:३५	१०:५२	१:०४	३:१६	५:३१	७:४७	९:५३	११:३९	१:१२	२:४३	३,४,६,७,९,१०,१२,
०५ जून	४:१९	६:१८	८:३१	१०:४८	१:००	३:१२	५:२७	७:४३	९:४९	११:३५	१:०८	२:३९	३,४,६,७,९,१०,१२,
०६ जून	४:१५	६:१४	८:२८	१०:४४	१२:५६	३:०८	५:२३	७:३९	९:४५	११:३१	१:०४	२:३५	३,४,६,७,९,१०,१२,
०७ जून	४:११	६:१०	८:२४	१०:४०	१२:५३	३:०४	५:१९	७:३५	९:४१	११:२७	१:००	२:३१	३,४,६,७,९,१०,१२,
०८ जून	४:०७	६:०६	८:२०	१०:३६	१२:४९	२:६०	५:१५	७:३१	९:३७	११:२३	१२:५६	२:२७	३,४,६,७,९,१०,१२,
०९ जून	४:०३	६:०२	८:१६	१०:३२	१२:४५	२:५६	५:११	७:२७	९:३३	११:१९	१२:५३	२:२३	३,४,६,७,८,९,१०,१२,
१० जून	३:६०	५:५८	८:१२	१०:२८	१२:४१	२:५२	५:०७	७:२३	९:२९	११:१६	१२:४९	२:१९	३,४,६,७,८,९,१०,१२,
११ जून	३:५६	५:५४	८:०८	१०:२४	१२:३७	२:४८	५:०३	७:१९	९:२५	११:१२	१२:४५	२:१५	३,४,७,८,९,१०,१२,
१२ जून	३:५२	५:५०	८:०४	१०:२०	१२:३३	२:४४	४:५९	७:१५	९:२१	११:०८	१२:४१	२:११	३,४,६,८,९,१०,१२,
१३ जून	३:४८	५:४६	७:६०	१०:१७	१२:२९	२:४०	४:५५	७:१२	९:१७	११:०४	१२:३७	२:०७	३,४,६,८,९,१०,१२,
१४ जून	३:४४	५:४२	७:५६	१०:१३	१२:२५	२:३६	४:५१	७:०८	९:१३	१०:६०	१२:३३	२:०३	३,४,६,८,९,१०,१२,
१५ जून	३:४०	५:३८	७:५२	१०:०९	१२:२१	२:३२	४:४७	७:०४	९:०९	१०:५६	१२:२९	१:६०	३,४,६,८,९,१०,१२

तिथि १
चन्द्रवार
इष्ट ०।०



मिथुन संक्रान्ति फलम्- द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृष्ण ३० सोमवासरे दिन १२:५२ समये मिथुनसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम ध्वांक्षी संज्ञक संक्रांति व्यापारीवर्ग एवं उद्योगपतियों को शुभकारी है। तस्य काले मृगनक्षत्र नाम मंदाकिनी संज्ञक संक्रांति सैनिकवर्ग, पुलिष आदि को सुखद। मुहूर्त्त ३० अनाज मूल्य समता। किस्तुघ्न करण फल- कुक्कुट वाहनं, वराह उपवाहनं, मेघवर्ण वस्त्रं, वांण आयुधं, काष्ठ पात्रं, शर्करा भक्षणं, कर्पर लेपनं, शंकरवर्णं, अड़हुल पुष्पं, स्वर्ण भूषणं, पांडुर कंचुकी, सन्यासिन अवस्था, उतिष्ठा स्थिति। अन्न, कपूर एवं सोने में मंहगाई सूचक। समस्त प्रकार के अन्न एवं रस प्रचुर मात्रा में पैदा होंग। द्वितीय ज्येष्ठ शुद्धशुक्ल २ कृतिकायां भौम तपश्वीयों को कष्ट, अनाज महंगा होने का योग। द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृष्ण २ आर्द्रायां बुध - गोधूमतिलमाषादिसमर्घसुखिनोजनाः। आर्द्रायावृष्टिरतुलाग्रहपाताप्रवाहतः।। आर्द्रा में हो तो वर्षा अधिक हो, गेहूँ तिल उड़द सस्ते हों, मनुष्य सुखी रहे। और ग्रहपात तथा नवन प्रवाह हो। द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृष्ण ११ पुनर्वसुभे बुध - पुनर्वसौबालपीड़ाकार्पासेसूत्रमंदता। पुनर्वसु में बुध हो तो बालकों को पीड़ा हो, कपास सूत मंदा हो

तिथि ८
चन्द्रवार
इष्ट ०।०



१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदयपश्चिमेः । मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-मृगशिरायां रविः, भरण्यां भौमः, पुनर्वसे वुधः, पुनर्वसे गुरौ, पुष्ये शुक्रः, रेवत्यां शनिः, शतभिषायां राहु, मघायां केतु।
२	मं.	४८। ३०	रा.१:०२	आर्द्रा	२६। ४९	दि. ४:२२	बृद्धि	४७। ४२	रा.१२:४३	बाल	२२। ५८	दि.२:४९	कौल	मिथुन	--	दिनरात	३३। ३४	५:३८	७:४	२।००।४०।०३	५७	चर	१६ जून	त्रिपुष्कर योग दिन ४। २२ से से रात्रि १:०२ तक। कृत्तिकायां भौमः दिन ९:४२ समये।
३	बु.	४०। ३३	रा.९:५१	पुन	२०। २६	दि. १:४९	ध्रुव	३८। ३०	रा.९:०२	तैति	१४। २३	दि.११:२४	गर	मिथुन	६। ५०	दि. ८:२२ तक	३३। ३४	५:३८	७:४	२।०१।३७।२१	५७	गद	१७ जून	रंभातीज। महाराणा.प्रताप जयंती। रवियोग दिन १:४९ से रात्रिअंत। बुध पुष्य योग दिन १:४९ से रातअंत।
४	गु.	३३। ५६	रा.७:१३	पुष्य	१५। १४	दि. ११:४४	व्या	३०। २३	सा.५:४८	वणि	६। ५६	दि.८:२५	भद्रा	कर्क	--	दिनरात	३३। ३५	५:३८	७:४	२।०२।३४।३९	५७	शुभ	१८ जून	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। मूल दिन ११:४४ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से दिन ११:४४ तक। अमृतसिद्धि दिन ११:४४ पर्यन्त। गुरुपुष्य योग (A)
५	शु.	२८। ५६	सा.५:१३	श्ले	११। ३७	दि. १०:१७	हर्ष	२३। ३५	दि.३:०५	बव	०। ५८	प्रा.६:०२	बाल	कर्क	११। ३७	दि. १०:१७ तक	३३। ३५	५:३९	७:५	२।०३।३१।५६	५७	मृत्यु	१९ जून	मूल दिनरात। रवियोग दिन १०:१७ से रात्रिअंत। (A) सू उ से दिन ११:४४ तक। भद्रा दिन ८:२५ से रात्रि ७:१३ (भूमि)। पुष्ये गुरु रात्रि ९:०९ समये।
६	श.	२५। ४९	दि.३:५८	मघा	९। ४९	दि. ९:३४	वज्र	१८। १८	दि.१२:५८	तैति	२५। ४९	दि.३:५८	गर	सिंह	××	दिनरात	३३। ३५	५:३९	७:५	२।०४।२९।१२	५७	पद्म	२० जून	मूल सू.उ.से दिन ९:३४ तक। रवियोग सू.उ.से दिन ९:३४ तक । वृषे भौमः रात्रि १२:०९ समये।
७	र.	२४। ३९	दि.३:३०	पू.फा.	९। ५९	दि. ९:३८	सिद्धि	१४। ३५	दि.११:२९	वणि	२४। ३९	दि.३:३०	भद्रा	सिंह	२५। २५	दि. ३:४९ तक	३३। ३५	५:३९	७:५	२।०५।२६।२८	५७	छत्र	२१ जून	मित्र सप्तमी। श्री सूर्य दक्षिणायने दिन १:५५। त्रिपुष्कर योग दिन ९। ३८ से से दिन ३:३० तक। सर्वार्थसिद्धी दिन ९:३८ से रातअंत। भद्रा दिन (B)
८	चं.	२५। २३	दि.३:४८	उ.फा.	१२। ३	दि. १०:२९	व्यति	१२। २४	दि.१०:३७	बव	२५। २३	दि.३:४८	बाल	कन्या	××	दिनरात	३३। ३५	५:३९	७:५	२।०६।२३।४४	५७	श्रीवत्स	२२ जून	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। रवियोग दिन १०:२९ से दिन १२:२८ तक। व्यतिपात् सू.उ.से दि.१०:३७ वजे तक। आर्द्रायां रवि दिन १२:२८ समये। (C)
९	मं.	२७। ४८	दि.४:४७	हस्त	१५। ५१	दि. ११:६०	वरी	११। ३७	दि.१०:१८	कौल	२७। ४८	दि.४:४७	तैति	कन्या	४८। १६	रा. १२:५८ तक	३३। ३५	५:३९	७:५	२।०७।२०।६०	५७	सौम्य	२३ जून	रवियोग दिन ११:६० से रात्रिअंत। (B) ३:३० से रात्रि ३:३१ (भूमि)। व्यतिपात् दि.११:२९ वजे तक। से रातअंत।
१०	बु.	३१। ३६	सा.६:१८	चित्रा	२१। १	दि. २:०४	परि	११। ५९	दि.१०:२७	गर	३१। ३६	सा.६:१८	वणि	तुला	××	दिनरात	३३। ३५	५:४०	७:६	२।०८।१८।१५	५७	कालदंड	२४ जून	रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत। (C) गदर्भ वाहनं अल्प वृष्टि। पु. स्त्री.योग सुवृष्टि। अग्निनाड़ी। कर्के बुधः दिन ४:०९ समये। आश्लेषायां शुक्रः रात्रि २:१० समये।
११	गु.	३६। २४	रा.८:१४	स्वा	२७। १३	दि. ४:३३	शिव	१३। १३	दि.१०:५७	वणि	३। ४९	प्रा.७:१२	भद्रा	तुला	××	दिनरात	३३। ३४	५:४०	७:६	२।०९।१५।२९	५७	स्थिर	२५ जून	निर्जला एकादशी व्रत सर्वे। गायत्री जयंती। रवियोग सू.उ.से दिन ४:३३ तक । भद्रा प्रातः ७:१२ से रात्रि ८:१४ (पाताल)।
१२	शु.	४१। ५३	रा.१०:२५	विशा	३४। ६	रा. ७:१९	सिद्ध	१५। ३	दि.११:४२	बव	९। ३	दि.९:१७	बाल	तुला	१७। २०	दि. १२:३६ तक	३३। ३४	५:४०	७:६	२।१०।१२।४४	५७	मातंग	२६ जून	सर्वार्थसिद्धी रात्रि ७:१९ से रातअंत।
१३	श.	४७। ४२	रा.१२:४५	अनु	४१। २१	रा. १०:१३	साध्य	१७। १५	दि.१२:३४	कौल	१४। ४५	दि.११:३५	तैति	वृश्चिक	××	दिनरात	३३। ३४	५:४१	७:६	२।११।०९।५८	५७	अमृत	२७ जून	शनिप्रदोष व्रतं। दुर्भाग्य नाशक व्रत। मूल रात १०:१३ से रातअंत। रवियोग रात्रि १०:१३ से रात्रिअंत।
१४	र.	५३। ३७	रा.३:०८	ज्ये	४८। ४३	रा. १:१०	शुभ	१९। ३५	दि.१:३१	गर	२०। ४०	दि.१:५७	वणि	वृश्चिक	४८। ४३	रा. १:१० तक	३३। ३३	५:४१	७:६	२।१२।०७।११	५७	काण	२८ जून	पंच तप व्रत। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से रात्रि १:१० तक । सर्वार्थसिद्धी रात्रि १:१० से रातअंत। क्रांतिसाम्य रात्रि ८:२५ से रात्रि १२:५०। (D)
१५	चं.	५९। २४	रा.५:२७	मूल	५५। ५७	रा. ४:०४	शुक्ल	२१। ५४	दि.२:२७	भद्रा	२६। ३१	दि.४:१८	बव	धनु	××	दिनरात	३३। ३३	५:४१	७:६	२।१३।०४।२५	५७	लुंबक	२९ जून	पूर्णिमा। संतकवीर जयंती। वैवस्वत मन्वादितिथि। मूल सू.उ.से रात ४:०४ तक। भद्रा सू.उ.से दिन ४:१८(पाताल)।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-४८

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
२	मं.	२।१३।१६।२८	९०३	०।२६।३२।३७	४४	२।२५।९।५०	५५	३।०२।४७।२६	१२	३।०८।४४।४८	७०	११।१९।०७।१९	४	१०।०९।०८।४९	६:४३	९:०३
३	बु.	२।२८।१९।२५	८८३	०।२७।१६।१२	४४	२।२६।५।९	५२	३।०२।५९।४२	१२	३।०९।५४।२५	७०	११।१९।११।१०	४	१०।०९।०५।३८	७:५८	९:६०
४	गु.	३।१३।०२।१७	८५७	०।२७।५९।४३	४३	२।२६।५६।५३	४८	३।०३।१२।०१	१२	३।११।०३।५५	६९	११।१९।१४।५६	४	१०।०९।०२।२७	९:०८	१०:४७
५	शु.	३।२७।१९।३३	८२९	०।२८।४३।११	४३	२।२७।४४।५५	४४	३।०३।२४।२२	१२	३।१२।१३।२१	६९	११।१९।१८।३७	४	१०।०८।५९।१७	१०:१३	११:२६
६	श.	४।११।०८।५१	८०२	०।२९।२६।३५	४३	२।२८।२९।१०	४०	३।०३।३६।४६	१२	३।१३।२२।४०	६९	११।१९।२२।१३	४	१०।०८।५६।०६	११:१२	११:६०
७	र.	४।२४।३०।४६	७७७	१।०।९।५५	४३	२।२९।९।३२	३६	३।०३।४९।१३	१२	३।१४।३१।५४	६९	११।१९।२५।४३	३	१०।०८।५२।५५	१२:०७	१२:३०
८	चं.	५।०७।२७।५९	७५७	१।०।५३।१२	४३	२।२९।४५।५४	३२	३।०४।०१।४३	१३	३।१५।४१।०१	६९	११।१९।२९।०८	३	१०।०८।४९।४४	१२:५८	१२:५९
९	मं.	५।२०।०४।३१	७४०	१।१।३६।२५	४३	३।०।१८।१०	२८	३।०४।१४।१५	१३	३।१६।५०।०२	६९	११।१९।३२।२८	३	१०।०८।४६।३३	१:४७	१:२७
१०	बु.	६।०२।२४।५१	७२८	१।२।१९।३४	४३	३।०।४६।१२	२४	३।०४।२६।५०	१३	३।१७।५८।५७	६९	११।१९।३५।४३	३	१०।०८।४३।२२	२:३६	१:५७
११	गु.	६।१४।३३।१४	७२०	१।३।२।३९	४३	३।१।९।५६	१९	३।०४।३९।२७	१३	३।१९।०७।४६	६९	११।१९।३८।५२	३	१०।०८।४०।११	३:२५	२:२९
१२	शु.	६।२६।३३।२८	७१५	१।३।४५।४९	४३	३।१।२९।१५	१५	३।०४।५२।०७	१३	३।२०।१६।२७	६९	११।१९।४१।५६	३	१०।०८।३७।०१	४:१५	३:०५
१३	श.	७।०८।२८।४३	७१३	१।४।२८।३९	४३	३।१।४४।५	१०	३।०५।०४।४९	१३	३।२१।२५।०३	६८	११।१९।४४।५४	३	१०।०८।३३।५०	५:०४	३:४६
१४	र.	७।२०।२१।३३	७१३	१।५।११।३३	४३	३।१।५४।२१	६	३।०५।१७।३३	१३	३।२२।३३।३१	६८	११।१९।४७।४७	३	१०।०८।३०।३९	५:५३	४:३१
१५	चं.	८।०२।१४।०५	७१४	१।५।५४।२४	४३	३।२।०।१	१	३।०५।३०।१९	१३	३।२३।४१।५२	६८	११।१९।५०।३५	३	१०।०८।२७।२८	६:४०	५:२०

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व: मिथुने	प्रातः: कर्के	दिन: सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	सायं: धनुषे	रात्रि: मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
१६ जून	५:३४	७:४८	१०:०५	१२:१७	२:२८	४:४३	६:६०	९:०५	१०:५२	१२:२५	१:५६	३:३६	४,६,७,८,१०,१२,
१७ जून	५:३०	७:४४	१०:०१	१२:१३	२:२४	४:३९	६:५६	९:०१	१०:४८	१२:२१	१:५२	३:३२	६,७,८,१०,१२,
१८ जून	५:२६	७:४०	९:५७	१२:०९	२:२०	४:३५	६:५२	८:५७	१०:४४	१२:१७	१:४८	३:२८	६,७,८,१०,१२,
१९ जून	५:२२	७:३६	९:५३	१२:०५	२:१६	४:३१	६:४८	८:५३	१०:४०	१२:१३	१:४४	३:२४	६,७,८,१०,१२,
२० जून	५:१९	७:३२	९:४९	१२:०१	२:१२	४:२८	६:४४	८:४९	१०:३६	१२:०९	१:४०	३:२०	६,८,९,१०,१२,१,
२१ जून	५:१५	७:२८	९:४५	११:५७	२:०९	४:२४	६:४०	८:४५	१०:३२	१२:०५	१:३६	३:१६	४,६,८,९,१०,१२,१,
२२ जून	५:११	७:२४	९:४१	११:५३	२:०५	४:२०	६:३६	८:४२	१०:२८	१२:०१	१:३२	३:१२	४,६,८,९,१०,१२,१,
२३ जून	५:०७	७:२१	९:३७	११:४९	२:०१	४:१६	६:३२	८:३८	१०:२४	११:५७	१:२८	३:०८	७,८,१०,१२,१,
२४ जून	५:०३	७:१७	९:३३	११:४५	१:५७	४:१२	६:२८	८:३४	१०:२०	११:५३	१:२४	३:०४	७,८,१०,१२,१,
२५ जून	४:५९	७:१३	९:२९	११:४२	१:५३	४:०८	६:२४	८:३०	१०:१६	११:४९	१:२०	३:००	७,८,१०,१२,१,
२६ जून	४:५५	७:०९	९:२५	११:३८	१:४९	४:०४	६:२०	८:२६	१०:१२	११:४५	१:१६	२:५६	७,८,१०,१२,१,
२७ जून	४:५१	७:०५	९:२१	११:३४	१:४५	३:६०	६:१६	८:२२	१०:०९	११:४२	१:१२	२:५२	७,८,१०,१२,१,
२८ जून	४:४७	७:०१	९:१७	११:३०	१:४१	३:५६	६:१२	८:१८	१०:०५	११:३८	१:०८	२:४९	७,८,१०,१२,१,
२९ जून	४:४३	६:५७	९:१३	११:२६	१:३७	३:५२	६:०८	८:१४	१०:०१	११:३४	१:०४	२:४५	४,७,८,१०,१२,१,

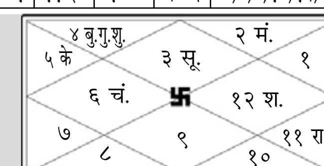
तिथि २
मंगलवार
इष्ट ०।०



द्वितीय ज्येष्ठ शुद्धशुक्ल २ कृतिकायां भौम तपश्चीयों को कष्ट, अनाज महंगा होने का योग।

(D) भद्रा रात्रि ३:०८ से रात्रिअंत (स्वर्ग)। क्रांतिसाम्य रात्रि ८:२५ से रात्रि १२:५०।

तिथि ९
मंगलवार
इष्ट ०।०



आषाढ़ कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शकः १९४८। रौद्र संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। वर्षा ऋतुः । श्री सूर्य दक्षिणायन-उत्तरगोले। जून-जुलाई ईसवी सन् २०२६। जून-जुलाई। वंगला सन् १४३३ । वीर निर्वाण संवत् २५५२।

१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदयपश्चिमेः। मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-आर्द्रायां रविः, कृत्तिकायां भौमः, पुनर्वसे वुधः, पुष्ये गुरौ, आश्लेषायां शुक्रः, रेवत्यां शनिः, शतभिषायां राहु, मघायां केतु।
१	मं.	६०।००	वृद्धि	पू.षा	६०।०	वृद्धि	ब्रह्म	२४।२	दि.३:१८	बाल	२७।१६	सा.६:३३	कौल	धनु	--	दिनरात	३३।३२	५:४१	७:६	२।१४।०१।३८	५७	मित्र	३० जून	
१	बु.	४।५०	प्रा.७:३८	पू.षा	२।५३	प्रा. ६:५१	ऐंद्र	२५।५२	दि.४:०३	कौल	४।५०	प्रा.७:३८	तैति	धनु	११।३१	दि. १:३० तक	३३।३१	५:४२	७:६	२।१४।५८।५२	५७	श्रीवत्स	०१ जुला	वैधृति दि.४:०३ वजे तक। से रातअंत।
२	गु.	९।४५	दि.९:३६	उ.षा	९।१८	दि. ९:२५	वैधृ	२७।१६	दि.४:३६	गर	९।४५	दि.९:३६	वणि	मकर	--	दिनरात	३३।३१	५:४२	७:६	२।१५।५६।०५	५७	ध्वांक्ष	०२ जुला	भद्रा रात्रि १०:२९ से रात्रिअंत (पाताल)। वैधृति सू.उ.से दि.४:३६ वजे तक। । बुध अस्त पश्चिमेः रात्रि ८:०२ समये।
३	शु.	१३।५७	दि.११:१७	श्रव	१५।३	दि. ११:४४	विष्कु	२८।४	दि.४:५६	भद्रा	१३।५७	दि.११:१७	बव	मकर	४७।३७	रा. १२:४५ तक	३३।३०	५:४२	७:६	२।१६।५३।१८	५७	धूम्र	०३ जुला	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। पंचक प्रारंभ रा. १२:४५ तक समये। सर्वार्थसिद्धी दिन ११:४४ पर्यन्त। भद्रा सू.उ.से दिन ११:१७(पाताल)।
४	श.	१७।१५	दि.१२:३७	धनि	१९।५४	दि. १:४०	प्रीति	२८।८	दि.४:५८	बाल	१७।१५	दि.१२:३७	कौल	कुंभ	××	दिनरात	३३।२९	५:४३	७:६	२।१७।५०।३१	५७	प्रवर्ध	०४ जुला	पंचक दिनरात। रोहिण्यां भौमः रात्रि १२:०० समये। शुक्रः सिंहे मघायांश्च रात्रि ७:१६ समये।
५	र.	१९।२३	दि.१:२८	शत	२३।३६	दि. ३:१०	आयु	२७।१५	दि.४:३७	तैति	१९।२३	दि.१:२८	गर	कुंभ	××	दिनरात	३३।२८	५:४३	७:६	२।१८।४७।४४	५७	राक्षस	०५ जुला	पंचक दिनरात। रवियोग दिन ३:१० से रात्रिअंत।
६	चं.	२०।०६	दि.१:४६	पू.भा	२५।५५	दि. ४:०६	सौभ	२५।१४	दि.३:४९	वणि	२०।६	दि.१:४६	भद्रा	कुंभ	१०।३३	दि. ९:५७ तक	३३।२७	५:४४	७:६	२।१९।४४।५७	५७	मुसल	०६ जुला	पंचक दिनरात। रवियोग सू.उ.से दिन १२:०२ तक , पुनः दिन ४:०६ से रात्रिअंत। भद्रा दिन १:४६ से रात्रि १:४२ (भूमि)। पुनर्वसे रवि दिन (A)
७	मं.	१९।११	दि.१:२४	उ.भा	२६।३७	दि. ४:२३	शोभ	२१।५५	दि.२:३०	बव	१९।११	दि.१:२४	बाल	मीन	××	दिनरात	३३।२६	५:४४	७:६	२।२०।४२।१०	५७	सिद्धि	०७ जुला	कालाष्टमी व्रतं। पंचक दिनरात। मूल दिन ४:२३ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से दिन ४:२३ तक। सर्वार्थसिद्धी दिन ४:२३ पर्यन्त। मिथुने बुधः दिन १०:१९ समये
८	बु.	१६।३३	दि.१२:२२	रेव	२५।३६	दि. ३:५९	अति	१७।१३	दि.१२:३७	कौल	१६।३३	दि.१२:२२	तैति	मीन	२५।३६	दि. ३:५९ तक	३३।२५	५:४४	७:६	२।२१।३९।२३	५७	उत्पात	०८ जुला	पंचक समाप्त दि. ३ :५९ समये। मूल दिनरात। (A) १२:०२ समये। अश्व वाहनं पर्वते वृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। सौम्यनाड़ी।
९	गु.	१२।१३	दि.१०:३८	अश्वि	२२।५३	दि. २:५४	सुक	११।८	दि.१०:१२	गर	१२।१३	दि.१०:३८	वणि	मेष	××	दिनरात	३३।२४	५:४५	७:६	२।२२।३६।३६	५७	मानस	०९ जुला	मूल सू.उ.से दिन २:५४ तक। सर्वार्थसिद्धी दिन २:५४ पर्यन्त। भद्रा रात्रि ९:२९ से रात्रिअंत (स्वर्ग)।
१०,११	शु.	६।११, ५९।०४	दि.८:१७,रा ५:२३	भर	१८।३९	दि. १:१३	धृति, शूल	३।४६, ५९।५३	प्रा.७:१५, रा.५:४३	भद्रा	६।११	दि.८:१७	बव	मेष	३२।२०	सा. ६:४१ तक	३३।२२	५:४५	७:६	२।२३।३३।५०	५७	मुद्गर	१० जुला	भद्रा सू.उ.से दिन ८:१७(स्वर्ग)।
१२	श.	५०।४१	रा.२:०२	कृत्ति	१३।९	दि. ११:०१	गंड़	४५।४३	रा.१२:०३	कौल	२४।५३	दि.३:४३	तैति	वृष	××	दिनरात	३३।२१	५:४६	७:६	२।२४।३१।०३	५७	ध्वज	११ जुला	योगिनी एकादशी व्रत सर्वे। त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से दिन ११:०१ तक। क्रांतिसाम्य रात्रि ७:२३ से रात्रि ११:१६। क्रांतिसाम्य रात्रि ७:२३ से रात्रि ११:१६।
१३	र.	४१।४५	रा.१०:२८	रोहि, मृग	६:४४।५९:४७	दि.८:२८, रा.५:४१	बृद्धि	३५।४५	रा.८:०४	गर	१६।१६	दि.१२:१७	वणि	वृष	३३।१६	रा. ७:०४ तक	३३।२०	५:४६	७:६	२।२५।२८।१७	५७	धाता	१२ जुला	रविप्रदोष व्रतं। मासिक शिवरात्रि व्रतं। भद्रा रात्रि १०:२८ से रात्रिअंत (स्वर्ग)।
१४	चं.	३२।४०	सा.६:५०	आर्द्रा	५२।४५	रा. २:५२	ध्रुव	२५।३७	दि.४:०१	भद्रा	७।१४	दि.८:४०	शकु	मिथुन	××	दिनरात	३३।१८	५:४६	७:६	२।२६।२५।३१	५७	कालदंड	१३ जुला	भद्रा सू.उ.से दिन ८:४०(स्वर्ग)।
३०	मं.	२३।४७	दि.३:१७	पुन	४६।८	रा. १२:१४	व्या	१५।३४	दि.१२:००	नाग	२३।४७	दि.३:१७	किस्त	मिथुन	३२।४६	सा. ६:५३ तक	३३।१७	५:४७	७:५	२।२७।२२।४५	५७	स्थिर	१४ जुला	अमावस्या। मंगल पुष्य योग रात्रि १२:१४ से रातअंत।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-५०

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	मं.	८।१४।०८।०७	७१७	१।१६।३७।११	४३	३।२।१।४	-४	३।०५।४३।०७	१३	३।२४।५०।०६	६८	११।१९।५३।१७	३	१०।०८।२४।१७	७:२४	६:१२
१	बु.	८।२६।०५।१६	७२२	१।१७।१९।५३	४३	३।१।५७।३१	-८	३।०५।५५।५७	१३	३।२५।५८।१३	६८	११।१९।५५।५३	३	१०।०८।२१।०६	८:०५	६:४१
२	गु.	९।०८।०७।०४	७२८	१।१८।२।३२	४३	३।१।४९।२४	-१३	३।०६।०८।५०	१३	३।२७।०६।१३	६८	११।१९।५८।२३	२	१०।०८।१७।५५	८:४२	७:३४
३	शु.	९।२०।१५।१५	७३७	१।१८।४५।७	४३	३।१।३६।५०	-१७	३।०६।२१।४४	१३	३।२८।१४।०४	६८	११।२०।००।४८	२	१०।०८।१४।४५	९:१७	८:२८
४	श.	१०।०२।३१।५८	७४८	१।१९।२७।३९	४२	३।१।११।५९	-२१	३।०६।३४।३९	१३	३।२९।२१।४८	६८	११।२०।०३।०७	२	१०।०८।११।३४	९:५०	९:२१
५	र.	१०।१४।५९।५७	७६३	१।१०।१०।१६	४२	३।०।५९।१	-२५	३।०६।४७।३७	१३	४।००।२९।२४	६७	११।२०।०५।२१	२	१०।०८।०८।२३	१०:२४	१०:१५
६	चं.	१०।२७।४२।३४	७८१	१।१०।५२।२९	४२	३।०।३४।१५	-२८	३।०७।००।३६	१३	४।०१।३६।५२	६७	११।२०।०७।२८	२	१०।०८।०५।१२	१०:५८	११:११
७	मं.	११।१०।४३।३७	८०३	१।११।३४।४९	४२	३।०।५।५९	-३१	३।०७।१३।३७	१३	४।०२।४४।११	६७	११।२०।०९।३०	२	१०।०८।०२।०१	११:३५	१२:१०
८	बु.	११।२४।०६।४५	८२८	१।१२।१७।४	४२	२।२९।३४।३८	-३४	३।०७।२६।३९	१३	४।०३।५१।२२	६७	११।२०।११।२६	२	१०।०७।५८।५०	१२:१७	१:१३
९	गु.	०।०७।५४।३३	८५३	१।१२।५९।१६	४२	२।२९।०।३९	-३६	३।०७।३९।४२	१३	४।०४।५८।२४	६७	११।२०।१३।१६	२	१०।०७।५५।३९	१:०४	२:२२
१०,११	शु.	०।२२।०७।४०	८७६	१।१३।४१।२४	४२	२।२८।२४।३३	-३८	३।०७।५२।४७	१३	४।०६।०५।१७	६७	११।२०।१५।००	२	१०।०७।५२।२८	१:६०	३:३५
१२	श.	१।०६।४३।५८	८९४	१।१४।२३।२७	४२	२।२७।४६।५६	-३९	३।०८।०५।५४	१३	४।०७।१२।०१	६७	११।२०।१६।३९	२	१०।०७।४९।१८	३:०३	४:५०
१३	र.	१।२१।३८।२२	९०५	१।१५।५।२७	४२	२।२७।८।२५	-३९	३।०८।१९।०१	१३	४।०८।१८।३६	६६	११।२०।१८।११	१	१०।०७।४६।०७	४:१४	६:०३
१४	चं.	२।०६।४३।१५	९०६	१।१५।४७।२२	४२	२।२६।२९।३८	-३८	३।०८।३२।१०	१३	४।०९।२५।०१	६६	११।२०।१९।३७	१	१०।०७।४२।५६	५:२९	७:११
३०	मं.	२।२१।४९।२८	८९८	१।१६।२९।१४	४२	२।२५।५१।१६	-३७	३।०८।४५।११	१३	४।१०।३१।१६	६६	११।२०।२०।५७	१	१०।०७।३९।४५	××	८:१०

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
३० जून	४:३९	६:५३	९:०९	११:२२	१:३३	३:४८	६:०५	८:१०	९:५७	११:३०	१:००	२:४१	४,७,८,१०,१२,१,
०१ जुला	४:३५	६:४९	९:०६	११:१८	१:२९	३:४४	६:०१	८:०६	९:५३	११:२६	१२:५६	२:३७	४,७,८,१०,१२,१,
०२ जुला	४:३१	६:४५	९:०२	११:१४	१:२५	३:४०	५:५७	८:०२	९:४९	११:२२	१२:५२	२:३३	४,७,८,१०,१२,१,
०३ जुला	४:२७	६:४१	८:५८	११:१०	१:२१	३:३६	५:५३	७:५८	९:४५	११:१८	१२:४९	२:२९	७,८,१०,१२,१,
०४ जुला	४:२३	६:३७	८:५४	११:०६	१:१७	३:३२	५:४९	७:५४	९:४१	११:१४	१२:४५	२:२५	७,८,९,१०,१२,१,
०५ जुला	४:१९	६:३३	८:५०	११:०२	१:१३	३:२८	५:४५	७:५०	९:३७	११:१०	१२:४१	२:२१	७,९,१०,१२,१,
०६ जुला	४:१५	६:२९	८:४६	१०:५८	१:०९	३:२४	५:४१	७:४६	९:३३	११:०६	१२:३७	२:१७	७,९,१०,१२,१,
०७ जुला	४:११	६:२५	८:४२	१०:५४	१:०५	३:२१	५:३७	७:४२	९:२९	११:०२	१२:३३	२:१३	७,८,९,१०,१२,१,
०८ जुला	४:०८	६:२१	८:३८	१०:५०	१:०१	३:१७	५:३३	७:३८	९:२५	१०:५८	१२:२९	२:०९	४,६,७,८,९,१०,१२,१,
०९ जुला	४:०४	६:१७	८:३४	१०:४६	१२:५८	३:१३	५:२९	७:३५	९:२१	१०:५४	१२:२५	२:०५	४,६,७,८,९,१०,१२,१,
१० जुला	३:६०	६:१३	८:३०	१०:४२	१२:५४	३:०९	५:२५	७:३१	९:१७	१०:५०	१२:२१	२:०१	४,६,७,८,९,१०,१२,१
११ जुला	३:५६	६:१०	८:२६	१०:३८	१२:५०	३:०५	५:२१	७:२७	९:१३	१०:४६	१२:१७	१:५७	४,६,७,८,९,१०,१२,१
१२ जुला	३:५२	६:०६	८:२२	१०:३४	१२:४६	३:०१	५:१७	७:२३	९:०९	१०:४२	१२:१३	१:५३	६,७,८,९,१०,१२,१,
१३ जुला	३:४८	६:०२	८:१८	१०:३१	१२:४२	२:५७	५:१३	७:१९	९:०५	१०:३८	१२:०९	१:४९	६,७,८,९,१०,१२,१,
१४ जुला	३:४४	५:५८	८:१४	१०:२७	१२:३८	२:५३	५:०९	७:१५	९:०१	१०:३४	१२:०५	१:४५	४,६,७,८,९,१०,१२,१

तिथि १
मंगलवार
इष्ट ०।०



आषाढ़कृष्ण ४ रोहिण्यां भौम वस्त्र महंगे होगे। वृक्षों में रह्नोग।

तिथि ७
मंगलवार
इष्ट ०।०



१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु अस्तपश्चिमेः। शुक्र उदयपश्चिमेः | मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-पुनर्वसे रविः, रोहिण्यां भौमः, पुनर्वसे वुधः, पुष्ये गुरौ, मघायां शुक्रः, रेवत्यां शनिः, शतभिषायां राहु, मघायां केतु।
१	बु.	१५।२७	दि.११:५८	पुष्य	४०।१८	रा. ९:५४	हर्ष, वज्र	५।५४, ५९।५५	दि.८:०९, रा.५:४६	बव	१५।२७	दि.११:५८	बाल	कर्क	--	दिनरात	३३।१५	५:४७	७:५	२।२८।१९।५९	५७	मातंग	१५ जुला	गुप्त नवरात्रि प्रारंभ। गुरु अस्त पश्चिमेः सायं ११:४९ समये। मूल रात ९:५४ से रातअंत। बुध पुष्य योग सू उ से रात्रि ९:५४ तक।
२	गु.	८।०३	दि.९:०१	श्ले	३५।३८	रा. ८:०३	सिद्धि	४९।१७	रा.१:३०	कौल	८।३	दि.९:०१	तैति	कर्क	३५।३८	रा. ८:०३ तक	३३।१३	५:४८	७:५	२।२९।१७।१४	५७	अमृत	१६ जुला	जगन्नाथ रथयात्रा पुष्य नक्षत्रे। मूल दिनरात। रवियोग रात्रि ८:०३ से रात्रिअंत। व्यतिपात् रा.१:३० वजे तक। से रातअंत। कर्के रवि रात्रि ११:४३ (A)
३,४	शु.	१।५७, ५७।३०	प्रा.६:३५,रा ४:४८	मघा	३२।२६	सा. ६:४७	व्यति	४२।५१	रा.१०:५६	गर	१।५७	प्रा.६:३५	वणि	सिंह	--	दिनरात	३३।१२	५:४८	७:५	३।००।१४।२९	५७	काण	१७ जुला	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। ० मूल सू.उ.से सायं. ६:४७ तक। रवियोग सू.उ.से सायं ६:४७ तक । सिद्धयोग सायं ६:४७ से रातअंत। भद्रा (B)
५	श.	५५।०६	रा.३:५१	पू.फा.	३०।५९	सा. ६:१२	वरी	३७।५०	रा.८:५७	बव	२६।१८	दि.४:२०	बाल	सिंह	४५।५१	रा. १२:०९ तक	३३।१०	५:४८	७:४	३।०१।११।४५	५७	लुंबक	१८ जुला	रवियोग सायं ६:१२ से रात्रिअंत। (A) समये। पुण्यकाल आज। पूर्वाफाल्गुण्यां शुक्रः रात्रि ७:१३ समये।
६	र.	५४।३१	रा.३:३७	उ.फा.	३१।२६	सा. ६:२३	परि	३४।२१	रा.७:३३	कौल	२४।४३	दि.३:४२	तैति	कन्या	××	दिनरात	३३।०८	५:४९	७:४	३।०२।०९।०१	५७	मित्र	१९ जुला	स्कन्द षष्ठी। रवियोग सू.उ.से सायं ६:२३ तक, पुनः रात्रि ११:३४ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी सायं ६:२३ पर्यन्त। अमृतसिद्धि सायं ६:२३ से रातअंत।
७	चं.	५५।४८	रा.४:०९	हस्त	३३।४५	रा. ७:१९	शिव	३२।२३	सा.६:४७	गर	२५।५	दि.३:५१	वणि	कन्या	××	दिनरात	३३।०६	५:४९	७:४	३।०३।०६।१७	५७	वज्र	२० जुला	वरूण सप्तमी। रवियोग दिन ११:३४ से रात्रि ७:१९। भद्रा रात्रि ४:०९ से रात्रिअंत (पाताल)। पुष्ये रवि दिन ११:३४ समये। मूषक वाहनं अल्प (C)
८	मं.	५८।४६	रा.५:२०	चित्रा	३७।४७	रा. ८:५६	सिद्ध	३१।४८	सा.६:३३	भद्रा	२७।१४	दि.४:४३	बव	कन्या	५।२७	दि. ८:०० तक	३३।०५	५:५०	७:४	३।०४।०३।३४	५७	ध्वांक्ष	२१ जुला	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। महिषन्धी व्रत। भद्रा सू.उ.से दिन ४:४३ (पाताल)। बुध उदय पूर्वेः प्रातः ५:०२ समये।
९	बु.	६०।००	वृद्धि	स्वा	४३।१५	रा. ११:०८	साध्य	३२।२४	सा.६:४८	बाल	२७।४९	सा.६:१२	कौल	तुला	××	दिनरात	३३।०३	५:५०	७:३	३।०५।००।५१	५७	धूम्र	२२ जुला	रवियोग रात्रि ११:०८ से रात्रिअंत। (B) सायं ५:४२ से रात्रि ४:५० (भूमि)। व्यतिपात् सू.उ.से रा.१०:५६ वजे तक।
९	गु.	३।०९	प्रा.७:०६	विशा	४९।४६	रा. १:४५	शुभ	३३।५२	रा.७:२४	कौल	३।९	प्रा.७:०६	तैति	तुला	३३।०५	रा. ७:०५ तक	३३।०१	५:५१	७:३	३।०५।५८।०९	५७	प्रवर्ध	२३ जुला	भड़ैया नवमी। एन्द्रीव्रत। रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १:४५ से रातअंत। क्रांतिसाम्य रात्रि २:१३ से रातअंत। क्रांतिसाम्य रात्रि (D)
१०	शु.	८।२९	दि.९:१५	अनु	५६।५६	रा. ४:३७	शुक्ल	३५।५६	रा.८:१३	गर	८।२९	दि.९:१५	वणि	वृश्चिक	××	दिनरात	३२।५९	५:५१	७:२	३।०६।५५।२७	५७	राक्षस	२४ जुला	आशा दशमी, मन्वादि तिथि। मूल रात ४:३७ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से रात्रि ४:३७ तक। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ४:३७ पर्यन्त। भद्रा रात्रि १०:२४ (E)
११	श.	१४।१९	दि.११:३५	ज्ये	६०।०	वृद्धि	ब्रह्म	३८।१६	रा.९:१०	भद्रा	१४।१९	दि.११:३५	बव	वृश्चिक	××	दिनरात	३२।५६	५:५१	७:२	३।०७।५२।४६	५७	मुसल	२५ जुला	देव शयनी एकादशी व्रत सर्वे। चतुर्मास प्रारंभ। मूल दिनरात। भद्रा सू.उ.से दिन ११:३५(स्वर्ग)। (C) वृष्टि। स्त्री. स्त्री.योग अनावृष्टि। नीरानाड़ी।
१२	र.	२०।१५	दि.१:५८	ज्ये	४।१९	प्रा. ७:३६	ऐंद्र	४०।३५	रा.१०:०६	बाल	२०।१५	दि.१:५८	कौल	वृश्चिक	४।१९	प्रा. ७:३६ तक	३२।५४	५:५२	७:२	३।०८।५०।०६	५७	काण	२६ जुला	रविप्रदोष व्रतं। वामन पूजन। मूल दिनरात। सर्वार्थसिद्धी प्रातः ७:३६ से रातअंत। वैधृति रा.१०:०६ वजे तक। से रातअंत। वक्री शनि दिन १२:३३ समये
१३	चं.	२५।५६	दि.४:१५	मूल	११।३२	दि. १०:२९	वैधृ	४२।३८	रा.१०:५५	तैति	२५।५६	दि.४:१५	गर	धनु	××	दिनरात	३२।५२	५:५२	७:१	३।०९।४७।२६	५७	लुंबक	२७ जुला	मूल सू.उ.से दिन १०:२९ तक। रवियोग दिन १०:२९ से रात्रिअंत। वैधृति सू.उ.से रा.१०:५५ वजे तक।
१४	मं.	३१।०५	सा.६:१९	पू.षा	१८।१६	दि. १:११	विष्कु	४४।१३	रा.११:३४	वणि	३१।५	सा.६:१९	भद्रा	धनु	३४।५१	रा. ७:४९ तक	३२।५०	५:५३	७:१	३।१०।४४।४७	५७	मित्र	२८ जुला	रवियोग सू.उ.से दिन १:११ तक । भद्रा सायं ६:१९ से रा.अंत (पाताल)। उत्तराफाल्गुण्यां शुक्रः रात्रि ५:०३ समये।
१५	बु.	३५।२८	रा.८:०४	उ.षा	२४।१८	दि. ३:३७	प्रीति	४५।११	रा.११:५७	भद्रा	३।२७	प्रा.७:१६	बव	मकर	××	दिनरात	३२।४८	५:५३	७:०	३।११।४२।०९	५७	वज्र	२९ जुला	मन्वादि तिथि, कोकिला व्रतारंभ। गुरुपूर्णिमा, व्यास पूजन। भद्रा सू.उ.से प्रातः ७:१६(पाताल)।

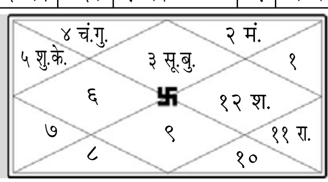
सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-५३

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-वक्री	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	बु.	३।०६।४७।३९	८८२	१।१७।११।१	४२	२।२५।१३।५८	-३६	३।०८।५८।३०	१३	४।११।३७।२१	६६	११।२०।२२।१२	१	१०।०७।३६।३४	६:४७	८:३७
२	गु.	३।२१।२९।३६	८६०	१।१७।५२।४४	४२	२।२४।३८।२७	-३३	३।०९।११।४२	१३	४।१२।४३।१५	६६	११।२०।२३।२०	१	१०।०७।३३।२३	७:५६	९:२१
३,४	शु.	४।०५।४९।१३	८३४	१।१८।३४।२४	४२	२।२४।५।१८	-३०	३।०९।२४।५४	१३	४।१३।४८।५९	६६	११।२०।२४।२२	१	१०।०७।३०।१२	८:५९	९:५८
५	श.	४।१९।४३।०४	८०७	१।१९।१५।५९	४२	२।२३।३५।९	-२७	३।०९।३८।०७	१३	४।१४।५४।३२	६५	११।२०।२५।१८	१	१०।०७।२७।०१	९:५७	१०:३०
६	र.	५।०३।१०।२०	७८२	१।१९।५७।३०	४१	२।२३।८।३४	-२३	३।०९।५१।२१	१३	४।१५।५९।५४	६५	११।२०।२६।०८	१	१०।०७।२३।५१	१०:५१	११:००
७	चं.	५।१६।१२।३०	७६०	१।२०।३८।५६	४१	२।२२।४६।२	-१८	३।१०।०४।३६	१३	४।१७।०५।०५	६५	११।२०।२६।५२	१	१०।०७।२०।४०	११:४२	११:२९
८	मं.	५।२८।५२।४०	७४२	१।२१।२०।१९	४१	२।२२।२८।१	-१३	३।१०।१७।५१	१३	४।१८।१०।०३	६५	११।२०।२७।२९	१	१०।०७।१७।२९	१२:३२	११:५९
९	बु.	६।११।१४।५२	७२९	१।२२।१।३८	४१	२।२२।१४।५३	-८	३।१०।३१।०७	१३	४।१९।१४।५०	६५	११।२०।२८।०१	०	१०।०७।१४।१८	१:२२	१२:३०
९	गु.	६।२३।२३।२७	७१९	१।२२।४२।५२	४१	२।२२।६।५८	-२	३।१०।४४।२३	१३	४।२०।१९।२४	६४	११।२०।२८।२६	०	१०।०७।११।०७	२:११	१:०५
१०	शु.	७।०५।२२।४१	७१४	१।२३।२४।२	४१	२।२२।४।३२	३	३।१०।५७।४०	१३	४।२१।२३।४६	६४	११।२०।२८।४६	०	१०।०७।०७।५६	३:०१	१:४४
११	श.	७।१७।१६।३३	७१२	१।२४।५।७	४१	२।२२।७।४७	९	३।११।१०।५७	१३	४।२२।२७।५५	६४	११।२०।२८।५९	०	१०।०७।०४।४५	३:५०	२:२७
१२	र.	७।२९।०८।३६	७१३	१।२४।४६।९	४१	२।२२।१६।५३	१५	३।११।२४।१४	१३	४।२३।३१।५०	६४	११।२०।२९।०६	०	१०।०७।०१।३५	४:३८	३:१५
१३	चं.	८।११।०२।०१	७१८	१।२५।२७।६	४१	२।२२।३१।५६	२१	३।११।३७।३१	१३	४।२४।३५।३१	६३	११।२०।२९।०७	०	१०।०६।५८।२४	५:२२	४:०६
१४	मं.	८।२२।५९।३२	७२४	१।२६।७।५९	४१	२।२२।५३।१	२७	३।११।५०।४९	१३	४।२५।३८।५८	६३	११।२०।२९।०१	०	१०।०६।५५।१३	६:०४	४:५९
१५	बु.	९।०५।०३।२५	७३२	१।२६।४८।४७	४१	२।२३।२०।११	३३	३।१२।०४।०६	१३	४।२६।४२।११	६३	११।२०।२८।५०	०	१०।०६।५२।०२	६:४२	५:५३

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व: मिथुने	प्रातः: कर्के	दिन: सिंहे	दिन: कन्यायां	दिन: तुलायां	दिन: वृश्चिके	सायं: धनुषे	रात्रि: मकरे	रात्रि: कुंभे	रात्रि: मीने	रात्रि: मेषे	रात्रि: वृषे	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
१५ जुला	३:४०	५:५४	८:१०	१०:२३	१२:३४	२:४९	५:०५	७:११	८:५८	१०:३१	१२:०१	१:४२	६,७,८,९,१०,१२,१,
१६ जुला	३:३६	५:५०	८:०६	१०:१९	१२:३०	२:४५	५:०१	७:०७	८:५४	१०:२७	११:५७	१:३८	६,७,८,९,१०,१२,
१७ जुला	३:३२	५:४६	८:०२	१०:१५	१२:२६	२:४१	४:५७	७:०३	८:५०	१०:२३	११:५३	१:३४	६,७,८,९,१०,१२,३,
१८ जुला	३:२८	५:४२	७:५९	१०:११	१२:२२	२:३७	४:५४	६:५९	८:४६	१०:१९	११:४९	१:३०	६,७,८,९,१०,१२,१,३,
१९ जुला	३:२४	५:३८	७:५५	१०:०७	१२:१८	२:३३	४:५०	६:५५	८:४२	१०:१५	११:४५	१:२६	६,७,८,९,१०,१२,१,३,
२० जुला	३:२०	५:३४	७:५१	१०:०३	१२:१४	२:२९	४:४६	६:५१	८:३८	१०:११	११:४२	१:२२	६,७,८,९,१०,१२,१,३,
२१ जुला	३:१६	५:३०	७:४७	९:५९	१२:१०	२:२५	४:४२	६:४७	८:३४	१०:०७	११:३८	१:१८	६,७,८,९,१०,१२,१,३,
२२ जुला	३:१२	५:२६	७:४३	९:५५	१२:०६	२:२१	४:३८	६:४३	८:३०	१०:०३	११:३४	१:१४	६,७,८,९,१०,१२,१,३,
२३ जुला	३:०८	५:२२	७:३९	९:५१	१२:०२	२:१७	४:३४	६:३९	८:२६	९:५९	११:३०	१:१०	६,७,८,९,१०,१२,३,
२४ जुला	३:०४	५:१८	७:३५	९:४७	११:५८	२:१३	४:३०	६:३५	८:२२	९:५५	११:२६	१:०६	६,७,८,९,१०,१२,३,
२५ जुला	३:०१	५:१४	७:३१	९:४३	११:५४	२:१०	४:२६	६:३१	८:१८	९:५१	११:२२	१:०२	६,७,८,९,१०,१२,३,
२६ जुला	२:५७	५:१०	७:२७	९:३९	११:५०	२:०६	४:२२	६:२७	८:१४	९:४७	११:१८	१२:५८	६,७,८,९,१०,१२,३,
२७ जुला	२:५३	५:०६	७:२३	९:३५	११:४७	२:०२	४:१८	६:२४	८:१०	९:४३	११:१४	१२:५४	६,७,८,९,१०,१२,३,
२८ जुला	२:४९	५:०३	७:१९	९:३१	११:४३	१:५८	४:१४	६:२०	८:०६	९:३९	११:१०	१२:५०	६,७,८,९,१०,१२,१,३,
२९ जुला	२:४५	४:५९	७:१५	९:२७	११:३९	१:५४	४:१०	६:१६	८:०२	९:३५	११:०६	१२:४६	६,७,८,९,१०,१२,१,३,

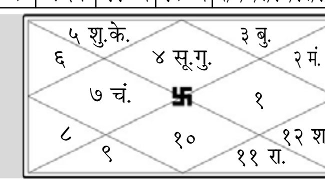
तिथि १
बुधवार
इष्ट ०।०



कर्क संक्रान्ति फलम्- आषाढ़ शुक्ल २ गुरुवासरे रात्रि ११:४३ समये कर्कसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम मंदा संज्ञक संक्रांति बुद्धिजीवी वर्ग, लेखको, अध्यापकों, व्राम्हणों, वैज्ञानिकों आदि को शुभद है। तस्य काले मघानक्षत्र नाम घोरा संज्ञक संक्रांति निर्धनवर्ग को सुखद। मुहूर्त्त ३० अनाज मूल्य समता। गर करण फल- हस्ती वाहनं, गदर्भ उपवाहनं, रक्त वस्त्रं, धनुष आयुधं, लोह पात्रं, पय भक्षणं, गोरोचन लेपनं, पशु वर्ण, विल्व पुष्पं, मुकुट भूषणं, श्वेत कंचुकी, प्रौढा अवस्था, उपविष्टा स्थिति। अन्नादि में स्थिर भाव सूचक। अत्यधिक आंधी-तूफान चलेगा। आषाढ़शुक्ल ९ मृगशिरायां भौम बहुत जल वर्षा, कपास नष्ट।

(D) २:१३ से रातअंत। मृगशिरायां भौमः रात्रि ३:३० समये। (E) से रात्रिअंत (स्वर्ग)। बुध मार्गी प्रातः ४:३७ समये

तिथि ९
बुधवार
इष्ट ०।०



श्रावण कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शक: १९४८। रौद्र संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। वर्षा ऋतुः । श्री सूर्य दक्षिणायन-उत्तरगोले। जुलाई-अगस्त ईसवी सन् २०२६। जुलाई-अगस्त। वंगला सन् १४३३ । वीर निर्वाण संवत् २५५२।

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रात: एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु अस्तपूर्वे: पुन: उदय 12 चन्द्रे । शुक्र उदयपश्चिमे: | मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रात:	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-पुष्ये रवि:, मृगशिरायां भौम:, पुनर्वसे वुध:, पुष्ये गुरौ, उत्तराफाल्गुण्यां शुक्र:, रेवत्यां शनि:, शतभिषायां राहु, मघायां केतु।
१	गु.	३८।५६	रा.९:२८	श्रव	२९।२९	सा. ५:४१	आयु	४५।२६	रा.१२:०४	बाल	७।२२	दि.८:५१	कौल	मकर	--	दिनरात	३२।४५	५:५४	६:६०	३।१२।३९।३२	५७	ध्वज	३० जुला	पार्थिव शिव पूजन।
२	शु.	४१।२६	रा.१०:२८	धनि	३३।४४	रा. ७:२४	सौभ	४४।५४	रा.११:५२	तैति	१०।२१	दि.१०:०२	गर	मकर	१।४९	प्रा. ६:३८ तक	३२।४३	५:५४	६:५९	३।१३।३६।५५	५७	धाता	३१ जुला	पंचक प्रारंभ प्रा. ६:३८ तक समये।
३	श.	४२।५२	रा.११:०३	शत	३६।५७	रा. ८:४१	शोभ	४३।३३	रा.११:२०	वणि	१२।१८	दि.१०:५०	भद्रा	कुंभ	--	दिनरात	३२।४१	५:५५	६:५९	३।१४।३४।१९	५७	आनंद	०१ अग	पंचक दिनरात। भद्रा दिन १०:५० से रात्रि ११:०३ (भूमि)। कन्यायां शुक्र: दिन ९:३९ समये। धनिष्ठायां राहु २४:४२ समये।
४	र.	४३।१२	रा.११:१२	पू.भा	३९।६	रा. ९:३३	अति	४१।१९	रा.१०:२७	बव	१३।११	दि.११:११	बाल	कुंभ	२३।४०	दि. ३:२३ तक	३२।३८	५:५५	६:५८	३।१५।३१।४४	५७	चर	०२ अग	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। पंचक दिनरात। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ९:३३ से रातअंत। मिथुने भौम: रात्रि १०:५७ समये।
५	चं.	४२।२२	रा.१०:५२	उ.भा	४०।७	रा. ९:५८	सुक	३८।१०	रा.९:११	कौल	१२।५७	दि.११:०६	तैति	मीन	××	दिनरात	३२।३६	५:५५	६:५८	३।१६।२९।०९	५७	गद	०३ अग	मौना पंचमी। पंचक दिनरात। मूल रात ९:५८ से रातअंत। आश्लेषायां रवि दिन १०:२७ समये। गज वाहनं सुवृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। जलनाड़ी।
६	मं.	४०।१७	रा.१०:०३	रेव	३९।५४	रा. ९:५३	धृति	३४।१	रा.७:३२	गर	११।३१	दि.१०:३२	वणि	मीन	३९।५४	रा. ९:५३ तक	३२।३३	५:५६	६:५७	३।१७।२६।३६	५७	शुभ	०४ अग	पंचक समाप्त रा. ९ :५३ समये। मूल दिनरात। रवियोग रात्रि ९:५३ से रात्रिअंत। अमृतसिद्धि रात्रि ९:५३ से रातअंत। भद्रा रात्रि १०:०३ से रात्रिअंत (भूमि)
७	बु.	३६।५७	रा.८:४३	अश्वि	३८।२७	रा. ९:१९	शूल	२८।५३	सा.५:२९	भद्रा	८।५१	दि.९:२९	बव	मेष	××	दिनरात	३२।३१	५:५६	६:५६	३।१८।२४।०४	५७	मृत्यु	०५ अग	कालाष्टमी व्रतं। शीतला सप्तमी व्रत। मूल सू.उ.से रात ९:१९ तक। रवियोग सू.उ.से रात्रि ९:१९ तक। भद्रा सू.उ.से दिन ९:२९(स्वर्ग)। (A)
८	गु.	३२।२४	सा.६:५४	भर	३५।४६	रा. ८:१५	गंड़	२२।४५	दि.३:०२	बाल	४।५७	प्रा.७:५५	कौल	मेष	४९।५९	रा. १:५६ तक	३२।२८	५:५७	६:५६	३।१९।२१।३२	५७	पद्म	०६ अग	मन्वादि तिथि। क्रांतिसाम्य दिन १०:१० से दिन २:११। क्रांतिसाम्य दिन १०:१० से दिन २:११। (A) कर्के बुध: रात्रि ७:४१ समये।
९	शु.	२६।४५	दि.४:३९	कृत्ति	३१।६०	सा. ६:४५	बृद्धि	१५।४१	दि.१२:१४	गर	२६।४५	दि.४:३९	वणि	वृष	××	दिनरात	३२।२५	५:५७	६:५५	३।२०।१९।०१	५८	छत्र	०७ अग	कुमारी पूजन। भद्रा रात्रि ३:२४ से रात्रिअंत (स्वर्ग)।
१०	श.	२०।१०	दि.२:०१	रोहि	२७।१९	दि. ४:५३	ध्रुव, व्या	७।५०, ५९।५८	दि.९:०५, रा.५:५७	भद्रा	२०।१०	दि.२:०१	बव	वृष	५४।४५	रा. ३:५१ तक	३२।२३	५:५७	६:५५	३।२१।१६।३२	५८	श्रीवत्स	०८ अग	अमृतसिद्धि दिन ४:५३ पर्यन्त। भद्रा सू.उ.से दिन २:०१(स्वर्ग)। पुष्ये वुध: प्रात: ७:१७ समये।
११	र.	१२।५४	दि.११:०७	मृग	२१।५८	दि. २:४५	हर्ष	५०।२०	रा.२:०६	बाल	१२।५४	दि.११:०७	कौल	मिथुन	××	दिनरात	३२।२०	५:५८	६:५४	३।२२।१४।०३	५८	सौम्य	०९ अग	कामिका एकादशी व्रत सर्वे। ($) से दि.३:३० वजे तक। । आर्द्रायां भौम: रात्रि १०:४३ समये।
१२,१३	चं.	५।१२, ५७।२२	दि.८:०३,रा ४:५५	आर्द्रा	१६।१६	दि. १२:२९	वज्र	४१।१६	रा.१०:२९	तैति	५।१२	दि.८:०३	गर	मिथुन	५६।५५	रा. ४:४४ तक	३२।१७	५:५८	६:५३	३।२३।११।३६	५८	कालदंड	१० अग	सोमप्रदोष व्रतं। ० भद्रा रात्रि ४:५५ से रातअंत। गुरु उदय पूर्वे: प्रात: ५:१८ समये। (#) हस्ते शुक्र: प्रात: ६:३८ समये।
१४	मं.	४९।५१	रा.१:५५	पुन	१०।३२	दि. १०:११	सिद्धि	३२।२०	सा.६:५४	भद्रा	२३।३६	दि.३:२५	शकु	कर्क	××	दिनरात	३२।१५	५:५९	६:५२	३।२४।०९।१०	५८	स्थिर	११ अग	मासिक शिवरात्रि व्रतं। मंगल पुष्य योग दिन १०:११ से रातअंत। भद्रा सू.उ.से दिन ३:२५(भूमि)। व्यतिपात् सा.६:५४ वजे तक। से रातअंत। (#)
३०	बु.	४२।५७	रा.११:१०	पुष्य	५।७	दि. ८:०२	व्यति	२३।४७	दि.३:३०	चतु	१६।२०	दि.१२:३१	नाग	कर्क	××	दिनरात	३२।१२	५:५९	६:५२	३।२५।०६।४४	५८	मातंग	१२ अग	हरियाली अमावस्या। मन्वादि तिथि। सूर्य ग्रहण विदेश में। मूल दिन ८:०२ से रातअंत। बुध पुष्य योग सू उ से दिन ८:०२ तक। व्यतिपात् सू.उ.($)

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट। ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-५६

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	गु.	९।१७।१५।३०	७४२	१।२७।२९।३२	४१	२।२३।५३।२५	३९	३।१२।१७।२४	१३	४।२७।४५।०९	६३	११।२०।२८।३२	०	१०।०६।४८।५१	७:१७	६:२२
२	शु.	९।२९।३७।०८	७५२	१।२८।१०।११	४१	२।२४।३२।४३	४५	३।१२।३०।४१	१३	४।२८।४७।५१	६२	११।२०।२८।०९	०	१०।०६।४५।४०	७:५१	७:१५
३	श.	१०।१२।०९।२६	७६४	१।२८।५०।४७	४१	२।२५।१८।१	५१	३।१२।४३।५८	१३	४।२९।५०।१८	६२	११।२०।२७।३९	१	१०।०६।४२।२९	८:२५	८:०९
४	र.	१०।२४।५३।३१	७७७	१।२९।३१।१८	४०	२।२६।९।१५	५७	३।१२।५७।१५	१३	५।००।५२।२८	६२	११।२०।२७।०३	१	१०।०६।३९।१९	८:५९	९:०५
५	चं.	११।०७।५०।४०	७९२	२।०।११।४४	४०	२।२७।६।२१	६३	३।१३।१०।३२	१३	५।०१।५४।२२	६२	११।२०।२६।२१	१	१०।०६।३६।०८	९:३५	१०:०२
६	मं.	११।२१।०२।३०	८०८	२।०।५२।६	४०	२।२८।९।१२	६८	३।१३।२३।४९	१३	५।०२।५५।५८	६१	११।२०।२५।३३	१	१०।०६।३२।५७	१०:१४	११:०३
७	बु.	०।०४।३०।४३	८२६	२।१।३२।२४	४०	२।२९।१७।४०	७४	३।१३।३७।०५	१३	५।०३।५७।१७	६१	११।२०।२४।३९	१	१०।०६।२९।४६	१०:५८	१२:०८
८	गु.	०।१८।१६।४३	८४४	२।२।१२।३७	४०	३।०।३१।३५	७९	३।१३।५०।२०	१३	५।०४।५८।१७	६१	११।२०।२३।३९	१	१०।०६।२६।३५	११:४९	१:१८
९	शु.	१।०२।२०।५०	८६१	२।२।५२।४६	४०	३।१।५०।४८	८४	३।१४।०३।३५	१३	५।०५।५८।५९	६०	११।२०।२२।३२	१	१०।०६।२३।२४	१२:४८	२:३०
१०	श.	१।१६।४१।५२	८७५	२।३।३२।५०	४०	३।३।१५।५	८९	३।१४।१६।४९	१३	५।०६।५९।२१	६०	११।२०।२१।२०	१	१०।०६।२०।१४	१:५४	३:४३
११	र.	२।०१।१६।३४	८८३	२।४।१२।४९	४०	३।४।४४।१३	९४	३।१४।३०।०३	१३	५।०७।५९।२३	६०	११।२०।२०।०२	१	१०।०६।१७।०३	३:०६	४:५२
१२,१३	चं.	२।१५।५९।५४	८८५	२।४।५२।४४	४०	३।६।१७।५५	९८	३।१४।४३।१५	१३	५।०८।५९।०४	५९	११।२०।१८।३८	१	१०।०६।१३।५२	४:२०	५:५४
१४	मं.	३।००।४५।२३	८८१	२।५।३२।३४	४०	३।७।५५।५५	१०२	३।१४।५६।२७	१३	५।०९।५८।२४	५९	११।२०।१७।०८	२	१०।०६।१०।४१	५:३२	६:४७
३०	बु.	३।१५।२५।५९	८६९	२।६।१२।२०	४०	३।९।३७।५२	१०६	३।१५।०९।३८	१३	५।१०।५७।२२	५९	११।२०।१५।३३	२	१०।०६।०७।३०	××	७:३३

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रात: पूर्व	प्रात:	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
३० जुला	४:५५	७:११	९:२४	११:३५	१:५०	४:०६	६:१२	७:५८	९:३१	११:०२	१२:४२	२:४१	६,७,८,९,१०,१२,१,३,
३१ जुला	४:५१	७:०७	९:२०	११:३१	१:४६	४:०२	६:०८	७:५४	९:२७	१०:५८	१२:३८	२:३७	६,७,८,९,१०,१२,१,३,
०१ अग	४:४७	७:०३	९:१६	११:२७	१:४२	३:५८	६:०४	७:५०	९:२४	१०:५४	१२:३४	२:३३	६,७,८,९,१०,१२,१,३,
०२ अग	४:४३	६:५९	९:१२	११:२३	१:३८	३:५४	५:६०	७:४७	९:२०	१०:५०	१२:३१	२:२९	६,७,१०,१२,२,
०३ अग	४:३९	६:५५	९:०८	११:१९	१:३४	३:५०	५:५६	७:४३	९:१६	१०:४६	१२:२७	२:२५	६,७,१०,१२,२,
०४ अग	४:३५	६:५१	९:०४	११:१५	१:३०	३:४६	५:५२	७:३९	९:१२	१०:४२	१२:२३	२:२१	६,७,१०,१२,१,२,
०५ अग	४:३१	६:४८	८:६०	११:११	१:२६	३:४३	५:४८	७:३५	९:०८	१०:३८	१२:१९	२:१७	६,७,१०,१२,१,२,
०६ अग	४:२७	६:४४	८:५६	११:०७	१:२२	३:३९	५:४४	७:३१	९:०४	१०:३४	१२:१५	२:१३	६,७,८,९,१०,१,२,
०७ अग	४:२३	६:४०	८:५२	११:०३	१:१८	३:३५	५:४०	७:२७	८:६०	१०:३१	१२:११	२:०९	६,७,८,९,१०,१२,१,२,
०८ अग	४:१९	६:३६	८:४८	१०:५९	१:१४	३:३१	५:३६	७:२३	८:५६	१०:२७	१२:०७	२:०५	६,७,८,९,१०,१२,२,
०९ अग	४:१५	६:३२	८:४४	१०:५५	१:१०	३:२७	५:३२	७:१९	८:५२	१०:२३	१२:०३	२:०१	६,७,९,१०,१,२,
१० अग	४:११	६:२८	८:४०	१०:५१	१:०६	३:२३	५:२८	७:१५	८:४८	१०:१९	११:५९	१:५७	६,७,१०,१,२,
११ अग	४:०७	६:२४	८:३६	१०:४७	१:०२	३:१९	५:२४	७:११	८:४४	१०:१५	११:५५	१:५३	७,८,१०,१२,१,
१२ अग	४:०३	६:२०	८:३२	१०:४३	१२:५९	३:१५	५:२०	७:०७	८:४०	१०:११	११:५१	१:५०	६,७,८,१०,१,२,

तिथि १
गुरुवार
इष्ट ०।०



श्रावणकृष्ण ३० आर्द्रायां भौम सुवृष्टि। श्रावणकृष्ण १० पुष्ये बुध - जनेषुसर्वसंयोग: पुष्पेराज्ञांभयंजय:।। पुष्य में हो तो तब लोगों को संयोग हो। राजाओं में भय हो। तथा जय हो।।

तिथि ८
गुरुवार
इष्ट ०।०



१६	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे:। शुक्र उदयपश्चिमे: — मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-आश्लेषायां रविः, आर्द्रायां भौमः, पुष्ये वुधः, पुष्ये गुरौ, हस्ते शुक्रः, रेवत्यां शनिः, धनिष्ठायां राहु, मघायां केतु।
१	गु.	३६।५९	रा.८:४७	श्ले, मघा	०: २२।५६: ४४	प्रा. ६:०८, रा.४:४१	वरी	१५।५३	दि.१२:२१	किंस्तु	९।४७	दि.९:५४	बव	कर्क	०।२२	प्रा. ६:०८ तक	३२।०९	५:५९	६:५१	३।२६।०४।२०	५८	अमृत	१३ अग	मूल दिनरात।
२	शु.	३२।१६	सा.६:५४	पू.फा.	५४।२७	रा. ३:४७	परि	८।५४	दि.९:३३	बाल	४।१९	प्रा.७:४३	कौल	सिंह	--	दिनरात	३२।०६	५:६०	६:५०	३।२७।०१।५७	५८	सिद्धि	१४ अग	श्री महाकाल सवारी उज्जैन। श्री करपात्री जी जयंती। रवियोग रात्रि ३:४७ से रात्रिअंत। सिद्धयोग रात्रि ३:४७ पर्यन्त।
३	श.	२९।०३	सा.५:३८	उ.फा.	५३।४७	रा. ३:३१	शिव, सिद्ध	३।२, ५९।५७	प्रा.७:१३, रा.५:६०	तैति	०।१४	प्रा.६:०६	गर	सिंह	९।१०	दि. ९:४० तक	३२।०३	६:०	६:५०	३।२७।५९।३६	५८	उत्पात	१५ अग	मधुश्रवा तीज। स्वतंत्रता दिवस। रवियोग सू.उ.से रात्रि ३:३१ तक। भद्रा रात्रि ५:०९ से रातअंत। आश्लेषायां वुधः रात्रि २:१४ समये।
४	र.	२७।३३	सा.५:०२	हस्त	५४।५०	रा. ३:५६	साध्य	५५।३३	रा.४:१४	भद्रा	२७।३३	सा.५:०२	बव	कन्या	--	दिनरात	३२।००	६:१	६:४९	३।२८।५७।१५	५८	मानस	१६ अग	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। दूर्वा गणपति पूजनं। रवियोग रात्रि ३:५६ से रात्रिअंत। अमृतसिद्धि रात्रि ३:५६ पर्यन्त। भद्रा सू.उ.से सायं ५:०२ (पाताल)।
५	चं.	२७।५२	सा.५:१०	चित्रा	५७।३७	रा. ५:०४	शुभ	५३।५७	रा.३:३६	बाल	२७।५२	सा.५:१०	कौल	कन्या	२६।०९	दि. ४:२९ तक	३१।५८	६:१	६:४८	३।२९।५४।५६	५८	मुद्गर	१७ अग	नागपंचमी। रवियोग सू.उ.से दिन ८:०८ तक, पुनः रात्रि ५:०४ से रात्रिअंत। सिंहे मघायां च रवि दिन ८:०८ समये। चातक वाहनं सुवृष्टि। (A)
६	मं.	२९।५५	सा.५:५९	स्वा	६०।०	वृद्धि	शुक्ल	५३।३९	रा.३:२९	तैति	२९।५५	सा.५:५९	गर	तुला	××	दिनरात	३१।५५	६:१	६:४७	४।००।५२।३८	५८	ध्वज	१८ अग	कल्कि अवतार। रवियोग सू.उ.से रात्रि ६:५० तक। क्रांतिसाम्य दिन १०:०७ से दिन २:२७। क्रांतिसाम्य दिन १०:०७ से दिन २:२७। (B)
७	बु.	३३।३१	रा.७:२६	स्वा	२।५	प्रा. ६:५२	ब्रह्म	५४।२७	रा.३:४८	गर	१।२४	प्रा.६:३५	वणि	तुला	५१।२३	रा. २:३५ तक	३१।५२	६:२	६:४६	४।०१।५०।२१	५८	धूम्र	१९ अग	गो. तुलसीदास जयंती। इन्द्र सप्तमी। रवियोग सू.उ.से प्रातः ६:५२ तक। भद्रा रात्रि ७:२६ से रात्रिअंत (स्वर्ग)।
८	गु.	३८।२०	रा.९:२२	विशा	७।५६	दि. ९:१२	ऐंद्र	५६।४	रा.४:२८	भद्रा	५।४४	दि.८:२०	बव	वृश्चिक	××	दिनरात	३१।४९	६:२	६:४६	४।०२।४८।०६	५८	प्रवर्ध	२० अग	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। सर्वार्थसिद्धी दिन ९:१२ से रातअंत। भद्रा सू.उ.से दिन ८:२०(स्वर्ग)। वैधृति रा.४:२८ वजे तक। से रातअंत।
९	शु.	४३।५६	रा.११:३७	अनु	१४।४१	दि. ११:५५	वैधृ	५८।१२	रा.५:१९	बाल	११।२	दि.१०:२७	कौल	वृश्चिक	××	दिनरात	३१।४६	६:२	६:४५	४।०३।४५।५२	५८	राक्षस	२१ अग	संस्कृत सप्ताह प्रारंभ। कुमारीपूजन। मूल दिन ११:५५ से रातअंत। रवियोग दिन ११:५५ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन ११:५५ पर्यन्त। (C)
१०	श.	४९।५०	रा.१:५९	ज्ये	२१।५५	दि. २:४९	विष्कु	६०	वृद्धि	तैति	१६।५२	दि.१२:४८	गर	वृश्चिक	२१।५५	दि. २:४९ तक	३१।४३	६:३	६:४४	४।०४।४३।३९	५८	मुसल	२२ अग	मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत। मघायां श्र सिंहे बुध रात्रि ७:३० समये (B) आश्लेषायां गुरु रात्रि ३:२७ समये।
११	र.	५५।३४	रा.४:१७	मूल	२९।९	सा. ५:४३	विष्कु	०।२८	प्रा.६:१५	वणि	२२।४३	दि.३:०९	भद्रा	धनु	××	दिनरात	३१।४०	६:३	६:४३	४।०५।४१।२८	५८	सिद्धि	२३ अग	पुत्रदा एकादशी व्रत सर्वे। मूल सू.उ.से सायं. ५:४३ तक। रवियोग सू.उ.से सायं ५:४३ तक। सर्वार्थसिद्धी सायं ५:४३ पर्यन्त। भद्रा दिन ३:०९ (D)
१२	चं.	६०।००	वृद्धि	पू.षा	३५।५६	रा. ८:२६	प्रीति	२।३२	प्रा.७:०४	बव	२७।२७	सा.५:१९	बाल	धनु	५२।३४	रा. ३:०५ तक	३१।३७	६:४	६:४२	४।०६।३९।१८	५८	उत्पात	२४ अग	(A) स्त्री. स्त्री.योग अनावृष्टि। अमृतनाड़ी। बुध अस्त पूर्वे: प्रातः ५:०९ समये। (C) वैधृति सू.उ.से रा.५:१९ वजे तक।
१२	मं.	०।४१	प्रा.६:२१	उ.षा	४१।५५	रा. १०:५०	आयु	४।४	प्रा.७:४१	बाल	०।४१	प्रा.६:२१	कौल	मकर	××	दिनरात	३१।३३	६:४	६:४१	४।०७।३७।१०	५८	मानस	२५ अग	मंगलप्रदोष व्रतं। दधि व्रत। रवियोग रात्रि १०:५० से रात्रिअंत। त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से प्रातः ६:२१ तक। चित्रायां शुक्रः दिन १:१५ समये।
१३	बु.	४।४७	प्रा.७:५९	श्रव	४६।४८	रा. १२:४७	सौभ	४।५०	दि.८:००	तैति	४।४७	प्रा.७:५९	गर	मकर	××	दिनरात	३१।३०	६:४	६:४०	४।०८।३५।०३	५८	छत्र	२६ अग	रवियोग सू.उ.से रात्रि १२:४७ तक। (D) से रात्रि ४:१७ (पाताल)।
१४	गु.	७।४१	दि.९:०९	धनि	५०।२७	रा. २:१५	शोभ	४।४१	प्रा.७:५७	वणि	७।४१	दि.९:०९	भद्रा	मकर	१८।४५	दि. १:३४ तक	३१।२७	६:५	६:४०	४।०९।३२।५७	५८	श्रीवत्स	२७ अग	ऋग्वेदीय उपाकर्म। पंचक प्रारंभ दि. १:३४ तक समये। भद्रा दिन ९:०९ से रात्रि ९:३० (भूमि)।
१५	शु.	९।१७	दि.९:४८	शत	५२।५०	रा. ३:१३	अति	३।३१	प्रा.७:२९	बव	९।१७	दि.९:४८	बाल	कुंभ	××	दिनरात	३१।२४	६:५	६:३९	४।१०।३०।५३	५८	सौम्य	२८ अग	रक्षाबंधन। पूर्णिमा। श्रावणी उपाकर्म। खग्रास चन्द्रग्रहण विदेश में। पंचक दिनरात।

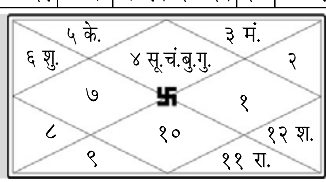
सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट। ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-५८ — चंद्र उदयास्त समय

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	गु.	३।२९।५४।५४	८५२	२।६।५२।१	४०	३।११।२३।२६	१०९	३।१५।२२।४८	१३	५।११।५५।५७	५८	११।२०।१३।५१	२	१०।०६।०४।१९	६:४२	७:५३
२	शु.	४।१४।०६।२८	८३०	२।७।३१।३७	४०	३।१३।१२।१४	११२	३।१५।३५।५७	१३	५।१२।५४।०९	५८	११।२०।१२।०४	२	१०।०६।०१।०९	७:४३	८:२८
३	श.	४।२७।५६।४३	८०७	२।८।११।९	३९	३।१५।३।५२	११४	३।१५।४९।०५	१३	५।१३।५१।५६	५७	११।२०।१०।११	२	१०।०५।५७।५८	८:४०	८:५९
४	र.	५।११।२३।४३	७८४	२।८।५०।३६	३९	३।१६।५७।५८	११६	३।१६।०२।१२	१३	५।१४।४९।१९	५७	११।२०।०८।१२	२	१०।०५।५४।४७	९:३३	९:३०
५	चं.	५।२४।२७।३५	७६३	२।९।२९।५८	३९	३।१८।५४।६	११८	३।१६।१५।१७	१३	५।१५।४६।१५	५६	११।२०।०६।०८	२	१०।०५।५१।३६	१०:२५	९:५९
६	मं.	६।०७।१०।११	७४४	२।१०।९।१५	३९	३।२०।५१।५३	११९	३।१६।२८।२१	१३	५।१६।४२।४५	५६	११।२०।०३।५८	२	१०।०५।४८।२५	११:१५	१०:३०
७	बु.	६।१९।३४।३९	७३०	२।१०।४८।२७	३९	३।२२।५०।५७	१२०	३।१६।४१।२४	१३	५।१७।३८।४७	५६	११।२०।०१।४२	२	१०।०५।४५।१४	१२:०६	११:०४
८	गु.	७।०१।४४।५२	७२०	२।११।२७।३५	३९	३।२४।५०।५५	१२१	३।१६।५४।२५	१३	५।१८।३४।२०	५५	११।१९।५९।२१	२	१०।०५।४२।०४	१२:५६	११:४२
९	शु.	७।१३।४५।०४	७१४	२।१२।६।३७	३९	३।२६।५१।२८	१२१	३।१७।०७।२४	१३	५।१९।२९।२४	५५	११।१९।५६।५५	३	१०।०५।३८।५३	१:४६	१२:२४
१०	श.	७।२५।३९।३२	७१३	२।१२।४५।३५	३९	३।२८।५२।१८	१२१	३।१७।२०।२२	१३	५।२०।२३।५७	५४	११।१९।५४।२४	३	१०।०५।३५।४२	२:३४	१:१०
११	र.	८।०७।३२।२८	७१५	२।१३।२४।२७	३९	४।०।५३।७	१२१	३।१७।३३।१८	१३	५।२१।१७।५८	५३	११।१९।५१।४७	३	१०।०५।३२।३१	३:१९	१:६०
१२	चं.	८।१९।२७।५१	७२२	२।१४।३।१५	३९	४।२।५३।४३	१२०	३।१७।४६।१३	१३	५।२२।११।२६	५३	११।१९।४९।०५	३	१०।०५।२९।२०	४:०२	२:५२
१२	मं.	९।०१।२९।२४	७३१	२।१४।४१।५८	३९	४।४।५३।५३	१२०	३।१७।५९।०५	१३	५।२३।०४।२०	५२	११।१९।४६।१८	३	१०।०५।२६।१०	४:४१	३:४५
१३	बु.	९।१३।४०।२५	७४३	२।१५।२०।३५	३९	४।६।५३।२५	११९	३।१८।११।५६	१३	५।२३।५६।३९	५२	११।१९।४३।२६	३	१०।०५।२२।५९	५:१७	४:३९
१४	गु.	९।२६।०३।३१	७५७	२।१५।५९।८	३८	४।८।५२।१२	११८	३।१८।२४।४५	१३	५।२४।४८।२१	५१	११।१९।४०।२९	३	१०।०५।१९।४८	५:५२	५:३४
१५	शु.	१०।०८।४०।३१	७७२	२।१६।३७।३५	३८	४।१०।५०।६	११७	३।१८।३७।३१	१३	५।२५।३९।२५	५०	११।१९।३७।२७	३	१०।०५।१६।३७	६:२५	६:३०

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय) — शुभ बली लग्नें

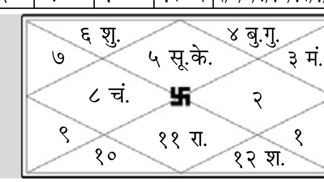
दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	
१३ अग	३:५९	६:१६	८:२८	१०:३९	१२:५५	३:११	५:१६	७:०३	८:३६	१०:०७	११:४७	१:४६	६,७,८,१०,१२,१,२,
१४ अग	३:५५	६:१२	८:२४	१०:३६	१२:५१	३:०७	५:१३	६:५९	८:३२	१०:०३	११:४३	१:४२	६,७,८,९,१०,१२,१,२,
१५ अग	३:५२	६:०८	८:२०	१०:३२	१२:४७	३:०३	५:०९	६:५५	८:२८	९:५९	११:३९	१:३८	७,८,९,१०,१२,१,२,
१६ अग	३:४८	६:०४	८:१६	१०:२८	१२:४३	२:५९	५:०५	६:५१	८:२४	९:५५	११:३५	१:३४	७,८,९,१०,१२,१,२,
१७ अग	३:४४	६:००	८:१३	१०:२४	१२:३९	२:५५	५:०१	६:४७	८:२०	९:५१	११:३१	१:३०	७,८,९,१०,१२,१,२,
१८ अग	३:४०	५:५६	८:०९	१०:२०	१२:३५	२:५१	४:५७	६:४३	८:१६	९:४७	११:२७	१:२६	६,७,८,९,१०,१२,१,२,
१९ अग	३:३६	५:५२	८:०५	१०:१६	१२:३१	२:४७	४:५३	६:४०	८:१३	९:४३	११:२३	१:२२	६,७,८,१०,१२,१,२
२० अग	३:३२	५:४८	८:०१	१०:१२	१२:२७	२:४३	४:४९	६:३६	८:०९	९:३९	११:२०	१:१८	६,७,८,१०,१२,१,
२१ अग	३:२८	५:४४	७:५७	१०:०८	१२:२३	२:३९	४:४५	६:३२	८:०५	९:३५	११:१६	१:१४	६,७,८,१०,१२,१,
२२ अग	३:२४	५:४०	७:५३	१०:०४	१२:१९	२:३६	४:४१	६:२८	८:०१	९:३१	११:१२	१:१०	६,७,८,९,१०,१२,४
२३ अग	३:२०	५:३७	७:४९	१०:००	१२:१५	२:३२	४:३७	६:२४	७:५७	९:२७	११:०८	१:०६	७,८,९,१०,१२,४,
२४ अग	३:१६	५:३३	७:४५	९:५६	१२:११	२:२८	४:३३	६:२०	७:५३	९:२३	११:०४	१:०२	७,८,१०,१२,४,
२५ अग	३:१२	५:२९	७:४१	९:५२	१२:०७	२:२४	४:२९	६:१६	७:४९	९:२०	१०:६०	१२:५८	७,८,१०,१२,१,४,
२६ अग	३:०८	५:२५	७:३७	९:४८	१२:०३	२:२०	४:२५	६:१२	७:४५	९:१६	१०:५६	१२:५४	७,८,९,१०,१२,१,४,
२७ अग	३:०४	५:२१	७:३३	९:४४	११:५९	२:१६	४:२१	६:०८	७:४१	९:१२	१०:५२	१२:५०	६,७,८,९,१०,१२,१,२,
२८ अग	३:००	५:१७	७:२९	९:४०	११:५५	२:१२	४:१७	६:०४	७:३७	९:०८	१०:४८	१२:४६	६,७,८,९,१०,१२,१,२,

तिथि १
गुरुवार
इष्ट ०।०



सिंह संक्रान्ति फलम्- श्रावण शुक्ल ५ सोमवासरे दिन ८:०८ समये सिंहसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम ध्वांक्षी संज्ञक संक्रांति व्यापारीवर्ग एवं उद्योगपतियों को शुभकारी है। तस्य काले चित्रानक्षत्र नाम मंदाकिनी संज्ञक संक्रांति सैनिकवर्ग, पुलिष आदि को सुखद। मुहूर्त्त ३० अनाज मूल्य समता। बालव करण फल- व्याघ्र वाहनं, अश्व उपवाहनं, पीत वस्त्रं, गदा आयुधं, रूपा पात्रं, पायस (खीर) भक्षणं, कुमकुम लेपनं, भूत वर्ण, चमेली पुष्पं, कंकण भूषणं, पर्ण कंचुकी, वाल्य अवस्था, उपविष्टा स्थिति। स्थिर भाव सूचक। जनता को कष्ट देने वाली सरकार गिरेगी। श्रावणशुक्ल ३ आश्लेषायं बुध - आश्लेषायांमहावृष्टिस्तुषधान्यसमुद्भवः। आश्लेषा में हो महावृष्टि हो, तुष धान्य उत्पन्न हों। श्रावणशुक्ल १० मघायां बुध - मघाबुलेल्पवृष्टिश्चधान्यनाशः प्रजाभयम्।। मघा में बुध हो तो वर्ष कम हो, धान्य नाश और प्रजा में भय हो।।

तिथि ८
गुरुवार
इष्ट ०।०



भाद्रपद कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शकः १९४८। रौद्र संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। शरद ऋतुः। श्री सूर्य दक्षिणायन-उत्तरगोले। अगस्त-सितम्बर ईसवी सन् २०२६। अगस्त-सितम्बर। वंगला सन् १४३३ । वीर निर्वाण संवत् २५५२।

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे।। शुक्र उदयपश्चिमेः । मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-मघायां रविः, आर्द्रायां भौमः, मघायां वुधः, आश्लेषायां गुरौ, चित्रायां शुक्रः, रेवत्यां शनिः, धनिष्ठायां राहु, मघायां केतु।
१	श.	९।३६	दि.९:५६	पू.भा	५३।६०	रा. ३:४१	सुक, धृति	१।२१, ५९।५७	प्रा.६:३८, रा.६:०५	कौल	९।३६	दि.९:५६	तैति	कुंभ	३८।४४	रा. ९:३५ तक	३१।२१	६:५	६:३८	४।११।२८।५१	५८	कालदंड	२९ अग	पंचक दिनरात। पूर्वाफाल्गुण्यां वुधः दिन १२:५५ समये।
२	र.	८।४४	दि.९:३५	उ.भा	५४।४	रा. ३:४३	शूल	५४।८	रा.३:४५	गर	८।४४	दि.९:३५	वणि	मीन	--	दिनरात	३१।१८	६:६	६:३७	४।१२।२६।५०	५८	स्थिर	३० अग	विंध्याचल जयंती। पंचक दिनरात। मूल रात ३:४३ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ३:४३ पर्यन्त। भद्रा रात्रि ९:१४ से रात्रिअंत (भूमि)। (A)
३	चं.	६।४८	दि.८:४९	रेव	५३।११	रा. ३:२२	गंड़	४९।१८	रा.१:४९	भद्रा	६।४८	दि.८:४९	बव	मीन	५३।११	रा. ३:२२ तक	३१।१५	६:६	६:३६	४।१३।२४।५१	५८	मातंग	३१ अग	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। कज्जली तृतीया। पंचक समाप्त रा. ३ :२२ समये। मूल दिनरात। क्रांतिसाम्य रात्रि ८:४७ से रात्रि १२:५४। भद्रा सू.उ.से (B)
४	मं.	३।५७	प्रा.७:४१	अश्वि	५१।२७	रा. २:४१	बृद्धि	४३।४८	रा.११:३८	बाल	३।५७	प्रा.७:४१	कौल	मेष	--	दिनरात	३१।११	६:६	६:३५	४।१४।२२।५३	५८	अमृत	०१ सित	मंशादेवी पूजन, वहुलाव्रत। मूल सू.उ.से रात २:४१ तक। अमृतसिद्धि रात्रि २:४१ पर्यन्त। ज्वालामुखीयो रात्रि २:४१ से रात्रि ५:५५ तक।।
५,६	बु.	०।१६, ५५।५४	प्रा.६:१३,रा ४:२१	भर	४९।२	रा. १:४३	ध्रुव	३७।४३	रा.९:१२	तैति	०।१६	प्रा.६:१३	गर	मेष	××	दिनरात	३१।०८	६:७	६:३४	४।१५।२०।५७	५८	काण	०२ सित	चंद्रषष्ठी व्रतं। हल षष्ठी व्रत। रवियोग रात्रि १:४३ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १:४३ से रातअंत। ज्वालामुखी योग सू.उ. से प्रातः ६:१३। (C)
७	गु.	५०।५२	रा.२:२८	कृत्ति	४६।१	रा. १२:३१	व्या	३१।९	सा.६:३४	भद्रा	२३।२३	दि.३:२८	बव	मेष	३।२२	प्रा. ७:२८ तक	३१।०५	६:७	६:३३	४।१६।१९।०३	५८	लुंबक	०३ सित	रवियोग सू.उ.से रात्रि १२:३१ तक । भद्रा सू.उ.से दिन ३:२८(स्वर्ग)। (B) दिन ८:४९ (भूमि)। क्रांतिसाम्य रात्रि ८:४७ से रात्रि १२:५४।
८	शु.	४५।२५	रा.१२:१७	रोहि	४२।३१	रा. ११:०८	हर्ष	२४।९	दि.३:४७	बाल	१८।११	दि.१:२४	कौल	वृष	××	दिनरात	३१।०२	६:७	६:३२	४।१७।१७।१०	५८	मित्र	०४ सित	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रतं (A)पूर्वाफाल्गुण्यां रवि रात्रि ४:०५ समये। गदर्भ वाहनं अल्प वृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। चण्ड़नाड़ी।
९	श.	३९।३८	रा.९:५९	मृग	३८।४०	रा. ९:३६	वज्र	१६।५०	दि.१२:५२	तैति	१२।३५	दि.११:०९	गर	वृष	१०।३९	दि. १०:२३ तक	३०।५९	६:८	६:३१	४।१८।१५।१९	५८	वज्र	०५ सित	गोगा नवमी। उत्तराफाल्गुण्यां वुधः दिन ४:२८ समये।
१०	र.	३३।३८	रा.७:३५	आर्द्रा	३४।३७	रा. ७:५९	सिद्धि	९।१७	दि.९:५१	वणि	६।४०	दि.८:४८	भद्रा	मिथुन	××	दिनरात	३०।५५	६:८	६:३०	४।१९।१३।३०	५८	ध्वांक्ष	०६ सित	अगस्त्य उदय दिन १:५७। भद्रा दिन ८:४८ से रात्रि ७:३५ (स्वर्ग)। व्यतिपात् दि.९:५१ वजे तक। से रातअंत।
११	चं.	२७।३६	सा.५:११	पुन	३०।३०	सा. ६:२०	व्यति, वरी	१।३७, ५९।५२	प्रा.६:४७, रा.६:०६	बव	०।३७	प्रा.६:२३	बाल	मिथुन	१६।३२	दि. १२:४५ तक	३०।५२	६:८	६:२९	४।२०।११।४३	५८	धूम्र	०७ सित	अजा एकादशी व्रत सर्वे। सर्वार्थसिद्धी सायं ६:२० से रातअंत। सोम पुष्य योग सायं ६:२० से रातअंत। व्यतिपात् सू.उ.से प्रा.६:४७ वजे तक। (D)
१२	मं.	२१।४२	दि.२:४९	पुष्य	२६।३३	दि. ४:४६	परि	४६।३३	रा.१२:४६	तैति	२१।४२	दि.२:४९	गर	कर्क	××	दिनरात	३०।४९	६:९	६:२८	४।२१।०९।५७	५८	प्रवर्ध	०८ सित	मंगलप्रदोष व्रतं। गोवत्स द्वादशी। मूल दिन ४:४६ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन ४:४६ से रातअंत। मंगल पुष्य योग सू उ से दिन ४:४६ तक।
१३	बु.	१६।०९	दि.१२:३६	श्ले	२२।५८	दि. ३:२०	शिव	३९।३१	रा.९:५७	वणि	१६।९	दि.१२:३६	भद्रा	कर्क	२२।५८	दि. ३:२० तक	३०।४६	६:९	६:२७	४।२२।०८।१३	५८	राक्षस	०९ सित	मासिक शिवरात्रि व्रतं। युगादि तिथि। मूल दिनरात। भद्रा दिन १२:३६ से रात्रि ११:३५ (भूमि)। (D) कन्यायां बुधः दिन १:३२ समये।
१४	गु.	११।११	दि.१०:३८	मघा	२०।०	दि. २:०९	सिद्ध	३३।४	रा.७:२३	शकु	११।११	दि.१०:३८	चतु	सिंह	××	दिनरात	३०।४२	६:९	६:२६	४।२३।०६।३०	५८	मुसल	१० सित	अघोर चतुर्दशी। मूल सू.उ.से दिन २:०९ तक। (C) भद्रा रात्रि ४:२७ से रातअंत। पुनर्वसे भौमः दिन १:२१ समये। तुलायां शुक्रः दिन २:०९ समये।
३०	शु.	७।०३	दि.८:५९	पू.फा.	१७।५७	दि. १:२०	साध्य	२७।२३	सा.५:०७	नाग	७।३	दि.८:५९	किंस्तु	सिंह	३२।३७	रा. ७:१२ तक	३०।३९	६:१०	६:२५	४।२४।०४।५०	५८	सिद्धि	११ सित	कुशग्रहणी अमावस्या। सिद्धयोग दिन १:२० पर्यन्त। स्वाते शुक्रः रात्रि ११:४५ समये।

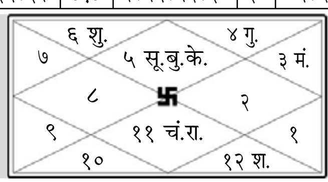
सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट। ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१३-६०

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	श.	१०।२१।३२।१५	७८६	२।१७।१५।५७	३८	४।१२।४७।१	११६	३।१८।५०।१५	१३	५।२६।२९।४९	५०	११।१९।३४।२०	३	१०।०५।१३।२६	६:५९	६:५८
२	र.	११।०४।३८।४२	८००	२।१७।५४।१४	३८	४।१४।४२।५३	११५	३।१९।०२।५८	१३	५।२७।१९।३२	४९	११।१९।३१।०८	३	१०।०५।१०।१६	७:३५	७:५५
३	चं.	११।१७।५९।१०	८१३	२।१८।३२।२६	३८	४।१६।३७।३८	११४	३।१९।१५।३७	१३	५।२८।०८।३३	४८	११।१९।२७।५२	३	१०।०५।०७।०५	८:१३	८:५६
४	मं.	०।०१।३२।३०	८२५	२।१९।१०।३२	३८	४।१८।३१।१४	११२	३।१९।२८।१५	१३	५।२८।५६।५०	४८	११।१९।२४।३२	३	१०।०५।०३।५४	८:५६	१०:००
५,६	बु.	०।१५।१७।२७	८३५	२।१९।४८।३३	३८	४।२०।२३।३९	१११	३।१९।४०।५०	१३	५।२९।४४।२१	४७	११।१९।२१।०७	३	१०।०५।००।४३	९:४५	११:०८
७	गु.	०।२९।१२।३९	८४४	२।२०।२६।२९	३८	४।२२।१४।५२	११०	३।१९।५३।२२	१२	६।००।३१।०४	४६	११।१९।१७।३७	४	१०।०४।५७।३२	१०:४०	१२:१९
८	शु.	१।१३।१६।४३	८५१	२।२१।४।१९	३८	४।२४।४।५२	१०९	३।२०।०५।५२	१२	६।०१।१६।५७	४५	११।१९।१४।०४	४	१०।०४।५४।२२	११:४३	१:३०
९	श.	१।२७।२८।००	८५६	२।२१।४२।३	३८	४।२५।५३।३९	१०८	३।२०।१८।१९	१२	६।०२।०१।५९	४४	११।१९।१०।२६	४	१०।०४।५१।११	१२:५१	२:३९
१०	र.	२।११।४४।२८	८५९	२।२२।१९।४३	३८	४।२७।४१।१४	१०६	३।२०।३०।४४	१२	६।०२।४६।०७	४३	११।१९।०६।४४	४	१०।०४।४८।००	२:०३	३:४२
११	चं.	२।२६।०३।३२	८५९	२।२२।५७।१६	३७	४।२९।२७।३६	१०५	३।२०।४३।०५	१२	६।०३।२९।२०	४२	११।१९।०२।५८	४	१०।०४।४४।४९	३:१४	४:३८
१२	मं.	३।१०।२२।०३	८५४	२।२३।३४।४४	३७	५।१।१२।४६	१०४	३।२०।५५।२४	१२	६।०४।११।३५	४१	११।१८।५९।०९	४	१०।०४।४१।३८	४:२२	५:२५
१३	बु.	३।२४।३६।१६	८४६	२।२४।१२।६	३७	५।२।५६।४६	१०३	३।२१।०७।३९	१२	६।०४।५२।५०	४०	११।१८।५५।१६	४	१०।०४।३८।२८	५:२५	६:०५
१४	गु.	४।०८।४२।०६	८३३	२।२४।४९।२३	३७	५।४।३९।३५	१०२	३।२१।१९।५१	१२	६।०५।३३।०३	३९	११।१८।५१।१९	४	१०।०४।३५।१७	६:२४	६:४१
३०	शु.	४।२२।३५।३२	८१८	२।२५।२६।३४	३७	५।६।२१।१५	१०१	३।२१।३२।०१	१२	६।०६।१२।१०	३८	११।१८।४७।१९	४	१०।०४।३२।०६	××	७:१४

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

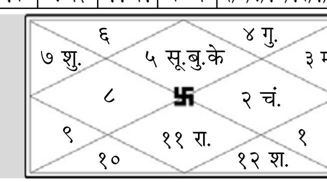
दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२९ अग	५:१३	७:२५	९:३६	११:५२	२:०८	४:१३	६:००	७:३३	९:०४	१०:४४	१२:४२	२:५६	६,७,१०,१२,१,२,
३० अग	५:०९	७:२१	९:३२	११:४८	२:०४	४:०९	५:५६	७:२९	८:६०	१०:४०	१२:३९	२:५२	६,७,८,१०,१२,२,
३१ अग	५:०५	७:१७	९:२९	११:४४	२:००	४:०६	५:५२	७:२५	८:५६	१०:३६	१२:३५	२:४८	७,८,१०,१२,२,४,
०१ सित	५:०१	७:१३	९:२५	११:४०	१:५६	४:०२	५:४८	७:२१	८:५२	१०:३२	१२:३१	२:४४	७,८,१०,१२,१,४,
०२ सित	४:५७	७:०९	९:२१	११:३६	१:५२	३:५८	५:४४	७:१७	८:४८	१०:२८	१२:२७	२:४१	७,८,९,१०,१२,१,४,
०३ सित	४:५३	७:०५	९:१७	११:३२	१:४८	३:५४	५:४०	७:१३	८:४४	१०:२४	१२:२३	२:३७	७,८,९,१०,१२,२,४,
०४ सित	४:४९	७:०२	९:१३	११:२८	१:४४	३:५०	५:३६	७:०९	८:४०	१०:२०	१२:१९	२:३३	७,८,९,१०,१२,२,४,
०५ सित	४:४५	६:५८	९:०९	११:२४	१:४०	३:४६	५:३२	७:०५	८:३६	१०:१६	१२:१५	२:२९	७,८,९,१०,१२,१,
०६ सित	४:४१	६:५४	९:०५	११:२०	१:३६	३:४२	५:२९	७:०२	८:३२	१०:१३	१२:११	२:२५	७,८,१०,१२,१,
०७ सित	४:३७	६:५०	९:०१	११:१६	१:३२	३:३८	५:२५	६:५८	८:२८	१०:०९	१२:०७	२:२१	७,८,१०,१२,२,
०८ सित	४:३३	६:४६	८:५७	११:१२	१:२८	३:३४	५:२१	६:५४	८:२४	१०:०५	१२:०३	२:१७	६,७,९,१०,१२,१,२,
०९ सित	४:३०	६:४२	८:५३	११:०८	१:२५	३:३०	५:१७	६:५०	८:२०	१०:०१	११:५९	२:१३	६,७,९,१०,१२,१,
१० सित	४:२६	६:३८	८:४९	११:०४	१:२१	३:२६	५:१३	६:४६	८:१६	९:५७	११:५५	२:०९	६,७,९,१०,१२,१,
११ सित	४:२२	६:३४	८:४५	११:००	१:१७	३:२२	५:०९	६:४२	८:१२	९:५३	११:५१	२:०५	६,७,९,१०,१२,१,४,

तिथि १
शनिवार
इष्ठ ०।०



भाद्रपदकृष्ण ५ पुनर्वशुभे भौमतिल एवं भैंसों का नाश। भाद्रपदकृष्ण १ पूर्वाफाल्गुन्यां बुध - पूफायांनृपसंग्रामः क्षेत्रबाधान्नमंदता। पूर्वाफाल्गुनी में हो तो राजाओं में युद्ध हो, क्षेत्र बाधा हो, अन्न मँदा हो। १७६।।भाद्रपदकृष्ण ९ उत्तराफल्गुन्यां बुध - उफायांतुमाषमुद्गाद्यल्पनिष्पत्तिमादिशेत्। उत्तराफाल्गुनी में हो तो उड़द मूंगा कम उत्पन्न हों।। भाद्रपदशुक्ल २ हस्ते बुध - हस्तेबुधेसुभिक्षं स्याद्धान्यमारोग्यमम्बुदाः। हस्त में बुध हो तो सुभिक्ष हो धान्य निरोग रहे।

तिथि ९
शनिवार
इष्ठ ०।०



१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे:। शुक्र उदयपश्चिमे: । मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-पूर्वाफाल्गुण्यां रविः, पुनर्वसे भौमः, उत्तराफाल्गुण्यां वुधः, आश्लेषायां गुरौ, स्वाते शुक्रः, रेवत्यां शनिः, धनिष्ठायां राहु, मघायां केतु।
१	श.	४।०४	प्रा.७:४७	उ.फा.	१७।२	दि. १२:५९	शुभ	२२।३९	दि.३:१४	बव	४।४	प्रा.७:४७	बाल	कन्या	--	दिनरात	३०।३६	६:१०	६:२४	४।२५।०३।११	५८	उत्पात	१२ सित	महत्तमाख्यव्रत। क्रांतिसाम्य रात्रि ९:१८ से रात्रि १:२९। क्रांतिसाम्य रात्रि ९:१८ से रात्रि १:२९।
२	र.	२।२७	प्रा.७:०९	हस्त	१७।३२	दि. १:११	शुक्ल	१९।४	दि.१:४८	कौल	२।२७	प्रा.७:०९	तैति	कन्या	४८।१९	रा. १:३० तक	३०।३२	६:१०	६:२३	४।२६।०१।३४	५८	मानस	१३ सित	रवियोग दिन १:११ से रात्रि ९:५७ तक । अमृतसिद्धि दिन १:११ पर्यन्त। उत्तराफाल्गुण्यां रवि रात्रि ९:५७ समये। मण्डूक वाहनं सुवृष्टि। स्त्री. (A)
३	चं.	२।२४	प्रा.७:०८	चित्रा	१९।३४	दि. २:००	ब्रह्म	१६।४२	दि.१२:५२	गर	२।२४	प्रा.७:०८	वणि	तुला	--	दिनरात	३०।२९	६:११	६:२२	४।२६।५९।५९	५८	मुद्गर	१४ सित	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। श्री गणेश प्राकट्य चतुर्थी, चंद्र दर्शन निषेध। हरितालिका व्रत। मन्वादिति। वराह अवतार। सामवेदीय उपाकर्म। (B)
४	मं.	४।००	प्रा.७:४७	स्वा	२३।१०	दि. ३:२७	ऐंद्र	१५।३७	दि.१२:२६	भद्रा	४।०	प्रा.७:४७	बव	तुला	--	दिनरात	३०।२६	६:११	६:२१	४।२७।५८।२६	५८	ध्वज	१५ सित	ऋषि पंचमी व्रतं। शिवाचतुर्थी। रवियोग सू.उ.से दिन ३:२७ तक । भद्रा सू.उ.से प्रातः ७:४७(पाताल)। वैघृति दि.१२:२६ वजे तक। से रातअंत।
५	बु.	७।११	दि.९:०३	विशा	२८।१३	सा. ५:२९	वैधृ	१५।४३	दि.१२:२८	बाल	७।११	दि.९:०३	कौल	तुला	११।४७	दि. १०:५४ तक	३०।२२	६:११	६:२०	४।२८।५६।५५	५९	धाता	१६ सित	रवियोग सायं ५:२९ से रात्रिअंत। अमृतसिद्धि सायं ५:२९ से रातअंत। वैघृति सू.उ.से दि.१२:२८ वजे तक।
६	गु.	११।४१	दि.१०:५२	अनु	३४।२७	रा. ७:५८	विष्कु	१६।४८	दि.१२:५५	तैति	११।४१	दि.१०:५२	गर	वृश्चिक	××	दिनरात	३०।१९	६:११	६:१९	४।२९।५५।२५	५९	आनंद	१७ सित	सूर्य षष्ठी। श्री बलराम जयंती।श्री विश्वकर्मा जयंती। मूल रात ७:५८ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से रात्रि ७:५८ तक । सर्वार्थसिद्धी रात्रि ७:५८ (C)
७	शु.	१७।०९	दि.१:०३	ज्ये	४१।२७	रा. १०:४७	प्रीति	१८।३५	दि.१:३८	वणि	१७।९	दि.१:०३	भद्रा	वृश्चिक	४१।२७	रा. १०:४७ तक	३०।१६	६:१२	६:१८	५।००।५३।५८	५९	चर	१८ सित	संतान सप्तमी, विस्वान सप्तमी। मूल दिनरात। भद्रा दिन १:०३ से रात्रि २:१४ (स्वर्ग)। कर्के भौमः दिन ४:४३ समये।
८	श.	२३।०५	दि.३:२६	मूल	४८।४५	रा. १:४२	आयु	२०।४४	दि.२:३०	बव	२३।५	दि.३:२६	बाल	धनु	××	दिनरात	३०।१२	६:१२	६:१७	५।०१।५२।३२	५९	गद	१९ सित	राधा अष्टमी, महालक्ष्मी व्रतारंभ। मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। मूल सू.उ.से रात १:४२ तक। रवियोग रात्रि १:४२ से रात्रिअंत।
९	र.	२८।५८	सा.५:४८	पू.षा	५५।५०	रा. ४:३२	सौभ	२२।५२	दि.३:२१	कौल	२८।५८	सा.५:४८	तैति	धनु	××	दिनरात	३०।०९	६:१२	६:१६	५।०२।५१।०९	५९	शुभ	२० सित	नंदा नवमी। रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ४:३२ से रातअंत। (B) रवियोग दिन २:०० से रात्रिअंत। भद्रा रात्रि ७:२६ से रात्रिअंत (पाताल)।
१०	चं.	३४।१६	रा.७:५५	उ.षा	६०।०	वृद्धि	शोभ	२४।३४	दि.४:०२	तैति	१।४८	प्रा.६:५६	गर	धनु	१२।२७	दि. ११:१२ तक	३०।०६	६:१३	६:१५	५।०३।४९।४७	५९	मृत्यु	२१ सित	दशावतार व्रत। तेजा दशमी, रामदेव मेला। रवियोग सू.उ.से रात्रि ७:०५ तक। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ७:०५ से रातअंत। चित्रायां वुधः रात्रि १०:४५ समये।
११	मं.	३८।३१	रा.९:३७	उ.षा	२।८	प्रा. ७:०४	अति	२५।३०	दि.४:२५	वणि	६।३७	दि.८:५२	भद्रा	मकर	××	दिनरात	३०।०२	६:१३	६:१४	५।०४।४८।२७	५९	पद्म	२२ सित	डोल ग्यारस। पद्मा एकादशी व्रत सर्वे। श्री सूर्य दक्षिणगोल प्रवेश रात्रि ५:४४। रवियोग सू.उ.से प्रातः ७:०४ तक। भद्रा दिन ८:५२ से रात्रि ९:३७ (पाताल)।
१२	बु.	४१।२१	रा.१०:४६	श्रव	७।१३	दि. ९:०६	सुक	२५।२४	दि.४:२३	बव	१०।१०	दि.१०:१८	बाल	मकर	३९।०८	रा. ९:५३ तक	२९।५९	६:१३	६:१३	५।०५।४७।०९	५९	छत्र	२३ सित	वामन अवतार। पंचक प्रारंभ रा. ९:५३ तक समये। पुष्ये भौमः रात्रि ५:४६ समये। (D) दिन १२:२३। तुलायां बुधः दिन १२:४२ समये।
१३	गु.	४२।३३	रा.११:१५	धनि	१०।४८	दि. १०:३३	धृति	२४।५	दि.३:५२	कौल	१२।१२	दि.११:०६	तैति	कुंभ	××	दिनरात	२९।५६	६:१४	६:१२	५।०६।४५।५३	५९	श्रीवत्स	२४ सित	गुरुप्रदोष व्रतं। पंचक दिनरात। रवियोग दिन १०:३३ से रात्रिअंत। (A) स्त्री.योग अनावृष्टि। वायुनाड़ी। हस्ते वुधः दिन १०:४५ समये।
१४	शु.	४२।०७	रा.११:०५	शत	१२।४८	दि. ११:२१	शूल	२१।२९	दि.२:५०	गर	१२।३४	दि.११:१६	वणि	कुंभ	५८।२३	रा. ५:३५ तक	२९।५२	६:१४	६:११	५।०७।४४।३९	५९	सौम्य	२५ सित	अनंत चतुर्दशी। गणेश विसर्जन, पाली- कदलीव्रत। पंचक दिनरात। रवियोग सू.उ.से दिन ११:२१ तक । भद्रा रात्रि ११:०५ से रात्रिअंत (भूमि)।
१५	श.	४०।०८	रा.१०:१८	पू.भा	१३।१४	दि. ११:३२	गंड़	१७।३८	दि.१:१८	भद्रा	११।२१	दि.१०:४७	बव	मीन	××	दिनरात	२९।४९	६:१४	६:१०	५।०८।४३।२७	५९	कालदंड़	२६ सित	पूर्णिमा। पूर्णिमाश्राद्ध। पंचक दिनरात। क्रांतिसाम्य दिन ८:१३ से दिन १२:२३। भद्रा सू.उ.से दिन १०:४७ (भूमि)। क्रांतिसाम्य दिन ८:१३ से (D)

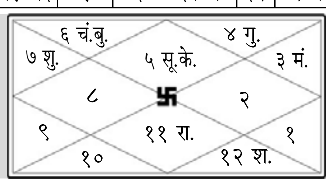
सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-०२

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	श.	५।०६।१३।०२	७९९	२।२६।३।३९	३७	५।८।१।४८	९९	३।२१।४४।०७	१२	६।०६।५०।०९	३७	११।१८।४३।१६	४	१०।०४।२८।५५	७:२१	७:२८
२	र.	५।१९।३२।१०	७८०	२।२६।४०।३८	३७	५।९।४१।१३	९८	३।२१।५६।०९	१२	६।०७।२६।५९	३६	११।१८।३९।०९	४	१०।०४।२५।४५	८:१४	७:५९
३	चं.	६।०२।३१।५३	७६१	२।२७।१७।३१	३७	५।११।१९।३२	९७	३।२२।०८।०८	१२	६।०८।०२।३५	३४	११।१८।३४।५९	४	१०।०४।२२।३४	९:०६	८:३०
४	मं.	६।१५।१२।४३	७४४	२।२७।५४।१८	३७	५।१२।५६।४६	९६	३।२२।२०।०४	१२	६।०८।३६।५५	३३	११।१८।३०।४६	४	१०।०४।१९।२३	९:५८	९:०३
५	बु.	६।२७।३६।३६	७३०	२।२८।३०।५९	३७	५।१४।३२।५६	९५	३।२२।३१।५६	१२	६।०९।०९।५५	३२	११।१८।२६।३१	४	१०।०४।१६।१२	१०:४९	९:३९
६	गु.	७।०९।४६।३७	७२०	२।२९।७।३४	३६	५।१६।८।२	९४	३।२२।४३।४४	१२	६।०९।४१।३४	३०	११।१८।२२।१३	४	१०।०४।१३।०१	११:३९	१०:२०
७	शु.	७।२१।४६।३५	७१४	२।२९।४४।३	३६	५।१७।४२।५	९३	३।२२।५५।२९	१२	६।१०।११।४७	२९	११।१८।१७।५२	४	१०।०४।०९।५१	१२:२८	११:०५
८	श.	८।०३।४०।४७	७१३	३।०।२०।२५	३६	५।१९।१५।६	९२	३।२३।०७।०९	१२	६।१०।४०।३१	२७	११।१८।१३।२९	४	१०।०४।०६।४०	१:१५	११:५३
९	र.	८।१५।३३।४१	७१६	३।०।५६।४२	३६	५।२०।४७।४	९१	३।२३।१८।४६	१२	६।११।०७।४३	२६	११।१८।०९।०३	४	१०।०४।०३।२९	१:५९	१२:४४
१०	चं.	८।२७।२९।५०	७२४	३।१।३२।५१	३६	५।२२।१८।१	९०	३।२३।३०।१८	११	६।११।३३।२०	२४	११।१८।०४।३५	४	१०।०४।००।१८	२:३८	१:३६
११	मं.	९।०९।३३।४५	७३६	३।२।८।५५	३६	५।२३।४७।५६	८९	३।२३।४१।४७	११	६।११।५७।१७	२२	११।१८।००।०६	५	१०।०३।५७।०८	३:१६	२:३०
१२	बु.	९।२१।४९।४१	७५२	३।२।४४।५२	३६	५।२५।१६।५०	८८	३।२३।५३।११	११	६।१२।१९।३१	२०	११।१७।५५।३४	५	१०।०३।५३।५७	३:५०	३:२४
१३	गु.	१०।०४।२१।२१	७७०	३।३।२०।४२	३६	५।२६।४४।४१	८७	३।२४।०४।३१	११	६।१२।३९।५९	१९	११।१७।५१।०१	५	१०।०३।५०।४६	४:२४	४:१९
१४	शु.	१०।१७।११।२७	७९०	३।३।५६।२५	३६	५।२८।११।२९	८६	३।२४।१५।४६	११	६।१२।५८।३७	१७	११।१७।४६।२६	५	१०।०३।४७।३५	४:५८	५:१६
१५	श.	११।००।२१।२३	८१०	३।४।३२।२	३५	५।२९।३७।१४	८५	३।२४।२६।५७	११	६।१३।१५।२०	१५	११।१७।४१।५०	५	१०।०३।४४।२४	५:३३	६:१५

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

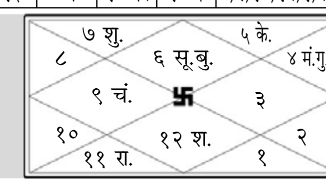
दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
१२ सित	४:१८	६:३०	८:४१	१०:५६	१:१३	३:१८	५:०५	६:३८	८:०९	९:४९	११:४७	२:०१	७,९,१०,१२,१,४,
१३ सित	४:१४	६:२६	८:३७	१०:५२	१:०९	३:१४	५:०१	६:३४	८:०५	९:४५	११:४३	१:५७	७,१०,१२,१,
१४ सित	४:१०	६:२२	८:३३	१०:४८	१:०५	३:१०	४:५७	६:३०	८:०१	९:४१	११:३९	१:५३	६,९,१०,१२,१,२,
१५ सित	४:०६	६:१८	८:२९	१०:४४	१:०१	३:०६	४:५३	६:२६	७:५७	९:३७	११:३५	१:४९	६,९,१०,१२,१,२,
१६ सित	४:०२	६:१४	८:२५	१०:४१	१२:५७	३:०२	४:४९	६:२२	७:५३	९:३३	११:३२	१:४५	६,९,१०,१२,१,
१७ सित	३:५८	६:१०	८:२१	१०:३७	१२:५३	२:५८	४:४५	६:१८	७:४९	९:२९	११:२८	१:४१	७,९,१०,१२,१,४,
१८ सित	३:५४	६:०६	८:१८	१०:३३	१२:४९	२:५५	४:४१	६:१४	७:४५	९:२५	११:२४	१:३७	७,९,१०,१२,१,३,
१९ सित	३:५०	६:०२	८:१४	१०:२९	१२:४५	२:५१	४:३७	६:१०	७:४१	९:२१	११:२०	१:३४	७,९,१२,१,३,
२० सित	३:४६	५:५८	८:१०	१०:२५	१२:४१	२:४७	४:३३	६:०६	७:३७	९:१७	११:१६	१:३०	७,९,१०,१२,१,३,
२१ सित	३:४२	५:५५	८:०६	१०:२१	१२:३७	२:४३	४:२९	६:०२	७:३३	९:१३	११:१२	१:२६	७,९,१०,१२,१,३,
२२ सित	३:३८	५:५१	८:०२	१०:१७	१२:३३	२:३९	४:२५	५:५८	७:२९	९:०९	११:०८	१:२२	७,९,१०,१२,१,३,
२३ सित	३:३४	५:४७	७:५८	१०:१३	१२:२९	२:३५	४:२१	५:५५	७:२५	९:०५	११:०४	१:१८	७,९,१२,१,२,३,
२४ सित	३:३०	५:४३	७:५४	१०:०९	१२:२५	२:३१	४:१८	५:५१	७:२१	९:०२	१०:६०	१:१४	७,९,१२,१,२,३,
२५ सित	३:२६	५:३९	७:५०	१०:०५	१२:२१	२:२७	४:१४	५:४७	७:१७	८:५८	१०:५६	१:१०	७,९,१०,१२,१,२,३
२६ सित	३:२२	५:३५	७:४६	१०:०१	१२:१७	२:२३	४:१०	५:४३	७:१३	८:५४	१०:५२	१:०६	७,९,१०,१२,१,२,३

तिथि १
शनिवार
इष्ट ०।०



कन्या संक्रान्ति फलम्- भाद्रपद शुक्ल ६ गुरुवासरे दिन ८:०४ समये कन्यासंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम मंदा संज्ञक संक्रांति बुद्धिजीवी वर्ग, लेखको, अध्यापकों, व्राम्हणों, वैज्ञानिकों आदि को शुभद है। तस्य काले अनुनक्षत्र नाम मंदाकिनी संज्ञक संक्रांति सैनिकवर्ग, पुलिष आदि को सुखद। मुहूर्त्त ३० अनाज मूल्य समता। तैतिल करण फल- गदर्भ वाहनं, मेष उपवाहनं, पांडुर वस्त्रं, दण्ड आयुधं, कांस्य पात्रं, पकवान्न भक्षणं, मृतिका लेपनं, पक्षी वर्ण, केतकी पुष्पं, मूंगा भूषणं, भुर्जपत्र कंचुकी, युवा अवस्था, सुप्त स्थिति। अन्नादि में मंदी भाव सूचक। जनता कठिन परिश्रम से ही सुखी रह पायेगी। भाद्रपदशुक्ल १२ पुष्ये भौम चोरी और तस्करी बढेगी। भाद्रपदशुक्ल २ हस्ते बुध - हस्तेबुधेसुभिक्षं स्याद्धान्यमारोग्यमम्बुदाः। हस्त में बुध हो तो सुभिक्ष हो धान्य निरोग रहे। भाद्रपदशुक्ल १० चित्रायां बुध - चित्रायांगणिकाशिल्पिद्विजपीड़ाल्पवर्षणम्।। चित्रा में हो तो वर्षा कम हो और वेश्या तथा शिल्पी लोग और ब्राह्मणों में पीड़ा हो।
(C) पर्यन्त। कन्यायां रवि दिन ८:०४ समये। पुण्यकाल आज। बुध उदय पश्चिमेः रात्रि ७:०६ समये।

तिथि ८
शनिवार
इष्ट ०।०



102 आश्विन कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शकः १९४८। रौद्र संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। शरद ऋतुः। श्री सूर्य दक्षिणायन-दक्षिणगोले। सितम्बर-अक्टूबर ईसवी सन् २०२६। सितम्बर-अक्टूबर। वंगला सन् १४३३ । वीर निर्वाण संवत् २५५२।

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वेः। शुक्र उदयपश्चिमेः मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-उत्तराफाल्गुण्यां रविः, पुष्ये भौमः, चित्रायां वुधः, आश्लेषायां गुरौ, स्वाते शुक्रः, रेवत्यां शनिः, धनिष्ठायां राहु, मघायां केतु।
१	र.	३६।४९	रा.८:५८	उ.भा	१२।१६	दि. ११:०९	बृद्धि	१२।३९	दि.११:१८	बाल	८।४२	दि.९:४४	कौल	मीन	--	दिनरात	२९।४६	६:१५	६:९	५।०९।४२।१८	५९	स्थिर	२७ सित	प्रतिपदाश्राद्ध। पंचक दिनरात। मूल दिन ११:०९ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन ११:०९ पर्यन्त। हस्ते रवि दिन १:२८ समये। मूषक वाहनं अल्प (A)
२	चं.	३२।२६	रा.७:१४	रेव	१०।७	दि. १०:१८	ध्रुव	६।४३	दि.८:५६	तैति	४।५०	दि.८:११	गर	मीन	१०।०७	दि. १०:१८ तक	२९।४२	६:१५	६:८	५।१०।४१।१०	५९	मातंग	२८ सित	द्वितीयाश्राद्ध। पंचक समाप्त दि. १० :१८ समये। मूल दिनरात।
३	मं.	२७।१८	सा.५:११	अश्वि	७।५	दि. ९:०५	व्या, हर्ष	०।१, ५९।५१	प्रा.६:१६, रा.६:१२	वणि	०।२	प्रा.६:१६	भद्रा	मेष	--	दिनरात	२९।३९	६:१५	६:७	५।११।४०।०४	५९	अमृत	२९ सित	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। तृतीयाश्राद्ध। मूल सू.उ.से दिन ९:०५ तक। अमृतसिद्धि दिन ९:०५ पर्यन्त। भद्रा प्रातः ६:१६ से सायं ५:११ (स्वर्ग)।
४	बु.	२१।४०	दि.२:५६	भर, कृत्ति	३:२६।५९:२१	प्रा.७:३८, रा.६:०३	वज्र	४५।१४	रा.१२:२१	बाल	२१।४०	दि.२:५६	कौल	मेष	१७।२७	दि. १:१५ तक	२९।३६	६:१६	६:६	५।१२।३८।६०	५९	काण	३० सित	चतुर्थीश्राद्ध। पंचमीश्राद्ध। सर्वार्थसिद्धी प्रातः ७:३८ से ५:०३ रात तक।।
५	गु.	१५।५०	दि.१२:३६	रोहि	५५।२९	रा. ४:२८	सिद्धि	३७।३८	रा.९:१९	तैति	१५।५०	दि.१२:३६	गर	वृष	××	दिनरात	२९।३२	६:१६	६:५	५।१३।३७।५८	५९	उत्पात	०१ अक्टू	षष्ठीश्राद्ध। रवियोग रात्रि ४:२८ से रात्रिअंत। व्यतिपात् रा.९:१९ वजे तक। से रातअंत। स्वाते वुधः दिन ९:३२ समये। शुक्र वक्री१३:१२
६	शु.	९।५९	दि.१०:१६	मृग	५१।३९	रा. २:५६	व्यति	३०।७	सा.६:१९	वणि	९।५९	दि.१०:१६	भद्रा	वृष	२३।३४	दि. ३:४२ तक	२९।२९	६:१७	६:४	५।१४।३६।५८	५९	मानस	०२ अक्टू	सप्तमीश्राद्ध। रवियोग सू.उ.से रात्रि २:५६ तक । भद्रा दिन १०:१६ से रात्रि ९:०८ (स्वर्ग)। व्यतिपात् सू.उ.से सा.६:१९ वजे तक।।
७,८	श.	४।२१, ५९।०३	दि.८:०१,रा ५:५४	आर्द्रा	४८।९	रा. १:३३	वरी	२२।४९	दि.३:२४	बव	४।२१	दि.८:०१	बाल	मिथुन	××	दिनरात	२९।२६	६:१७	६:३	५।१५।३६।००	५९	मुद्गर	०३ अक्टू	श्री महालक्ष्मी व्रतं। कालाष्टमी व्रतं। अष्टमीश्राद्ध।
९	र.	५४।१३	रा.३:५९	पुन	४५।४	रा. १२:१९	परि	१५।४८	दि.१२:३७	तैति	२६।३८	दि.४:५६	गर	मिथुन	३०।४९	सा. ६:३७ तक	२९।२२	६:१७	६:२	५।१६।३५।०५	५९	ध्वज	०४ अक्टू	नवमीश्राद्ध। रविपुष्य योग रात्रि १२:१९ से रातअंत। रवि पुष्य योग रात्रि १२:१९ से रातअंत।
१०	चं.	४९।५२	रा.२:१४	पुष्य	४२।२६	रा. ११:१६	शिव	९।९	दि.९:५७	वणि	२२।१	दि.३:०६	भद्रा	कर्क	××	दिनरात	२९।१९	६:१८	६:१	५।१७।३४।११	५९	धाता	०५ अक्टू	दशमीश्राद्ध। मूल रात ११:१६ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ११:१६ पर्यन्त। ज्वालामुखीयो रात्रि ११:१६ से रात्रि २:१४ तक। सोम पुष्य योग (B)
११	मं.	४६।०२	रा.१२:४३	श्ले	४०।१९	रा. १०:२६	सिद्ध, साध्य	२।५२, ५९।५६	प्रा.७:२७, रा.६:१७	बव	१७।५४	दि.१:२८	बाल	कर्क	४०।१९	रा. १०:२६ तक	२९।१६	६:१८	६:०	५।१८।३३।१९	५९	आनंद	०६ अक्टू	इंदिरा एकादशी व्रत सर्वे। एकादशीश्राद्ध। मूल दिनरात। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १०:२६ पर्यन्त।
१२	बु.	४२।४६	रा.११:२५	मघा	३८।४६	रा. ९:४९	शुभ	५१।४२	रा.२:५९	कौल	१४।१९	दि.१२:०२	तैति	सिंह	××	दिनरात	२९।१२	६:१८	५:५९	५।१९।३२।३०	५९	चर	०७ अक्टू	संन्यासी द्वादशीश्राद्ध। मूल सू.उ.से रात ९:४९ तक।
१३	गु.	४०।११	रा.१०:२३	पू.फा.	३७।५२	रा. ९:२७	शुक्ल	४६।५५	रा.१:०५	गर	११।२२	दि.१०:५२	वणि	सिंह	५२।४२	रा. ३:२४ तक	२९।०९	६:१९	५:५८	५।२०।३१।४२	५९	गद	०८ अक्टू	गुरुप्रदोष व्रतं। मासिक शिवरात्रि व्रतं। त्रयोदशीश्राद्ध। क्रांतिसाम्य दिन ८:५६ से दिन १:०७। भद्रा रात्रि १०:२३ से रात्रिअंत (भूमि)। (C)
१४	शु.	३८।२५	रा.९:४१	उ.फा.	३७।४५	रा. ९:२५	ब्रह्म	४२।४७	रा.११:२६	भद्रा	९।९	दि.९:५९	शकु	कन्या	××	दिनरात	२९।०६	६:१९	५:५७	५।२१।३०।५७	५९	शुभ	०९ अक्टू	शस्त्राघात-दुर्घटना मृत चतुर्दशीश्राद्ध। भद्रा सू.उ.से दिन ९:५९(पाताल)। उत्तरभाद्रपदे शनि दिन ११:१८ समये।
३०	श.	३७।३९	रा.९:२३	हस्त	३८।३७	रा. ९:४६	ऐंद्र	३९।२६	रा.१०:०६	चतु	७।५०	दि.९:२८	नाग	कन्या	××	दिनरात	२९।०२	६:२०	५:५७	५।२२।३०।१३	५९	मृत्यु	१० अक्टू	शनिचरी अमावस्या। पितृमोक्ष अमावस्या।अमावस्याश्राद्ध। वैधृति रा.१०:०६ वजे तक। से रातअंत। चित्रायां रवि रात्रि २:२८ समये।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-०३

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	र.	११।१३।५०।५५	८२७	३।५।७।३२	३५	६।१।१।५४	८४	३।२४।३८।०४	११	६।१३।३०।०६	१३	११।१७।३७।१३	५	१०।०३।४१।१४	६:११	६:४५
२	चं.	११।२७।३८।०६	८४१	३।५।४२।५५	३५	६।२।२५।२९	८२	३।२४।४९।०५	११	६।१३।४२।५१	११	११।१७।३२।३४	५	१०।०३।३८।०३	६:५३	७:४९
३	मं.	०।११।३९।३४	८५१	३।६।१८।११	३५	६।३।४७।५६	८१	३।२५।००।०२	११	६।१३।५३।३०	९	११।१७।२७।५४	५	१०।०३।३४।५२	७:४०	८:५७
४	बु.	०।२५।५०।५६	८५६	३।६।५३।२०	३५	६।५।९।१२	८०	३।२५।१०।५४	११	६।१४।०२।०२	६	११।१७।२३।१४	५	१०।०३।३१।४१	८:३४	१०:०८
५	गु.	१।१०।०७।२६	८५७	३।७।२८।२१	३५	६।६।२९।१७	७९	३।२५।२१।४१	११	६।१४।०८।२२	४	११।१७।१८।३३	५	१०।०३।२८।३०	९:३५	११:२०
६	शु.	१।२४।२४।३५	८५४	३।८।३।१६	३५	६।७।४८।७	७८	३।२५।३२।२३	११	६।१४।१२।२८	२	११।१७।१३।५१	५	१०।०३।२५।२०	१०:४३	१२:३०
७,८	श.	२।०८।३८।४७	८४९	३।८।३८।३	३५	६।९।५।३८	७६	३।२५।४२।५९	११	६।१४।१४।१६	१	११।१७।०९।०९	५	१०।०३।२२।०९	११:५३	१:३५
९	र.	२।२२।४७।३४	८४२	३।९।१२।४२	३५	६।१०।२१।४६	७५	३।२५।५३।३१	१०	६।१४।१३।४४	३	११।१७।०४।२७	५	१०।०३।१८।५८	१:०३	२:३२
१०	चं.	३।०६।४९।३७	८३५	३।९।४७।१४	३४	६।११।३६।२७	७३	३।२६।०३।५७	१०	६।१४।१०।५१	५	११।१६।५९।४५	५	१०।०३।१५।४७	२:११	३:२०
११	मं.	३।२०।४४।१८	८२७	३।१०।२१।३८	३४	६।१२।४९।३५	७१	३।२६।१४।१७	१०	६।१४।०५।३५	८	११।१६।५५।०३	५	१०।०३।१२।३६	३:१४	४:०२
१२	बु.	४।०४।३१।१५	८१८	३।१०।५५।५५	३४	६।१४।१।५	७०	३।२६।२४।३२	१०	६।१३।५७।५४	१०	११।१६।५०।२१	५	१०।०३।०९।२६	४:१३	४:३९
१३	गु.	४।१८।०९।४४	८०९	३।११।३०।३	३४	६।१५।१०।४९	६८	३।२६।३४।४१	१०	६।१३।४७।४९	१२	११।१६।४५।३९	५	१०।०३।०६।१५	५:०८	५:१२
१४	शु.	५।०१।३८।२६	७९७	३।१२।४।४	३४	६।१६।१८।४०	६६	३।२६।४४।४५	१०	६।१३।३५।१९	१५	११।१६।४०।५८	५	१०।०३।०३।०४	६:०२	५:४४
३०	श.	५।१४।५५।३६	७८४	३।१२।३७।५७	३४	६।१७।२४।२७	६४	३।२६।५४।४२	१०	६।१३।२०।२७	१७	११।१६।३६।१८	५	१०।०२।५९।५३	××	६:१५

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२७ सित	५:३१	७:४२	९:५७	१२:१४	२:१९	४:०६	५:३९	७:०९	८:५०	१०:४८	१:०२	३:१९	७,१०,१२,१,३,
२८ सित	५:२७	७:३८	९:५३	१२:१०	२:१५	४:०२	५:३५	७:०५	८:४६	१०:४४	१२:५८	३:१५	७,१०,१२,१,३,
२९ सित	५:२३	७:३४	९:४९	१२:०६	२:११	३:५८	५:३१	७:०२	८:४२	१०:४०	१२:५४	३:११	७,१०,१२,१,३,
३० सित	५:१९	७:३०	९:४५	१२:०२	२:०७	३:५४	५:२७	६:५८	८:३८	१०:३६	१२:५०	३:०७	७,१०,१२,१,३,
०१ अक्टू	५:१५	७:२६	९:४१	११:५८	२:०३	३:५०	५:२३	६:५४	८:३४	१०:३२	१२:४६	३:०३	७,८,१०,१२,१,२,३,
०२ अक्टू	५:११	७:२२	९:३७	११:५४	१:५९	३:४६	५:१९	६:५०	८:३०	१०:२८	१२:४२	२:५९	७,१०,१२,१,३,
०३ अक्टू	५:०७	७:१८	९:३३	११:५०	१:५५	३:४२	५:१५	६:४६	८:२६	१०:२४	१२:३८	२:५५	७,१०,१२,१,३,
०४ अक्टू	५:०३	७:१४	९:३०	११:४६	१:५१	३:३८	५:११	६:४२	८:२२	१०:२१	१२:३४	२:५१	७,१०,१२,१,३,
०५ अक्टू	४:५९	७:१०	९:२६	११:४२	१:४७	३:३४	५:०७	६:३८	८:१८	१०:१७	१२:३०	२:४७	७,१०,१२,१,३,
०६ अक्टू	४:५५	७:०७	९:२२	११:३८	१:४४	३:३०	५:०३	६:३४	८:१४	१०:१३	१२:२६	२:४३	७,१०,१२,१,३,
०७ अक्टू	४:५१	७:०३	९:१८	११:३४	१:४०	३:२६	४:५९	६:३०	८:१०	१०:०९	१२:२३	२:३९	७,१०,१२,१,३,
०८ अक्टू	४:४७	६:५९	९:१४	११:३०	१:३६	३:२२	४:५५	६:२६	८:०६	१०:०५	१२:१९	२:३५	७,१०,१२,१,३,
०९ अक्टू	४:४४	६:५५	९:१०	११:२६	१:३२	३:१८	४:५१	६:२२	८:०२	१०:०१	१२:१५	२:३१	७,१०,१२,१,३,
१० अक्टू	४:४०	६:५१	९:०६	११:२२	१:२८	३:१४	४:४७	६:१८	७:५८	९:५७	१२:११	२:२७	७,१०,१२,१,३,

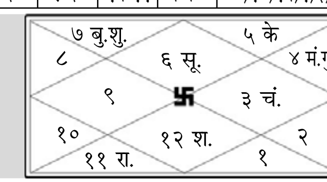
तिथि १
रविवार
इष्ठ ०।०



आश्विनकृष्ण ५ स्वाते बुध - स्वातौबुधेमंदवृष्टिशाखायांसुभिक्षता। स्वाती में बुध हो तो मन्द वर्षा हो आश्विनशुक्ल २ विशाखयां बुध - व्याधिर्भयंचदुर्भिक्षंकिंचित्कुत्रापिजायते।। विशाखा में हो तो सुभिक्ष हो। कहीं व्याधि भय और दुर्भिक्ष भी हो।।

(A) वृष्टि। स्त्री. पु.योग सुवृष्टि। अग्निनाड़ी। (B) सू उ से रात्रि ११:१६ तक। भद्रा दिन ३:०६ से रात्रि २:१४ (भूमि)।
(C) क्रांतिसाम्य दिन ८:५६ से दिन १:०७।

तिथि ९
रविवार
इष्ठ ०।०



१६	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे:। शुक्र उदयपश्चिमे: मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-चित्रायां रविः, पुष्ये भौमः, स्वाते वुधः, आश्लेषायां गुरौ, स्वाते शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, धनिष्ठायां राहु, मघायां केतु।
१	र.	३८।०३	रा.९:३३	चित्रा	४०।३७	रा. १०:३५	वैधृ	३७।१	रा.९:०८	किंस्तु	७।३७	दि.९:२३	बव	कन्या	९।२४	दि. १०:०६ तक	२८।५९	६:२०	५:५६	५।२३।२९।३२	५९	पद्म	११ अक्टू	शारदीय नवरात्रि प्रारंभ। पुण्यप्रदाव्रत। अग्रसेन ज.। वैधृति सू.उ.से रा.९:०८ वजे तक।
२	चं.	३९।४६	रा.१०:१५	स्वा	४३।५३	रा. ११:५४	विष्कु	३५।३६	रा.८:३५	बाल	८।४०	दि.९:४८	कौल	तुला	--	दिनरात	२८।५६	६:२०	५:५५	५।२४।२८।५३	५९	छत्र	१२ अक्टू	विशाखायां वुधः सायं ६:५८ समये। शुक्र अस्त पश्चिमेः प्रातः ६:२७ समये
३	मं.	४२।५१	रा.११:२९	विशा	४८।२९	रा. १:४४	प्रीति	३५।१४	रा.८:२७	तैति	११।६	दि.१०:४७	गर	तुला	३२।१५	रा. ७:१५ तक	२८।५३	६:२१	५:५४	५।२५।२८।१५	५९	श्रीवत्स	१३ अक्टू	सिन्दूर तृतीया। रवियोग रात्रि १:४४ से रात्रिअंत।
४	बु.	४७।१५	रा.१:१५	अनु	५४।१८	रा. ४:०४	आयु	३५।५३	रा.८:४२	वणि	१४।५३	दि.१२:१९	भद्रा	वृश्चिक	--	दिनरात	२८।४९	६:२१	५:५३	५।२६।२७।४०	५९	सौम्य	१४ अक्टू	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। मूल रात ४:०४ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से रात्रि ४:०४ तक। अमृतसिद्धि रात्रि ४:०४ पर्यन्त। भद्रा दिन १२:१९ (A)
५	गु.	५२।४२	रा.३:२७	ज्ये	६०।०	वृद्धि	सौभ	३७।२२	रा.९:१८	बव	१९।५३	दि.२:१९	बाल	वृश्चिक	××	दिनरात	२८।४६	६:२२	५:५२	५।२७।२७।०७	५९	कालदंड	१५ अक्टू	उपांग ललिता व्रत। मूल दिनरात। (D) ११:५७ से रात्रि १०:५४ (स्वर्ग)। बुध अस्त पश्चिमेः सायं ६:३९ समये।
६	शु.	५८।५२	रा.५:५५	ज्ये	१।८	प्रा. ६:४९	शोभ	३९।२५	रा.१०:०८	कौल	२५।४५	दि.४:४०	तैति	वृश्चिक	१।०८	प्रा. ६:४९ तक	२८।४३	६:२२	५:५१	५।२८।२६।३६	६०	चर	१६ अक्टू	स्कंद षष्ठी। मूल दिनरात। रवियोग प्रातः ६:४९ से रात्रिअंत।
७	श.	६०।००	वृद्धि	मूल	८।३५	दि. ९:४८	अति	४१।४३	रा.११:०४	गर	२६।४९	रा ७:१२	वणि	धनु	××	दिनरात	२८।३९	६:२३	५:५०	५।२९।२६।०७	६०	गद	१७ अक्टू	मूल सू.उ.से दिन ९:४८ तक। रवियोग सू.उ.से दिन ९:४८ तक। तुलायां रवि रात्रि ८:०२ समये। पुण्यकाल आज। आश्लेषायां भौमः दिन १२:५४ समये।
७	र.	५।१२	दि.८:२८	पू.षा	१६।३	दि. १२:४८	सुक	४३।५०	रा.११:५५	वणि	५।१२	दि.८:२८	भद्रा	धनु	३२।५१	रा. ७:३१ तक	२८।३६	६:२३	५:४९	६।००।२५।४०	६०	शुभ	१८ अक्टू	पर्जन्य सप्तमी, सरस्वती पूजन। सर्वार्थसिद्धी दिन १२:४८ से रातअंत। भद्रा दिन ८:२८ से रात्रि ९:४० (पाताल)। (A) से रात्रि १:१५ (स्वर्ग)।
८	चं.	११।०३	दि.१०:४९	उ.षा	२२।५९	दि. ३:३५	धृति	४५।२२	रा.१२:३२	बव	११।३	दि.१०:४९	बाल	मकर	××	दिनरात	२८।३३	६:२३	५:४९	६।०१।२५।१५	६०	मृत्यु	१९ अक्टू	नवरात्र दुर्गा अष्टमी व्रत। रवियोग दिन ३:३५ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन ३:३५ से रातअंत।
९	मं.	१५।५२	दि.१२:४५	श्रव	२८।५१	सा. ५:५६	शूल	४५।५५	रा.१२:४६	कौल	१५।५२	दि.१२:४५	तैति	मकर	××	दिनरात	२८।३०	६:२४	५:४८	६।०२।२४।५२	६०	लुंबक	२० अक्टू	विजया दशमी, शमी पूजन, नीलकण्ठ दर्शन। दुर्गा नवमी, सतयुगादि तिथि, मन्वादिति। रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत।
१०	बु.	१९।११	दि.२:०५	धनि	३३।१३	रा. ७:४१	गंड	४५।११	रा.१२:२९	गर	१९।११	दि.२:०५	वणि	मकर	१।२५	प्रा. ६:५८ तक	२८।२७	६:२४	५:४७	६।०३।२४।३१	६०	मित्र	२१ अक्टू	पंचक प्रारंभ प्रा. ६:५८ तक समये। रवियोग सू.उ.से रात्रि ७:४१ तक। क्रांतिसाम्य रात्रि ७:०६ से रात्रि ११:२९। भद्रा रात्रि २:३१ से रात्रिअंत (B)
११	गु.	२०।४१	दि.२:४१	शत	३५।४६	रा. ८:४३	बृद्धि	४२।५७	रा.११:३६	भद्रा	२०।४१	दि.२:४१	बव	कुंभ	××	दिनरात	२८।२३	६:२५	५:४६	६।०४।२४।१२	६०	वज्र	२२ अक्टू	पापांकुशा एकादशी व्रत सर्वे। पंचक दिनरात। भद्रा सू.उ.से दिन २:४१(भूमि)। (B) (भूमि)। क्रांतिसाम्य रात्रि ७:०६ से रात्रि ११:२९।
१२	शु.	२०।१३	दि.२:३१	पू.भा	३६।२३	रा. ८:५९	ध्रुव	३९।१०	रा.१०:०५	बाल	२०।१३	दि.२:३१	कौल	कुंभ	२१।२५	दि. २:५९ तक	२८।२०	६:२५	५:४५	६।०५।२३।५५	६०	ध्वांक्ष	२३ अक्टू	शुक्रप्रदोष व्रतं। पद्मनाभ व्रत। पंचक दिनरात। रवियोग रात्रि ८:५९ से रात्रिअंत। चित्रायां शुक्रः रात्रि २:०५ समये।
१३	श.	१७।५२	दि.१:३५	उ.भा	३५।११	रा. ८:३०	व्या	३३।५५	रा.७:६०	तैति	१७।५२	दि.१:३५	गर	मीन	××	दिनरात	२८।१७	६:२६	५:४५	६।०६।२३।४०	६०	धूम्र	२४ अक्टू	पंचक दिनरात। मूल रात ८:३० से रातअंत। रवियोग सू.उ.से दिन १२:५९ तक , पुनः रात्रि ८:३० से रात्रिअंत। स्वाते रवि दिन १२:५९ समये। (C)
१४	र.	१३।४७	दि.११:५७	रेव	३२।२१	रा. ७:२३	हर्ष	२७।२१	सा.५:२३	वणि	१३।४७	दि.११:५७	भद्रा	मीन	३२।२१	रा. ७:२३ तक	२८।१४	६:२६	५:४४	६।०७।२३।२८	६०	प्रवर्ध	२५ अक्टू	शरद पूर्णिमा। पंचक समाप्त रा. ७ :२३ समये। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से रात्रि ७:२३ तक। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ७:२३ से रातअंत। भद्रा दिन (D)
१५	चं.	८।१८	दि.९:४६	अश्वि	२८।१५	सा. ५:४५	वज्र	१९।४५	दि.२:२१	बव	८।१८	दि.९:४६	बाल	मेष	××	दिनरात	२८।११	६:२७	५:४३	६।०८।२३।१७	६०	राक्षस	२६ अक्टू	वाल्मीकि जयंती, सिंगाजी मेला प्रारंभ।प्रतिपदाश्राद्ध। मूल सू.उ.से सायं. ५:४५ तक। (C) बुध वक्री दिन १२:३३ समये

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-०५

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय	
															उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	र.	५।२७।५९।२६	७६९	३।१३।११।४१	३४	६।१८।२८।२	६१	३।२७।०४।३४	१०	६।१३।०३।१४	२०	११।१६।३१।३९	५	१०।०२।५६।४२	६:५६	६:२९
२	चं.	६।१०।४८।३३	७५४	३।१३।४५।१७	३३	६।१९।२९।१२	५९	३।२७।१४।२०	१०	६।१२।४३।४३	२२	११।१६।२७।००	५	१०।०२।५३।३२	७:४८	७:०२
३	मं.	६।२३।२२।३०	७४०	३।१४।१८।४४	३३	६।२०।२७।४५	५६	३।२७।२३।५९	१०	६।१२।२१।५८	२४	११।१६।२२।२३	५	१०।०२।५०।२१	८:४०	७:३७
४	बु.	७।०५।४२।०१	७२७	३।१४।५२।३	३३	६।२१।२३।२५	५३	३।२७।३३।३२	९	६।११।५८।०४	२६	११।१६।१७।४७	५	१०।०२।४७।१०	९:३२	८:१७
५	गु.	७।१७।४९।०३	७१८	३।१५।२५।१३	३३	६।२२।१५।५६	४९	३।२७।४२।५८	९	६।११।३२।०८	२८	११।१६।१३।१३	५	१०।०२।४३।५९	१०:२२	९:००
६	शु.	७।२९।४६।३५	७१२	३।१५।५८।१४	३३	६।२३।५।०	४५	३।२७।५२।१९	९	६।११।०४।१८	३०	११।१६।०८।४०	५	१०।०२।४०।४८	११:१०	९:४७
७	श.	८।११।३८।२६	७११	३।१६।३१।७	३३	६।२३।५०।१६	४१	३।२८।०१।३२	९	६।१०।३४।४१	३१	११।१६।०४।०९	४	१०।०२।३७।३८	११:५५	१०:३७
७	र.	८।२३।२९।०१	७१४	३।१७।३।५०	३३	६।२४।३१।२०	३६	३।२८।१०।३९	९	६।१०।०३।२७	३३	११।१५।५९।४०	४	१०।०२।३४।२७	१२:३६	११:२८
८	चं.	९।०५।२३।०९	७२३	३।१७।३६।२३	३२	६।२५।७।४८	३१	३।२८।१९।३९	९	६।०९।३०।४७	३४	११।१५।५५।१३	४	१०।०२।३१।१६	१:१३	१२:२०
९	मं.	९।१७।२५।५३	७३६	३।१८।८।४८	३२	६।२५।३९।१२	२६	३।२८।२८।३२	९	६।०८।५६।५४	३५	११।१५।५०।४९	४	१०।०२।२८।०५	१:४८	१:१३
१०	बु.	९।२९।४२।१५	७५५	३।१८।४१।३	३२	६।२६।५।२	२०	३।२८।३७।१७	९	६।०८।२१।५९	३६	११।१५।४६।२६	४	१०।०२।२४।५४	२:२२	२:०७
११	गु.	१०।१२।१६।५७	७७७	३।१९।१३।८	३२	६।२६।२४।४६	१३	३।२८।४५।५६	९	६।०७।४६।१६	३६	११।१५।४२।०६	४	१०।०२।२१।४३	२:५५	३:०२
१२	शु.	१०।२५।१३।५३	८०२	३।१९।४५।३	३२	६।२६।३७।५०	६	३।२८।५४।२८	८	६।०७।०९।५९	३७	११।१५।३७।४९	४	१०।०२।१८।३३	३:२९	४:००
१३	श.	११।०८।३५।२६	८२७	३।२०।१६।४८	३२	६।२६।४३।४०	-२	३।२९।०२।५२	८	६।०६।३३।२३	३७	११।१५।३३।३५	४	१०।०२।१५।२२	४:०६	५:०२
१४	र.	११।२२।२१।५८	८४९	३।२०।४८।२३	३१	६।२६।४१।४३	-१०	३।२९।११।०८	८	६।०५।५६।४२	३६	११।१५।२९।२४	४	१०।०२।१२।११	४:४६	६:०८
१५	चं.	०।०६।३१।२६	८६८	३।२१।१९।४७	३१	६।२६।३१।२७	-१९	३।२९।१९।१७	८	६।०५।२०।१३	३६	११।१५।२५।१५	४	१०।०२।०९।००	५:३१	७:१८

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

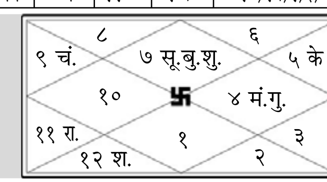
दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
११ अक्टू	४:३६	६:४७	९:०२	११:१८	१:२४	३:११	४:४४	६:१४	७:५४	९:५३	१२:०७	२:२३	७,१०,१२,१,३,
१२ अक्टू	४:३२	६:४३	८:५८	११:१४	१:२०	३:०७	४:४०	६:१०	७:५१	९:४९	१२:०३	२:१९	१०,१२,१,२,३,
१३ अक्टू	४:२८	६:३९	८:५४	११:१०	१:१६	३:०३	४:३६	६:०६	७:४७	९:४५	११:५९	२:१५	१०,१२,१,३,
१४ अक्टू	४:२४	६:३५	८:५०	११:०७	१:१२	२:५९	४:३२	६:०२	७:४३	९:४१	११:५५	२:११	७,१०,१२,१,३,
१५ अक्टू	४:२०	६:३१	८:४६	११:०३	१:०८	२:५५	४:२८	५:५८	७:३९	९:३७	११:५१	२:०८	७,१०,१२,१,३,
१६ अक्टू	४:१६	६:२७	८:४२	१०:५९	१:०४	२:५१	४:२४	५:५४	७:३५	९:३३	११:४७	२:०४	७,१०,१२,१,३,
१७ अक्टू	४:१२	६:२३	८:३८	१०:५५	१:००	२:४७	४:२०	५:५१	७:३१	९:२९	११:४३	१:६०	७,१०,१२,१,३,
१८ अक्टू	४:०८	६:१९	८:३४	१०:५१	१२:५६	२:४३	४:१६	५:४७	७:२७	९:२५	११:३९	१:५६	१०,१२,१,३,
१९ अक्टू	४:०४	६:१५	८:३०	१०:४७	१२:५२	२:३९	४:१२	५:४३	७:२३	९:२१	११:३५	१:५२	१०,१२,१,३,
२० अक्टू	४:००	६:११	८:२६	१०:४३	१२:४८	२:३५	४:०८	५:३९	७:१९	९:१७	११:३१	१:४८	१०,१२,१,३,
२१ अक्टू	३:५६	६:०७	८:२२	१०:३९	१२:४४	२:३१	४:०४	५:३५	७:१५	९:१३	११:२७	१:४४	१०,१२,१,३,
२२ अक्टू	३:५२	६:०३	८:१९	१०:३५	१२:४०	२:२७	४:००	५:३१	७:११	९:१०	११:२३	१:४०	१०,१२,३,
२३ अक्टू	३:४८	५:६०	८:१५	१०:३१	१२:३६	२:२३	३:५६	५:२७	७:०७	९:०६	११:१९	१:३६	१०,१२,३,
२४ अक्टू	३:४४	५:५६	८:११	१०:२७	१२:३३	२:१९	३:५२	५:२३	७:०३	९:०२	११:१५	१:३२	१०,१२,३,
२५ अक्टू	३:४०	५:५२	८:०७	१०:२३	१२:२९	२:१५	३:४८	५:१९	६:५९	८:५८	११:१२	१:२८	१०,१२,१,३,
२६ अक्टू	३:३६	५:४८	८:०३	१०:१९	१२:२५	२:११	३:४४	५:१५	६:५५	८:५४	११:०८	१:२४	१०,१२,१,३,

तिथि १
रविवार
इष्ट ०।०



तुला संक्रान्ति फलम्- आश्विन शुक्ल ७ शनिवासरे रात्रि ८:०२ समये तुलासंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम राक्षसी संज्ञक संक्रांति दुष्ट वर्ग को सुखकारी है। तस्य काले पू.षानक्षत्र नाम घोरा संज्ञक संक्रांति निर्धनवर्ग को सुखद। मुहूर्त्त ३० अनाज मूल्य समता। वणिज करण फल- महिषी वाहनं, ऊँट उपवाहनं, श्याम वस्त्रं, तोमर आयुधं, तीकर पात्रं, दधि भक्षणं, महावर लेपनं, मृग वर्णा, मन्दार पुष्पं, मणि भूषणं, पा श्वेत कंचुकी, प्रगल्भ अवस्था, उपविष्टा स्थिति। अन्नादि में स्थिर भाव सूचक। सरकार को गिराने वाले तत्व सक्रय होंगे। सरसों एवं अन्य तिलहन महँगे होंगे। आश्विनशुक्ल ७ आश्लेषायां भौम अतिवर्षा से फसलों को नुकसान, सर्प भय। आश्विनशुक्ल २ विशाखयां बुध - व्याधिर्भयंचदुर्भिक्षंकिंचित्कुत्रापिजायते।। विशाखा में हो तो सुभिक्ष हो। कहीं व्याधि भय और दुर्भिक्ष भी हो।

तिथि ७
रविवार
इष्ट ०।०



 कार्तिक कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शकः १९४८। रौद्र संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। हेमन्त ऋतुः। श्री सूर्य दक्षिणायन-दक्षिणगोले। अक्टूबर-नवम्बर ईसवी सन् २०२६। अक्टूबर-नवम्बर। वंगला सन् १४३३ । वीर निर्वाण संवत् २५५२।

१४		तिथि		नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे:। शुक्र अस्तपूर्वे: । मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-स्वाते रविः, आश्लेषायां भौमः, विशाखायां वुधः, आश्लेषायां गुरौ, चित्रायां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, धनिष्ठायां राहु, मघायां केतु।
१,२	मं.	१।४४, ५४।२७	प्रा.७:०९,रा ४:१५	भर	२३।१४	दि. ३:४५	सिद्धि	११।२०	दि.१०:५९	कौल	१।४४	प्रा.७:०९	तैति	मेष	३६।५२	रा. ९:१२ तक	२८।०८	६:२७	५:४३	६।०९।२३।०८	६०	मुसल	२७ अक्टू	कार्तिक स्नान प्रारंभ। ० सर्वार्थसिद्धी दिन ३:४५ से रातअंत। व्यतिपात् दि.१०:५९ वजे तक। से रातअंत।
३	बु.	४६।५३	रा.१:१३	कृत्ति	१७।४२	दि. १:३३	व्यति, वरी	२।२४, ५९।५१	प्रा.७:२६, रा.६:२५	वणि	२०।४०	दि.२:४४	भद्रा	वृष	--	दिनरात	२८।०५	६:२८	५:४२	६।१०।२३।०१	६०	सिद्धि	२८ अक्टू	सर्वार्थसिद्धी दिनरात। भद्रा दिन २:४४ से रात्रि १:१३ (स्वर्ग)। व्यतिपात् सू.उ.से प्रा.७:२६ वजे तक। । शुक्र उदय पूर्वे: प्रातः ५:५१ समये
४	गु.	३९।२८	रा.१०:१६	रोहि	१२।३	दि. ११:१८	परि	४४।१६	रा.१२:११	बव	१३।९	दि.११:४४	बाल	वृष	३९।११	रा. १०:१२ तक	२८।०२	६:२८	५:४१	६।११।२२।५६	६०	उत्पात	२९ अक्टू	करवा चौथ व्रत। चंद्रोदय ८:३०, संकष्टी ४ व्रतं।
५	शु.	३२।३१	रा.७:२९	मृग	६।३९	दि. ९:०८	शिव	३५।४२	रा.८:४६	कौल	५।५२	दि.८:५०	तैति	मिथुन	--	दिनरात	२७।५९	६:२९	५:४०	६।१२।२२।५३	६०	मानस	३० अक्टू	
६	श.	२६।१८	सा.५:०१	आर्द्रा, पुन	१:४९।५७:५४	प्रा. ७:१३, रा.५:३९	सिद्ध	२७।४३	सा.५:३५	वणि	२६।१८	सा.५:०१	भद्रा	मिथुन	४३।५२	रा. १२:०३ तक	२७।५६	६:३०	५:४०	६।१३।२२।५२	६०	मुद्‌गर	३१ अक्टू	रवियोग प्रातः ७:१३ से रात्रि ६:०५ तक। भद्रा सायं ५:०१ से रात्रि ३:५२ (स्वर्ग)। गुरु सिंहे दिन १२:४७ समये। मघायां गुरु दिन १२:४७ समये।
७	र.	२०।६०	दि.२:५४	पुष्य	५५।१	रा. ४:३१	साध्य	२०।२९	दि.२:४२	बव	२०।६०	दि.२:५४	बाल	कर्क	xx	दिनरात	२७।५३	६:३०	५:३९	६।१४।२२।५३	६०	श्रीवत्स	०१ नव	कालाष्टमी व्रतं। मूल रात ४:३१ से रातअंत। रविपुष्य योग रात्रि ४:३१ पर्यन्त। रवि पुष्य योग सू उ से रात्रि ४:३१ तक।
८	चं.	१६।४६	दि.१:१३	श्ले	५३।१४	रा. ३:४८	शुभ	१४।५	दि.१२:०९	कौल	१६।४६	दि.१:१३	तैति	कर्क	५३।१४	रा. ३:४८ तक	२७।५०	६:३१	५:३९	६।१५।२२।५५	६०	सौम्य	०२ नव	अहोई अष्टमी। कालाष्टमी। मूल दिनरात। क्रांतिसाम्य सायं ५:५९ से रात्रि १०:१०। क्रांतिसाम्य सायं ५:५९ से रात्रि १०:१०। स्वाते वुधः रात्रि ५:४२ समये।
९	मं.	१३।३८	दि.११:५८	मघा	५२।२८	रा. ३:३०	शुक्ल	८।३४	दि.९:५७	गर	१३।३८	दि.११:५८	वणि	सिंह	xx	दिनरात	२७।४७	६:३१	५:३८	६।१६।२२।६०	६०	कालदंड़	०३ नव	मूल सू.उ.से रात ३:३० तक। भद्रा रात्रि ११:३१ से रात्रिअंत (भूमि)।
१०	बु.	११।३३	दि.११:०९	पू.फा.	५२।४०	रा. ३:३६	ब्रह्म, ऐंद्र	३।५३, ५९।५९	दि.८:०५, रा.६:३२	भद्रा	११।३३	दि.११:०९	बव	सिंह	xx	दिनरात	२७।४४	६:३२	५:३७	६।१७।२३।०६	६०	स्थिर	०४ नव	भद्रा सू.उ.से दिन ११:०९(भूमि)।
११	गु.	१०।२६	दि.१०:४३	उ.फा.	५३।४४	रा. ४:०२	वैधृ	५६।४६	रा.५:१५	बाल	१०।२६	दि.१०:४३	कौल	सिंह	७।५१	दि. ९:४१ तक	२७।४१	६:३२	५:३७	६।१८।२३।१५	६०	मातंग	०५ नव	रमा एकादशी व्रत सर्वे। गोवत्स द्वादशी। वैधृति सू.उ.से रा.५:१५ वजे तक। । कन्यायां शुक्रः रात्रि ८:३४ समये।
१२	शु.	१०।१२	दि.१०:३८	हस्त	५५।३८	रा. ४:४८	विष्कु	५४।१५	रा.४:१५	तैति	१०।१२	दि.१०:३८	गर	कन्या	xx	दिनरात	२७।३८	६:३३	५:३६	६।१९।२३।२५	६०	अमृत	०६ नव	धन त्रयोदशी, यम दीपदान। शुक्रप्रदोष व्रतं। विशाखायां रवि रात्रि ९:०८ समये।
१३	श.	१०।५०	दि.१०:५४	चित्रा	५८।२३	रा. ५:५५	प्रीति	५२।२४	रा.३:३१	वणि	१०।५०	दि.१०:५४	भद्रा	कन्या	२६।५९	सा. ५:२१ तक	२७।३६	६:३४	५:३६	६।२०।२३।३७	६०	काण	०७ नव	नरक चतुर्दशी। मासिक शिवरात्रि व्रतं। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ५:५५ से रातअंत। भद्रा दिन १०:५४ से रात्रि ११:१० (पाताल)।
१४	र.	१२।२४	दि.११:३२	स्वा	६०।०	वृद्धि	आयु	५१।१७	रा.३:०५	शकु	१२।२४	दि.११:३२	चतु	तुला	xx	दिनरात	२७।३३	६:३४	५:३५	६।२१।२३।५१	६०	लुंबक	०८ नव	दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजन।
३०	चं.	१४।५६	दि.१२:३३	स्वा	२।५	प्रा. ७:२५	सौभ	५०।५६	रा.२:५७	नाग	१४।५६	दि.१२:३३	किंस्तु	तुला	५०।३४	रा. २:४८ तक	२७।३०	६:३५	५:३५	६।२२।२४।०६	६०	छत्र	०९ नव	सोमवती अमावस्या। बुध उदय पूर्वे: प्रातः ५:४९ समये।

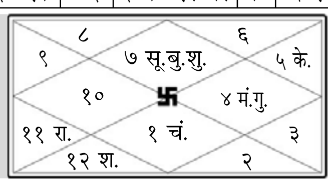
सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-०७

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-वक्री	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१,२	मं.	०।२०।५९।२१	८८०	३।२१।५१।१	३१	६।२६।१२।२५	-२८	३।२१।२७।१९	८	६।०४।४४।०८	३५	११।१५।२१।१०	४	१०।०२।०५।४९	६:२३	७:५०
३	बु.	१।०५।३९।०९	८८४	३।२२।२२।४	३१	६।२५।४४।१७	-३७	३।२१।३५।१२	८	६।०४।०८।४४	३५	११।१५।१७।०८	४	१०।०२।०२।३८	७:२३	९:०४
४	गु.	१।२०।२३।०८	८८०	३।२२।५२।५७	३१	६।२५।६।५४	-४७	३।२१।४२।५७	८	६।०३।३४।१४	३३	११।१५।१३।१०	४	१०।०१।५९।२८	८:३०	१०:१७
५	शु.	२।०५।०३।३६	८७०	३।२३।२३।३८	३०	६।२४।२०।२३	-५५	३।२१।५०।३५	७	६।०३।००।५१	३२	११।१५।०९।१५	४	१०।०१।५६।१७	९:४२	११:२५
६	श.	२।१९।३४।०३	८५६	३।२३।५४।७	३०	६।२३।२५।१०	-६३	३।२१।५८।०४	७	६।०२।२८।४८	३१	११।१५।०५।२४	४	१०।०१।५३।०६	१०:५४	१२:२५
७	र.	३।०३।५०।०३	८४०	३।२४।२४।२५	३०	६।२२।२२।३	-७०	४।००।०५।२५	७	६।०१।५८।१६	२९	११।१५।०१।३७	४	१०।०१।४९।५५	१२:०३	१:१७
८	चं.	३।१७।४९।३८	८२३	३।२४।५४।३२	३०	६।२१।१२।१६	-७५	४।००।१२।३८	७	६।०१।२९।२७	२७	११।१४।५७।५४	४	१०।०१।४६।४४	१:०७	२:०१
९	मं.	४।०१।३२।५७	८०९	३।२५।२४।२६	३०	६।१९।५७।२९	-७८	४।००।१९।४२	७	६।०१।०२।३०	२५	११।१४।५४।१५	४	१०।०१।४३।३३	२:०६	२:३८
१०	बु.	४।१५।०१।३२	७९६	३।२५।५४।१	२९	६।१८।३९।४४	-७८	४।००।२६।३८	७	६।००।३७।३३	२३	११।१४।५०।४०	४	१०।०१।४०।२३	३:०२	३:१२
११	गु.	४।२८।१७।२१	७८५	३।२६।२३।३८	२९	६।१७।२१।२०	-७७	४।००।३३।२५	७	६।००।१४।४४	२१	११।१४।४७।१०	३	१०।०१।३७।१२	३:५५	३:४४
१२	शु.	५।११।२२।०१	७७४	३।२६।५२।५६	२९	६।१६।४।४७	-७२	४।००।४०।०३	६	५।२९।५४।०९	१८	११।१४।४३।४४	३	१०।०१।३४।०१	४:४६	४:१४
१३	श.	५।२४।१६।२५	७६४	३।२७।२१।६०	२९	६।१४।५२।३२	-६६	४।००।४६।३२	६	५।२९।३५।५२	१६	११।१४।४०।२२	३	१०।०१।३०।५०	५:३८	४:४६
१४	र.	६।०७।००।३७	७५४	३।२७।५०।५१	२९	६।१३।४६।५३	-५७	४।००।५२।५२	६	५।२९।१९।५८	१३	११।१४।३७।०६	३	१०।०१।२७।३९	६:३०	५:२०
३०	चं.	६।१९।३४।१२	७४३	३।२८।१९।२९	२८	६।१२।४९।४४	-४७	४।००।५९।०३	६	५।२९।०६।३०	११	११।१४।३३।५४	३	१०।०१।२४।२८	xx	५:५८

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

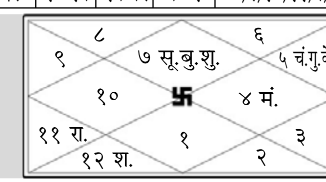
दिनांक	प्रातः पूर्व तुलायां	प्रातः वृश्चिके	दिन धनुषे	दिन मकरे	दिन कुंभे	दिन मीने	सायं मेषे	रात्रि वृषे	रात्रि मिथुने	रात्रि कर्के	रात्रि सिंहे	रात्रि कन्यायां	शुभ बली लग्नें इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२७ अक्टू	५:४४	७:५९	१०:१५	१२:२१	२:०७	३:४०	५:११	६:५१	८:५०	११:०४	१:२०	३:३३	१०,१२,३,
२८ अक्टू	५:४०	७:५५	१०:११	१२:१७	२:०३	३:३६	५:०७	६:४७	८:४६	१०:६०	१:१६	३:२९	१०,१२,३,
२९ अक्टू	५:३६	७:५१	१०:०७	१२:१३	१:६०	३:३३	५:०३	६:४४	८:४२	१०:५६	१:१२	३:२५	१०,१२,१,३,
३० अक्टू	५:३२	७:४७	१०:०३	१२:०९	१:५६	३:२९	४:५९	६:४०	८:३८	१०:५२	१:०८	३:२१	१०,१२,१,३,
३१ अक्टू	५:२८	७:४३	९:५९	१२:०५	१:५२	३:२५	४:५५	६:३६	८:३४	१०:४८	१:०४	३:१७	१०,११,३,
०१ नव	५:२४	७:३९	९:५६	१२:०१	१:४८	३:२१	४:५१	६:३२	८:३०	१०:४४	१:००	३:१३	१०,११,२,
०२ नव	५:२०	७:३५	९:५२	११:५७	१:४४	३:१७	४:४७	६:२८	८:२६	१०:४०	१२:५७	३:०९	८,११,२,
०३ नव	५:१६	७:३१	९:४८	११:५३	१:४०	३:१३	४:४३	६:२४	८:२२	१०:३६	१२:५३	३:०५	८,११,३,
०४ नव	५:१२	७:२७	९:४४	११:४९	१:३६	३:०९	४:४०	६:२०	८:१८	१०:३२	१२:४९	३:०१	८,११,१,३,
०५ नव	५:०८	७:२३	९:४०	११:४५	१:३२	३:०५	४:३६	६:१६	८:१४	१०:२८	१२:४५	२:५७	८,११,१,
०६ नव	५:०४	७:१९	९:३६	११:४१	१:२८	३:०१	४:३२	६:१२	८:१०	१०:२४	१२:४१	२:५३	८,९,१,
०७ नव	५:००	७:१५	९:३२	११:३७	१:२४	२:५७	४:२८	६:०८	८:०६	१०:२०	१२:३७	२:४९	९,१०,१,२,
०८ नव	४:५६	७:१२	९:२८	११:३३	१:२०	२:५३	४:२४	६:०४	८:०२	१०:१६	१२:३३	२:४५	९,१०,१,२,
०९ नव	४:५२	७:०८	९:२४	११:२९	१:१६	२:४९	४:२०	६:००	७:५९	१०:१२	१२:२९	२:४१	८,९,१०,११,२,

तिथि १,२
मंगलवार
इष्ट ०।०



कार्तिककृष्ण ८ स्वाते बुध - स्वातौबुधेमंदवृष्टिशाखायांसुभिक्षता। स्वाती में बुध हो तो मन्द वर्षा हो

तिथि ९
मंगलवार
इष्ट ०।०



१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वेः। शुक्र उदयपूर्वेः / मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-विशाखायां रविः, आश्लेषायां भौमः, स्वाते वुधः, मघायां गुरौ, चित्रायां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, धनिष्ठायां राहु, मघायां केतु।
१	मं.	१८।३३	दि.२:००	विशा	६।४९	दि. ९:१९	शोभ	५१।२५	रा.३:०९	बव	१८।३३	दि.२:००	बाल	वृश्चिक	--	दिनरात	२७।२७	६:३५	५:३४	६।२३।२४।२४	६०	श्रीवत्स	१० नव	गोवर्धन पूजा, अन्नकूट। (B) व्यतिपात् रा.२:२९ वजे तक। से रातअंत।
२	बु.	२३।१३	दि.३:५३	अनु	१२।३५	दि. ११:३८	अति	५२।४०	रा.३:४०	कौल	२३।१३	दि.३:५३	तैति	वृश्चिक	--	दिनरात	२७।२५	६:३६	५:३४	६।२४।२४।४३	६०	सौम्य	११ नव	यम द्वितीया,भाई दोज। चित्रगुप्त पूजन। मूल दिन ११:३८ से रातअंत। अमृतसिद्धि दिन ११:३८ पर्यन्त।
३	गु.	२८।५२	सा.६:०९	ज्ये	१९।१६	दि. २:१९	सुक	५४।३४	रा.४:२६	गर	२८।५२	सा.६:०९	वणि	वृश्चिक	१९।१६	दि. २:१९ तक	२७।२२	६:३७	५:३४	६।२५।२५।०४	६०	कालदंड़	१२ नव	मूल दिनरात। रवियोग दिन २:१९ से रात्रिअंत। मघायां सिंहे च भौमः रात्रि ८:२९। शुक्र मार्गी२९:३९
४	शु.	३५।१३	रा.८:४३	मूल	२६।४१	सा. ५:१८	धृति	५६।५५	रा.५:२३	वणि	१।५५	प्रा.७:२३	भद्रा	धनु	--	दिनरात	२७।२०	६:३७	५:३३	६।२६।२५।२६	६०	स्थिर	१३ नव	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। नागव्रत। मूल सू.उ.से सायं. ५:१८ तक। रवियोग सू.उ.से सायं ५:१८ तक । भद्रा प्रातः ७:२३ से रात्रि ८:४३ (पाताल)।
५	श.	४१।५५	रा.११:२४	पू.षा	३४।२७	रा. ८:२५	शूल	५९।२४	रा.६:२४	बव	८।३३	दि.१०:०३	बाल	धनु	५१।२४	रा. ३:१२ तक	२७।१७	६:३८	५:३३	६।२७।२५।५०	६०	मातंग	१४ नव	जयापंचमी, पांडवपंचमी। रवियोग रात्रि ८:२५ से रात्रिअंत। बुध मार्गी प्रातः -५:४३ समये1 (A) समये। पुण्यकाल आज।
६	र.	४८।२५	रा.२:०१	उ.षा	४२।५	रा. ११:२९	गंड़	६०	वृद्धि	कौल	१५।१३	दि.१२:४४	तैति	मकर	××	दिनरात	२७।१५	६:३९	५:३२	६।२८।२६।१६	६०	अमृत	१५ नव	सूर्य षष्ठी। रवियोग सू.उ.से रात्रि ११:२९ तक। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ११:२९ पर्यन्त। क्रांतिसाम्य रात्रि १:३८ से रात्रि ६:१३। क्रांतिसाम्य रात्रि १:३८ से रात्रि ६:१३।
७	चं.	५४।१०	रा.४:१९	श्रव	४९।३	रा. २:१६	गंड़	१।३७	प्रा.७:१८	गर	२१।२२	दि.३:१२	वणि	मकर	××	दिनरात	२७।१२	६:३९	५:३२	६।२९।२६।४४	६०	सिद्धि	१६ नव	शाक सप्तमी, पूषा सप्तमी, कल्पादि तिथि। सर्वार्थसिद्धी रात्रि २:१६ पर्यन्त। भद्रा रात्रि ४:१९ से रात्रिअंत (पाताल)। वृश्चिके रवि रात्रि ७:५१ (A)
८	मं.	५८।३३	रा.६:०५	धनि	५४।४५	रा. ४:३४	बृद्धि	३।८	प्रा.७:५५	भद्रा	२६।२५	सा.५:१४	बव	मकर	२२।००	दि. ३:२८ तक	२७।१०	६:४०	५:३२	७।००।२७।१३	६१	उत्पात	१७ नव	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। गोप अष्टमी। पंचक प्रारंभ दि. ३:२८ तक समये। रवियोग रात्रि ४:३४ से रात्रिअंत। भद्रा सू.उ.से सायं ५:१४ (पाताल] १५:२८ से भूमि)
९	बु.	६०।००	वृद्धि	शत	५८।४४	रा. ६:१०	ध्रुव	३।३४	दि.८:०६	बाल	२८।४५	सा.६:३७	कौल	कुंभ	××	दिनरात	२७।०७	६:४१	५:३२	७।०१।२७।४४	६१	मानस	१८ नव	पंचक दिनरात। रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत, पुनः रात्रि २७:११ से रात्रिअंत। (C) वजे तक। । तुलायां शुक्रः सायं ६:१२ समये।
९	गु.	१।०३	प्रा.७:०६	पू.भा	६०।०	वृद्धि	व्या, हर्ष	२।३४, ५९।५९	प्रा.७:४३, रा.६:४१	कौल	१।३	प्रा.७:०६	तैति	कुंभ	४५।११	रा. १२:४६ तक	२७।०५	६:४१	५:३१	७।०२।२८।१६	६१	मुद्गर	१९ नव	आंवला (अक्षय) नवमी। युगादितिथि। पंचक दिनरात। रवियोग सू.उ.से रात्रि ३:११ तक, पुनः रात्रि ३:११ से रात्रिअंत। अनुराधायां रवि रात्रि ३:११ समये।
१०,११	शु.	१।२४, ५९।३५	प्रा.७:१५,रा६:३२	पू.भा	०।३८	प्रा. ६:५७	वज्र	५५।३२	रा.४:५५	गर	१।२४	प्रा.७:१५	वणि	मीन	××	दिनरात	२७।०३	६:४२	५:३१	७।०३।२८।५०	६१	ध्वांक्ष	२० नव	आशा दशमी। मन्वादि तिथि। तुलसी विवाह। श्री कालीदास ज.। पंचक दिनरात। रवियोग सू.उ.से रात्रि ६:०१ तक। भद्रा सायं ६:५३ से रात्रि ६:३१ (भूमि)
१२	श.	५५।३३	रा.४:५६	उ.भा, रेव	०:२२।५८:२	प्रा. ६:५१, रा.५:५६	सिद्धि	४९।२६	रा.२:२९	बव	२७।३४	सा.५:४४	बाल	मीन	५८।०२	रा. ५:५६ तक	२७।०१	६:४३	५:३१	७।०४।२९।२५	६१	धूम्र	२१ नव	देवप्रवोधिनी एकादशी व्रत सर्वे। मन्वादि तिथि। पंचक समाप्त प्रा. ६:५१ समये। मूल प्रातः ६:५१ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से प्रातः ६:५१ तक (B)
१३	र.	४९।४५	रा.२:३७	अश्वि	५३।५५	रा. ४:१७	व्यति	४१।५३	रा.११:२९	कौल	२२।४४	दि.३:४९	तैति	मेष	××	दिनरात	२६।५९	६:४३	५:३१	७।०५।३०।०२	६१	आनंद	२२ नव	रविप्रदोष व्रतं। मूल सू.उ.से रात ४:१७ तक। रवियोग रात्रि ४:१७ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ४:१७ पर्यन्त। व्यतिपात् सू.उ.से रा.११:२९ (C)
१४	चं.	४२।३२	रा.११:४५	भर	४८।२४	रा. २:०५	वरी	३३।१०	रा.७:६०	गर	१६।१७	दि.१:१५	वणि	मेष	××	दिनरात	२६।५६	६:४४	५:३१	७।०६।३०।४१	६१	चर	२३ नव	वैकुण्ठ चतुर्दशी। पाषाण चतुर्दशी। जैन चतुर्मास समाप्त। ब्रह्मकूर्च। रवियोग सू.उ.से रात्रि २:०५ तक । भद्रा रात्रि ११:४५ से रात्रिअंत (स्वर्ग)।
१५	मं.	३४।२१	रा.८:२९	कृत्ति	४१।५६	रा. ११:३१	परि	२३।३६	दि.४:११	भद्रा	८।३६	दि.१०:११	बव	मेष	१।५६	प्रा. ७:३१ तक	२६।५४	६:४५	५:३०	७।०७।३१।२०	६१	गद	२४ नव	पूर्णिमा। गुरुनानक जयंती। मन्वादि तिथि। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ११:३१ पर्यन्त। भद्रा सू.उ.से दिन १०:११(स्वर्ग)।

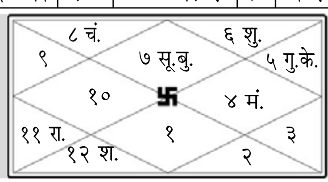
सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-०९

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय	
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	उदय दिन	अस्त रात
१	मं.	७।०१।५६।५१	७३२	३।२८।४७।५३	२८	६।१२।२।३८	-३६	४।०१।०५।०५	६	५।२८।५५।२९	९	११।१४।३०।४६	३	१०।०१।२१।१७	७:२४	६:१४
२	बु.	७।१४।०८।४०	७२२	३।२९।१६।३	२८	६।११।२६।३४	-२४	४।०१।१०।५७	६	५।२८।४६।५६	६	११।१४।२७।४४	३	१०।०१।१८।०६	८:१६	६:५६
३	गु.	७।२६।१०।३९	७१४	३।२९।४३।६०	२८	६।११।२।७	-१३	४।०१।१६।४०	६	५।२८।४०।५३	४	११।१४।२४।४७	३	१०।०१।१४।५६	९:०५	७:४२
४	शु.	८।०८।०४।४१	७०९	४।०।११।४१	२७	६।१०।४९।२२	-१	४।०१।२२।१३	५	५।२८।३७।१८	१	११।१४।२१।५५	३	१०।०१।११।४५	९:५१	८:३१
५	श.	८।१९।५३।४१	७०८	४।०।३९।८	२७	६।१०।४८।५	१०	४।०१।२७।३७	५	५।२८।३६।१०	१	११।१४।१९।०८	३	१०।०१।०८।३४	१०:३३	९:२२
६	र.	९।०१।४१।२३	७११	४।१।६।२०	२७	६।१०।५७।४५	२०	४।०१।३२।५०	५	५।२८।३७।२८	४	११।१४।१६।२७	३	१०।०१।०५।२३	११:१२	१०:१३
७	चं.	९।१३।३२।१४	७१९	४।१।३३।१७	२७	६।११।१७।३९	२९	४।०१।३७।५४	५	५।२८।४१।१०	६	११।१४।१३।५१	३	१०।०१।०२।१२	११:४७	११:०५
८	मं.	९।२५।३१।११	७३३	४।१।५९।५८	२६	६।११।४६।५७	३८	४।०१।४२।४८	५	५।२८।४७।१३	८	११।१४।११।२१	२	१०।००।५९।०१	१२:२१	११:५७
९	बु.	१०।०७।४४।०३	७५२	४।२।२६।२३	२६	६।१२।२४।४५	४५	४।०१।४७।३२	५	५।२८।५५।३३	११	११।१४।०८।५६	२	१०।००।५५।५०	१२:५३	१२:५०
९	गु.	१०।२०।१५।५१	७७६	४।२।५२।३२	२६	६।१३।१०।१०	५२	४।०१।५२।०६	४	५।२९।०६।०९	१३	११।१४।०६।३७	२	१०।००।५२।३९	१:२६	१:४६
१०,११	शु.	११।०३।११।३५	८०३	४।३।१८।२४	२६	६।१४।२।२०	५८	४।०१।५६।२९	४	५।२९।१८।५७	१५	११।१४।०४।२३	२	१०।००।४९।२८	२:००	२:४४
१२	श.	११।१६।३४।५१	८३२	४।३।४३।६०	२५	६।१५।०।२४	६३	४।०२।००।४२	४	५।२९।३३।५३	१७	११।१४।०२।१६	२	१०।००।४६।१८	२:३८	३:४७
१३	र.	०।००।२७।११	८६०	४।४।९।१८	२५	६।१६।३।३८	६८	४।०२।०४।४५	४	५।२९।५०।५४	१९	११।१४।००।१४	२	१०।००।४३।०७	३:२०	४:५४
१४	चं.	०।१४।४७।१९	८८४	४।४।३४।१८	२५	६।१७।११।२१	७२	४।०२।०८।३७	४	६।००।०९।५५	२१	११।१३।५८।१८	२	१०।००।३९।५६	४:०९	६:०७
१५	मं.	०।२९।३०।५६	९००	४।४।५९।१	२४	६।१८।२२।५४	७५	४।०२।१२।१८	४	६।००।३०।५४	२३	११।१३।५६।२८	२	१०।००।३६।४५	५:०५	७:२२

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

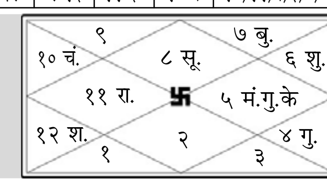
दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
१० नव	४:४९	७:०४	९:२०	११:२६	१:१२	२:४५	४:१६	५:५६	७:५५	१०:०८	१२:२५	२:३७	९,
११ नव	४:४५	६:६०	९:१६	११:२२	१:०८	२:४१	४:१२	५:५२	७:५१	१०:०४	१२:२१	२:३३	९,
१२ नव	४:४१	६:५६	९:१२	११:१८	१:०४	२:३७	४:०८	५:४८	७:४७	१०:०१	१२:१७	२:२९	९,११,३,४,
१३ नव	४:३७	६:५२	९:०८	११:१४	१:००	२:३३	४:०४	५:४४	७:४३	९:५७	१२:१३	२:२५	९,११,३,४,
१४ नव	४:३३	६:४८	९:०४	११:१०	१२:५६	२:२९	४:००	५:४०	७:३९	९:५३	१२:०९	२:२२	८,९,१०,१,३,४,
१५ नव	४:२९	६:४४	९:००	११:०६	१२:५२	२:२५	३:५६	५:३६	७:३५	९:४९	१२:०५	२:१८	८,९,१०,१,४,
१६ नव	४:२५	६:४०	८:५६	११:०२	१२:४९	२:२२	३:५२	५:३३	७:३१	९:४५	१२:०१	२:१४	९,१,३,४,६,
१७ नव	४:२१	६:३६	८:५२	१०:५८	१२:४५	२:१८	३:४८	५:२९	७:२७	९:४१	११:५७	२:१०	९,१०,११,१,२,३,४,६,७,
१८ नव	४:१७	६:३२	८:४८	१०:५४	१२:४१	२:१४	३:४४	५:२५	७:२३	९:३७	११:५३	२:०६	९,१०,११,१,२,३,४,६,७
१९ नव	४:१३	६:२८	८:४५	१०:५०	१२:३७	२:१०	३:४०	५:२१	७:१९	९:३३	११:५०	२:०२	९,१०,११,२,३,४,६,७,
२० नव	४:०९	६:२४	८:४१	१०:४६	१२:३३	२:०६	३:३६	५:१७	७:१५	९:२९	११:४६	१:५८	९,१०,११,२,३,४,६,७,
२१ नव	४:०५	६:२०	८:३७	१०:४२	१२:२९	२:०२	३:३२	५:१३	७:११	९:२५	११:४२	१:५४	९,१०,११,१,३,४,६,७
२२ नव	४:०१	६:१६	८:३३	१०:३८	१२:२५	१:५८	३:२९	५:०९	७:०७	९:२१	११:३८	१:५०	९,१०,११,१,३,४,६,७,
२३ नव	३:५७	६:१२	८:२९	१०:३४	१२:२१	१:५४	३:२५	५:०५	७:०३	९:१७	११:३४	१:४६	१०,११,२,३,४,७,
२४ नव	३:५३	६:०८	८:२५	१०:३०	१२:१७	१:५०	३:२१	५:०१	६:५९	९:१३	११:३०	१:४२	१०,११,२,३,४,७,

तिथि १
मंगलवार
इष्ट ०।०



वृश्चिक संक्रान्ति फलम्- कार्तिक शुक्ल ७ सोमवासरे रात्रि ७:५१ समये वृश्चिकसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम ध्वांक्षी संज्ञक संक्रांति व्यापारीवर्ग एवं उद्योगपतियों को शुभकारी है। तस्य काले श्रवनक्षत्र नाम महोदरी संज्ञक संक्रांति चोर, तस्करो एवं जमाखोरों का सुखद। मुहूर्त्त ३० अनाज मूल्य समता। वणिज करण फल- महिषी वाहनं, ऊँट उपवाहनं, श्याम वस्त्रं, तोमर आयुधं, तीकर पात्रं, दधि भक्षणं, महावर लेपनं, मृग वर्णा, मन्दार पुष्पं, मणि भूषणं, पा श्वेत कंचुकी, प्रगल्भ अवस्था, उपविष्टा स्थिति। अन्नादि में स्थिर भाव सूचक। ० कार्तिकशुक्ल ३ मघायां भौम तिल मूंग नष्ट। मार्गशीर्षकृष्ण १ विशाखयां बुध - व्याधिर्भयंचदुर्भिक्षंकिंचित्कुत्रापिजायते।। विशाखा में हो तो सुभिक्ष हो। कहीं व्याधि भय और दुर्भिक्ष भी हो।।

तिथि ८
मंगलवार
इष्ट ०।०



 मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शक: १९४८। रौद्र संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। हेमन्त ऋतु:। श्री सूर्य दक्षिणायन-दक्षिणगोले। नवम्बर-दिसम्बर ईसवी सन् २०२६। नवम्बर-दिसम्बर। वंगला सन् १४३३ । वीर निर्वाण संवत् २५५३।

१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य						आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे:। शुक्र उदयपूर्वे: मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-अनुराधायां रवि:, मघायां भौम:, स्वाते वुध:, मघायां गुरौ, चित्रायां शुक्र:, उत्तरभाद्रपदे शनि:, धनिष्ठायां राहु, मघायां केतु।
१	बु.	२५।३६	दि.४:६०	रोहि	३५।०	रा. ८:४५	शिव	१३।२८	दि.१२:०८	बाल	०।५	प्रा.६:४७	कौल	वृष	--	दिनरात	२६।५२	६:४५	५:३०	७।०८।३२।०१	६१	शुभ	२५ नव	धन्य व्रतारंभ। सर्वार्थसिद्धी दिनरात। विशाखायां वुध: दिन १:३७ समये।
२	गु.	१६।४२	दि.१:२७	मृग	२८।०	सा. ५:५८	सिद्ध, साध्य	३।४, ५१।५०	प्रा.७:६०, रा.६:४२	गर	१६।४२	दि.१:२७	वणि	वृष	१।२८	प्रा. ७:२१ तक	२६।५१	६:४६	५:३०	७।०९।३२।४४	६१	मृत्यु	२६ नव	भद्रा रात्रि ११:४१ से रात्रिअंत (स्वर्ग)।
३,४	शु.	८।०२, ५१।५८	दि.९:५९,रा ६:४७	आर्द्रा	२१।२२	दि. ३:१९	शुभ	४३।५	रा.१२:००	भद्रा	८।२	दि.९:५९	बव	मिथुन	--	दिनरात	२६।४९	६:४७	५:३०	७।१०।३३।२८	६१	पद्म	२७ नव	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। ० सर्वार्थसिद्धी दिन ३:१९ से रातअंत। क्रांतिसाम्य रात्रि ५:२० से रातअंत। भद्रा सू.उ.से दिन ९:५९(स्वर्ग)। (A)
५	श.	५३।०६	रा.४:०२	पुन	१५।२८	दि. १२:५१	शुक्ल	३४।६	रा.८:२६	कौल	२६।३२	सा.५:२४	तैति	मिथुन	१।४४	प्रा. ७:२९ तक	२६।४७	६:४७	५:३०	७।११।३४।१३	६१	छत्र	२८ नव	क्रांतिसाम्य प्रातः ५:२० से दिन ९:२४। शनि पुष्य योग दिन १२:५१ से रातअंत। क्रांतिसाम्य प्रातः ५:२० से दिन ९:२४।
६	र.	४७।३४	रा.१:५०	पुष्य	१०।४१	दि. ११:०४	ब्रह्म	२६।६	सा.५:१४	गर	२०।१४	दि.२:५४	वणि	कर्क	××	दिनरात	२६।४५	६:४८	५:३०	७।१२।३४।६०	६१	श्रीवत्स	२९ नव	मूल दिन ११:०४ से रातअंत। रवियोग दिन ११:०४ से रात्रिअंत। रविपुष्य योग दिन ११:०४ पर्यन्त। रवि पुष्य योग सू उ से दिन ११:०४ तक। (B)
७	चं.	४३।३३	रा.१२:१४	श्ले	७।१७	दि. ९:४४	ऐंद्र	१९।१४	दि.२:३०	भद्रा	१५।२२	दि.१२:५७	बव	कर्क	७।१७	दि. ९:४४ तक	२६।४३	६:४९	५:३०	७।१३।३५।४८	६१	सौम्य	३० नव	मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से दिन ९:४४ तक । भद्रा सू.उ.से दिन १२:५७(भूमि)। वैधृति दि.२:३० वजे तक। से रातअंत।
८	मं.	४१।०६	रा.११:१६	मघा	५।२७	दि. ९:००	वैधृ	१३।३७	दि.१२:१६	बाल	१२।४	दि.११:३९	कौल	सिंह	××	दिनरात	२६।४२	६:४९	५:३०	७।१४।३६।३७	६१	कालदंड़	०१ दिस	काल भैरव अष्टमी। मूल सू.उ.से दिन ९:०० तक। वैधृति सू.उ.से दि.१२:१६ वजे तक। (A) क्रांतिसाम्य रात्रि ५:२० से रातअंत।
९	बु.	४०।१२	रा.१०:५५	पू.फा.	५।१२	दि. ८:५५	विष्कु	९।१६	दि.१०:३२	तैति	१०।२३	दि.१०:५९	गर	सिंह	२०।२८	दि. ३:०१ तक	२६।४०	६:५०	५:३०	७।१५।३७।२७	६१	स्थिर	०२ दिस	वृश्चिके बुध: सायं ५:२४ समये। (B) भद्रा रात्रि १:५० से रात्रिअंत (भूमि)।
१०	गु.	४०।४२	रा.११:०७	उ.फा.	६।२६	दि. ९:२५	प्रीति	६।५	दि.९:१७	वणि	१०।१३	दि.१०:५६	भद्रा	कन्या	××	दिनरात	२६।३९	६:५१	५:३०	७।१६।३८।१८	६१	मातंग	०३ दिस	भद्रा दिन १०:५६ से रात्रि ११:०७ (पाताल)। ज्येष्ठायां रवि प्रातः ७:३१ समये।
११	शु.	४२।२५	रा.११:४९	हस्त	८।५६	दि. १०:२६	आयु	३।५६	दि.८:२६	बव	११।२३	दि.११:२४	बाल	कन्या	४०।३९	रा. ११:०७ तक	२६।३७	६:५१	५:३०	७।१७।३९।११	६१	अमृत	०४ दिस	उत्पन्ना एकादशी व्रत सर्वे। अनुराधायां वुध: रात्रि ११:१४ समये।
१२	श.	४५।११	रा.१२:५६	चित्रा	१२।३३	दि. ११:५३	सौभ	२।४०	प्रा.७:५६	कौल	१३।४०	दि.१२:२०	तैति	तुला	××	दिनरात	२६।३६	६:५२	५:३०	७।१८।४०।०४	६१	काण	०५ दिस	द्विपुष्कर योग सूर्योदय से दिन ११:५३ तक। सर्वार्थसिद्धी दिन ११:५३ से रातअंत। स्वाते शुक्र: रात्रि ११:१८ समये। मकरे राहु २०:०३ समये। (C)
१३	र.	४८।५१	रा.२:२५	स्वा	१७।४	दि. १:४२	शोभ	२।१०	प्रा.७:४५	गर	१६।५५	दि.१:३९	वणि	तुला	××	दिनरात	२६।३५	६:५३	५:३१	७।१९।४०।५९	६१	लुंबक	०६ दिस	रविप्रदोष व्रतं। भद्रा रात्रि २:२५ से रात्रिअंत (पाताल)। (C) कर्के आश्लेषायां च राहू २०:०३ समये।
१४	चं.	५३।२०	रा.४:१३	विशा	२२।२४	दि. ३:५१	अति	२।१९	प्रा.७:४९	भद्रा	२१।१	दि.३:१८	शकु	तुला	५।५७	दि. ९:१६ तक	२६।३४	६:५३	५:३१	७।२०।४१।५५	६१	मित्र	०७ दिस	मासिक शिवरात्रि व्रतं। सर्वार्थसिद्धी दिन ३:५१ से रातअंत। भद्रा सू.उ.से दिन ३:१८(पाताल]९:१६ से स्वर्ग)।
३०	मं.	५८।३५	रा.६:२०	अनु	२८।२९	सा. ६:१७	सुक	३।४	दि.८:०७	चतु	२५।५५	सा.५:१६	नाग	वृश्चिक	××	दिनरात	२६।३३	६:५४	५:३१	७।२१।४२।५१	६१	वज्र	०८ दिस	अमावस्या। द्वापर युगादि तिथि। मूल सायं. ६:१७ से रातअंत।

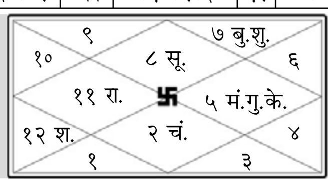
सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-११

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	बु.	१।१४।३०।५२	९०७	४।५।२३।२५	२४	६।१९।३७।४६	७८	४।०२।१५।४९	३	६।००।५३।४५	२५	११।१३।५४।४४	२	१०।००।३३।३४	६:१०	७:५४
२	गु.	१।२९।३७।५४	९०४	४।५।४७।३०	२४	६।२०।५५।२७	८०	४।०२।१९।०८	३	६।०१।१८।२७	२६	११।१३।५३।०७	२	१०।००।३०।२३	७:२१	९:०६
३,४	शु.	२।१४।४२।११	८९२	४।६।११।१६	२३	६।२२।१५।३३	८२	४।०२।२२।१७	३	६।०१।४४।५४	२८	११।१३।५१।३५	१	१०।००।२७।१२	८:३६	१०:१२
५	श.	२।२९।३४।३९	८७४	४।६।३४।४३	२३	६।२३।३७।४१	८४	४।०२।२५।१५	३	६।०२।१३।०३	३०	११।१३।५०।१०	१	१०।००।२४।०१	९:४८	११:०९
६	र.	३।१४।०८।२५	८५१	४।६।५७।४९	२३	६।२५।१।३३	८५	४।०२।२८।०२	३	६।०२।४२।५१	३१	११।१३।४८।५०	१	१०।००।२०।५०	१०:५६	११:५६
७	चं.	३।२८।१९।३०	८२७	४।७।२०।३६	२२	६।२६।२६।५३	८७	४।०२।३०।३७	२	६।०३।१४।१३	३३	११।१३।४७।३८	१	१०।००।१७।३९	११:५९	१२:३६
८	मं.	४।१२।०६।५२	८०५	४।७।४३।१	२२	६।२७।५३।२७	८८	४।०२।३३।०२	२	६।०३।४७।०७	३४	११।१३।४६।३१	१	१०।००।१४।२९	१२:५६	१:१२
९	बु.	४।२५।३१।५६	७८६	४।८।५।५	२२	६।२९।२१।३	८८	४।०२।३५।१५	२	६।०४।२१।२९	३६	११।१३।४५।३१	१	१०।००।११।१८	१:५०	१:४४
१०	गु.	५।०८।३७।३४	७७०	४।८।२६।४७	२१	७।०।४९।३१	८९	४।०२।३७।१७	२	६।०४।५७।१५	३७	११।१३।४४।३७	१	१०।००।०८।०७	२:४१	२:१४
११	शु.	५।२१।२७।१३	७५७	४।८।४८।८	२१	७।२।१८।४३	९०	४।०२।३९।०७	२	६।०५।३४।२३	३८	११।१३।४३।५०	१	१०।००।०४।५६	३:३२	२:४५
१२	श.	६।०४।०३।५९	७४६	४।९।९।५	२१	७।३।४८।३२	९०	४।०२।४०।४६	१	६।०६।१२।५०	४०	११।१३।४३।०९	१	१०।००।०१।४५	४:२३	३:१९
१३	र.	६।१६।३०।१६	७३७	४।९।२९।४०	२०	७।५।१८।५२	९१	४।०२।४२।१३	१	६।०६।५२।३१	४१	११।१३।४२।३४	०	९।२९।५८।३४	५:१५	३:५४
१४	चं.	६।२८।४७।४०	७२९	४।९।४९।५०	२०	७।६।४९।३८	९१	४।०२।४३।२९	१	६।०७।३३।२५	४२	११।१३।४२।०७	०	९।२९।५५।२३	६:०७	४:३४
३०	मं.	७।१०।५७।०९	७२२	४।१०।९।३७	१९	७।८।२०।४५	९१	४।०२।४४।३३	१	६।०८।१५।२९	४३	११।१३।४१।४५	०	९।२९।५२।१२	××	५:१९

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

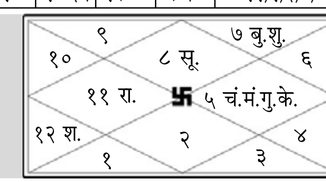
दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२५ नव	६:०४	८:२१	१०:२६	१२:१३	१:४६	३:१७	४:५७	६:५५	९:०९	११:२६	१:३८	३:४९	१०,११,१,३,४,७,
२६ नव	६:०१	८:१७	१०:२२	१२:०९	१:४२	३:१३	४:५३	६:५१	९:०५	११:२२	१:३४	३:४५	१०,११,१,३,४,७,
२७ नव	५:५७	८:१३	१०:१८	१२:०५	१:३८	३:०९	४:४९	६:४८	९:०१	११:१८	१:३०	३:४१	१०,११,२,३,४,७,
२८ नव	५:५३	८:०९	१०:१५	१२:०१	१:३४	३:०५	४:४५	६:४४	८:५७	११:१४	१:२६	३:३८	१०,११,२,३,४,७,
२९ नव	५:४९	८:०५	१०:११	११:५७	१:३०	३:०१	४:४१	६:४०	८:५३	११:१०	१:२२	३:३४	१०,११,३,४,७,
३० नव	५:४५	८:०१	१०:०७	११:५३	१:२६	२:५७	४:३७	६:३६	८:५०	११:०६	१:१८	३:३०	१०,११,३,४,७,
०१ दिस	५:४१	७:५७	१०:०३	११:४९	१:२२	२:५३	४:३३	६:३२	८:४६	११:०२	१:१४	३:२६	१०,११,१,३,४,७,
०२ दिस	५:३७	७:५३	९:५९	११:४५	१:१८	२:४९	४:२९	६:२८	८:४२	१०:५८	१:११	३:२२	१०,११,१,३,४,७,
०३ दिस	५:३३	७:४९	९:५५	११:४१	१:१४	२:४५	४:२५	६:२४	८:३८	१०:५४	१:०७	३:१८	१०,११,१,३,४,७,
०४ दिस	५:२९	७:४५	९:५१	११:३८	१:११	२:४१	४:२२	६:२०	८:३४	१०:५०	१:०३	३:१४	१०,११,१,२,३,४,६
०५ दिस	५:२५	७:४१	९:४७	११:३४	१:०७	२:३७	४:१८	६:१६	८:३०	१०:४६	१२:५९	३:१०	१०,११,१,२,३,४,
०६ दिस	५:२१	७:३७	९:४३	११:३०	१:०३	२:३३	४:१४	६:१२	८:२६	१०:४२	१२:५५	३:०६	११,१,२,३,
०७ दिस	५:१७	७:३४	९:३९	११:२६	१२:५९	२:२९	४:१०	६:०८	८:२२	१०:३९	१२:५१	३:०२	११,१,३,७,
०८ दिस	५:१३	७:३०	९:३५	११:२२	१२:५५	२:२५	४:०६	६:०४	८:१८	१०:३५	१२:४७	२:५८	११,१,३,७,

तिथि १
बुधवार
इष्ट ०।०



मार्गशीर्षकृष्ण १ विशाखयां बुध - व्याधिर्भयंचदुर्भिक्षंकिंचित्कुत्रापिजायते।। विशाखा में हो तो सुभिक्ष हो। कहीं व्याधि भय और दुर्भिक्ष भी हो।। मार्गशीर्षकृष्ण ११ अनुराधायां बुध - सुभिक्षमनुराधायांपक्षिपीड़ाप्रजासुखम्। अनुराधा में सुभिक्ष हो, पशुओं में पीड़ा हो, मनुष्यों को सुख हो।

तिथि ९
बुधवार
इष्ट ०।०



१६	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वेः। शुक्र उदयपूर्वेः। मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-ज्येष्ठायां रविः, मघायां भौमः, अनुराधायां वुधः, मघायां गुरौ, स्वाते शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, धनिष्ठायां राहु, आश्लेषायां केतु।
१	बु.	६०।००	वृद्धि	ज्ये	३५।१४	रा. ९:००	धृति	४।२३	दि.८:४०	किस्त	२७।२	रा ७:३१	बव	वृश्चिक	३५।१४	रा. ९:०० तक	२६।३२	६:५५	५:३१	७।२२।४३।४९	६१	ध्वांक्ष	०९ दिस	मूल दिनरात। ज्वालामुखीयो रात्रि ९:०० से ८:४३ तक। ($) बुध प्रातः ७:३७ समये विशाखायां शुक्रः दिन २:०१ समये।
१	गु.	४।३३	दि.८:४४	मूल	४२।३४	रा. ११:५७	शूल	६।१२	दि.९:२४	बव	४।३३	दि.८:४४	बाल	धनु	--	दिनरात	२६।३१	६:५५	५:३१	७।२३।४४।४८	६१	धूम्र	१० दिस	मूल सू.उ.से रात ११:५७ तक। क्रांतिसाम्य रात्रि ४:३५ से रातअंत। ज्वालामुखी योग सू.उ. से दिन ८:४४। क्रांतिसाम्य रात्रि ४:३५ से रातअंत। (A)
२	शु.	११।०३	दि.११:२१	पू.षा	५०।१७	रा. ३:०३	गंड	८।२४	दि.१०:१७	कौल	११।३	दि.११:२१	तैति	धनु	--	दिनरात	२६।३०	६:५६	५:३२	७।२४।४५।४७	६१	प्रवर्ध	११ दिस	पितृ पूजन। रवियोग रात्रि ३:०३ से रात्रिअंत। (A) मार्गी शनि रात्रि ७:५१ समये। (#) २:५२ पर्यन्त। भद्रा दिन ९:१७ से रात्रि ८:०९ (स्वर्ग)।
३	श.	१७।५०	दि.२:०५	उ.षा	५८।८	रा. ६:१२	बृद्धि	१०।५०	दि.११:१६	गर	१७।५०	दि.२:०५	वणि	धनु	७।१५	दि. ९:५० तक	२६।२९	६:५६	५:३२	७।२५।४६।४७	६१	राक्षस	१२ दिस	रवियोग सू.उ.से रात्रि ६:१२ तक । सर्वार्थसिद्धी रात्रि ६:१२ से रातअंत। भद्रा रात्रि ३:२६ से रात्रिअंत (पाताल)। बुध अस्त पूर्वेः प्रातः ६:०३ (B)
४	र.	२४।३३	दि.४:४६	श्रव	६०।०	वृद्धि	ध्रुव	१३।१४	दि.१२:१५	भद्रा	२४।३३	दि.४:४६	बव	मकर	××	दिनरात	२६।२८	६:५७	५:३२	७।२६।४७।४९	६१	मुसल	१३ दिस	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। भद्रा सू.उ.से दिन ४:४६(पाताल)। ज्येष्ठायां वुधः सायं ५:१६ समये। (B) समये। गुरुवक्री -१८७:०२।
५	चं.	३०।४४	रा.७:१५	श्रव	५।३८	दि. ९:१३	व्या	१५।१८	दि.१:०५	बाल	३०।४४	रा ७:१५	कौल	मकर	३१।०५	रा. १०:३६ तक	२६।२७	६:५८	५:३३	७।२७।४८।५१	६१	सिद्धि	१४ दिस	श्री राम विवाहोत्सव। पंचक प्रारंभ रा. १०:३६ तक समये। रवियोग दिन ९:१३ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन ९:१३ पर्यन्त।
६	मं.	३५।५२	रा.९:१९	धनि	१२।१९	दि. ११:५४	हर्ष	१६।४१	दि.१:३९	कौल	३।३४	दि.८:२४	तैति	कुंभ	××	दिनरात	२६।२७	६:५८	५:३३	७।२८।४९।५३	६१	उत्पात	१५ दिस	चम्पा षष्ठी। पंचक दिनरात। रवियोग सू.उ.से दिन ११:५४ तक , पुनः रात्रि १०:३२ से रात्रिअंत। (C) मूले च रवि दिन १०:३२ समये।
७	बु.	३९।२७	रा.१०:४६	शत	१७।४१	दि. २:०३	वज्र	१७।१	दि.१:४७	गर	७।५८	दि.१०:१०	वणि	कुंभ	××	दिनरात	२६।२६	६:५९	५:३३	७।२९।५०।५७	६१	मानस	१६ दिस	अंशुमान सप्तमी, मित्र सप्तमी, नन्दा सप्तमी। पंचक दिनरात। रवियोग दिन १०:३२ से दिन २:०३। भद्रा रात्रि १०:४६ से रात्रिअंत (भूमि)। धनुषे (C)
८	गु.	४१।०४	रा.११:२५	पू.भा	२१।१७	दि. ३:३०	सिद्धि	१५।५८	दि.१:२२	भद्रा	१०।३५	दि.११:१३	बव	कुंभ	५।४२	दि. ९:१६ तक	२६।२६	६:५९	५:३४	८।००।५२।०१	६१	मुद्गर	१७ दिस	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। बुधाष्टमी।धनु खरमास। पंचक दिनरात। भद्रा सू.उ.से दिन ११:१३(भूमि)। व्यतिपात् दि.१:२२ वजे तक। से रातअंत।
९	शु.	४०।३०	रा.११:१२	उ.भा	२२।५१	दि. ४:०८	व्यति	१३।१९	दि.१२:१९	बाल	११।८	दि.११:२७	कौल	मीन	××	दिनरात	२६।२६	६:६०	५:३४	८।०१।५३।०५	६१	ध्वज	१८ दिस	नन्दनी नवमी। धनु खरमास। पंचक दिनरात। मूल दिन ४:०८ से रातअंत। रवियोग दिन ४:०८ से रात्रिअंत। अमृतसिद्धियोग दिन ४:०८ से (D)
१०	श.	३७।४२	रा.१०:०५	रेव	२२।१६	दि. ३:५५	वरी	८।५७	दि.१०:३५	तैति	९।२८	दि.१०:४८	गर	मीन	२२।१६	दि. ३:५५ तक	२६।२५	७:०	५:३५	८।०२।५४।११	६१	धाता	१९ दिस	पदार्थ दशमी व्रतारम्भ। धनु खरमास। पंचक समाप्त दि. ३ :५५ समये। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत। पूर्वाफाल्गुण्यां भौमः दिन १०:२६ समये।
११	र.	३२।५१	रा.८:०९	अश्वि	१९।३८	दि. २:५२	परि, शिव	२।५६, ५९।५४	दि.८:११, रा.६:५१	वणि	५।४१	दि.९:१७	भद्रा	मेष	××	दिनरात	२६।२५	७:१	५:३५	८।०३।५५।१७	६१	आनंद	२० दिस	मोक्षदा एकादशी व्रत सर्वे। श्री गीता जयंती।धनु खरमास। मूल सू.उ.से दिन २:५२ तक। रवियोग सू.उ.से दिन २:५२ तक। सर्वार्थसिद्धी दिन (#)
१२	चं.	२६।१७	सा.५:३२	भर	१५।१२	दि. १:०६	सिद्ध	४६।१३	रा.१:३०	बव	०।१	प्रा.७:०२	बाल	मेष	२८।४७	सा. ६:३२ तक	२६।२५	७:१	५:३५	८।०४।५६।२३	६१	चर	२१ दिस	सोमप्रदोष व्रतं। जनार्दन पूजन।धनु खरमास। (&) २:२७। भद्रा दिन १०:५० से रात्रि ८:५७ (स्वर्ग)। क्रांतिसाम्य रात्रि १०:२९ से रात्रि २:२७।
१३	मं.	१८।२२	दि.२:२३	कृत्ति	९।१९	दि. १०:४६	साध्य	३६।१५	रा.९:३२	तैति	१८।२२	दि.२:२३	गर	वृष	××	दिनरात	२६।२५	७:२	५:३६	८।०५।५७।३०	६१	गद	२२ दिस	अनंग त्रयोदशी।धनु खरमास। श्री सूर्य उत्तरायने रात्रि १:५८। रवियोग दिन १०:४६ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन १०:४६ पर्यन्त। मूले श्र धनुषे ($)
१४	बु.	९।३०	दि.१०:५०	रोहि, मृग	२:२४।५४:४९	प्रा. ७:६०, रा.४:५८	शुभ	२५।४०	सा.५:१८	वणि	९।३०	दि.१०:५०	भद्रा	वृष	२८।३६	सा. ६:२९ तक	२६।२५	७:२	५:३६	८।०६।५८।३७	६१	शुभ	२३ दिस	श्री दत्तात्रेय जयंती। शिव चतुर्दशी। धनु खरमास। रवियोग सू.उ.से प्रातः ७:६० तक । सर्वार्थसिद्धी दिनरात। क्रांतिसाम्य रात्रि १०:२९ से रात्रि (&)
१५,१	गु.	०।०३, ५०।२५	प्रा.७:०४,रा ३:१३	आर्द्रा	४७।१०	रा. १:५५	शुक्ल	१४।४८	दि.१२:५८	बव	०।३	प्रा.७:०४	बाल	मिथुन	××	दिनरात	२६।२५	७:३	५:३७	८।०७।५९।४५	६१	काण	२४ दिस	पूर्णिमा। अन्नपूर्णा जयंती। त्रिपुर भैरवी जयंती। धनु खरमास। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १:५५ से रातअंत। (D) रातअंत। व्यतिपात् सू.उ.से दि.१२:१९ वजे तक।

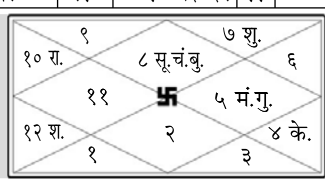
सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-१४

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	बु.	७।२२।५९।२९	७१६	४।१०।२८।५९	१९	७।९।५२।११	९२	४।०२।४५।२६	१	६।०८।५८।४०	४४	११।१३।४१।३०	०	९।२९।४९।०१	६:५९	५:३८
१	गु.	८।०४।५५।३२	७११	४।१०।४७।५५	१९	७।११।२३।५३	९२	४।०२।४६।०६	०	६।०९।४२।५५	४५	११।१३।४१।२२	०	९।२९।४५।५०	७:४७	६:२६
२	शु.	८।१६।४६।३५	७०८	४।११।६।२६	१८	७।१२।५५।४८	९२	४।०२।४६।३६	०	६।१०।२८।१२	४६	११।१३।४१।२०	०	९।२९।४२।३९	८:३१	७:१७
३	श.	८।२८।३४।३३	७०८	४।११।२४।३१	१८	७।१४।२७।५६	९२	४।०२।४६।५३	०	६।११।१४।२८	४७	११।१३।४१।२५	०	९।२९।३९।२९	९:११	८:०९
४	र.	९।१०।२२।०४	७१०	४।११।४२।९	१७	७।१६।०।१४	९२	४।०२।४६।५८	०	६।१२।०१।४२	४८	११।१३।४१।३६	०	९।२९।३६।१८	९:४८	९:००
५	चं.	९।२२।१२।३२	७१८	४।११।५९।१९	१७	७।१७।३२।४२	९३	४।०२।४६।५२	०	६।१२।४९।५०	४९	११।१३।४१।५४	०	९।२९।३३।०७	१०:२२	९:५२
६	मं.	१०।०४।१०।१०	७३०	४।१२।१६।१	१६	७।१९।५।१९	९३	४।०२।४६।३४	०	६।१३।३८।५२	५०	११।१३।४२।१९	१	९।२९।२९।५६	१०:५४	१०:४३
७	बु.	१०।१६।१९।५२	७४७	४।१२।३२।१५	१६	७।२०।३८।४	९३	४।०२।४६।०४	१	६।१४।२८।४४	५१	११।१३।४२।५०	१	९।२९।२६।४५	११:२६	११:३६
८	गु.	१०।२८।४६।५६	७७०	४।१२।४७।५९	१५	७।२२।१०।५८	९३	४।०२।४५।२३	१	६।१५।१९।२५	५१	११।१३।४३।२८	१	९।२९।२३।३४	११:५८	१२:३१
९	शु.	११।११।३६।३७	७९७	४।१३।३।१४	१५	७।२३।४४।१	९३	४।०२।४४।२९	१	६।१६।१०।५३	५२	११।१३।४४।१२	१	९।२९।२०।२३	१२:३३	१:३०
१०	श.	११।२४।५३।२१	८२७	४।१३।१७।५८	१४	७।२५।१७।१३	९३	४।०२।४३।२४	१	६।१७।०३।०६	५३	११।१३।४५।०३	१	९।२९।१७।१२	१:१२	२:३३
११	र.	०।०८।३९।५१	८५६	४।१३।३२।११	१४	७।२६।५०।३३	९४	४।०२।४२।०७	१	६।१७।५६।०३	५४	११।१३।४५।६०	१	९।२९।१४।०१	१:५६	३:४१
१२	चं.	०।२२।५६।१६	८८३	४।१३।४५।५२	१३	७।२८।२४।४	९४	४।०२।४०।३८	२	६।१८।४९।४२	५४	११।१३।४७।०४	१	९।२९।१०।५०	२:४६	४:५४
१३	मं.	१।०७।३९।३२	९०४	४।१३।५९।११	१३	७।२९।५७।४४	९४	४।०२।३८।५८	२	६।१९।४४।००	५५	११।१३।४८।१४	१	९।२९।०७।४०	३:४६	६:०९
१४	बु.	१।२२।४३।२५	९१६	४।१४।११।३७	१२	८।१।३१।३५	९४	४।०२।३७।०६	२	६।२०।३८।५८	५६	११।१३।४९।३१	१	९।२९।०४।२९	४:५४	७:२१
१५,१	गु.	२।०७।५९।०४	९१७	४।१४।२३।३९	११	८।३।५।३८	९४	४।०२।३५।०२	२	६।२१।३४।३३	५६	११।१३।५०।५४	१	९।२९।०१।१८	६:०८	७:५०

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

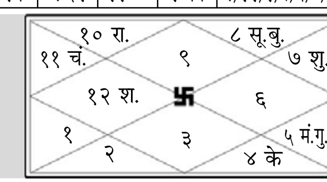
दिनांक	प्रातः पूर्व: वृश्चिके	प्रातः: धनुषे	दिन: मकरे	दिन: कुंभे	दिन: मीने	दिन: मेषे	सायं: वृषे	रात्रि: मिथुने	रात्रि: कर्के	रात्रि: सिंहे	रात्रि: कन्यायां	रात्रि: तुलायां	शुभ बली लग्नें (इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।)
०९ दिस	५:०९	७:२६	९:३१	११:१८	१२:५१	२:२१	४:०२	६:००	८:१४	१०:३१	१२:४३	२:५४	११,१,३,७,
१० दिस	५:०५	७:२२	९:२७	११:१४	१२:४७	२:१८	३:५८	५:५६	८:१०	१०:२७	१२:३९	२:५०	११,१,३,७,
११ दिस	५:०१	७:१८	९:२३	११:१०	१२:४३	२:१४	३:५४	५:५२	८:०६	१०:२३	१२:३५	२:४६	११,१,३,७,
१२ दिस	४:५७	७:१४	९:१९	११:०६	१२:३९	२:१०	३:५०	५:४८	८:०२	१०:१९	१२:३१	२:४२	११,१,३,७,
१३ दिस	४:५३	७:१०	९:१५	११:०२	१२:३५	२:०६	३:४६	५:४४	७:५८	१०:१५	१२:२७	२:३८	११,१,२,३,६,७,
१४ दिस	४:५०	७:०६	९:११	१०:५८	१२:३१	२:०२	३:४२	५:४१	७:५४	१०:११	१२:२३	२:३४	११,१,२,३,७,
१५ दिस	४:४६	७:०२	९:०७	१०:५४	१२:२७	१:५८	३:३८	५:३७	७:५०	१०:०७	१२:१९	२:३०	११,१,३,७,
१६ दिस	४:४२	६:५८	९:०४	१०:५०	१२:२३	१:५४	३:३४	५:३३	७:४६	१०:०३	१२:१५	२:२७	११,१,२,३,७,
१७ दिस	४:३८	६:५४	८:६०	१०:४६	१२:१९	१:५०	३:३०	५:२९	७:४३	९:५९	१२:११	२:२३	११,१,२,३,७,
१८ दिस	४:३४	६:५०	८:५६	१०:४२	१२:१५	१:४६	३:२६	५:२५	७:३९	९:५५	१२:०७	२:१९	११,१,३,७,
१९ दिस	४:३०	६:४६	८:५२	१०:३८	१२:११	१:४२	३:२२	५:२१	७:३५	९:५१	१२:०४	२:१५	११,१,३,७,८,
२० दिस	४:२६	६:४२	८:४८	१०:३४	१२:०७	१:३८	३:१८	५:१७	७:३१	९:४७	११:६०	२:११	११,१,३,७,८,
२१ दिस	४:२२	६:३८	८:४४	१०:३०	१२:०३	१:३४	३:१४	५:१३	७:२७	९:४३	११:५६	२:०७	११,१,२,३,७,८,
२२ दिस	४:१८	६:३४	८:४०	१०:२७	११:६०	१:३०	३:११	५:०९	७:२३	९:३९	११:५२	२:०३	९,११,१,२,३,६,८,
२३ दिस	४:१४	६:३०	८:३६	१०:२३	११:५६	१:२६	३:०७	५:०५	७:१९	९:३५	११:४८	१:५९	९,११,१,२,३,६,७,८,
२४ दिस	४:१०	६:२६	८:३२	१०:१९	११:५२	१:२२	३:०३	५:०१	७:१५	९:३१	११:४४	१:५५	९,११,१,२,६,७,८,

तिथि १
बुधवार
इष्ट ०।०



धनु संक्रान्ति फलम्- मार्गशीर्ष शुक्ल ७ बुधवासरे दिन १०:३२ समये धनुसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम मंदाकिनी संज्ञक संक्रांति सैनिकवर्ग, राजनैतिक लोगों, अधिकारियों को शुभकारी है। तस्य काले शतनक्षत्र नाम महोदरी संज्ञक संक्रांति चोर, तस्करो एवं जमाखोरों का सुखद। ४५ अनाज मूल्य में गिरावट संकेतक। वणिज करण फल- महिषी वाहनं, ऊँट उपवाहनं, श्याम वस्त्रं, तोमर आयुधं, तीकर पात्रं, दधि भक्षणं, महावर लेपनं, मृग वर्णा, मन्दार पुष्पं, मणि भूषणं, पा श्वेत कंचुकी, प्रगल्भ अवस्था, उपविष्टा स्थिति। अन्नादि में स्थिर भाव सूचक। समस्त प्रकार के अनाज सस्ते होंगे। मार्गशीर्षशुक्ल १० पूर्वा फाल्गुन्यां भौमअल्प वृष्टि, तेल महंगाई। मार्गशीर्षशुक्ल ४ ज्येष्ठायां बुध - ज्येष्ठायामिक्षुशाल्याज्यमहर्घताश्वरोगिता।। ज्येष्ठ में हो तो ईख, शाली- और घी महँगे हों तथा घोड़ों में रोग हो। मार्गशीर्षशुक्ल १३ मूले बुध - मूलेपक्षिपशूनांचबालपीड़ाविजायते। मूल में हो तो पशु पक्षी और बालकों में पीड़ा हो।

तिथि ७
बुधवार
इष्ट ०।०



पौष कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शकः १९४८। रौद्र संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। शिशिर ऋतुः। श्री सूर्य उत्तरायन-दक्षिणगोले। दिसम्बर-जनवरी ईसवी सन् २०२६। दिसम्बर-जनवरी। वंगला सन् १४३३ । वीर निर्वाण संवत् २५५३।

१४		तिथि		नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वेः। शुक्र उदयपूर्वेः | मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-मूले रविः, पूर्वाफाल्गुण्यां भौमः, मूले वुधः, मघायां गुरौ, विशाखायां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, धनिष्ठायां राहु, आश्लेषायां केतु।
२	शु.	४१।२४	रा.११:३७	पुन	३९।५३	रा. ११:००	ब्रह्म, ऐंद्र	३।५४, ५१।५१	दि.८:३७, रा.६:६०	तैति	१५।५५	दि.१:२५	गर	मिथुन	२६।४०	सा. ५:४३ तक	२६।२६	७:३	५:३७	८।०९।००।५३	६१	लुम्बक	२५ दिस	धनु खरमास। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ११:०० पर्यन्त। शुक्र पुष्य योग रात्रि ११:०० से रातअंत।
३	श.	३३।०४	रा.८:१७	पुष्य	३३।२१	रा. ८:२४	वैधृ	४३।४१	रा.१२:३२	वणि	७।२	दि.९:५३	भद्रा	कर्क	--	दिनरात	२६।२६	७:४	५:३८	८।१०।०२।०२	६१	मित्र	२६ दिस	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। धनु खरमास। मूल रात ८:२४ से रातअंत। शनि पुष्य योग सू उ से रात्रि ८:२४ तक। भद्रा दिन ९:५३ से रात्रि ८:१७ (A)
४	र.	२५।५१	सा.५:२४	श्ले	२७।५८	सा. ६:१५	विष्कु	३४।५७	रा.९:०३	बाल	२५।५१	सा.५:२४	कौल	कर्क	२७।५८	सा. ६:१५ तक	२६।२६	७:४	५:३९	८।११।०३।१०	६१	वज्र	२७ दिस	धनु खरमास। मूल दिनरात। (A) (भूमि)। वैधृति सू.उ.से रा.१२:३२ वजे तक।
५	चं.	२०।०५	दि.३:०६	मघा	२४।१	दि. ४:४१	प्रीति	२७।२६	सा.६:०३	तैति	२०।५	दि.३:०६	गर	सिंह	--	दिनरात	२६।२७	७:४	५:३९	८।१२।०४।१९	६१	ध्वांक्ष	२८ दिस	धनु खरमास। मूल सू.उ.से दिन ४:४१ तक। रवियोग दिन ४:४१ से रात्रिअंत।
६	मं.	१६।०३	दि.१:३०	पू.फा.	२१।४८	दि. ३:४८	आयु	२१।१७	दि.३:३५	वणि	१६।३	दि.१:३०	भद्रा	सिंह	३६।३३	रा. ९:४२ तक	२६।२७	७:५	५:४०	८।१३।०५।२९	६१	धूम्र	२९ दिस	धनु खरमास। रवियोग सू.उ.से दिन १२:४७ तक , पुनः दिन ३:४८ से रात्रिअंत। भद्रा दिन १:३० से रात्रि १२:५८ (भूमि)। पूर्वाषाढ़े रवि (B)
७	बु.	१३।५४	दि.१२:३९	उ.फा.	२१।२६	दि. ३:४०	सौभ	१६।३६	दि.१:४४	बव	१३।५४	दि.१२:३९	बाल	कन्या	××	दिनरात	२६।२८	७:५	५:४०	८।१४।०६।३८	६१	प्रवर्ध	३० दिस	कालाष्टमी व्रतं। धनु खरमास। रवियोग सू.उ.से दिन ३:४० तक । सर्वार्थसिद्धी दिन ३:४० से रातअंत। पूर्वाषाढ़े वुधः सायं ६:२५ समये।
८	गु.	१३।४०	दि.१२:३३	हस्त	२२।५४	दि. ४:१५	शोभ	१३।२५	दि.१२:२७	कौल	१३।४०	दि.१२:३३	तैति	कन्या	५४।११	रा. ४:४६ तक	२६।२९	७:५	५:४१	८।१५।०७।४८	६१	राक्षस	३१ दिस	रूक्मणी अष्टमी।धनु खरमास। (B) दिन १२:४७ समये।
९	शु.	१५।१३	दि.१:११	चित्रा	२६।४	सा. ५:३१	अति	११।३६	दि.११:४४	गर	१५।१३	दि.१:११	वणि	तुला	××	दिनरात	२६।३०	७:६	५:४१	८।१६।०८।५७	६१	मुसल	०१ जन	धनु खरमास। भद्रा रात्रि १:४४ से रात्रिअंत (पाताल)। वृश्चिके शुक्रः रात्रि ११:२७ समये।
१०	श.	१८।१९	दि.२:२६	स्वा	३०।३८	रा. ७:२१	सुक	१०।५८	दि.११:२९	भद्रा	१८।१९	दि.२:२६	बव	तुला	××	दिनरात	२६।३०	७:६	५:४२	८।१७।१०।०७	६१	सिद्धि	०२ जन	धनु खरमास। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ७:२१ पर्यन्त। भद्रा सू.उ.से दिन २:२६(पाताल)।
११	र.	२२।४०	दि.४:१०	विशा	३६।२१	रा. ९:३९	धृति	११।१९	दि.११:३८	बाल	२२।४०	दि.४:१०	कौल	तुला	१९।४९	दि. ३:०२ तक	२६।३१	७:६	५:४३	८।१८।११।१७	६१	उत्पात	०३ जन	सफला एकादशी व्रत सर्वे। धनु खरमास।
१२	चं.	२७।५७	सा.६:१७	अनु	४२।५४	रा. १२:१६	शूल	१२।२५	दि.१२:०५	तैति	२७।५७	सा.६:१७	गर	वृश्चिक	××	दिनरात	२६।३२	७:६	५:४३	८।१९।१२।२६	६१	मानस	०४ जन	सोमप्रदोष व्रतं। धनु खरमास। मूल रात १२:१६ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १२:१६ पर्यन्त। क्रांतिसाम्य रात्रि ७:०४ से रातअंत। क्रांतिसाम्य (C)
१३	मं.	३३।५४	रा.८:४०	ज्ये	५०।२	रा. ३:०७	गंड़	१४।४	दि.१२:४४	गर	०।४८	प्रा.७:२६	वणि	वृश्चिक	५०।०२	रा. ३:०७ तक	२६।३३	७:७	५:४४	८।२०।१३।३६	६१	मुद्गर	०५ जन	मंगलप्रदोष व्रतं। मासिक शिवरात्रि व्रतं। गुरू गोविन्द सिंह जयंती। धनु खरमास। मूल दिनरात। क्रांतिसाम्य प्रातः ७:०४ से दिन ११:४०। भद्रा (D)
१४	बु.	४०।१८	रा.११:१४	मूल	५७।३२	रा. ६:०८	बृद्धि	१६।४	दि.१:३२	भद्रा	७।२	दि.९:५६	शकु	धनु	××	दिनरात	२६।३५	७:७	५:४५	८।२१।१४।४६	६१	ध्वज	०६ जन	धनु खरमास। मूल सू.उ.से रात ६:०८ तक। भद्रा सू.उ.से दिन ९:५६(पाताल)। (C) रात्रि ७:०४ से रातअंत। अनुराधायां शुक्रः रात्रि ६:१० समये।
३०	गु.	४६।५४	रा.१:५३	पू.षा	६०।०	वृद्धि	ध्रुव	१८।१७	दि.२:२६	चतु	१३।३५	दि.१२:३३	नाग	धनु	××	दिनरात	२६।३६	७:७	५:४५	८।२२।१५।५५	६१	धाता	०७ जन	अमावस्या।धनु खरमास। उत्तराषाढ़े वुधः रात्रि १२:०४ समये। (D) रात्रि ८:४० से रात्रिअंत (पाताल)। क्रांतिसाम्य प्रातः ७:०४ से दिन ११:४०।

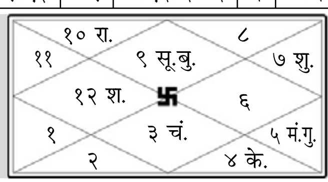
सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-१७

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय	
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	उदय दिन	अस्त रात
२	शु.	२।२३।१६।१३	९०८	४।१४।३५।६	११	८।४।३९।५३	९४	४।०२।३२।४७	२	६।२२।३०।४३	५७	११।१३।५२।२४	२	९।२८।५८।०७	७:२४	८:५२
३	श.	३।०८।२४।४०	८९१	४।१४।४५।५९	१०	८।६।१४।२२	९५	४।०२।३०।२०	३	६।२३।२७।२९	५७	११।१३।५४।००	२	९।२८।५४।५६	८:३६	९:४५
४	र.	३।२३।१५।४४	८६८	४।१४।५६।१६	१०	८।७।४९।४	९५	४।०२।२७।४१	३	६।२४।२४।४७	५८	११।१३।५५।४३	२	९।२८।५१।४५	९:४३	१०:२९
५	चं.	४।०७।४३।१८	८४१	४।१५।५।५६	९	८।९।२४।१	९५	४।०२।२४।५२	३	६।२५।२२।३८	५८	११।१३।५७।३२	२	९।२८।४८।३४	१०:४५	११:०८
६	मं.	४।२१।४४।१२	८१४	४।१५।१४।५९	८	८।१०।५९।१४	९५	४।०२।२१।५१	३	६।२६।२०।५९	५९	११।१३।५९।२७	२	९।२८।४५।२३	११:४१	११:४२
७	बु.	५।०५।१८।०७	७८९	४।१५।२३।२५	८	८।१२।३४।४४	९६	४।०२।१८।३८	३	६।२७।१९।५१	५९	११।१४।०१।२९	२	९।२८।४२।१२	१२:३५	१२:१३
८	गु.	५।१८।२७।०२	७६७	४।१५।३१।१२	७	८।१४।१०।३२	९६	४।०२।१५।१५	४	६।२८।१९।१०	६०	११।१४।०३।३७	२	९।२८।३९।०२	१:२७	१२:४५
९	शु.	६।०१।१४।२१	७५०	४।१५।३८।१९	६	८।१५।४६।३८	९६	४।०२।११।४१	४	६।२९।१८।५८	६०	११।१४।०५।५१	२	९।२८।३५।५१	२:१८	१:१७
१०	श.	६।१३।४४।०५	७३६	४।१५।४४।४७	६	८।१७।२३।३	९७	४।०२।०७।५६	४	७।००।१९।१२	६१	११।१४।०८।१२	२	९।२८।३२।४०	३:१०	१:५२
११	र.	६।२६।००।११	७२६	४।१५।५०।३५	५	८।१८।५९।४८	९७	४।०२।०३।६०	४	७।०१।१९।५२	६१	११।१४।१०।३८	३	९।२८।२९।२९	४:०१	२:३१
१२	चं.	७।०८।०६।०९	७१९	४।१५।५५।४१	४	८।२०।३६।५४	९७	४।०१।५९।५३	४	७।०२।२०।५६	६१	११।१४।१३।११	३	९।२८।२६।१८	४:५२	३:१४
१३	मं.	७।२०।०४।५०	७१४	४।१६।०।५	४	८।२२।१४।२२	९८	४।०१।५५।३६	४	७।०३।२२।२४	६२	११।१४।१५।५०	३	९।२८।२३।०७	५:४१	४:०१
१४	बु.	८।०१।५८।३३	७११	४।१६।३।४७	३	८।२३।५२।११	९८	४।०१।५१।०८	५	७।०४।२४।१६	६२	११।१४।१८।३५	३	९।२८।१९।५६	६:२७	४:५१
३०	गु.	८।१३।४९।१३	७०९	४।१६।६।४६	२	८।२५।३०।२३	९९	४।०१।४६।३१	५	७।०५।२६।२९	६३	११।१४।२१।२६	३	९।२८।१६।४६	××	५:४२

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

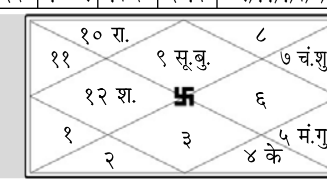
दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२५ दिस	६:२३	८:२८	१०:१५	११:४८	१:१८	२:५९	४:५७	७:११	९:२८	११:४०	१:५१	४:०६	९,११,२,६,७,८,
२६ दिस	६:१९	८:२४	१०:११	११:४४	१:१४	२:५५	४:५३	७:०७	९:२४	११:३६	१:४७	४:०२	९,११,२,३,६,७,८,
२७ दिस	६:१५	८:२०	१०:०७	११:४०	१:११	२:५१	४:४९	७:०३	९:२०	११:३२	१:४३	३:५८	९,११,२,३,६,७,८,
२८ दिस	६:११	८:१६	१०:०३	११:३६	१:०७	२:४७	४:४५	६:५९	९:१६	११:२८	१:३९	३:५४	९,११,२,३,६,७,८,
२९ दिस	६:०७	८:१२	९:५९	११:३२	१:०३	२:४३	४:४१	६:५५	९:१२	११:२४	१:३५	३:५०	९,११,१,२,६,७,८,
३० दिस	६:०३	८:०८	९:५५	११:२८	१२:५९	२:३९	४:३७	६:५१	९:०८	११:२०	१:३१	३:४६	९,११,१,२,३,६,७,८
३१ दिस	५:५९	८:०४	९:५१	११:२४	१२:५५	२:३५	४:३३	६:४७	९:०४	११:१६	१:२७	३:४२	९,११,१,२,६,७,८,
०१ जन	५:५५	८:००	९:४७	११:२०	१२:५१	२:३१	४:३०	६:४३	८:६०	११:१२	१:२३	३:३९	९,११,१,२,६,७,८,
०२ जन	५:५१	७:५६	९:४३	११:१६	१२:४७	२:२७	४:२६	६:३९	८:५६	११:०८	१:१९	३:३५	९,११,१,२,३,६,८,
०३ जन	५:४७	७:५३	९:३९	११:१२	१२:४३	२:२३	४:२२	६:३५	८:५२	११:०४	१:१६	३:३१	९,११,१,२,६,
०४ जन	५:४३	७:४९	९:३५	११:०८	१२:३९	२:१९	४:१८	६:३२	८:४८	११:००	१:१२	३:२७	९,११,१,२,६,
०५ जन	५:३९	७:४५	९:३१	११:०४	१२:३५	२:१५	४:१४	६:२८	८:४४	१०:५६	१:०८	३:२३	९,११,१,२,६,८,
०६ जन	५:३५	७:४१	९:२७	११:००	१२:३१	२:११	४:१०	६:२४	८:४०	१०:५३	१:०४	३:१९	९,११,१,२,३,६,८,
०७ जन	५:३१	७:३७	९:२३	१०:५६	१२:२७	२:०७	४:०६	६:२०	८:३६	१०:४९	१२:६०	३:१५	९,११,१,२,७,

तिथि २
शुक्रवार इ
ष्ठ ०।०



पौषकृष्ण ७ पुर्वाषाढे बुध - धान्यंमंदचपूषायांव्याधिर्ग्रीष्मेपिवर्षणम्।। पूर्वाषाढ़ में हो तो धान्य मन्दा हो और ग्रीष्म में व्याधि तथा वर्षा हो। पौषकृष्ण ३० उत्तराषाढे बुध - उषायांसस्यष्पित्तिरष्टवर्षेशिशुक्षयः। उत्तराषाढ में हो तो अन्न की उत्पत्ति हो, आठ वर्ष तक की उम्र के बालकों का नाश हो।

तिथि ९
शुक्रवार
इष्ठ ०।०



१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वेः। शुक्र उदयपूर्वेः। मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-पूर्वाषाढ़े रविः, पूर्वाफाल्गुण्यां भौमः, उत्तराषाढ़े वुधः, मघायां गुरौ, अनुराधायां शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, धनिष्ठायां राहु, आश्लेषायां केतु।
१	शु.	५३।३१	रा.४:३२	पू.षा	५।१२	दि. ९:१२	व्या	२०।३५	दि.३:२१	किंस्तु	२०।१३	दि.३:१२	बव	धनु	२२।०६	दि. ३:५८ तक	२६।३७	७:७	५:४६	८।२३।१७।०४	६१	प्रवर्ध	०८ जन	धनु खरमास। (A) व्यतिपात् सा.५:३७ वजे तक। से रातअंत। उत्तराषाढ़े रवि दिन २:४७ समये।
२	श.	५९।५६	रा.७:०६	उ.षा	१२।४७	दि. १२:१४	हर्ष	२२।४७	दि.४:१४	बाल	२६।४४	सा.५:४९	कौल	मकर	--	दिनरात	२६।३९	७:७	५:४७	८।२४।१८।१३	६१	चर	०९ जन	धनु खरमास। त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से दिन १२:१४ तक। सर्वार्थसिद्धी दिन १२:१४ से रातअंत। मकरे बुधः रात्रि १२:३३ समये।
३	र.	६०।००	वृद्धि	श्रव	२०।६	दि. ३:१०	वज्र	२४।४४	सा.५:०१	तैति	२७।२	रा ८:१७	गर	मकर	५३।३६	रा. ४:३४ तक	२६।४०	७:७	५:४७	८।२५।१९।२२	६१	गद	१० जन	धनु खरमास। पंचक प्रारंभ रा. ४:३४ तक समये। रवियोग दिन ३:१० से रात्रिअंत। मंगल वक्री रात्रि ७:२० समये। (F) पश्चिमेः सायं ६:४२ समये।
३	चं.	५।४९	दि.९:२७	धनि	२६।५१	सा. ५:५२	सिद्धि	२६।१५	सा.५:३७	गर	५।४९	दि.९:२७	वणि	कुंभ	--	दिनरात	२६।४२	७:७	५:४८	८।२६।२०।३१	६१	शुभ	११ जन	धनु खरमास। पंचक दिनरात। रवियोग सू.उ.से दिन २:४७ तक , पुनः सायं ५:५२ से रात्रिअंत। भद्रा रात्रि १०:३० से रात्रिअंत (भूमि)। (A)
४	मं.	१०।५३	दि.११:२९	शत	३२।४४	रा. ८:१३	व्यति	२७।५	सा.५:५७	भद्रा	१०।५३	दि.११:२९	बव	कुंभ	××	दिनरात	२६।४३	७:८	५:४९	८।२७।२१।३९	६१	मृत्यु	१२ जन	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। धनु खरमास। पंचक दिनरात। रवियोग सू.उ.से रात्रि ८:१३ तक। भद्रा सू.उ.से दिन ११:२९(भूमि)। व्यतिपात् (B)
५	बु.	१४।४८	दि.१:०३	पू.भा	३७।२६	रा. १०:०६	वरी	२६।५९	सा.५:५५	बाल	१४।४८	दि.१:०३	कौल	कुंभ	२१।२४	दि. ३:४१ तक	२६।४५	७:८	५:५०	८।२८।२२।४७	६१	पद्म	१३ जन	लोहिणी उत्सव। धनु खरमास। पंचक दिनरात। रवियोग रात्रि १०:०६ से रात्रिअंत। (C) रवि रात्रि ९:१८ समये। पुण्यकाल परादिवसे।
६	गु.	१७।१४	दि.२:०१	उ.भा	४०।३६	रा. ११:२२	परि	२५।४३	सा.५:२५	तैति	१७।१४	दि.२:०१	गर	मीन	××	दिनरात	२६।४७	७:८	५:५०	८।२९।२३।५४	६१	छत्र	१४ जन	धनु खरमास। पंचक दिनरात। मूल रात ११:२२ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से रात्रि ११:२२ तक । सर्वार्थसिद्धी रात्रि ११:२२ से रातअंत। मकरे (C)
७	शु.	१७।५३	दि.२:१७	रेव	४१।५७	रा. ११:५५	शिव	२३।४	दि.४:२१	वणि	१७।५३	दि.२:१७	भद्रा	मीन	४१।५७	रा. ११:५५ तक	२६।४८	७:८	५:५१	९।००।२५।०१	६१	श्रीवत्स	१५ जन	उभय सप्तमी, भग सप्तमी। पंचक समाप्त रा. ११ :५५ समये। मूल दिनरात। अमृतसिद्धियोग रात्रि ११:५५ पर्यन्त। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ११:५५ से (D)
८	श.	१६।३६	दि.१:४६	अश्वि	४१।२४	रा. ११:४१	सिद्ध	१८।५५	दि.२:४२	बव	१६।३६	दि.१:४६	बाल	मेष	××	दिनरात	२६।५०	७:८	५:५२	९।०१।२६।०८	६१	सौम्य	१६ जन	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। मूल सू.उ.से रात ११:४१ तक। रवियोग रात्रि ११:४१ से रात्रिअंत। (E) (स्वर्ग)। क्रांतिसाम्य दिन ३:०४ से रात्रि ७:१०।
९	र.	१३।२३	दि.१२:२९	भर	३८।५७	रा. १०:४२	साध्य	१३।१६	दि.१२:२६	कौल	१३।२३	दि.१२:२९	तैति	मेष	५३।११	रा. ४:२४ तक	२६।५२	७:७	५:५२	९।०२।२७।१४	६१	कालदंड	१७ जन	रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत। ज्येष्ठायां शुक्रः रात्रि ७:२५ समये। (D) रातअंत। भद्रा दिन २:१७ से रात्रि २:०८ (भूमि)। श्रवणे वुधः रात्रि १२:०३ समये।
१०	चं.	८।२२	दि.१०:२८	कृत्ति	३४।४९	रा. ९:०३	शुभ, शुक्ल	६।११, ५९।५६	दि.९:३६, रा.७:०६	गर	८।२२	दि.१०:२८	वणि	वृष	××	दिनरात	२६।५४	७:७	५:५३	९।०३।२८।१९	६१	स्थिर	१८ जन	रवियोग सू.उ.से रात्रि ९:०३ तक । सर्वार्थसिद्धी रात्रि ९:०३ से रातअंत। क्रांतिसाम्य दिन ३:०४ से रात्रि ७:१०। भद्रा रात्रि ९:१० से रात्रिअंत (E)
११,१२	मं.	१।४७, ५३।५७	प्रा.७:५०,रा ४:४२	रोहि	२९।१९	सा. ६:५१	ब्रह्म	४८।१६	रा. २:२६	भद्रा	१।४७	प्रा.७:५०	बव	वृष	५६।१५	रा. ५:३७ तक	२६।५६	७:७	५:५४	९।०४।२९।२४	६१	मातंग	१९ जन	पुत्रदा एकादशी व्रत सर्वे। मन्वादि तिथि। ० द्विपुष्कर योग सायं ६।५१ से से रात्रि ४:१७ तक भद्रा सू.उ.से प्रातः ७:५०(स्वर्ग)। बुध उदय (F)
१३	बु.	४५।०५	रा.१:०९	मृग	२२।४८	दि. ४:१४	ऐंद्र	३८।५	रा.१०:२१	कौल	११।३१	दि.२:५६	तैति	मिथुन	××	दिनरात	२६।५८	७:७	५:५४	९।०५।३०।२८	६१	अमृत	२० जन	बुधप्रदोष व्रतं। घृत दान। रवियोग दिन ४:१४ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिन ४:१४ पर्यन्त। वैधृति रा.१०:२१ वजे तक। से रातअंत।
१४	गु.	३५।५६	रा.९:२९	आर्द्रा	१५।४०	दि. १:२३	वैधृ	२७।३३	सा.६:०८	गर	१०।३४	दि.११:२१	वणि	मिथुन	५५।०८	रा. ५:१० तक	२७।०१	७:७	५:५५	९।०६।३१।३२	६१	काण	२१ जन	रवियोग सू.उ.से दिन १:२३ तक। सर्वार्थसिद्धी दिन १:२३ से रातअंत। भद्रा रात्रि ९:२९ से रात्रिअंत (भूमि)। वैधृति सू.उ.से सा.६:०८ वजे तक।
१५	शु.	२६।४७	सा.५:५०	पुन	८।१९	दि. १०:२६	विष्कु	१६।५४	दि.१:५३	भद्रा	१।१९	प्रा.७:३८	बव	कर्क	××	दिनरात	२७।०३	७:७	५:५६	९।०७।३२।३४	६१	लुम्बक	२२ जन	पूर्णिमा। सर्वार्थसिद्धी दिन १०:२६ पर्यन्त। शुक्र पुष्य योग दिन १०:२६ से रातअंत। भद्रा सू.उ.से प्रातः ७:३८ (भूमि)। (B) सू.उ.से सा.५:५७ वजे तक।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-२०

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-मार्गी	गति	अस्त-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	शु.	८।२५।३८।३३	७१०	४।१६।९।१	२	८।२७।८।५७	९९	४।०१।४१।४३	५	७।०६।२९।०४	६३	११।१४।२४।२३	३	९।२८।१३।३५	७:१०	६:०४
२	श.	९।०७।२८।१४	७१२	४।१६।१०।३१	१	८।२८।४७।५३	९९	४।०१।३६।४६	५	७।०७।३१।५९	६३	११।१४।२७।२५	३	९।२८।१०।२४	७:४९	६:५६
३	र.	९।१९।२०।०७	७१६	४।१६।११।१७	०	९।०।२७।११	१००	४।०१।३१।३८	५	७।०८।३५।१५	६४	११।१४।३०।३४	३	९।२८।०७।१३	८:२४	७:४८
३	चं.	१०।०१।१६।२१	७२३	४।१६।११।१७	-१	९।२।६।५२	१००	४।०१।२६।२२	५	७।०९।३८।४९	६४	११।१४।३३।४९	३	९।२८।०४।०२	८:५६	८:४०
४	मं.	१०।१३।१९।३८	७३४	४।१६।१०।३२	-२	९।३।४६।५२	१००	४।०१।२०।५६	६	७।१०।४२।४३	६४	११।१४।३७।०९	३	९।२८।००।५१	९:२८	९:३२
५	बु.	१०।२५।३३।१८	७४८	४।१६।९।०	-२	९।५।२७।१२	१०१	४।०१।१५।२१	६	७।११।४६।५४	६४	११।१४।४०।३५	४	९।२७।५७।४१	१०:०१	१०:२५
६	गु.	११।०८।०१।१८	७६७	४।१६।६।४२	-३	९।७।७।५०	१०१	४।०१।०९।३७	६	७।१२।५१।२२	६५	११।१४।४४।०७	४	९।२७।५४।३०	१०:३४	११:२१
७	शु.	११।२०।४७।५७	७८९	४।१६।३।३६	-४	९।८।४८।४३	१०१	४।०१।०३।४४	६	७।१३।५६।०७	६५	११।१४।४७।४४	४	९।२७।५१।१९	११:१०	१२:२१
८	श.	०।०३।५७।२५	८१५	४।१५।५९।४२	-५	९।१०।२९।४८	१०१	४।००।५७।४३	६	७।१५।०१।०८	६५	११।१४।५१।२७	४	९।२७।४८।०८	११:५०	१:२४
९	र.	०।१७।३२।५४	८४३	४।१५।५५।१	-५	९।१२।११।२	१०१	४।००।५१।३४	६	७।१६।०६।२५	६६	११।१४।५५।१५	४	९।२७।४४।५७	१२:३६	२:३३
१०	चं.	१।०१।३५।४५	८६९	४।१५।४९।३२	-६	९।१३।५२।१९	१०१	४।००।४५।१७	६	७।१७।११।५७	६६	११।१४।५९।०९	४	९।२७।४१।४७	१:२९	३:४४
११,१२	मं.	१।१६।०४।४३	८९१	४।१५।४३।१५	-७	९।१५।३३।३३	१०१	४।००।३८।५२	७	७।१८।१७।४३	६६	११।१५।०३।०८	४	९।२७।३८।३६	२:३१	४:५६
१३	बु.	२।००।५५।३८	९०६	४।१५।३६।१०	-८	९।१७।१४।३८	१०१	४।००।३२।२०	७	७।१९।२३।४४	६६	११।१५।०७।१३	४	९।२७।३५।२५	३:४०	६:०४
१४	गु.	२।१६।०१।३९	९१२	४।१५।२८।१६	-९	९।१८।५५।२५	१००	४।००।२५।४०	७	७।२०।२९।५८	६६	११।१५।११।२२	४	९।२७।३२।१४	४:५४	७:०५
१५	शु.	३।०१।१४।०१	९०९	४।१५।१९।३४	-१०	९।२०।३५।४४	१००	४।००।१८।५४	७	७।२१।३६।२५	६७	११।१५।१५।३७	४	९।२७।२९।०३	६:०९	७:५७

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

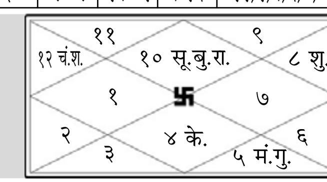
दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	धनुषे	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
०८ जन	५:२७	७:३३	९:२०	१०:५३	१२:२३	२:०३	४:०२	६:१६	८:३२	१०:४५	१२:५६	३:११	९,११,१,२,६,८,
०९ जन	५:२३	७:२९	९:१६	१०:४९	१२:१९	१:६०	३:५८	६:१२	८:२८	१०:४१	१२:५२	३:०७	९,११,१,२,६,८,
१० जन	५:१९	७:२५	९:१२	१०:४५	१२:१५	१:५६	३:५४	६:०८	८:२४	१०:३७	१२:४८	३:०३	११,१,२,७,
११ जन	५:१६	७:२१	९:०८	१०:४१	१२:११	१:५२	३:५०	६:०४	८:२०	१०:३३	१२:४४	२:५९	११,१,२,६,७,
१२ जन	५:१२	७:१७	९:०४	१०:३७	१२:०७	१:४८	३:४६	५:६०	८:१७	१०:२९	१२:४०	२:५५	११,१,२,६,७,
१३ जन	५:०८	७:१३	८:६०	१०:३३	१२:०३	१:४४	३:४२	५:५६	८:१३	१०:२५	१२:३६	२:५१	११,१,२,६,७,
१४ जन	५:०४	७:०९	८:५६	१०:२९	११:६०	१:४०	३:३८	५:५२	८:०९	१०:२१	१२:३२	२:४७	११,१,२,६,७,८,
१५ जन	४:६०	७:०५	८:५२	१०:२५	११:५६	१:३६	३:३४	५:४८	८:०५	१०:१७	१२:२८	२:४३	११,१,७,८,
१६ जन	४:५६	७:०१	८:४८	१०:२१	११:५२	१:३२	३:३०	५:४४	८:०१	१०:१३	१२:२४	२:३९	११,१,७,८,
१७ जन	४:५२	६:५७	८:४४	१०:१७	११:४८	१:२८	३:२६	५:४०	७:५७	१०:०९	१२:२०	२:३५	१,२,७,८,९,
१८ जन	४:४८	६:५३	८:४०	१०:१३	११:४४	१:२४	३:२२	५:३६	७:५३	१०:०५	१२:१६	२:३२	१,२,७,८,
१९ जन	४:४४	६:४९	८:३६	१०:०९	११:४०	१:२०	३:१९	५:३२	७:४९	१०:०१	१२:१२	२:२८	१,७,८,
२० जन	४:४०	६:४६	८:३२	१०:०५	११:३६	१:१६	३:१५	५:२८	७:४५	९:५७	१२:०९	२:२४	१,६,७,८,
२१ जन	४:३६	६:४२	८:२८	१०:०१	११:३२	१:१२	३:११	५:२४	७:४१	९:५३	१२:०५	२:२०	११,१,२,६,७,८,
२२ जन	४:३२	६:३८	८:२४	९:५७	११:२८	१:०८	३:०७	५:२१	७:३७	९:४९	१२:०१	२:१६	११,१,२,६,७,८,

तिथि १
शुक्रवार
इष्ट ०।०



मकर संक्रान्ति फलम्- पौष शुक्ल ६ गुरुवासरे रात्रि ९:१८ समये मकरसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल परादिवसे। वार नाम मंदा संज्ञक संक्रांति बुद्धिजीवी वर्ग, लेखको, अध्यापकों, व्राम्हणों, वैज्ञानिकों आदि को शुभद है। तस्य काले उ.भा नक्षत्र नाम मन्दा संज्ञक संक्रांति बुद्धिजीवीयो को सुखद। ४५ अनाज मूल्य में गिरावट संकेतक। गर करण फल- हस्ती वाहनं, गदर्भ उपवाहनं, रक्त वस्त्रं, धनुष आयुधं, लोह पात्रं, पय भक्षणं, गोरोचन लेपनं, पशु वर्ण, विल्व पुष्पं, मुकुट भूषणं, श्वेत कंचुकी, प्रौढा अवस्था, उपविष्टा स्थिति। अन्नादि में स्थिर भाव सूचक। दो माह तक निज कुल या पडौसी देशों में विरोध रहेगा। ओले गिरने से चना मसूर की फसलौं में नुकसान के संकेत। पौषशुक्ल ७ श्रवणे बुध - श्रुतौगुड़ातसीधान्यचणकेषुहिमाद्भयम्।। श्रवण में हो तो गुड़ अलसी और चणे आदि धान्य में बर्फ ओले गिरने का भय हो। माघकृष्ण १ धनिष्ठायां बुध - वासवेतुगवांपीड़ाबारुणेशूद्ररोगता। धनिष्ठा में गायों को पीड़ा हो।

तिथि ७
शुक्रवार
इष्ट ०।०



110 माघ कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शक: १९४८। रौद्र संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। शिशिर ऋतु:। श्री सूर्य उत्तरायन-दक्षिणगोले। जनवरी-फरवरी ईसवी सन् २०२७। जनवरी-फरवरी। वंगला सन् १४३३ । वीर निर्वाण संवत् २५५३।

१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रात: एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे:। शुक्र उदयपूर्वे: । मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रात:	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-उत्तराषाढ़े रवि:, पूर्वाफाल्गुण्यां भौम:, श्रवणे वुध:, मघायां गुरौ, ज्येष्ठायां शुक्र:, उत्तरभाद्रपदे शनि:, धनिष्ठायां राहु, आश्लेषायां केतु।
१	श.	१७।५८	दि.२:१८	पुष्य, श्ले	१:७।५४:३८	प्रा. ७:३४, रा.४:५८	प्रीति, आयु	६।२८, ५९।५५	दि.९:४२, रा.७:०५	कौल	१७।५८	दि.२:१८	तैति	कर्क	५४।३८	रा. ४:५८ तक	२७।०५	७:७	५:५७	९।०८।३३।३७	६१	मित्र	२३ जन	मूल प्रात: ७:३४ से रातअंत। शनि पुष्य योग सू उ से प्रात: ७:३४ तक। धनिष्ठायां वुध: रात्रि १०:५० समये।
२	र.	९।५२	दि.११:०३	मघा	४९।१३	रा. २:४७	सौभ	४७।३८	रा.२:१०	गर	९।५२	दि.११:०३	वणि	सिंह	--	दिनरात	२७।०७	७:६	५:५७	९।०९।३४।३८	६१	मुद्गर	२४ जन	मूल सू.उ.से रात २:४७ तक। भद्रा रात्रि ९:३८ से रात्रिअंत (भूमि)। श्रवणे रवि सायं ५:०५ समये। गुरु कर्के रात्रि १२:०८ समये। आश्लेषायां (A)
३,४	चं.	२।५२, ५७।२०	दि.८:१५,रा ६:०२	पू.फा.	४५।११	रा. १:१०	शोभ	३९।४९	रा.११:०२	भद्रा	२।५२	दि.८:१५	बव	सिंह	५९।१५	रा. ६:४८ तक	२७।१०	७:६	५:५८	९।१०।३५।३९	६१	ध्वज	२५ जन	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। ० भद्रा सू.उ.से दिन ८:१५(भूमि)।
५	मं.	५३।४८	रा.४:३७	उ.फा.	४२।४९	रा. १२:१३	अति	३३।२०	रा.८:२६	कौल	२५।३४	सा.५:१९	तैति	कन्या	--	दिनरात	२७।१२	७:६	५:५९	९।११।३६।३८	६१	धाता	२६ जन	गणतंत्र दिवस। (A) गुरु रात्रि १२:०८ समये।
६	बु.	५२।०७	रा.३:५७	हस्त	४२।११	रा. १२:०१	सुक	२८।१९	सा.६:२५	गर	२२।५१	दि.४:१४	वणि	कन्या	××	दिनरात	२७।१५	७:६	५:५९	९।१२।३७।३७	६१	आनंद	२७ जन	रवियोग रात्रि १२:०१ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १२:०१ पर्यन्त। भद्रा रात्रि ३:५७ से रात्रिअंत (पाताल)। कुंभे बुध: रात्रि ३:३६ समये।
७	गु.	५२।२६	रा.४:०४	चित्रा	४३।४६	रा. १२:३६	धृति	२४।५२	सा.५:०२	भद्रा	२२।८	दि.३:५७	बव	कन्या	१२।४५	दि. १२:११ तक	२७।१७	७:५	६:०	९।१३।३८।३५	६१	चर	२८ जन	रवियोग सू.उ.से रात्रि १२:३६ तक । भद्रा सू.उ.से दिन ३:५७(पाताल)।
८	शु.	५४।४०	रा.४:५७	स्वा	४७।५	रा. १:५५	शूल	२२।५७	दि.४:१६	बाल	२३।२६	दि.४:२७	कौल	तुला	××	दिनरात	२७।२०	७:५	६:१	९।१४।३९।३२	६१	गद	२९ जन	कालाष्टमी व्रतं। शुक्र: धनुषे मूलेश्च सायं ६:४२ समये।
९	श.	५८।३६	रा.६:३१	विशा	५२।५	रा. ३:५४	गंड़	२२।२६	दि.४:०३	तैति	२६।३४	सा.५:४२	गर	तुला	३५।४५	रा. ९:२३ तक	२७।२२	७:५	६:१	९।१५।४०।२८	६१	शुभ	३० जन	क्रांतिसाम्य दिन १०:३१ से दिन ३:०१। क्रांतिसाम्य दिन १०:३१ से दिन ३:०१।
१०	र.	६०।००	वृद्धि	अनु	५८।२४	रा. ६:२६	बृद्धि	२३।६	दि.४:१९	वणि	२७।२०	रा ७:३४	भद्रा	वृश्चिक	××	दिनरात	२७।२५	७:४	६:२	९।१६।४१।२३	६१	मृत्यु	३१ जन	मूल रात ६:२६ से रातअंत। भद्रा रात्रि ७:३४ से रा.अंत (स्वर्ग)। मघायां भौम: दिन ३:५२ समये।
१०	चं.	३।५७	दि.८:३९	ज्ये	६०।०	वृद्धि	ध्रुव	२४।४०	दि.४:५६	भद्रा	३।५७	दि.८:३९	बव	वृश्चिक	××	दिनरात	२७।२७	७:४	६:३	९।१७।४२।१७	६१	पद्म	०१ फर	मूल दिनरात। भद्रा सू.उ.से दिन ८:३९(स्वर्ग)। शतभिषायां वुध: रात्रि १:१२ समये।
११	मं.	१०।१२	दि.११:०८	ज्ये	५।४१	दि. ९:२०	व्या	२६।४८	सा.५:४७	बाल	१०।१२	दि.११:०८	कौल	वृश्चिक	५।४१	दि. ९:२० तक	२७।३०	७:३	६:३	९।१८।४३।१०	६१	मुद्गर	०२ फर	षट्तिला एकादशी व्रत सर्वे। मूल दिनरात। (B) वजे तक। धनिष्ठायां रवि रात्रि ८:१५ समये।
१२	बु.	१६।५५	दि.१:४९	मूल	१३।२५	दि. १२:२५	हर्ष	२९।१३	सा.६:४४	तैति	१६।५५	दि.१:४९	गर	धनु	××	दिनरात	२७।३३	७:३	६:४	९।१९।४४।०२	६१	ध्वज	०३ फर	बुधप्रदोष व्रतं। मूल सू.उ.से दिन १२:२५ तक।
१३	गु.	२३।३९	दि.४:३०	पू.षा	२१।१३	दि. ३:३२	वज्र	३१।३७	रा.७:४१	वणि	२३।३९	दि.४:३०	भद्रा	धनु	३८।०८	रा. १०:१८ तक	२७।३६	७:२	६:५	९।२०।४४।५३	६१	धाता	०४ फर	मासिक शिवरात्रि व्रतं। भद्रा दिन ४:३० से रात्रि ५:५० (पाताल)।
१४	शु.	३०।०५	रा.७:०४	उ.षा	२८।४४	सा. ६:३१	सिद्धि	३३।४७	रा.८:३३	शकु	३०।५	रा ७:०४	चतु	मकर	××	दिनरात	२७।३९	७:२	६:५	९।२१।४५।४२	६१	आनंद	०५ फर	सर्वार्थसिद्धी सायं ६:३१ से रातअंत। व्यतिपात् रा.८:३३ वजे तक। से रातअंत।
३०	श.	३५।५६	रा.९:२४	श्रव	३५।४२	रा. ९:१८	व्यति	३५।२९	रा.९:१३	चतु	३।९	दि.८:१७	नाग	मकर	××	दिनरात	२७।४१	७:२	६:६	९।२२।४६।३१	६१	स्थिर	०६ फर	शनिचरी अमावस्या। विधि पूजन, कलियुगादि तिथि।मौनी अमावस्या। सूर्य ग्रहण। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ९:१८ पर्यन्त। व्यतिपात् सू.उ.से रा.९:१३ (B)

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-२२

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय	
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	उदय दिन	अस्त रात
१	श.	३।१६।२३।१४	८९७	४।१५।१०।४	-१०	९।२२।१५।२२	९९	४।००।१२।०१	७	७।२२।४३।०५	६७	११।१५।१९।५८	४	९।२७।२५।५३	७:१९	८:१७
२	र.	४।०१।२०।१७	८७८	४।१४।५९।४६	-११	९।२३।५४।५	९८	४।००।०५।०२	७	७।२३।४९।५७	६७	११।१५।२४।२३	५	९।२७।२२।४२	८:२५	८:५९
३,४	चं.	४।१५।५७।४८	८५३	४।१४।४८।४०	-१२	९।२५।३१।३५	९६	३।२९।५७।५७	७	७।२४।५७।०१	६७	११।१५।२८।५३	५	९।२७।१९।३१	९:२५	९:३६
५	मं.	५।००।१०।४३	८२६	४।१४।३६।४८	-१३	९।२७।७।३४	९४	३।२९।५०।४६	७	७।२६।०४।१६	६७	११।१५।३३।२९	५	९।२७।१६।२०	१०:२२	१०:०९
६	बु.	५।१३।५६।३६	७९९	४।१४।२४।१९	-१३	९।२८।४१।३९	९२	३।२९।४३।२९	७	७।२७।११।४२	६८	११।१५।३८।०९	५	९।२७।१३।१०	११:१६	१०:४२
७	गु.	५।२७।१५।२८	७७४	४।१४।१०।४३	-१४	१०।०।१३।२२	८९	३।२९।३६।०८	७	७।२८।१९।१९	६८	११।१५।४२।५४	५	९।२७।०९।५९	१२:०९	११:१५
८	शु.	६।१०।०९।२६	७५२	४।१३।५६।३३	-१५	१०।१।४२।१६	८५	३।२९।२८।४२	८	७।२९।२७।०७	६८	११।१५।४७।४४	५	९।२७।०६।४८	१:०२	११:४९
९	श.	६।२२।४९।५४	७३५	४।१३।४१।३८	-१६	१०।३।७।४५	८१	३।२९।२१।११	८	८।००।३५।०४	६८	११।१५।५२।३८	५	९।२७।०३।३७	१:५४	१२:२८
१०	र.	७।०४।५७।०५	७२२	४।१३।२५।५९	-१६	१०।४।२९।१४	७७	३।२९।१३।३६	८	८।०१।४३।१२	६८	११।१५।५७।३७	५	९।२७।००।२७	२:४६	१:०९
१०	चं.	७।१६।५९।२१	७१४	४।१३।९।३८	-१७	१०।५।४६।२	७१	३।२९।०५।५८	८	८।०२।५१।२८	६८	११।१६।०२।४१	५	९।२६।५७।१६	३:३६	१:५५
११	मं.	७।२८।५२।५७	७०९	४।१२।५२।३६	-१८	१०।६।५७।२६	६५	३।२८।५८।१६	८	८।०३।५९।५४	६९	११।१६।०७।४९	५	९।२६।५४।०५	४:२४	२:४५
१२	बु.	८।१०।४१।४६	७०७	४।१२।३४।५४	-१८	१०।८।२।४०	५८	३।२८।५०।३०	८	८।०५।०८।२८	६९	११।१६।१३।०२	५	९।२६।५०।५४	५:०७	३:३६
१३	गु.	८।२२।२९।१६	७०९	४।१२।१६।३४	-१९	१०।९।०।५६	५१	३।२८।४२।४३	८	८।०६।१७।११	६९	११।१६।१८।१९	५	९।२६।४७।४४	५:४७	४:२८
१४	शु.	९।०४।१८।२७	७१३	४।११।५७।३६	-२०	१०।९।५१।२७	४२	३।२८।३४।५२	८	८।०७।२६।०२	६९	११।१६।२३।४१	५	९।२६।४४।३३	६:२४	५:२१
३०	श.	९।१६।११।५१	७२०	४।११।३८।३	-२०	१०।१०।३३।२६	३३	३।२८।२६।६०	८	८।०८।३५।०१	६९	११।१६।२९।०७	५	९।२६।४१।२२	××	६:१३

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

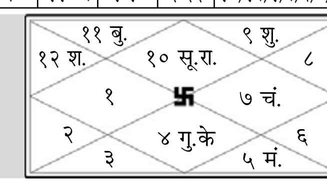
दिनांक	प्रात: पूर्व	प्रात:	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२३ जन	६:३४	८:२०	९:५३	११:२४	१:०४	३:०३	५:१७	७:३३	९:४६	११:५७	२:१२	४:२८	११,१,७,८,
२४ जन	६:३०	८:१६	९:४९	११:२०	१:००	२:५९	५:१३	७:२९	९:४२	११:५३	२:०८	४:२४	११,१,७,८,
२५ जन	६:२६	८:१२	९:४५	११:१६	१२:५६	२:५५	५:०९	७:२५	९:३८	११:४९	२:०४	४:२०	१०,१२,१,६,७,८,
२६ जन	६:२२	८:०९	९:४२	११:१२	१२:५३	२:५१	५:०५	७:२१	९:३४	११:४५	१:६०	४:१६	१०,१२,१,६,७,८,
२७ जन	६:१८	८:०५	९:३८	११:०८	१२:४९	२:४७	५:०१	७:१७	९:३०	११:४१	१:५६	४:१२	१०,१२,१,२,६,७,८,
२८ जन	६:१४	८:०१	९:३४	११:०४	१२:४५	२:४३	४:५७	७:१३	९:२६	११:३७	१:५२	४:०८	१०,१२,१,२,७,८,
२९ जन	६:१०	७:५७	९:३०	११:००	१२:४१	२:३९	४:५३	७:१०	९:२२	११:३३	१:४८	४:०५	१०,१२,१,२,६,७,८,९
३० जन	६:०६	७:५३	९:२६	१०:५६	१२:३७	२:३५	४:४९	७:०६	९:१८	११:२९	१:४४	४:०१	१०,११,१२,१,२,३,६,७,८,
३१ जन	६:०२	७:४९	९:२२	१०:५३	१२:३३	२:३१	४:४५	७:०२	९:१४	११:२५	१:४०	३:५७	१०,१२,१,२,६,७,८,
०१ फर	५:५८	७:४५	९:१८	१०:४९	१२:२९	२:२७	४:४१	६:५८	९:१०	११:२१	१:३६	३:५३	१०,१२,१,२,६,७,८,
०२ फर	५:५४	७:४१	९:१४	१०:४५	१२:२५	२:२३	४:३७	६:५४	९:०६	११:१७	१:३२	३:४९	१०,१२,१,२,३,६,७,८
०३ फर	५:५०	७:३७	९:१०	१०:४१	१२:२१	२:१९	४:३३	६:५०	९:०२	११:१३	१:२८	३:४५	१०,११,१२,१,२,३,६,७,८
०४ फर	५:४६	७:३३	९:०६	१०:३७	१२:१७	२:१५	४:२९	६:४६	८:५८	११:०९	१:२५	३:४१	१०,१२,१,२,६,७,८,
०५ फर	५:४२	७:२९	९:०२	१०:३३	१२:१३	२:१२	४:२५	६:४२	८:५४	११:०५	१:२१	३:३७	१०,१२,१,२,६,७,८,
०६ फर	५:३८	७:२५	८:५८	१०:२९	१२:०९	२:०८	४:२१	६:३८	८:५०	११:०२	१:१७	३:३३	१०,१२,१,२,६,७,८,

तिथि १
शनिवार
इष्ट ०।०



माघकृष्ण १० मघायां भौम तिल मूंग नष्ट। माघकृष्ण १ धनिष्ठायां बुध - वासवेतुगवांपीड़ाबारुणेशूद्ररोगता। धनिष्ठा में गायों को पीड़ा हो। माघकृष्ण १० शतभिषायां बुध - शतभिषा में शूद्रों में रोग हो।

तिथि ९
शनिवार
इष्ट ०।०



१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपूर्वे:। शुक्र उदयपूर्वे: । मूल निवास स्वर्गे
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-धनिष्ठायां रविः, मघायां भौमः, शतभिषायां वुधः, आश्लेषायां गुरौ, मूले शुक्रः, उत्तरभाद्रपदे शनिः, धनिष्ठायां राहु, आश्लेषायां केतु।
१	र.	४१।०१	रा.११:२५	धनि	४१।५६	रा. ११:४७	वरी	३६।३७	रा.९:४०	किंस	८।३७	दि.१०:२८	बव	मकर	८।५७	दि. १०:३६ तक	२७।४४	७:१	६:७	९।२३।४७।१८	६१	मातंग	०७ फर	गुप्त नवरात्रि प्रारंभ। पंचक प्रारंभ दि. १०:३६ तक समये। रेवत्यां शनि रात्रि ६:१६ समये।
२	चं.	४५।१०	रा.१:०४	शत	४७।१८	रा. १:५६	परि	३७।४	रा.९:५०	बाल	१३।१३	दि.१२:१८	कौल	कुंभ	--	दिनरात	२७।४७	७:०	६:७	९।२४।४८।०४	६१	अमृत	०८ फर	पंचक दिनरात।
३	मं.	४८।१७	रा.२:१९	पू.भा	५१।४१	रा. ३:४०	शिव	३६।४५	रा.९:४२	तैति	१६।५०	दि.१:४४	गर	कुंभ	३५।३८	रा. ९:१५ तक	२७।५०	६:६०	६:८	९।२५।४८।४८	६१	काण	०९ फर	गुड़-लवण दान व्रत। पंचक दिनरात। रवियोग रात्रि ३:४० से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ३:४० से रातअंत।
४	बु.	५०।१५	रा.३:०५	उ.भा	५४।५७	रा. ४:५८	सिद्ध	३५।३५	रा.९:१३	वणि	१९।२२	दि.२:४४	भद्रा	मीन	--	दिनरात	२७।५३	६:५९	६:९	९।२६।४९।३२	६१	लुंबक	१० फर	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। वरदा ४ दुण्ढिपूजन। पंचक दिनरात। मूल रात ४:५८ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से रात्रि ४:५८ तक । भद्रा दिन (A)
५	गु.	५०।५७	रा.३:२२	रेव	५७।१	रा. ५:४७	साध्य	३३।२८	रा.८:२२	बव	२०।४२	दि.३:१६	बाल	मीन	५७।०१	रा. ५:४७ तक	२७।५६	६:५९	६:९	९।२७।५०।१४	६१	मित्र	११ फर	वसन्तपंचमी, सरस्वती जयंती, श्री पंचमी। पंचक समाप्त रा. ५ :४७ समये। मूल दिनरात। रवियोग रात्रि ५:४७ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिनरात।
६	शु.	५०।१७	रा.३:०५	अश्वि	५७।४४	रा. ६:०४	शुभ	३०।१९	रा.७:०६	कौल	२०।४४	दि.३:१६	तैति	मेष	××	दिनरात	२७।५९	६:५८	६:१०	९।२८।५०।५४	६१	वज्र	१२ फर	मन्दार षष्ठी, दारिद्रहरण व्रतारम्भ। मूल सू.उ.से रात ६:०४ तक। रवियोग सू.उ.से रात्रि ६:०४ तक। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ६:०४ पर्यन्त। क्रांतिसाम्य (B)
७	श.	४८।१०	रा.२:१३	भर	५७।२	रा. ५:४६	शुक्ल	२६।५	सा.५:२४	गर	१९।२१	दि.२:४२	वणि	मेष	××	दिनरात	२८।०२	६:५७	६:१०	९।२९।५१।३४	६१	ध्वांक्ष	१३ फर	नर्मदा जयंती। भानु सप्तमी, अचला सप्तमी, मन्वादितिथि। ज्वालामुखीयो रात्रि ५:४६ से रातअंत। भद्रा रात्रि २:१३ से रात्रिअंत (स्वर्ग)। कुंभे रवि (C)
८	र.	४४।३६	रा.१२:४७	कृत्ति	५४।५५	रा. ४:५५	ब्रह्म	२०।४४	दि.३:१४	भद्रा	१६।३२	दि.१:३४	बव	मेष	११।३३	दि. ११:३४ तक	२८।०५	६:५७	६:११	१०।००।५२।११	६१	धूम्र	१४ फर	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। भीष्म अष्टमी। रवियोग रात्रि ४:५५ से रात्रिअंत। ज्वालामुखी योग सू.उ. से रात्रि १२:४७। ज्वालामुखीयो रात्रि ४:५५ से (D)
९	चं.	३९।४०	रा.१०:४८	रोहि	५१।२८	रा. ३:३१	ऐंद्र	१४।१६	दि.१२:३९	बाल	१२।२०	दि.११:५२	कौल	वृष	××	दिनरात	२८।०८	६:५६	६:१२	१०।०१।५२।४८	६१	प्रवर्ध	१५ फर	महानंदा नवमी। रवियोग सू.उ.सेरात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ३:३१ पर्यन्त। अमृतसिद्धि रात्रि ३:३१ से रातअंत। ज्वालामुखी योग सू.उ. से रात्रि (E)
१०	मं.	३३।३४	रा.८:२१	मृग	४६।५३	रा. १:४१	वैधृ	६।४९	दि.९:३९	तैति	६।५१	दि.९:४०	गर	वृष	१९।१६	दि. २:३८ तक	२८।१२	६:५५	६:१२	१०।०२।५३।२२	६१	राक्षस	१६ फर	रवियोग सू.उ.से रात्रि १:४१ तक । वैघृति सू.उ.से दि.९:३९ वजे तक।।
११	बु.	२६।३२	सा.५:३२	आर्द्रा	४१।२६	रा. ११:२९	प्रीति	४९।२०	रा.२:३९	वणि	०।१७	प्रा.७:०२	भद्रा	मिथुन	××	दिनरात	२८।१५	६:५५	६:१३	१०।०३।५३।५६	६१	मुसल	१७ फर	जया एकादशी व्रत सर्वे। भद्रा प्रातः ७:०२ से सायं ५:३२ (स्वर्ग)। धनिष्ठायां वुधः रात्रि ९:४८ समये।
१२	गु.	१८।५१	दि.२:२७	पुन	३५।२६	रा. ९:०५	आयु	३९।५०	रा.१०:५०	बाल	१८।५१	दि.२:२७	कौल	मिथुन	२१।५९	दि. ३:४२ तक	२८।१८	६:५४	६:१३	१०।०४।५४।२८	६१	सिद्धि	१८ फर	गुरु प्रदोष व्रतं। तिल द्वादशी, भीष्म द्वादशी। रवियोग रात्रि ९:०५ से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ९:०५ पर्यन्त। अमृतसिद्धि रात्रि ९:०५ से (F)
१३	शु.	१०।४८	दि.११:१३	पुष्य	२९।१३	सा. ६:३५	सौभ	३०।१२	सा.६:५८	तैति	१०।४८	दि.११:१३	गर	कर्क	××	दिनरात	२८।२१	६:५३	६:१४	१०।०५।५४।५८	६०	उत्पात	१९ फर	दिनत्रय व्रतारंभ। मूल सायं. ६:३५ से रातअंत। रवियोग सू.उ.से सायं ६:३५ तक , पुनः रात्रि १२:४६ से रात्रिअंत। शुक्र पुष्य योग सूउ से सायं (G)
१४,१५	श.	२।४२, ५४।५४	प्रा.७:५८,रा ४:४१	श्ले	२३।७	दि. ४:०८	शोभ	२०।४०	दि.३:०९	वणि	२।४२	प्रा.७:५८	भद्रा	कर्क	२३।०७	दि. ४:०८ तक	२८।२४	६:५३	६:१४	१०।०६।५५।२७	६०	मानस	२० फर	माघी पूर्णिमा। संत रविदास जयंती, संत बुखारदास मेलारंभ। चैतन्य महाप्रभु ज.। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से दिन ४:०८ तक । भद्रा प्रातः (H)

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-२५

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	र.	९।२८।११।३१	७२८	४।११।१७।५७	-२१	१०।११।६।११	२३	३।२८।१९।०६	८	८।०९।४४।०८	६९	११।१६।३४।३६	६	९।२६।३८।११	६:५८	६:३५
२	चं.	१०।१०।१९।०६	७३७	४।१०।५७।१९	-२१	१०।११।२९।३	१२	३।२८।११।१०	८	८।१०।५३।२२	६९	११।१६।४०।१०	६	९।२६।३५।०१	७:३१	७:२८
३	मं.	१०।२२।३६।०२	७४८	४।१०।३६।११	-२२	१०।११।४१।३३	२	३।२८।०३।१३	८	८।१२।०२।४३	६९	११।१६।४५।४८	६	९।२६।३१।५०	८:०४	८:२२
४	बु.	११।०५।०३।४४	७६०	४।१०।१४।३६	-२२	१०।११।४३।२०	-९	३।२७।५५।१६	८	८।१३।१२।११	७०	११।१६।५१।३०	६	९।२६।२८।३९	८:३७	९:१८
५	गु.	११।१७।४३।५३	७७५	४।९।५२।३६	-२२	१०।११।३४।१८	-२०	३।२७।४७।१९	८	८।१४।२१।४७	७०	११।१६।५७।१६	६	९।२६।२५।२९	९:१२	१०:१६
६	शु.	०।००।३८।३०	७९१	४।९।३०।१३	-२३	१०।११।१४।३४	-३०	३।२७।३९।२१	८	८।१५।३१।२८	७०	११।१७।०३।०६	६	९।२६।२२।१८	९:५१	११:१७
७	श.	०।१३।४९।५०	८१०	४।९।७।२९	-२३	१०।१०।४४।३४	-४०	३।२७।३१।२४	८	८।१६।४१।१६	७०	११।१७।०८।६०	६	९।२६।१९।०७	१०:३४	१२:२२
८	र.	०।२७।२०।०२	८३०	४।८।४४।२७	-२३	१०।१०।५।१	-४८	३।२७।२३।२८	८	८।१७।५१।१०	७०	११।१७।१४।५७	६	९।२६।१५।५७	११:२३	१:३०
९	चं.	१।११।१०।२७	८५१	४।८।२१।१०	-२४	१०।९।१६।५४	-५५	३।२७।१५।३२	८	८।१९।०१।१०	७०	११।१७।२०।५८	६	९।२६।१२।४६	१२:१९	२:३९
१०	मं.	१।२५।२१।०४	८६९	४।७।५७।४०	-२४	१०।८।२१।३१	-६१	३।२७।०७।३९	८	८।२०।११।१६	७०	११।१७।२७।०२	६	९।२६।०९।३५	१:२३	३:४६
११	बु.	२।०९।५०।०१	८८३	४।७।३३।६०	-२४	१०।७।२०।२५	-६५	३।२६।५९।४७	८	८।२१।२१।२७	७०	११।१७।३३।१०	६	९।२६।०६।२४	२:३२	४:४८
१२	गु.	२।२४।३३।१७	८९२	४।७।१०।१२	-२४	१०।६।१५।१५	-६७	३।२६।५१।५७	८	८।२२।३१।४४	७०	११।१७।३९।२१	६	९।२६।०३।१४	३:४४	५:४३
१३	शु.	३।०९।२५।०३	८९३	४।६।४६।१९	-२४	१०।५।७।५०	-६८	३।२६।४४।०९	८	८।२३।४२।०६	७०	११।१७।४५।३६	६	९।२६।००।०३	४:५५	६:३०
१४,१५	श.	३।२४।१८।१२	८८७	४।६।२२।२५	-२४	१०।३।५९।५५	-६७	३।२६।३६।२५	८	८।२४।५२।३३	७१	११।१७।५१।५४	६	९।२५।५६।५२	६:०२	७:११

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	मकरे	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
०७ फर	५:३५	७:२१	८:५४	१०:२५	१२:०५	२:०४	४:१७	६:३४	८:४६	१०:५८	१:१३	३:२९	१०,११,१२,१,२,६,७,८,९
०८ फर	५:३१	७:१७	८:५०	१०:२१	१२:०१	१:६०	४:१४	६:३०	८:४२	१०:५४	१:०९	३:२५	१०,१२,१,२,६,७,८,९
०९ फर	५:२७	७:१३	८:४६	१०:१७	११:५७	१:५६	४:१०	६:२६	८:३९	१०:५०	१:०५	३:२१	१०,१२,१,२,३,६,७,८,
१० फर	५:२३	७:०९	८:४२	१०:१३	११:५३	१:५२	४:०६	६:२२	८:३५	१०:४६	१:०१	३:१७	१०,१२,१,२,३,६,७,८,
११ फर	५:१९	७:०५	८:३८	१०:०९	११:४९	१:४८	४:०२	६:१८	८:३१	१०:४२	१२:५७	३:१३	१०,११,१२,१,२,३,६,७,८,
१२ फर	५:१५	७:०२	८:३५	१०:०५	११:४६	१:४४	३:५८	६:१४	८:२७	१०:३८	१२:५३	३:०९	१०,११,१२,१,२,३,६,७,८,
१३ फर	५:११	६:५८	८:३१	१०:०१	११:४२	१:४०	३:५४	६:१०	८:२३	१०:३४	१२:४९	३:०५	१०,१२,१,२,३,६,७,८,९,
१४ फर	५:०७	६:५४	८:२७	९:५७	११:३८	१:३६	३:५०	६:०६	८:१९	१०:३०	१२:४५	३:०१	१२,१,२,६,७,८,९,१०,
१५ फर	५:०३	६:५०	८:२३	९:५३	११:३४	१:३२	३:४६	६:०३	८:१५	१०:२६	१२:४१	२:५८	१२,१,२,३,६,७,८,९,१०
१६ फर	४:५९	६:४६	८:१९	९:४९	११:३०	१:२८	३:४२	५:५९	८:११	१०:२२	१२:३७	२:५४	१२,१,२,३,६,७,८,९,१०
१७ फर	४:५५	६:४२	८:१५	९:४६	११:२६	१:२४	३:३८	५:५५	८:०७	१०:१८	१२:३३	२:५०	१२,१,२,३,६,७,८,९,१०
१८ फर	४:५१	६:३८	८:११	९:४२	११:२२	१:२०	३:३४	५:५१	८:०३	१०:१४	१२:२९	२:४६	१२,१,२,६,७,८,९,१०
१९ फर	४:४७	६:३४	८:०७	९:३८	११:१८	१:१६	३:३०	५:४७	७:५९	१०:१०	१२:२५	२:४२	१२,१,२,६,७,८,९,१०
२० फर	४:४३	६:३०	८:०३	९:३४	११:१४	१:१२	३:२६	५:४३	७:५५	१०:०६	१२:२१	२:३८	१२,१,२,३,६,७,८,९,१०

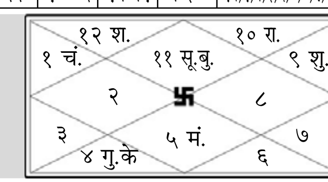
तिथि १
रविवार
इष्ट ०।०



कुंभ संक्रान्ति फलम्- माघ शुक्ल ७ शनिवासरे दिन १०:१८ समये कुंभसंक्रान्ति प्रवेशः तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम राक्षसी संज्ञक संक्रांति दुष्ट वर्ग को सुखकारी है। तस्य काले भरनक्षत्र नाम घोरा संज्ञक संक्रांति निर्धनवर्ग को सुखद। मुहूर्त्त १५ धान्य मूल्य वृद्धिः संकेत। गर करण फल- हस्ती वाहनं, गदर्भ उपवाहनं, रक्त वस्त्रं, धनुष आयुधं, लोह पात्रं, पय भक्षणं, गोरोचन लेपनं, पशु वर्ण, विल्व पुष्पं, मुकुट भूषणं, श्वेत कंचुकी, प्रौढा अवस्था, उपविष्टा स्थिति। अन्नादि में स्थिर भाव सूचक।० माघशुक्ल ११ धनिष्ठायां बुध - वासवेतुगवांपीड़ाबारुणेशूद्ररोगता। धनिष्ठा में गायों को पीड़ा हो।

(A) २:४४ से रात्रि ३:०५ (भूमि)। बुध वक्री प्रातः -२:५६ समये पूर्वाषाढ़े शुक्रः दिन ९:४१ समये। (B) रात्रि १:०९ से रात्रि ५:२७। क्रांतिसाम्य रात्रि १:०९ से रात्रि ५:२७।
(C) दिन १०:१८ समये। पुण्यकाल आज। बुध अस्त पश्चिमेः सायं ६:५९ समये। (D) रातअंत। भद्रा सू.उ.से दिन १:३४ (स्वर्ग)। (E) १०:४८। वैघृति दि.१२:३९ वजे तक। से रातअंत।
(F) रातअंत। गुरुपुष्य योग रात्रि ९:०५ से रातअंत। (G) ६:३५ तक। शतभिषायां रवि रात्रि १२:४६ समये। (H) ७:५८ से सायं ६:२५ (भूमि)।

तिथि ८
रविवार
इष्ट ०।०



फाल्गुन कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शकः १९४८। रौद्र-दुर्मति संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। वसन्त ऋतुः। श्री सूर्य उत्तरायन-दक्षिणगोले। फरवरी-मार्च ईसवी सन् २०२७। फरवरी-मार्च। वंगला सन् १४३३ । वीर निर्वाण संवत् २५५३।

१६	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमे:। शुक्र उदयपूर्वे: — मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-शतभिषायां रविः, मघायां भौमः, धनिष्ठायां वुधः, आश्लेषायां गुरौ, पूर्वाषाढ़े शुक्रः, रेवत्यां शनिः, धनिष्ठायां राहु, आश्लेषायां केतु।
१	र.	४८।०२	रा.२:०४	मघा	१७।३१	दि. १:५२	अति	११।३०	दि.११:२८	बाल	२१।२८	दि.३:२७	कौल	सिंह	--	दिनरात	२८।२७	६:५२	६:१५	१०।०७।५५।५४	६०	मुद्गर	२१ फर	मूल सू.उ.से दिन १:५२ तक। उत्तराषाढ़े शुक्रः रात्रि ७:२५ समये।
२	चं.	४२।१०	रा.११:४३	पू.फा.	१२।४५	दि. ११:५७	सुक, धृति	२।५७, ५९।५४	दि.८:०२, रा.६:४९	तैति	१४।५७	दि.१२:५०	गर	सिंह	२६।४८	सा. ५:३४ तक	२८।३१	६:५१	६:१५	१०।०८।५६।१९	६०	ध्वज	२२ फर	
३	मं.	३७।४१	रा.९:५५	उ.फा.	९।११	दि. १०:३१	शूल	४९।११	रा.२:३१	वणि	९।३९	दि.१०:४२	भद्रा	कन्या	--	दिनरात	२८।३४	६:५०	६:१६	१०।०९।५६।४३	६०	धाता	२३ फर	भद्रा दिन १०:४२ से रात्रि ९:५५ (पाताल)। मकरे बुधः रात्रि ४:३५ समये।
४	बु.	३४।५३	रा.८:४७	हस्त	७।११	दि. ९:४२	गंड़	४४।१७	रा.१२:३२	बव	५।५५	दि.९:११	बाल	कन्या	३६।५८	रा. ९:३७ तक	२८।३७	६:५०	६:१६	१०।१०।५७।०५	६०	आनंद	२४ फर	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। सर्वार्थसिद्धी दिन ९:४२ पर्यन्त। क्रांतिसाम्य रात्रि ७:२४ से रात्रि ११:३९। क्रांतिसाम्य रात्रि ७:२४ से रात्रि ११:३९। (A)
५	गु.	३३।५८	रा.८:२४	चित्रा	६।५८	दि. ९:३६	बृद्धि	४०।५२	रा.११:१०	कौल	३।६०	दि.८:२५	तैति	तुला	××	दिनरात	२८।४१	६:४९	६:१७	१०।११।५७।२६	६०	चर	२५ फर	
६	शु.	३५।००	रा.८:४८	स्वा	८।४०	दि. १०:१६	ध्रुव	३८।५९	रा.१०:२३	गर	४।४	दि.८:२६	वणि	तुला	५६।०८	रा. ५:१५ तक	२८।४४	६:४८	६:१७	१०।१२।५७।४५	६०	गद	२६ फर	रवियोग दिन १०:१६ से रात्रिअंत। भद्रा रात्रि ८:४८ से रात्रिअंत (पाताल)।
७	श.	३७।५६	रा.९:५७	विशा	१२।१६	दि. ११:४२	व्या	३८।३१	रा.१०:११	भद्रा	६।७	दि.९:१४	बव	वृश्चिक	××	दिनरात	२८।४७	६:४७	६:१८	१०।१३।५८।०२	६०	शुभ	२७ फर	कालाष्टमी व्रतं। रवियोग सू.उ.से दिन ११:४२ तक । त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से दिन ११:४२ तक। भद्रा सू.उ.से दिन ९:१४(स्वर्ग)।
८	र.	४२।३०	रा.११:४६	अनु	१७।३४	दि. १:४८	हर्ष	३९।१८	रा.१०:२९	बाल	९।५८	दि.१०:४५	कौल	वृश्चिक	××	दिनरात	२८।५०	६:४६	६:१८	१०।१४।५८।१७	६०	मृत्यु	२८ फर	सीता अष्टमी। मूल दिन १:४८ से रातअंत।
९	चं.	४८।१९	रा.२:०५	ज्ये	२४।११	दि. ४:२६	वज्र	४१।२	रा.११:१०	तैति	१५।१६	दि.१२:५२	गर	वृश्चिक	२४।११	दि. ४:२६ तक	२८।५४	६:४५	६:१९	१०।१५।५८।३१	६०	पद्म	०१ मार्च	मूल दिनरात।
१०	मं.	५४।५२	रा.४:४१	मूल	३१।४१	रा. ७:२५	सिद्धि	४३।२१	रा.१२:०५	वणि	२१।३२	दि.३:२१	भद्रा	धनु	××	दिनरात	२८।५७	६:४५	६:१९	१०।१६।५८।४३	६०	छत्र	०२ मार्च	मूल सू.उ.से रात ७:२५ तक। भद्रा दिन ३:२१ से रात्रि ४:४१ (पाताल)। व्यतिपात् रा.१२:०५ वजे तक। से रातअंत।
११	बु.	६०।००	वृद्धि	पू.षा	३९।३०	रा. १०:३२	व्यति	४५।५३	रा.१:०५	बव	२६।३७	सा.६:०१	बाल	धनु	५६।२८	रा. ५:१९ तक	२९।००	६:४४	६:२०	१०।१७।५८।५३	६०	श्रीवत्स	०३ मार्च	विजया एकादशी व्रत स्मार्त्त। व्यतिपात् सू.उ.से रा.१:०५ वजे तक। । बुध मार्गी सायं ६:२० समये
११	गु.	१।३७	प्रा.७:२१	उ.षा	४७।९	रा. १:३४	वरी	४८।१३	रा.२:००	बाल	१।३७	प्रा.७:२१	कौल	मकर	××	दिनरात	२९।०४	६:४३	६:२०	१०।१८।५९।०१	६०	सौम्य	०४ मार्च	विजया एकादशी व्रत वैष्णव। श्रवणे शुक्रः रात्रि १:४० समये।
१२	शु.	७।५६	दि.९:५२	श्रव	५४।१०	रा. ४:२२	परि	५०।३	रा.२:४३	तैति	७।५६	दि.९:५२	गर	मकर	××	दिनरात	२९।०७	६:४२	६:२१	१०।१९।५९।०८	६०	धूम्र	०५ मार्च	शुक्रप्रदोष व्रतं। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ४:२२ पर्यन्त। पूर्वभाद्रपदे रवि प्रातः ७:०३ समये।
१३	श.	१३।२५	दि.१२:०३	धनि	६०।०	वृद्धि	शिव	५१।५	रा.३:०७	वणि	१३।२५	दि.१२:०३	भद्रा	मकर	२७।१२	सा. ५:३४ तक	२९।११	६:४१	६:२१	१०।२०।५९।१२	६०	प्रवर्ध	०६ मार्च	महाशिवरात्रि व्रतं। पंचक प्रारंभ सा. ५:३४ तक समये। भद्रा दिन १२:०३ से रात्रि १२:५९ (पाताल)।
१४	र.	१७।४५	दि.१:४६	धनि	०।१०	प्रा. ६:४४	सिद्ध	५१।१०	रा.३:०८	शकु	१७।४५	दि.१:४६	चतु	कुंभ	××	दिनरात	२९।१४	६:४०	६:२२	१०।२१।५९।१५	६०	मातंग	०७ मार्च	रौद्र संवत्सर समाप्त दि.३:०५ वजे। दुर्मति प्रारंभ। रौद्र संवत्सर समाप्त दि.३:०५ वजे। दुर्मति प्रारंभ। पंचक दिनरात।
३०	चं.	२०।४८	दि.२:५८	शत	४।५३	दि. ८:३६	साध्य	५०।१५	रा.२:४५	नाग	२०।४८	दि.२:५८	किंस्तु	कुंभ	५२।३६	रा. ३:४२ तक	२९।१७	६:३९	६:२२	१०।२२।५९।१६	६०	अमृत	०८ मार्च	सोमवती अमावस्या। पंचक दिनरात।

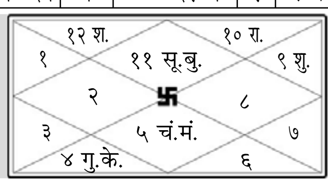
सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-२७

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय — उदय	अस्त
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	उदय-वक्री	गति	अस्त-वक्री	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	र.	४।०९।०५।०६	८७३	४।५।५८।३१	-२४	१०।२।५३।१४	-६४	३।२६।२८।४३	८	८।२६।०३।०५	७१	११।१७।५८।१५	६	९।२५।५३।४२	७:०५	७:४८
२	चं.	४।२३।३८।३५	८५४	४।५।३४।४१	-२४	१०।१।४९।१९	-६०	३।२६।२१।०५	८	८।२७।१३।४२	७१	११।१८।०४।४०	६	९।२५।५०।३१	८:०४	८:०३
३	मं.	५।०७।५२।४५	८३१	४।५।१०।५७	-२४	१०।०।४९।२९	-५५	३।२६।१३।३१	७	८।२८।२४।२३	७१	११।१८।११।०७	७	९।२५।४७।२१	९:००	८:३६
४	बु.	५।२१।४३।३८	८०६	४।४।४७।२२	-२३	९।२९।५४।५२	-४९	३।२६।०६।०१	७	८।२९।३५।०९	७१	११।१८।१७।३७	७	९।२५।४४।१०	९:५५	९:०९
५	गु.	६।०५।०९।२५	७८१	४।४।२३।५९	-२३	९।२९।६।१७	-४२	३।२५।५८।३६	७	९।००।४५।५९	७१	११।१८।२४।११	७	९।२५।४०।५९	१०:४९	९:४४
६	शु.	६।१८।१०।२६	७५८	४।४।०।५०	-२३	९।२८।२४।२१	-३५	३।२५।५१।१५	७	९।०१।५६।५३	७१	११।१८।३०।४७	७	९।२५।३७।४९	११:४३	१०:२२
७	श.	७।००।४८।४९	७३९	४।३।३७।५७	-२३	९।२७।४९।२५	-२८	३।२५।४३।५९	७	९।०३।०७।५२	७१	११।१८।३७।२६	७	९।२५।३४।३८	१२:३७	११:०३
८	र.	७।१३।०८।००	७२४	४।३।१५।२४	-२२	९।२७।२१।४२	-२१	३।२५।३६।४९	७	९।०४।१८।५४	७१	११।१८।४४।०७	७	९।२५।३१।२७	१:२८	११:४८
९	चं.	७।२५।१२।१३	७१४	४।२।५३।१३	-२२	९।२७।१।११	-१३	३।२५।२९।४४	७	९।०५।३०।००	७१	११।१८।५०।५२	७	९।२५।२८।१७	२:१८	१२:३७
१०	मं.	८।०७।०६।०५	७०८	४।२।३१।२६	-२१	९।२६।४७।४७	-६	३।२५।२२।४६	७	९।०६।४१।१०	७१	११।१८।५७।३८	७	९।२५।२५।०६	३:०३	१:२८
११	बु.	८।१८।५४।१९	७०७	४।२।१०।५	-२१	९।२६।४१।१८	०	३।२५।१५।५४	७	९।०७।५२।२३	७१	११।१९।०४।२८	७	९।२५।२१।५५	३:४५	२:२०
११	गु.	९।००।४१।३३	७११	४।१।४९।१२	-२०	९।२६।४१।२७	६	३।२५।०९।०८	७	९।०९।०३।४०	७१	११।१९।११।२०	७	९।२५।१८।४५	४:२३	३:१३
१२	शु.	९।१२।३२।०७	७१८	४।१।२८।५०	-२०	९।२६।४७।५६	१२	३।२५।०२।२९	७	९।१०।१५।००	७१	११।१९।१८।१४	७	९।२५।१५।३४	४:५८	४:०६
१३	श.	९।२४।२९।५२	७२८	४।१।९।१०	-१९	९।२७।०।२५	१८	३।२४।५५।५७	६	९।११।२६।२४	७१	११।१९।२५।१०	७	९।२५।१२।२३	५:३२	४:५९
१४	र.	१०।०६।३७।५७	७४१	४।०।४९।४५	-१९	९।२७।१८।३३	२३	३।२४।४९।३२	६	९।१२।३७।५०	७१	११।१९।३२।०९	७	९।२५।०९।१३	६:०५	५:५२
३०	चं.	१०।१८।५८।३५	७५४	४।०।३१।५	-१८	९।२७।४१।५८	२८	३।२४।४३।१५	६	९।१३।४९।२०	७२	११।१९।३९।१०	७	९।२५।०६।०२	××	६:४५

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

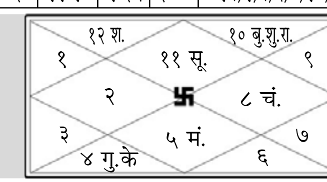
दिनांक	प्रातः पूर्व — कुंभे	प्रातः — मीने	दिन — मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सायं — सिंहे	रात्रि — कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	शुभ बली लग्नें — इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२१ फर	६:२६	७:५९	९:३०	११:१०	१:०८	३:२२	५:३९	७:५१	१०:०२	१२:१८	२:३४	४:३९	१२,१,२,३,६,७,८,१०,
२२ फर	६:२२	७:५५	९:२६	११:०६	१:०५	३:१८	५:३५	७:४७	९:५८	१२:१४	२:३०	४:३५	१२,१,२,६,७,८,९,१०,
२३ फर	६:१८	७:५१	९:२२	११:०२	१:०१	३:१४	५:३१	७:४३	९:५५	१२:१०	२:२६	४:३२	१२,१,२,६,७,८,९,१०,
२४ फर	६:१४	७:४७	९:१८	१०:५८	१२:५७	३:११	५:२७	७:३९	९:५१	१२:०६	२:२२	४:२८	१२,१,२,३,६,७,९,१०,
२५ फर	६:१०	७:४३	९:१४	१०:५४	१२:५३	३:०७	५:२३	७:३५	९:४७	१२:०२	२:१८	४:२४	१२,१,२,६,७,१०,
२६ फर	६:०६	७:३९	९:१०	१०:५०	१२:४९	३:०३	५:१९	७:३२	९:४३	११:५८	२:१४	४:२०	१२,१,२,६,७,१०,
२७ फर	६:०२	७:३५	९:०६	१०:४६	१२:४५	२:५९	५:१५	७:२८	९:३९	११:५४	२:१०	४:१६	१२,१,२,६,७,१०,
२८ फर	५:५८	७:३२	९:०२	१०:४२	१२:४१	२:५५	५:११	७:२४	९:३५	११:५०	२:०६	४:१२	१२,१,२,६,७,१०,
०१ मार्च	५:५५	७:२८	८:५८	१०:३९	१२:३७	२:५१	५:०७	७:२०	९:३१	११:४६	२:०२	४:०८	१२,१,२,६,७,१०,
०२ मार्च	५:५१	७:२४	८:५४	१०:३५	१२:३३	२:४७	५:०३	७:१६	९:२७	११:४२	१:५८	४:०४	१२,१,२,६,७,१०,
०३ मार्च	५:४७	७:२०	८:५०	१०:३१	१२:२९	२:४३	४:५९	७:१२	९:२३	११:३८	१:५५	३:६०	१२,१,२,६,७,१०,
०४ मार्च	५:४३	७:१६	८:४६	१०:२७	१२:२५	२:३९	४:५६	७:०८	९:१९	११:३४	१:५१	३:५६	१२,१,२,६,७,८,१०,
०५ मार्च	५:३९	७:१२	८:४२	१०:२३	१२:२१	२:३५	४:५२	७:०४	९:१५	११:३०	१:४७	३:५२	१२,१,२,६,७,१०,
०६ मार्च	५:३५	७:०८	८:३९	१०:१९	१२:१७	२:३१	४:४८	६:६०	९:११	११:२६	१:४३	३:४८	१२,१,२,६,७,१०,
०७ मार्च	५:३१	७:०४	८:३५	१०:१५	१२:१३	२:२७	४:४४	६:५६	९:०७	११:२२	१:३९	३:४४	१२,१,२,६,७,१०,
०८ मार्च	५:२७	६:६०	८:३१	१०:११	१२:०९	२:२३	४:४०	६:५२	९:०३	११:१८	१:३५	३:४०	१२,१,२,६,७,१०,

तिथि १
रविवार
इष्ट ०।०



(A) बुध उदय पूर्वे: प्रातः ६:०४ समये। मकरे शुक्रः दिन ३:१५ समये।

तिथि ८
रविवार
इष्ट ०।०



१४	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रात: एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमे:। शुक्र उदयपूर्वे: । मूल निवास पाताले
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रात:	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-पूर्वभाद्रपदे रवि:, मघायां भौम:, धनिष्ठायां वुध:, आश्लेषायां गुरौ, श्रवणे शुक्र:, रेवत्यां शनि:, धनिष्ठायां राहु, आश्लेषायां केतु।
१	मं.	२२।३३	दि.३:३९	पू.भा	८।२१	दि. ९:५९	शुभ	४८।२२	रा.१:५९	बव	२२।३३	दि.३:३९	बाल	मीन	--	दिनरात	२९।२१	६:३८	६:२३	१०।२३।५९।१५	६०	काण	०९ मार्च	पंचक दिनरात। सर्वार्थसिद्धी दिन ९:५९ से रातअंत। आश्लेषायां कर्के च भौम: प्रात: -१२:३९।
२	बु.	२३।०४	दि.३:५१	उ.भा	१०।३७	दि. १०:५२	शुक्ल	४५।३३	रा.१२:५१	कौल	२३।४	दि.३:५१	तैति	मीन	--	दिनरात	२९।२४	६:३७	६:२३	१०।२४।५९।१२	६०	लुंबक	१० मार्च	फुलेरा दोज। श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती। पंचक दिनरात। मूल दिन १०:५२ से रातअंत। क्रांतिसाम्य दिन ८:११ से दिन १२:२९। क्रांतिसाम्य (A)
३	गु.	२२।२९	दि.३:३६	रेव	११।४८	दि. ११:२०	ब्रह्म	४१।५५	रा.११:२२	गर	२२।२९	दि.३:३६	वणि	मीन	११।४८	दि. ११:२० तक	२९।२७	६:३६	६:२३	१०।२५।५९।०७	६०	मित्र	११ मार्च	मधुक तृतीया। पंचक समाप्त दि. ११ :२० समये। मूल दिनरात। रवियोग दिन ११:२० से रात्रिअंत। सर्वार्थसिद्धी दिनरात। भद्रा रात्रि ३:२१ से (B)
४	शु.	२०।५३	दि.२:५७	अश्वि	११।५९	दि. ११:२३	ऐंद्र	३७।३१	रा.९:३६	भद्रा	२०।५३	दि.२:५७	बव	मेष	--	दिनरात	२९।३१	६:३५	६:२४	१०।२६।५९।००	६०	वज्र	१२ मार्च	विनायकी श्री गणेश ४ व्रतं। अविध्नकरण ब्रतारंभ। मूल सू.उ.से दिन ११:२३ तक। रवियोग सू.उ.से दिन ११:२३ तक । सर्वार्थसिद्धी दिन (C)
५	श.	१८।२४	दि.१:५६	भर	११।१७	दि. ११:०५	वैधृ	३२।२६	रा.७:३३	बाल	१८।२४	दि.१:५६	कौल	मेष	२५।५६	दि. ४:५७ तक	२९।३४	६:३५	६:२४	१०।२७।५८।५१	६०	ध्वांक्ष	१३ मार्च	रवियोग दिन ११:०५ से रात्रिअंत। ज्वालामुखी योग सू.उ. से दिन ११:०५। वैधृति सू.उ.से रा.७:३३ वजे तक। (A) दिन ८:११ से दिन १२:२९।
६	र.	१५।०५	दि.१२:३६	कृत्ति	९।४६	दि. १०:२८	विष्कु	२६।४४	सा.५:१५	तैति	१५।५	दि.१२:३६	गर	वृष	××	दिनरात	२९।३८	६:३४	६:२५	१०।२८।५८।४१	६०	धूम्र	१४ मार्च	रवियोग सू.उ.से दिन १०:२८ तक। (C) ११:२३ पर्यन्त। ज्वालामुखीयो दिन २:५७ से रातअंत। भद्रा सू.उ.से दिन २:५७(स्वर्ग)। वैधृति रा.९:३६ वजे तक। से रातअंत।
७	चं.	११।०१	दि.१०:५७	रोहि	७।३०	दि. ९:३३	प्रीति	२०।२६	दि.२:४३	वणि	११।१	दि.१०:५७	भद्रा	वृष	३६।०२	रा. ८:५८ तक	२९।४१	६:३३	६:२५	१०।२९।५८।२८	६०	प्रवर्ध	१५ मार्च	होलाष्टक प्रारंभ। जिष्णु सप्तमीव्रत। सर्वार्थसिद्धी दिन ९:३३ पर्यन्त। भद्रा दिन १०:५७ से रात्रि १०:०१ (स्वर्ग)। मीने रवि प्रात: ७:१० समये। (D)
८	मं.	६।१५	दि.९:०२	मृग	४।३२	दि. ८:२०	आयु	१३।३५	दि.११:५८	बव	६।१५	दि.९:०२	बाल	मिथुन	××	दिनरात	२९।४४	६:३२	६:२५	११।००।५८।१४	६०	राक्षस	१६ मार्च	मासिक दुर्गाष्टमी व्रत। मीन खरमास। रवियोग दिन ८:२० से रात्रिअंत। (B) रात्रिअंत (भूमि)। कुंभे बुध: रात्रि ५:२२ समये।
९,१०	बु.	०।५२, ५४।५६	प्रा.६:५१,रा ४:२८	आर्द्रा, पुन	०: ५७।५६: ४९	प्रा. ६:५३, रा.५:१४	सौभ, शोभ	६।१५, ५९।५७	दि.९:०१, रा.६:३०	कौल	०।५२	प्रा.६:५१	तैति	मिथुन	४२।५१	रा. ११:३९ तक	२९।४८	६:३१	६:२६	११।०१।५७।५७	६०	मुसल	१७ मार्च	०मीन खरमास। रवियोग सू.उ.से रात्रि ५:०५ तक । (D) पुण्यकाल आज। धनिष्ठायां शुक्र: रात्रि ५:३४ समये।
११	गु.	४८।३६	रा.१:५६	पुष्य	५२।२०	रा. ३:२६	अति	५०।२५	रा.२:४०	वणि	२१।४६	दि.३:१२	भद्रा	कर्क	××	दिनरात	२९।५१	६:३०	६:२६	११।०२।५७।३९	६०	शुभ	१८ मार्च	आमलकी एकादशी व्रत सर्वे। मीन खरमास। मूल रात ३:२६ से रातअंत। रवियोग दिन ३:२९ से रात्रि ३:२६। अमृतसिद्धि रात्रि ३:२६ पर्यन्त। (E)
१२	शु.	४२।०८	रा.११:२०	श्ले	४७।४४	रा. १:३४	सुक	४२।१५	रा.११:२३	बव	१५।२३	दि.१२:३८	बाल	कर्क	४७।४४	रा. १:३४ तक	२९।५५	६:२९	६:२७	११।०३।५७।१८	६०	मृत्यु	१९ मार्च	पापनाशनी, सुकृत द्वादशीव्रत।मीन खरमास। मूल दिनरात। शतभिषायां वुध: दिन ११:५८ समये।
१३	श.	३५।४८	रा.८:४७	मघा	४३।१६	रा. ११:४६	धृति	३४।१०	रा.८:०८	कौल	८।५६	दि.१०:०२	तैति	सिंह	××	दिनरात	२९।५८	६:२८	६:२७	११।०४।५६।५५	६०	पद्म	२० मार्च	शनिप्रदोष व्रतं। नन्द त्रयोदशी।मीन खरमास। मूल सू.उ.से रात ११:४६ तक। श्री सूर्य उत्तरगोल प्रवेश रात्रि २:०२। रवियोग रात्रि ११:४६ से रात्रिअंत।
१४	र.	२९।४९	सा.६:२३	पू.फा.	३९।१३	रा. १०:०८	शूल	२६।२४	सा.५:००	गर	२।४१	प्रा.७:३१	वणि	सिंह	५३।१४	रा. ३:४५ तक	३०।०१	६:२७	६:२७	११।०५।५६।३१	६०	छत्र	२१ मार्च	होलिका दहन प्रदोष काले, अथवा रात्रि अंत ५:१४ बजे उपरांत । महेश व्रतारंभ, बृषदानव्रत। सर्वार्तिहरव्रत।मीन खरमास। रवियोग सू.उ.से (F)
१५	चं.	२४।३१	दि.४:१४	उ.फा.	३५।५३	रा. ८:४७	गंड़	१९।८	दि.२:०५	बव	२४।३१	दि.४:१४	बाल	कन्या	××	दिनरात	३०।०५	६:२६	६:२८	११।०६।५६।०४	६०	श्रीवत्स	२२ मार्च	होली उत्सव। मन्वादितिथि, अशोकव्रत। लक्ष्मीनारायणव्रत।चैतन्य महाप्रभु ज.। मीन खरमास। क्रांतिसाम्य दिन ९:०८ से दिन १:१४। क्रांतिसाम्य (G)

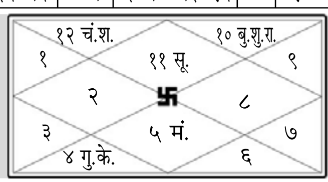
सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-२९

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		राहु	चंद्र उदयास्त समय	
	वार	राशि अंश कला वि.	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	उदय दिन	अस्त रात
१	मं.	११।०१।३२।६०	७६९	४।०।१३।२	-१७	९।२८।१०।२२	३३	३।२४।३७।०६	६	९।१५।००।५३	७२	११।११।४६।१२	७	९।२५।०२।५२	६:३९	७:१२
२	बु.	११।१४।२१।३०	७८२	३।२९।५५।३८	-१७	९।२८।४३।२३	३७	३।२४।३१।०४	६	९।१६।१२।२८	७२	११।११।५३।१७	७	९।२४।५९।४१	७:१४	८:११
३	गु.	११।२७।२३।४१	७९५	३।२९।३८।५४	-१६	९।२९।२०।४५	४१	३।२४।२५।११	६	९।१७।२४।०७	७२	११।२०।००।२४	७	९।२४।५६।३०	७:५३	९:१२
४	शु.	०।१०।३८।४८	८०७	३।२९।२२।५२	-१५	१०।०।२।८	४५	३।२४।१९।२७	६	९।१८।३५।४८	७२	११।२०।०७।३३	७	९।२४।५३।२०	८:३५	१०:१७
५	श.	०।२४।०६।०५	८१९	३।२९।७।३१	-१५	१०।०।४७।१८	४९	३।२४।१३।५१	५	९।१९।४७।३१	७२	११।२०।१४।४३	७	९।२४।५०।०९	९:२२	११:२४
६	र.	१।०७।४४।५७	८३०	३।२८।५२।५४	-१४	१०।१।३५।५९	५२	३।२४।०८।२४	५	९।२०।५९।१७	७२	११।२०।२१।५६	७	९।२४।४६।५८	१०:१६	१२:३२
७	चं.	१।२१।३४।५८	८४१	३।२८।३९।२	-१३	१०।२।२७।५८	५५	३।२४।०३।०६	५	९।२२।११।०६	७२	११।२०।२९।१०	७	९।२४।४३।४८	११:१६	१:३८
८	मं.	२।०५।३५।४४	८५१	३।२८।२५।५४	-१२	१०।३।२३।३	५८	३।२३।५७।५७	५	९।२३।२२।५७	७२	११।२०।३६।२५	७	९।२४।४०।३७	१२:२२	२:४०
९,१०	बु.	२।१९।४६।२६	८५९	३।२८।१३।३१	-१२	१०।४।२१।१	६१	३।२३।५२।५८	५	९।२४।३४।५०	७२	११।२०।४३।४२	७	९।२४।३७।२७	१:३०	३:३५
११	गु.	३।०४।०५।३३	८६५	३।२८।१।५५	-११	१०।५।२१।४२	६३	३।२३।४८।०९	५	९।२५।४६।४६	७२	११।२०।५१।०१	७	९।२४।३४।१६	२:३९	४:२२
१२	शु.	३।१८।३०।२४	८६७	३।२७।५१।५	-१०	१०।६।२४।५८	६६	३।२३।४३।२९	४	९।२६।५८।४४	७२	११।२०।५८।२०	७	९।२४।३१।०५	३:४५	५:०४
१३	श.	४।०२।५७।१०	८६४	३।२७।४१।१	-९	१०।७।३०।३९	६८	३।२३।३८।५९	४	९।२८।१०।४३	७२	११।२१।०५।४२	७	९।२४।२७।५५	२:२३	५:४१
१४	र.	४।१७।२०।५९	८५५	३।२७।३१।४५	-८	१०।८।३८।३८	७०	३।२३।३४।३९	४	९।२९।२२।४५	७२	११।२१।१३।०४	७	९।२४।२४।४४	५:४७	६:१५
१५	चं.	५।०१।३६।२६	८४२	३।२७।२३।१६	-८	१०।९।४८।४८	७२	३।२३।३०।२९	४	१०।००।३४।४९	७२	११।२१।२०।२८	७	९।२४।२१।३४	६:४४	६:४९

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

दिनांक	प्रात: पूर्व	प्रात:	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	कुंभे	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
०९ मार्च	५:२३	६:५६	८:२७	१०:०७	१२:०५	२:१९	४:३६	६:४८	८:५९	११:१४	१:३१	३:३६	१२,१,२,७,१०,
१० मार्च	५:१९	६:५२	८:२३	१०:०३	१२:०२	२:१५	४:३२	६:४४	८:५५	११:११	१:२७	३:३२	१२,१,२,६,७,१०,
११ मार्च	५:१५	६:४८	८:१९	९:५९	११:५८	२:११	४:२८	६:४०	८:५१	११:०७	१:२३	३:२८	१२,१,२,६,७,१०,
१२ मार्च	५:११	६:४४	८:१५	९:५५	११:५४	२:०७	४:२४	६:३६	८:४८	११:०३	१:१९	३:२५	१२,२,३,५,६,७,८,१०,
१३ मार्च	५:०७	६:४०	८:११	९:५१	११:५०	२:०४	४:२०	६:३२	८:४४	१०:५९	१:१५	३:२१	१२,२,३,५,६,८,१०,
१४ मार्च	५:०३	६:३६	८:०७	९:४७	११:४६	१:६०	४:१६	६:२८	८:४०	१०:५५	१:११	३:१७	१२,१,२,३,६,८,१०,
१५ मार्च	४:५९	६:३२	८:०३	९:४३	११:४२	१:५६	४:१२	६:२५	८:३६	१०:५१	१:०७	३:१३	१२,१,२,३,५,६,७,८,१०
१६ मार्च	४:५५	६:२८	७:५९	९:३९	११:३८	१:५२	४:०८	६:२१	८:३२	१०:४७	१:०३	३:०९	१२,१,२,३,५,६,७,८,१०
१७ मार्च	४:५२	६:२५	७:५५	९:३५	११:३४	१:४८	४:०४	६:१७	८:२८	१०:४३	१२:५९	३:०५	१२,२,३,४,६,७,८,१०,११
१८ मार्च	४:४८	६:२१	७:५१	९:३२	११:३०	१:४४	४:००	६:१३	८:२४	१०:३९	१२:५५	३:०१	१२,२,३,४,६,७,८,१०,११
१९ मार्च	४:४४	६:१७	७:४७	९:२८	११:२६	१:४०	३:५६	६:०९	८:२०	१०:३५	१२:५१	२:५७	१२,२,३,६,७,८,१०,
२० मार्च	४:४०	६:१३	७:४३	९:२४	११:२२	१:३६	३:५३	६:०५	८:१६	१०:३१	१२:४८	२:५३	१२,२,३,५,६,७,८,१०,११,
२१ मार्च	४:३६	६:०९	७:३९	९:२०	११:१८	१:३२	३:४९	६:०१	८:१२	१०:२७	१२:४४	२:४९	१२,१,२,३,४,६,७,८,१०,
२२ मार्च	४:३२	६:०५	७:३५	९:१६	११:१४	१:२८	३:४५	५:५७	८:०८	१०:२३	१२:४०	२:४५	१२,१,२,३,४,७,८,१०

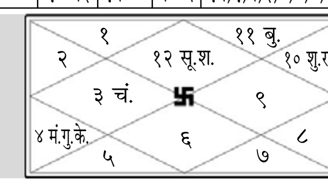
तिथि १
मंगलवार
इष्ट ०।०



मीन संक्रान्ति फलम्- फाल्गुन शुक्ल ७ सोमवासरे प्रात: ७:१० समये मीनसंक्रान्ति प्रवेश: तस्य पुण्यकाल आज। वार नाम ध्वांक्षी संज्ञक संक्रांति व्यापारीवर्ग एवं उद्योगपतियों को शुभकारी है। तस्य काले रोहिनक्षत्र नाम मन्दा संज्ञक संक्रांति बुद्धिजीवीयो को सुखद। मुहूर्त्त ४५ अनाज मूल्य में गिरावट संकेतक। वणिज करण फल- महिषी वाहनं, उँट उपवाहनं, श्याम वस्त्रं, तोमर आयुधं, तीकर पात्रं, दधि भक्षणं, महावर लेपनं, मृग वर्णा, मन्दार पुष्पं, मणि भूषणं, पा श्वेत कंचुकी, प्रगल्भ अवस्था, उपविष्टा स्थिति। अन्नादि में स्थिर भाव सूचक। सर्वसुख योग। फाल्गुनशुक्ल १ आश्लेषायां भौम अतिवर्षा से फसलों को नुकसान, सर्प भय। फाल्गुनशुक्ल १२ शतभिषायां बुध - शतभिषा में शूद्रों में रोग हो।

(E) गुरुपुष्य योग सू उ से रात्रि ३:२६ तक। भद्रा दिन ३:१२ से रात्रि १:५६ (भूमि)। उत्तरभाद्रपदे रवि दिन ३:२९ समये। (F) रात्रि १०:०८ तक । सर्वार्थसिद्धी रात्रि १०:०८ से रातअंत। भद्रा सायं ६:२३ से रात्रि ५:१४ (भूमि)। कुंभे शुक्र: सायं ६:५१ समये। (G) दिन ९:०८ से दिन १:१४।

तिथि ८
मंगलवार
इष्ट ०।०



चैत्र कृष्णपक्ष। शुभ विक्रम संवत् २०८३ शकः १९४८। दुर्मति संवत्सर। कलियुग संवत् ५१२७। वसन्त ऋतुः। श्री सूर्य उत्तरायन-उत्तरगोले। मार्च-अप्रैल ईसवी सन् २०२७। मार्च-अप्रैल। वंगला सन् १४३२ -१४३३ । वीर निर्वाण संवत् २५५२ -२५५३।

१५	तिथि			नक्षत्र			योग			करण (प्रातः एवं सायंकाल में)				चन्द्रमा राशि समाप्ती काल			श्री सूर्य					आनंदादि योग	दिनांक	(कृपया ध्यान रखें कि इस वर्ष चंद्र राशि का समाप्ती काल दिया है)। गुरु उदयपश्चिमेः। शुक्र उदयपूर्वेः — मूल निवास भूमि
तिथि	वार	घटिपल	घंटामिनट	नक्षत्र	घटिपल	घंटामिनट	योग	घटिपल	घंटामिनट	प्रातः	घटिपल	घंटामिनट	सायं	राशि	घटिपल	घंटामिनट	दिनमान	सू.उ.	अस्त	उदयकालीन स्पष्ट	गति			पक्षारंभिक नक्षत्र-उत्तरभाद्रपदे रविः, आश्लेषायां भौमः, शतभिषायां वुधः, आश्लेषायां गुरौ, धनिष्ठायां शुक्रः, रेवत्यां शनिः, धनिष्ठायां राहु, आश्लेषायां केतु।
१	मं.	२०।१२	दि.२:३०	हस्त	३३।३८	रा. ७:५२	बृद्धि	१२।३९	दि.११:२८	कौल	२०।१२	दि.२:३०	तैति	कन्या	--	दिनरात	३०।०८	६:२५	६:२८	११।०७।५५।३६	५९	सौम्य	२३ मार्च	मीन खरमास। द्विपुष्कर योग रात्रि ७।५२ से से रातअंत शनि अस्त पश्चिमेः सायं ११:२६ समये।
२	बु.	१७।११	दि.१:१६	चित्रा	३२।४३	रा. ७:२९	ध्रुव	७।९	दि.९:१६	गर	१७।११	दि.१:१६	वणि	कन्या	२।५०	प्रा. ७:३२ तक	३०।१२	६:२४	६:२९	११।०८।५५।०५	५९	कालदंड	२४ मार्च	मीन खरमास। भद्रा रात्रि १२:५३ से रात्रिअंत (पाताल)।
३	गु.	१५।४४	दि.१२:४१	स्वा	३३।२४	रा. ७:४४	व्या, हर्ष	२।५२, ५९।५९	प्रा.७:३२, रा.६:२३	भद्रा	१५।४४	दि.१२:४१	बव	तुला	--	दिनरात	३०।१५	६:२३	६:२९	११।०९।५४।३३	५९	स्थिर	२५ मार्च	संकष्टी श्री गणेश ४ व्रतं। मीन खरमास। भद्रा सू.उ.से दिन १२:४१(पाताल)।
४	शु.	१६।०३	दि.१२:४७	विशा	३५।४८	रा. ८:४१	वज्र	५८।३२	रा.५:४७	बाल	१६।३	दि.१२:४७	कौल	तुला	२०।०१	दि. २:२२ तक	३०।१८	६:२२	६:२९	११।१०।५३।५८	५९	मातंग	२६ मार्च	मीन खरमास। सर्वार्थसिद्धी रात्रि ८:४१ से रातअंत।
५	श.	१८।११	दि.१:३७	अनु	३९।५५	रा. १०:१९	सिद्धि	५८।२६	रा.५:४३	तैति	१८।११	दि.१:३७	गर	वृश्चिक	××	दिनरात	३०।२२	६:२१	६:३०	११।११।५३।२१	५९	अमृत	२७ मार्च	रंग पंचमी।मीन खरमास। मूल रात १०:१९ से रातअंत। रवियोग रात्रि १०:१९ से रात्रिअंत। व्यतिपात् रा.५:४३ वजे तक। से रातअंत। (A)
६	र.	२१।६०	दि.३:०८	ज्ये	४५।३५	रा. १२:३४	व्यति	५९।३०	रा.६:०८	वणि	२१।६०	दि.३:०८	भद्रा	वृश्चिक	४५।३५	रा. १२:३४ तक	३०।२५	६:२०	६:३०	११।१२।५२।४३	५९	काण	२८ मार्च	एकनाथ षष्ठी।मीन खरमास। मूल दिनरात। रवियोग सू.उ.से रात्रि १२:३४ तक। सर्वार्थसिद्धी रात्रि १२:३४ से रातअंत। भद्रा दिन ३:०८ से रात्रि (B)
७	चं.	२७।१२	सा.५:१२	मूल	५२।२७	रा. ३:१८	वरी	६०	वृद्धि	बव	२७।१२	सा.५:१२	बाल	धनु	××	दिनरात	३०।२८	६:१९	६:३१	११।१३।५२।०२	५९	लुंबक	२९ मार्च	शीतला सप्तमी, बसौड़ा। कालाष्टमी व्रतं। शीतला सप्तमी व्रत।मीन खरमास। मूल सू.उ.से रात ३:१८ तक। पूर्वभाद्रपदे वुधः रात्रि १:०२ समये।
८	मं.	३३।२०	रा.७:३८	पू.षा	६०।०	वृद्धि	वरी	१।२७	प्रा.६:५३	बाल	०।७	प्रा.६:२१	कौल	धनु	××	दिनरात	३०।३२	६:१८	६:३१	११।१४।५१।१९	५९	मित्र	३० मार्च	शीतला अष्टमी वसौरा। संतनाष्टमी।मीन खरमास। (A) शतभिषायां शुक्रः प्रातः ७:४९ समये।
९	बु.	३९।४९	रा.१०:१३	पू.षा	०।२	प्रा. ६:१८	परि	३।५३	प्रा.७:५१	तैति	६।३३	दि.८:५४	गर	धनु	१६।५८	दि. १:०४ तक	३०।३५	६:१७	६:३१	११।१५।५०।३५	५९	श्रीवत्स	३१ मार्च	मीन खरमास। रेवत्यां रवि रात्रि २:१९ समये। (B) ४:०५ (स्वर्ग)। व्यतिपात् सू.उ.से रा.६:०८ वजे तक।
१०	गु.	४६।०४	रा.१२:४२	उ.षा	७।४४	दि. ९:२२	शिव	६।२३	दि.८:४९	वणि	१३।०	दि.११:२८	भद्रा	मकर	××	दिनरात	३०।३९	६:१६	६:३२	११।१६।४९।४८	५९	ध्वांक्ष	०१ अप्रै	मीन खरमास। भद्रा दिन ११:२८ से रात्रि १२:४२ (पाताल)। मंगल मार्गी सायं ६:५४समये।
११	शु.	५१।२८	रा.२:५१	श्रव	१४।५४	दि. १२:१३	सिद्ध	८।२८	दि.९:३९	बव	१८।५२	दि.१:४८	बाल	मकर	४८।१०	रा. १:३१ तक	३०।४२	६:१५	६:३२	११।१७।४८।५९	५९	धूम्र	०२ अप्रै	पापमोचनी एकादशी व्रत सर्वे। मीन खरमास। पंचक प्रारंभ रा. १:३१ तक समये। सर्वार्थसिद्धी दिन १२:१३ पर्यन्त।
१२	श.	५५।३५	रा.४:२८	धनि	२१।३	दि. २:३९	साध्य	९।४८	दि.१०:०९	कौल	२३।३६	दि.३:४१	तैति	कुंभ	××	दिनरात	३०।४५	६:१४	६:३२	११।१८।४८।०८	५९	प्रवर्ध	०३ अप्रै	मीन खरमास। पंचक दिनरात। द्विपुष्कर योग सूर्योदय से दिन २:३९ तक। (C) ४:४१ से रात्रि ९:०२।
१३	र.	५८।०५	रा.५:२७	शत	२५।४७	दि. ४:३२	शुभ	१०।३	दि.१०:१४	गर	२६।५३	दि.४:५९	वणि	कुंभ	××	दिनरात	३०।४९	६:१३	६:३३	११।१९।४७।१५	५९	राक्षस	०४ अप्रै	रविप्रदोष व्रतं। मीन खरमास। पंचक दिनरात। क्रांतिसाम्य दिन ४:४१ से रात्रि ९:०२। भद्रा रात्रि ५:२७ से रात्रिअंत (भूमि)। क्रांतिसाम्य दिन (C)
१४	चं.	५८।५४	रा.५:४६	पू.भा	२८।५७	सा. ५:४७	शुक्ल	९।४	दि.९:५०	भद्रा	२८।३१	सा.५:३७	शकु	कुंभ	१३।२२	दि. ११:३३ तक	३०।५२	६:१२	६:३३	११।२०।४६।२०	५९	मुसल	०५ अप्रै	मासिक शिवरात्रि व्रतं। केदार दर्शन।मीन खरमास। पंचक दिनरात। भद्रा सू.उ.से सायं ५:३७(भूमि)। मीने बुधः दिन ४:१३ समये।
३०	मं.	५८।०७	रा.५:२६	उ.भा	३०।३२	सा. ६:२४	ब्रह्म	६।४९	दि.८:५५	चतु	२८।३१	सा.५:३६	नाग	मीन	××	दिनरात	३०।५५	६:११	६:३४	११।२१।४५।२३	५९	सिद्धि	०६ अप्रै	अमावस्या। वह्नि व्रत।वह्नि व्रत।मीन खरमास। पंचक दिनरात। मूल सायं. ६:२४ से रातअंत। सर्वार्थसिद्धी सायं ६:२४ पर्यन्त।

सूर्योदयकालीन दैनिक ग्रह स्पष्ट । ग्रह गति कलाओं में दी गई है। पक्षारंभिक अयनांश २४-१४-३०

तिथि		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरू		शुक्र		शनि		राहू	चंद्र उदयास्त समय: उदय	अस्त
वार		राशि अंश कला वि.	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-वक्री	गति	उदय-मार्गी	गति	उदय-मार्गी	गति	वक्र गति ३ कला	दिन	रात
१	मं.	५।१५।३८।१६	८२४	३।२७।१५।३४	-७	१०।११।१।४	७४	३।२३।२६।३०	४	१०।०१।४६।५५	७२	११।२१।२७।५२	७	९।२४।१८।२३	७:३९	७:०४
२	बु.	५।२९।२२।०९	८०३	३।२७।८।३९	-६	१०।१२।१५।१९	७६	३।२३।२२।४१	४	१०।०२।५९।०२	७२	११।२१।३५।१८	७	९।२४।१५।१२	८:३४	७:३८
३	गु.	६।१२।४५।१३	७८१	३।२७।२।३१	-५	१०।१३।३१।२८	७८	३।२३।१९।०२	३	१०।०४।११।११	७२	११।२१।४२।४५	७	९।२४।१२।०२	९:२९	८:१५
४	शु.	६।२५।४६।२७	७६०	३।२६।५७।१०	-५	१०।१४।४९।२८	८०	३।२३।१५।३४	३	१०।०५।२३।२२	७२	११।२१।५०।१२	७	९।२४।०८।५१	१०:२३	८:५५
५	श.	७।०८।२६।३९	७४२	३।२६।५२।३६	-४	१०।१६।९।१४	८१	३।२३।१२।१७	३	१०।०६।३५।३५	७२	११।२१।५७।४१	७	९।२४।०५।४१	११:१७	९:३९
६	र.	७।२०।४८।१०	७२६	३।२६।४८।४९	-३	१०।१७।३०।४४	८३	३।२३।०९।११	३	१०।०७।४७।४९	७२	११।२२।०५।१०	७	९।२४।०२।३०	१२:०८	१०:२७
७	चं.	८।०२।५४।३३	७१६	३।२६।४५।४७	-२	१०।१८।५३।५४	८५	३।२३।०६।१५	३	१०।०९।००।०५	७२	११।२२।१२।४०	८	९।२३।५९।१९	१२:५५	११:१८
८	मं.	८।१४।५०।०८	७१०	३।२६।४३।३१	-२	१०।२०।१८।४२	८६	३।२३।०३।३१	३	१०।१०।१२।२३	७२	११।२२।२०।११	८	९।२३।५६।०९	१:३९	१२:११
९	बु.	८।२६।३९।४०	७०९	३।२६।४२।१	-१	१०।२१।४५।६	८८	३।२३।००।५८	२	१०।११।२४।४२	७२	११।२२।२७।४२	८	९।२३।५२।५८	२:१९	१:०३
१०	गु.	९।०८।२८।१२	७१३	३।२६।४१।१५	०	१०।२३।१३।३	९०	३।२२।५८।३५	२	१०।१२।३७।०२	७२	११।२२।३५।१४	८	९।२३।४९।४७	२:५५	१:५६
११	शु.	९।२०।२०।४७	७२२	३।२६।४१।१४	१	१०।२४।४२।३३	९१	३।२२।५६।२४	२	१०।१३।४९।२४	७२	११।२२।४२।४६	८	९।२३।४६।३७	३:३०	२:४९
१२	श.	१०।०२।२२।१८	७३५	३।२६।४१।५७	१	१०।२६।१३।३५	९३	३।२२।५४।२४	२	१०।१५।०१।४७	७२	११।२२।५०।१८	८	९।२३।४३।२६	४:०४	३:४२
१३	र.	१०।१४।३७।०२	७५१	३।२६।४३।२३	२	१०।२७।४६।६	९४	३।२२।५२।३५	२	१०।१६।१४।११	७२	११।२२।५७।५१	८	९।२३।४०।१६	४:३७	४:३६
१४	चं.	१०।२७।०८।२४	७७०	३।२६।४५।३२	३	१०।२९।२०।८	९६	३।२२।५०।५८	१	१०।१७।२६।३६	७२	११।२३।०५।२४	८	९।२३।३७।०५	५:१३	५:३३
३०	मं.	११।०९।५८।२३	७८९	३।२६।४८।२३	४	११।०।५५।३९	९७	३।२२।४९।३२	१	१०।१८।३९।०३	७२	११।२३।१२।५७	८	९।२३।३३।५४	५:५१	६:३२

लग्न प्रारंभ समय (भारतीय स्टेंडर्ड समय)

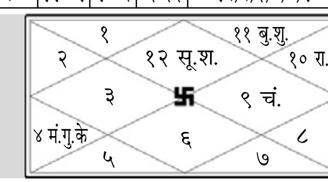
दिनांक	प्रातः पूर्व	प्रातः	दिन				सायं	रात्रि					शुभ बली लग्नें
	मीने	मेषे	वृषे	मिथुने	कर्के	सिंहे	कन्यायां	तुलायां	वृश्चिके	धनुषे	मकरे	कुंभे	इन लग्नों में गुरु, शुक्र या बुध केन्द्र त्रिकोण में होने से दोष समूह नाशक सुयोग।
२३ मार्च	६:०१	७:३२	९:१२	११:१०	१:२४	३:४१	५:५३	८:०४	१०:१९	१२:३६	२:४१	४:२८	१२,१,२,३,५,७,८,१०,
२४ मार्च	५:५७	७:२८	९:०८	११:०६	१:२०	३:३७	५:४९	८:००	१०:१५	१२:३२	२:३७	४:२४	१२,१,२,३,५,७,८,१०,
२५ मार्च	५:५३	७:२४	९:०४	११:०२	१:१६	३:३३	५:४५	७:५६	१०:११	१२:२८	२:३३	४:२०	१२,१,२,३,७,८,१०,
२६ मार्च	५:४९	७:२०	९:००	१०:५८	१:१२	३:२९	५:४१	७:५२	१०:०७	१२:२४	२:२९	४:१६	१२,२,३,७,८,१०,
२७ मार्च	५:४५	७:१६	८:५६	१०:५५	१:०८	३:२५	५:३७	७:४८	१०:०४	१२:२०	२:२५	४:१२	१२,२,३,६,७,८,१०,
२८ मार्च	५:४१	७:१२	८:५२	१०:५१	१:०४	३:२१	५:३३	७:४५	९:६०	१२:१६	२:२१	४:०८	१२,२,३,७,८,१०,११,
२९ मार्च	५:३७	७:०८	८:४८	१०:४७	१:००	३:१७	५:२९	७:४१	९:५६	१२:१२	२:१८	४:०४	१२,२,३,४,७,८,९,१०,११
३० मार्च	५:३३	७:०४	८:४४	१०:४३	१२:५७	३:१३	५:२५	७:३७	९:५२	१२:०८	२:१४	४:००	१२,२,३,४,५,७,८,१०,११
३१ मार्च	५:२९	७:००	८:४०	१०:३९	१२:५३	३:०९	५:२१	७:३३	९:४८	१२:०४	२:१०	३:५६	१२,१,२,३,४,५,७,८,१०
०१ अप्रै	५:२५	६:५६	८:३६	१०:३५	१२:४९	३:०५	५:१८	७:२९	९:४४	१२:००	२:०६	३:५२	१२,१,२,३,४,५,७,८,१०
०२ अप्रै	५:२१	६:५२	८:३२	१०:३१	१२:४५	३:०१	५:१४	७:२५	९:४०	११:५६	२:०२	३:४८	१२,१,२,३,५,७,८,१०,
०३ अप्रै	५:१८	६:४८	८:२९	१०:२७	१२:४१	२:५७	५:१०	७:२१	९:३६	११:५२	१:५८	३:४५	१२,१,२,३,५,७,८,१०,
०४ अप्रै	५:१४	६:४४	८:२५	१०:२३	१२:३७	२:५३	५:०६	७:१७	९:३२	११:४८	१:५४	३:४१	१२,१,२,३,७,८,१०,
०५ अप्रै	५:१०	६:४०	८:२१	१०:१९	१२:३३	२:४९	५:०२	७:१३	९:२८	११:४४	१:५०	३:३७	१२,२,३,७,८,१०,
०६ अप्रै	५:०६	६:३६	८:१७	१०:१५	१२:२९	२:४६	४:५८	७:०९	९:२४	११:४१	१:४६	३:३३	१२,२,३,७,८,१०

तिथि १
मंगलवार
इष्ट ०।०



चैत्रकृष्ण ७ पूर्वभाद्रपदे बुध - दुर्भिक्षमथपूभायांक्षेममारोग्यतास्मृता।। पूर्वाभाद्रपद में हो तो दुर्भिक्ष हो और क्षेम तथा आरोग्य हो।। चैत्रशुक्ल १ उत्तरभाद्रपदे बुध - उभायानृपतिक्लेशआरोग्यंपशुपक्षिणाम्। उत्तरा भाद्रपदमे में हो तो राजाओं में क्लेश तथा पक्षियों में आरोग्यता हो। और।

तिथि ८
मंगलवार
इष्ट ०।०



दैनिक चंद्र नक्षत्र चरण

संकेत - अ. ४ च - का अर्थ है, अश्विनी नक्षत्र का चतुर्थ चरण। समय रेलवे पद्धति के अनुसार है।

चैत्र शु. २ शु. (२० मार्च)- रे.१च.-९:४२ तक। रे.२च.-१५:१७ तक। रे.३च.-२०:५२ तक।

चैत्र शु. ३ श. (२१ मार्च)- अ. १च.-८:०१ तक। अ. २च.-१३:३३ तक। अ. ३च.-१९:०६ तक।

चैत्र शु. ४ र. (२२ मार्च)- भ.२च.-११:४१ तक। भ.३च.-१७:१२ तक। भ.४च.-२२:४३ तक।

चैत्र शु. ५ चं. (२३ मार्च)- कृ.२च.-९:४६ तक। कृ.३च.-१५:१९ तक। कृ.४च.-२०:५१ तक।

चैत्र शु. ६ मं. (२४ मार्च)- रो.२च.-७:५६ तक। रो.३च.-१३:३२ तक। रो.४च.-१९:०८ तक।

चैत्र शु. ७ बु. (२५ मार्च)- मृ.३च.-११:५८ तक। मृ.४च.-१७:३८ तक। आ.१च.-२३:१८ तक।

चैत्र शु. ८ गु. (२६ मार्च)- आ.३च.-१०:४१ तक। आ.४च.-१६:२६ तक। पुन१च.-२२:११ तक।

चैत्र शु. ९ शु. (२७ मार्च)- पुन३च.-९:४३ तक। पुन४च.-१५:३३ तक। पुष्१च.-२१:२३ तक।

चैत्र शु. १० श. (२८ मार्च)- पुष्३च.-९:०५ तक। पुष्४च.-१५:०१ तक। श्ले१च.-२०:५६ तक।

चैत्र शु. ११ र. (२९ मार्च)- श्ले३च.-८:४८ तक। श्ले४च.-१४:४९ तक। मघ१च.-२०:५० तक।

चैत्र शु. १२ चं. (३० मार्च)- मघ३च.-८:५३ तक। मघ४च.-१४:५९ तक। पूफ१च.-२१:०५ तक।

चैत्र शु. १३ मं. (३१ मार्च)- पूफ३च.-९:१८ तक। पूफ४च.-१५:३० तक। उफ१च.-२१:४२ तक।

चैत्र शु. १४ बु. (०१ अप्रै)- उफ३च.-१०:०७ तक। उफ४च.-१६:२५ तक। ह.१च.-२२:४२ तक।

चैत्र शु. १५ गु. (०२ अप्रै)- ह. ३च.-११:२० तक। ह. ४च.-१७:४४ तक। चि.१च.-२४:०७ तक।

वैशाख कृ. १ शु. (०३ अप्रै)- चि.२च.-६:३० तक। चि.३च.-१२:५९ तक। चि.४च.-१९:२९ तक।

वैशाख कृ. २ श. (०४ अप्रै)- स्व.२च.-८:२८ तक। स्व.३च.-१५:०३ तक। स्व.४च.-२१:३८ तक।

वैशाख कृ. ३ र. (०५ अप्रै)- विश.२च.-१०:५१ तक। विश३च.-१७:३० तक। विश४च.-२४:१० तक।

वैशाख कृ. ४ चं. (०६ अप्रै)- अनु१च.-६:४९ तक। अनु२च.-१३:३२ तक। अनु३च.-२०:१५ तक।

वैशाख कृ. ५ मं. (०७ अप्रै)- ज्ये१च.-९:४१ तक। ज्ये२च.-१६:२५ तक। ज्ये३च.-२३:१० तक।

वैशाख कृ. ६ बु. (०८ अप्रै)- मू. १च.-१२:३७ तक। मू.२च.-१९:२१ तक। मू.३च.-२६:०५ तक।

वैशाख कृ. ७ गु. (०९ अप्रै)- मू.४च.-८:४६ तक। पूष१च.-१५:२७ तक। पूष२च.-२२:०८ तक।

वैशाख कृ. ८ शु. (१० अप्रै)- पूष४च.-११:२४ तक। उष१च.-१७:५९ तक। उष२च.-२४:३४ तक।

वैशाख कृ. ९ श. (११ अप्रै)- उष३च.-७:०७ तक। अभि.-१५:१७ तक। श्र.१च.-२०:०१ तक।

वैशाख कृ. १० र. (१२ अप्रै)- श्र.३च.-८:५० तक। श्र.४च.-१५:०७ तक। ध.१च.-२१:२४ तक।

वैशाख कृ. ११ चं. (१३ अप्रै)- ध.३च.-९:५० तक। ध.४च.-१५:५६ तक। श.१च.-२२:०२ तक।

वैशाख कृ. १२ मं. (१४ अप्रै)- श.३च.-१०:०५ तक। श.४च.-१५:५९ तक। पूभ१च.-२१:५३ तक।

वैशाख कृ. १३ बु. (१५ अप्रै)- पूभ.३च.-९:३४ तक। पूभ.४च.-१५:१७ तक। उभ.१च.-२१:०० तक।

वैशाख कृ. १४ गु. (१६ अप्रै)- उभ.३च.-८:२२ तक। उभ.४च.-१३:५६ तक। रे.१च.-१९:२९ तक।

वैशाख कृ. ३० शु. (१७ अप्रै)- रे.३च.-६:३५ तक। रे.४च.-१२:०२ तक। अ.१च.-६००:०४ तक।

वैशाख शु. १ श. (१८ अप्रै)- अ. ४च.-९:४५ तक। भ.१च.-१५:०८ तक। भ.२च.-२०:३० तक।

वैशाख शु. २ र. (१९ अप्रै)- भ.४च.-७:१४ तक। कृ.१च.-१२:३६ तक। कृ.२च.-१७:५७ तक।

वैशाख शु. ३ चं. (२० अप्रै)- रो.१च.-१०:०३ तक। रो.२च.-१५:२६ तक। रो.३च.-२०:५० तक।

वैशाख शु. ५ मं. (२१ अप्रै)- मृ.१च.-७:३८ तक। मृ.२च.-१३:०७ तक। मृ.३च.-१८:३५ तक।

वैशाख शु. ६ बु. (२२ अप्रै)- आ.२च.-११:०७ तक। आ.३च.-१६:४३ तक। आ.४च.-२२:१९ तक।

वैशाख शु. ७ गु. (२३ अप्रै)- पुन२च.-९:३५ तक। पुन३च.-१५:१९ तक। पुन४च.-२१:०३ तक।

वैशाख शु. ८ शु. (२४ अप्रै)- पुष्२च.-८:३५ तक। पुष्३च.-१४:२८ तक। पुष्४च.-२०:२१ तक।

वैशाख शु. ९ श. (२५ अप्रै)- श्ले२च.-८:१० तक। श्ले३च.-१४:१२ तक। श्ले४च.-२०:१३ तक।

वैशाख शु. १० र. (२६ अप्रै)- मघ२च.-८:१९ तक। मघ३च.-१४:२८ तक। मघ४च.-२०:३७ तक।

वैशाख शु. ११ चं. (२७ अप्रै)- पूफ२च.-८:५८ तक। पूफ३च.-१५:१३ तक। पूफ४च.-२१:२९ तक।

वैशाख शु. १२ मं. (२८ अप्रै)- उफ२च.-१०:०३ तक। उफ३च.-१६:२४ तक। उफ४च.-२२:४५ तक।

वैशाख शु. १३ बु. (२९ अप्रै)- ह. २च.-११:३१ तक। ह. ३च.-१७:५७ तक। ह. ४च.-२४:२३ तक।

वैशाख शु. १४ गु. (३० अप्रै)- चि.१च.-६:४९ तक। चि.२च.-१३:२० तक। चि.३च.-१९:५० तक।

वैशाख शु. १५ शु. (०१ मई)- स्व.१च.-८:५३ तक। स्व.२च.-१५:२७ तक। स्व.३च.-२२:०२ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. १ श. (०२ मई)- विश१च.-११:१४ तक। विश.२च.-१७:५२ तक। विश३च.-२४:३१ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. २ र. (०३ मई)- विश४च.-७:१० तक। अनु१च.-१३:५१ तक। अनु२च.-२०:३३ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. ३ चं. (०४ मई)- अनु४च.-९:५७ तक। ज्ये१च.-१६:४१ तक। ज्ये२च.-२३:२५ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. ४ मं. (०५ मई)- ज्ये३च.-६:०९ तक। ज्ये४च.-१२:५४ तक। मू. १च.-१९:३९ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. ४ बु. (०६ मई)- मू.३च.-९:०८ तक। मू.४च.-१५:५२ तक। पूष१च.-२२:३६ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. ५ गु. (०७ मई)- पूष३च.-१२:०२ तक। पूष४च.-१८:४३ तक। उष१च.-२५:२५ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. ६ शु. (०८ मई)- उष२च.-८:०४ तक। उष३च.-१४:४० तक। अभि.-२३:०२ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. ७ श. (०९ मई)- श्र.२च.-१०:२४ तक। श्र.३च.-१६:५२ तक। श्र.४च.-२३:२१ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. ८ र. (१० मई)- ध.१च.-५:४९ तक। ध.२च.-१२:०८ तक। ध.३च.-१८:२७ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. ९ चं. (११ मई)- श.१च.-७:०२ तक। श.२च.-१३:१० तक। श.३च.-१९:१७ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. १० मं. (१२ मई)- पूभ१च.-७:२८ तक। पूभ२च.-१३:२३ तक। पूभ.३च.-१९:१७ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. ११ बु. (१३ मई)- उभ.१च.-७:०४ तक। उभ.२च.-१२:४७ तक। उभ.३च.-१८:२९ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. १२ गु. (१४ मई)- रे.१च.-५:५४ तक। रे.२च.-११:२५ तक। रे.३च.-१६:५७ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. १३ शु. (१५ मई)- अ. २च.-९:२५ तक। अ. ३च.-१४:४९ तक। अ. ४च.-२०:१२ तक।

प्रथम ज्येष्ठ शुद्ध कृ. ३० श. (१६ मई)- भ.२च.-६:५६ तक। भ.३च.-१२:१३ तक। भ.४च.-१७:३१ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. १ र. (१७ मई)- कृ.३च.-९:२१ तक। कृ.४च.-१४:३७ तक। रो.१च.-१९:५२ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. २ चं. (१८ मई)- रो.३च.-६:२३ तक। रो.४च.-११:४० तक। मृ.१च.-१६:५७ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. ३ मं. (१९ मई)- मृ.४च.-८:५० तक। आ.१च.-१४:१२ तक। आ.२च.-१९:३४ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. ४ बु. (२० मई)- आ.४च.-६:१९ तक। पुन१च.-११:४९ तक। पुन२च.-१७:१९ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. ५ गु. (२१ मई)- पुष्१च.-९:५६ तक। पुष्२च.-१५:३६ तक। पुष्३च.-२१:१६ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. ६ शु. (२२ मई)- श्ले१च.-८:४१ तक। श्ले२च.-१४:३२ तक। श्ले३च.-२०:२३ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. ८ श. (२३ मई)- मघ१च.-८:०९ तक। मघ२च.-१४:११ तक। मघ३च.-२०:१२ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. ९ र. (२४ मई)- पूफ१च.-८:२० तक। पूफ२च.-१४:३२ तक। पूफ३च.-२०:४४ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. १० चं. (२५ मई)- उफ१च.-९:१३ तक। उफ२च.-१५:३३ तक। उफ३च.-२१:५३ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. ११ मं. (२६ मई)- ह.१च.-१०:३९ तक। ह. २च.-१७:०७ तक। ह. ३च.-२३:३४ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. ११ बु. (२७ मई)- ह.४च.-६:०१ तक। चि.१च.-१२:३४ तक। चि.२च.-१९:०७ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. १२ गु. (२८ मई)- चि.४च.-८:१३ तक। स्व.१च.-१४:५० तक। स्व.२च.-२१:२६ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. १३ शु. (२९ मई)- स्व.४च.-१०:४२ तक। विश१च.-१७:२१ तक। विश.२च.-२४:०१ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. १४ श. (३० मई)- विश३च.-६:४१ तक। विश४च.-१३:२३ तक। अनु१च.-

卐 दैनिक चंद्र नक्षत्र चरण 卐

संकेत - अ. ४ च - का अर्थ है, अश्विनी नक्षत्र का चतुर्थ चरण। समय रेलवे पद्धति के अनुसार है।

२०:०४ तक।

प्रथम्र ज्येष्ठ अधिमास शु. १५ र. (३१ मई)- अनु३च.-९:२९ तक। अनु४च.-१६:१३ तक। ज्ये१च.-२२:५६ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. १ चं. (०१ जून)- ज्ये२च.-५:३९ तक। ज्ये३च.-१२:२४ तक। ज्ये४च.-१९:०८ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. २ मं. (०२ जून)- मू.२च.-८:३६ तक। मू.३च.-१५:२० तक। मू.४च.-२२:०५ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. ३ बु. (०३ जून)- पूष२च.-११:३२ तक। पूष३च.-१८:१५ तक। पूष४च.-२४:५८ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. ४ गु. (०४ जून)- उष१च.-७:४० तक। उष२च.-१४:२० तक। उष३च.-२०:६० तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. ५ शु. (०५ जून)- श्र.१च.-१०:१७ तक। श्र.२च.-१६:५२ तक। श्र.३च.-२३:२८ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. ६ श. (०६ जून)- श्र.४च.-६:०३ तक। ध.१च.-१२:३२ तक। ध.२च.-१९:०१ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. ७ र. (०७ जून)- ध.४च.-७:५५ तक। श.१च.-१४:१५ तक। श.२च.-२०:३५ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. ८ चं. (०८ जून)- श.४च.-९:०९ तक। पूभ१च.-१५:१८ तक। पूभ२च.-२१:२८ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. ९ मं. (०९ जून)- पूभ.४च.-९:३८ तक। उभ.१च.-१५:३५ तक। उभ.२च.-२१:३२ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. १० बु. (१० जून)- उभ.४च.-९:१९ तक। रे.१च.-१५:०४ तक। रे.२च.-२०:४९ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. ११ गु. (११ जून)- रे.४च.-८:१३ तक। अ. १च.-६०८:३६ तक। अ. २च.-१२०८:५८ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. १२ शु. (१२ जून)- अ. ४च.-६:२६ तक। भ.१च.-११:५० तक। भ.२च.-१७:१४ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. १३ श. (१३ जून)- कृ.१च.-९:२२ तक। कृ.२च.-१४:४० तक। कृ.३च.-१९:५७ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. १४ र. (१४ जून)- रो.१च.-६:३२ तक। रो.२च.-११:४६ तक। रो.३च.-१७:०१ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ अधिमास कृ. ३० चं. (१५ जून)- मृ.२च.-८:४४ तक। मृ.३च.-१३:५९ तक। मृ.४च.-१९:१४ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. २ मं. (१६ जून)- आ.२च.-५:४४ तक। आ.३च.-११:०३ तक। आ.४च.-१६:२२ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. ३ बु. (१७ जून)- पुन३च.-८:२२ तक। पुन४च.-१३:४९ तक। पुष्१च.-१९:१५ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. ४ गु. (१८ जून)- पुष्३च.-६:०८ तक। पुष्४च.-११:४४ तक। श्ले१च.-१७:२० तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. ५ शु. (१९ जून)- श्ले४च.-१०:१७ तक। मघ१च.-१६:०५ तक। मघ२च.-२१:५२ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. ६ श. (२० जून)- मघ४च.-९:३४ तक। पूफ१च.-१५:३३ तक। पूफ२च.-२१:३३ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. ७ र. (२१ जून)- पूफ४च.-९:३८ तक। उफ१च.-१५:४९ तक। उफ२च.-२१:६० तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. ८ चं. (२२ जून)- उफ४च.-१०:२९ तक। ह. १च.-१६:४९ तक। ह. २च.-२३:१० तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. ९ मं. (२३ जून)- ह.४च.-११:६० तक। चि.१च.-१८:२९ तक। चि.२च.-२४:५८ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. १० बु. (२४ जून)- चि.३च.-७:२९ तक। चि.४च.-१४:०४ तक। स्व.१च.-२०:४० तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. ११ गु. (२५ जून)- स्व.३च.-९:५३ तक। स्व.४च.-१६:३३ तक। विश१च.-२३:१३ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. १२ शु. (२६ जून)- विश.२च.-५:५३ तक। विश३च.-१२:३६ तक। विश४च.-१९:१९ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. १३ श. (२७ जून)- अनु२च.-८:४५ तक। अनु३च.-१५:२९ तक। अनु४च.-२२:१३ तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. १४ र. (२८ जून)- ज्ये२च.-११:४१ तक। ज्ये३च.-१८:२६ तक। ज्ये४च.-२५:१० तक।

द्वितीय ज्येष्ठ शुद्ध शु. १५ चं. (२९ जून)- मू. १च.-७:५४ तक। मू.२च.-१४:३७ तक। मू.३च.-२१:२१ तक।

आषाढ़ कृ. १ मं. (३० जून)- पूष१च.-१०:४६ तक। पूष२च.-१७:२८ तक। पूष३च.-२४:१० तक।

आषाढ़ कृ. १ बु. (०१ जुला)- पूष४च.-६:५१ तक। उष१च.-१३:३० तक। उष२च.-२०:०९ तक।

आषाढ़ कृ. २ गु. (०२ जुला)- अभि.-११:११ तक। श्र.१च.-१६:०१ तक। श्र.२च.-२२:३६ तक।

आषाढ़ कृ. ३ शु. (०३ जुला)- श्र.४च.-११:४४ तक। ध.१च.-१८:१५ तक। ध.२च.-२४:४५ तक।

आषाढ़ कृ. ४ श. (०४ जुला)- ध.३च.-७:१५ तक। ध.४च.-१३:४० तक। श.१च.-२०:०५ तक।

आषाढ़ कृ. ५ र. (०५ जुला)- श.३च.-८:५२ तक। श.४च.-१५:१० तक। पूभ१च.-२१:२७ तक।

आषाढ़ कृ. ६ चं. (०६ जुला)- पूभ.३च.-९:५७ तक। पूभ.४च.-१६:०६ तक। उभ.१च.-२२:१४ तक।

आषाढ़ कृ. ७ मं. (०७ जुला)- उभ.३च.-१०:२४ तक। उभ.४च.-१६:२३ तक। रे.१च.-२२:२२ तक।

आषाढ़ कृ. ८ बु. (०८ जुला)- रे.३च.-१०:११ तक। रे.४च.-१५:५९ तक। अ. १च.-६४२:१३ तक।

आषाढ़ कृ. ९ गु. (०९ जुला)- अ. ३च.-९:१६ तक। अ. ४च.-१४:५४ तक। भ.१च.-२०:३२ तक।

आषाढ़ कृ. १० शु. (१० जुला)- भ.३च.-७:४४ तक। भ.४च.-१३:१३ तक। कृ.१च.-१८:४१ तक।

आषाढ़ कृ. १२ श. (११ जुला)- कृ.४च.-११:०१ तक। रो.१च.-१६:२३ तक। रो.२च.-२१:४५ तक।

आषाढ़ कृ. १३ र. (१२ जुला)- रो.४च.-८:२८ तक। मृ.१च.-१३:४६ तक। मृ.२च.-१९:०४ तक।

आषाढ़ कृ. १४ चं. (१३ जुला)- आ.१च.-१०:५९ तक। आ.२च.-१६:१७ तक। आ.३च.-२१:३५ तक।

आषाढ़ कृ. ३० मं. (१४ जुला)- पुन१च.-८:१२ तक। पुन२च.-१३:३३ तक। पुन३च.-१८:५३ तक।

आषाढ़ शु. १ बु. (१५ जुला)- पुष्२च.-११:०१ तक। पुष्३च.-१६:२८ तक। पुष्४च.-२१:५४ तक।

आषाढ़ शु. २ गु. (१६ जुला)- श्ले२च.-८:५३ तक। श्ले३च.-१४:२८ तक। श्ले४च.-२०:०३ तक।

आषाढ़ शु. ३ शु. (१७ जुला)- मघ२च.-७:१६ तक। मघ३च.-१३:०१ तक। मघ४च.-१८:४७ तक।

आषाढ़ शु. ५ श. (१८ जुला)- पूफ२च.-६:१९ तक। पूफ३च.-१२:१५ तक। पूफ४च.-१८:१२ तक।

आषाढ़ शु. ६ र. (१९ जुला)- उफ२च.-६:०७ तक। उफ३च.-१२:१५ तक। उफ४च.-१८:२३ तक।

आषाढ़ शु. ७ चं. (२० जुला)- ह. २च.-६:४१ तक। ह. ३च.-१३:०० तक। ह. ४च.-१९:१९ तक।

आषाढ़ शु. ८ मं. (२१ जुला)- चि.२च.-८:०० तक। चि.३च.-१४:२८ तक। चि.४च.-२०:५६ तक।

आषाढ़ शु. ९ बु. (२२ जुला)- स्व.२च.-९:५८ तक। स्व.३च.-१६:३३ तक। स्व.४च.-२३:०८ तक।

आषाढ़ शु. ९ गु. (२३ जुला)- विश.२च.-१२:२४ तक। विश३च.-१९:०५ तक। विश४च.-२५:४५ तक।

आषाढ़ शु. १० शु. (२४ जुला)- अनु१च.-८:२७ तक। अनु२च.-१५:१० तक। अनु३च.-२१:५४ तक।

आषाढ़ शु. ११ श. (२५ जुला)- ज्ये१च.-११:२२ तक। ज्ये२च.-१८:०७ तक। ज्ये३च.-२४:५१ तक।

आषाढ़ शु. १२ र. (२६ जुला)- ज्ये४च.-७:३६ तक। मू. १च.-१४:१९ तक। मू.२च.-२१:०३ तक।

आषाढ़ शु. १३ चं. (२७ जुला)- मू.४च.-१०:२९ तक। पूष१च.-१७:११ तक। पूष२च.-२३:५२ तक।

आषाढ़ शु. १४ मं. (२८ जुला)- पूष३च.-६:३४ तक। पूष४च.-१३:११ तक। उष१च.-१९:४९ तक।

आषाढ़ शु. १५ बु. (२९ जुला)- उष३च.-९:०३ तक। अभि.-१७:२२ तक। श्र.१च.-२२:१० तक।

श्रावण कृ. १ गु. (३० जुला)- श्र.३च.-११:१३ तक। श्र.४च.-१७:४१ तक। ध.१च.-२४:१० तक।

श्रावण कृ. २ शु. (३१ जुला)- ध.२च.-६:३८ तक। ध.३च.-१३:०१ तक। ध.४च.-१९:२४ तक।

श्रावण कृ. ३ श. (०१ अग)- श.२च.-८:०८ तक। श.३च.-१४:२४ तक। श.४च.-२०:४१ तक।

श्रावण कृ. ४ र. (०२ अग)- पूभ२च.-९:१२ तक। पूभ.३च.-१५:२३ तक। पूभ.४च.-२१:३३ तक।

श्रावण कृ. ५ चं. (०३ अग)- उभ.२च.-९:५१ तक। उभ.३च.-१५:५४ तक। उभ.४च.-२१:५८ तक।

श्रावण कृ. ६ मं. (०४ अग)- रे.२च.-१०:०१ तक। रे.३च.-१५:५७ तक। रे.४च.-२१:५३ तक।

श्रावण कृ. ७ बु. (०५ अग)- अ. २च.-९:४२ तक। अ. ३च.-१५:३० तक। अ. ४च.-२१:१९ तक।

श्रावण कृ. ८ गु. (०६ अग)- भ.२च.-८:५३ तक। भ.३च.-१४:३४ तक। भ.४च.-२०:१५ तक।

श्रावण कृ. ९ शु. (०७ अग)- कृ.२च.-७:३६ तक।

कृ.३च.-१३:१० तक। कृ.४च.-१८:४५ तक।

श्रावण कृ. १० श. (०८ अग)- रो.३च.-११:२४ तक। रो.४च.-१६:५३ तक। मृ.१च.-२२:२२ तक।

श्रावण कृ. ११ र. (०९ अग)- मृ.३च.-९:१९ तक। मृ.४च.-१४:४५ तक। आ.१च.-२०:११ तक।

श्रावण कृ. १२ चं. (१० अग)- आ३च.-७:०३ तक। आ.४च.-१२:२९ तक। पुन१च.-१७:५४ तक।

श्रावण कृ. १४ मं. (११ अग)- पुन४च.-१०:११ तक। पुष्१च.-१५:३९ तक। पुष्२च.-२१:०६ तक।

श्रावण कृ. ३० बु. (१२ अग)- पुष्४च.-८:०२ तक। श्लेश१च.-१३:३३ तक। श्लेश२च.-१९:०५ तक।

श्रावण शु. १ गु. (१३ अग)- श्लेश४च.-६:०८ तक। मघ१च.-११:४६ तक। मघ२च.-१७:२४ तक।

श्रावण शु. २ शु. (१४ अग)- पूफ१च.-१०:२६ तक। पूफ२च.-१६:१३ तक। पूफ३च.-२१:६० तक।

श्रावण शु. ३ श. (१५ अग)- उफ१च.-९:४० तक। उफ२च.-१५:३७ तक। उफ३च.-२१:३४ तक।

श्रावण शु. ४ र. (१६ अग)- ह.१च.-९:३४ तक। ह. २च.-१५:४२ तक। ह.३च.-२१:४९ तक।

श्रावण शु. ५ चं. (१७ अग)- चि.१च.-१०:११ तक। चि.२च.-१६:२९ तक। चि.३च.-२२:४६ तक।

श्रावण शु. ६ मं. (१८ अग)- स्व.१च.-११:३० तक। स्व.२च.-१७:५७ तक। स्व.३च.-२४:२४ तक।

श्रावण शु. ७ बु. (१९ अग)- स्व.४च.-६:५२ तक। विश१च.-१३:२६ तक। विश२च.-२०:०१ तक।

श्रावण शु. ८ गु. (२० अग)- विश४च.-९:१२ तक। अनु१च.-१५:५२ तक। अनु२च.-२२:३२ तक।

श्रावण शु. ९ शु. (२१ अग)- अनु४च.-११:५५ तक। ज्ये१च.-१८:३८ तक। ज्ये२च.-२५:२१ तक।

श्रावण शु. १० श. (२२ अग)- ज्ये३च.-८:०५ तक। ज्ये४च.-१४:४९ तक। मू.१च.-२१:३३ तक।

श्रावण शु. ११ र. (२३ अग)- मू.३च.-११:०० तक। मू.४च.-१७:४३ तक। पूष१च.-२४:२५ तक।

श्रावण शु. १२ चं. (२४ अग)- पूष२च.-७:०८ तक। पूष३च.-१३:४७ तक। पूष४च.-२०:२६ तक।

श्रावण शु. १२ मं. (२५ अग)- उष२च.-९:४२ तक। उष३च.-१६:१६ तक। अभि.-२४:३५ तक।

श्रावण शु. १३ बु. (२६ अग)- श्र.२च.-११:५२ तक। श्र.३च.-१८:२० तक। श्र.४च.-२४:४७ तक।

श्रावण शु. १४ गु. (२७ अग)- ध.१च.-७:१४ तक। ध.२च.-१३:३४ तक। ध.३च.-१९:५५ तक।

श्रावण शु. १५ शु. (२८ अग)- श.१च.-८:३३ तक। श.२च.-१४:४६ तक। श.३च.-२०:६० तक।

भाद्रपद कृ. १ श. (२९ अग)- पूभ१च.-९:२३ तक। पूभ२च.-१५:२९ तक। पूभ.३च.-२१:३५ तक।

भाद्रपद कृ. २ र. (३० अग)- उभ.१च.-९:४४ तक। उभ.२च.-१५:४४ तक। उभ.३च.-२१:४३ तक।

भाद्रपद कृ. ३ चं. (३१ अग)- रे.१च.-९:४० तक। रे.२च.-१५:३४ तक। रे.३च.-२१:२८ तक।

भाद्रपद कृ. ४ मं. (०१ सित)- अ.१च.-९:१४ तक। अ. २च.-१५:०३ तक। अ.३च.-२०:५२ तक।

भाद्रपद कृ. ५ बु. (०२ सित)- भ.१च.-८:२९ तक। भ.२च.-१४:१४ तक। भ.३च.-१९:५९ तक।

भाद्रपद कृ. ७ गु. (०३ सित)- कृ.१च.-७:२८ तक। कृ.२च.-१३:०९ तक। कृ.३च.-१८:५० तक।

भाद्रपद कृ. ८ शु. (०४ सित)- रो.१च.-६:१३ तक। रो.२च.-११:५१ तक। रो.३च.-१७:२९ तक।

भाद्रपद कृ. ९ श. (०५ सित)- मृ.२च.-१०:२३ तक। मृ.३च.-१५:५९ तक। मृ.४च.-२१:३६ तक।

भाद्रपद कृ. १० र. (०६ सित)- आ२च.-८:४८ तक। आ३च.-१४:२३ तक। आ.४च.-१९:५९ तक।

भाद्रपद कृ. ११ चं. (०७ सित)- पुन२च.-७:०९ तक। पुन३च.-१२:४५ तक। पुन४च.-१८:२० तक।

भाद्रपद कृ. १२ मं. (०८ सित)- पुष्३च.-११:०९ तक। पुष्४च.-१६:४६ तक। श्लेश१च.-२२:२३ तक।

भाद्रपद कृ. १३ बु. (०९ सित)- श्लेश३च.-९:४० तक। श्लेश४च.-१५:२० तक। मघ१च.-२१:०१ तक।

भाद्रपद कृ. १४ गु. (१० सित)- मघ३च.-८:२४ तक। मघ४च.-१४:०९ तक। पूफ१च.-१९:५५ तक।

भाद्रपद कृ. ३० शु. (११ सित)- पूफ३च.-७:२८ तक। पूफ४च.-१३:२० तक। उफ१च.-१९:१२ तक।

भाद्रपद शु. १ श. (१२ सित)- उफ३च.-६:५८ तक। उफ४च.-१२:५९ तक। ह.१च.-१८:५९ तक।

भाद्रपद शु. २ र. (१३ सित)- ह.३च.-७:०२ तक। ह. ४च.-१३:११ तक। चि.१च.-१९:२० तक।

भाद्रपद शु. ३ चं. (१४ सित)- चि.३च.-७:४२ तक। चि.४च.-१४:०० तक। स्व.१च.-२०:१९ तक।

भाद्रपद शु. ४ मं. (१५ सित)- स्व.३च.-८:६० तक। स्व.४च.-१५:२७ तक। विश१च.-२१:५४ तक।

भाद्रपद शु. ५ बु. (१६ सित)- विश३च.-१०:५४ तक। विश४च.-१७:२९ तक। अनु१च.-२४:०३ तक।

भाद्रपद शु. ६ गु. (१७ सित)- अनु२च.-६:३८ तक। अनु३च.-१३:१८ तक। अनु४च.-१९:५८ तक।

भाद्रपद शु. ७ शु. (१८ सित)- ज्ये२च.-९:२० तक। ज्ये३च.-१६:०३ तक। ज्ये४च.-२२:४७ तक।

भाद्रपद शु. ८ श. (१९ सित)- मू.२च.-१२:१४ तक। मू.३च.-१८:५८ तक। मू.४च.-२५:४२ तक।

भाद्रपद शु. ९ र. (२० सित)- पूष१च.-८:२६ तक। पूष२च.-१५:०८ तक। पूष३च.-२१:५० तक।

भाद्रपद शु. १० चं. (२१ सित)- उष१च.-११:१२ तक। उष२च.-१७:४९ तक। उष३च.-२४:२७ तक।

भाद्रपद शु. ११ मं. (२२ सित)- अभि.-८:४९ तक। श्र.१च.-१३:३६ तक। श्र.२च.-२०:०७ तक।

भाद्रपद शु. १२ बु. (२३ सित)- श्र.४च.-९:०६ तक। ध.१च.-१५:३० तक। ध.२च.-२१:५३ तक।

भाद्रपद शु. १३ गु. (२४ सित)- ध.४च.-१०:३३ तक। श.१च.-१६:४७ तक। श.२च.-२३:०१ तक।

भाद्रपद शु. १४ शु. (२५ सित)- श.४च.-११:२१ तक। पूभ१च.-१७:२६ तक। पूभ२च.-२३:३१ तक।

भाद्रपद शु. १५ श. (२६ सित)- पूभ.४च.-११:३२ तक। उभ.१च.-१७:२८ तक। उभ.२च.-२३:२४ तक।

आश्विन कृ. १ र. (२७ सित)- उभ.४च.-११:०९ तक। रे.१च.-१६:५७ तक। रे.२च.-२२:४५ तक।

आश्विन कृ. २ चं. (२८ सित)- रे.४च.-१०:१८ तक। अ. १च.-६२६:२२ तक। अ. २च.-१२४२:२६ तक।

आश्विन कृ. ३ मं. (२९ सित)- अ.४च.-९:०५ तक। भ.१च.-१४:४४ तक। भ.२च.-२०:२२ तक।

आश्विन कृ. ४ बु. (३० सित)- भ.४च.-७:३८ तक। कृ.१च.-१३:१५ तक। कृ.२च.-१८:५१ तक।

आश्विन कृ. ५ गु. (०१ अक्टू)- रो.१च.-११:४० तक। रो.२च.-१७:१६ तक। रो.३च.-२२:५२ तक।

आश्विन कृ. ६ शु. (०२ अक्टू)- मृ.१च.-१०:०५ तक। मृ.२च.-१५:४२ तक। मृ.३च.-२१:१९ तक।

आश्विन कृ. ७ श. (०३ अक्टू)- आ.१च.-८:३५ तक। आ२च.-१४:१४ तक। आ३च.-१९:५३ तक।

आश्विन कृ. ९ र. (०४ अक्टू)- पुन१च.-७:१३ तक। पुन२च.-१२:५५ तक। पुन३च.-१८:३७ तक।

आश्विन कृ. १० चं. (०५ अक्टू)- पुष्२च.-११:४६ तक। पुष्३च.-१७:३१ तक। पुष्४च.-२३:१६ तक।

आश्विन कृ. ११ मं. (०६ अक्टू)- श्लेश२च.-१०:४९ तक। श्लेश३च.-१६:३७ तक। श्लेश४च.-२२:२६ तक।

आश्विन कृ. १२ बु. (०७ अक्टू)- मघ२च.-१०:०५ तक। मघ३च.-१५:५७ तक। मघ४च.-२१:४९ तक।

आश्विन कृ. १३ गु. (०८ अक्टू)- पूफ२च.-९:३५ तक। पूफ३च.-१५:३१ तक। पूफ४च.-२१:२७ तक।

आश्विन कृ. १४ शु. (०९ अक्टू)- उफ२च.-९:२३ तक। उफ३च.-१५:२४ तक। उफ४च.-२१:२५ तक।

आश्विन कृ. ३० श. (१० अक्टू)- ह.२च.-९:३१ तक। ह.३च.-१५:३९ तक। ह.४च.-२१:४६ तक।

आश्विन शु. १ र. (११ अक्टू)- चि.२च.-१०:०६ तक। चि.३च.-१६:२० तक। चि.४च.-२२:३५ तक।

आश्विन शु. २ चं. (१२ अक्टू)- स्व.२च.-११:१० तक। स्व.३च.-१७:३२ तक। स्व.४च.-२३:५४ तक।

आश्विन शु. ३ मं. (१३ अक्टू)- विश२च.-१२:४५ तक। विश३च.-१९:१५ तक। विश४च.-२५:४४ तक।

आश्विन शु. ४ बु. (१४ अक्टू)- अनु१च.-८:१६ तक। अनु२च.-१४:५२ तक। अनु३च.-२१:२८ तक।

आश्विन शु. ५ गु. (१५ अक्टू)- ज्ये१च.-१०:४४ तक। ज्ये२च.-१७:२६ तक। ज्ये३च.-२४:०७ तक।

आश्विन शु. ६ शु. (१६ अक्टू)- ज्ये४च.-६:४९ तक। मू.१च.-१३:३४ तक। मू.२च.-२०:१८ तक।

आश्विन शु. ७ श. (१७ अक्टू)- मू.४च.-९:४८ तक। पूष१च.-१६:३४ तक। पूष२च.-२३:१९ तक।

आश्विन शु. ७ र. (१८ अक्टू)- पूष४च.-१२:४८ तक। उष१च.-१९:३१ तक। उष२च.-२६:१५ तक।

आश्विन शु. ८ चं. (१९ अक्टू)- उष३च.-८:५७ तक। अभि.-१७:२१ तक। श्र.१च.-२२:१४ तक।

आश्विन शु. ९ मं. (२० अक्टू)- श्र.३च.-११:२५ तक। श्र.४च.-१७:५६ तक। ध.१च.-२४:२८ तक।

आश्विन शु. १० बु. (२१ अक्टू)- ध.२च.-६:५८ तक। ध.३च.-१३:२० तक। ध.४च.-१९:४१ तक।

आश्विन शु. ११ गु. (२२ अक्टू)- श.२च.-८:२२ तक। श.३च.-१४:३२ तक। श.४च.-२०:४३ तक।

आश्विन शु. १२ शु. (२३ अक्टू)- पूभ२च.-९:०० तक। पूभ.३च.-१४:५९ तक। पूभ.४च.-२०:५९ तक।

आश्विन शु. १३ श. (२४ अक्टू)- उभ.२च.-८:५३ तक। उभ.३च.-१४:४२ तक। उभ.४च.-२०:३० तक।

卐 दैनिक चंद्र नक्षत्र चरण 卐

संकेत - अ. ४ च - का अर्थ है, अश्विनी नक्षत्र का चतुर्थ चरण। समय रेलवे पद्धति के अनुसार है।

आश्विन शु. १४ र. (२५ अक्टू)- रे.२च.-८:०५ तक। रे.३च.-१३:४४ तक। रे.४च.-१९:२३ तक।

आश्विन शु. १५ चं. (२६ अक्टू)- अ.२च.-६:४१ तक। अ.३च.-१२:१३ तक। अ.४च.-१७:४५ तक।

कार्तिक कृ. १ मं. (२७ अक्टू)- भ.३च.-१०:१८ तक। भ.४च.-१५:४५ तक। कृ.१च.-२१:१२ तक।

कार्तिक कृ. ३ बु. (२८ अक्टू)- कृ.३च.-८:०७ तक। कृ.४च.-१३:३३ तक। रो.१च.-१८:५९ तक।

कार्तिक कृ. ४ गु. (२९ अक्टू)- रो.४च.-११:१८ तक। मृ.१च.-१६:४५ तक। मृ.२च.-२२:१२ तक।

कार्तिक कृ. ५ शु. (३० अक्टू)- मृ.४च.-९:०८ तक। आ.१च.-१४:३९ तक। आ.२च.-२०:१० तक।

कार्तिक कृ. ६ श. (३१ अक्टू)- आ.४च.-७:१३ तक। पुन१च.-१२:५० तक। पुन२च.-१८:२६ तक।

कार्तिक कृ. ७ र. (०१ नव)- पुष्१च.-११:२२ तक। पुष्२च.-१७:०५ तक। पुष्३च.-२२:४८ तक।

कार्तिक कृ. ८ चं. (०२ नव)- श्ले१च.-१०:१९ तक। श्ले२च.-१६:०८ तक। श्ले३च.-२१:५८ तक।

कार्तिक कृ. ९ मं. (०३ नव)- मघ१च.-९:४२ तक। मघ२च.-१५:३८ तक। मघ३च.-२१:३४ तक।

कार्तिक कृ. १० बु. (०४ नव)- पूफ१च.-९:३० तक। पूफ२च.-१५:३२ तक। पूफ३च.-२१:३४ तक।

कार्तिक कृ. ११ गु. (०५ नव)- उफ१च.-९:४१ तक। उफ२च.-१५:४८ तक। उफ३च.-२१:५५ तक।

कार्तिक कृ. १२ शु. (०६ नव)- ह.१च.-१०:१२ तक। ह.२च.-१६:२४ तक। ह.३च.-२२:३६ तक।

कार्तिक कृ. १३ श. (०७ नव)- चि.१च.-११:०४ तक। चि.२च.-१७:२१ तक। चि.३च.-२३:३८ तक।

कार्तिक कृ. १४ र. (०८ नव)- स्व.१च.-१२:१७ तक। स्व.२च.-१८:३९ तक। स्व.३च.-२५:०१ तक।

कार्तिक कृ. ३० चं. (०९ नव)- स्व.४च.-७:२५ तक। विश१च.-१३:५३ तक। विश२च.-२०:२० तक।

कार्तिक शु. १ मं. (१० नव)- विश४च.-९:१९ तक। अनु१च.-१५:५३ तक। अनु२च.-२२:२६ तक।

कार्तिक शु. २ बु. (११ नव)- अनु४च.-११:३८ तक। ज्ये१च.-१८:१७ तक। ज्ये२च.-२४:५६ तक।

कार्तिक शु. ३ गु. (१२ नव)- ज्ये३च.-७:३६ तक। ज्ये४च.-१४:१९ तक। मू.१च.-२१:०३ तक।

कार्तिक शु. ४ शु. (१३ नव)- मू.३च.-१०:३२ तक। मू.४च.-१७:१८ तक। पूष१च.-२४:०४ तक।

कार्तिक शु. ५ श. (१४ नव)- पूष२च.-६:५१ तक। पूष३च.-१३:३८ तक। पूष४च.-२०:२५ तक।

कार्तिक शु. ६ र. (१५ नव)- उष२च.-९:५८ तक। उष३च.-१६:४४ तक। अभि.-२५:१७ तक।

कार्तिक शु. ७ चं. (१६ नव)- श्र.२च.-१२:५५ तक। श्र.३च.-१९:३६ तक। श्र.४च.-२६:१६ तक।

कार्तिक शु. ८ मं. (१७ नव)- ध.१च.-८:५५ तक। ध.२च.-१५:२८ तक। ध.३च.-२२:०१ तक।

कार्तिक शु. ९ बु. (१८ नव)- श.१च.-११:०१ तक। श.२च.-१७:२४ तक। श.३च.-२३:४७ तक।

कार्तिक शु. ९ गु. (१९ नव)- पूभ१च.-१२:२३ तक। पूभ२च.-१८:३४ तक। पूभ.३च.-२४:४६ तक।

कार्तिक शु. १० शु. (२० नव)- पूभ.४च.-६:५७ तक। उभ.१च.-१२:५६ तक। उभ.२च.-१८:५४ तक।

कार्तिक शु. १२ श. (२१ नव)- उभ.४च.-६:५१ तक। रे.१च.-१२:३७ तक। रे.२च.-१८:२४ तक।

कार्तिक शु. १३ र. (२२ नव)- अ.१च.-११:३३ तक। अ.२च.-१७:०७ तक। अ.३च.-२२:४२ तक।

कार्तिक शु. १४ चं. (२३ नव)- भ.१च.-९:४८ तक। भ.२च.-१५:१३ तक। भ.३च.-२०:३९ तक।

कार्तिक शु. १५ मं. (२४ नव)- कृ.१च.-७:३१ तक। कृ.२च.-१२:५१ तक। कृ.३च.-१८:११ तक।

मार्गशीर्ष कृ. १ बु. (२५ नव)- रो.२च.-१०:१० तक। रो.३च.-१५:२८ तक। रो.४च.-२०:४५ तक।

मार्गशीर्ष कृ. २ गु. (२६ नव)- मृ.२च.-७:२१ तक। मृ.३च.-१२:४० तक। मृ.४च.-१७:५८ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ३ शु. (२७ नव)- आ.३च.-९:५७ तक। आ.४च.-१५:१९ तक। पुन१च.-२०:४२ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ५ श. (२८ नव)- पुन३च.-७:२९ तक। पुन४च.-१२:५९ तक। पुष्१च.-१८:२८ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ६ र. (२९ नव)- पुष्४च.-११:०४ तक। श्ले१च.-१६:४३ तक। श्ले२च.-२२:२१ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ७ चं. (३० नव)- श्ले४च.-९:४४ तक। मघ१च.-१५:३२ तक। मघ२च.-२१:२० तक।

मार्गशीर्ष कृ. ८ मं. (०१ दिस)- मघ४च.-९:०० तक। पूफ१च.-१४:५८ तक। पूफ२च.-२०:५६ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ९ बु. (०२ दिस)- पूफ४च.-८:५५ तक। उफ१च.-१५:०१ तक। उफ२च.-२१:०८ तक।

मार्गशीर्ष कृ. १० गु. (०३ दिस)- उफ४च.-९:२५ तक। ह. १च.-१५:३९ तक। ह. २च.-२१:५३ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ११ शु. (०४ दिस)- ह. ४च.-१०:२६ तक। चि.१च.-१६:४७ तक। चि.२च.-२३:०७ तक।

मार्गशीर्ष कृ. १२ श. (०५ दिस)- चि.४च.-११:५३ तक। स्व.१च.-१८:१९ तक। स्व.२च.-२४:४५ तक।

मार्गशीर्ष कृ. १३ र. (०६ दिस)- स्व.३च.-७:१२ तक। स्व.४च.-१३:४२ तक। विश१च.-२०:१३ तक।

मार्गशीर्ष कृ. १४ चं. (०७ दिस)- विश३च.-९:१६ तक। विश४च.-१५:५१ तक। अनु१च.-२२:२६ तक।

मार्गशीर्ष कृ. ३० मं. (०८ दिस)- अनु३च.-११:३९ तक। अनु४च.-१८:१७ तक। ज्ये१च.-२४:५६ तक।

मार्गशीर्ष शु. १ बु. (०९ दिस)- ज्ये२च.-७:३६ तक। ज्ये३च.-१४:१८ तक। ज्ये४च.-२१:०० तक।

मार्गशीर्ष शु. १ गु. (१० दिस)- मू.२च.-१०:२७ तक। मू.३च.-१७:१२ तक। मू.४च.-२३:५७ तक।

मार्गशीर्ष शु. २ शु. (११ दिस)- पूष२च.-१३:२९ तक। पूष३च.-२०:१६ तक। पूष४च.-२७:०३ तक।

मार्गशीर्ष शु. ३ श. (१२ दिस)- उष१च.-९:५० तक। उष२च.-१६:३७ तक। उष३च.-२३:२४ तक।

मार्गशीर्ष शु. ४ र. (१३ दिस)- अभि.-८:०० तक। श्र.१च.-१२:५८ तक। श्र.२च.-१९:४३ तक।

मार्गशीर्ष शु. ५ चं. (१४ दिस)- श्र.४च.-९:१३ तक। ध.१च.-१५:५४ तक। ध.२च.-२२:३६ तक।

मार्गशीर्ष शु. ६ मं. (१५ दिस)- ध.४च.-११:५४ तक। श.१च.-१८:२९ तक। श.२च.-२५:०३ तक।

मार्गशीर्ष शु. ७ बु. (१६ दिस)- श.३च.-७:३८ तक। श.४च.-१४:०३ तक। पूभ१च.-२०:२९ तक।

मार्गशीर्ष शु. ८ गु. (१७ दिस)- पूभ.३च.-९:१६ तक। पूभ.४च.-१५:३० तक। उभ.१च.-२१:४४ तक।

मार्गशीर्ष शु. ९ शु. (१८ दिस)- उभ.३च.-१०:०७ तक। उभ.४च.-१६:०८ तक। रे.१च.-२२:१० तक।

मार्गशीर्ष शु. १० श. (१९ दिस)- रे.३च.-१०:०६ तक। रे.४च.-१५:५५ तक। अ. १च.-६४३:०८ तक।

मार्गशीर्ष शु. ११ र. (२० दिस)- अ.३च.-९:१६ तक। अ.४च.-१४:५२ तक। भ.१च.-२०:२८ तक।

मार्गशीर्ष शु. १२ चं. (२१ दिस)- भ.३च.-७:४० तक। भ.४च.-१३:०६ तक। कृ.१च.-१८:३२ तक।

मार्गशीर्ष शु. १३ मं. (२२ दिस)- कृ.४च.-१०:४६ तक। रो.१च.-१६:०४ तक। रो.२च.-२१:२३ तक।

मार्गशीर्ष शु. १४ बु. (२३ दिस)- रो.४च.-७:६० तक। मृ.१च.-१३:१४ तक। मृ.२च.-१८:२९ तक।

मार्गशीर्ष शु. १५ गु. (२४ दिस)- आ.१च.-१०:१३ तक। आ.२च.-१५:२७ तक। आ.३च.-२०:४१ तक।

पौष कृ. २ शु. (२५ दिस)- पुन१च.-७:०९ तक। पुन२च.-१२:२६ तक। पुन३च.-१७:४३ तक।

पौष कृ. ३ श. (२६ दिस)- पुष्२च.-९:३८ तक। पुष्३च.-१५:०१ तक। पुष्४च.-२०:२४ तक।

पौष कृ. ४ र. (२७ दिस)- श्ले२च.-७:११ तक। श्ले३च.-१२:४३ तक। श्ले४च.-१८:१५ तक।

पौष कृ. ५ चं. (२८ दिस)- मघ३च.-१०:५८ तक। मघ४च.-१६:४१ तक। पूफ१च.-२२:२३ तक।

पौष कृ. ६ मं. (२९ दिस)- पूफ३च.-९:५४ तक। पूफ४च.-१५:४८ तक। उफ१च.-२१:४२ तक।

पौष कृ. ७ बु. (३० दिस)- उफ३च.-९:३५ तक। उफ४च.-१५:४० तक। ह.१च.-२१:४५ तक।

पौष कृ. ८ गु. (३१ दिस)- ह. ३च.-९:६० तक। ह. ४च.-१६:१५ तक। चि.१च.-२२:३१ तक।

पौष कृ. ९ शु. (०१ जन)- चि.३च.-११:०७ तक। चि.४च.-१७:३१ तक। स्व.१च.-२३:५५ तक।

पौष कृ. १० श. (०२ जन)- स्व.३च.-१२:५० तक। स्व.४च.-१९:२१ तक। विश१च.-२५:५३ तक।

पौष कृ. ११ र. (०३ जन)- विश२च.-८:२५ तक। विश३च.-१५:०२ तक। विश४च.-२१:३९ तक।

पौष कृ. १२ चं. (०४ जन)- अनु२च.-१०:५५ तक। अनु३च.-१७:३५ तक। अनु४च.-२४:१६ तक।

पौष कृ. १३ मं. (०५ जन)- ज्ये२च.-१३:४० तक। ज्ये३च.-२०:२४ तक। ज्ये४च.-२७:०७ तक।

पौष कृ. १४ बु. (०६ जन)- मू. १च.-९:५२ तक। मू.२च.-१६:३७ तक। मू.३च.-२३:२२ तक।

पौष कृ. ३० गु. (०७ जन)- पूष१च.-१२:५४ तक। पूष२च.-१९:४० तक। पूष३च.-२६:२६ तक।

पौष शु. १ शु. (०८ जन)- पूष४च.-९:१२ तक। उष१च.-१५:५८ तक। उष२च.-२२:४३ तक।

पौष शु. २ श. (०९ जन)- अभि.-१४:०२ तक। श्र.१च.-१८:५९ तक। श्र.२च.-२५:४३ तक।

पौष शु. ३ र. (१० जन)- श्र.३च.-८:२८ तक। श्र.४च.-१५:१० तक। ध.१च.-२१:५२ तक।

पौष शु. ३ चं. (११ जन)- ध.३च.-११:१४ तक। ध.४च.-१७:५२ तक। श.१च.-२४:३० तक।

पौष शु. ४ मं. (१२ जन)- श.२च.-७:०८ तक। श.३च.-१३:४१ तक। श.४च.-२०:१३ तक।

卐 दैनिक चंद्र नक्षत्र चरण 卐

संकेत - अ. ४ च - का अर्थ है, अश्विनी नक्षत्र का चतुर्थ चरण। समय रेलवे पद्धति के अनुसार है।

पौष शु. ५ बु. (१३ जन)- पूभ२च.-९:१६ तक। पूभ.३च.-१५:४१ तक। पूभ.४च.-२२:०६ तक।

पौष शु. ६ गु. (१४ जन)- उभ.२च.-१०:५१ तक। उभ.३च.-१७:०६ तक। उभ.४च.-२३:२२ तक।

पौष शु. ७ शु. (१५ जन)- रे.२च.-११:४५ तक। रे.३च.-१७:५० तक। रे.४च.-२३:५५ तक।

पौष शु. ८ श. (१६ जन)- अ. २च.-११:५५ तक। अ. ३च.-१७:४८ तक। अ. ४च.-२३:४१ तक।

पौष शु. ९ र. (१७ जन)- भ.२च.-११:१९ तक। भ.३च.-१७:०० तक। भ.४च.-२२:४२ तक।

पौष शु. १० चं. (१८ जन)- कृ.२च.-१०:०० तक। कृ.३च.-१५:३२ तक। कृ.४च.-२१:०३ तक।

पौष शु. ११ मं. (१९ जन)- रो.२च.-८:०४ तक। रो.३च.-१३:२८ तक। रो.४च.-१८:५१ तक।

पौष शु. १३ बु. (२० जन)- मृ.३च.-१०:५७ तक। मृ.४च.-१६:१४ तक। आ.१च.-२१:३२ तक।

पौष शु. १४ गु. (२१ जन)- आ.३च.-८:०८ तक। आ.४च.-१३:२३ तक। पुन१च.-१८:३९ तक।

पौष शु. १५ शु. (२२ जन)- पुन४च.-१०:२६ तक। पुष्१च.-१५:४३ तक। पुष्२च.-२०:६० तक।

माघ कृ. १ श. (२३ जन)- पुष्४च.-७:३४ तक। श्ले१च.-१२:५५ तक। श्ले२च.-१८:१६ तक।

माघ कृ. २ र. (२४ जन)- मघ१च.-१०:२३ तक। मघ२च.-१५:५१ तक। मघ३च.-२१:१९ तक।

माघ कृ. ३ चं. (२५ जन)- पूफ१च.-८:१७ तक। पूफ२च.-१३:५५ तक। पूफ३च.-१९:३३ तक।

माघ कृ. ५ मं. (२६ जन)- उफ२च.-१२:३६ तक। उफ३च.-१८:२५ तक। उफ४च.-२४:१३ तक।

माघ कृ. ६ बु. (२७ जन)- ह. २च.-१२:०० तक। ह. ३च.-१८:०१ तक। ह. ४च.-२४:०१ तक।

माघ कृ. ७ गु. (२८ जन)- चि.२च.-१२:११ तक। चि.३च.-१८:२४ तक। चि.४च.-२४:३६ तक।

माघ कृ. ८ शु. (२९ जन)- स्व.२च.-१३:१० तक। स्व.३च.-१९:३२ तक। स्व.४च.-२५:५५ तक।

माघ कृ. ९ श. (३० जन)- विश१च.-८:१९ तक। विश२च.-१४:५१ तक। विश३च.-२१:२३ तक।

माघ कृ. १० र. (३१ जन)- अनु१च.-१०:२९ तक। अनु२च.-१७:०८ तक। अनु३च.-२३:४७ तक।

माघ कृ. १० चं. (०१ फर)- ज्ये१च.-१३:०८ तक। ज्ये२च.-१९:५२ तक। ज्ये३च.-२६:३६ तक।

माघ कृ. ११ मं. (०२ फर)- ज्ये४च.-९:२० तक। मू. १च.-१६:०६ तक। मू.२च.-२२:५२ तक।

माघ कृ. १२ बु. (०३ फर)- मू.४च.-१२:२५ तक। पूष१च.-१९:१२ तक। पूष२च.-२५:५९ तक।

माघ कृ. १३ गु. (०४ फर)- पूष३च.-८:४६ तक। पूष४च.-१५:३२ तक। उष१च.-२२:१८ तक।

माघ कृ. १४ शु. (०५ फर)- उष३च.-११:४८ तक। अभि.-२०:१९ तक। श्र.१च.-२५:१५ तक।

माघ कृ. ३० श. (०६ फर)- श्र.२च.-७:५८ तक। श्र.३च.-१४:३८ तक। श्र.४च.-२१:१८ तक।

माघ शु. १ र. (०७ फर)- ध.२च.-१०:३६ तक। ध.३च.-१७:१२ तक। ध.४च.-२३:४७ तक।

माघ शु. २ चं. (०८ फर)- श.२च.-१२:५४ तक। श.३च.-१९:२५ तक। श.४च.-२५:५६ तक।

माघ शु. ३ मं. (०९ फर)- पूभ१च.-८:२५ तक। पूभ२च.-१४:५० तक। पूभ.३च.-२१:१५ तक।

माघ शु. ४ बु. (१० फर)- उभ.१च.-१०:०२ तक। उभ.२च.-१६:२१ तक। उभ.३च.-२२:३९ तक।

माघ शु. ५ गु. (११ फर)- रे.१च.-११:१२ तक। रे.२च.-१७:२४ तक। रे.३च.-२३:३५ तक।

माघ शु. ६ शु. (१२ फर)- अ. १च.-११:५२ तक। अ. २च.-१७:५६ तक। अ. ३च.-२३:६० तक।

माघ शु. ७ श. (१३ फर)- भ.१च.-११:६० तक। भ.२च.-१७:५५ तक। भ.३च.-२३:५१ तक।

माघ शु. ८ र. (१४ फर)- कृ.१च.-११:३४ तक। कृ.२च.-१७:२१ तक। कृ.३च.-२३:०८ तक।

माघ शु. ९ चं. (१५ फर)- रो.१च.-१०:३५ तक। रो.२च.-१६:१४ तक। रो.३च.-२१:५३ तक।

माघ शु. १० मं. (१६ फर)- मृ.१च.-९:०६ तक। मृ.२च.-१४:३८ तक। मृ.३च.-२०:०९ तक।

माघ शु. ११ बु. (१७ फर)- आ.१च.-७:११ तक। आ.२च.-१२:३७ तक। आ.३च.-१८:०३ तक।

माघ शु. १२ गु. (१८ फर)- पुन२च.-१०:१९ तक। पुन३च.-१५:४२ तक। पुन४च.-२१:०५ तक।

माघ शु. १३ शु. (१९ फर)- पुष्२च.-७:५० तक। पुष्३च.-१३:१२ तक। पुष्४च.-१८:३५ तक।

माघ शु. १४ श. (२० फर)- श्ले३च.-१०:४३ तक। श्ले४च.-१६:०८ तक। मघ१च.-२१:३२ तक।

फाल्गुन कृ. १ र. (२१ फर)- मघ३च.-८:२२ तक। मघ४च.-१३:५२ तक। पूफ१च.-१९:२२ तक।

फाल्गुन कृ. २ चं. (२२ फर)- पूफ४च.-११:५७ तक। उफ१च.-१७:३४ तक। उफ२च.-२३:११ तक।

फाल्गुन कृ. ३ मं. (२३ फर)- उफ४च.-१०:३१ तक। ह. १च.-१६:१७ तक। ह. २च.-२२:०४ तक।

फाल्गुन कृ. ४ बु. (२४ फर)- ह. ४च.-९:४२ तक। चि.१च.-१५:३९ तक। चि.२च.-२१:३७ तक।

फाल्गुन कृ. ५ गु. (२५ फर)- चि.४च.-९:३६ तक। स्व.१च.-१५:४४ तक। स्व.२च.-२१:५३ तक।

फाल्गुन कृ. ६ शु. (२६ फर)- स्व.४च.-१०:१६ तक। विश१च.-१६:३६ तक। विश२च.-२२:५५ तक।

फाल्गुन कृ. ७ श. (२७ फर)- विश४च.-११:४२ तक। अनु१च.-१८:११ तक। अनु२च.-२४:४१ तक।

फाल्गुन कृ. ८ र. (२८ फर)- अनु३च.-७:१० तक। अनु४च.-१३:४८ तक। ज्ये१च.-२०:२५ तक।

फाल्गुन कृ. ९ चं. (०१ मार्च)- ज्ये३च.-९:४२ तक। ज्ये४च.-१६:२६ तक। मू. १च.-२३:०९ तक।

फाल्गुन कृ. १० मं. (०२ मार्च)- मू.३च.-१२:३८ तक। मू.४च.-१९:२५ तक। पूष१च.-२६:११ तक।

फाल्गुन कृ. ११ बु. (०३ मार्च)- पूष२च.-८:५७ तक। पूष३च.-१५:४५ तक। पूष४च.-२२:३२ तक।

फाल्गुन कृ. ११ गु. (०४ मार्च)- उष२च.-१२:०४ तक। उष३च.-१८:४९ तक। अभि.-२७:२३ तक।

फाल्गुन कृ. १२ शु. (०५ मार्च)- श्र.१च.-८:१८ तक। श्र.२च.-१४:५९ तक। श्र.३च.-२१:४० तक।

फाल्गुन कृ. १३ श. (०६ मार्च)- ध.१च.-१०:५८ तक। ध.२च.-१७:३४ तक। ध.३च.-२४:०९ तक।

फाल्गुन कृ. १४ र. (०७ मार्च)- ध.४च.-६:४४ तक। श.१च.-१३:१३ तक। श.२च.-१९:४२ तक।

फाल्गुन कृ. ३० चं. (०८ मार्च)- श.४च.-८:३६ तक। पूभ१च.-१४:५८ तक। पूभ२च.-२१:२० तक।

फाल्गुन शु. १ मं. (०९ मार्च)- पूभ.४च.-९:५९ तक। उभ.१च.-१६:१४ तक। उभ.२च.-२२:२८ तक।

फाल्गुन शु. २ बु. (१० मार्च)- उभ.४च.-१०:५२ तक। रे.१च.-१७:०१ तक। रे.२च.-२३:०९ तक।

फाल्गुन शु. ३ गु. (११ मार्च)- रे.४च.-११:२० तक। अ. १च.-६६३:१८ तक। अ. २च.-१३१५:१६ तक।

फाल्गुन शु. ४ शु. (१२ मार्च)- अ. ४च.-११:२३ तक। भ.१च.-१७:२० तक। भ.२च.-२३:१७ तक।

फाल्गुन शु. ५ श. (१३ मार्च)- भ.४च.-११:०५ तक। कृ.१च.-१६:५७ तक। कृ.२च.-२२:४९ तक।

फाल्गुन शु. ६ र. (१४ मार्च)- कृ.४च.-१०:२८ तक। रो.१च.-१६:१५ तक। रो.२च.-२२:०२ तक।

फाल्गुन शु. ७ चं. (१५ मार्च)- रो.४च.-९:३३ तक। मृ.१च.-१५:१५ तक। मृ.२च.-२०:५८ तक।

फाल्गुन शु. ८ मं. (१६ मार्च)- मृ.४च.-८:२० तक। आ.१च.-१३:५९ तक। आ.२च.-१९:३८ तक।

फाल्गुन शु. ९ बु. (१७ मार्च)- आ.४च.-६:५३ तक। पुन१च.-१२:२९ तक। पुन२च.-१८:०४ तक।

फाल्गुन शु. ११ गु. (१८ मार्च)- पुष्१च.-१०:४७ तक। पुष्२च.-१६:२० तक। पुष्३च.-२१:५३ तक।

फाल्गुन शु. १२ शु. (१९ मार्च)- श्ले१च.-८:५८ तक। श्ले२च.-१४:३० तक। श्ले३च.-२०:०२ तक।

फाल्गुन शु. १३ श. (२० मार्च)- मघ१च.-७:०६ तक। मघ२च.-१२:३९ तक। मघ३च.-१८:१३ तक।

फाल्गुन शु. १४ र. (२१ मार्च)- पूफ२च.-१०:५५ तक। पूफ३च.-१६:३१ तक। पूफ४च.-२२:०८ तक।

फाल्गुन शु. १५ चं. (२२ मार्च)- उफ२च.-९:२३ तक। उफ३च.-१५:०५ तक। उफ४च.-२०:४७ तक।

चैत्र कृ. १ मं. (२३ मार्च)- ह. २च.-८:१३ तक। ह. ३च.-१४:०२ तक। ह. ४च.-१९:५२ तक।

चैत्र कृ. २ बु. (२४ मार्च)- चि.२च.-७:३२ तक। चि.३च.-१३:३० तक। चि.४च.-१९:२९ तक।

चैत्र कृ. ३ गु. (२५ मार्च)- स्व.२च.-७:२७ तक। स्व.३च.-१३:३६ तक। स्व.४च.-१९:४४ तक।

चैत्र कृ. ४ शु. (२६ मार्च)- विश२च.-८:०३ तक। विश३च.-१४:२२ तक। विश४च.-२०:४१ तक।

चैत्र कृ. ५ श. (२७ मार्च)- अनु२च.-९:२२ तक। अनु३च.-१५:५१ तक। अनु४च.-२२:१९ तक।

चैत्र कृ. ६ र. (२८ मार्च)- ज्ये२च.-११:२१ तक। ज्ये३च.-१७:५८ तक। ज्ये४च.-२४:३४ तक।

चैत्र कृ. ७ चं. (२९ मार्च)- मू. १च.-७:१० तक। मू.२च.-१३:५३ तक। मू.३च.-२०:३५ तक।

चैत्र कृ. ८ मं. (३० मार्च)- पूष१च.-१०:०१ तक। पूष२च.-१६:४७ तक। पूष३च.-२३:३३ तक।

चैत्र कृ. ९ बु. (३१ मार्च)- पूष४च.-६:१८ तक। उष१च.-१३:०४ तक। उष२च.-१९:५१ तक।

चैत्र कृ. १० गु. (०१ अप्रै)- अभि.-११:१० तक। श्र.१च.-१६:०६ तक। श्र.२च.-२२:५० तक।

चैत्र कृ. ११ शु. (०२ अप्रै)- श्र.४च.-१२:१३ तक। ध.१च.-१८:५२ तक। ध.२च.-२५:३१ तक।

चैत्र कृ. १२ श. (०३ अप्रै)- ध.३च.-८:०७ तक। ध.४च.-१४:३९ तक। श.१च.-२१:११ तक।

चैत्र कृ. १३ र. (०४ अप्रै)- श.३च.-१०:०९ तक। श.४च.-१६:३२ तक। पूभ१च.-२२:५६ तक।

चैत्र कृ. १४ चं. (०५ अप्रै)- पूभ.३च.-११:३३ तक। पूभ.४च.-१७:४७ तक। उभ.१च.-२४:०१ तक।

चैत्र कृ. ३० मं. (०६ अप्रै)- उभ.२च.-६:१४ तक। उभ.३च.-१२:१९ तक। उभ.४च.-१८:२४ तक।

पंचांग की प्रमुख विशेषताऐ

- विद्वानों की सलाह के परिपालन में प्रतिदिन नक्षत्र चरण का समाप्ती काल दिया गया है।
- प्रतिदिन के 51 से अधिक प्रकार के मुहुर्तो को शोधित कर दिया गया है।
- विवाह मुहुर्तों में परिहार सहित विवाह मुहुर्त भी लिखे जा रहे हैं, इससे विवाह मुहुर्तो की संख्या में वृद्धि हुई है।
- प्रतिदिन पृथ्वी पर अग्निवास, ग्रह मुख आहुति एवं शुभ शिव वास का शोधन कर दिये गये हैं।
- पाठकों की सुविधा के लिए किसी भी एक विषय से संबंधित विषय-बस्तु एक साथ रखी गई है, जैसे मुहूर्त्त खण्ड में केवल मुहूर्त्तों से संबंधित विषय सामग्री एक साथ दी गई है।
- भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, भारत सरकार द्वारा स्वीकार्य वेध सिद्ध दृश्य ग्रह गणित से तिथि नक्षत्रादि का समय , दृश्य अयनांश एवं धर्मशास्त्र सम्मत विधि से पंचांग का निर्माण किया गया है।
- व्रत-पर्व-त्योहारों के निर्णय हेतु विभिन्न शास्त्रों एवं पुराणों का विस्तृत संदर्भ दिया गया है, इससे विद्वान पाठक स्वयं व्रत-पर्व का निर्णय करने में सक्षम होंगे।
- भारतीय स्टेंडर्ड टाईम में पंचांग का निर्माण होने से तिथि, नक्षत्र इत्यादि के घंटा मिनट समाप्ती काल में स्थानीय समय संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है। इसलिये यह पंचांग सम्पूर्ण भारत में उपयोगी है।
- २१ से २८ अक्षांश के मध्य स्थित समस्त स्थानों केलिये पृथक- पृथक मध्यम सूर्योदय एवं सूर्यास्त काल तथा लग्न सारणियां दी गईं हैं।
- जन्म कुण्डली निर्माण हेतु विशेष विषय सामग्री संग्रहति की गई है।
- दैनिक उपयोगी ग्रह शान्ति कर्मकाण्ड हेतु आवश्यक विषय सामग्री दी गई है।
- इस पंचांग की विषय सामग्री में विद्वान पाठकों की आवश्यकता एवं सलाह के अनुसार परिवर्तनशीलता है।

पंचांग प्राप्ति के प्रमुख स्थान

रविन्द्र बुक डिपो भोपाल 0755 52533994, 9826088604, **जैन धार्मिक पुस्तक भण्डार भोपाल** 9827390301, **सरदार सोहन सिंह इंदौर** 9425054684, **कुल्लुका ज्योतिष केंद्र उज्जैन** 0734 4013150, **श्री कृष्ण भक्ति भंडार उज्जैन** 9827205372, **होतचंद हेमंदास ग्वालियर** 9425111311, **आनंद प्रकाशन देहली** 9582751998, **श्री राधा खंडेलवाल ग्रंथालय वृन्दावन** 9997977551, **अभिषेक पुस्तक भंडार जबलपुर** 7999787778, **महाकौशल जनरल स्टोर सागर** 0758 2244900, **एन. व्ही. ब्रदर्श टीकमगढ़** 9424601693, **किशोरीलाल मिश्र पुस्तकालय विलासपुर** 0775 2225067, **गुप्ता धार्मिक पुस्तक केंद्र झाँसी** 9452272212, **इश्वर पुस्तक भण्डार मंदसौर** 07422 244806.

卐 स्मरण लेख 卐